श्रीयुत मोहनलाल चड्डात्य।

Written by

M. L. Barjatya

का व्यापारिक इतिहास

लेखक—

श्रीयुत मोहनलाल बड़जातिया

PATRONISED BY

Babu Ghanshyamdasji Birla M. L. A. Pilani,
Rai Bahadur Sir Seth Hukamchandji K. T. Indore,
Rai Bahadur Sir Besheswardasji Daga Bikaner,
Raja Bahadur Seth Banshilalji Pitti Bombay,
Diwan Bahadur Seth Keshari Singhji Kotah,
Hon. Seth Govinddasji M. L. A. Jabbalpore.
Kunwar Hiralalji Kashaliwal Indore,
Babu Beniprasadji Dalmia Bombay,
Seth Bherondanji Sethia Bikaner,
Seth Kasturchandji Kothari Bikaner,
Babu Bhanwarlalji Rampuria Bikaner,
Rai Bahadur Seth Poonamchand Karmchand Kotawala,
Seth Ramnarainji Ruiya Bombay,
Seth Shiochand Raiji Jhunjhunuwala Bombay,
Kunwar Laxminarainji Tikamani Bombay,
Seth Foolchandji Tikamani Calcutta,
Messrs. Pohumull Brothers Bombay,
Banijyabhushan Seth Lalchandji Sethi Jhalrapatan,
Kunwar Bhagchandji Soni Ajmer,
Kunwar Shoobhakaranji Surana Churu,
Kunwar Roopchandji Nahata Chhapar,
Seth Chhaganlalji Godhawat Chhotisadri,
Seth Bherondanji Chopra Gangashahar,
Seth Rameshwardasji Sodani Bombay,
Seth Hazarimal Sardarmal Churu.

हमारे माननीय सहायक ।

श्रीमान् बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०, पिलानी
” राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी०, इन्दौर
” राय बहादुर सर बिशेश्वरदासजी डागा, के० टी० बीकानेर
” राजा बहादुर सेठ गोविन्दलालजी पित्ती, बम्बई
” दीवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी, कोटा
” ऑनरेबल सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी एम० एल० ए०
” कुंवर हीरालालजी कासलीवाल, इन्दौर
” बाबू बेनीप्रसादजी डालमियां, बम्बई
” वाणिज्य भूषण सेठ लालचन्दजी सेठी, झालरापाटन,
” कुंवर भागचन्दजी सोनी, अजमेर
” सेठ भैरूदानजी सेठिया, बीकानेर
” सेठ कस्तूरचन्दजी, कोठारी, (सदासुख गंभीरचन्द) बीकानेर
” बाबू भंवरलालजी रामपुरिया, बीकानेर
” सेठ रामनारायनजी रूइया, बम्बई
” राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटा वाला
” सेठ शिवचन्द्रायजी झुंझनूवाला, बम्बई
” कुंवर लक्ष्मीनारायनजी टिकमाणी, बम्बई
” सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी, कलकत्ता
” मेसर्स मोहनलाल ब्रदर्स, बम्बई
” कुंवर सुमनकरनजी सुराना, चूरू
” कुंवर रूपचन्दजी नाहटा, डापर
” सेठ उगमलालजी गोयावत छोटीसादड़ी
” सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा, गंगाशहर
” सेठ रामेश्वरदासजी सोढ़ानी, बम्बई
” सेठ हजारीमलजी सरदारमलजी कोठारी, चूरू

हमारे आर्थिक सहायक।

श्रीमान् बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०, पिलानी
„ राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी०, इन्दौर
„ राय बहादुर सर विश्वेश्वरदासजी डागा, के० टी० बीकानेर
„ राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी पित्ती, बम्बई
„ दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, कोटा
„ ऑनरेबल सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी एम० एल० ए०
„ कुंवर हीरालालजी काशलीवाल, इन्दौर
„ बाबू बेणीप्रसादजी डालमियां, बम्बई
„ वाणिज्य भूषण सेठ लालचन्दजी सेठी, झालरापाटन,
„ कुंवर भागचन्दजी सोनी, अजमेर
„ सेठ भैंरुदानजी सेठिया, बीकानेर
„ सेठ कस्तूरचन्दजी, कोठारी, (सदासुख गंभीरचन्द) बीकानेर
„ बाबू भंवरलालजी रामपुरिया, बीकानेर
„ सेठ रामनारायणजी रुइया, बम्बई
„ राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटा वाला
„ सेठ शिवचन्दरायजी झुंझनूवाला, बम्बई
„ कुंवर लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी, बम्बई
„ सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी, कलकत्ता
„ मेसर्स पोद्दार ब्रदर्स, बम्बई
„ कुंवर शुभकरणजी सुराना, चूरू
„ कुंवर रूपचन्दजी नाहटा, छापर
„ सेठ छगनलालजी गोधावत छोटीसादड़ी
„ सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा, गंगाशहर
„ सेठ रामेश्वरदासजी सोढ़ानी, बम्बई
„ सेठ हजारीमलजी सरदारमलजी कोठारी, चूरू

मूल्य ३०) रुपया.

PRICE Rs. 30/-

उपहार

सेवामें....

श्रीयुत

Presented to

प्रेस सम्बन्धी भूलें

समयकी इसी भयंकर कमीके कारण हम इस ग्रन्थकी फेअर कापी भी नहीं करा सके थे। फल यह हुआ कि हमें रोज रात २ भर जगकर कापी तैय्यार करना पड़ती थी और दिन २ भर प्रूफ देखना पड़ता था। दिन भरमें चार घण्टे भी पूरे हमें आरामके लिए नहीं मिलते थे। परिणाम यह हुआ कि इनकी कापीमें तथा प्रूफमें अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम भूलोंसे इसकी रक्षा न कर सके। जिससे कहीं २ पर इस ग्रन्थमें बड़ी भद्दी भूलें रह गई हैं जिनके लिये हम पाठकोंसे अत्यन्त विनय पूर्ण भावसे क्षमा चाहते हैं और आशा करते हैं कि वे उन्हें सुधारकर पढ़ेंगे। यदि किसी माननीय व्यापारी सज्जनको अपने परिचयमें कोई भूल दिखलाई दे तो वे हमारी असमर्थता को पहचानकर सहृदयता पूर्वक क्षमा प्रदान करनेकी कृपा करें। और हमें सूचित कर दें ताकि अगले संस्करणमें उसे ठीक कर दी जाय।

इस वृहद् कार्य्यको सर्वाङ्ग पूर्ण सम्पन्न करनेकी हम लोगोंमें शक्ति न थी हम तो केवल इसके निमित्त मात्र थे। इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेका तमाम श्रेय उन व्यापारी महानुभावोंको है जिन्होंने हमें हमारी सफलताकी ओर अग्रसर कर यह ग्रंथ प्रकाशित करनेके योग्य बना दिया। हम उन सब महानुभावोंके प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं। ऊपर कुंवर हीरालाल जी और श्रीयुत भंवरलाल जीका नाम तो हम लिख ही चुके हैं, इनके अतिरिक्त उज्जैनके श्रीयुत धनसुखलालजी पाण्ड्या, अजमेरके श्रीयुत फतनमल जी लोढ़ा, नीमचके श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया, बीकानेरके श्रीयुत सेठ हजारीमलजी सेठिया और चूरूके श्रीयुत शुभकरण जी सुराणा इत्यादि सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने हमें कई परिचय पत्र देकर हमारे मार्गको सुलभ कर दिया। श्रीयुत मोहनलालजी बकलीवालने इस ग्रन्थके प्रारम्भमें भारतका व्यापारिक इतिहास नामक निबन्ध लिख देनेकी कृपा की है इसके लिए हम उनके भी अत्यन्त आभारी हैं। बम्बईके श्रीयुत कृष्णकुमारजी मिश्रने भी इस ग्रन्थके सम्पादनमें हमें बहुत सहायता प्रदान की है जिसके लिए उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना भी हम अपना कर्तव्य समझते हैं। इसके अतिरिक्त "मुम्बईनो व्यापारिक अनुभव" "मुम्बईनी गली कुंचिओं" "मुम्बईना महाजनो" भारतकी साम्पत्तिक अवस्था" "ग्वालियर स्टेट डायरेक्टरी" मारवाड़ राज्यका इतिहास" "बम्बई डेरेक्टरी" आदि ग्रन्थोंसे भी इस ग्रन्थमें सहायता मिली है अतः इनके लेखकोंके प्रति भी हम हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं।

इस ग्रन्थके दूसरे भागमें कलकत्ते, और बंगालके व्यापारियोंका परिचय रहेगा। हमें आशा है कि उसे हम इससे भी अधिक सुन्दर और सर्वाङ्गपूर्ण बनानेकी चेष्टा करेंगे।

विनीत

संचालक—

कमर्शियल बुक, पब्लिशिंग हाउस

[illegible]
[illegible] कलकत्ता
१९२८

विषय-सूची

प्रकाशकीय वक्तव्य १-४

भारतका व्यापारिक इतिहास १-२६

भारतका पूर्वकालीन व्यापार, मुसलमानी कालमें भारतका व्यापार, अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतीय व्यापार।

वर्तमान व्यापार ३२

भारतका आयात व्यापार ३५-६३

ऊनी कपड़ा, रेशम और रेशमी पदार्थ, रेशमी कपड़ा, नकली रेशमका कपड़ा, चीनीका व्यवसाय, लोहा और फौलाद, अन्य धातुएं, मिलके पदार्थ और मशीनरी, रेल्वे सामग्री; मोटर गाड़ियां, मोटर साईकल्स, मोटर लारीज, रबरके पदार्थ, विविध धातुकी बनी हुई चीजें, खनिज-तेल, बने हुए खाद्य पदार्थ, मादक पदार्थ, कागज और पुट्ठा, रासायन पदार्थ, जड़ी बूटियां और औषधियां, नमक, औजार यंत्र आदि, खाद्यान्न मसाले, सिगरेट, रंग, जवाहरात और मोती, दियासलाई, कोयला

भारतका निर्यात व्यापार ६३-८६

पाट और पाटके बने पदार्थ, बोरे, चट्टी, कपड़ा, पाटका इतिहास, पाटकी खेती, पाटका दाम, मालकी बिक्री, जूटमिल्स, जूटमिल्स असोसियेशनकी स्थापना, वर्तमान शताब्दीमें जूटके उद्योगकी उन्नति, रुई, रुईका बना माल, धान्य और आटा, गेहूं, गेहूंका आटा, अन्य खाद्यपदार्थ, चाय, तिलहन, चमड़ा, धातु, लाख, ऊन, रबड़, खल और तमाखू।

बम्बई—विभाग

पूर्वकालीन परिचय १-२५

- बस्ती का आरम्भ २
- नामकरण ४
- दीपपुंज से नगर ६
- म्युनिसिपल कार्पोरेशन ८
- पुलिस १०
- आगसे बचाव ११
- बम्बईका व्यवसायिक विकास ११
- बम्बईके व्यवसायिक स्थल एवं बाजार १६
- बम्बई नगरकी बस्ती १८
- बम्बईका सामाजिक जीवन २०
- बम्बईके कसाईखाने और पशुओंकी करुणाजनक स्थिति २२
- बम्बईके व्यापारिक साधन २३
- बम्बईसे दूसरे देशोंको जानेवाला जहाजी किराया २७
- बम्बईके दर्शनीय स्थान ३१
- चेम्बर और असोसियेशन ३५

फैक्ट्रीज एण्ड इंडस्ट्रीज ४०—५५

- बम्बईकी कपड़ेकी मिलें ४०
- मिलोंका इतिहास और क्रमागत विकास ४०
- मिल व्यवसायमें पूंजी प्रथाका जन्म ४०
- मिल व्यवसायके प्रधान प्रवर्तक ४१
- जापानी प्रतियोगिताका आरम्भ ४१
- बम्बईकी मिलोंका परिचय ४१
- रेशमके कारखाने ४२
- ऊनके कारखाने ४२
- लोहेके कारखाने ४३
- सिमेंट कम्पनी ४४
- रंग और वार्निश ४४
- चांवलकी मिल ४४
- पेपरमिल ४४
- कपड़ा गलिचा कारखाना ४४
- लकड़ीका कारखाना ४५

बैंकर्स (बीकानेर, गंगाशहर भिनासर)	११६-१३२
व्यापारियों के पते	१३२-१३७
सुजानगढ़	
प्रारंभिक परिचय	१३८
व्यापारियों का परिचय	१३८-१४३
व्यापारियों के पते	१४४
[illegible]-छापर	
प्रारम्भिक परिचय	१४४
व्यापारियों का परिचय	१४५
रतनगढ़	
प्रारम्भिक परिचय	१४७
व्यापारियों का परिचय	१४७-१५१
व्यापारियों के पते	१५२
राजगढ़	
प्रारम्भिक परिचय	१५३
व्यापारियों का परिचय	१५३
व्यापारियों के पते	१५४
चूरू	
प्रारम्भिक परिचय	१५५
व्यापारियों का परिचय	१५६-१६१
व्यापारियों के पते	१६१
सरदार शहर	
प्रारम्भिक परिचय	१६२
व्यापारियों का परिचय	१६२-१६६
व्यापारियों के पते	१६६
डूंगरगढ़	१६६
[illegible]	१६७
प्रारंभिक परिचय	[illegible]
व्यापारिक स्थिति	[illegible]
दर्शनीय स्थान	१७०
व्यापारिक [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
बैंकर्स	[illegible]
व्यापारियों के पते	[illegible]
[illegible]	
प्रारम्भिक परिचय	[illegible]
व्यापारियों का परिचय	१७८
व्यापारियों के पते	[illegible]
[illegible]	
प्रारंभिक परिचय	१८०
[illegible]	१८०
बैंकर्स	[illegible]
व्यापारियों के पते	[illegible]
[illegible]	
प्रारंभिक परिचय	१८६
काटन मरचेंट्स	१८६-१८८
व्यापारियों के पते	१८८
जोधपुर	
प्रारंभिक परिचय	१९१
ऐतिहासिक परिचय	१९१
दर्शनीय स्थान	१९२
व्यापारिक परिचय	१९२
व्यापारियों का परिचय	१९३
व्यापारियों के पते	१९३-१९६
लाडनूं—	
प्रारंभिक परिचय	१९६
व्यापारियों का परिचय	१९७-२००
डीडवाना—	
प्रारंभिक परिचय	२००
व्यापारियों का परिचय	२००-२०१
व्यापारियों के पते	२०२
मूंडवा-मारवाड़	
प्रारंभिक परिचय	२०२
व्यापारियों का परिचय	२०३-२०४
व्यापारियों के पते	२०४
पाली	
प्रारम्भिक परिचय	२०५
व्यापारियों के पते	२०६
कुचामन	
प्रारम्भिक परिचय	२०७
व्यापारियों का परिचय	२०८
मकराणा—	
प्रारंभिक परिचय	२०९
व्यापारियों का इतिहास	२०९
व्यापारियों के पते	२१०
उदयपुर	
प्रारंभिक परिचय	२११
दर्शनीय स्थान	२११
व्यापारिक परिचय	२११
बैंकर्स	
क्लाथ मरचेंट्स	२१२-२१४
व्यापारियों के पते	२१४-२१५
किशनगढ़	२१६
प्रारंभिक परिचय	२१७
व्यापारियों का परिचय	२१७
व्यापारियों के पते	२१८

भारतके व्यापारका इतिहास

HISTORY OF INDIAN TRADE

भारतका व्यापारिक इतिहास

'भारतवर्षके व्यापारियोंका परिचय' नामक इस विशाल ग्रंथके आदिमें भारतके व्यापारका परिचय देना आवश्यक है। जहां व्यापारियोंका परिचय है, वहां व्यापारका परिचय पहले आना चाहिए। इतिहासका लिखना एक साधारण बात नहीं और सो भी मुझ जैसे लेखकके लिए यह काम और भी कठिन है। जिस पर भी और सब बातोंका यथा—प्राचीन वा अर्वाचीन शासकोंका परिचय, युद्ध लड़ाई विद्रोहका वर्णन, सामायिक, धार्मिक या राजनैतिक परस्थिति--का इतिहास लिखना और बात है। यह सब आज कल हमारी स्कूलोंमें छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक पड़ाया भी जाता है इसके अतिरिक्त प्राचीन अर्वाचीन शासकों, विजेताओं, राजाओं, बादशाहों आदिके चित्र और चरित्र भी मिल जाते हैं पर हमारा व्यापारिक इतिहास और व्यापारियोंका परिचय मिलना कठिन है। इस लिए इस विषयको सुसम्बद्ध रूपमें जुटा देना इस ग्रंथके प्रकाशकोंका एक महत्वपूर्ण कार्य है। देशके व्यापारियोंका यह परिचय आज ही नहीं पर जब तक व्यापार रहेगा--चाहे वह आजसे अच्छा हो या बुरा, उन्नत हो या अवनत, उसका अस्तित्व रहना अनिवार्य है—तब तक यह ग्रन्थ भी व्यापारियोंके गौरव और महत्वकी सामग्रीके रूपमें रहेगा।

व्यापार क्या है—यह बताना कठिन है, क्योंकि आज इसके महत्वको हम भारतवासी भूल गये हैं हमारा व्यापारिक ज्ञान विदेशियों द्वारा हरण कर लिया गया। यह बात नहीं है कि भारतवासी इसका महत्व जानते ही नहीं थे—नहीं, भारत व्यापारके महत्वसे भलीभांति परिचित था और उसके इस महत्वने ही विदेशियोंकी आंखें--उनका ध्यान-इसकी ओर खींची। इसी व्यापारने उन्हें सात समुद्र पारसे यहां बुलाया। वे भारतकी उन्नतावस्था-समृद्धावस्था-देखकर इसके महत्वको समझ गये-समझे ही नहीं पर इस महत्वपूर्ण कार्यको प्राप्तिमें लग भी गये और आज उसीके बल या यों कहा जाय कि उसकी रक्षा या उसे अपने अधिकारमें बनाये रखनेके लिए ही भारतपर राज्याधिकार कर रहे हैं।

भारतकी वह लक्ष्मी, वह धन वैभव, वह समृद्धावस्था किसके बल पर थी! यहां क्या धनकी नदी बहती थी, या वह यहांके पहाड़ोंमें होता था अथवा क्या उसकी खेती होती थी! वह केवल था 'व्यापार' के बल पर। इसी लिए निस्वार्थी ऋषि-महर्षियोंने इस धनका मूल मंत्र 'व्यापारे वसते लक्ष्मी' कह दिया। भारत सन्तान इस मूल मंत्रको भुला गई और इसी लिए एक दिन जो संसार में सबसे अधिक वैभव शाली था वही भारत आज सबसे अधिक निर्धन और दरिद्री बन रहा है, जीर्णशीर्ण कलेवर हो रहा है और धनशालिता तो दूर पर भर पेट रोटीके भी लाले पड़े रहे हैं। लक्ष्मीके भंडार इस भारतने लक्ष्मीको नहीं भुलाया, लक्ष्मी इससे नहीं रूठी, वह यहांसे भाग नहीं गई, पर यों कहना चाहिए कि इस भारतने लक्ष्मीके भंडार व्यापारको भुलाया, उससे व्यापार रूठ गया और वह सात समुद्र पार चला गया। इसीसे भारतकी आज यह दशा है।

व्यापार लक्ष्मीका निवास भंडार है, और लक्ष्मी देवी भारतसे विदा ले गई, इससे स्वतः यही निष्कर्ष निकलता है कि व्यापार यहांसे चला गया। इसलिए यदि भारतकी दुःख दरिद्रावस्था की आलोचना और उसके सुधारका प्रयत्न करना है तो उसके व्यापारकी आलोचना, उसका विचार विमर्ष और उसमें सुधार करनेकी पूर्ण आवश्यकता है। आज, व्यापार लक्ष्मीका भंडार है केवल यह मानकर समयकी स्थिति गतिको साथे समझे बिना काम करनेसे नहीं चलेगा, क्योंकि आज सब कुछ परिस्थिति बदल गई है। व्यापार यहांसे चला गया—यह ठीक, पर जो कुछ रहा वह भी विदेशियोंके हस्तगत है। पूर्वकालमें हमारे ग्रामों या नगरोंमें हमारी छोटीसे लेकर बड़ी आवश्यकता तककी पूर्तिके स्थानीय साधन विद्यमान थे किसीके परमुखापेक्षी होनेकी आवश्यकता न थी; उदर भरनेके लिए अन्न ही नहीं पर घी दूध दहीका भी यहां भंडार था, लज्जा और शीतोष्ण निवारण करनेके लिए वस्त्रोंकी-सो भी ऐसे बढ़िया कि जिनपर विदेशी मोहित थे-यहां पर समुचित प्राप्ति थी। अपने अपने ग्राम और नगरमें नित्य व्यवहार्य वस्तुओंकी प्राप्तिमें कोई कठिनाई न थी और यहांके निवासी खा पीकर बड़े सुखसे दिन व्यतीत करते थे। व्यापार भी था तो लक्ष्मी भी उपस्थित थी और इसी लिए 'व्यापारे वसते लक्ष्मी' का मंत्र बन गया। व्यापार भी उस समय आज कलकी तरहका न था कि जिसमें पद पद पर हानिकी आशंका अधिक और मुनाफेकी सम्भावना कम। उस समय भी बाहरसे माल आता था और यहांसे जाता भी था पर इस यन्त्र कला और मशीनरीका उस समय उदय नहीं हुआ था और आज कलकी तरह विदेशी पदार्थोंसे भारतीय बाजार पाटे नहीं जाते थे और न आने लेजानेवाले पदार्थोंमें हानिका ही इस तरह भय रहता था। आज अभी पहलेके ऊँचे दामोंके खरीद किये हुए मालका आकर खपना तो दूर रहा पर उसके पहुंचनेके पूर्व ही आगेके आवदानी मालके भावका तार मंदा आ आजाता है और एकदम दाम घट जाते हैं,एवं बाजारमें रेल पेल मच जाती है। इसी प्रकार मशीनके उद्योगके बलपर पदार्थोंका नि-

मांग दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है और इनके बनाने वाले देश इसी चिंता व प्रयत्नमें लगे हैं कि किस तरहसे अपने यहांके पदार्थोंको अधिकसे अधिक परिमाणमें भारतमें खपा सकें। उस समय न रेल थी न जहाज और न तार ही, पर तौ भी सुखशांति और समृद्धिका साम्राज्य था, पेट भर खानेको मिल जाता था। अन्न दूध घी से गृहस्थोंके घर भरे रहते थे और केवल यही पदार्थ नहीं पर आवश्यकीय सब सामग्री उपलब्ध थी। आज वहीं ये पदार्थ व्यापारके द्रव्य बन गये हैं। जिस भारतका कलाकौशल, कृषि शिल्पादि समस्त संसारको चकित करता था वही भारत आज विदेशी पदार्थोंपर मोहित और आश्रित हो रहा है। जो भारत एक दिन विद्या बुद्धि और शिल्पचातुरीका केन्द्र था वहां पर अब ये बातें मानों रही हो नहीं, तभी तो ये सब सीखनेके लिए भारतवासियोंको योरप जाना आवश्यक हो रहा है। जहां अपने आप सब कुछ करके सुखशान्तिसे जीवन निर्वाह कर लिया जाता था वहां अब औरोंसे मिले बिना, नौकरी चाकरीकी खोज और अहर्निशि दौड़ धूप किये बिना गुजर ही नहीं हो सकता। नवीन वाष्पीय यन्त्रोंके आविष्कार और विदेशियोंके संघर्षने भारतके प्राचीन वाणिज्य व्यवसाय, कलाकौशल, उद्योग धंधेको मटिया मेट कर दिया। अभी इस पर भी उन विदेशोंकी आशातृप्ति या भूखशान्ति हो गई हो सो बात नहीं है पर यन्त्रकलाके निरन्तर बढ़ते जानेके कारण उन देशोंकी भूख और भी बढ़ती जा रही है और वे उद्योगी देश संसारके समस्त वाणिज्य और धनको हड़पना चाहते हैं।

आज ऊपरी दृष्टिसे देखनेपर भारतमें भी व्यापारका जोरशोर बड़ा भारी दिखलाई देता है, देशके इस छोरसे उस छोरतक जान पड़ता है कि बड़ा भारी व्यापार हो रहा है, कलकत्ता, बम्बई; और करांचीके बन्दरगाह विदेशोंके लाये हुए एवं विदेशोंको ले जानेवाले मालसे लदे हुए दिखलाई पड़ते हैं। इसी भांति देशमें मिल कारखानों तथा दूसरे उद्योग की भी बढ़वारी जान पड़ती है,पर यह सब देखकर भ्रममें आना बड़ी गलती होगी और इस बातके लिए थोड़ी सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेकी आवश्यकता पड़ेगी यदि विदेशोंके मुकाबलेमें देखा जाय तो भारतका जो कुछ और जिस तरहका भी व्यापार आज है वह उसकी जनसंख्याके परिमाणमें बहुत कम है एवं वह भी मुख्यतया विदेशोंके लाभ और उनके ही परिपालनके लिए है न कि भारतके कुछ हित या समृद्धिके लिए। यहांके निर्यात किये हुए पदार्थों से विदेशोंका काम चलता है और यहांके आयातसे उन विदेशोंके उद्योग धंधे पलते हैं अर्थात् वहांके बने हुए पदार्थ हमारे आयातके रूपमें हमें ठूसे जाते हैं। आज भारतमें रेल, तार, जहाज आदि जो हैं वे सब भी मुख्यतया उस विदेशी व्यापारके साधन उत्तेजनाके अर्थ हैं न कि भारतके किसी लाभके लिए। यह नहीं कि केवल विदेशों हीमें उद्योग या यंत्र प्रयोग बढ़ा हो, भारतमें भी उद्योग या कल-कारखानोंकी वृद्धि हुई है पर देशके दुर्भाग्य और उन विदेशोंकी रीति-नीति या प्रतिद्वन्द्विताके कारण या तो यहांके इन उद्योग धन्धोंकी दशा शोचनीय है या अधिकतर इनमें विदेशी पूंजी लगती है

जिससे जो लाभ होता है वह भारतवासियोंको नहीं पर पूंजी लगानेवाले उन विदेशी पूंजी पतियोंको मिलता है। इस तरहसे यहांके उद्योग धन्धे या कल कारखानोंमें जो मुनाफा रहता है वह भी मुख्यतया उन विदेशियोंके ही जेबोंमें जाता है और इस भांति विदेशी माल या विदेशी पूंजी भारतीय कला और उद्योगोंके मुख्य नाशकारी साधन हो रहे हैं!

आज भारत चाहे जितना दीन दरिद्री हो, पर प्राचीन कालमें वह इतना धनी था कि उसके जोड़का संसारमें शायद ही कोई दूसरा देश हो। अलेकजेंडरसे लेकर कितने विदेशी न जाने कितना धन लूट लूटकर यहांसे ले गये। जब महम्मद गोरी यहांसे लूटकर लौटा तो उस लुटे हुए धनका कुछ परिमाण नहीं था। अकेले नगरकोटकी लूटसे उसे ७ लाख स्वर्ण दीनार, ७००मन सोने चांदीके पाट, २०० मन खालिस सोनेकी ईंटें, २००० मन बिना ढली हुई चांदी और २० मन जवाहिरात जिनमें मोती, मूंगा, हीरा पन्ना आदि कई प्रकारके रत्न थे, हाथ लगे। इसी प्रकार न जाने कितने हमले हुए और विदेशी यहांसे कितना द्रव्य भरकर ले गये। नादिरशाहकी लूटका अनुमान ९ अरब रुपयेसे अधिकका किया जाता है। इसी भांति मुहम्मद बिन कासिमने मुलतान विजय किया तो उसे केवल एक मन्दिरसे १३२०० मन सोनेके बराबर धन मिला। सुलतान महमूदने भीमनगरके एक मंदिरको लूटा तो वह धन दौलत और रत्न भण्डारका लादकर ले जाना ही उसके लिये कठिन हो गया। जितने ऊंट मिले सब पर लादकर वह ले गया। चांदी और सोनेका वजन ७००,४०० मन हुआ और जब गजनीमें पहुंचकर उसने उस लूटे हुए द्रव्यको खोला तो उसे देखकर उसके दरबारी दंग रह गए, वह सब माल इतना था कि उन लोगोंने देखा तो क्या कभी सुना तक भी नहीं था। कन्नौजमें वहांके वैभवको देखकर महमूदके मुंहसे निकल गया कि ओहो! यह तो स्वर्ग ही है। उस स्वर्ग भूमि भारतका आज यह क्या हुआ! जिसकी सभ्यता, उन्नता संस्कृति आदिका ढिंढोरा चारों ओर था वही ऐसा गिरा, ऐसा निस्तेज हुआ कि आज उसके जोड़का गया बीता अन्य कोई नहीं है। अफीमची चीनके साथ भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह सब क्या हुआ? वह लक्ष्मी कहां चली गई? कहना होगा कि जहां व्यापार गया वहीं पर गई और इसीके कारण भारतकी आज यह दशा है। कहा भी है:—

> दारिद्र्याद् ह्रियमेति ह्री परिगतः सत्वात् परिभ्रश्यते,
> निःसत्व परिभूयते परिभवान्निर्वेद मा पद्यते।
> निर्विण्णः शुचमेति शोक निहतो बुद्ध्या परित्यज्यते,
> निर्बुद्धिः क्षय मेत्य हो निधनता सर्वापदा मास्पदम्॥

कवि शूद्रक स्पष्ट कहता है कि दारिद्र्य सब आपदाओंका घर है। इस बातका प्रमाण भारतकी वर्तमान दशा है। सब गुणोंको दारिद्रने ढंक दिया। ऐसी हालतमें अन्य सब गुण कर भी क्या सकते थे, उन्हें तो चमकनेके लिए ठौर ही नहीं। आज शक्ति, यश, सत्ता, साहस, आत्माभिमान, आत्म गौरव

आदि सब गुण न जाने कहां चले गये। कहां है वह बल और आदर? आज विदेशोंमें आदरकी बात तो दूर रही पर घरकी घरमें बुरी दशा है। बाहर जो अपमान निरादर होता है उसकी बात छोड़ देने-पर भी अपने यहांकी दशाका मिलान एक साहब और भारतीयके मान, इज्जत, आदरके भेदसे भली-भांति हो जाता है। यहां यह शंका हो सकती है कि एक दारिद्र्य अवगुणके होनेसे ऐसी दशा क्यों हुई या एक अवगुणके होनेसे अन्य सब गुणोंका क्या हुआ? एक अवगुण होनेसे अन्य गुणोंको भागनेकी क्या आवश्यकता आपड़ी और इस तरह एक अवगुणका इतना प्रभाव भी कैसे चल सका? महाकवि कालिदासने कहा है:—

"एकोहि दोपो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः" कि अनेक गुणोंमें दोप इस तरह छिप जाता है जैसे चन्द्रमाकी मनोहर उज्वल कान्तिमें उसका कलङ्क। हो सकता है, अन्य किसी अवगुणके लिये यह बात हो सके कि वह अन्य गुणोंमें अपना प्रभाव न बता सके और स्वयं ही उन गुणोंके बीच छिप जाय, पर दारिद्र्यका दोप ऐसा वैसा साधारण अवगुण नहीं कि वह छिप जाय या अपना प्रबल प्रभाव दिखाये बिना रह जाय। इसलिए एक अन्य कविने क्या ही अच्छा कहा है:—

"एकोहि दोपो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः इतियोबभापे।
नूनं न दृष्टः कविनापि तेन दारिद्र्य दोपो गुणराशि नाशीः॥

वह कहता है कि गुणोंके समुदायमें एक दोप छिप जाता है ऐसा जिस कविने कहा उसने यह बात नहीं देखी या विचारी कि दारिद्र्य सब गुणोंका-गुणोंके ढेर पुंजका-नाश कर देता है। सत्य है प्रत्यक्ष प्रमाणित बात है। तभी तो दारिद्र्यके प्रति पक्षी—धनमें यह गुण है कि सब गुण उसमें आ जाते हैं, जहां वह है वहां सब गुणोंका निवास है। जिस भांति दारिद्र्यमें सब दोप आ जाते हैं उसी भांति धनमें सब गुण आजाते हैं। आ किस तरह जाते, धन उन्हें बुलाने नहीं जाता है। वे सब स्वयं चले आते हैं आते ही नहीं पर आश्रय ले लेते हैं। तभी कहा है "सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति" इसलिए, यदि भारतको अपने दुर्दिन भगाने हैं पहली सी बात बनानी है तो लक्ष्मीका आह्वान एवं उसके भंडार व्यापारका आश्रय लेना चाहिए। यही एक ऐसा साधन है जो गई हुई लक्ष्मीको फिरसे ला सकता है। मनु महाराजने लिखा है:—

व्यापार राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, इससे राज्यका सम्मान बढ़ता है, देशके व्यापारी वर्गको उद्यमकी प्राप्ति होती है और कला-कौशलकी उन्नति होती है। यह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति और काम धन्धेकी जुगाड़का साधन है, इससे शत्रु भयभीत रहते हैं और राज्यके लिए यह परकोटेका काम देता है। इससे नाविकोंका पालन होता है युद्धकालमें बड़ी भारी सहायता मिलती है और संक्षेपमें बात यह है कि यह लक्ष्मीका निवास है।

मनु महाराजने व्यापारकी महिमाका वर्णन करते हुए उसके सब अङ्गोंका वर्णन कर दिया है।

जबतक ये बातें उसमें नहीं होती तबतक हम उसे हमारा व्यापार कैसे कहें एवं वह लक्ष्मीका निवास कैसे हो सकता है। आज भारतका व्यापार हमारा व्यापार नहीं है,वह विदेशी राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, विदेशी व्यापारीवर्गके लिए उद्यमकी प्राप्ति और कला कौशलकी उन्नतिका साधन है। व्यापारके साथ देशके उद्योग धंधेकी, कला कौशलकी, सामुद्रिक बेड़ेकी और उसके धन वैभवकी बढ़वारी होनी चाहिए। जबतक ये बातें नहीं तबतक हमारा व्यापार नहीं है, यही कहना उपयुक्त होगा एवं कहना पड़ेगा कि आज भारत व्यापारहीन, कला कौशल और उद्यमहीन हो रहा है, यह सब विदेशी शासकों की कृपाका फल है। उनके गत एक शताब्दिके शासनने भारतको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और व्यापारिक सब परिस्थितियोंमें गिरा दिया। इन सब बातोंमें सिरमौर रहनेवाले भारतकी प्राचीन कालमें व्यापारिक दशा कैसी थी यह सबसे पहले विचारणीय है।

भारतका पूर्वकालीन व्यापार

भारतमें धनकी नदी बहती थी, माल खजानेका यहां ढेर था, इस धनके भंडार-सागरमेंसे न जाने कितने विदेशी कितना माल भर भरकर लेगए। भारतकी ऐसी समृद्धि निश्चय ही व्यापारके कारण थी। व्यापारके बिना लक्ष्मी कहांसे आती और लक्ष्मी थी यही बात भारतमें व्यापारकी उन्नतावस्थाका पक्का प्रमाण है। जिस भांति भारत लक्ष्मीका निवासस्थान था उसी भांति वह व्यापारका भी केन्द्र था। ई० सन्से ६-७ सौ बर्ष पहले भारतका व्यापार इटली, यूनान, मिश्र, फोनीसिया, अरब, सीरिया पारस, चीन और मलाया आदि देशोंके साथ होता था। बहुत प्राचीन काल अर्थात् मनुमहाराज के समयमें यहां जहाज बनाये जाते थे और उनसे समुद्रयात्रा की जाती थी इस बातका वर्णन मिलता है। भारतवासियोंके हाथमें व्यापारकी डोर थी इसका मिश्रके ग्रन्थोंमें विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है; जिनमें यह भी लिखा है कि भारतीय पोत समुद्रोंमें विचरते थे। जो कुछ प्राचीन प्रमाण मिलते हैं उनसे यह भली भांति सिद्ध होजाता है कि भारतका भीतरी एवं विदेशी व्यापार निश्चयही २५०० वर्षसे लेकर सम्भवतया ४०००वर्ष पूर्वतक अच्छी तरह चलता था। यद्यपि अंगरेज सरकारके शासनमें आजकल जिस भांति व्यापारिक आंकड़े मिल जाते हैं, वैसे प्राचीन कालमें नहीं मिलते तथापि प्राचीन वर्णनसे आजकलके और पहलेके व्यापारिक ढंगका पता भलीभांति चल जाता है। मिस्टर डेनियल (Mr. Daniell) ने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारत उन्हीं पदार्थोंको बाहर भेजता था जो उसके यहां अधिक होते थे और वे पाश्चात्य एशिया, ईजिप्ट और योरपमें भारी दामोंमें बिकते थे वे पदार्थ भारतके सिवा और कहींसे प्राप्त ही न हो सकते थे। यह थी भारतीय पदार्थोंकी महिमा। इसी भांति बुद्ध-कालीन भारतके विषयमें राइसडेविडने (Rhys David) लिखा है कि रेशम, मलमल, बढ़िया कपड़े, अस्त्र शस्त्र, जरी बूंटोंकी कामदानियां और कमलें, सुगंधित पदार्थ,

और जड़ी बूटियां, हाथी दांत और उसके बने पदार्थ, जवाहिरात और सोना चांदीके व्यापारके मुख्य पदार्थ थे। भारत उस समय अपने यहांसे बने हुए माल (Manufactures) को बाहर भेजता था और उसके आयातमें चीनसे रेशम और रेशमी पदार्थ, सीलोनसे मोती और पश्चिमी पड़ोसी देशोंसे अन्य जवाहिरात तथा काच आना, और चीनसे चीनी मिट्टीके पदार्थ आते थे पर वे बहुत थोड़े होते थे और उनका ऐसा कोई महत्व नहीं था। प्राचीन कालमें भारतको अपने उद्योगके लिए बाहरसे कच्चा माल मंगाना नहीं पड़ता था। (चीनसे थोड़े रेशमके सिवा) सब कच्चा माल यहीं प्राप्त होजाता था। मुख्यतया रुई एक ऐसा पदार्थ है जिससे कपड़े बनानेकी कारीगरी बड़ी महत्वपूर्ण थी और जिसकी प्रशंसा मेगस्थनीज़ने चंद्रगुप्त मौर्य (३२१ से २९७ ई० पूर्व) के कालमें इन शब्दोंमें लिखी है:—"यहां एक वृक्षके ऊन लगती है जो भेड़का ऊनसे नर्म और सुन्दर होती है" निश्चय ही यह पदार्थ रुई था। इसी भांति नीलसे बने रङ्ग भी उल्लेखनीय है। *रुईसे कपड़ा बनाने और रंगनेकी भांति रंगका भी यहां प्रधान उद्योग था।* हाथी दांत यहांके निर्यातका मुख्य पदार्थ था, इसी भांति डा० मुकरजी लिखते हैं कि कस्तूरी भी यहां से बाहर भेजी जाती थी। हाथी यहांसे स्थल मार्गसे बाहर भेजे जाते थे और पक्षियोंमें यहांके मयूर पक्षी मुख्य उल्लेखनीय है जिसे अलेकजेंडरके समीपवर्ती कालमें मिश्रवाले बहुत पसन्द करते थे।

कपड़ेके बाद भारतीय बने हुए पदार्थोंके निर्यातमें मुख्यतया लोहा और फौलादके बने पदार्थ भी बहुत महत्व रखते हैं। भारतवासी लोहेके पदार्थ बनानेमें बड़े कुशल थे इस बातके प्रमाणके लिए विशेष परिश्रमकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि हिरोडोटसनने लिखा है कि पारसके राजा जेरजस (Parsian King xerxes)की सेनाके भारतीय सैनिक ऐसे धनुषबाण लिये हुए थे जिनमें लोहा जड़ा था। मौर्यकालमें लोहकार ज्ञातिका उल्लेख भलीभांति मिलता हैं। मौर्य शासनके उदय कालसे कमसे कम५ शताब्दी पूर्वका वर्णन करते हुए केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया नामक पुस्तकमें लिखा है कि धातुके पदार्थ बनानेवाले कच्ची धातुको भट्टियोंमें गलाते थे और उससे घरेलू पदार्थ बरतन आदि बनाते थे। यह भलीभांति सिद्ध है कि मौर्यकालमें लोहेके उद्योगकी काफी उन्नति हो चुकी थी। ६०० वर्ष बाद तो इस काममें और भी निपुणता आ गई थी। दिल्ली और धारमें आज जो लोह-स्तम्भ खड़े हैं वे इसके पूर्ण प्रमाण हैं। इस तरहकी कारीगरीका उदय एक दिनमें होना सम्भव नहीं और यह निश्चय ही शताब्दियों पूर्वसे चले आए हुए उद्योगके विकासका फल होना चाहिये। इस प्रकार यह अनुमान कर लेना अनुचित नहीं होगा कि भारतमें ईसाके कई शताब्दी पूर्व सब तरहके अस्त्रशस्त्र और जिरहबख्तर बनते थे। लोहेके पदार्थ बनानेके लिए यहां कच्चा लोहा काफी परिमाणमें होता था और इसीलिए यहांकी आवश्यकतापूर्तिके बाद लोहेके बने पदार्थोंका निर्यात बाहर किया जाता था।

[illegible] लकड़ीका शिल्प आता है। पूर्वकालमें भारतमें जहाज बनते थे, इससे लकड़ीका शिल्प यहाँ विकसित था—यह बात सिद्ध हो जाती है। मुकुरजीने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारतमें [illegible] एक हजार या पन्द्रह सौ टन तकको भरतीके जहाज बनाये जाते थे। क्योंकि जहाजोंका निर्माण कार्य एक राष्ट्रीय आवश्यकता समझी जाती थी इसलिए उस जमानेमें जहाजोंके बनानेके कारखानों पर राज्यका अधिकार रहता था। मेगास्थनीजने लिखा है कि "अस्त्र शस्त्र और जहाजोंके बनानेवाले शिल्पी लोग राज्यसे वेतन पाते हैं और वे लोग केवल राज्यका काम करते हैं"। चन्दन और [illegible] लकड़ी भी यहाँसे बाहर भेजी जाती थी।

[illegible] सीसा, टीन और शीशा यहाँ बाहरसे आता था। सोना प्राचीन कालमें भारतमें निकाला जाता था। इस विषयमें मि॰ केनेडी (Mr. Konnedy.) ने लिखा है कि सोना [illegible] मिलता था और वह धूलिके रूपमें बाहर भेजा जाता था। कुछ मत यह भी है कि सोना और चांदीका यहाँ आयात होता था। भारतके निर्यात किये हुए पदार्थोंके मूल्य [illegible] और उसके बदलेमें स्वर्णका आयात इतना भारी होता था कि जिसे देखते हुए [illegible] कल्पना भी कठिन हो जाता है। लेकिन साथ ही यह बात है कि महमूद [illegible] लुटेरे भारतसे जो अमित धनराशि, स्वर्णके आभूषण और सिक्के आदि लूटकर ले गये, [illegible] मालके मूल्यमें बाहरसे मिले हुए स्वर्णसे संग्रहित हो जाता [illegible]। इसलिए भारतमें सोनेकी स्थानीय प्राप्ति मान लेना भी असंगत नहीं जान पड़ता। इसके [illegible] खानोंके वर्तमान सुरंगोंमें इस बातके चिह्न मिलते हैं कि यहाँ पहले खुदाई हुई थी और सोना निकाला गया था।

[illegible] साथ जवाहरातका कारबार प्राचीन कालसे होता रहा है। इसमें मोती मुख्य थे। [illegible] यहाँ बहुत भारी था। यहाँ मोती, मूंगा, गोमेद, फिरोजा आदि रत्नोंका [illegible] भी आवश्यकताकी पूर्तिके बाद यहाँसे बाहर भेजे जाते थे।

[illegible] व्यापारिक पदार्थ मसाले, जड़ी बूटियाँ, मिर्च, दालचीनी, इलायची, लौंग, [illegible], कपूर, अफीम, कस्तूरी और पुष्पसार तेल आदि थे। पुष्पसार और तेल [illegible] हैं जिनकी रोममें बड़ी मांग रहती थी। मसाले आदि [illegible] रहे हों। और यहाँ जिस समयका वर्णन है उसके [illegible] परिमाणमें आ रहे हैं। इसलिए सम्भव है कि [illegible] आयात और यहाँसे निर्यात दोनों ही होते रहे हों। निश्चय ही [illegible] और पुनः यहाँ आयात होता [illegible] देशोंको निर्यात कर दिया जाता था।

इस भांति ई० १००० वर्षतक भारतके प्राचीन व्यापारपर दृष्टि डालनेसे यह निष्कर्ष निकलता है कि उसके निर्यातका अधिकांश भाग बना हुआ या पक्कामाल होता था। कच्चा माल भी जाता था मगर बहुत कम खाद्य पदार्थोंमें मुख्यतया मसाले आदिका निर्यात होता था। मालके मूल्य पर भी विचार करनेसे यही मानना पड़ेगा कि आयातसे निर्यात अधिक होता था। जिसमें मुख्य भाग सब तरहके कपड़ेका था। प्राचीनकालमें भारत पश्चिमसे जो स्वर्णमुद्रा और धन खींचता था वह मूल्यवान निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप नहीं तो और क्या था। प्लाइनी (pliny) ने प्राकृतिक इतिहास (Natural History) में लिखा है कि "ऐसा कोई वर्ष नहीं था जब भारत रोम साम्राज्यसे १ करोड़ सेसटर्स नहीं खींच लेता था। यह द्रव्य आजकी विनिमय की दरसे १० लाख पौंड या १½ करोड़ रुपयेके बराबर होगा। यद्यपि आज शताब्दियों के बीतजाने पर भी यहांके आयातसे निर्यातकी तादाद अधिक होती है पर आजमें और उस दिनमें बड़ा अन्तर है। जो भारत अपने खानेके लिए खाद्य पदार्थोंका और उद्योगके लिए कच्चे पदार्थोंका अपने यहीं उपयोगकर न केवल अपनी आवश्यकताकी ही पूर्त्ति करता था बल्कि अपना बना हुआ पक्का माल विदेशोंको भी भेजता था वही भारत आज अपनी आवश्यकताओंके लिए विदेशों पर आश्रित है। प्राचीन कालमें भारत अपने यहां आयात किये हुए पदार्थोंका मूल्य यहांके बने हुए पदार्थोंको निर्यात कर चुका देता था एवं अपने निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप बाहरसे धन खींचता था, वही आज उसके निर्यातकी अधिकताका बाकी मूल्य उसके विदेशी शासकोंके पास पर्दे ही पर्देमें चला जाता है जिसकी कुछ खबर नहीं पड़ती। आज उसके निर्यातका आधिक्य इस बातसे और भी बुरा है कि वह मुख्यतया कच्चे माल और खाद्य पदार्थोंका समुदाय है। वही पदार्थ यदि देशमें रहें और उनसे माल तयार किया जाय तो वह यहीं खप जाय और उसे विदेशी माल खरीदना न पड़े।

आजकी व्यापारिक वस्तुओंका २००० वर्ष पूर्वके पदार्थोंके साथ मिलान करनेपर और भी कई बातोंका अन्तर मालूम पड़ेगा। वर्त्तमानमें निर्यात किये जानेवाले पदार्थोंका यथा, चाय, पाट और गेहूंका उस समयके निर्यातमें कहीं भी वर्णन नहीं मिलता। उस समय चाय भारतमें न तो पैदा ही होती थी और न जिन देशोंके साथ भारतका व्यापार था वहां इसकी आवश्यकता ही थी। इसी भांति पाटसे यद्यपि यहांवाले उस समय अभिज्ञ थे और इसकी खेती भी होती थी पर उस समय इसका आजके सदृश व्यापारिक महत्व नहीं था। उस समय यहांसे रंग और रंगके पदार्थोंका जो निर्यात होता था वे भी आजके निर्यातमेंसे बिलकुल अदृश्य हो गये हैं। आज हमारे आयातमें मुख्य भाग कपड़ा, लोह लकड़की चीजें और तमाखू आदि का होता है, इन सब पदार्थोंकी पहले हमें बाहरसे मंगानेकी कोई आवश्यकता ही नहीं होती थी।

हमारे उस प्राचीन व्यापारकी एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस समय यहां बाहरसे आयात किये हुए पदार्थोंको फिरसे निर्यात कर देनेका भी बहुत बड़ा व्यापार चलता था। उदाहरणार्थ; सीलोनसे मोती, तिब्बत और बर्मासे सोना, भारतीय द्वीपुओंसे मसाले, ईडुके आगेके देशोंसे घोड़े, चीनसे रेशम और चीनी मिट्टीके पदार्थ यहां मंगाये जाकर पश्चिमी देशोंको फिर निर्यात किये जाते थे और इनसे बीचका मुनाफा अच्छा मिल जाता था। यह काम भारतको या तो इन दोनों तरहके (वस्तुओंको बनानेवाले और खपाने वाले) देशोंके बीच होनेके कारण मिलता था या यहांके व्यापारियों और समुद्रवाहकोंके उद्यम और युक्तिके बल पर। कुछ भी हो, यह काम चन्द्रगुप्त और अशोक एवं अकबर और शाहजहांके समयमें चलता था तो विक्टोरिया, एडवर्ड या आज पञ्चम जार्जके समयमें भी भारतके लिए मौजूद है और जबतक भारत इसे अपनी गफलत और बेपरवाहीसे न खोदे कौन इसे नष्ट कर सकता है?

इस तरहका व्यापार बिना अपने जहाजी बेड़ेके कैसे सम्भव हो सकता था। इसलिए यह निश्चय है कि प्राचीन भारतवर्षमें एक हजार वर्ष पूर्व या उससे पहलेसे लेकर आजके दो सौ वर्ष पहले तक भारत दुनियाके व्यापारके वहन वाहनमें अच्छा भाग रखता था और उसके जहाजोंमें माल भरकर लाया और ले जाया जाता था। उन जहाजोंको भारतीय कारीगर यहीं की लकड़ीसे बनाते थे और भारतीय केवट उन्हें दूर देशोंमें लेकर ले जाते थे। प्राचीन जहाजी कलाका वर्णन डा० मुकर्जीकी पुस्तकमें बहुत अच्छा मिलता है जिसमें प्राचीन कालीन भारतीय नौ शिल्पका वर्णन बड़े विस्तारपूर्वक किया गया है।

व्यापार कुशल हुए बिना यह सब व्यापार किस तरह चलना सम्भव है और इस लिए यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उस समय यहांके व्यापारी लोग व्यापारिक रीति नीति और परिपाटीसे भली भांति भिज्ञ थे। व्यापारकी मंडी स्वरूप यहां बड़े बड़े नगर भी थे जहांके बजारोंमें व्यापारिक पदार्थ मुख्यतया बिका करते थे। इसी भांति कई हिस्सेदारोंसे (Partners) मिल कर व्यापार चलानेकी रीतिसे भी यहांके व्यापारी परिचित थे। एक व्यापारी अकेलेमें चाहे वह स्थल मार्गसे भ्रमण करे या जलमार्गसे, कई व्यापारी एक साथ मिल कर निकल पड़ते थे और उनके ऊपर बेड़ेका स्वामी नियत रहता था।

जब भारतमें व्यापार इतना बढ़ा चढ़ा था तो मुद्रा प्रणालीका होना भी आवश्यक था। बौद्ध ग्रन्थोंमें मुद्रा और उसके विभागका समुचित वर्णन मिलता है। कार्षापण, निष्क और सुवर्ण ये सब सोनेके सिक्कोंके नाम थे और कांसा और तांबेके छोटे सिक्के कांस, पाद और काकिनीके नामसे चलते थे तथा बहुत स्थूल लेन देनके लिए कौड़ियोंका व्यवहार प्रचलित था। बौद्ध ग्रन्थोंमें वर्णित 'सेठी' लोग निश्चय ही रुपये पैसेका लेन देन करते थे और वे

अपने व्यापारमें रुपया लगानेके अतिरिक्त उधार भी देते थे। ब्याज सम्बन्धी नियमोंका वर्णन बौद्ध शास्त्रों, मनुस्मृति एवं चाणक्य नीतिमें भलीभांति मिलता है। इन नियमोंसे प्रमाणित होता है कि उस समय उधार देना एक जाना हुआ काम था।

इस तरहकी व्यापारिक उन्नतिके जमानेमें व्यापारके प्रति राजाका भी सद्‌सम्बन्ध होना आवश्यक था। राजा व्यापारिक वस्तुओंपर कर एकत्र करता था और नाप एवं तौलपर जांच पड़ताल रखता था। चाणक्यके अर्थशास्त्रमें जो—मौर्य साम्राज्यके संस्थापकके समयमें रचा गया था—इस तरहके करों और लगानोंका वर्णन भलीभांति मिलता है। आयात और निर्यात पर लगनेवाले व्यापारिक करका भी इस ग्रन्थमें उल्लेख आया है। मनु महाराजने भी लिखा है:—

"खरीद और बिक्रीके भावोंका अच्छी तरह विचार कर एवं लाने और ले जानेके खर्चको ध्यानमें रखकर राजाको व्यापारिक कर वसूल करना चाहिये।"

"भलीभांति सोच समझकर राजाको अपने राज्यमें कर और लगान लगाना चाहिए जिससे राज्यको और पैदा करनेवालेको अपना उचित और न्यायपूर्ण भाग्य मिल सके।"

"जिस भांति गायका बच्चा और मधुमक्खी थोड़ा थोड़ा भोजन संग्रह करते हैं उसी भांति राजाको भी अपने प्रजाजनोंसे स्वल्प कर लेना चाहिए।"

इस भांति भारतकी प्राचीन व्यापारिक उन्नतिके प्रमाण समुचित रूपमें मिलते हैं।

मुसलमानी कालमें भारतीय व्यापार

(सन् ई० ११०० से १७०० तक)

इस समयके व्यापारका वर्णन करनेके पूर्व यह कहना आवश्यक है, कि देशमें राजनैतिक अशांति रहनेके कारण इस समयमें व्यापारने कोई ऐसी उन्नति नहीं की, जो शांतिके समय हो सकती थी। मुगल सम्राटोंके पूर्व दिल्लीके सम्राटोंका शासन कभी भी सुव्यवस्थित नहीं था। दक्षिण प्रान्तकी स्थिति उत्तर जैसी बुरी न थी। तथापि विन्ध्याचलके दक्षिण प्रान्तोंमें हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा कोई अनजानी बात न थी अर्थात् वहां भी यह पारस्परिक कलह किसी न किसी रूपमें अवश्य विद्यमान था। मुसलमानी काल एवं प्राचीन समयमें जो व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, उनमें मालाबारका व्यापार चीन और पश्चिम देशोंके साथ अच्छा चलता था। मसालेके पदार्थ यथा मिर्च, लौंग, जायफल, इलायची, जवाहिरात, मोती, हीरा, माणक, फिरोजा आदि; रूईके सब तरहके कपड़े, ऊनी शाल, दुशाले, गलीचे; चीनीमिट्टी और कांचके पदार्थ; भारतीय शिल्प द्रव्य और पशु—मुख्यतया घोड़े—भारतके आयात और निर्यात व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, जो भारतके दक्षिणी बंदरोंसे होता था। आगरासे लाहौर होते हुए काबुल और वहांसे मध्य तथा पूर्वी एशिया; मुल्तानसे कंधार और वहांसे पारस और पश्चिमी एशिया तथा योरपके साथ होनेवाले व्यापारके भी ये मुख्य पदार्थ

थे। तत्कालीन राजकीय परिस्थितिके कारण व्यापारका उन्नतावस्थापर पहुंचना कठिन था, तब भी भारतीय व्यापारका परिमाण और मूल्य काफी बड़ा होता था।

इस समयके व्यापारका क्रमबद्ध इतिहास मिलना कठिन है, तब भी "अकबरकी मृत्यु समय भारत" (India at the death of Akbar) नामक पुस्तकमें मि०मोरलेंड (Mr. Moreland) ने बहुत कुछ वर्णन लिखा है यथा "देशमें आवश्यकीय खाद्य पदार्थ होते थे सिर्फ फल, मसाले और नशीले पदार्थोंका बाहरसे आयात होता था। कपड़ा भी सब यहां होता था। सिर्फ रेशम और मखमल बाहरसे आता था"।

धातुको छोड़कर अन्य खनिज पदार्थोंमें नमक और हीरा ये दो मुख्य पदार्थ थे। नमकके उत्पत्ति स्थान प्राय वही थे, जो आज हैं। यथा, सांभरकी झील, पंजाबकी खानें और समुद्री किनारे। कोहिनूर नामक विख्यात हीरेके उद्गम स्थान गोलकुण्डाकी खानोंमें हीरा निकालनेका उद्योग मुसलमानी कालमें भी उसी भांति जारी था जैसा पूर्ववर्णित हिन्दू कालमें था। फ्रेन्च यात्री टेवरनियरने (*Tavernier*)—जो भारतमें १८ वीं शताब्दीमें आया था—अनुमान लगाया है कि दक्षिणकी हीरेकी खानोंमें ६०००० और छोटा नागपुरकी खानोंमें ८००० मनुष्य काम करते थे। बहुमूल्य रत्नोंके व्यापारमें मोतीका भी उल्लेख करना उचित है। शाहजहांके मयूर सिंहासनमें मोतीकी जो अनुपम जड़ाई थी, उसे जाने दीजिये। १५ वीं शताब्दिमें अब्दुलरजाक नामक यात्रीने विजयनगर देखा, उसने राजाकी पोशाकके विषयमें लिखा है कि "राजाकी पोशाक जैतून साटनकी बनी हुई थी और वह गलेमें मोतियों का एक ऐसा हार पहने था कि जिसके मूल्यको कूंतना एक कुशल जौहरीके लिये भी कठिन था"। इसी भांति इसी नरेशके सिंहासनके विषयमें यह यात्री लिखता है कि :—"सुन्दर रत्नोंसे जड़ा हुआ सोनेका सिंहासन विशाल आकारका था और ऐसी अद्वितीय कारीगरीसे बना हुआ था, जैसा दुनियाके किसी अन्य राज्यमें नहीं देखा। सिंहासनपर जैतून साटनकी एक मसनद रखी हुई थी जिसके चारों ओर बहुत कीमती मोतियोंकी तीन श्रेणियां जड़ी हुई थीं।

इसी भांति अन्य रत्नोंकी जाति, उनके व्यवहार और मूल्यके विषयमें भी उस समय यहां समुचित जानकारी थी। आईन अकबरीमें रत्नभंडार शीर्षकमें अबुलफजलने लिखा है कि "रत्नोंका मूल्य लिखना व्यर्थ है क्योंकि इसे सब जानते हैं। पर बादशाहके अधिकारमें जो रत्न आये हैं वे इस भावके हैं :--

माणक	११	टंक	२०	रत्ती	मूल्य	रु०		१००,०००
हीरा	५॥	"	४	"	"	"		१००,०००
पन्ना	१७॥	"	३	"	"	"		५२,०००
नीलम	४	"	७॥	"	"	"		५०,०००
मोती	५	"	"	"	"	"		५०,०००

इससे यह भली भांति सिद्ध है कि यहां इन पदार्थोंका व्यापार चलता था। जो रत्न यहां न होते थे उनका भी बाहरसे आयात होकर बहुत भारी व्यापार होता था।

खनिज पदार्थोंके बाद लकड़ीके सब तरहके पदार्थोंका व्यापार उल्लेखनीय था यहांके बनाये हुए जहाज काफी बड़े होते थे जबतक अंग्रेजी राज्यने British Navigation Law द्वारा जहाज बनानेका भारतीय उद्योग नष्ट नहीं किया तबतक जहाज बनानेका काम भी यहांपर मुख्य था। मि० मोरलेंडने लिखा है कि पुर्तगाल वालोंके व्यापारको छोड़कर भारतीय समुद्रोंमें व्यापारिक आवागमन भारतीय जहाजोंमें होता था, जो भिन्न भिन्न बंदरोंमें बनाये जाते थे। यह कहना नहीं पड़ेगा कि जिन छोटी नावोंमें बंगालसे लेकर सिंधतकका सरहदी व्यापार होता था, वे भी भारतमें ही बनती थीं। "पन्द्रहवीं शताब्दिमें भारत" India in the XV Century नामक पुस्तकमें योरूपीय यात्री निकोला कोन्ती (Nicola conti) ने उस समयके व्यापारियोंका वर्णन करते हुए लिखा है कि "वे बहुत धनी हैं इतने बड़े धनी कि उनमेंसे कईके पास ४० तक जहाज हैं, उन सबमें व्यापार होता है इनमेंसे प्रत्येक जहाजका मूल्य करीब १५००० स्वर्ण मुद्रा होगा"। इस भांति उस समयके इतने मूल्यवान जहाजोंके आकारका अनुमान भली भांति लगाया जा सकता है। इन सब बातोंसे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय व्यापारी जहाजोंमें केवल व्यापार ही नहीं करते थे, पर उनके वे जहाज बनते भी यहीं थे।

खाद्य पदार्थोंका वर्णन करते समय कहना पड़ेगा कि मुसलमानी कालमें खाद्य पदार्थोंका कोई व्यापार नहीं था। जहाजके यात्रियोंके लिये थोड़ा अन्न भले ही व्यापारका विषय रहा हो, पर इसका अधिक महत्व नहीं था।

पशुओंमें घोड़ोंका व्यापार उल्लेख योग्य है। यद्यपि घोड़े इराक, रूम तुर्किस्तान, तिब्बत और अरबसे आते थे तथापि यह बात नहीं है कि भारतमें अच्छे घोड़ोंकी पैदावारीका बिलकुल अभाव था। अबुलफजलने कई स्थानोंके घोड़ोंका उल्लेख किया है जिनमें कच्छ प्रान्तका उल्लेख करते हुए लिखा है कि यहां अरबी घोड़ोंके सदृश बढ़ियां घोड़े होते है। उसने लिखा है कि पंजाबमें इराकी घोड़ोंके सदृश; घोड़े होते हैं और पट्टी ठिसेतपुर, बेजवाड़ा, आगरा, मेवाड़ और अजमेरके सूबेमें भी अच्छे घोड़े होते हैं। अल्बेरूनी नामक प्राचीन लेखकने लिखा है कि "जमालुद्दीन इब्राहीमके साथ यह सौदा हो चुका था कि १४०० बढ़ियां अरबी घोड़े और १०००० कालिफ, लहासा, बहराइन आदि स्थानोंके घोड़े प्रति वर्ष भेजे जायें"। इसमें एक घोड़ेका मूल्य २२० दीनार लिखा है। अकबरके समय एक दीनारका मूल्य ३० रुपयेका था और इस हिसाबसे यह सौदा ७, ५२, ४००० रुपयाका होता है। इसी बातका २०० वर्ष बाद उल्लेख करते हुए वासफ Wassaf ने लिखा है कि इन बाहरसे मंगाये हुए घोड़ोंका मूल्य कर की बचतमें से चुकाया जाता था न कि राज्यके कोषसे। १० से १५ वीं शताब्दि-

तक यह व्यापार बड़े जोरोंपर था। राजाके अतिरिक्त सर्वसाधारणकी लेन देनको छोड़कर इस व्यापारके परिमाण और मूल्यका अनुमान लगाना कठिन ही है। उल्लिखित ७ करोड़का अङ्क केवल एक राज्यसे संबंध रखता है। इस भांति उत्तर और दक्षिण सब मिलाकर औसत १ लाख घोड़ोंका आयात प्रति वर्ष माना जाय और एक घोड़ेका औसत मूल्य १००० रुपया रखा जाय तो कमसे कम १० करोड़ रुपयेका यह व्यापार हो जाता है। घोड़ोंके आयात की ही तरह सम्भव है हाथियोंका निर्यात भी होता रहा हो पर इसका विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। यह बात हो सकती है कि हाथी खुश्की रास्तेसे भेजे जाते हों और घोड़ोंके आयातके सामने इनके निर्यातका अधिक महत्व न रहा हो। भार ढोनेमें ऊँटोंका व्यवहार आज तक हो रहा है पर उस समयके विदेशी व्यापारमें ऊंटोंका भाग कितना था यह निश्चयरूपसे नहीं कहा जा सकता। कृषि-सम्बन्धी अन्य पशु यद्यपि भारतमें भारवहनके काममें आते थे पर उनका विशेष उपयोग कृषिके कामोंमें ही होता था। स्थानीय आवश्यकता एवं भारतीय जनताके धार्मिक प्रतिबंधने इनके निर्यातमें विशेष रोक थाम रखी थी। इन पशुओंको बाहरसे मंगानेकी यहां आवश्यकता भी न थी और न पड़ोसी देशोंमें ये अधिक होते ही थे इसलिये इनका आयात भी नहीं होता था।

भारतके बने हुए मुख्य पदार्थ कपड़ेका वर्णन करनेके पूर्व चीनीके लिये यह कह देना आवश्यक है कि मुसलमानी कालमें इसका भी थोड़ा बहुत व्यापार चलता था और इसी भांति तेल केश और सुगन्धित द्रव्य भी विदेशी व्यापारके पदार्थ थे। ये सब पदार्थ यहांकी उपजसे (कच्चे माल) तैयार होते थे। चीनीका व्यापार मुख्यतया स्थानीय था और बंगाल, लाहौर तथा अहमदाबाद इसके केन्द्र थे। तेलका व्यापार विदेशोंसे भी चलता था यद्यपि यह कहना कठिन है कि यहांके बने हुए पदार्थका कितना भाग बाहर भेज दिया जाता था। नील और नीलसे बने अन्य रंग यहांके मुख्य पदार्थ थे और यहांसे इनका बहुत भारी निर्यात होता था। कागजके लिये मि० मोरलेंड कहते हैं कि "यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तरी भारतमें कई स्थानोंमें कागज़ हाथसे बनाया जाता था और जिसका बनाना अभीतक बंद नहीं हुआ है"।

भारतीय व्यापारमें मुख्य उल्लेखनीय पदार्थ यहांका बना कपड़ा है, जिसमें सब तरहका कपड़ा सम्मिलित कर लेते हैं। पोर्तगीज लेखक बारबोसा और वारथेमा (Barbosa & varthema) दोनों यात्रियोंने लिखा है कि बंगाली कपड़ा गुजरातसे अफ्रीका और बरमाको जाता था इसी भांति यह उल्लेख किया है कि गुजरातसे फारस, तातारी, टरकी, सिरिया, बारबरी, अरब, और इथियोपियाको रेशमी और सूती माल भेजा जाता था। अबुलफजलने लिखा है कि अकबर भोजनकी अपेक्षा कपड़ेपर अधिक ध्यान देता था। उसका वस्त्र-भण्डार बहुत विशाल था और उसके निजके व्यवहारके लिये हर वर्ष १००० पोशाकें बनाई जाती थीं। इसके अतिरिक्त इनाममें देनेको और

दरबारमें आनेवाले मनुष्योंको पदके अनुसार बांटी जानेवाली पोशाकें अलग हैं। इससे यह सिद्ध है कि उस समय कपड़ेका खर्च काफी था एवं बादशाह और अमीर उमरावों द्वारा इस उद्योगमें समुचित सहायता मिलती थी।

तत्कालीन व्यापारी और यात्रियोंके लिखे हुए वर्णनसे यह सिद्ध होता है कि उस समय भारतमें रेशमका उद्योग अच्छा चलता था और उससे स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति एवं निर्यात दोनों काम होते थे। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि रेशमी मालका कुछ भी आयात नहीं होता था। कच्चा रेशम बाहरसे आता था और सम्भव है कि थोड़ा बहुत रेशमी कपड़ा भी आता रहा हो। टेवरनियरके आधारपर मि० मोर बंगालमें २५ लाख रतल रेशमकी पैदावार लिखते हैं और यह भी कहते हैं कि यह पदार्थ ५ लाख रतलसे अधिक बाहरसे नहीं आता था। इसलिये आयात एवं यहांकी उपज दोनों मिलाकर ३० लाख रतल कच्चे रेशमकी यहां खपत होती थी। कुछ भी हो भारतसे रेशमी मालका निर्यात होना एक ऐतिहासिक बात है।

ऊनी कपड़ा यहां अधिक बनता था या नहीं, यह सन्देहजनक है। उस समय ऊनी कपड़ेका व्यवहार यहां अधिक नहीं था। शाल-दुशाले (खालिस ऊनी एवं रेशमी मिले हुए) अकबरके समयमें बहुत बढ़िया बनते थे। दरियां और गलीचे आगरा और लाहोरमें बनते थे एवं पारससे भी आते थे। शाल-दुशालोंके विषयमें अबुलफ़जलने लिखा है कि "बादशाहकी देखरेखके कारण काश्मीरमें शाल-दुशालेका काम उन्नतावस्थामें है और लाहोरमें इसके १०० से ऊपर कारखाने होंगे।"

सूती कपड़ा भी जो भारतका प्रधान उद्योग था—व्यापारका एक मुख्य पदार्थ था। पायरर्ड (Pyrard)ने लिखा है कि "गुडहोप अन्तरीप (Capa of good Hope) से लेकर चीनतकके नर-नारी सिरसे पैरतक भारतीय कपड़ा पहने हैं"। मि० मोरलेंडने भी लिखा है कि "यहांका कपड़ा स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति कर देनेके बाद अरब और उससे आगे तथा पूर्वी टापुओंको एवं एशियाके कई भाग और अफ्रीकाके पूर्वी भागको भी भेजा जाता था।"

इस भांति मुसलमानी कालमें भारतीय उद्योगका वर्णन मिलता है पर तत्कालीन भारतके आयात नर्यात व्यापारके अङ्क बताना किसी प्रकार सम्भव नहीं। योरोपीय यात्री और व्यापारियोंने यहां आना आरम्भ किया उस समयके बादसे वर्णन फिर भी विशदरूपसे मिलता है तथापि ७०० वर्षके इस कालका जो दिग्दर्शन यहां किया गया है उस समयके व्यापारिक अङ्कके जाननेका कोई साधन नहीं है। कुछ भी हो, पर यह भलीभांति सिद्ध है कि उस समय भी भारतीय व्यापार बढ़ा-चढ़ा था। इस बातके प्रमाणके लिये कोंटी (conti) का यह लिखना--कि भारतीय व्यापारी अपने जहाजोंमें व्यापार करते थे। इसमेंसे एक जहाजका मूल्य करीब १५००० मोहरें तक होता था और एक-एक व्यापारीके ऐसे ४० तक जहाज होते थे—काफी प्रमाण है; एवं विजयनगरके [illegible] भी यह कहा

जा सकता है कि वह बिना व्यापारके कहांसे आ सकता था। यह सब होनेपर भी १७ वीं शताब्दिमें सूरतके बंदरोंमें लगे हुए जहाजोंको देखकर अंग्रेज लेखक टैरी और फ्रायरको लिखी हुई बातोंका उल्लेख करना यहां अनुचित नहीं होगा। जैसा इन लेखकोंने लिखा है उसके अनुसार यदि अकेले सूरतमें एक सौ जहाज नदीमें पड़े पाये जाते थे जो सब भारतीय थे (इस संख्यामें बाहर अर्थात् अरब, तुर्की और योरपके कोई जहाज गर्भित नहीं थे) तो इस हालतमें मध्यकालीन भारतके लाहोरी बंदर, कैंबे, भड़ूच, चौल, गोआ, मंगलोर, भटकल, कालीकट, नागापट्टम, मसूली पटम, मदरास, हुगली, सतगांव आदि बंदरोंका यदि विचार किया जाय तो यह कहना कुछ अत्युक्ति नहीं होगी कि उस समय समुद्री यात्रा करनेके योग्य १००० हजारसे अधिक जहाज यहां रहे होंगे। यदि भार वहनकी शक्तिप्रति जहाज ५०० टनकी मानी जाय और प्रत्येक जहाज वर्षमें एक यात्रा भी करता हो तो प्रति वर्ष ५ लाख टनसे कमका व्यापार नहीं होना चाहिए विदेशी जहाजोंको भी—जिनमें अरबी जहाज मुख्य थे - यदि इस गणनामें शामिल किया जाय तो निश्चय ही इससे दुगुना व्यापार मानना पड़ेगा।

प्राचीन कालमें भारतमें सोना चांदी निकलता भी था पर जिस समयका यहां वर्णन हो रहा है उस समय ये पदार्थ यहां नहीं होते थे, बाहरसे आते थे। ये, भारतमें उसके व्यापारके मूल्य स्वरूप आते थे और इसके द्वारा चांदी सोनेकी अमित राशिजो यहां संग्रहीत थी उससे अनुमान लग जाता है कि यहांका व्यापार कितना बड़ा रहा होगा। महमूद गज़नवीकी बात जाने दीजिए जो भारतसे हजारों मन सोना लूट कर ले गया। यहां अकबरके समयके इतिहास लेखक फरिश्ताकी लिखी हुई बातका उल्लेख किया जाता है, उसने लिखा है कि दक्षिणको जीत कर जब मलिक कफूर अलाउद्दीन खिलजीके पास लौटा तो उसने अपने स्वामीको ३१२ हाथी २०००० घोड़े और ५०००० मन सोना, रत्न और मोतियों आदिसे भरी हुई संदूकें भेट कीं। इसमेंसे केवल सोनेके मूल्यका अनुमान मि० सिवेल (Mr. sowell) ने अपनी पुस्तक (A forgotten empire) में लगाते हुए लिखा है कि "१, ५६, ७२,००० रतल सोना ८५ शिलिंग प्रति औंसके हिसाबसे १०६, २६,९६,००० पौंडके मूल्यका रहा होगा" यह एक विजयके बाद एक सेनापति द्वारा दी हुई भेट की बात है। इसी भांति दक्षिणके वैभवकी बातका पक्का प्रमाण काफूरके हमलेके १०० वर्ष पीछे अब्दुररजाक नामक अरबी यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनमें मिलता है। उसने लिखा है कि "एक दिन संध्या समय राजाने तुच्छ व्यक्ति (अब्दुर रजाक) को बुलाया, वहां मैंने देखा कि महलकी छत और दीवालें सोनेके पत्तरसे मढ़ी हुई हैं और उनमें रत्न जड़े हुए हैं। इन पत्तरोंकी मोटाई तलवारकी पीठकी मोटाई जैसी थी और इनमें सोनेकी कीलें जड़ी हुई थीं। राजाका विशाल सिंहासन भी सोने का बना था"। इसी भांति पोज़ (Poes) नामक पुर्तगीज़ यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनको उद्धत

करते हुए सीवेल [Sewell] ने एक सौ वर्ष बादके विजय नगर दरबारको एक और वैसी ही आश्चर्य जनक बात लिखी है। "दक्षिणके मुसलमानों द्वारा तालीकोटके युद्धमें हार जाने पर विजय नगरके शासकोंने कुछ ही घंटोंमें महल खाली कर दिये और जो कुछ धन सम्पत्ति वे ले सके उन्होंने भर ली। यह सब माल करीब १० करोड़ स्टेरलिंगके मूल्यका होगा, इसमें स्वर्ण पदार्थ और रत्नादिक थे, यह माल उन्होंने ५५० हाथियों पर लाद लिया और साथमें रत्न सिंहासन और राज्यके निशान आदि भी ले गये और नगर छोड़ कर चले गये।"

नादिरशाह या अहमद दुर्रानी आदिके हमलोंकी बात तो अभी अलग है लेकिन ऊपर जो कुछ वर्णन किया गया है उससे यह भली भांति सिद्ध होता है कि भारतमें जो हजारों मन सोना चांदी था वह बिना व्यापारके नहीं आ सकता था। व्यापार भी ऐसा नहीं कि जिसमें किसीको सताया जाय अथवा अनुचित या अन्यायपूर्ण लगान आदि लगाकर किया जाय। उस समयका जो व्यापार था वह केवल भारतीय उद्योगके बल पर था। उस समयकी सरकार आयात और निर्यात पर पक्षपात रहित कर लेती थी और जो कर किसी तरह भारी जान पड़ता वह छोड़ भी दिया जाता था। अबुल फ़ज़लने अकबरके विषयमें लिखा है :—

"बादशाहने बंदरों पर लगने वाली चुंगीको जो एक साधारण राज्यकी सफरी आयके बराबर बैठती थी मुआफ कर दी है। अब आयात और निर्यात पर बहुत सूक्ष्म कर लिया जाता है जो २॥ प्रतिशतसे अधिक नहीं होता है। यह व्यापारियोंको इतना हलका जान पड़ता है मानों उन्हें कुछ लगता ही नहीं।" यह बात नहीं कि केवल अकबरने ही इस तरहकी उदारताका व्यवहार किया हो, १०० वर्ष या उससे अधिक पहले विजयनगर राज्यके द्वारा भी कालीकटके विदेशी आयात पर इसी तरहका सूक्ष्म कर लिया जाता था। अब्दुलरजाकने लिखा है कि "कालीकट एक बिल्कुल निरापद और सुरक्षित बन्दर है जहां कई नगर और देशोंके व्यापारी आकर जुटते हैं। राज्यका इतना अच्छा प्रबन्ध और सुव्यवस्था है कि बड़े बड़े व्यापारी अपने जहाजोंमें जो माल भर कर लाते हैं उसे यहां खाली करके बज़ारोंमें लाकर निर्भयता पूर्वक संचय कर देते हैं और चाहे जितने समय तक बिना किसी प्रकारकी देख रेख या चौकीदारीमें सौंपे पड़ा रहने देते हैं। चुंगीघरके अधिकारी लोग इसकी रक्षा और चौकीदारी करते हैं। यदि माल वहां बिक जाता है तो २॥ प्रतिशत कर ले लिया जाता है और यदि नहीं बिके तो कुछ नही लिया जाता है।"

यहां एक बात और लिख देनेकी है कि सरकारी कर और चुंगी वसूल करते समय इस बातका पूर्ण ध्यान रखा जाता था कि किस भांति व्यापारको सहायता पहुंच सके और किसी तरहकी उसकी क्षति न हो। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकारके सुधार हो चुके थे। मुद्रा प्रणालीमें उचित उन्नति हो चुकी थी और इस विषयमें कोई असुविधा न थी। लाने और ले जानेके साधन यद्यपि

वर्तमान रेल्के जमानेके सदश न थे फिर भी उस समय सड़कोंके होनेका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। इंदस और पंजाब तथा उसी भांति गंगा और बंगालके जलमार्ग द्वारा आवागमन पर विचार करने पर सड़कों या रेलकी कमी अखरने जैसी बात नहीं रहती। मुसलमानी कालमें डाक प्रणालीका चालू हो जाना भी व्यापारके लिए एक अच्छी बात थी और मुगलकालमें यह काम बहुत उन्नति को पहुंच चुका था। हरकारे लोग पत्रोंको घुड़सवारोंसे भी अधिक तेजीके साथ पहुंचाते थे। इसका प्रबन्ध इस भांति था कि प्रति छ मीलकी दूरी पर चौकियां बनी हुई थीं जिनमें हरकारे तयार बैठे रहते थे। जब एक हरकारा चौकी पर पहुंचता तो वह अपने डाकके थैलेको जमीन पर रख देता (क्योंकि हरकारेके हाथमें थैला देना अशुभ समझा जाता था) वहां दूसरा हरकारा नियत रहता था वह डाकके थैलेको उठा लेता और आगे जाकर दे देता। इसी भांति मुगल राज्यके अधिकांश भागमें पत्र भेजे जाते थे। सदर रास्तोंकी पहचान दोनों ओर लगे हुए वृक्षोंसे होती थी और जहां वृक्ष नहीं होते वहां प्रति ५०० कदम पर एक पत्थरकी टेकरी रहती थी, जिसे समीपस्थ गांव वाले चूनेसे पोतकर सफेद कर रखते थे ताकि अँधेरीरातमें भी वह दिखाई दे और राहगीर राह न भटक जाय।

इस भांति मुसलमानी कालकी ६-७ शताब्दियोंमें भारतकी व्यापारिक स्थिति संतोष जनक और लाभदायक थी।

अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतीय व्यापार

(योरोपीय व्यापारी दलोंका आगमन)

इस समयका वर्णन भारतकी व्यापारिक या औद्योगिक परस्थितिके विचारसे काले अक्षरोंमें लिखने लायक है। इस कालमें प्राचीन कालकी सुख, समृद्धि, धन वैभव, उद्योग कला, शिल्प चातुरीने विदा लेली—विदा क्या ली, विदेशियों द्वारा ये सब बातें नष्ट कर दी गई। जो भारत उद्योग और कला कौशलके लिए संसारका सिरमौर था, उसी भारतकी कारीगरीका अंत इस कालमें किया गया। केवल अंत ही नहीं पर उसे विदेशोंके बने माल पर आश्रित बना दिया गया। यह इतिहास बड़ा रौद्र और हृदय द्रावक है। भारतके पूर्व इतिहासमें विदेशियोंने कई हमले किए, बहुत लूट मार मचाई और वे लोग यहांसे अपार धन राशि लूट कर ले गये पर यहां जिस समयका दिग्दर्शन किया जायगा उसकालमें जो काम—भारतका अनिष्ट-उसे उद्योग कला और कौशल हीन बना कर किया गया वैसा वास्तवमें समझा जाय तो भयंकरसे भयंकर हमला करनेवाले भारतके किसी शत्रुने भी नहीं किया।

भारतीय उद्योग कमीशन Indian Industril Commission ने अपनी रिपोर्ट इस-

शब्दोंमें कहते हैं "जब वर्तमान यूरोप असभ्य और [illegible] इसके [illegible] जंगली लोग बसते थे, भारत अपने धन, शिल्प चातुरी और कारीगरोंके लिए जगत् विख्यात था। थोड़े दिनोंकी बात है कि जबसे इन गुणोंके कारण [illegible] देशोंके यात्री और व्यापारियोंने यहाँ पहले पहल पदार्पण किया उस समयकी भारतीय कला भी योरपकी किसी [illegible] से कम न थी"। भारतमें महीन सूत कातने और उस सूतसे कपड़ा बुननेका उद्योग कितना प्राचीन एवं यह गुणोंका एक [illegible] था इस बातका प्रमाण वेदोंमें आये हुए इन वाक्योंसे भली भांति मिल जाता है "जिस प्रकार जुलाहे [illegible] कपड़ा बुन रहे हैं, रात और दिन ये दो जुलाहे हैं जो [illegible] बुन रहे हैं"। इन दृष्टान्तोंसे यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि उस समय भारतमें कपड़ा बुना जाता था। मिस्र वाली ममियोंको भारतकी मलमलोंमें लपेटे थे एवं अपनी देवियों को भारतके सिले हुए हाथी दांत, स्वर्ण और चन्दनसे सजाते थे। [illegible] दांतकी [illegible] कारीगरीकी [illegible] थीं।

लोहेके उद्योगकी भी यही बात है। इसकी चीजें केवल यहाँकी आवश्यकताकी पूर्ति ही नहीं करती थीं, पर बाहर विदेशोंको भी भेजी जाती थीं। दिल्लीके मिनारका लोहेका स्तम्भ जो कमसे कम १५०० वर्ष पुराना है प्राचीन लोहेकी गढ़ाईके उद्योगका पूर्ण परिचायक है। इसी भांति रेशमी सूती कपड़ा, शाल दुशाले, हाथी दांतके गहने और नाना प्रकारके बर्तनोंमें प्राचीन भारत बहुत निपुण था। उसके यहांकी पैदावार और तैयारकी हुई चीजें केवल भारतवासियोंकी आवश्यकता और ऐश आरामकी ही पूर्ति नहीं करती थीं वरन् विदेशोंके बाजार भी इनसे पटे रहते थे। अकबरके समयमें भारतीय कला और शिल्प सुरक्षित थे। एक अंग्रेज ग्रन्थकार मि० डब्ल्यू० एच० मोरलैंडने इस बातको माना है कि उन दिनों भारतमें रेशमका उद्योग बहुत बढ़ा चढ़ा था और करीब ३० लाख रुपए रेशम कपड़ा बनानेमें लगाया था। वे यह भी लिखते हैं कि भारतका रेशमी सूती कपड़ा पारस, टर्की, सीरिया बारबरी और अरबको भेजा जाता था। भारतकी बढ़िया मलमलों, छींटों, एवं कामदानोंके थानोंके व्यापार होने १८ वीं शताब्दिमें ईस्ट इंडिया कम्पनीको १८७ प्रति शत मुनाफा बांटनेमें समर्थ किया और उसके १०० पौंडके शेयर ५०० पौंडतक बिक सके। उस समय योरपीय व्यापारियोंमें भारतके कच्चे मालके लिये नहीं पर उसके पक्के बने माल और कारीगरीकी चीजोंके लिए प्रतिद्वंदिता मची थी। विदेशी व्यापारियोंके कारण भारतीय पदार्थ एमस्टरडम लंदन, पेरिस आदि नगरोंके बाजारोंमें भी बिकने लगे और इन्हीं पदार्थोंके लिए जो वहां उन्हें मुनाफा देते थे विदेशियोंने भारतका पता लगाया। इस तरह योरपके व्यापारियोंके कारण यहांके व्यापार और कारीगरीमें कुछ समय तक लाभ पहुंचा। सन १८१७ में सर हेनरी काटन ने लिखा कि १०० वर्ष पहले ढाकाका व्यापार अनुमान १ करोड़ रुपयाका था और वहांकी आबादी २

कम्पनी थी, लेकिन यह बात अधिक काल तक नहीं रही। इसके ५० वर्षके भीतर ही एक बड़ा उलट फेर होगया। सन १८१० में ढाकासे वहांके बने पदार्थोंका निर्यात एक दम बन्द हो गया। कातने और बुननेका काम जो भारतका प्रधान शिल्प और उद्योग था और जिससे हजारों लाखों पलते थे यह सब नष्ट होगया। जिनके व्यापारका आवागमन समतोल था और यहांकी जनता कृषि और उद्योगके कामोंमें हिसाबसे विभाजित थी वहां अब भारतको अकेले कृषिकी शरण लेकर कृषि प्रधान देश बनना पड़ा। १८ वीं शताब्दिके अन्त और १९ वीं की आदिमें ब्रिटेन आदि देशोंमें यंत्र कलाके आविष्कारने पदार्थोंके बनाये जानेमें एक भारी उलटफेर पैदाकर दिया। वहां पर यंत्रोंसे काम होने लगा जिसने पहले पहल भारतके कपड़ेके उद्योगको ही नष्ट किया। केवल इन यंत्रोंके सहारे भी ग्रेट ब्रिटेन कुछ नहीं कर सकता था; इससे भी भारतके उद्योगको कुछ धक्का नहीं पहुंच सकता था और न इससे यहांका काम ही नष्ट हो सकता था, पर इसके उद्योग को नष्ट करनेके लिये और भी कई उपाय काममें लाये गये जिनका थोड़ासा वर्णन यहां किया जायगा जो बहुत दुखदायक है।

भारतसे व्यापार करनेके लिए पुर्तगीज, फ्रेंच, डच, और अंग्रेज आदि कई जातियां आईं पर अंग्रेजोंको छोड़कर यहां और किसीको सफलता नहीं मिली। अंग्रेज भारतके व्यापारके बलपर केवल व्यापारके ही नहीं पर राज्यलक्ष्मीके भी स्वामी बन गये। यहां भारतमें इन विदेशी जातियोंके आने पर उनके आपसी झगड़े टंटे और लड़ाईके वर्णनसे यहां कुछ सम्बन्ध नहीं है, केवल ईस्ट इंडिया कम्पनीने यहांके व्यापारको हथियाकर अन्तमें उसको किस तरह नष्ट किया यह ध्यान देने योग्य बात है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतीय पदार्थोंका मोह ही खींच लाया। पहले पहल उसने किस प्रकार ये पदार्थ सस्ते अधिक परिमाणमें उसे उपलब्ध हो सकें, इसके लिए सब तरहके प्रयत्न काममें लिये और फिर अन्तमें इनके यहां बनने किम्वा बाहर जानेको ही [illegible] बन्द किया।

सूती कपड़ेके साथ साथ बङ्गालमें रेशमका उद्योग भी उन्नतावस्थामें था। १८वीं शताब्दीके आरम्भमें बङ्गालमें रेशमका उद्योग चमक उठा। रेशमी मालका बाहर भेजना इतना लाभदायक था कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इस धन्धेपर अपना एकाधिकार स्थिर करनेके लिए प्रबल प्रयत्न किया। उस समय यूरोपियन व्यापारियों—अर्थात डच, अंग्रेज फ्रान्सिसी और कुछ कुछ पुर्तगीज—के बीच इस व्यापारके लिए बड़ी स्पर्धा चलती थी। चीनका रेशम न तो बङ्गालके बहुत बढ़िया होता था और न [illegible] सकता था। चीनकी अपेक्षा भारतसे इसका निर्यात बहुत अधिक होता था और इंगलैंड एवं अन्य योरोप देशोंमें यह बिकता भी ऊंचे दामोंमें था। सन्—

१७११से १७६०तकके इंग्लैण्डको भारत और चीनके निर्यात अंक इस बातके साक्षी हैं कि उस समय ईष्ट इण्डिया कम्पनीका भारतीय व्यापार कितना बढ़ गया था।

	कच्चा रेशम		रेशमी कपड़ा
सन्	बङ्गाल रतल	चीन रतल	बङ्गाल थान
१७११-२०	५,५३,४६७	५६,३२१	२,४६,३७५
१७२१—३०	८,०६,०३०	५८,४०६	५,११,६३६
१७३१-४०	१३,६५,११७	७३,७६३	६,६८,०१०
१७४१-५०	८,४१ ८३४	७५,३०१	३,२२,६१७
१७५१-६०	४,३७,७२७	९०,२८५	३,९१,१०५

सन् १७१० तक इंग्लैण्डमें चीनसे बिलकुल रेशम नहीं जाता था। उसके पश्चात् यद्यपि यह पदार्थ चीनसे भी जाने लगा पर उसकी तादाद बहुत कम थी। सन् १७५० तक चीनके निर्यातकी अपेक्षा भारतका निर्यात ९ गुनेसे १६ गुना अधिक था। इसके पश्चात् एंग्लोफ्रेञ्च युद्ध और बंगालके नवाबोंके साथके युद्धने इस व्यापारमें बड़ा उलट फेर कर दिया। इन घटनाओंसे १७५१ और१७६०के बीच भारतका निर्यात ८,४२०००से घटकर ४,३८००० रतल रह गया और चीनका निर्यात ७५,३०२ रतलसे बढ़कर ६०२८५ रतल हो गया। इस प्रकार इन दस वर्षोंमें शासन सम्बन्धी गड़बड़, भीतरी जुल्म, और लड़ाई झगड़ोंके कारण बंगालके रेशमके व्यापारको बड़ी क्षति उठानी पड़ी। इन कारणोंसे रेशमी कपड़ोंके निर्यातमें भी बहुत घट बढ़ हुई। फिर भी सन् १७११से २० तक जहाँ २,४६,३७५ थानका निर्यात हुआ था वहां सन् १७३१से ४०तक ६९८०१० थानका निर्यात हुआ। सन् १७४०के पश्चात् मराठोंकी लूटमार, तथा नवाबोंके साथ अंग्रेजोंके युद्धके कारण यद्यपि इस संख्यामें क्षति हुई फिर भी सन् १७४०से ५० तक ३२२,६१७ और सन् १७५०से ६० तक ३९११०५ थान यहांसे निर्यात हुए। अर्थात् सन् १७११-२०तकके अङ्कोंसे यह संख्या डेढीसे अधिक बनी रही।

टेवरनियर यात्रीके वर्णनमें इस कालके रेशमके उद्योगका बड़ा मजेदार वर्णन मिलता है। उसने लिखा है कि "बंगालके अकेले कासिमबाजारमें प्रतिवर्ष २२००० गाँठें रेशमकी तैय्यार होती हैं। इनमेंसे ६,७ हजार गांठें जापान या हालैण्डके लिए ले ली जाती हैं और इससे भी अधिक लेनेकी कोशिश होती है पर मुगलराज्यके व्यापारी इन्हें लेने नहीं देते हैं। क्योंकि ये लोग भी डच लोगोंके बराबर गांठें खरीद लेते हैं और शेष जो गांठें बचती हैं वे यहींपर माल तैयार करनेके लिए रख ली जाती हैं। यह सब माल गुजरातमें लाया जाता है जिसमेंसे अधिकांश अहमदाबाद और सूरतमें आता है और वहां उसके तरह २के कपड़े बनाए जाते हैं। जैसे—

सोनेके कामका रेशमी कपड़ा
सोने और चांदीके कामका रेशमी कपड़ा } सूरत
खालिस रेशमके गलीचे

सुनहरी और रुपहरी धारियोंकी साटन बिना धारियोंका साफ वाफ्ता कई रंगोंका फूलदार पट्टा जो कि बहुत मुलायम रेशमका होता है।	अहमदाबाद

इन कपड़ोंका दाम दससे चालीस रुपया प्रति थान तक होता है। इस काम रुपया लगाती हैं और बहुत लाभ उठाती हैं। ये अपने किसी आदमीको निजी नहीं करने देतीं। ये सब चीजें यहांसे तैयार करवाके फिलिपाईन, जावा, सुमा- भेज दी जाती हैं।

कच्चे रेशमके सम्बन्धमें यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि पैलेस्टाइनके जिवे एलेपो (Aleppo) और त्रिपाली (Triprli) के व्यापारी भी कठि- कर सकते हैं—दूसरा रेशम सफेद नहीं होता है। कासिमबाजारका रेशम भी पः कच्चे रेशमकी तरह पीला होता है मगर कासिमबाजारके कारीगर इसे सफेद क है। इस कलाके द्वारा ये लोग इस रेशमको पैलेस्टाइनके रेशमके सदृश सफेद ब-

डच लोग बङ्गालमें खरीदे हुए रेशम और इसके पदार्थोंको नहर द्वारा— जाकर गङ्गामें मिली है—लेजाते हैं और वहांसे फिर हुगली ले जाकर लाद लेते हैं।

सन्१७६९ में ईस्ट इंडिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने बंगालमें कच्चे रेशमकी और कपड़ा बुननेके कामको नष्ट कर देना चाहा। उन्होंने आज्ञा निकाली कि रे- जुलाहे केवल कम्पनीकी फैक्टरियों ही में काम करें। वे बाहरका कोई काम न कम्पनीकी इस आज्ञाके विरुद्ध वे दूसरी जगह कार्य्य करेंगे तो उन्हें कड़ा दण्ड (१७—३—१७६९)। इस प्रकारकी बलात्कार पूर्ण आज्ञाओंसे रेशमी और सूती - पड़ चला। जिसका परिणाम यह हुआ कि यहांसे जो पदार्थ दुनियाके भिन्न २ य ये वे ही यहांपर बाहरसे दिन प्रतिदिन अधिक २ मंगाये जाने लगे। इस प्रकार और व्यापारका पासा पलटम पलट गया।

नीचे दिये हुए अङ्कोंसे पता चल जायगा कि सन् १७६३के कानूनके पश्चात बने हुए मालका आयात किस प्रकार बढ़ा।

रुपया वसूल करनेके लिए मैं अदालतमें नालिश करूं, तो न्यायाधीश मुझे डिग्री देनेके पूर्व इस बातकी जांच करेगा कि उस जुलाहेसे कम्पनीका रुपया तो पावना नहीं है। यदि ऐसा है तो पहले डिग्री उस रकमकी मिलती है और मेरे लिये इसके सिवा कोई चारा नहीं रह जाता कि अपने रुपयोंके लिये रो बैठूं।

इस प्रकारके कानून बन जानेपर उनका दुरुपयोग होना भी स्वाभाविक ही है। इन कानूनोंके सहारे कम्पनीके नौकर मनमाना अत्याचार करते थे। इस प्रकारके अत्याचारोंका वर्णन सार्जेंट ब्रेगो (Sergeant Brego) के २६ मई सन् १७६२ के पत्रमें मिलता है। उसमें लिखा है कि कम्पनीका गुमाश्ता चाहे जिसे अपना माल खरीदने और उसका माल उसके हाथ बेचनेके लिये बाध्य करता था, और किसी प्रकारकी आनाकानी करनेपर उसे कैद कर लिया जाता था। कोड़ोंसे पिटवाना उसके हाथमें था। इसी प्रकारके अत्याचारोंके कारण यह स्थान (बाकरगंज) जो एक बहुत सम्पत्तिशाली स्थान था, आज उजाड़ हो रहा है और प्रतिदिन यहांके रहनेवाले अपने घरों और स्थानको छोड़ छोड़कर भागे जा रहे हैं। यहांके बाजारोंमें पूर्व जब रौनक थी वहां अब कुछ नहीं है। कम्पनीके चपरासी गरीब जनताको लूट रहे हैं। यदि यहांका जमींदार इस अत्याचारके प्रति कुछ मनाई करता है तो उसके प्रति भी दुर्व्यवहार किया जाता है।

जब जुलाहोंपर किसी प्रकारका अनुचित दबाव या बन्धन डाला जाता है तो उसका उपाय होना तो दूर, वह बन्द हुए बिना नहीं रहता। इन कानून कायदोंका एक परिणाम यह हुआ कि कम्पनीने व कम्पनीके नौकरोंने भारतीय कारीगरोंपर जितने अत्याचार किये, उतने ही या उससे भी अधिक अन्य यूरोपियन व्यापारियोंने यहां पर किया।

गुलाम हुसैनने अपनी प्रसिद्ध पुस्तकमें उस समयके व्यापारका बड़ा ही हृदय द्रावक वर्णन करते हुए लिखा है कि इस दुर्व्यवहारको देखकर जनता तंग आ गई है और भूखों मर रही है एवं ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर! तू इन दुखी मनुष्योंकी सहायता कर और उन्हें इस अत्याचारसे किसी तरह छुड़ा।

एडमण्ड बर्क नामक प्रसिद्ध व्याख्याताने भी कम्पनीके नौकरोंके द्वारा भारतीय कारीगरोंपर किये गये अत्याचारोंकी बातें सुनकर खेद प्रकट किया और १५ फरवरी सन् १७८८ को हाउस आफ लार्डसके सामने वारेन हेस्टिंग्जपर दोष लगाते हुए, उसने कम्पनीके नौकरोंके अत्याचारका ऐसा वर्णन किया कि जिसे सुनकर वहांके सब सदस्य कांप उठे। उसने कहा कि कम्पनीके नौकर उन कारीगरोंकी उंगलियोंको रस्सीसे खूब खींचकर बांधते हैं, यहांतक कि उनके दोनों हाथोंका मांस निकल पड़ता है, फिर उन उंगलियोंके बीच लकड़ीके या लोहेकी कीलें इस तरह ठोकते हैं कि वे अपाहिज, पंगु और हमेशाके लिये एकदम नष्ट और बेकार हो जाते हैं।

कम्पनीके इस एकाधिपत्यके कारण कारीगरों पर दिन प्रति दिन जोर जुल्म बढ़ने लगे। यहां तक कि यदि कोई जुलाहा अपने मालको किसी दूसरेके हाथ बेचता हुआ देखा जाता, या कोई दलाल ऐसे मामलोंमें बीच बिचाव करता हुआ पाया जाता तो कम्पनीके नौकर उसे पकड़ कर कैद कर लेते थे और उसपर जुर्माना किया जाता था। कभी २ ऐसे लोग कोड़ोंसे पीटे जाते थे। जो जुलाहे कम्पनीके साथ किये हुए इकरारनामोंको पूरा करनेमें असमर्थ रह जाते, उनके घरोंमें से माल निकाल कर नीलाम कर दिया जाता और उस रकमसे कम्पनी अपने घाटेको पूरा करती थी। रेशम बटनेवालों—जो नगदा कहलाते थे—के प्रति भी ऐसा ही कठोर व्यवहार किया जाता था। ऐसे भी कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें इन रेशम बटनेवालोंने केवल इसी लिये, कि हमें रेशम बटनेके लिये बाध्य न किया जायगा, अपने हाथोंके अंगूठे काट डाले थे।

इन जुलाहोंको जबर्दस्ती पेशगी रुपये दे दिया जाता था। एकबार पेशगी रुपया ले लेनेपर जुलाहा फिर किसी प्रकार छुटकारा नहीं पा सकता था। यदि माल देनेमें देरी होती तो या तो उसके घरपर चपड़ासी बैठा दिया जाता—जिसकी ~) रोजके हिसाबसे तलब ल्या दी जाती थी-या उसे अदालतमें बुलाया जाता था। इस प्रकार गांवके तमाम जुलाहों पर कम्पनीका एकाधिपत्य था। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कि जुलाहोंपर कम्पनीकी यह सत्ता कानूनसे भी अनुमोदनीय करार दी गई थी। उस कानूनका भाव यह था कि " जिस जुलाहेने कम्पनीसे पेशगी रुपया लिया है वह किसी भी दशामें कम्पनीके सिवा किसी दूसरे यूरोपियन या भारतीय व्यापारीको अपना बनाया हुआ माल न बेच सकेगा और न किसी दूसरेके लिये बना ही सकेगा। यदि निश्चित अवधिके अन्दर वह माल न दे सकेगा तो कम्पनीके अधिकारी उसके मकान पर चपरासी बैठा सकेंगे और यदि वह दूसरोंके हाथ माल बेचेगा तो उसपर अदालतमें मामला चलाया जावेगा। इसके अतिरिक्त यदि कोई जुलाहा एकसे अधिक तांत (Loom) रक्खेगा, तो उसके ऊपर कपड़ेके मूल्यका ३५ प्रतिशत दण्ड किया जायगा।

इस तरहके व्यवहारका वर्णन हेनरी गांगर (Henry ganger)ने अपने जेल जीवनके वर्णनमें किया है। उसने लिखा है कि एक ग्रामके सूत कातनेवालेने मुझसे पेशगी रुपया लिया। मेरे और उस जुलाहेके बीच कण्ट्राक्ट हो जानेके पश्चात् कम्पनीके दो नौकर उस गांवमें आये। एक अपने हाथमें रुपयोंकी थैली लिये हुए था और दूसरा एक ऐसी किताब लिये हुए था जिसमें रुपये पानेवालोंके नाम लिखे जाते थे। उन जुलाहोंका यह कहना—कि हमने दूसरेसे रुपये ले लिये हैं—बिलकुल व्यर्थ हुआ। जिस किसीने रुपया लेनेसे इन्कार किया उनके घरोंमें जबर्दस्ती रुपया फेंक दिया गया और उसका नाम लिख लिया गया। इस प्रकार की सत्ताके बलपर कम्पनीका एजंटमें मेरे ही घरपर मेरे कारीगरों और मेरे माल असबावको बलात्कार छीन लेता है। इतना ही नहीं यदि मेरा

रुपया वापिस मिलनेके लिए मैं अदालतमें नालिश करूं, तो न्यायाधीश मुझे डिग्री देनेके पूर्व इस बातकी जांच करेगा कि उस जुलाहेमें कम्पनीका रुपया तो पावना नहीं है। यदि ऐसा है तो पहले डिग्री उस एजण्टको मिलती है और मेरे लिये इसके सिवा कोई चारा नहीं रह जाता कि अपने रुपयोंके लिये रो बैठूं।

इस प्रकारके कानून बन जानेपर उनका दुरुपयोग होना भी स्वाभाविक ही है। इन कानूनोंके बलपर कम्पनीके नौकर मनमाना अत्याचार करते थे। इस प्रकारके अत्याचारोंका वर्णन सरजेंट ब्रेगो (Sergent Brego) के २६ मई सन् १७६२ के पत्रमें मिलता है। उसमें लिखा है कि कम्पनीका गुमास्ता चाहे जिसे अपना माल खरीदने और उसका माल उसके हाथ बेचनेके लिये दबा सकता था, और किसी प्रकारकी आनाकानी करनेपर उसे कैद कर लेना या उसे कोड़ोंसे पिटवाना उसके हाथमें था। इसी प्रकारके अत्याचारोंके कारण यह स्थान (बाकरगंज) जो एक बहुत सम्पत्तिशाली स्थान था, आज उजाड़ हो रहा है और प्रतिदिन वहांके रहनेवाले भगकर कहीं और आरामकी जगह खोजनेको चले जा रहे हैं। जहांके बाजारोंमें धूम मच रही थी वहां आज कुछ नहीं है। कम्पनीके चपरासी गरीब जनताको सता रहे हैं। यदि वहांका जमींदार इस अत्याचारके प्रति कुछ मनाई करता है तो उसके प्रति भी दुर्व्यवहार किया जाता है।

जब उद्योगपर किसी प्रकारका अनुचित दबाव या बन्धन डाला जाता है तो उसका उन्नत होना तो दूर, वह नष्ट हुए बिना नहीं रहता। इन कानून कायदोंका एक परिणाम यह हुआ कि कम्पनीने या कम्पनीके नौकरोंने भारतीय कारीगरोंपर जितने अत्याचार किये, उतने ही या उससे भी अधिक अन्य यूरोपीय व्यापारियोंने उन्हें तंग किया।

सुजात मुताखरीन नामक प्रसिद्ध पुस्तकका लेखक उस समयके न्यायका बड़ा ही हृदय द्रावक वर्णन करते हुए लिखता है कि इस दुर्व्यवहारकी वजहसे जनता तंग आ गई है और भूखों मर रही है एवं ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर! तू तेरे दुःखी भक्तोंकी सहायता कर और उन्हें इन अत्याचारोंसे किसी भांति छुड़ा।

एडमण्ड बर्क नामक प्रसिद्ध न्यायकर्त्ता भी कम्पनीके नौकरोंके द्वारा भारतीय कारीगरोंपर किये गये अत्याचारोंकी बातें सुनकर कांप उठा और १५ फरवरी सन् १७८८ को हाउस आफ लार्डसके सामने वारनहेस्टिंग्ज़को दोषी ठहराते हुए, उसने कम्पनीके नौकरोंके अत्याचारका ऐसा मर्मभेदी वर्णन किया कि जिसे सुनकर वहांके सब सदस्य कांप उठे। उसने कहा कि कम्पनीके नौकर उन कारीगरोंकी उंगलियोंको रस्सीसे खूब खींचकर बांधते हैं, यहांतक कि उनके दोनों हाथोंका मांस निकल पड़ता है, फिर उन उंगलियोंके बीच लकड़ीकी या लोहेकी कीलें इस तरह ठोकते हैं कि वे असहाय, गरीब और ईमानदार हाथ एकदम नष्ट और बेकार हो जाते हैं।

इधर तो भारतमें यह भयङ्कर दृश्य अभिनीत हो रहा था। उधर इंगलैंडमें भारतके बने हुए मालकी रोकके लिए जबर्दस्त प्रयत्न किया जा रहा था। यद्यपि सन् १६६० से ही भारतके एक थान-'केलिको' पर ६ पेनीसे लेकर ३ शिलिंग तक चुंगी लगने लग गई थी तथापि वहांके बाजारोंमें भारतीय मालकी इतनी अधिक खपत थी कि इतनी चुंगीके रहते हुए भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीका व्यापार चमक उठा, जिससे भारतमें माल इकट्ठा करनेके लिये कम्पनीको उपरोक्त उपाय काममें लाना पड़ते थे। मगर भारतीय मालकी इस गहरी खपतके कारण वहांके सूती रेशमी तथा ऊनी कपड़ोंका उद्योग पनपने नहीं पाता था। इसलिये भारतके मालसे वहांके उद्योगकी रक्षा करनेके लिये बड़े-बड़े प्रयत्न किये गये। ड्यूटी भी बहुत बढ़ा दी गई पर इतनी असुविधाओंके होनेपर भी भारतीय मालकी खपत न रुकी और पहननेवाले एक गज मलमलका दाम ३० शि० देकर भी उसे पहनने लगे। यह देखकर इंगलैंडके कारीगरोंने बड़ा शोर मचाया और हाउस आफ कामन्समें यह प्रश्न लाया गया। यहांपर भारतीय मालके व्यापारियोंकी वह प्रार्थना, जो भारतीय मालकी आमद न रोकनेके पक्षमें थी खारिज कर दी गई। लेकिन हाउस आफ लार्ड्समें भारतीय रेशम और छपे हुए केलिकोको पहननेकी मनाईका कानून दो बार गिरा दिया गया। क्योंकि बड़े बड़े २ आदमियों और स्त्रियोंने हाउस आफ कामन्सके द्वारा किये गये इस प्रस्तावके विरुद्ध बहुत बड़ा भाग लिया था।

सन् १७०१ में ८२६, १०१ थान मलमलके और १,१५,५०४ थान रेशमके भारतसे इंगलैंडमें आयात हुए। इस भारी आयातके कारण लण्डनके कारीगरोंने बहुत उग्र रूप धारण किया। यहां तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीके गोदामपर उन्होंने हमला कर दिया और इस काममें वे सफल भी हुए, पर अन्तमें सरकार द्वारा दबा दिये गये और यह कानून बना दिया गया कि जो वहां बंगालका सूती रेशमी कपड़ा हो वह जब तक वापिस निर्यात न हो तबतक चुंगी घाके नियत किये हुए गोदाममें वह रखा जाय, ताकि उसे न कोई पहने न कोई व्यवहारमें लावे और यदि किसीके पास इनमेंसे कोई पदार्थ मिले तो उसपर २०० पौण्ड जुर्माना किया जाय।

इन सब घटनाओंसे कम्पनी बड़े विचारमें पड़ गई। वह लोगोंको यह जानने देना नहीं चाहती थी कि वह भारतीय व्यापारको छोड़ना चाहती है। इसके लिये भी उसे दिखावटी रूप रखना पड़ता था। इन सब कारणोंसे कम्पनीको बड़ी हानि उठानी पड़ रही थी। क्योंकि उसके पास जहाजोंपर भरकर ले जानेके लिये बहुत कम सामान था। इसलिये या तो उन जहाजोंको खाली लौटकर जाना पड़ता था या चीनीके बर्तन तथा ऐसे ही दूसरे पदार्थोंको भरकर ले जाना पड़ता था, जिनसे कोई लाभ न था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रेशम और छपी हुई केलिकोके पूर्ण प्रतिबन्ध, और मलमल तथा सफेद केलिकोपर लगायी हुई भारी चुंगीने इंगलैंडके कपड़ा बुनने और रंगनेके कारबारको बहुत उत्तेजन दिया। भारतकी बनी हुई सफेद मलमलको रंगनेका एवं केलिकोपर छपाई

करनेका कारवार वहांपर इतना बढ़ गया कि पारलियामेंटको सन् १७१२ में तीन आने प्रति गज और सन् १७३४ में छः आने प्रतिगज चुंगी लगानी पड़ी।

यह सब होनेपर भी—संरक्षण नीतिको इसप्रकार काममें लानेपर भी—भारतकी छपी केलिको का व्यवहार कम नहीं पड़ा, और इंगलैंडके रेशम तथा उसके व्यापारको हानि पहुंचना बन्द न हुई। यह देखकर सन् १७१९ में पारलियामेंटमें फिरसे यह प्रश्न उठाया गया। कम्पनीने इस कानूनका बहुत विरोध किया। उसने कहा कि "कम्पनीके व्यापारसे इंगलैंडको बहुत लाभ पहुंचा है, एवं उससे ऊनी कपड़ा बनानेके उद्योगको बहुत सहायता मिली है, इस कानूनसे व्यापारको बहुत हानि पहुंचेगी। जहाजी शक्तिको इससे बड़ा धक्का पहुंचेगा और भारतमें उसकी स्थिति कमजोर हो जायगी। भारतीय नरेशोंकी दृष्टिसे अंगरेज गिर जायंगे और दूसरी यूरोपीय जातियोंको भारतका सर्व व्यापार एवं शक्ति अपने हाथमें करनेका मौका मिल जायगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण हानि इस कानूनसे यह होगी कि भारतीय नरेश अपने राज्योंमें इंगलैंडके बने हुए मालको आना बन्द कर देंगे।" कम्पनीके द्वारा इतना जबर्दस्त विरोध होनेपर भी सन् १७२० में इंगलैंडके रेशमी और ऊनी व्यापारकी रक्षा करनेके लिये एक कानून पास हो ही गया। इस कानूनके द्वारा भारतके छपे हुए और रंगे हुए रेशम और केलिकोका व्यवहार पूर्णतया मना किया गया और उसके पहननेवाले पर ५ पौण्ड और बेचनेवाले पर २५ पौण्ड जुर्माना रक्खा गया। इस कानूनसे भारतके रंगे हुए तथा छपे हुए मालका आयात बहुत कुछ घट गया, फिर भी इसके व्यवहारकी शिकायतें बहुत समय तक होती रहीं।

इन सब उपायोंने अन्तमें इंगलैंडके बाजारसे भारतीय कपड़ेका नाम उठा दिया। और बीस ही वर्षमें अर्थात् सन् १७४० में इंगलैंड इतना कपडा बनाने लग गया जो वहांकी आवश्यकताकी पूर्ति करके बाहर भी जाने लगा।

नीचे दिये हुए अंकोंसे इंगलैंडके इस कपडेके उद्योगका पता भली भांति चल जाता है।

सन्	रूईका आयात	कपड़ेका निर्यात
१६९७	१९७६३५९ रतल	५,९१५ पौंड
१७०१	१९८५८६८ ,,	२३२५३ ,,
१७१०	७,१५००८ ,,	५६९८ ,,
१७२०	१९,७२,६०५ ,,	१६२०० ,,
१७३०	१५,४५,४७२ ,,	१३,५२४ ,,
१७४१	१९,५६,०३१ ,,	२०,७८९ ,,
१७५१	२९,५६,६१० ,,	४५९८६ ,,

इस भांति सन् १६६० से लेकर १७५७ तक ग्रेटब्रिटेनकी व्यापारिक नीति बाहरी मालकी आमदको बन्द करनेकी रही और किसी मालकी आमदपर पूर्ण मनाई एवं किसीकी आमदपर भारी कर लगाकर अपने यहांके उद्योगकी बढ़वारीके मार्गपर यह कटिबद्ध रहा। ये सब बातें

मशीनोंके आविष्कार और उसके प्रारम्भके पहलेकी हैं। इसके पश्चात् पाश्चात्य देशोंमें मशीनरी का आविष्कार हो जानेपर तो भारतका व्यापार और भी आपद्ग्रस्त हो गया और कुछ ही वर्षोंमें भारतके उद्योग धन्धोंका प्राचीन आधिपत्य इस प्रकार नष्ट हो गया कि जहां वह दूसरे देशोंके बाजारोंको अपने मालसे पटा हुआ रखता था, वहां अब इसके बाजार दूसरे देशोंके मालसे पटे रहने लगे।

इंग्लैंडको भारतके व्यापारसे बहुत अधिक लाभ था। वहांके सरकारी खजानेमें चुंगीके द्वारा जो रकम आती थी वह सोने और चांदीके रूपमें बाहर जानेवाली रकमसे अधिक ही बैठती थी। यहांकी सरकारको कम्पनीके व्यापारपर लगाये हुए करसे जो आमदनी बैठती थी वह कम्पनी द्वारा बाहर भेजी जानेवाली रकमके बराबर और कभी कभी उससे अधिक बैठती थी। इसके प्रमाणके लिये सन् १७५० से १७६० तकके चुंगीके अङ्कोंका मिलान निर्यात किये हुए सोने चांदीके अङ्कोंसे करना चाहिये।

सन्	कम्पनी द्वारा दीगई चुंगीकी रकम पौण्ड	निर्यात सोनेचांदीकी रकम पौण्ड
१७५१	८८३८८१	८,०१,२५२
१७५२	६,२१,२१५	६,३६,१८५
१७५३	८,६८,२०२	८,३३,१६४
१७५४	६,०४,०११	६,४४,२५६
१७५५	६,३८,५४३	६,६८,८६३
१७५६	८,९७,१२२	६,२०२७८
१७५७	६,१०,६६०	७,६'१००८
१७५८	७,३०,०२२	४,१६,२५२
१७५९	१०,२८,६२२	१,३२,८०४

इससे प्रकट है कि इन दस वर्षोंमें इंगलैंडने जहां ६३ लाख पौण्ड बाहर भेजे वहां उसे प्राचीन रकमसे अधिक रोकड़ तो चुंगीके रूपमें प्राप्त हो गया। पूर्वीय देशोंके साथ होनेवाले व्यापारसे इंगलैंडको कितना लाभ था यह ऊपरके अङ्कोंसे स्पष्ट है। १८ वीं शताब्दीके मध्यमें इंगलैंडका पूर्वीय व्यापार इतना लाभप्रद था कि एक प्रकारसे यह माल उसे मुफ्तमें ही मिल जाता था। क्योंकि जितनी रकम कम्पनी यहांसे बाहर भेजती थी उसीके करीब वह उसे चुंगीके रूपमें वापस भी दे देती थी। इस मालको फिर दूसरे देशोंमें निर्यात कर देनेसे लाखों पौण्ड और मिल जाते थे। इसके अतिरिक्त जहाजी व्यवसायसे भी बहुत अधिक द्रव्य मिलता था। इसी तरह जो अंग्रेज कम्पनीकी नौकरीमें थे वे भी अपने देशमें भारतसे बहुतसा द्रव्य ले जाते थे। इस तरह इंगलैंडके व्यापारी, बैंकवाले, कारीगर, पूंजीपति इत्यादि सब लोग इस लाभदायक व्यापारसे मालामाल हो रहे थे।

भारतीय कपड़ेका प्रतिबन्ध होते ही इंग्लैण्डका घरू उद्योग स्थिर, परिष्कृत और उन्नत होने लगा। विलियम उडने लिखा है कि ज्यों ही भारतीय रेशम आदिकी मनाईका कानून पास हुआ त्योंही इंग्लैण्डके कपड़ा बुननेवालोंमें—जो उदास चित्त बैठे हुए थे—नवीन जीवन और नवीन उत्साहका संचार हो गया और केवल बुननेवालोंही को नहीं पर व्यापारियोंको भी उससे लाभ हुआ।

इंग्लैण्डके बढ़ते हुए कपड़ेके उद्योगका विषमय प्रभाव भारतमें सन् १७६० तक मालूम नहीं हुआ। उस समयतक भारत कपड़ा बुनने और लाने लेजानेके उद्योगका केन्द्र था। उस समय भी यहां सैकड़ों प्रकारका कपड़ा बनता था। मगर मशीनोंके आविष्कार और प्रचारके कारण, एवं भारतवर्षमें फ्रान्सीसी तथा डच लोगोंके राजकीय और व्यापारिक क्षेत्रमें पिछड़ जानेसे यूरोपमें भारतीय पदार्थोंका आयात एकदम घट गया, यहांतक कि थोड़े ही दिनोंमें वह बिलकुल बन्द हो गया। जिससे भारतका कातने, बुनने और रंगनेका उद्योग नष्ट हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतके विदेशी व्यापारने दूसरा ही रूप धारण कर लिया। नीचे सन् १८३४ से १८५८ तकके आयात और निर्यातके अङ्क दिये जाते हैं, जिनसे व्यापारके इस बदले हुए रूपका भलीभांति पता लग जायगा :—

सन्	कुल आयात (पौण्ड)	कुल निर्यात (पौण्ड)
१८३४-३५	६१,५४,१२६	८१,८८१६१
१८३६	६२,२८,३१२	१,१२,१४,६०४
१८३७	७५,७३,१५७	१३५,०४,११७
१८३८	७६.७२,५७२	१,१५,८३,४३६
१८३९	८२,५१,५९६	१,२१,२२,६७५
१८४०	७७,७६.५०१	१,१३,३३,२६८
१८४१	१,०२,०२,१९३	१,३८,२२,०७०
१८४२	९६,२९,९००	१,४३,४०,२९३
१८४३	१,१०,४६,८९४	१,३७,६७,६२१
१८४४	१,३६,१२,४०५	१,७९,९९,५५३
१८४५	१,४५,०६,५३७	१,७६,९७,०५२
१८४६	१,१८,३६,५८६	१,७८,४४,७०२
१८४७	१,०५,७१,००८	१,६०,९६,३०७
१८४८	१,२५,४९,३०७	१,४७,३८,४३५
१८५७	२,८६०,८२८४	२६,५९१८७७
१८५८	३,१०,९३,०६५	२,८२७८,४७४

व्यापारके इन बढ़ते हुए अङ्कोंसे भारतके धनवैभवकी! बढ़ती मान लेना, यही भ्रम मूलक कल्पना होगी। गदरके दो तीन वर्षोंको छोड़कर बाकी सब सालोंमें आयातकी अपेक्षा निर्यात अधिक रहा है। पर इससे यह समझ लेना कि निर्यात आयातसे जितना अधिक हुआ उतना ही रुपया भारतको मिल गया गलत फहमी होगी। ऊपर हम लिख आये हैं कि इंग्लैण्डके प्रति-बन्धक कानूनसे, तथा मशीनोंके आविष्कारसे भारतीय बने हुए पदार्थोंका निर्यात एकदम बंद हो गया था, फिर निर्यातके अङ्कोंमें यह वृद्धि कैसे हो गई? यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है। बात यह है कि भारतसे पक्के मालकी रफ्तनीके बन्द होनेके साथ ही—यहांके उद्योग धंधोंके नष्ट हो जानेसे—कच्चे मालकी रफ्तनी प्रारम्भ हो गई। जिससे रफ्तनीके अङ्कोंकी यह संख्या घटनेके बदले बढ़ती ही गई। इसी प्रकार विलायतके बने हुए मालकी आमद बढ़नेसे यहांके आयातके अङ्कोंमें भी वृद्धि हो गई। यह वृद्धि यहीं खतम नहीं हुई, आगेके वर्षोंमें दिन २ बढ़ती ही गई, और अबतक बढ़ती जा रही है। पर इस वृद्धिसे भारतके वैभव और समृद्धिकी वृद्धिसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इस बातकी आलोचना हम आगे—वर्तमान व्यापार विभागमें—अनेक जगह करते हैं।

वर्तमान व्यापार

ऊपर लिखे हुए इतिहाससे इस बातका सहज ही पता लग जाता है कि यद्यपि करीब हजार डेढ़ हजार वर्षोंसे भारतकी शस्य श्यामल भूमि विदेशी आक्रमणकारियोंकी क्रीड़ा भूमि बन रही थी और महमूद गजनवी, चंगेज, तैमूर, तथा नादिरशाहके समान कई विदेशी लुटेरोंने यहांकी सम्पत्तिको दोनों हाथोंसे लूटा, लोगोंको कत्ल किया, राजनैतिक और सामाजिक अशांति मचानेमें कोई कोर कसर न रक्खी, फिर भी उन लोगोंके द्वारा केवल देशकी ऊपरी सम्पत्तिका ही नाश हुआ। देशके अन्दरके जीवनमें, व्यापारिक जीवनको सुरक्षित रखनेवाले औद्योगिक साधनोंमें, उनसे नुक-सान न पहुंचा और यही कारण है कि जीवनके मूल तत्वोंके नष्ट न होनेकी वजहसे देशने इन लुटेरोंके द्वारा होनेवाले घावोंको थोड़े ही समयमें भर लिया। मगर यूरोपीय व्यापारियोंने—उसमें भी खासकर ईस्ट इण्डिया कम्पनीने—इस नीतिसे काम न लिया। उसने केवल भारतकी सम्पत्तिको लूटने [illegible] भर ही न दिया, प्रत्युत अपने देशके औद्योगिक जीवनकी वृद्धिके लिये, उसने इस देशके औद्योगिक जीवनके मूल तत्वोंको ही नष्ट कर दिया। यह हानि इतनी जबर्दस्त हुई जिसकी सानी इतिहासके पन्नोंमें शायद ही कहीं मिलती हो। इसकी वजहसे देशके व्यापारमें एक बड़ा ही विचित्र उलट फेर हुआ। जहां इस देशके द्वारा विदेशोंको करोड़ों रुपयोंका माल जाता था, वहां उलटे करोड़ोंका माल विदेशोंसे यहां आने लगा। दुनियाके उद्योग धन्धोंके इतिहासमें ऐसी आश्चर्यजनक अद्भुत दृष्टान्त खोजनेसे भी कहीं न मिलेगा।

यहां यह लिख देना आवश्यक होगा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीने व्यापारलक्ष्मीके साथ धीरे २ यहांकी राज्य-लक्ष्मीको भी हथियाना प्रारम्भ किया और जब राज्यलक्ष्मी उसके हाथमें चली गई तब उसने व्यापारपर एकाधिपत्य रखना उचित न समझा। उसने यहांके व्यापारके द्वारको सबके लिए खोल दिया। परिणाम यह हुआ कि भिन्न २ देशोंके विदेशी व्यापारियोंने यहां आकर व्यापारमें अत्यन्त ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया। तबसे इस देशका विदेशी व्यापार आयात और निर्यात दोनों बराबर बढ़ता ही चला जा रहा है। इस बातके स्पष्टी करणके लिये नीचे सन् १८६४ से लेकर अभी तकके व्यापारिक अङ्क दिये जाते हैं।

सन्	आयात	निर्यात
१८६४ से ६९ तक	३१,७० लाख	५१,८६ लाख
१८६९ से ७४ तक	३३,०४ लाख	५६,२५ लाख
१८७४ से ७९ तक	३८,३६ लाख	६०,३२ लाख
१८७९ से ८४ तक	५०,१६ लाख	७९,०८ लाख
१८८४ से ८९ तक	६१,५१ लाख	८८,६४ लाख
१८८९ से ९४ तक	७०,९८ लाख	१०,४९९ लाख
१८९४ से ९९ तक	७३,६७ लाख	१०,७५३ लाख
१८९९ से १९०४ तक	८४,६८ लाख	१,५४,९२ लाख
१९०४-५ में	१०,४४१ लाख	१,५७,७२ लाख
१९१०—११ में	१३,३७० लाख	२०९,९६ लाख
१९१५-१६ में	१,२८,१६ लाख	१,६९,५६ लाख
१९२०-२१ में	३,४७,५७ लाख	२,६७,७६ लाख
१९२५-२६ में	२३,६०० लाख	३८,६,८२ लाख
१९२६-२७ में	२४,०९१ लाख	३११०४ लाख

इन अङ्कोंसे पता चलता है कि इन वर्षोंमें भारतका आयात और निर्यातका व्यापार करोड़ोंसे अरबोंका हो गया। अनुमानसे २ अरबका आयात और इसी भांति करीब ३ अरबका निर्यात भारतसे प्रति वर्ष विदेशोंको हो रहा है। इस विदेशी व्यापारपर पहले पहल विदेशियोंका पूरा अधिकार था और यद्यपि अब कुछ भारतीय व्यापारियोंने यहांके एक्सपोर्ट इम्पोर्टमें अच्छा हाथ बढ़ाया है फिर भी अभी तक इसका अधिकांश भाग विदेशी व्यापारियोंहीके हाथमें है।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इन पचास साठ वर्षोंमें हमारे यहांके विदेशी व्यापारके अङ्क बहुत बढ़ गये हैं। मगर इस व्यापारमें कई बुराइयां ऐसी हैं जिनकी वजहसे हमें इस व्यापारसे लाभके बदले हानि उठानी पड़ती है। उनमेंसे एक प्रधान बुराई यह है कि यहांपर इम्पोर्ट होनेवाले मालमें अधिकतर कच्चा माल और खाद्य पदार्थ रहता है।

भारतके इम्पोर्टसे एक्सपोर्टकी संख्या अधिक है सो भी दो चार करोड़ नहीं पूरा एक अरब रुपया। इसमेंसे बहुत सी रकम तो ब्रिटिश सरकारके होम चार्जमें चली जाती है। बहुत सी विदेशी कम्पनियोंकी यहाँपर लगाई हुई पूंजीपर मुनाफा, जहाज किराया, बीमा खर्च आदि कई तरहसे विदेशमें चली जाती है। मतलब यह कि भारतको यह बची हुई रकम भी सुरक्षित रूपमें वापस नहीं मिलती।

भारतका विदेशी व्यापार एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मिलाकर करीब ५·६ अरब रुपयेका होता है। यह व्यापार किस प्रकारका है और उससे देशका कितना हिताहित सम्पन्न हो सकता है इस बातका विवेचन करनेके पूर्व यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ५-६ अरब रुपयेका यह बढ़ा हुआ व्यापार भी इस देशकी लम्बाई चौड़ाई और आबादीकी दृष्टिसे दूसरे देशोंकी अपेक्षा बहुत कम है। इसके लिये दुनियाके प्रधान २ व्यापारिक देशोंके व्यापारसे इसके व्यापारका मिलान करना अनुचित न होगा।

सन् १९२१—२२

देश	आबादी	कुल व्यापार पौण्ड	जन संख्याके प्रति मनुष्यके पीछे पड़नेवाले अंक
ग्रेटब्रिटेन	४,७३,०७६०१	१,७२,८० लाख	८६ पौण्ड
अमेरिका	१०,५७,१०,६२०	२००,८० लाख	११ ”
जर्मनी	६,५९,२५,९९३	१०,७०० लाख	१६ ”
जापान	५,९१,६१,१४०	२२,५० ”	३ ”
फ्रांस	३,९२,०९,७६६	४५,०० ”	१४ ”
भारत	३१,९०,७५,१३२	३४६० ”	१-१-८ पेंस

इस प्रकार जहां ब्रिटेनका व्यापार ८६ पौण्ड, अमेरिकाका ११ पौण्ड, जर्मनीका १६ पौण्ड, फ्रांसका १४ पौण्ड प्रति मनुष्य पड़ता है वहां भारतका व्यापार प्रति मनुष्य केवल एक पौण्ड एक शिलिंग तीन पेन्स पड़ता है। इस लेखेमें ब्रिटेन सबसे ऊंचा है और उसके पश्चात् अमेरिकाका और जर्मनीका नम्बर है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि ब्रिटेन अमेरिका या जर्मनीसे धनमें ऊंचा है। व्यापारिक अङ्क देशकी भीतरी आर्थिक स्थितिके पूर्ण परिचायक नहीं माने जा सकते। इसके लिये उपजाऊ शक्ति, आयात निर्यात व्यापारके ढङ्ग और प्रति मनुष्यकी औसत आमदनी आदि कई बातोंकी जांचकी आवश्यकता होती है और उन सबपर विचार करनेसे आज दुनियामें सबसे अधिक धनिक अमेरिका है और सबसे अधिक निर्धन भारतवर्ष। इस समय यह देश किसी भी बातमें अन्य देशोंसे मिलान करने लायक नहीं है।

अब भारतके अरबों रुपयोंके एक्सपोर्ट व्यापारपर ध्यान देना आवश्यक है। देखना होगा कि वह बाहरी देशोंसे भिन्न २ वस्तुओंका इम्पोर्ट करता है और उनके बदलेमें अपने यहांकी भिन्न २ वस्तुओंको एक्सपोर्ट करता है। साधारण दृष्टिसे देखनेपर इसके इम्पोर्टमें, कपड़ा, मशीनरी, लोहे लक्कड़की चीजें आदि वस्तुएं ही प्रधान हैं और इसके यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली चीजोंमें रुई, गल्ला, तिलहन, चाय, पाट, चमड़ा आदि कच्चा सामान ही अधिक रहता है।

भारतका आयात व्यापार

सन् १९२६-२७ में भारतमें २, ४०, ९१०००००) रुपयेका आयात हुआ। यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९१५-१६ में यह संख्या केवल १,३८,१६००,००० की थी। आयातके इन अङ्कोंके बढ़नेसे भारतका कोई हित नहीं है। इसमें उन्हीं देशोंका विशेष हित है जो भारतके बाजारोंको अपने मालसे अधिकाधिक पाटते जाते हैं और यहांकी सम्पत्तिको खींचकर ले जा रहे हैं। आयातके इन अङ्कोंमें भिन्न २ देशोंका झांकी इस प्रकार है :—

१९२६-२७

ग्रेटब्रिटेन	१,१०,५३,८५०००
जापान	१६,४७,२४०००
जर्मनी	१६,६०,७२०००
जावा	१४,२२,२८०००
अमेरिका	१८,२३,८१०००
बेलजियम	६,८००,८०००

इन अङ्कोंसे प्रकट है कि भारतके आयात व्यापारमें प्रधान हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। कुल आयातमें अनुमानतः ५० प्रतिशत ग्रेटब्रिटेनसे आता है।

भारतके आयातमें मुख्य २ पदार्थोंका विवरण इस भांति है।

सन् १९२६-२७

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
रुई और रुईके बने पदार्थ	६५,०४,७४,०००	धातु (टीन, पीतल, तांबा, शीशा एल्युमिनियम आदि)	७०,६३,५१००
कपड़ा	१९,१६,५००००	खाद्य पदार्थ (यथा बिस्कुट, पारली जमा हुआ दूध आदि)	५,५०,४६०००
चीनी	१६,७२,८९०००	विविध धातुओंकी बनी चीजें	५,०६,६२०००
लोहा और फौलाद	१४,५६,५००००	रेशम (कोरा और कपड़ा)	४,५९,७१०००
खनिज तेल	८०६,११०००	ऊन (कोरा और कपड़ा)	४,४६,३६०००
सवारियां (गाड़ी साइकिल मोटर, लोरी, बस, ट्राम आदि)	६,३९,६३०००		

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
सूती कपड़ा	४०,११,८००००	विलास सामग्री	१,१३,४१०००
लोहे सामग्री	३,२१,२४००००	रत्न मोती आदि	१,०६,६६०००
शक्कर	१,५२,८६००००	अन्न, दाल, आटा आदि	९१,६६०००
मशीनें	१,१२,२९००००	मिट्टीके पदार्थ	८२,८२००००
कागज	१०८,२००००	स्टेशनरी	८१,६१०००
मिट्टीका तेल	२,२६,११०००	दियासलाई	७५,०१०००
रेशमी चीजें	२,५३,८८०००	गाय	१,२६,५७०००
रसायन पदार्थ	२,४५,४५०००	खिलौने खेलके पदार्थ	६२,११०००
तेल	२,११,२१०००	जूते	५७,११०००
धातु (तांबा, पीतल)	२,१०,३६०००	लोहेका तेल आदि	५७०२०००
मोटरगाड़ियां	२०६६००००	छपी हुई पुस्तकें	५६,६००००
सिले हुए कपड़े	१,३४,८७०००	छाते और उनका सामान	५२,५७०००
रंग और रंगनेके	१,६१,३६०००	घड़ियां	३५,६६०००
रबड़	२,५२,४१०००	भारत सरकारके लिये	
कोयलेके पदार्थ	१,४४,२३०००	स्टोअरका सामान	१,५९,३६०००
ऊन	१,२६,२००००		
रबड़ व उसके पदार्थ	२,३३,६१०००	इत्यादि।	

उपरोक्त अङ्कोंको ध्यान पूर्वक देखनेसे पता लग जाता है कि भारतके आयात व्यापारमें कपड़ेको मुख्य स्थान प्राप्त है। अर्थात् समस्त आयातका एक चौथाईसे भी अधिक आयात कपड़ेका होता है। इस कपड़ेमें करीब ३६ करोड़ रुपयेका कपड़ा तो अकेले ग्रेट ब्रिटेनहीसे आयात हुआ।

कपड़ेके इतने बड़े आयातका यह कारण नहीं है कि यहांपर रुई या दूसरे रेशेदार द्रव्य पैदा न होते हों। अथवा यहांपर मजदूरोंकी कमी हो। रुई यहांपर इतनी पैदा होती है जितनी अमेरिकाको छोड़कर किसी दूसरे देशमें नहीं होती। लाखों मन रुई यहांसे प्रति वर्ष विदेशोंको भेजी जाती है। मजदूरोंकी भी यहांपर कमी नहीं है। ऐसी स्थितिमें यहांपर कपड़ेकी आवश्यकताको दूसरे देशवाले पूरी करें यह भारतके लिये अत्यन्त दुर्भाग्यकी बात है। जिन देशोंमें कच्चा माल पैदा नहीं होता है, अथवा मजदूरोंकी कमी है ऐसे देश यदि दूसरे देशोंसे मालका आयात करें तो एक हद तक उचित भी है। पर भारत जैसा देश जहां पदार्थ निर्माणके सब कुछ साधन विद्यमान हैं एवं मालकी खपतके लिये भी बड़ा विशाल क्षेत्र तैयार है। अपने उपयोगकी

चलनेके लिये दूसरे देशोंका मुहताज रहे, वह उसके लिये कितनी लज्जाजनक परिस्थिति है। यदि यह देश अपने व्यापारको सम्हाल ले—सुधार ले—अपने आवश्यकीय पदार्थोंको वहां बनाना प्रारम्भ करके बाहरसे पक्का माल मंगानेकी प्रणालीको बन्द करदे, तो इन देशोंके कल कारखानोंको चलना कठिन हो जाय जो आज इसकी सम्पत्तिपर मौज उड़ा रहे हैं।

सच पूछा जाय तो कल कारखाने प्रधान इन देशोंकी स्थिति इस समय बड़ी ही नाजुक हो रही है। यन्त्र कलाके प्रचारसे वहां माल तो बेशुमार तैयार होता है, मगर उस मालका खरीददार ढूंढनेकी चिन्ता उन्हें बेतरह व्यग्र कर रही है। बात यह है कि संसारमें पदार्थोंकी आवश्यकता की वृद्धि उस परिमाणसे नहीं हो रही, जिस परिमाणमें यन्त्रकलाके बलसे उनके निर्माणमें हो रही है। निर्माण और खपतकी इस असमानतासे निर्माण करनेवाले देशोंमें बड़ी गहरी व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता मच रही है। गत महायुद्धका भी मूल कारण प्रायः यही प्रतिद्वन्दता थी और भविष्यमें भी जब तक इंग्लैंड, फ्रांस जर्मनी या अन्य पाश्चात्य देश अपने यहां ऐसे पदार्थ तैयार करते रहेंगे जिनको वे अपने यहां न खपा सकें और जिनकी खपतके लिये भारतके समान कमजोर देशों भी--जो कि इन पदार्थोंको लेनेसे अपनी असमझ, कमजोरी, या शताब्दियोंकी गुलामीमें पड़े रहनेकी आदतसे इन्कार नहीं कर सकता है। आवश्यकता बनी रहेगी तब तक अन्तर्राष्ट्रीय कलहके मिटनेकी या भविष्यमें भारी युद्ध होनेकी आशंका नहीं मिट सकती। भविष्यमें जो युद्ध होगा वह इसी बातपर—इसी झगड़ेकी जड़पर होगा। उसके तात्कालिक कारण चाहे जो हों, पर उसका वास्तविक कारण वर्तमान समयकी व्यापारिक बुराई ही होगी। आज जो देश बड़े उन्नत, समृद्धिशाली और व्यापारिक उन्नतिके केन्द्र बने हुए हैं वे वास्तवमें—यदि सच्ची निगाहसे देखा जाय—तो इस समय बड़ी आपत्तिके बीचमें गतिविधि कर रहे हैं। किस दिन उनकी व्यापारिक गतिविधि नष्ट हो जायगी, इस बातका भय उन्हें प्रतिक्षण लगा रहता है।

भारतको इस बातकी आवश्यकता नहीं है कि वह दूसरे देशोंकी तरह अपने यहांके बने हुए मालको अन्य देशोंके बाजारोंमें पाट दे। उसके लिये केवल इसी बातकी आवश्यकता है कि वह अपने यहां उत्पन्न हुए कच्चे मालको अपने यहां ही पदार्थ निर्माणमें लगा ले—उससे अपनी आवश्यकताके पदार्थ वहीं तैयार कर ले। जिस दिन भारत अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये विदेशोंका आश्रित नहीं रहेगा—जिस दिन वह व्यापारिक जगतमें दूसरोंका मुहताज न रहेगा—उसी दिन उसका सौभाग्य सूर्य्य उदय हो जायगा और उसकी गुलामीकी बेड़ियोंके कटनेके दिन नजदीक आ जायंगे। भारतको अपने बनाये हुए पदार्थोंके लिये किसी भी विदेशी खरीददार या विदेशी बाजारको खोजनेकी आवश्यकता नहीं है। उसे अन्तर्राष्ट्रीय जीवनमें उन उद्यमी देशोंसे प्रतिद्वन्दता करनेकी भी कोई आवश्यकता नहीं है। उसे केवल अपने घर बारपर अपने निजके

बाजारोंपर अपना सत्व स्थापित करनेकी आवश्यकता है। मगर इस साधारण कामको करनेमें भी वह बेपरवाही, उदासीनता और कमजोरी बतला रहा है, यही सबसे बड़े खेदकी बात है। केवल इसी एक बातमें यदि भारत सम्हल जाय तो उसकी मुंह मांगी मुराद पूरी होनेमें विलम्ब न लगे।

कपड़े के आयातमें ग्रेटब्रिटेनसे दूसरा नम्बर जापानका है। जिसने दस करोड़ रुपयेका कपड़ा सन् २६-२७ में भेजा। रुई कुल ५,०३,३२००० की आई, इसमें मुख्य भाग अमेरिकाका रहा, जिसने २,११ लाखकी रुई भेजी। बाकी रुईके पदार्थ जो ६५ करोड़के आये उनमें ६,६२ लाख रुपयेका सूत आया। इस पदार्थमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ४१ प्रति शत और जापानका ५४ प्रति शत रहा, सन १६१५-१६में इस मालमें ग्रेटब्रिटेनका भाग ११प्रतिशत और जापानका२ प्रतिशत था। इस संख्यासे पढ़ाते २ जापानने कितना भाग घड़ा लिया, यह ध्यान देनेकी बात है। कुल सूत ४६० लाख रतल आया और प्रति पौण्डका औसत मूल्य १।-)॥ रहा। यही सन् १६२५-२६ में ७,१७ लाख रुपयेका ५२० लाख रतल आया था जिससे प्रति पौण्डका औसत मूल्य १॥) पड़ा था। भारतीय मिलोंने ८०,७१ लाख रतल सूत काता और यह सन्तोषकी बात है कि वे दिन प्रति दिन इस कार्यमें उन्नति करती जा रहीं हैं। इन दिनोंमें जो आयात घटा, वह अधिकतर एक नम्बरसे लेकर २० नम्बर तकके सूतमें था। इस दर्याल्टीके सूतको भारतीय मिलोंने ७१० लाख रतल अधिक काता। नम्बर ३१ से लेकर ४० तकके कोरे, धुले और रंगीन सूतके बनानेमें भी भारतीय मिलोंने उन्नति की। ४० नम्बरसे ऊपरका सूत आयात भी अधिक हुआ और यहां बना भी अधिक।

सूत जो मोटे महीनके नामसे कम और अधिक नम्बरोंसे घोषित होता है, उसकी जातियां इस भांति हैं:—

(१) कोरा (२) धुलाई, (३) रंगीन और (४) रेशमी चमकवाला (Mercerised) इनमेंसे कोरे और रंगीन सूतके आयातमें कमी हुई,पर धुलाई और मर्सराइजके आयातमें ८,और ४६ सैकड़ाकी वृद्धि हुई। इसीप्रकार कपड़े में,कोरा कपड़ा (बिना धुला हुआ)—जिसमें लट्ठा, मलमल नैनसुख, धोती आदि पदार्थ सम्मिलित हैं—१६,६२ लाखका आयात हुआ, धुलाहुआ कपड़ा जिसमें धोई हुई मलमल, नैनसुख, लंकलाट इत्यादि सम्मिलित हैं—१७१३ लाख रुपयेका आया। रङ्गीन कपड़ा भी १७२२ लाख रुपयेका आयात हुआ। धुले हुए कपड़ेमें ग्रेटब्रिटेनका भाग ६६ प्रतिशत रहा। कोरे और रङ्गीन कपड़ेमें उसका भाग सन् १६२५-२६में ७१ और ७३ प्रति शत था। मगर १६२६-२७में घटकर वह ७८ और ७१ प्रतिशत रहगया। इस मालमें इन दिनों जापानने अधिक उन्नति की। गंजी मौजा आदि भी इस कपड़ेमें सम्मिलित है। यह माल कुल १४७ लाख रुपयेका आया जिसमें १,१७ लाख रुपयेका आयात जापानसे हुआ।

भारतवर्षमें विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट करनेमें कलकत्ता सबसे अग्रगण्य है और उसके पश्चात् इस मालके आयातमें बम्बईका नम्बर है।

पश्चात्य देशोंके व्यापारकी इस सफलताके तथा भारतके व्यापारके इसप्रकार नष्ट होजानेके अन्तर्गर्भमें तीन कारण मूलभूत तत्व हैं। इनमेंसे पहला और प्रधान कारण अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इङ्गलेण्डके अन्दर यंत्रकलाका आविष्कार होना है। दूसरा कारण ब्रिटेनकी वह व्यापार-संरक्षण नीति हैं जिसके द्वारा उसने अपने बाजारोंमें पटे रहनेवाले भारतीय मालका कानूनन बहिष्कार कर दिया और तीसरा कारण मालको इधर उधर लाने लेजानेके सुविधा पूर्ण साधनोंका उत्पन्न होजाना है। इन तीनों बातोंने भारतके उद्योगको गिरानेमें और इङ्गलैण्डके उद्योगको बढ़ानेमें बहुत अधिक सहायताकी। खासकर यंत्रकलाके आविष्कारने जिसमें कातनेकी, बुननेकी और जहाजी सभी कलाएं सम्मिलित हैं। यहांके व्यापारको बहुतही धक्का पहुंचाया। इसप्रकार इन सब बातोंने भारतके शताब्दियों पुराने उद्योग धन्धोंको मटियामेट कर दिया और इन्हीं बातोंके बलपर इंगलैंड, अमेरिका आदि देश इसी एक शताब्दीमें उन्नतिके शिखरपर पहुंच गये। जो बात एक स्थानपर महा भयङ्कर और जीवन नाशकारी सावित हुई,उसीने दूसरी जगह मृतसंजीवनीका काम किया। इसीके बलपर जो इंगलेण्ड मुश्किलसे दस लाख पौण्ड रूई अपने यहां खपा सकता था सन् १८५०में ६६४० लाख रतल रुई खपानेमें समर्थ हुआ। इधर इन्हीं कारणोंसे जो भारत अपने कपड़ोंसे विदेशोंके बाजारोंको पटा हुआ रखता था उन्नीसवीं शताब्दीमें इङ्गलैण्डका बहुत बड़ा खरीददार बनगया।

चीन और जापान भी कुछ समयतक इङ्गलैण्डके कपड़ेको खरीददार रहे। मगर उन्होंने बहुत शीघ्र अपने व्यापारको सम्हाल लिया और वहांसे कपड़ा मंगाना कम करदिया। नीचेके अङ्कोंसे पता चलेगा कि सन् १८७७से १९२७ तक इङ्गलैण्डसे भारत, चीन और जापानको किस भांति कपड़ेका निर्यात हुआ ?

	कपड़ा हजारगज			सूत हजार रतल		
सन्	भारत	चीन	जापान	भारत	चीन	जापान
१८७७	१,३०,९६,३५	३६,७२,३०,	२७१५०	३६०३०,	१७९६२	१५१०५
१८८७	१८,११,१६४	५,५२,७४२,	६५४०३	४,८८५२	११८८२,	२३४७२
१८९७	१७,५४,८२०	४,४५,१८२,	९४०१६	४७६९६	११२४६,	२३१४२
१९०७	२४,५४,२३३	५,१३,२७३,	१२१२४०	३१०११	४२०९८	२११२

को भी प्रगति मिलती जायगी। और वह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररूप धारण कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाईशही न रहे।

उपरोक्त अङ्कोंसे इस बातका पता चलनेमें देर नहीं लगती जापान और चीनमें इन वर्षोंमें इंग्लेण्डका व्यापार कितना गिरगया है। इसका प्रधान कारण यह है कि जापानने इन थोड़ेसे दिनोंमें कपड़ेके उद्योगमें बहुत अधिक उन्नति की है। सूतका निर्यात तो जापानको एक दम बन्द है। चीनको भी उसकी तादाद एक तिहाईके करीब रह गई है।

यह बात नहीं है कि भारतवर्ष इस विषयमें बिलकुल ही चुप बैठा है, हर्षकी बात है कि उसने भी इस विषयमें अपनी आंखें खोली हैं। यद्यपि राजनैतिक गुलामी, तथा और दूसरे अनेक कारणोंकी वजहसे इन देशोंके मुकाबिलेमें उसकी गति विधि बहुत ही कम हैं फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि उसके यहां इंग्लेण्डसे आयात होनेवाले पक्के पदार्थोंकी तादाद घटी है। और यहां भी इस कालमें धड़ाधड़ सैकड़ों मिलें खुली हैं तथा उनसे निकलने वाले कपड़े और सूतकी तादादमें भी दिनोंदिन वृद्धि होती जारही है।

नीचे दिये हुए भारतीय मिलोंके सूत और कपड़ेके अङ्कोंसे यह बात स्पष्ट हो जायगी कि यहां इस काममें किस प्रकार उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

सन्	रुईकी गांठे खपीं, (गांठें)	सूत बना, (गांठें)	कपड़ा बना (गज)
१९००	१७,५३,२६२	१२,८४,६५८	३२,६४,२३,२६७
१९०५	१८,७१,२४४	१४,४१,६६३	५४,९५,२६,०६६
१९१०	१९३६,०१०	१५,६८,४१०	६६,३८,६१,४८२
१९१५	२१,०२,६३२	१६,२९ ६६१	११३,५७,०७,६६२
१९२०	१७,१२,३१८	१५,८६,४००	१६३,६७,३६,२२७
१९२२	२३,०३,६५०	१७,३०,७८२	१७३,१५,७३,२१६
१९२५-२६	२१,२००००	६८,६४,२७००० रतल	१९५,४४,६३०००
१९२६-२७	अंक उपलब्ध नहीं	८०,७१,१६००० ,,	२२५,८७,१५०००

इस भांति महायुद्धके पूर्व जहां भारतीय मिलें १ अरब गज कपड़ा तैयार करती थीं उसके स्थानमें अब २ अरब गजसे भी अधिक कपड़ा बनाने लगीं हैं। इसी प्रकार महायुद्धके पूर्व यहांपर इंग्लेण्डसे जहां २ अरब ५६ करोड़ गज कपड़ा आयात हुआ था वहां १९२६-२७ में केवल १४६ करोड़ गज कपड़ा आया। सूतमें हमारी मिलोंने ८० करोड़ रतल सूत तैयार किया और बाहरसे आयात हुआ ५ करोड़ रतल।

यहांपर यह देखना भी आवश्यक होगा कि इन्हीं वर्षोंमें जापानने अपने सूत और कपड़ेके व्यवसायमें कितनी उन्नति की, नीचेके अङ्कोंसे यह बात भी ज्ञात हो जायगी।

(जापान)

सन्	रुई खपी (गांठें)	सूत बना (गांठें)	कपड़ा बना (गज)
१९०३	८,७५,६०८	८०,१७,३७	७,६५७२२१२
१९२०	२१,३०,५९०	१८,१६,८७६	७६,२०,२७,३६०

कहनेका मतलब यह कि जापानके मुकाबिलेमें चाहे भारतकी गति शिथिल कम हो, फिर भी भारतमें सूत और कपड़ेका उद्योग बढ़ रहा है। यद्यपि चारों ओरकी प्रतिद्वन्द्वताके कारण यहांके मिलोंकी दशा जैसी चाहिये वैसी सन्तोष जनक नहीं है तथापि भारतीय जनताकी रुचिमें ज्यों २ सुधार होता जायगा त्यों २ इस उद्योगको भी प्रगति मिलती जायगी और वह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररूप धारण कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाइशही न रहे।

यह बात कुछ अंशोंमें सत्य है कि भारतीय मिलें अधिकतर मोटा कपड़ा बनाती हैं और विदेशी मालकी सी तड़क भड़क यहांके मालमें नहीं आती। इस कमजोरीकी वजहसे यहांके बने हुए कपड़ेका प्रचार जितना होना चाहिये उस तादादमें नहीं होरहा है। फिर भी यदि जनता अपने वास्तविक हिताहितको पहचानले, वह यदि इस बातको अनुभव करने लगजाय कि तड़क भड़क युक्त न होनेपर भी इस देशका बना कपड़ा खरीदनेसे हमारा पैसा हमारेही पास रहेगा और उससे देशके उद्योग और व्यापारमें तथा मजदूरोंकी स्थितिमें सुधार होगा, तो फिर यह प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं रह सकता। फिर यह बात भी नहीं है कि हमारी मिलें बारीक और बढ़ियां वस्त्र तैय्यारही नहीं कर सकतीं। यदि जनता उन्हें अपनी आवश्यकता बतलावे और उनके उद्योगको प्रोत्साहन दे तो यहां भी बढ़िया कपड़ा तैयार होसकता है। गत पांच सात वर्षोंके अन्दरही भारतकी मिलोंने बहुतसे अच्छे २ डिजाइन तैयार करके बतलाये हैं। यहां मिलें उत्साह पानेपर और भी बढ़िया माल तैयार कर सकती हैं। जब संसारमें मशीनरीका नाम भी नहीं सुना गया था, उस समय भी जो देश केवल हाथोंकी कारीगरीसे, मशीनरीसे भी बढ़िया माल तैयार करता था वह देश मशीनरीके युगमें विदेशोंके सदृश पदार्थ तैय्यार करले, यह क्या असम्भव है?

भारतमें सूत तथा कपड़ेकी मिलोंका उदय गत शताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुआ। सबसे पहले सन् १८५४में बम्बईके अन्दर बाम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी खुली। दूसरी मिल मानेकजी नसरवानजी पेटिटने और तीसरी उनके पुत्र सर दिनशा पेटिटने सन् १८६०में खोली। अमेरिकाके युद्ध और चीनको होनेवाले सूतके निर्यातने इस कार्य्यमें बड़ी सहायता पहुंचाई। जिससे लोग

कपड़ेके उद्योगमें खुले दिलसे पूंजी लगाने लगे। सन् १८६५ तक बम्बईमें १० मिलें खुलगईं। जिनमें २५०००० स्पेण्डिल्स और ३४०० लूम्स चलने लगे। सूतकी मशीनरी कपड़ोंके संचोंकी अपेक्षा अधिक होनेसे यहां सूत अधिक तैयार होता था यह सूत चीनको निर्यात करदिया जाता था। सन् १८७० और ७५के बीच १७ नई मिलें और खुलगईं, जिससे स्पेण्डिल्सकी संख्या बढ़कर साढ़े सात लाख और लूम्सकी आठ हजार होगई। यद्यपि अभीतक जापानके साथ प्रतियोगिता प्रारम्भ नहीं हुई थी फिर भी लङ्काशायर वगैरहकी वजहसे यहांका उद्योग निरापद नहीं था। सन् १८७८में लार्ड लिटनके शासनकालमें चुंगीका निर्माण तथा लङ्काशायरवालोंकी इच्छासे और भी चुंगीमें वृद्धि किया जाना भारतके व्यापारिक इतिहासज्ञोंसे छिपा हुआ नहीं है। इसके अतिरिक्त सरकारकी करेंसी पालिसीने भी सूतके व्यापारको बड़ा धक्का पहुंचाया। इससे चांदी की करेंसीवाले देशोंमें, उनमें भी खासकर चीनके साथ होनेवाले विनिमयके सम्बन्धमें बड़ी गड़बड़ उत्पन्न होगई जिससे बम्बईका सूतका व्यापार एकदम मटियामेट होगया और चीनका बाजार भारतके लिए बन्द होगया। जापानने इस सुअवसरसे लाभ उठानेमें बिलकुल विलम्ब न किया और सन् १८८४ में भारतके हाथसे छूटे हुए चीनके बाजारको हथिया लेनेके लिए प्रयत्न प्रारम्भ किया। भारतीय मालके साथ प्रतियोगिता करनेके लिए उसने स्वयं चीनमें अपनी मिलें खोलना प्रारम्भ किया। उसका यह उद्योग सन् १९११ से प्रारम्भ हुआ इस वर्ष जापानियोंने चीनमें मिल खोली। धीरे २ यह उद्योग बढ़ता गया। यहांतक कि आज जापान की भिन्न भिन्न १९ कम्पनियोंने चीनके शंघाई, मंचूरिया, हैंको आदि स्थानोंमें १३ लाख स्पेण्डिल्सके कारखाने खोल रक्खे हैं।

जापानने भारतके इस कारबार की गिरती हुई दशासे बहुत लाभ उठाया। वह इसमें निरन्तर उन्नति करता ही गया। इसकी प्रतियोगितामें भारतीय मिलोंको बहुत हानि उठाना पड़ी। पर सन् १९०४ में स्वदेशी आन्दोलनके कारण यहांका कारोबार फिर चमक उठा। इस आन्दोलन की वजहसे विदेशी कपड़ेके स्थानमें देशी कपड़ेकी मांग बढ़ी, और लोगोंने मिलोंमें बुनने वाले करघोंको बाहर बढ़ाकर यहांके सूतसे यहीं कपड़ा बुनना प्रारम्भ किया। लेकिन यह अवस्था भी अधिक समय तक न रही और सन् १९१३ तक फिर यहांका कारोबार खराब अवस्थामें रहा मगर यूरोपियन महायुद्धके प्रारम्भ होते ही बाहरसे विदेशोंसे कपड़ा आना बन्द हो गया और भारतीय मिलोंको अपनी उन्नति करनेका सुवर्ण सुअवसर प्राप्त हुआ। इन दिनों भारतमें मिल-इण्डस्ट्रीज की खूब वृद्धि हुई सन् १९१४ में ६७ लाख तकुओं और एक लाख करघोंकी २७१ मिलें भारतमें थीं इनकी संख्या बढ़कर सन् १९२५ में ३३७ हो गई जिनमें ८५ लाख तकुए और १॥ लाख करघे हो गये।

भारतवर्षमें जितनी रुई पैदा होती है उसमेंसे दो तिहाई विदेशोंको भेज दी जाती है और शेष यहांकी मिलोंमें खप जाती हैं। इस देशमें रुई, सून एवं कपड़ेकी मिलोंके कारबारका मुख्य स्थान बम्बई हैं। इस प्रान्तमें दो सौसे अधिक मिलें हैं। इन मिलोंमेंसे अधिकांश बम्बई शहर और अहमदाबादमें हैं। यहांकी मिलें भारतमें तैय्यार होनेवाले समूचे सूतका ७० प्रति सैकड़ा और कपड़ेका ७१ प्रति सैकड़ा भाग तैयार करती हैं। १९२१ की मर्दुम शुमारीसे यह भी पता चलता है कि भारतमें करीब २० लाख करघे भी चलते हैं जो मुख्यतया मिलके कते हुए सूतका कपड़ा बनाते हैं। यद्यपि हाथकी कताईका काम भी यहाँ बहुत होता है।

भारतमें मिलों, तकुओं और करघोंकी संख्या चाहे अधिक हो पर उनमेंसे पैदा होने वाले सूतकी औसत जापानमें पैदा होनेवाले सूतकी औसतसे बहुत कम होती है। इस बातके वास्तविक ज्ञानके लिए दोनों देशोंकी पैदावार पर ध्यान देना उचित है। सन् १९२४ में जापानमें २३२ मिलें चलतीं थीं इनमें ५० लाख तकुए और ६४००० करघे थे इन मिलोंके द्वारा जापानने सूतकी २० लाख गांठे तैयारकी थी। जो भारतके ८५ लाख तकुओंसे बनाई हुई सूतकी गांठोंसे करीब पांच लाख अधिक हैं। इसी भांति ६४००० करघोंसे जापान प्रतिवर्ष एक अरब गजसे भी अधिक कपड़ा तैयार करता हैं जब कि भारत उससे ढाई गुने करघोंके होते हुए भी केवल दो अरब गज कपड़ा तैयार करता है। बाहरी मांगके कारण जापान की मिलें रात दिन २० घण्टे प्रतिदिनके हिसाबसे चलती हैं। चीन और भारतका पारस्परिक व्यापार टूट जानेसे चीनके बाजारोंपर जापानका अधिकार सा हो गया है और चीनको उसका निर्यात ४०,५०, गुना अधिक बढ़ गया है। चीनकी तो बात दूर, स्वयं भारतमें जापानी सूतका आयात सन् १९१४-१५ के अङ्कसे बत्तीस गुना अधिक हो गया है, तथा कपड़ेका आयात १ करोड़ ६० लाख गजसे बढ़कर २२ करोड़ गजतक पहुंच गया है। भारतकी देशी मिलें कपड़ेकी मांगका आधा भाग पूरा करती हैं उनसे जो कुछ कपड़ा निकलता है वह यहीं खप जाता है। कुछ थोड़ासा भाग बाहर निर्यात होता है। मतलब यह कि अभी इस देशमें कपड़ के उद्योगके लिए बहुत कुछ स्थान है।

भारतमें प्रति वर्ष पचास, साठ लाख गांठें रुईकी तैय्यार होती हैं उनमेंसे पचीस, तीस लाख गांठें निर्यात होती हैं। यदि यहांकी पैदा हुई सब रुई यहीं रहे, तो कितना लाभ हो सकता है। यहां इस बातका विचार अवश्य उत्पन्न होता है कि यदि रुईका एक्सपोर्ट होना यहांसे बन्द हो जाय तो क्या भारतकी मिलें उस सब रुई को उपयोगमें ले सकतीं हैं? मिलोंकी कमजोर पैदावारका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। उसके आधारपर यह मान लेना अनुचित न होगा कि जो मिलें अभी विद्यमान हैं उन्हींमें पैदावार बढ़ा दी जाय तो, इस समयकी अपेक्षा

बहुत अधिक रुई खर्च खप सकती है। यदि यहांकी मिलोंके तकुए और सांचे पूर्ण शक्तिके साथ चलाये जांय तो उनसे सांचोंकी वृद्धि कियेके बिनाही कमसे कम आजकी पैदावारसे एक तिहाई पैदावार और बढ़ाई जा सकती है। इसके पश्चात् यदि इन मिलोंकी पूंजीमें भी कुछ वृद्धि की जाय, तो उस हालतमें यह मानना अनुचित न होगा कि यहांकी पैदा हुई रुई यहीं खपने लग जायगी। दूसरे शब्दों यों कह सकते हैं, कि यहांके कपड़ेकी आवश्यकता यहीं पूरी होनेका शुभ अवसर आ जायगा। इस काममें पूंजीकी वृद्धि अनुमानतः १५ करोड़ रुपया मानी जा सकती है। क्योंकि १६२२ की सरकारी रिपोर्टके अनुसार भारतमें कपड़ेकी मिलोंमें लगनेवाली पूंजीकी तादाद ३८ करोड़ रुपया है। इसका एक तिहाई या अधिकसे अधिक पन्द्रह करोड़ रुपया इस पूंजीमें और बढ़ा दिया जाय, तो उससे इतना कपड़ा बनना कठिन नहीं है, जिसकी तादाद बाहरके पचास साठ करोड़ रुपयोंके कपड़ेके बराबर हो, इस सब रकमको बचत न भी कहें तो भी यहांपर होनेवाले आयात परजो जहाज भाड़ा दिया जाता है, कमसे कम उसकी बचत मान लेना तो बिलकुल अनुचित न होगा। इस प्रकार इस उद्योगकी वृद्धिके साथ ही साथ यहांपर मजदूरीकी आवश्यकता भी बढ़ेगी और जिससे देशकी जनताको काम मिलेगा। यह सब देशकी समृद्धिके लिए अथवा कमसे कम कपड़ेके उद्योग की रक्षा लिये तो वाञ्छनीय है। मगर अभी तो स्थिति ही विपरीत हो रही है। अभी तो मिलोंकी जो कुछ परिस्थिति है वही आशा जनक नहीं है उनकी वृद्धिकी बात तो दूर रही।

भारतीय मिलोंमें मोटा सूत तैय्यार होता है और इसका कारण भारतीय रुईके रेशेका लम्बा न होना, हो सकता है। इस कारणको दूर करनेके लिए दो पथ हैं। पहला तो यह कि भारत विदेशोंसे रुई मंगाकर उससे बढ़िया और बारीक सूत तैय्यार करे। दूसरा पथ यह हो सकता है कि यहांके निवासी कपड़ेकी तड़क भड़क पर ध्यान न देकर, देशी उद्योगकी उन्नतिके लिए देशी वस्त्रोंको धारण करनेका उत्कृष्ट ध्येय सम्मुख रखें। पहले पथका अवलम्बन करते समय इस बातको अवश्य ध्यानमें रखना उचित है कि उस स्थितिमें भारतको कच्चे माल (रुई) के लिए विदेशोंकी आयात पर अवलम्बित रहना पड़ेगा। कभी कभी युद्धके छिड़ जानेपर, या कोई दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय झंझट पड़ जानेपर इस प्रकारके आयातका एकदम बन्द हो जाना भी सम्भव है। ऐसी स्थितिमें वह इस प्रश्नको कैसे हल करेगा। कुछ भी हो पर यहांकी आवश्यकता पूर्तिके लिए यहीं पर कपड़ा तैयार करनेका उद्देश्य पवित्र और न्याय सङ्गत है। सरकारको भी टैरिफ पॉलिसीमें परिवर्तनके लिए इसी उद्देश्यसे कहा जाता है कि किसी प्रकार भारतीय उद्योगकी रक्षा हो। इस कामके लिए विदेशी माल की आयात पर यदि भारी ड्यूटी भी लगाना पड़े तो कुछ अनुचित न होगा। इसी भांति देशके उद्योगके लिये

यहांकी पैदा हुई रूईको यहींपर रखनेके लिये यह भी आवश्यक है कि रूईके निर्यात पर भी भारी ड्यूटी लगा दी जाय। लेकिन दुःख है कि भारतमें सरकारी करका नियंत्रण भारतके उद्योगकी अभिवृद्धिकी बातको बहुत कम ध्यानमें रखकर किया जाता है।

एक और दूसरा कारण इस देशके उद्योगकी वृद्धि न होनेका यह है कि इस देशके लोग पुरानी परिपाटीपर चलना ही अधिक पसन्द करते हैं। समय और जरूरतके अनुसार वे अपनी परिपाटीमें फेर नहीं करते। उधर विदेशवाले इस कार्य्यमें बड़े चतुर हैं। वे प्रति वर्ष सैकड़ों प्रकारके रंगबिरंगे नये २ नमूने बनाकर यहां भेजते हैं। इतना ही नहीं वे यहांकी जनताकी अभिरुचिका सूक्ष्म अध्ययनकर, यहांकी आवश्यकताओंकी जांच भी करते रहते हैं। इसके लिए उन्होंने कई चतुर एजन्ट् और दलाल नियत कर रक्खे हैं। जिस प्रकारसे उनका माल यहांपर अधिकसे अधिक खपे, इस उद्योगके लिये वे जी तोड़कर परिश्रम करते हैं। अपने मालको भेजने और पैक करनेका ढंग उनका कितना व्यवस्थित और बढ़िया रहता है यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मालका ही नहीं उनका नमूनोंको (Sampling) सजानेका ढंग भी इतना बढ़िया है कि उसे देखकर उनके अध्यवसायकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। भारतवासी अभी इन बातोंमें बहुत पीछे हैं। नमूने सजाकर भेजने की बात पर तो यहांके लोग ध्यान ही नहीं देते। यदि वे भेजेंगे भी तो इतने भद्दे ढङ्गसे कि एक रुपये वाला कपड़ा चार आनेका दिखलाई दे। मालको पैक करने और सजानेके ढङ्गपर भी यहांके लोग उतना ध्यान नहीं देते जितना विदेशी देते हैं। इस बातका पता एक देशी मिलके धोती जोड़ेकी घड़ी, उसपर लगाई छाप और उसके टिकटको देखनेपर भली प्रकार चल जायगा। विदेशोंसे एक पेटी या गांठ मंगानेपर वे लोग कपड़ेके प्रत्येक टिकटपर मंगाने वालेका नाम छाप देंगे, और उस स्थानपर वह कहेगा उस नम्बरका मार्का उसपर लगादेंगे पर भारतके मिलोंवाले ऐसा नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त वे लोग यहांकी जनताकी रुचि परखनेके लिये सात समुद्र पारसे यहां आते हैं, अपने एजण्टोंको भेजते हैं या इस कामके लिए ऊंची तनख्वाहोंपर यहीं एजण्ट नियत करते हैं। इन सब बातोंकी ओर यहांके मिल चलाने वाले, या कपड़ेका प्रचार करने वाले, कभी ध्यान भी देते हैं। मालकी जातिको उन्नत करने या सुधारनेकी बात तो दूर रही पर उसको भेजने या सजानेके परिष्कृत ढङ्गको भी देशी मिलवाले उपयोगमें नहीं लाते। इस प्रकारके कार्य्योंमें द्रव्य खर्च करना वे आवश्यक नहीं समझते जब कि विदेशी लोग नमूनेकी कापियोंको सजाने तथा सुन्दर बनानेमें ही न मालूम कितना द्रव्य खर्च कर डालते हैं। क्या वे लोग यह द्रव्य अपने घरसे खर्च करते हैं? नहीं वह सब उसी व्यापारमें से वापिस दूने चौगुने रूपमें निकल आता है। बम्बई और अहमदाबादके मिल वालोंका गुजरात या आसपास की आवश्यकताओंपर ही अधिक ध्यान रहेगा, वे शायद बंगालकी

जनताको किन वस्तुओंकी आवश्यकता है इस बात पर विचार करनेका कष्ट न उठायंगे। मगर विलायत की मिल वाले भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्तकी आवश्यकतासे वाकिफ रहनेकी चेष्टा करेंगे और प्रति चालानमें, मालके बेल बूटों, किनारियों, कोरों तथा दूसरी बातोंमें कुछ न कुछ नवीन परिवर्तन अवश्य ही कर देंगे और इसी झूंठी चमक दमकमें भारतवासियोंको डालकर उनकी जेबसे बहुत आसानीसे पैसा निकलवा लेंगे। यदि हम लोग अपने उद्योगमें सफलता और नव जीवनका संचार करना चाहें, तो यह सब रीति, नीति, और प्रणाली सुधरे हुए रूपमें हमें भी स्वीकार करनी पड़ेगी और उसके अनुसार चलना हमारे लिये लाभास्पद ही नहीं पर उद्योगकी उन्नति और सफलताके लिये आवश्यक और अनिवार्य्य होगा।

ऊनी कपड़ा

ऊन और ऊनी कपड़ोंका आयात सन् १९२६-२७ में ४४६ लाख रुपयेका हुआ। कच्चा ऊन पचीस लाख रुपयेका पचास लाख रतल आया। इसमेंसे १०॥ लाख ग्रेटब्रिटेनसे, बीस लाख बीस हजार रतल फारससे और तीन लाख पैंसठ हजार रतल आस्ट्रेलियासे आयात हुआ।

ऊनी कपड़ा २३७ लाख रुपयेका १५५ लाख गज आयात हुआ। यही सन् १९२५-२६ में १८२ लाख रुपयेका १४१ लाख गज आया था। इससे पता चलता है कि यद्यपि आयात मालमें ६ सैकड़ा वृद्धि हुई है पर मूल्यमें पांच सैकड़ा कमी हो गई है। इसकी आयात की वृद्धिका पता इस बातसे लग जाता है कि सन् १९२३-२४ में इसका आयात केवल ७१ लाख गज हुआ था। ग्रेट ब्रिटेनने १४२ लाख रुपयेका ६० लाख गज माल भेजा और वही १९२५-२६ में १५० लाख रुपयेका ५० लाख गज माल भेजा था। इस काममें जर्मनी, फ्रान्स और इटालीका भाग भी अच्छा रहा। इन्होंने क्रमशः दस लाख, बीस लाख, और साढ़े तीस लाख गज माल भेजा। जापानने १९२५-२६ में २० लाख गज माल भेजा था मगर इस वर्ष दस लाख गज भेजा इसी भांति बेलजियमका भाग भी दस लाख गजसे घटकर सात लाख गज रह गया। ऊनी दरी और गलीचोंका आयात सन् १९२५-२६ में १०४०००० रतल हुआ था वही इस साल १०,१०००० रतल हुआ।

रेशम और रेशमी पदार्थ

इस मध्दमें भारतसे ४,६० लाख रुपया निकल गया। कच्चे रेशमकी आयातमें ३५ प्रति सैकड़ा वृद्धि हुई अर्थात् १३२५००० रतलसे बढ़कर इसका आयात १७८३००० रतल होगया और मूल्य भी ८४ लाखसे बढ़कर ११४ लाख रुपया होगया। चीन और हांगकांगने इस काममें करीब २ सब भाग लेलिया। उन्होंने १७३८०००

रतल कच्चा रेशम यहां भेजा। जापानसे इसका आयात १५००० रतलसे बढ़कर २०००० रतल होगया। स्यामसे इसका आयात घट गया। रेशमी सुत—जिसका आयात घटकर सन् १६२५-२६ में ५९१००० रतल रह गया था-का आयात बढ़कर १२१७००० रतल होगया। इसका मूल्य भी ३५ लाख रुपयेसे बढ़कर ६३ लाख रुपया होगया। इसमें इटालीने २१ लाख रुपये ३६०००० रतल, स्विट्जरलैंडने पांच लाख रुपयेके ८०००० रतलसे बढ़कर १३ लाख रुपयेका १,८१००० रतल और जापानने ७॥ लाख रुपयेका १,६२००० रतल माल भेजा।

रेशमी कपड़ा

रेशमी कपड़ेका आयात २१२ लाख रुपयेके १६० लाख गजसे बढ़कर २४३ लाख रुपयेके १९० लाख गजका हुआ। इसमेंसे अनुमानतया ६८ प्रति सैकड़ा रेशमी कपड़ा चीन और जापानसे आया। जापानने ११८ लाख रुपयेका ६५ लाख गज और चीन तथा हांगकांगने ११५॥ लाख रुपयेका ६० लाख गज कपड़ा भेजा। दूसरे पदार्थोंसे मिश्रित रेशमी कपड़ा ३१ लाख रुपयेका २१ लाख गज आया। जिसमेंसे जापानने ८,३७००० गज, जर्मनीने ४०२००० गज और इटलीने २३५००० गज कपड़ा भेजा।

नकली रेशम

भारतमें इसकी मांग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। ऊपरी चमक-दमकसे लुभानेवाला भारत इसमें भी काफ़ी रुपया खर्च करने लग गया है। नकली रेशमके सूतके गत पांच वर्षोंके आयात अङ्कोंसे इस बातका पता चलता है कि भारतमें इसकी खपत किस प्रकार बढ़ती जा रही है।

सन्	रतल	रुपया
१६२२-२३	२,२५०००	१३,४००००
१६२३-२४	४,०६०००	१६,५५०००
१६२४-२५	११,७१०००	४२,४००००
१६२५-२६	२६,७१०००	७४,७२०००
१६२६-२७	५७,७६०००	१,०२,६४०००

ध्यान देने योग्य बात है कि सन् १६२२-२३ में जहां नकली रेशमका सूत १३॥ लाख रुपयेके करीब आया था वहीं सन् १९२६-२७ में एक करोड़ रुपयेके करीब आया। पांच वर्षके भीतर इस पदार्थके आयातमें सात गुना वृद्धि हुई और उसके परिमाणमें २६ गुना। इससे यह भी पता लग जाता है कि यह पदार्थ पांच ही वर्षमें कितना सस्ता होगया। सन् १६२५-२६ की तुलनामें इस पदार्थके आयातमें ११६ प्रति सैकड़ा वृद्धि हुई मगर मूल्यमें केवल ३७ प्रति सैकड़ा। इस

पदार्थके भेजनेवालोंमें इटली ही सबसे प्रधान है। उसने १९२४-२५ में ३,९२,९८८ रतल और १९२६-२७ में ३८,४३१७९ रतल यह पदार्थ भेजा। ग्रेटब्रिटेनका भाग इसमें कुछ गिर गया अर्थात् वहांसे ७,६१००० रतलकी जगह ३,५५००० रतल यह माल आया। नेदरलेण्डका भाग भी इस पदार्थके सम्बन्धमें दूना होगया और जर्मनीने भी १९२५-२६ के १,५७००० रतलसे बढ़कर सन् २६-२७ में २,३२००० रतल माल भेजा। इसके आयातमें इटलीका ६७ सैकड़ा और ग्रेटब्रिटेनका ११ प्रति सैकड़ा भाग रहा। इटलीने इस कारबारके मूल्यमें ९० प्रति सैकड़ाकी वृद्धि की, अर्थात् उसने ३४ लाखकी जगह ६५ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया। इधर ग्रेट ब्रिटेनको इस कारबारमें ४१ सैकड़ा कमी हुई, उसने २४ लाखकी जगह केवल १४ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया।

नकली रेशमका कपड़ा

सूती और नकली रेशमके बने हुए कपड़ेके आयातमें भी खूब वृद्धि हुई। १५० लाख गजसे बढ़कर ४२० लाख गज कपड़ेका आयात हुआ। इस व्यवसायमें ग्रेट ब्रिटेनका नम्बर सबसे पहला रहा। उसने ६५ लाख गजसे बढ़कर १६० लाख गज कपड़ा भेजा। इटलीका नम्बर इस कारबारमें दूसरा रहा। उसने १४० लाख गज कपड़ा भेजा। स्विट्जरलैंडने २३ लाख गजसे बढ़कर ६७ लाख गज और जर्मनी तथा बेलजियमने क्रमशः २४८७१०० गज और १,८०००० गज कपड़ा भेजा। सूती और नकली रेशमके बने हुए कुल कपड़ेका आयात ३०६ लाख रुपयेका हुआ। जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १,१७ लाख, इटलीने ८१ लाख और स्विट्जर लैंडने अनुमानतः ५६ लाख रुपया पाया।

चीनीका व्यवसाय

कपड़ेके आयातके पश्चात् भारतमें आयात होनेवाले पदार्थोंमें चीनीका दूसरा नम्बर है। सन् १९२६-२७ में इसका आयात ८,२६६७० टनका हुआ। सन् १९२५ २६ के आयातकी अपेक्षा यह संख्या १३ प्रति शत अधिक है इसके मूल्य स्वरूप भारतको १६,१६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। इस व्यवसायमें जावाका भाग सबसे अधिक है इसने १४ करोड़ रुपयेके मूल्यकी ६ लाख टन चीनी इस देशमें भेजी। इसके अतिरिक्त जर्मनीने ४६००० टन,हंगरीने २६००० टन और जेकोस्लोवेकियाने २६००० टन चीनीका भारतको निर्यात किया। जिस भांति कपड़ेके आयातमें बंगाल प्रमुख है उसी प्रकार चीनीके आयातमें भी उसका नम्बर पहला है। उपरोक्त संख्यामेंसे बंगालमें तीन लाख टन, करांचीमें १,३६,२०० टन, बम्बईमें ८६६०० टन, मद्रासमें ४१,२०० टन, और बरमामें ३७,३०० टन चीनीका आयात हुआ। आयातके सब पदार्थोंकी लिस्टमें चीनीका नम्बर सन् १९२६-२७ में दूसरा था मगर वही गत वर्ष तीसरा हो गया। कुछ भी हो, खाद्य पदार्थोंमें तो यही एक ऐसा पदार्थ है जो इतने परिमाणमें आयात होता है।

विदेशी चीनीकी इस प्रतिद्वन्द्वता और उसके इस भारी आयातकी वजहसे देशी चीनीके व्यवसायको बहुत अधिक धक्का पहुंचता है। विदेशी चीनी किस प्रकारकी अशुद्ध प्रणालियोंसे तैयार होती है, तथा स्वाद और गुणकी दृष्टिसे वह कैसी है इन बातोंपर यहांकी जनता विचार नहीं करती वह केवल उसकी चमक दमक और सस्तेपनको देखकर चाव पूर्वक खरीदती है और इसी भ्रममें वह करोड़ों रुपया विदेशोंको फेंक देती है।

भारतमें चीनीके उद्योगके लिये क्षेत्रकी कमी नहीं है। सन् १९२६-२७ में इस देशमें २६ लाख एकड़ भूमिमें गन्नेकी खेती हुई और उसकी फसलसे ३२ लाख टन कच्ची चीनी (गुड़) तैयार हुई। भारत इस कच्ची चीनीके बनानेमें दुनियामें प्रधान है। गन्नेकी खेती भी यहांसबसे अधिक जमीनमें होती है मगर उसकी उपज दूसरे देशोंकी औसत उपजसे कम होती है। यहांकी उपज क्यूबासे एक तिहाई जापानके मुकाबिलेमें एक चतुर्थांश और हवाईके मुकाबिलेमें एक सप्तमांश होती है। एक दिन था जब भारतका चीनीका उद्योग भी अन्य उद्योगोंकी तरह उन्नतावस्थामें था। लेकिन आज जावा और मारिशसकी प्रतियोगिताके कारण वह पिछड़ गया है। अधिक दूर जानेकी आवश्यकता नहीं सन् १८९० में यहांके आयातमें किसी भी विदेशी चीनीका पता न था। वहीं सन् १९२६-२७ में १९ करोड़की चीनी आई है।

आयातकी तरह यहांसे चीनीका थोड़ा बहुत निर्यात भी होता है। सन १९२५-२६ में यहांसे १६४०० टन चीनी बाहर भेजी गई थी। पर यही सन २६-२७ में केवल १२००० टन भेजी गई। इसमें भारतीय चीनी ६२७ टन थी जिसमें ४२८ टन गुड़ था। यहांसे चीनी खरीदनेवाले देशोंमें अरब, पारस, पूर्वी अफ्रिका आदि देश हैं।

दुनियामें चीनीकी उपज आवश्यकतासे अधिक होती है। यूरोपमें सन् १९२७-२८ में अनुमान किया जाता है कि पूर्व वर्षकी अपेक्षा इसकी कृषिमें १४ सैकड़ा वृद्धि होगी। इसी प्रकार जावामें भी चीनीकी पैदावार पहलेकी अपेक्षा ३ लाख टन अधिक बढ़नेकी आशा है। भारतमें चीनीके आयातके अङ्कोंको देखकर यह बड़ा आश्चर्य होता है कि दुनियाके किसी भी देशसे यहां इसकी कृषि कम न होनेपर भी, यहांपर इसके आयातकी आवश्यकता होती है। यदि गन्नेकी कृषिमें सुधार हो जाय और चीनीके कारखाने आधुनिक उन्नत ढंगपर खोले जांय, तो चीनीकी पैदावार का इतना बढ़ जाना असम्भव नहीं है जिससे यहांकी आवश्यकताकी यहीं पूर्ति हो जाय। चीनीके इतने बड़े आयातका कारण यहांपर गन्नेकी खेतीका वैज्ञानिक ढङ्गसे न होना है। नहीं तो २६ लाख एकड़में कृषि होनेपर भी इस देशको ८ लाख टन चीनी बाहरसे मंगाना पड़े यह सम्भव नहीं हो सकता। यदि इसी जमीनमें वैज्ञानिक ढङ्गसे खेती की जाय तो इस पैदावारका ड्योढ़ी दूनी हो जाना कठिन नहीं है। कोइमटूरकी सरकारी प्रयोगशालाके द्वारा खेतीके लिये अच्छी जातिका गन्ना

तैयार किया गया है। इन गन्नोंको बोनेसे कृषक अपनी पैदावारकी औसतको बहुत बढ़ा सकता है। उत्तर विहार और संयुक्त प्रान्तके पूर्वी भागमें जहां चीनीके कारखाने अधिक हैं इन गन्नोंका प्रचार करनेसे अधिक गन्नेकी प्राप्ति होने लगी है। इसकी वजहसे इन दोनों प्रान्तोंके कारखानोंने गत वर्ष जहां ३७५००० मन चीनी बनाई थी वहां इस वर्ष १२५०००० मन चीनी तैयार की है। ब्रिटिश भारतमें सरकारी कृषि विभाग द्वारा दिये हुए गन्नेकी पैदावार १७८००० एकड़में हुई अनुमान की जाती है।

कुछ भी हो, अभी तक तो भारतमें गन्नेकी पैदावार इतनी कम होती है कि चीनीपर भारी आयात कर (९॥) रुपया प्रति हण्डरवेट और २५ सैंकड़ा भिन्न २ जातियोंपर) होनेपर भी प्रतिवर्ष इतना भारी आयात होता है। यह भारी आयात तभी बन्द हो सकता है जब यहांकी गन्नेकी पैदावारमें वृद्धि की जाय और चीनी बनानेके अच्छे कारखाने खोले जांय।

लोहा और फौलाद

इसका आयात सन १९२६-२७ में १६७५००००० रुपयेका हुआ। पर यदि धातु और उसके बने हुए पदार्थोंका एक ही विभाग मानकर उसमें १४ करोडके मिलके कल पुर्जे, ३ करोडकी रेल्वेकी सामग्री ५ करोडकी विविध धातुओंकी बनी चीजें, ४ करोडके यन्त्रादिक, ६ करोडकी मोटरें, साईकिल आदि सवारियां और सात करोडकी अन्य धातु भी इसमें सम्मिलित कर दी जाय तो यह सम्पूर्ण आयात ६१ करोड़का हो जाता है।

जिस प्रकार भारतवर्षमें कपड़ेका शिल्प प्राचीन कालमें बहुत उन्नतिपर था इसी प्रकार लोहेके शिल्पका पता भी यहां कई शताब्दियोंसे लगता है। इसका वर्णन पहले भली प्रकार किया जा चुका है और जिस प्रकार यन्त्रकलाके आविष्कारने पाश्चात्य देशोंमें कपड़ेके उद्योगमें एक नया युग पैदा कर दिया, उसी प्रकार इन धातुके पदार्थों और यन्त्रों आदिके आविष्कारमें भी उन्होंने बाजी मार ली और आज इन सब पदार्थोंके लिये भारतको प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया उन्हें देना पड़ता है। भारतवर्षमें भी यंत्रोंका उपयोग होता है पर वे सब यंत्र और कल पुर्जे यहां बाहरसे आते हैं। इन यंत्रोंको बनानेके कारखाने इंग्लैण्डमें बर्मिंघम और शेफील्डमें, स्काटलैण्डमें ग्लासगोके अन्दर, बेल्जियममें लीएज और घेंटमें तथा जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंमें बहुत हैं। वहांकी लोहा आदि धातुओंको गलानेकी ऊंची २ चिमनी भट्ठियोंको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। ऐसे बड़े २ यंत्र हथौड़ेसे ठोक पीटकर नहीं बनाये जाते वरन इन बड़े २ कारखानोंकी ही शक्ति है जो ऐसे आश्चर्यजनक कलपुर्जे बनाते हैं। न जाने भारतमें बड़े २ यंत्र और कल पुर्जे बनानेके कारखाने कब खुलेंगे, अभी तो साधारण सुई और पेंसिल तक सब प्रकारके यंत्र विदेशोंसे आते हैं।

यह बात नहीं है कि भारतमें लोहा न होता हो—या यहां लोहेकी खानें न हों। भारतके कई स्थानोंमें लोहेकी बड़ी २ खानें हैं। मध्यप्रान्त, सिंहभूम, उड़ीसा, मैसूर आदिके समान लोहेकी विशाल खदानें यहांपर मौजूद हैं। खुशीकी बात है कि अब यहांके लोगोंका ध्यान भी इस उद्योगके चलानेकी ओर गया है और देशमें दूसरे कारखानोंकी तरह लोहेके कारखाने भी खुले हैं तथा खुल रहे हैं।

लोहे और फौलादके उद्योगमें नवीन योरोपीय प्रणाली को भारतमें प्रचलित करनेका प्रथम श्रेय मि० जे० एम० होथको है, जिन्होंने दक्षिण आरकट प्रान्तमें सबसे पूर्व इस कार्य्यका श्रीगणेश किया। पर यह प्रयत्न, तथा इसके बादमें किये गये और भी कुछ प्रयत्न असफल रहे। इसके पश्चात् सन् १८८१ में बंगाल आयर्न एण्ड स्टील कम्पनीने उस समयके अनुसार सबसे अधिक सुधरी हुई प्रणालीके आधारपर कार्य्य प्रारम्भ किया और १०, १५ वर्ष तक कुछ मुनाफा न रहनेपर भी कामको प्रारम्भ रक्खा। अभी हालहीमें यह कारखाना बढ़ा दिया गया है और इसमें कई प्रकारके सुधार भी कर दिये गये हैं। इससे न केवल ढलाई और गलाईके कार्य्यमें ही उन्नति हुई है प्रत्युत पदार्थ की जातिमें भी बहुत कुछ उन्नति और सुधार हुआ है। इस कम्पनीका कारखाना आसन सोलसे थोड़ी दूर ईस्ट इण्डियन रेल्वेके स्टेशन बाराकरमें बना हुआ है।

भद्रावती आयन वर्क्स—यह कारखाना मैसूर रियासतमें बना हुआ है। इसका उद्देश्य मैसूर राज्यमें मिलनेवाले लोहेको उपयोगमें लेनेका है। यह सन् १९२२ से चलने लगा है। इस कारखानेमें एक भट्टी ऐसी निर्माण की गई है जिसमें ६० टन लोहा प्रतिदिन तैयार हो सकता है। आवश्यकता पड़नेपर थोड़े फेरफारसे यह भट्टी १०० टन लोहा प्रतिदिन तैयार करनेके लायक बनाई जा सकती है। इस कारखानेकी एक विशेषता यह है कि यह लकड़ीसे चलाया जाता है। इस ढङ्गका यह कारखाना सबसे पहला है। लकड़ीसे पहले कोयला बनाया जाता है और फिर लोहा साफ करनेका मसाला, और कच्चा लोहा भट्टीपर लाये जाते हैं। यह बात मानी गई है कि इस ढङ्गसे काम करनेवाला दुनिया भरमें यह सबसे पहला कारखाना है।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—यद्यपि वर्तमान उद्योगके पूर्व कालमें प्रवेश करनेका श्रेय बंगाल आयर्न कम्पनीको है तथापि कहना पड़ेगा कि इस देशके लोहे और फौलादके उद्योगमें विशेष उन्नति करनेका श्रेय ताता आयन एण्ड स्टील कम्पनीको है जिसने लोहे और फौलादकी सबसे अधिक उन्नत मशीनरी बनाई। इस कम्पनीका मुख्य उद्देश्य जितना सम्भव हो सके उतना बढ़िया जातिका लोहा और फौलाद तैय्यार करनेका है। इसकी स्थापना सन् १९०७ में हुई, और सन् १९०८ में साकचीमें—जिसका नाम पीछे जाकर जमशेदपुर पड़ गया—इस कारखानेका बनना

शुरू हो गया। सन १६११ के दिसम्बर मासमें सबसे पहले लोहा तैयार हुआ और सन् १६१३ में फौलादके कामका श्रीगणेश हुआ। पहले पहल पैदावार बहुत कम होती थी लेकिन अगले दस वर्षोंमें अच्छी उन्नति हुई और सन १६२१-२२ में इस कम्पनीने २७०००० टन लोहा और १८२००० टन फौलाद तैयार किया। भारतके लोहे और फौलादके उद्योगके इतिहासमें इस कम्पनीका नाम स्वर्णाक्षरोंमें लिखने काबिल है। जमशेदपुरका उदय एक आश्चर्यजनक बात है। जहां २० वर्षों पहले कुछ भी नहीं था वहां आज हजारोंकी आबादी बस रही है। यह पहल पहल टाटा आयर्न वर्क्सके कारण है,जहांपर कच्ची धातुसे बाजारमें जाने लायक पदार्थ बनाये जाते हैं। पर विदेशी प्रतिद्वन्दता के कारण यह उद्योग भी निरापद नहीं रहा, और सन १९२४ में इसके संरक्षणके लिये भारत सरकारने स्टील इण्डस्ट्री ऐक्ट नामक कानून बनाया। इसकी अवधि सन १६२७ तक थी और वह अवधि ३१ मार्च सन १९२७ को शेष होती थी पर पहिलेहीसे उस कानूनमें यह बात आ गई थी कि अवधिके पूर्ण होनेपर फिर जांच करके इस बातका निर्णय किया जायगा कि इस कानूनकी अवधि और भी आगे बढ़ानेकी आवश्यकता है ! या नहीं इसके अनुसार फिर जांच हुई, और इस रिपोर्टके साथ २ यह संरक्षण विधान कमसे कम सात वर्ष और चालू रखनेके लिए सरकारसे सिफारिश की गई। इस सिफारिशमें कहागया कि सरकारी सहायताका नियम तोड़ दिया जाय और कस्टम ड्यूटीके द्वारा इसका रक्षण किया जाय। बोर्डने अपनी रिपोर्ट सहित लगाई जानेवाली कस्टम ड्यूटीका वर्णन पेश कर दिया और यह भी अनुमोदन किया कि यह ड्यूटी सन् १६३३-३४के पहले जबतक फिरसे जांच न होजाय, न घटाई जाय। यह बिल पास हुआ और सन् १६२७की पहली अप्रैलसे जारी हुआ।

यद्यपि यहांपर लोहेके कारखानोंके खुलनेके पश्चात् विलायती लोहेका आयात कुछ कम होगया है—सन् १६२६-२७में उसके आयातका परिमाण पांच प्रति सैकड़ा कम होगया, अर्थात् ८७१००० टनसे घटकर ८३८००० टन रहगया इसीप्रकार उसका मूल्य भी १८०,३ लाखकी जगह १६,७५ लाख रहगया, उसमें भी ७ प्रति सैकड़ा संख्या कम होगई—फिर भी यहांपर अभी इसका बहुत अधिक आयात होता है। इसका अनुमान नीचेके विवरणसे भली प्रकार होजायगा।

सन् १६२६-२७के आयातमें ४३ सैकड़ा भाग गैल्वेनाइज्ड चद्दरोंका रहा। ये कुल मिलाकर ७,१७ लाख रुपयेकी आई जिनमें ६,४१ लाख रुपयेकी अकेले ग्रेट ब्रिटेनने भेजी। शेष अमेरिका बेल्जियम, जर्मनी इत्यादि देशोंने भेजी। टीनकी चद्दरें गत वर्ष १०५ लाख रुपयेकी आई थीं मगर इस वर्ष केवल ७७ लाख रुपयेकी आई। इस कमीका मुख्य कारण भारतमें इनकी पैदावारका बढ़ जाना है। जहां सन् १९२२ में ८००० टन चद्दरें बनी थीं वहां सन् १६२५ में ३०००० टन और १६२६में ३८००० टन बनीं। उपरोक्त चद्दरोंके आयातमें ४०००००० लाखका आयात ग्रेट-

ब्रिटेनसे और करीब ३७००००० लाखका अमेरिकासे हुआ। अन्य सब तरहकी चद्दरें ८४।। लाख की आयात हुईं। जिसमें बेलजियमने अट्ठाईस लाख, ग्रेटब्रिटेनने अट्ठाईस लाख और जर्मनीने ग्यारह लाखकी भेजी। बिना ढले हुए फौलादके पाट १४८६ लाख रुपयेके आये। जिसमें बेलजियम ने ८४लाख रुपयेके और ग्रेटब्रिटेनने १३ लाख रुपयेके भेजे। शेष आयात दूसरे स्थानोंसे हुआ।

लोहेके खम्भे, गार्डर और पुल सम्बन्धी सामानके आयातमें भी कुछ कमी हुई। यह सब सामान गत वर्ष १२२ लाख रुपये के आये थे मगर इस साल इनका आयात ८६लाख रुपयेका हुआ। इन पदार्थोंको भी बेलजियम और इंगलैंडने क्रमसे ४० और ३२ लाख रुपयेकी तादाद में भेजा।

पड़े हुए नल,पाईप आदि सामानके आयातकी तादाद पहलेसे बढ़गई। जहां सन् १९२५—२६में ये पदार्थ ८४ लाखके आये थे वहां इस वर्ष इनका आयात ९१लाख रुपयेका हुआ। इस आयातमें इंगलैण्डका ४० लाखका और जर्मनीका २५। लाखका भाग रहा।

चटखनी, कड़ी, कुन्दे आदि इमारती सामानका आयात करीब ८५३ लाख रुपएका हुआ। इसमें बेलजियमका भाग बहुत बढ़गया तथा ब्रिटेनके आयातकी संख्या बहुत घटगई। इसी प्रकार खूंटियां इत्यादि वस्तुओंका आयात छियालीस लाखसे बढ़कर बावन लाख रुपयेका हुआ। इस कार्य्यमें ग्रेटब्रिटेन और बेलजियम दोनोंने उन्नतिकी। लोहेके तार और जञ्जीरें इत्यादि कुल २५। लाख रुपयेकी आईं इनमें १६॥ लाखकी अकेले ग्रेटब्रिटेनसे आयात हुईं।

लोहा—खालिस लोहा आजकल बहुत कम आता है। सवा तीन लाख रुपयेके २८९५ टनसे घटकर इसका आयात दो लाख साठ हजार रुपयेके १६, २७ टनका हुआ। खालिस लोहेकी पैदावारमें भारतने अच्छी तरक्की की है। सन् १९२५-२६में यहांपर ८,७५००० टन लोहा हुआ था मगर वही सन् १९२६-२७में ९,८७००० टन हुआ।

लोहे और फौलादके आयातमें जिसमें इनसे बने हुए सब प्रकारके पदार्थ और खालिस लोहे तथा फौलादका आयात गर्भित है मुख्य २ देशोंका आयात भाग इस प्रकार है।

ग्रेटब्रिटेन	४०,६००० टन,	४८·१ प्रति सैकड़ा
जर्मनी	७८००० टन,	९·३ ,,
बेलजियम	२,५७००० टन,	३०·४ ,,
फ्रांस	३३००० टन	३·९ ,,
अमेरिका	२९००० टन	३·४ ,,
अन्यदेश	४१००० टन	४·६ ,,
	८,४५०००	

अभीतक तो जितना लोहा और फौलाद भारतमें उत्पन्न होता है उससे कुछ ही कम परिमाणमें विदेशोंसे आता है। अर्थात् भारतमें जहां ८,९५००० टन यह पदार्थ उत्पन्न हुआ, वहां ८४१००० टन बाहरसे भी आया। लेकिन अब स्टीलके उद्योगके संरक्षणके लिए सन् १९२७का स्टील इण्डस्ट्री प्रोटेक्षन एक्ट सन् १९२७की पहली अप्रैलसे प्रारम्भ हुआ है देखना चाहिए उसका इस देशके उद्योगपर क्या प्रभाव पड़ता है ?

अन्य धातुएं

लोहा, फौलाद और उसके पदार्थोंको छोड़कर अन्य धातुओंका आयात ७०६ लाख रुपयेका हुआ। एल्यूमिनियम ६५ लाख रुपयेका आया। इसमेंसे अमेरिकासे ३६००० हण्डरवेट ३५ लाख रुपयेका आया। इङ्गलैंड और जर्मनीमें इसकी मांग बहुत कम होनेसे इसका मूल्य बहुत सस्ता होगया।

पीतलका आयात ५,२४००० हण्डरवेटसे बढ़कर ५,२१००० हण्डरवेटका हुआ। पर मूल्य २६२ लाख रुपयेसे घटकर २५६ लाख रुपया रहगया। जर्मनीने ११४ लाख रुपयेका पीतलका सामान भेजा और ग्रेटब्रिटेनने ६०३ लाखका। चद्दर, नल और तार इत्यादिका आयात ४२ लाख रुपयेका हुआ। बिना घड़े हुए पीतलका आयात भी ९ लाखसे घटकर छः लाख रुपयेका रह गया।

ताम्बेका आयात १८३ लाख रुपयेसे घटकर १९३ लाख रुपयेका हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे घड़े हुए और बिना घड़े हुए ताम्बेका आयात बहुत कम हुआ इसीसे आयातकी संख्या घट गई। जर्मनीसे घड़े हुए पदार्थ १,५०००० हण्डरवेटसे बढ़कर १,६५००० हण्डरवेट आये. पर. मूल्यके सस्ते होजानेकी वजहसे मूल्य ८४½ लाखसे घटकर ७७½ लाख रहगया।

शीशा—१२७५००० रुपयेका आया। घड़े हुए पत्तर और नल पांचलाख रुपयेके आये। गत वर्ष भी ये इतने ही आये थे। चायकी पेटियोंमें दिये जाने वाले पत्तरोंका आयात ७½ लाखकी जगह पांच लाख रुपयेका हुआ।

टिन—यह धातु ९८ लाख रुपयेकी ५२००० हण्डरवेट आई। इसका मुख्य. आयात स्टेट सेटलमेण्ट्ससे हुआ जहांसे ६३½ लाख रुपयेका टिन आया।

रांगा—यह धातु ४६½ लाख रुपयेकी आई जिसमें घड़े हुए पदार्थ ३७½ लाख रुपयेके ७००० टन और बिना घड़े हुए १८०० टन आये

जर्मन सिलवर और निकलको मिलाकर इनका आयात १४½ लाख रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग जर्मनीका है। जहांसे आठ लाख रुपयेका आया। शेषमें ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और इटाली इन तीनों देशोंसे दो २ लाख रुपयेका आया।

पारा—६१ लाख रुपयेका २२५ हजार रतल आयात हुआ। इसमेंसे ५३ लाख रुपयेका २०५००० रतल इटलीसे और २१००० रुपयेका ८००० रतल ग्रेट ब्रिटेनसे आयात हुआ।

मिलके पदार्थ और मशीनरी

भारतमें आनेवाली मशीनरीके आयातका मुख्य २ विवरण इस भांति है:—

बिजली सम्बन्धी मशीन	२२६ लाख रुपया
एंजिन	१६८ " "
रुईकी मशीनरी	१७१ " "
खान सम्बन्धी	६८ " "
सीने और बुननेकी	८८ " "
मशीनरीके लिए पट्टे	८१ " "
पाटकी मशीनरी	३५ " "
बायलर	६३ " "
धातु सम्बन्ध मशीनरी (मुख्यतया औजार)	३७ " "
तेल निकालने और साफ़ करनेकी	३३ लाख "
चावल और आटेकी	२८ " "
चायकी	२६ " "
टाईप राईटर और उसके पदार्थ	२४ " "
छापेके प्रेस	१५ " "
बर्फ जमानेकी	१२ " "
लकड़ी चीरनेकी	६ " "
कागजकी मिल	७ " "
चीनीकी	६ " "
ऊनकी	४ " "

मशीनरीका आयात तत्सम्बन्धी अन्य उद्योगोंकी दशाका सूचक है। सन १९२६-२७ में तेल निकालने और साफ़ करनेकी, चावल और आटेकी, कागजकी और बिजलीकी मशीनरीके आयातमें वृद्धि हुई है। तथा रुई और पाटकी मिल मशीनरी, एंजिन, बायलर, खान सम्बन्धी मशीनरी और चीनीकी मशीनरीके आयातमें कमी हुई है। रुई, पाट, ऊन आदि सब प्रकारकी मशीनरी २५१३ लाख रु० की आई जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने २४० लाख रु० की भेजी। बिजलीकी मशीनें

२२९१ लाखकी आई जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १४६ लाखकी अमेरिकाने २३ लाखकी और जर्मनीने ११ लाखकी भेजी। एञ्जिन ११८ लाख रुपयेके आये जिनमें तैलसे चलनेवाले और उनके पदार्थ ११२ लाखके और भापसे चलनेवाले ७८ लाखके आए। बायलर ६३ लाखके आये, ये सब करीब २ ग्रेट ब्रिटेनसे आयात हुए। सीनेकी मशीनें सन १९२५-२६ में ७०८०० आई थीं वह १९२६-२७ में ७१,१०० आई, इनमें ७१ प्रति सैकड़ा भाग अमेरिकाका और २६ सैकड़ा भाग जर्मनीका रहा। टाइप राइटरकी मशीनें भी १६ लाख रुपयेकी १०९४७ से बढ़कर २२ लाख रुपयेकी १३७६० आई इनमें भी मुख्य भाग अमेरिकाका रहा।

मिलके सामान, मशीनरीके पट्टे और छापेकी मशीनोंके आयातमें मुख्य २ देशोंके आयातका भाग इस प्रकार रहा—

ग्रेट ब्रिटेन	११,१८ लाख रुपया			७७.६ प्रतिशत	
अमेरिका	१,५३	"	"	१०.५	"
जर्मनी	१,०३	"	"	७.१	"
बेलजियम	२५	"	"	१.७	"
अन्य देश	४१	"	"	२.८	"

रेलवे सामग्री

रेलवे सामग्रीका आयात ३,२१ लाख रुपयेका हुआ, यदि इस संख्यामें सरकार द्वारा आयात किये हुए मालकी २,८३ लाखकी संख्या भी मिला दीजाय तो कुल आयात ६०८ लाख रुपयेका हो जाता है। इसके आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग, जो सन् १९२५-२६ में ७६.१ प्रतिशत था वह घटकर १९२६-२७ में ६१.१ प्रतिशत रह गया। ग्रेट ब्रिटेनके सिवा इस वर्ष बेलजियमसे १७.४ प्रतिशत, जर्मनीसे १६ प्रतिशत, फ्रान्ससे ५.८ प्रतिशत और अमेरिकासे ३.१ प्रतिशत मालका आयात हुआ।

मोटर गाड़ियां

आजकलके मोटर गाड़ियोंका आयात दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इनके दाम यद्यपि पहिलेसे कुछ कम हो गये हैं पर इनका व्यवहार तथा प्रचार पहलेसे बहुत अधिक बढ़ गया है। सरकारने भी १ मार्च सन १९२७ से इन पर इम्पोर्ट ड्यूटी ३० सैकड़ासे घटाकर २० सैकड़ा और टायर पर १५ सैकड़ा करदी है। भारतमें अच्छी सड़कोंकी कमी, और पुलोंपर बोझा ले जानेका प्रतिबन्ध, ये दोनों बातें अभी भारत द्वारा आवागमनके प्रचारमें बाधक हो रहे हैं। तब भी इनका आयात बढ़ गया है। १९२५-२६ में जहां १२७५० गाड़ियां आई थीं वहां १९२६-२७ में १३११७ आईं। इनका मूल्य भी ४,२२ लाखसे बढ़ ४,१८ लाख देना पड़ा। इस आयातमें अमेरिका और

कनाडाका हाथ प्रधान है। अङ्गरेजी गाड़ियां भी अब अधिक व्यवहारमें आने लगी हैं। इस वर्ष अंग्रेजी मोटरका औसत मूल्य ३१,५६ रुपया, अमेरिकनका २२०८ रुपया और कैनाडाकी मोटरका औसत १५६८ रुपया रहा। गत वर्ष यही संख्याएं क्रमसे ३:३६, २२८१, और १५१८ रही थीं। ग्रेट ब्रिटेनमें जहां सन १९२५ में १,३३,५०० मोटरें बनी थीं वहां उसने सन १९२६ में १,५८,६६६ मोटरें बनाईं। ग्रेट ब्रिटेनसे ८०॥ लाख रुपयेकी २५४६ मोटरें, कैनाडासे ७० लाखकी ४४७६ मोटरें और अमेरिकासे ८९ लाखकी ४०३१ मोटरें आईं। इटली और फ्रांससे क्रमशः १४१६, और ६०३ मोटरें आयात हुईं। इनके समूचे आयातमें कैनेडाने ३४ प्रति सैकड़ा, अमेरिकाने ३० प्रति सैकड़ा, ग्रेट ब्रिटेनने १६ प्रति सैकड़ा और इटालीने ११ प्रति सैकड़ा मोटरें भेजीं। इन मोटरोंमें बंगालमें ३२ सैकडा, बम्बईमें २७ सैकडा, सिंध और मद्रासमें १४ सैकडा और बर्मामें १३ सैकडा मोटरें आईं।

मोटर साईकिल्स

इनका आयात भी ११ प्रति सैकड़ा बढा सन १९२५-२६ में जहां ये १६२६ आई थीं वहां २६-२७ में १८०३ आईं। जिनका मूल्य ६,८३००० की जगह १०,४३००० चुकाना पड़ा। ग्रेट ब्रिटेनमें इनके बनानेवाले दाम घटानेके प्रबल प्रयत्नमें लगे हुए हैं। इसीलिये ग्रेट ब्रिटेनसे इनका आयात बढ़ रहा है। वहांसे इस साल १६६५ मोटर साइकलें आईं। अर्थात इस कामसें ग्रेटब्रिटेनका भाग ९२ प्रति सैकड़ा रहा।

मोटर लॉरीज

स्टेशनोंके आस पासके गांवोंमें जहां रेल नहीं है वहां पर यात्राके समय आने जानेके लिये मोटर-बसोंका उपयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। इसके फल स्वरूप मोटरबस, वानें और मोटर लारियों-का आयात बढ़ा है। सन १९२४-२५ में जहां ये ३९ लाखकी २१६२ आईं थी वहां सन १९२५-२६ में ८८ लाखकी ४८४० और सन २६-२७ में १२० लाखकी ६३४३ आईं। इनमेंसे लारी एञ्जिन ६३ लाख रुपयेके ५३४५ आये। इससे यह प्रकट है कि भारतमें इनपर गाड़ियां बनानेका काम बढ़ रहा है। इनमेंसे कई एञ्जिन तो सवारीकी बसोंके लिये आये जिनपर यहीं गाड़ियां बैठाई गईं। इन एञ्जिनोंके आयातमें कैनाडा और अमेरिकाका भाग मुख्य है ग्रेट ब्रिटेनके एञ्जिन महंगे पड़नेकी वजहसे कम आते हैं। इन तीनों देशोंके एञ्जिनोंका औसत मूल्य ध्यान देने योग्य है। सन १९२६-२७में एक अङ्गरेजी एञ्जिनका औसत मूल्य ४१६८ रुपये रहा जब कि अमेरिकन एञ्जिनका २०६० ६० और कैनाडाके एञ्जिनका औसत मूल्य १२५१ रुपया प्रति एंजिन रहा। सन १९२६ में कैनेडाने मोटरबसें, वानें और लारियां ४८ लाखके मूल्यकी २३२२ भेजीं, अमेरिकाने ४९ लाख रुपयेकी २३२२ भेजीं जब कि ग्रेट ब्रिटेनने ११ लाख रुपये मूल्यकी केवल २४१ भेजीं।

रबरके पदार्थ

गत वर्ष कच्चे रबरके दाम बहुत गिर गए इसलिए इसके आयातके मूल्यमें भी बहुत कमी हो गई। लेकिन यह बात प्रकट है कि भारतमें मोटर गाड़ियोंके अधिक व्यवहारके कारण इनके सब तरहके ट्यूब,टायरोंके आयातकी संख्यामें वृद्धि ही रही। मूल्य सस्ता हो जानेके कारण चाहे दामोंमें घटी रही हो। मोटर टायर ११८ लाख रुपयेके ३, १०,५५१ आये। इनमें ४२ लाख रु० के ग्रेट-ब्रिटेनसे, २३ लाखके अमेरिकासे, २६ लाखके फ्रान्ससे और १७ लाख कैनेडासे आयात हुए। मोटर साइकलके टायरोंमें ६४ प्रति सैकड़ा अर्थात् १० लाख रुपयेके ग्रेट ब्रिटेनसे आए। साइकलके टायरोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ५२ सैकड़ा और फ्रांसका ४६ सैकड़ा रहा। मोटर ट्यूब ग्रेट ब्रिटेनसे ११ लाखके फ्रान्ससे ६ लाखके और अमेरिकासे ३ लाखके आए। रबरके ठोस टायर ग्रेट ब्रिटेनसे ५॥ लाखके आयात हुए।

विविध धातुकी बनी हुई चीजें

इनका आयात ४०० लाख रुपयेका हुआ, इनमें मुख्यतया नीचे लिखे अनुसार पदार्थ सन् १९२६-२७ में आये।

कृषि सम्बन्धी पदार्थ	१७ लाख रुपया	कलईदार लोहेके बर्तन ४० लाख रुपया
मकान सम्बन्धी पदार्थ	३४ लाख रुपया	घरेलू पदार्थ १० लाख „
अन्य सामान तथा औजार	७१ लाख रुपया	चूल्हे सम्बन्धी पदार्थ ६ लाख „
धातुके लैम्प	८० लाख रुपया	गैसके मैन्थल ६ लाख „

धातुके लैम्प मुख्यतया जर्मनीसे आये जिसने ६२ सैकड़ा अर्थात् २९५१००० लैम्प भेजे, अमेरिकाका भाग इस व्यापारमें २० सैकड़ा रहा जहांसे १३,४१००० लैम्प आये। कृषि सम्बन्धी पदार्थोंमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा जिसने १४ लाख रुपयेका सामान भेजा। अन्य सामान और औजार ७१ लाखके आये जिनमें ग्रेट ब्रिटेनसे ४३। लाख रुपयेके आये। कलईदार लोहेके बर्तनोंमें ११ लाखके जापानसे और १० लाखके जर्मनीसे आये।

इन सब पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ३६ जर्मनीका ३१ अमेरिकाका १४ और जापान तथा अन्य देशोंका ११ प्रति सैकड़ा रहा।

स्नेहक तैल

इनमें वेसेलिन, पैराफीन, और लुब्रिकेटिंग तेल मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त व्हाइट आइल भी आता है जिससे अन्य सब तेलोंमें [illegible] होती है। इस तेलमें किसी प्रकार रंग या गंध नहीं होती। यह तेल मुख्यतया जर्मनीसे आता है। सन् १९२६-२७ के समूचे आयातमें ३,

सैकड़ा कैरोसिन, ५६ सेकड़ा पेट्रोल, और ११ सेकड़ा भाग लुब्रीकेटिंग ऑइलका रहा। इस वर्ष कैरोसिन ओइल कुल मिलाकर ४२६ लाख रुपयेका ६४० लाख गैलन आया।

इंधनके काममें आनेवाला तेल—रेल, जहाज और कल कारखानोंमें इसका व्यवहार बढ़ जानेसे इसका आयात १,६६ लाख रुपयेका ६०५ लाख गैलन हुआ। पारससे यह सबसे अधिक अर्थात् ६६० लाख गैलन आया। बोरनियों और स्टेटसेटलमेंटसे मिलाकर २४० लाख गैलन आया।

कल पुर्जोंमें लगानेका तेल—जूट मिलोंके लिए बंगालमें यह तेल १४० लाख गैलन ५२ लाख रुपयेका आया। इसमेंसे बोरनियोसे ८० लाख गैलन और अमेरिकासे ६० लाख गैलन आया।

मोटर स्प्रिट—विदेशी मोटर स्प्रिटका आयात बहुत कम अर्थात् कुल ३८०० गैलनका हुआ। भारतमें पैटरोलकी मांग बरमा और भारतके अन्य स्थानोंसे पूरी हो जाती है। पैटरोल और अन्य मोटर स्प्रिटका आयात बरमासे २६० लाख गैलनका हुआ।

बने हुए खाद्य पदार्थ

इनका आयात ५५० लाख रुपयेका हुआ। भारतमें यद्यपि शुद्ध और पवित्र खाद्य पदार्थोंकी कमी नहीं है पर नवीन सभ्यताके इस जमानेमें डब्बे और बोतलोंमें बन्द किये हुए बिसकुट, केक, चाकलेट, जमे हुए दूध, यहांतक कि घासफूसके बने हुए बनस्पति घी नामक पदार्थमें करोड़ों रुपये बाहर जाते हैं। रोटी, बाटी, मिठाई आदि बनानेमें इस वेजिटेबिल ऑइलका प्रचार भारतमें बहुत बढ़ रहा है। यह देशका दुर्भाग्य है कि उसके पवित्र और बलदायक पदार्थोंका स्थान ये घास फूसकी चीजें ग्रहण कर रही हैं। इस पदार्थका मुख्य आयात नेदरलैण्डसे होता है। जहांसे १,२७ लाखका यह व्हिजीटेबल प्रोडक्ट आया। इससे भी अधिक आश्चर्यप्रद बात यह है कि डिब्बोंमें बन्द होकर विलायती जौ (Harly) का आटा भी यहां लाखों रुपयेका आता है। साबूदाना और उसका आटा ५१ लाख रुपयेका और जमा हुआ दूध ७५½ लाख रुपयेका आया। ४९ लाख रुपयेकी बिस्कुट और डबल रोटियां आईं। मुरब्बा और आचार भी आस्ट्रेलियासे तीन लाख रुपयेके आये।

मादक पदार्थ

ये पदार्थ ३५३ लाख रुपयेके आये। सन् १९२५-२६ में जहां ७५ लाख गैलन इनका आयात हुआ था वहां सन् २६-२७ में ६३ लाख गैलन हुआ। सिन्धको छोड़कर अन्य सब बन्दरोंमें इनके आयातकी वृद्धि रही। बंगालका आयात सबसे अधिक अर्थात् १८,६२००० गैलन और बम्बईका उससे कम अर्थात १६,४१००० गैलन रहा। मगर मूल्यमें बंगालको एक करोड़

[illegible] देना पड़ा और [illegible] को एक करोड़ पांचलाख देना पड़ा । इससे मालूम होता है कि [illegible] ज्यादा अधिक है। बरमा और मद्रासमें क्रमशः ५० लाख और २० [illegible] का आयात हुआ। इन पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनसे मुख्यतया व्हिस्की और फ्रान्ससे ब्रांडी आती है। [illegible] बढ़िया वाईन भी फ्रान्ससे आती है । उपरोक्त आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका [illegible] और फ्रान्सका ५१ लाख रुपयेका भाग रहा ।

कागज और [illegible]

[illegible] १०८ लाख रुपयेकी आई, छापने का कागज एक करोड़ रुपये का तीस हजार टन [illegible] । [illegible] समाचार पत्रोंका कागज आया। इस काम में नारवे और जर्मनीका [illegible] भाग रहा । लिखनेका कागज और लिफाफे ५६ लाख रुपयेके आये [illegible] ग्रेटब्रिटेनसे और शेष दूसरे देशोंसे आयत हुए। पेकिंगका कागज ४० लाख [illegible] और [illegible] इसका आयत बढ़ा और ग्रेटब्रिटेनसे घटा। पुरानी रद्दीका [illegible] रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। भाव सस्ता कर देनेके कारण [illegible] आयत बढ़ा। मोटे कागज और पुट्ठेका आयात ३०॥ लाखका हुआ।

[illegible] में भारतमें [illegible] कागज मिलें थी। जिन्होंने ३२१४५ टन कागज बनाया।

[illegible] पदार्थ

[illegible] रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग सोडाका रहा जो १०५ लाख [illegible] मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। सोडियम कारबोनेट ५८ लाख [illegible] ग्रेटब्रिटेनने भेजा। कास्टिक सोडा और सोडियम कार्बोनेट [illegible] आये। [illegible] लाखका, फिटकरी ३ लाख रुपयेकी, [illegible] रुपयेका, [illegible] १६ लाख रुपयेका, धोनेके मसाले ८ लाख रुपयेके [illegible] और [illegible] आदिके आयातमें भी वृद्धि हुई।

[illegible] और [illegible]

[illegible] रुपयेका हुआ। [illegible] २८ लाख रुपयेका आया, जिसमें २८ [illegible] और जर्मनीसे आया। कुनैनका आयात १२००० [illegible] हुआ। पेटन्ट औषधियें २७ लाख रुपयेकी आई, [illegible] और जर्मनीने ५ लाखकी भेजी। [illegible] आया। अफीम और मादक पदार्थोंका आयात [illegible] हुआ।

नमक

यद्यपि विदेशी नमकका आयात सन् १९२५-२६ से परिमाणमें घटगया पर भावकी तेजीके कारण इसके मूल्यमें बढ़ती रही। अर्थात् जहां १९२५-२६ में ५,६०००० टनका मूल्य १०४ लाख रुपया देना पड़ा था वहां २६-२७ में ५,४२०३० टनका मूल्य १२६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। यह पदार्थ मुख्यतया बंगालमें और उससे कम बरमामें आता है जहांके लोग महीन—पिसा हुआ—नमक अधिक पसन्द करते हैं।

औजारयंत्र आदि

इनका आयात ४०१ लाख रुपयेका हुआ। इसमें बिजलीके पदार्थ टेलिग्राफ और टेलीफोन की चीजें भी सम्मिलित हैं। बिजलीके चीजोंमें मुख्य हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। जहांकी चीजें नेदरलैण्ड और अमेरिकाके साथ प्रतिद्वन्दना होते हुए भी अच्छी बिकती हैं। ग्रेटब्रिटेनसे बिजलीकी चीजोंका—जैसे लेम्प बेटरी आदिका — आयात १७० लाखका, अमेरिकासे ३३ लाखका, नेदरलैण्डसे १० लाखका, और जर्मनीसे २२ लाखका हुआ।

वाद्ययंत्र

वाद्ययंत्र, सिनेमाकी फिल्म और फोटोकी चीजोंका आयात इस वर्ष बढ़ा। इस मदमें ग्रेट-ब्रिटेनने २५१ लाख रुपयेका, अमेरिकाने ५९ लाख रुपयेका, नेदरलैंडने १० लाख रुपयेका, इटलीने ८ लाख रुपयेका, और जापानने ४ लाखका माल भेजा।

मसाले

ये ३१२ लाख रुपयेके आये। इनमें काली मिर्च १६ लाख रुपयेकी आई। सुपारी मुख्यतया स्टेटसेटलमेंटसे आती है जिसका आयात २५० लाख रुपयोंका हुआ। लौंग ३४ लाख रुपयोंका मुख्यतया केपकालोनी, जंजीबार आदिसे आया।

सिगरेट

भारतमें सिगरेटका आयात २ करोड़ ५६ लाख रुपयेका हुआ। इसमें करीब ४१½ लाख रुपयेकी कच्ची तमाखू आई। जिससे यहां सिगरेट बनाई गई। भारतीय तमाखूके संरक्षणके लिये विदेशी तमाखू पर १) रतलसे बढ़ाकर इम्पोर्ट ड्यूटी १॥) रतल मार्च सन् १९२८से करदी गई।

इस कामर्में प्रधान हाथ ग्रेट ब्रिटेनका है। यहांसे १४३ लाखका आयात होता है। इजिप्टसे आयात कुछ कमी हुई, पर अमेरिकाका आयात बढ़ा, सिगार और चुरटका आयात १९ लाख रुपयेका हुआ।

कांच और कांचकी वस्तुएं

इनका आयात २८३ लाख रुपयोंका हुआ। जापान इस काममें उन्नति करता आ रहा है। उसने जेकोस्लोवेकियाको इस काममें पीछे रखदिया है जहांसे ६३ लाख रुपयेका आयात हुआ। जापानसे ६६½ लाख, जर्मनीसे ५२ लाख, और बेलजियमसे २७ लाखका आयात हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे भी २८½ लाख रुपयेका माल आया।

चूड़ियां ९५ लाख रुपयेकी आईं। जिसमें जेकोस्लोवेकियासे ५१ लाख और जापानसे २१ लाखकी आईं। झूठे दाने और मोती ३१ लाखके आये। बोतलें और शीशियां ३८ लाखकी आईं, जिनमें जर्मनीसे ११ लाखकी, जापानसे १२ लाखकी और ग्रेटब्रिटेनसे ६½ लाखकी आईं। लैम्पकी चिमनियां और कांचके सामान जो मुख्यतया जर्मनी और अमेरिकासे आते हैं। १४लाख रुपयेके आए। कांचकी टहनी ३१½ लाख रुपयेकी २८० लाखवर्गफुट आईं।

रंग

रंग २१३ लाख रुपयोंका आया। इस काममें मुख्य हाथ जर्मनीका है। जहांसे अलीजरीन रंग १८ लाखका और अनीलीन ८३ लाखका आया। ग्रेटब्रिटेनसे यह माल क्रमशः १ और ७ लाख रुपयेका आया। शेष मुख्य आयात अमेरिका बेलजियम और स्वीटजरलैंड से हुआ।

जवाहरात और मोती

इनका आयात १,०० लाखका हुआ। जिसमें हीरा ५८ लाख रुपयेका आया। जवाहिरातका आयात बेलजियमसे ३० लाखका हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे १२ लाख तथा नेदरलैंडसे ८लाखका मोतियोंका आयात १४½ लाख रुपयेका हुआ। मोती मुख्यतया बहरीन टापू और मिस्कटसे आते हैं। कच्चे के १० लाख रुपयेके आये।

दियासलाई

दियासलाई भारतमें ७० लाख रुपयेकी आई। विदेशी माचिसका आयात क्रमशः घट रहा है। इसका कारण भारतमें होनेवाले उद्योगका प्रसार है। मुख्य पटी बम्बई और बंगालके भारतमें हुये हैं। सन् १९२९के अंतमें भारतमें दियासलाईके ३४ कारखाने थे। जिनमेंसे कई मुख्य कारखाने स्वीडिश और जापानी कम्पनियों द्वारा चलाये जाते हैं। सेफ्टी माचिसका आयात ८१ लाख रुपयेका हुआ जिसमें स्वीडनका ६६ सैकड़ा और जापानका २२ सैकड़ा भाग रहा। भारतकी दियासलाईका आयात घटा तथा स्वीडनका बढ़ा है। स्वीडनसे ६१ लाख रुपयेकी और जापानसे सिर्फ १०½ लाख रुपयेकी सबसे बड़ी माचिस यहां आई। जेकोस्लोवेकिया और रूसकी भी थोड़ीसी माचिस आई।

कोयला

विदेशी कोयलेका आयात ३१ ला० रुपयेका हुआ। ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़तालके कारण वहांका आयात कम हुआ। सन् १६२५, २६में ३७२००० टन कोयला आया था। इस साल १४२००० टन आया। अर्थात् ६७ सैकड़ा कमी हुई और मूल्य ८८ लाखसे घटकर ३१ लाख रह गया। दक्षिणी अफ्रीकाका कोयला जो गत वर्षोंमें बम्बईमें अधिक आता रहा है वह अन्य देशोंने लेलिया। इसलिये नेटालसे यहां आयात घटकर ११४००० टनसे ८६००० टन रह गया। गत वर्ष ग्रेटब्रिटेनसे ६७००० टन आया था उसके स्थानमें इस वर्ष केवल १३००० टन आया। इतना कम आनेका कारण ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़ताल है।

इस प्रकार भारतके आयातका वर्णन हुआ, पर इससे यह नहीं समझना चाहिये कि यह सब पदार्थोंके आयातका वर्णन हो चुका हो। नहीं अभी छोटी बड़ी बीसों वस्तुएं ऐसी हैं जो भारतमें लाखों करोड़ोंके मूल्यकी आती हैं। जैसे मिट्टीके पदार्थ, पहननेके कपड़े, जूते; घड़ी घंटे, छाते और छातेके सामान, स्टेशनरी, साबुन, तेल, लेवेण्डर, वार्निशकी चीजें आदि २, इनका वर्णन कहांतक किया जाय। यहां केवल यही कहना पड़ता है कि यह भारतका दुर्दिन है जो उसके बाजार विदेशी वस्तुओंसे इस तरह पाटे जाते हैं।

आगे अब हम भारतके निर्यात व्यापारका वर्णन करते हैं। इससे पाठकोंको विदित हो जायगा कि किस तरह भारतके मालका निर्यात होता है।

—:-०-:—

निर्यात व्यापार

भारतका एक्सपोर्ट इम्पोर्टकी अपेक्षा अधिक है। देशको इम्पोर्टके लिये मूल्य चुकाना पड़ता है और एक्सपोर्टके लिए उसे मूल्य मिलता है। भारतका एक्सपोर्ट अधिक है इससे यह नहीं समझना चाहिये कि उसे अपने इम्पोर्टका मूल चुकाकर एक्सपोर्टकी अधिकताके स्वरूप कुछ मिल जाता है या बच जाता है, नहीं उसके एक्सपोर्टकी अधिकता होम चार्जेस आदिके रूपमें चली जाती है यह पहले लिखा जा चुका है। यह भी पहले लिख दिया है कि उसके एक्सपोर्टका मुख्य भाग कच्चे पदार्थ और खाद्य द्रव्योंका होता है। उसके एक्सपोर्टसे या तो विदेशोंको भोजन अर्थात् खाद्य पदार्थोंकी प्राप्ति होती है या उन विदेशोंको अपने उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी प्राप्ति। इस भांति भारतके एक्सपोर्टसे उन विदेशोंके खाद्य और उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी पूर्ति होती है। इसका विस्तार पूर्वक हाल इस प्रकार है। भारतका इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट दोनों व्यापार किस कदर बने है पहले यह देखिये—

	युद्धके पहलेका औसत	युद्धके समय औसत	सन २५-२६	सन २६-२७
इम्पोर्ट	रु० १,४५,८४,७२०००	रु० १,४७,८०,११०००	रु० २,२६,१७,५००००	रु० २,३१,३१५८०
एक्सपोर्ट	रु. २,१६,४६७३०००	रु. २,१५,६६,७००-००	रु. ३७४८८४२१०००	रु. ३,०१,४३१६०

सन् १९२६-२७ में ३,०१ करोड़ रुपयेका निर्यात हुआ उसमें मुख्य पदार्थोंका विवरण इस भांति है-

(१) खाद्य पदार्थ,	
धान्य पदार्थ और आटा	रु० ३६,२४,६०,०००
चाय	,, २६,०३,३८,०००
मिर्च मसाला फल और मछली	,, ३,२१,२३,०००
अफीम	,, २,११,८५,०००
काफी	,, १,३२,६३,०००
तमाखू	,, १,०४,१५,०००
(२) कच्चे पदार्थ,	
रुई	,, ४९,१४,१९,०००
पाट	,, २६,७८,०४,०००
तेलहन	,, १९,०८,७७,०००
चमड़ा	,, ७,१७,४५,०००
रक्त, मोम खाद पदार्थ	,, ५,६२,७६,०००
गोंद राल लाख	,, ५,५१,५१,०००
ऊन	,, ३,६३,१४,०००
रबड़	,, २,६०,१४,०००
धातु	,, २,४१,७०,०००
लकड़ी काठ	,, १,६०,१३,०००
धातुके अतिरिक्त अन्य खनिज पदार्थ पत्थर आदि	१,११,००,०००
घास चारा भूसी	,, १,०६,२५,०००
कोयला	,, ८०,६२,०००
(३) बने हुए पदार्थ	
पाटके पदार्थ हैसियन बोरी आदि	,, ५३,१८,०६,०००
सूत और कपड़ा	,, १०,७४,८६,०००
चमड़ा (कमाया हुआ)	,, ७,५२,०२,०००

धातुके पदार्थ	४,७४,१६,०००
रसायनिक पदार्थ जड़ी बूंटी और औषधियां	२,६५,८२,०००
रंग	१,२४,१५,०००
ऊनी सूत और कपड़ा	७५,१४,०००
(४) डाकसे निर्यात	२,४६,६६,०००

सन् १९२६-२७ के एक्सपोर्टमें भिन्न भिन्न विदेशोंका भाग इस भांति रहाः—

ग्रेट ब्रिटेन	रु० ६६,१२,००,०००
जापान	„ ४१,२७,००,०००
अमेरिका	„ ३६,४१,००,०००
जर्मनी	„ २०,४३,००,०००
सीलोन	„ १४,८६,००,०००
फ्रान्स	„ १३,९७,००,०००
इटली	„ ११,५४,००,०००
चीन	„ ११,३१,००,०००
बेलजियम	„ ८,८३,००,०००

जिस भांति भारतके आयात व्यापारमें मुख्य भाग ग्रेट ब्रिटेनका है अर्थात् वह सबसे अधिक माल यहां भेजता है उसी भांति ग्रेट ब्रिटेनको यहांसे जाता भी सबसे अधिक है।

पाट और पाटके बने पदार्थ

भारतके एक्सपोर्टमें पाटका सबसे अधिक भाग है। सन १९२६-२७ में पाट और उसके बने पदार्थ दोनों मिलाकर ७९९९ लाखका निर्यात हुआ। सन १९२५-२६ से इनका निर्यात वजनके परिमाणमें अर्थात १४,५८,००० टनसे बढ़कर १५,६८,००० का हुआ पर मूल्यमें सस्ते दामोंके कारण बहुत घटी रही अर्थात् ९७ करोड़से घटकर ८० करोड़ रुपया ही रह गया। कच्चे पाटका भाग ३३ सैकड़ा और बने हुए मालका ६७ सैकड़ा रहा। नीचे सन १९१३-१४ और गत तीन वर्षोंके निर्यातका ब्योरा दिया जाता हैः—

	१९१३-१४	१९२४-२५	१९२५-२६	१९२६-२७
पाट (टन)	७,६८,०००	६,९६,०००	६,४७,०००	७,०८,०००
बोरे (संख्या लाख)	३६,९०	४२,५०	४२,५०	
कपड़ा(गज लाख)	१,०६,१०	१,४५,६०	१,४६,१०	

सन १९२६-२७ में कच्चे पाटकी ३६,६४,००० गांठे भेजी गईं जिनमेंसे ग्रेट ब्रिटेनने ६,६८००० गांठें लीं। सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनने ९,७७,००० गांठें ली थीं अर्थात् १९२५-२७में पूर्व वर्षसे एक सैकड़ेकी घटी रही पर मालके दार्मोमें सस्ते भावके कारण बहुत घटी रही, अर्थात् सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनको १०,५७ लाख रुपया देना पड़ा था, वही सन् १९२६-२७ में ६,१४ लाख रुपया ही देना पड़ा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वर्षके पहले ६ महीनोंमें जब ग्रेटब्रिटेन-में कोयलेकी हड़ताल रही तब तक उसने केवल ६५,००० गांठें लीं और बाकी शेप ६ महिनोंमें। इस काममें जर्मनी सबसे प्रमुख रहा क्योंकि उसने ७,४० लाख रुपयेकी १०,२५००० गांठें लीं। अमेरिकाको ५,९६ ००० फ्रांसको ५०४००० इटलीको २७५००० बेलजियमको २४८००० स्पेनको १८७००० नेदरलैंडको ७२००० और जापानको ५१००० गांठें भेजी गईं।

नीचे कच्चे पाटके निर्यात और स्थानीय मिलोंकी खपतका ब्यौरा दिया जाता है—

	युद्धके पूर्वका औसत	१९२५-२६ (गांठें)	१९२६-२७
ग्रेट ब्रिटेन	१६,६१,०००	६,७७,०००	६,६८,०००
जर्मनी	६,२०,०००	८,१०,०००	१०,२५,०००
बाकी यूरप	१०,६५,०००	१२,१०,०००	१२,६१,०००
अमेरिका	५,४६,०००	५,११,०००	५,९६,०००
अन्य देश	२६,०००	१,१६,०००	१,१४,०००
कुल निर्यात	४२,८१,०००	३६,२५,०००	३९,६४,०००
भारतकी मिलोंमें खपा	४१,२०,०००	४४,६७,०००	४५,२७,०००

इन अङ्कोंसे पाटके निर्यात और उसकी स्थानीय खपतका पता चल जाता है।

बोरे—

बोरोंका निर्यात सन १९२६-२७ में ४४,६० लाखका हुआ जिसका मूल्य २४½ करोड़ रू० मिला। सबसे अधिक बोरे आस्ट्रेलियाने लिये जो ८,६० लाखका खरीददार रहा। ग्रेट ब्रिटेनने ३,९० लाख, अमेरिकाने २,८० लाख, जावाने २,५० लाख, जापानने २५० लाख और हांगकांगने १६० लाख बोरे लिये।

पट्टी कपड़ा

सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात गत वर्षके १४६१० लाख गजसे बढ़कर १५०३० लाख गजका हुआ, पर मूल्य ३२ करोड़की जगह २८ करोड़ रुपया मिला।

इसके निर्यातमें अमेरिकाका सबसे अधिक भाग रहा जिसने ६५ सैकड़ा अर्थात ६०,१७ लाख गज माल लिया। ग्रेटब्रिटेनने ५ करोड़ गज, आरजेन्टाइनने ३१ करोड़, कैनाडाने ६ करोड़, चीन और हांगकांगने १॥ करोड़, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडने ३ करोड़, और दक्षिणी अफ्रिकाने ४० लाख गज माल लिया।

पाटका इतिहास

आज जिस पाटके व्यवसायकी भारतमें इतनी धूम है और जो यहांके निर्यातमें सबसे प्रमुख स्थान धारण करता है उसका १५० वर्ष पहले आजकलके सदृश उपयोग करना कोई नहीं जानता था। इसका व्यापारिक महत्व गत शताब्दिके पूर्वार्द्धमें प्रगट हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसका जूट नाम संस्कृत शब्द "जट" अर्थात् तारसे पड़ा। यों तो भारतमें अंग्रेजोंका आगमनके पहलेहीसे कई पदार्थ तार बनानेके काममें आते थे पर अठारहवीं शताब्दिके अंतमें ईस्ट इंडिया कंपनीके अफसरोंको जहाजोंके रस्से बनानेके लिए किसी पदार्थकी आवश्यकता हुई। इसी समय सिबपुर बोटेनिक गारडनके संस्थापक और डायरेक्टरने जूटको इस योग्य समझा और सन् १७९५ में इसकी एक गांठ इंग्लैण्ड भेजी गई। उसने डायरेक्टरोंकी समितिको जो पत्र लिखा उसमें इस तागेको जूट बोलकर लिखा। सरकारी कागजातमें जूट नाम आनेका यही सबसे पहला अवसर था। इसके बाद कई पारसलें परीक्षार्थ भेजी गईं और सन् १८२० के लगभग एबिंगडनके कारीगर इससे दरी बनानेके लायक तार निकालनेमें समर्थ हुए। सन् १८२२में डंडी (Dundee) में जूटका एक छोटा सा चालान पहुंचा पर वहांके कारीगर इससे तागा नहीं निकाल सके, इसलिए वह ४-५ वर्षतक तो पड़ा रहा और इसके बाद इसकी फर्श अर्थात् दरियां बना दी गईं। उस समय वहां यह निश्चय हुआ कि इस पदार्थके लिए खास तरहके यंत्रोंकी आवश्यकता है। इस बातका प्रयत्न चालू रहा। सन १८२८ में कच्चे जूटका यहांसे कुल १८ टनका चलान हुआ। कलकत्ताके चुंगी विभागमें जूट शब्द भिन्न मदमें आनेका यही सबसे प्रथम अवसर था। सन् १८३२ तक वास्तविक सफलता न हुई पर इस समय व्हेल मछलीके तेलसे इसको नर्म बनाकर काम लिया गया। पहले जूटमें अन्य पदार्थ यथा फ्लैक्स और टो (Flax and tow) मिलाये गये पर सन १८३५में खालिस जूटका सुत कातकर बेचा गया। सन् १८३७ में डंडी नगरमें जूटका दाम १८३२ से दुगुना हो गया। सन १८३७ में डच सरकारने काफी भरनेके लिए डंडीमें जूटके बहुतसे बोरे खरीद किये। इस प्रकार डंडीमें जूटके कारबारकी नींव जमी और यह पदार्थ व्यापारिक दृष्टिसे एक महत्वकी वस्तु गिना जाने लगा।

पाटकी खेती

इसकी खेतीका ठेका मानों बंगाल और आसामने ले रखा है, गंगा और ब्रह्मपुत्रकी तराईमें खासकर इसकी खेती होती है। थोड़ीसी खेती विहार उड़ीसामें भी होती है। जूटकी फसलका ६० सैकड़ा मध्य बंगाल और आसाममें होता है और इसलिए जूटसे पदार्थ बनानेवाले स्थानोंको कच्चे मालकी प्राप्तिके लिए यहींपर निर्भर रहना पड़ता है। इसकी थोड़ीसी पैदावार मद्रास और बंबईके इलाकोंमें भी होती है जिसे बिमालीपटम जूट कहते हैं। खोज करनेपर इस बातका पता चलता है कि मलाबार जिलेमें और उस तरफकी नदियोंकी तराईमें भी जूटकी खेतीके लायक जमीन है लेकिन अच्छी जाति और गहरी उपजकी बातके अतिरिक्त बंगालके सदृश मजूरी सस्ती न होनेके कारण वहांपर समुचित खेती असम्भव सिद्ध हो चुकी है। अन्य देशोंने भी इसकी खेतीका प्रयत्न किया और वह अभीतक जारी भी है पर किसीको सफलता नहीं मिली। चीन और फारमूसाके प्रान्तोंमें इसकी खेतीमें कुछ सफलता हुई है पर वहांकी पैदावार बंगालसे तभी मुकाबिला कर सकती है जब दाम बहुत तेज हों। इसके अतिरिक्त वहांका जूट बंगालके सदृश बढ़िया भी नहीं होता।

इसके पौधेको चिकनी जमीन बालू मिली हुई चिकनी मट्टी जिसमें जड़ आसानीसे पैठजाय बड़ी उपयोगी रहती है। बंगाल और आसामकी भूमि इसकी खेतीके लिए बड़े मजेकी है क्योंकि नदियोंकी बही हुई रेतकी भूमिके कारण कृषकको बिना अधिक खादके खेती करनेकी सुविधा रहती है। यह ऊँची और सूखी जमीनमें एवं तर और नीची जमीनमें अच्छा बढ़ता है। लेकिन पिछली दशामें जूट अच्छा नहीं होता क्योंकि पौधेका नीचेका हिस्सा बहुत डूब जाता है। इसकी फसलको बढ़नेमें गर्मी बहुत सहायता पहुंचाती है। इसको थोड़े समय पहले और फिर इसके बादमें गहरी वर्षाकी भी आवश्यकता होती है। पौधा एकबार लग जानेपर विशेष लक्ष्य रखनेकी आवश्यकता नहीं रहती और वह १० १२ फुटतक लंबा बढ़ता है। यह मार्चसे लेकर मई महीनेतक बोया जाता है और फसल जुलाईसे अक्टूबरतक उतरती है। सितंबरसे दिसंबरतक इसका बाजार रहता है। कितनी भूमिमें इसकी बोअनी हुई इस बातका सरकारी एस्टीमेट प्रतिवर्ष जुलाई महीनेमें प्रगट हो जाता है और भूमिकी गणना एवं फसलके अनुमानका अंतिम लेखा सितंबर महिनेमें निकल जाता है। इसकी खेती २५३० लाख एकड़ भूमिमें होती है जिसपर २०-३० लाख किसान अपनी जीविकाके लिए निर्भर रहते हैं। वार्षिक पैदावारकी औसत एक एकड़ पीछे अनुमान १५ मन जूट (रेशे) की बैठती है।

इसके लिए बोनेके समय—अप्रेल मई महीनोंमें—थोड़ी थोड़ी वर्षाका होना बड़ा लाभदायक होता है। वास्तवमें इसकी फसलकी पैदावार उचित जल वायुपर बहुत निर्भर करती है। जब इसका

पौधा १० फुट ऊँचा हो जाता है तब काट लिया जाता है और उसकी गांठे बांध ली जाती हैं। पश्चात ये गांठें पानीमें समूची डुबो दी जाती हैं और उनपर मिट्टीके ढेले रख दिये जाते हैं जिससे गांठें पानीमें समुचित डूबी रहें। इस प्रकार दोसे तीन सप्ताहतक गांठे पानीमें पड़ी रहती हैं। इससे उसका रेशा नर्म पड़ जाता है और सुविधासे अलग कर लिया जाता है। इस प्रणालीके किये जानेमें गांठोंपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि वे आवश्यकतासे अधिक पानीमें न रहें क्योंकि ऐसा होनेसे रेशा कमज़ोर पड़ जाता है। रेशेको अलग करनेकी कई विधियां हैं पर अधिकतर कृषक कमरतक पानीमें खड़ा हो जाता है और हाथमें एक गुच्छा पकड़कर जड़के भागको जोरसे हिलाता है जिससे रेशा ढीला पड़ जाता है। रेशा अलग कर लेनेपर वह धोकर धूपमें सुखाया जाता है। तब यह बाजारमें जाने योग्य हो जाता है।

सन् १८७४ में इसकी खेतीका अनुमान पैदावारके हिसाबसे ८½ लाख एकड़ भूमिका था। वही बढ़ते बढ़ते सन १९१२-१३ का पंचवर्षीय औसत ३१½ लाख एकड़ हो गया। युद्धके पूर्व सन् १९१३-१४ में इसकी खेती ३३,५२,२०० एकड़ भूमिमें हुई। इसके बाद इसकी खेतीमें कमी कर दी गई जिसके कई आर्थिक कारण हैं। महायुद्धके समयमें जूटके बने हुए पदार्थोंके दाम कच्चे मालसे बेहिसाब ऊँचे रहे और उस समय चांवलका भाव बहुत तेज रहा। इसलिए जूट बोये जाने वाली उस भूमिमें—जिसमें चांवल बोया जा सकता था—कृषकोंने जूटको बंदकर चांवलकी खेती करना आरम्भ कर दिया।

पाटके दाम

पाटकी बढ़ती हुई मांगका पता इसके बढ़े हुए भावोंसे चल जाता है। सन १८५१ में ४०० रतलकी एक गांठका दाम १४½ रुपया था वही सन १९०६ में ५७½ रुपया हो गया। सन १९०७ में भाव घटकर ५०½ रुपया हो गया था। सन १९०८ तथा १९०९ में ३९ और ३२½ रु० गांठ ही रह गया था। सन १९१२ में थोकमालका दाम औसत ५४½ के और सन १९१३ में ७१ रु० रहा यहांतक कि सन १९१४ के अप्रेल महीनेमें भाव ८९½ अर्थात सन १८८०-८४ के भावोंसे तिगुना हो गया। युद्धकी घोषणा होनेपर भाव केवल ऊँचे रुक ही नहीं गया प्रत्युत वह नीचे गिर गया। सन् १९१३ के महंगे दामों एवं कृषिकी सुविधाजनक स्थितिके कारण दूसरे साल अर्थात सन् १९१४ में बड़ीभारी फसल हुई। उस वर्ष साधारण वर्षकी खपतकी अपेक्षा २० लाख गांठें अधिक हुईं। ऐसी भारी पैदावारके कारण भाव घटे बिना नहीं रहता और फिर उधर इस मालके प्रधान खरीददार जर्मनी और आस्ट्रेलियाके बाजार ही इसके लिए बंद हो गये। अन्य देशोंको मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको भी इसके निर्यातमें बाधा पहुँची और इन सब कारणोंसे सन् १९१४ के दिसंबरमें भाव ३१ रुपया गांठ ही रह गया। मार्च १९१५ में दाम ४१ रुपया हो गया पर इससे कृषकोंको कुछ सहाय नहीं मिला।

क्योंकि मईमें भाव घट कर फिर ३७ रुपया हो गया। जब अन्तिम रिपोर्टमें यह बात प्रगट हुई कि खेती एक तिहाई कम की गई है तो भाव चढ़ा और सन् १९१६ के मार्चमें ५९ रुपया हो गया। १९१६ से लेकर १९२० तक दामोंमें बहुत घट बढ़ रही। सन् १९१७ के अगस्तमें भाव नीचेसे नीचे ३५ रुपया हो गया था जो सन् १९१९ के अगस्तमें ६५ रुपये तक हो गया।

मालकी बिक्री

कृषकसे लेकर शिपरतक जूटका लेन देन बीचमें बहुतोंके हाथसे निकलता है। जब माल तैयार हो जाता है कृषक उसे एक व्यापारीको बेच देता है। वह व्यापारी अपने आढ़तियाके लिए खरीद करता है—जिससे उसे इस काममें लगानेके लिए रकम मिलती है—और माल खरीदकर कलकत्तेमें अपने आढतिये भेज देता है। आढतिया उस मालको चाहे तो किसी बाहर भेजने वाली फर्म Exporting Firm या किसी मील या किसी बेलर या उनके किसी दलालके हाथ बेच देता है। पाटका प्रधान स्थान नरायन गंज है। माल देहातसे नदी रेल या सड़ककी राहसे चितागोंग या कलकत्ता भेज दिया जाता है। देहातसे यह कच्ची गांठोंमें बंधकर आता है इसके साफ करने या गाठ बांधनेमें रुईकी तरह इसमें माल नहीं छीजता। कलकत्तेके प्रेसोंमें इसकी पक्की गांठें बांधी जाती हैं और तब विदेशोंको चलान दे दिया जाता है। यहां दलालोंकी बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं जिनमें मुख्यतयः अंग्रेज हैं हां, उनके नीचे मातहत दलाल under Broker हिन्दुस्तानी भी है। एक गांठका बंधान मोल या चलानके लिहाजसे ४०० रतलका समझा जाता है यद्यपि विदेशोंको भाव C. I. F.एक टन पर दिया जाता है। मालकी चमक और लम्बाई पर घटिया बढिया पन समझा जाता है। कई मिलें नर्म रेशा पसंद करती हैं और कई कड़ा। यद्यपि इसके कई नाम बोले जाते हैं—यथा उत्तरी, देसवाल, देशीइलेज आदि—पर व्यापारीका मारका मुख्य समझा जाता है और नारायणगंजकी पैदावारका माल नरायण गंजी और सिराजगंज का सिराजगंजी कहलाता है। सबसे घटिया माल टाक्का (Rejection) बोलकर बेचा जाता है और टुकड़े (Cuttings) पौधेके कड़े और लकड़ीदार भागको कहते हैं।

जूट भारतवर्षका एक मुख्य पदार्थ है। कलकत्तासे जितना माल निर्यात होता है उसमें ५० प्रतिशत भाग कच्चे जूट और उसके बने हुए मालका रहता है अर्थात् इसका निर्यात भारतके समूचे निर्यातका एक चतुर्थांश भाग ले लेता है। सन् १९२२-२३ में जूट और उससे बने हुए मालका निर्यात ६२ करोड़ रुपयेका, सन् १९२४-२५ में ८१ करोड़का सन १९२५-२६ में ६७ करोड़का और सन् १९२६-२७ में ८० करोड़ रुपयेका हुआ। इस निर्यातमें ९९॥ सैकड़ा भाग बंगालका रहता है, इस लिहाजसे यदि यह कहा जाय कि जूट और उसके पदार्थोंका निर्यात अकेला बंगाल करता है तो कुछ अनुचित नहीं होगा। इस व्यापारसे

सरकारको जो लाभ होता है उसपर विचार करें तो कहना होगा कि जूट और उसके बने मालकी एक्सपोर्ट ड्यूटीका औसत गत तीन वर्षोंमें ३॥ करोड़ रुपया बैठा। अन्य पदार्थोंकी एक्सपोर्ट ड्यूटी २ करोड़ रुपये बैठी, इस हिसाबसे कहना होगा कि गत तीन वर्षोंमें अकेले जूट व्यवसायने समूची एक्सपोर्ट ड्यूटीका ६५ सैकड़ा भाग सरकारको दिया।

जूट मिलें

बहुत पहलेसे बंगालमें जूट काता और बुना जाता था पर गत शताब्दिके आरम्भ तक इसका व्यवहार देशके भीतर ही परिसीमित था। यहांके बने हुए बोरोंके बहुत सस्ते होनेके कारण बाहरी लोगोंका ध्यान इधर आकर्षित होने लगा। हाथके बने हुए बोरोंका कारबार यहांपर कल कारखाने न खुले तबतक चलता रहा। डंडीमें कलसे काता हुआ सूत सन् १८३५ में बिकने लग गया पर भारतमें इससे २० वर्ष बाद सूत कातनेकी मिल बैठाई गई। सन् १८५३ में जार्ज आकलैंड नामक सीलोनका एक काफीका व्यापारी कलकत्ता आया और सन् १८५४ में वह डंडी गया। वहां उसने जूट व्यवसायको देखा और फिर यहां आकर अपने साथ लाई हुई मशीनरीसे उसने सन् १८५५ में सीरामपुरके पास सबसे पहली एक जूट कातनेकी मिल बैठाई। ८ टन प्रति दिन सूत कातने वाली इस मिलसे कलकत्तामें जूट मिलका श्रीगणेश हुआ। इस सूतसे चट्टी बनानेके लिए जार्ज आकलैण्डने हाथ कर्घे बनाये। यन्त्र द्वारा चलनेवाले कर्घों (Looms)की स्थापनाका श्रेय बोर्नियो कंपनी (Borneo Co.) को है जिसकी एजंट जार्ज हेंडरसन कम्पनी थी। इस बोर्नियो जूट कम्पनी लिमिटेड नामक मिलकी रजिस्ट्री इंग्लेंडमें हुई। १९२ कर्घोंकी इस मिलकी स्थापना सन् १८५९ में हुई। इसमें कातना और बुनना दोनों काम मशीनसे होने लगे। इस मिलको बड़ी सफलता मिली, पांच वर्षमें कारखाना दुगुना हो गया यहांतक कि सन् १८७२ में बुननेके ५१२ सांचे हो गये और तब इसका नाम बारानगर जूट फेक्टरी कम्पनी लिमिटेड रखा गया।

जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना

बोरनियो कम्पनीके बाद सन् १८६२ में गौरीपुर और सिराजगंज मिल्स और सन् १८६६ में इण्डिया मिल्स नामकी मिलें बनीं। सन् १८६९ से १८७३ तक इन मिलोंने अपने कर्घे ९५० से बढ़ाकर १२५० कर लिए। इनकी बढ़तीको देख[illegible]८७२ में पांच और नई कम्पनियोंकी स्थापना हुई जिनमें दो की रजिस्ट्री स्काटलें[illegible] वर्षमें ८ नई मिलें बन गईं। जिनमें ३५०० कर्घे हो गये जो आवश्यक[illegible]ान पड़े। [illegible]ण कमरहट्टी कम्पनीके सिवाय जो सन् १८७७ में बनी [illegible]क और

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ८११० थी जो अगले तीन वर्षोंमें ६००० हो गई। इस समय फिर मालकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक जान पड़ी और इसी समस्याको हल करनेके लिए इण्डियन जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना हुई। पहली साधारण सभा १० नवंबर सन् १८८४ को मि० जे० जे० केपविकके सभापतित्वमें हुई उस समयसे यह एसोसियेशन कलकत्ते व्यापारिक परिस्थितियोंको हल करनेका बड़ा भारी काम करती रही है। सन् १८८९ से लेकर १८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंमें ही कर्घोंकी संख्या ९७०१ तक पहुंच गई जिनमें ३११७ चट्टी कपड़ेके थे और ६५८४ बोरोंके।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८९५ तक ६७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग गई जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने योग्य है क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गईं और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी संख्या १५२१३ पर पहुंच गई। अगले चार वर्षतक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें और बनीं। उनसे कर्घोंकी संख्या ३१७८५ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई मिलें बनीं पर पुरानोंमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सन १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३५४ होगई। युद्धके समय ६ नई मिलें बनी और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गईं। इनमेंसे दो मिलें मारवाड़ी व्यापारियोंने बनाईं यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२५में दो अमेरिकन मिलें खुलीं जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगईं। इसके बाद कोई नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि पहलेही आवश्यकतासे अधिक मिलें मौजूद हैं और उनसे बना हुआ माल दुनियाकी खपतसे अधिक है। ऐसी स्थितिमें मिलोंने कमती समय काम करना तै किया जिससे सन् १९२१ के अप्रैल माससे मिलें कम समय चलने लगीं और वह नियम अभी तक जारी हैं। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हिसाबसे चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ६००० कर्घे बढ़ गये यद्यपि मिलें कम समय चलने लगीं पर कर्घेके बढ़तीके कारण परिस्थिति विशेष नहीं सुधरी इसलिए यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा और कर्घे न बढ़ाये जायं।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि आज देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल ९० मिलें हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी हुई हैं जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४९, ७८०

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ५१५० थी जो अगले तीन वर्षोंमें ६७०० हो गई। इस समय फिर मालकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक जान पड़ी और इसी समस्याको हल करनेके लिए इण्डियन जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना हुई। पहली साधारण सभा १० नवंबर सन् १८८४ को मि० जे० जे० केपविकके सभापतित्वमें हुई उस समयसे यह एसोसियेशन सामयिक व्यापारिक परिस्थितियोंको हल करनेका बड़ा भारी काम करती रही है। सन् १८८५ से लेकर १८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंमें ही कर्घोंकी संख्या ९७०१ तक पहुँच गई जिनमें ३११७ चट्टी कपड़ेके थे और ६५८४ बोरोंके।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८४९ तक ६७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग गई जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने योग्य है क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गईं और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी संख्या १५२१३ पर पहुंच गई। अगले चार वर्षतक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें और बनीं। इनसे कर्घोंकी संख्या ३२७५५ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई मिलें बनी पर पुरानोंमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सन १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३५४ होगई। युद्धके समय ६ नई मिलें बनीं और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गईं। इनमेंसे दो मिलें मारवाड़ी व्यापारियोंने बनाईं यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२५में दो अमेरिकन मिलें खुलीं जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगईं। इसके बाद कोई नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि पहलेही आवश्यकतासे अधिक मिलें मौजूद हैं और इनसे बना हुआ माल दुनियाकी खपतसे अधिक है। ऐसी स्थितिमें मिलोंने कमती समय काम करना ते किया जिससे सन् १९२१ के अप्रेल माससे मिलें कम समय चलने लगीं और वह नियम अभी तक जारी है। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हिसाबसे चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ६००० कर्घे बढ़ गये यद्यपि मिलें कम समय चलने लगीं पर कर्घोंके बढ़तीके कारण परस्थिति विशेष नहीं सुधरी इसलिए यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा और कर्घे न बढ़ाये जायं।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि आज देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल ९० मिलें हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी हुई हैं जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४१, ७८०

है और तकुओंकी १०,१३,८२१। बाकी चार मिलें मद्रासमें हैं जिनमें ५६१ कर्घे हैं और एक मिल संयुक्त प्रान्तमें है। जिस भांति जूटकी पैदावारका ठेका बङ्गालने ले रखा है उसी भांति इसके उद्योगमें भी प्रधान हाथ या कहा जाय कि लगभग समचा हाथ बंगालका है। हुगलीके किनारे दूर तक ये मिलें चली गई हैं। और स्वयं मिलोंकी दशा अच्छी होनेके कारण इनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी भी दशा अच्छी है और उन्हें भारतवर्षकी अन्य किसी भी कामकी मिलोंके मजदूरोंसे मजूरी अधिक ही मिलती है। मिलोंका पूर्व इतिहास सन्तोषप्रद ही नहीं पर बहुत समृद्धि पूर्ण रहा है। सन् १९१४ में कच्चे पाटके दाम बहुत चढ़ गये। कलकत्तामें भाव ८२ रुपये गांठ और लंदनमें ३६ पौंड प्रति टनका दाम होगया। जब युद्ध आरम्भ हुआ कलकत्तामें भाव ५०-५५ रुपया और लन्दनमें २७½ पौंड ही रह गया। इसपर भी जब फसलकी आनुमानिक रिपोर्ट निकली और उसमें बड़ी भारी फसलकी बड़ी बात प्रगट हुई तो दाम बुरी तरह घट गये और उस समय मिलोंने यह समझकर कि युद्धमें उनके बनाये हुए मालकी बड़ी मांग रहेगी कच्चा माल खूब मन्दे दामोंमें भर पेट खरीद किया। इधर कच्चा माल सस्ते दामोंमें मिलना और बनाया हुआ माल हाथों हाथ ऊंचे दामोंमें बिक जाना इससे और अधिक क्या बात हो सकती थी। जूटके बने पदार्थोंका निर्यात सन् १९१४-१५ में १७३ लाख पौंडका हुआ वही सन् १९१६-१७ में २८० लाख पौंड, सन् १७-१८ में २९० लाख पौंड और सन् १८१८-१९ में ३५० लाख पौंडका हुआ। युद्ध काल जूट उद्योगके लिए स्वर्ण युग होगया जिसमें मिलोंने आश्चर्यजनक उन्नति की एवं अपार वैभव और समृद्धि पैदा की।

एक्सपोर्ट ड्यूटी

सरकारको जूट और उसके पदार्थोंके निर्यातसे एक्सपोर्ट ड्यूटी अर्थात प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयासे अधिक ही बैठती है यह पहले लिखा जा चुका है। सन १९१६ की पहली मार्चसे भारत सरकारने कच्चे पाटपर (टुकड़ोंको छोड़कर) ४०० रतलकी प्रति गांठ पर २¼ रु० अर्थात मूल्यके लिहाजसे अनुमान ५ रु० सैकड़ा एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाया। टुकड़ोंपर ड्यूटी दस आना प्रति गांठ नियत की गई इसी भांति हेसियनपर १६ रुपया प्रति टन और बोरोंपर १० प्रति टनकी ड्यूटी लगाई गई। सन् १९१७ की पहली मार्चसे यही ड्यूटी डबल कर दीगई और कच्चे पाटकी ४½ रुपया टुकड़ोंकी १¼ रुपया प्रतिगांठ, हेसियनपर ३२ रु० और बोरोंपर २० रुपया प्रति टन हो गया। यह ड्यूटी बिमलीपटम जूटपर लागू नहीं पड़ती।

रुई

भारतके निर्यातमें रुईका निर्यात प्रधान स्थान धारण करता है। यद्यपि सन् १९२५-२६ में

६४६६ लाख रुपयेकी ४१,७३,००० गांठोंका निर्यात हुआ था। सन् १९२६-२७ में यहां फसलकी खराबी और अमेरिकामें भारी पैदावार एवं अमेरिकन रुईके सस्ती होनेके कारण यहांसे केवल ५८६० लाख रुपयेकी ३१८८००० गांठें बाहर भेजी गईं। सन् १९२६-२७ में रुईके निर्यातमें भारतके समूचे निर्यातका १९ सैकड़ा भाग रहा जो १९२५-२६ में २५ सैकड़ा और १९२४-२५ में २४ सैकड़ा रहता था। भारतीय रुईका सबसे बड़ा खरीददार जापान है। उसने सन् १९२५-२६ में ४७½ करोड़ रुपयेकी २०,८४,००० गांठे ली थी वहीं सन् १९२६-२७ में ३४½ करोड़की १८,४२,००० गांठें लीं। चीनको ३,६१,००० गांठें गईं। इटलीने ३,०६,०००, जर्मनीने १,४५,००० बेलजियमने १,५६,००० फ्रांसने १,२३,००० और स्पेनने ५४,००० गांठें लीं। ग्रेटब्रिटेनको निर्यातमें बहुत घटी हुई। सन् १९२५-२६ में उसने २,२५००० गांठें ली थी पर सन् १९२६-२७ में केवल ८७,००० गांठें लीं।

जिस भांति पाटके निर्यातमें बंगाल प्रधान है उसी भांति रुईके निर्यातमें बम्बई प्रधान है। रुईके समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा भाग बम्बईसे, २६ सैकड़ा करांचीसे और ५ सैकड़ा मद्राससे माल बाहर भेजा गया। सन्१९२६-२७ में रुईकी पैदावारका अनुमान ५० लाख गांठका था और अमेरिकाकी फसल सन् १९२६में १,८६,१८००० अथवा ४०० रतलकी २३२७२००० गांठोंका अन्दाजा किया गया था। इस भांति अमेरिकामें भारतसे अनुमानतः चौगुनी रुई पैदा होती है। सबसे बढ़िया रुई मिश्रकी होती है जहांकी फसल सन् १९२६ में १६½ लाख गांठोंकी कूती गई थी। मिश्रकी रुईसे दूसरे नम्बरमें अमेरिकाकी रुई होती हैं और तीसरे नंबरमें भारतकी। भारतीय रुईकी अनुमान २० लाख गांठे यहां भारतकी मिलोंमें खपजाती हैं। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि भारतमें रुई यहां की आवश्यकतासे अधिक होती है, क्योंकि भारतमें विदेशी कपड़ा ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है। जबतक इसतरह विदेशी कपड़ा आता रहेगा तबतक यहांकी रुईका बाहर जाना रुईकी अधिकता कैसे कही जासकती है। एक बात अवश्य है कि ५०-६० करोड़की जो रुई बाहर जाती है उसे यदि भारतहीमें रखकर कपड़ा बनाया जाय तो वह बहुत अधिक मूल्यका – कमसे कम १ अरब रुपये का—हो जायगा और यहांकी कपड़ेकी आवश्यकता जो कपड़ेके आयातसे प्रगट होती है अनुमान ५०-६० करोड़ रुपयेकी है इस हिसाबसे ५०-६० करोड़ रुपयेका कपड़ा अधिक बन जायगा। इसमें क्या हर्ज है, यहांकी आवश्यकतासे अधिक जो कपड़ा बचे वह फिर बाहर भेज दिया जाय। देशके लिए यह निश्चय ही लाभप्रद होगा कि कच्चे माल के स्थानमें तैयारी भेजा जाय। जब रुई जिससे कपड़ा बनता है यहां मौजूद है तब फिर क्यों तो वह बाहर भेजी जाय और क्यों बाहरसे कपड़ा मंगाया जाय। क्यों न यहांकी रुई यहीं रहे और उससे कपड़ा बना लिया जाय जिससे बाहरसे न मंगाना

पड़े। यदि यहांकी आवश्यकताकी पूर्तिके बाद कपड़ा बच जाय तो कपड़ा ही बाहर भेज दिया जाय। यह बात देशके लिए अधिक हितकारक होगी न कि यह कि कच्चा माल बाहर भेजकर विदेशी बने हुए पदार्थ लिये जायं।

भारतमें रुई करीब करीब सब जगह होती है और प्रान्तके लिहाजसे उसकी कई जातियां बोली जाती हैं। बंबई नगर रूईका प्रधान बाजार है और देशकी रुईकी पैदावारका अधिक भाग यहीं आता है। यहांसे फिर चाहे उसका निर्यात हो जाता है या वह यहींकी मिलोंमें लग जाती है। कहना नहीं होगा कि भारतीय रुईकी मिलोंका अधिक भाग भी यहीं बंबई और बंबई प्रांतमें विद्यमान है। इसलिए बंबई रुईके व्यापारका केन्द्र है। बंबई प्रान्तमें भिन्न २ स्थानोंकी ऊपजके भिन्न २ नाम हैं यथा (१) उत्तर गुजरात, और उससे जुड़े हुए बड़ोदाराज्यके स्थान और काठियावाड़के अधिक भागमें जो रुई होती है उसे 'धोलेरा' कहते हैं। (२) दक्षिण गुजरात जिसमें भड़ूंच और सुरतके जिले और बड़ोदाका नवसारी जिला आ जाता है यहां भारतकी सबसे बढ़िया कहलाने वाली 'भड़ूंच' रुई होती है। (३) इसी तरह खानदेश, नासिक, अहमदनगर शोलापुर और हैदराबादके बीजापुर जिलेकी रुई "खानदेश' रुई कहलाती है। (४) धारवाड़ बेलगांव कोल्हापुर और सांगली रियासतोंमें होनेवाली रुईको "कुम्पटा धारवाड़" कहते हैं और इसी भांति (५) सिंध, नवाबशाह, थार पारकर और हैदराबाद जिलेकी रुई "सिंध" रूई कहलाती है।

मध्य भारत और मालवाकी रुई उमरा कहलाती है और इस तरह बंबईके बाजारमें सब तरहकी रुईके अलग अलग भाव होते हैं और इसका बड़ा भारी व्यापार चलता है। सबसे बढ़िया भड़ूंच कहलानेवाली रुई होती है जिसका रेशा अन्य सब रुईसे लम्बा होता है और इसी लिए इसका दाम भी सबसे तेज रहता है। भारतमें रुईकी यद्यपि खासा पैदावार होती है लेकिन यहांकी रुई उतनी बढ़िया नहीं होती। इसी लिए यहांके कृषकोंका कहिए या यहांकी मिलोंका हित इसीमें है कि यहांपर ऐसी रुई पैदा हो जिसे संसारका कोई भी सूत कातनेवाला पसन्द कर ले। इसी लिए यहांका कृषि विभाग इस बातकी पूर्ण चेष्टामें है और इस ओर बहुत कुछ उद्यम भी किया गया है कि किस तरह ऊपज बढ़े एवं पैदावार बढ़िया जाति की हो इसके लिए चेष्टा हुई है और हो रही है और इस काममें सफलता भी मिली है। सन् १९२५-२६ में ३० लाख एकड़से अधिक भूमिमें बढ़िया रुई बोई गई जो रुई बोई जानेवाली समूची भूमिका १२ सैकड़ा भाग है। इसमेंसे तीन चतुर्थांश भाग पंजाब बंबई और मद्रासका रहा, जहां भारतकी लम्बे रेशे वाली रुई मुख्यतया होती है।

भिन्न भिन्न बंदरोंमें रुईके भाव और तोलकी भिन्न [illegible]लियां हैं। बंबईमें ७८४ रतलकी एक खंडी पर भाव होता है करांचीमें ८४ रतलके [illegible]कत्तामें ४० सेरके मन पर भाव

होता है। निर्यातके लिए ग्रेट ब्रिटेनको मात्र C. I. F. प्रति रतल बोला जाता है। बंबईसे निर्यात ३६२ से ५०० रतल तककी गांठोंका होता है करांचीसे ४०० रतल की गांठ, कलकत्तासे ३१२ रतल की गांठ और मद्राससे ४०० से ५०० रतल तक की गांठ होती है।

सन १९२३ के कानून (Indian Cotton cess act XIV of 1923) के अनुसार भारतमें उत्पन्न होने वाली रुई पर दो आना प्रति गांठ (४०० रतल) पर या खुली रुई पर दो पैसा प्रति एक सौ रतल पर चुंगी लगाई गई है। इस चुंगीसे जो आय होती है वह इंडियन सेंट्रल कॉटन कमिटीके हाथमें सौंप दी जाती है और उससे इंडियन काटन कमिटीकी बताई हुई बातोंके अनुसार कार्य किया जाता है। इससे रुईकी कृषिमें सुधार और अनुसन्धानादिक कार्य किये जाते हैं। इस विषयमें इन्दौरकी संस्था भी अच्छा काम कर रही है। कमेटी अन्य प्रान्तोंको भी इस कार्यमें आर्थिक सहायता देती है। यदि वे इस विषयकी विशेष खोज और कीड़ोंके बचाव या रुईके दाग आदिकी खोजमें हाथ डालें। मद्रास, सिंध और खानदेशमें भी यह काम आरंभ करनेका निश्चय किया गया है। इंडियन सेंट्रल कमिटीने बाहरसे आई हुई सब अमेरिकन रुईको हाइड्रोसियानिक एसिडगेससे धूँनी देनेकी प्रणाली स्थिर करनेमें सफलता पाई है जिससे अमेरिका के बोलवीविल (Boll weevil) नामक कीड़ेके यहां भारतमें प्रवेश करनेका भय न रहे।

रुईका बना माल

यद्यपि भारतमें विदेशी कपड़ा प्रति वर्ष ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है तथापि यहांसे सूत और कपड़ेका थोड़ासा निर्यात भी होता है। यहांकी मिलोंकी दशा सन्तोषजनक नहीं है। कपड़ेकी काफी खपत होने पर भी यहांके सूत और कपड़ेके उद्योगकी दशा अच्छी न होनेके कारण इसकी जांचके लिए सरकारने टेरिफ बोर्ड नियत किया। बोर्डने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी और सरकारने भी आँसू पोंछनेकी चेष्टा की। कई तरहकी मिल स्टोर सामग्री और मशीनरी पर सरकारने आयात कर हटा दिया और बाहरसे आनेवाली सूते पर आयात कर लगा दिया। इस प्रकार दो एक बातें की गई हैं पर इनसे भारतके इस उद्योगमें कितनी सहायता पहुंचती है यह सन्दिग्ध है। इसके उद्योगियोंकी शिकायतें अभी मिटी नहीं हैं और न जाने देशके इस बड़े भारी उद्योगकी दशा कब सन्तोषजनक होगी।

सूतका निर्यात सन् १९२५-२७ में ३,०६ लाख रुपयेका हुआ। इस रकमका ४१५ लाख रतल सूत बाहर भेजा गया, जिसमेंसे चीनने १०३½ लाख रुपयेका १,६० लाख रतल माल लिया। सीरिया, फारस और एडनने क्रमशः ३६ लाख ४४ लाख और ३८ लाख रतल सूत लिया। मिश्रने ५० लाख और स्यामने १६ लाख रतल माल लिया।

कपड़ा—इसका निर्यात सन् १९२६-२७ में ३३ लाख रुपयेका हुआ। सन् १९२६-२७ में भारतकी मिलोंने गत वर्षसे १६ सैकड़ा कपड़ा अधिक बनाया और बनाये हुए कुल मालका ८ सैकड़ा भाग निर्यात हुआ। इसमेंसे मेसोपोटामियाने ३,८३ लाख गज, फारसने ३७८ लाख गज, सीलोनने २,१७ लाख गज, और स्टेटसेटलमेंटने २'१४ लाख गज कपड़ा लिया। एडनको ३९ लाख, अरबको ७१ लाख, पूर्वी अफ्रिकाको ३६० लाख, मारीशसको २३ लाख और मिस्रको ३४ लाख गज कपड़ेका निर्यात हुआ।

भारतमें अनुमान ३०० मिलें चलती हैं जिनमें ११ लाख कर्घे और ८०-९० लाख तकुये होंगे इनमें अनुमान ४ लाख मजूर काम करते हैं। नीचे यहांकी मिलोंकी पैदावार और बाहरसे आये हुए कपड़ेका लेखा दिया जाता है।

	सन् १९१३-१४	सन् १९२४-२५	सन् १९२५-२६	सन् १९२६-२७
		लाख गज		
भारतकी मिलोंने बनाया	१,१६,४०	१,९७,००	१,९५,४०	[illegible]
विदेशोंसे आया	३,१९,५०	१,८२,३०	१,५६३०	[illegible]
कुल जोड़	४,३६,१०	३,७९,३०	३,५१,५०	[illegible]
अब इसमेंसे जो कपड़ा निर्यात हुआ वह बाद देदिया जाय:—				
निर्यात भारतीय	८,९२	१८,१५	१६,४८	[illegible]
,, विदेशी	६,२१	५,४३	३,५४	[illegible]
कुल जोड़	१५,१३	२३,५८	२०,०२	[illegible]
बाकी कपड़ा जो यहां लगा	४२०,९७	३,५५,७२	३,३१,४८	[illegible]

इस भांति जबतक यहांकी खपतका आधेसे कुछ ही कम कपड़ा … देशमें कपड़ेका उद्योग समुचित और सम्पन्नावस्थामें है यह कैसे कहा जा … भारत यों करोड़ों रुपयोंका अरबों गज कपड़ा विदेशोंसे मंगाता रहेगा … जब यहांकी आवश्यकताके अनुसार यहां बना लिया जायगा। … कपड़ेसे होगी उस दिन भारतसे होनेवाला वास्तविक निर्यात … व्यापारमें कपड़ेके आयातकी प्रबलता जारी ही है।

धान और आटा—पहले लिखा जाचुका है कि भारत … और खाद्य द्रव्योंका रहता है। सन् १९२६-२७ में इन … १४,२६,००० टनका हुआ। युद्धके पहलेके औसतसे … सैकड़ा घटी हुई और सन् १९२५-२६ से परिमाणमें … सन् १९२५-२६ में ४८ करोड़ रुपये मूल्यके ३० लाख …

हुई। चांवल इस वर्ष ५,१५,००० टन अर्थात् २० सैकड़ा कम भेजा गया इसी भांति गेहूं ३६००० टन अर्थात् १७ सैकड़ा कम भेजा गया। जो सन् १९२५-२६ में जहां ४२००० टन भेजा गया था वहां इस वर्ष केवल १६०० टन बाहर गया। दाल दलियेकी चीजें चना मटर आदिका निर्यात १,१८,००० टन हुआ अर्थात् इसमें भी २१,००० टनकी घटी हुई। नीचे गत तीन वर्षोंके एवं युद्धके पहलेके पंच वर्षीय औसतका ब्यौरा दिया जाता है:—

	युद्धके पूर्व औसत	सन् १९२४ २५	१९२५ २६	१९२६ २७
	हजार टन—			
चांवल	२,४४०	२,३०१	२,५८५	२,०५८
गेहूं	१,३०८	१,११२	२१२	१७६
गेहूंका आटा	५१	७८	६७	५९
दाल दलियेकी चीजें	२६१	२८६	१३६	११८
जौ	२२७	४४६	४२	२
ज्वार और बाजरा	४१	५	१४	१५
मकई और अन्य धान्य	४६	२६	४	१
कुल मन हजार टन	४१०१	४२६०	३०६३	२४२६
कुल मूल्य लाख रुपया	२५,८२१	६५०६	४८,०३१	३६२५

इन पदार्थोंमें मुख्य निर्यात चांवलका है जिसका सन् १९२६-२७ में ८५ सैकड़ा, गेहूंका १० सैकड़ा और दाल दलियाका ५ सैकड़ा भाग रहा।

चावल—इसका ३३,२० लाख रुपयेका निर्यात हुआ। चांवलके निर्यातमें बरमा मुख्य है जहांसे ८३ सैकड़ा और बंगाल तथा मद्रासके ५-५ सैकड़ा मालका निर्यात हुआ। सबसे अधिक माल सीलोनको गया जिसने ३,६६०००, टन लिया। स्ट्रेटसेटलमेंटको २,०४००० जर्मनीको १,१४,००० चीन और हांगकांगको १८८००० मिश्रको १८२,००० ग्रेटब्रिटेनको ७७,०८० और नेदरलैंडको ४४,००० टन चावल भेजा गया।

पहले चावल छिलका सहित रहता है जिसे धान कहते हैं। कृषक इस छिलके सहित चांवल या धानको किसी स्थानीय व्यापारी या मिलके आदमीके हाथ बेच देता है। चावलकी फसल नवम्बरके अन्तमें पकती है और माल जनवरी महीनेमें बाजारमें आता है। मिलें अपनी जगहें रखती हैं और मालके खरीददारोंको रुपया अगाऊ देकर उनके द्वारा माल खरीद करती हैं। व्यापारी धान खरीदकर मिलोंमें ले जाते हैं और वहां उसका नाप होता है। धान इतने जल्दी नाप किया जाता है कि ज्यों माल एक ही दिनमें तैयार वापिस चली जा सकते हैं। मिलोंमें उस माल साफ किया जाता है जो उसकी भूसी छालदिया

भरकर तोल ली जाती है और उनका जितना वज़न उतरता है वही प्रति छाबड़ीका वज़न माना जाकर सब मालकी छाबड़ियां भरकर गिनती करके समूचे मालका वज़न निकाल लिया जाता है। तब फिर चांवल को मिलोंमें यन्त्र द्वारा धानसे छिलका अलगकर चांवल निकाल लिया जाता है। इसके बाद चांवल और छिलका अलग कर लिया जाता है। चांवलकी कनी होजाती है वह भी अलग कर ली जाती है और फिर चांवल अलग बोरोंमें भर लिए जाते हैं और कनी अलग भर दी जाती है। बढ़िया चांवलपर जिसका अधिकतर यूरोपको चलान किया जाता है बेलनों द्वारा पालिश भी दी जाती है ये बेलन लकड़ीके होते हैं और उनपर भेड़का चमड़ा मढ़ा रहता है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि बाहर जो निर्यात होता है वह सबसे अच्छे मालका ही होता है। उदाहरणार्थ यहां गरम पानीमें उबालकर जो चांवल निकाला जाता है जिसे उबला चांवल कहते हैं और जो सबसे घटिया होता है उसका निर्यात नहीं होता है पर वह देशवासियोंके ही काम आता है। अथवा भारतीय मजदूरोंके लिए सीलोन और मलाया स्टेट्सको भेजा जाता है। इस उबला चांवलकी विधि इस प्रकार है। पहले धान पानीमें भिगो दिया जाता है और [illegible] से लेकर ८० घन्टे तक पानीमें रखा जाता है फिर गरम पानीमें २० से ४० मिनिट तक उबाला जाता है। उबालनेके बाद फिर वह फैलाया जाकर धूपमें सुखाया जाता है और फिर छिलके अलग किये जाते हैं। यह काम छोटी छोटी मिलोंवाले करते हैं और चांवलको इस भांति सुखानेके लिए बहुत जगहकी जरूरत रहती है यद्यपि मशीन द्वारा भी अब सुखाया जाने लगा है। इस [illegible] चांवलसे गरीब जनता अपना पेट पालती है। बरमामें चांवलकी मिलें अनुमान ५०० [illegible] सोसे अधिक और बंगालमें सो सवासो होंगी। रंगूनकी एक अच्छी मिल दिनभरमें [illegible] २०००० टोकरियां तक निकाल सकती हैं। पाजूनडंगकी सबसे बड़ी मिल दिनभरमें [illegible] निकाल सकती हैं। मोसमके ३ महिनोंमें मिलें दिनरात चलती हैं और इनमें [illegible] जलाया जाता है जिससे मिल चलानेके लिए किसी अन्य पदार्थकी आवश्यकता [illegible] ३०० से अधिक मिलें ऐसी हैं जिनमें २० या अधिक मजदूर काम करते हैं, [illegible] वर्ष ६० लाख टन चांवल तैयार करती हैं और जितना चांवल [illegible] है उससे अधिक तैयार करनेकी ये शक्ति रखती हैं।

सरकारने चांवलके निर्यातपर ३ आना प्रति मन एक्सपोर्ट ड्यूटी [illegible] वर्ष १ करोड़ रुपयासे अधिक ही मिल जाता है। सन् १९२२-२३में [illegible] १,१८ लाख और सन् १९२४-२५में १,२३ लाख रुपया सरकार [illegible] भारत सरकारने यह नियम बनाया कि बरमासे यूरपके [illegible] सिवा अन्य किसीको नहीं करने दिया जाय और इसीके [illegible] किया गया। इसी वर्ष वर्षाकी कमी रह जानेसे [illegible]

नीमच

नीमच—चारों ओर होल्कर, सिंधिया, उदयपुर ग्वालियर आदि स्टेटोंसे घिरी हुई है। इसमें भी छावनी बार० एम० आर० के नीमच स्टेशनपर बसी हुई है। यहांकी बस्ती साफ एवं सुघरी है। इसके आस पास अजवाइन बहुत पैदा होता है तथा अच्छी तादादमें बाहर भेजा जाता है। यहां पासहीमें ग्वार और खोरी नामक स्थानोंपर पत्थरकी खदान है। इन स्थानोंपर ग्वालियर स्टेटकी दूकान है। जिसके द्वारा महसूल लेकर और कीमतन पत्थरकी बड़ी बड़ी पट्टियां और टुकड़े बेचे जाते हैं। व्यापारियोंकी सुविधाके लिये आस पासकी स्टेशन जैसे नीमच, जावरा, निम्बाहेड़ा आदि पर ठीक रेलकी पटरीसे लगी हुई दुकाने हैं। यह स्थान पत्थरकी बड़ी भारी मंडी है। इस छावनीके पास ही नीमच गांव है वहांपर आनेवाली तथा जानेवाली वस्तुओंका सन् १९२५ का परिचय इस प्रकार है।

आनेवाली वस्तुएं		जानेवाला माल	
चावल	१५५२ मन	पत्थर	२२४०२) रु०
गुड़	३०५८ मन	रुईकी कच्चीगाठें	१५८३१ मन
शक्कर	१५१० मन	पक्कीगाठें	५१२९५ मन
टेल	१२३३६ पीपे	चना	४२५ मन
नारियल	९१० मन	चद्दर	११८२ मन
लोहा	७२०४) रु०	जौ	१८५६ मन
कपड़ा	२०५११) रु०	शक्कर	२१३ मन
धनौषधि या लकड़ी	६५१८०) रु०	मेथी	३१०३ मन

यह छावनी अजमेरसे १५० मील इन्दौरसे १५० मील और बम्बईसे ४२१ मील है।

मेसर्स दौलतराम गुलजारीलाल

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौरमें पृष्ठ ३० में दिया है। नीमच [illegible] [illegible] इसका [illegible] कपड़ा तथा अफीमका काम होता है। इस फर्मकी [illegible] [illegible] दुकान है। नीमच [illegible] इस स्थानपर लिखे हैं।

मेसर्स लक्ष्मीचंद शंकरलाल

इस फर्मको सेठ भगवानदासजीने संवत् १९३८ में स्थापित किया। यह दुकान प्रतापगढ़की मेसर्स कुंदनजी कपूरचंद नामक फर्मकी शाखा है। आरम्भमें इस दुकानपर अफीम तथा कपड़ेका व्यापार होता था। इस समय इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीचंदजी, श्री शंकरलालजी, और श्री चन्दनलालजी हैं। वर्तमानमें इस दुकानपर जावदमें तयार होनेवाले साड़ी, नानगा, अंगोछा, पोतिया आदिका अच्छा व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा जावदकी देशी कपड़ेकी छपाई और रंगाईका माल गुजरात, बागड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, मेवाड़ आदि प्रांतोंमें अच्छी मात्रामें जाता है।

—०—

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेंट

मेसर्स जड़ावचंद प्यारेचंद
- ,, टोडूजी रिखबदास
- ,, पृथ्वीराज गंगाविशन
- ,, फूलचंद गौरेलाल
- ,, रामलाल गुलाबचन्द
- ,, श्रीराम बलदेव
- ,, लक्ष्मीचन्द शंकरलाल
- ,, सुखलाल मेघराज
- ,, शिवलाल रामलाल
- ,, हरकिशन किशनलाल

कपड़के व्यापारी

मेसर्स जड़ावचन्द प्यारचन्द
- ,, टोडूजी रिखबदास
- ,, धोंकलजी पन्नालाल
- ,, पीरचन्द नथमल
- ,, लक्ष्मीचन्द शङ्करलाल

किरानेके व्यापारी

मेसर्स अब्दुल आदम
- ,, कालूजी रामसुख
- ,, चौथमल नथमल
- ,, डामरसी रूपचन्द

रंगीन कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स फाजिलजी इब्राहीम
- ,, लक्ष्मीचन्द शङ्करलाल
- ,, हकीमजी महमूद

जीनिंग फेक्टरीज़

- ,, कृष्ण काटन जीन फेक्टरी
- ,, काटन जीन कम्पनी
- ,, लक्ष्मीआइल एण्ड जीनिंग फेक्टरी

रजी बांसल
ाम) नीमच

श्री० नाथूरामजी बासल (नेतराम शंकरदास) नीमच

स्व० सेठ
(नेतराम

मोरेना

मोरेना ग्वालियर स्टेटकी एक बहुत अच्छी मंडी है। या यों कहना चाहिये कि गल्लेकी सबसे बड़ी मंडी है। यह जी० आय० पी० रेलवेकी बम्बई देहलीवाली मेन लाईनपर बसी हुई है। इसके लिये मोरेना नामक स्टेशन लगता है। इस मंडीकी बसावट साधारण है। यह आगरेसे ५० मील एवम् ग्वालियरसे २३ मीलकी दूरीके फासलेपर है।

यहांसे लाखों मन गल्ला दिसावरोंमें जाता है। यहांकी खास पैदावार मूंग, चना, मटर, अरहर, उर्द आदि हैं।

यहांसे १५ मीलकी दूरीपर जोरा नामक एक स्थान है। यहां शकरकन्द, गन्ना आदि बहुत पैदा होता है। जो गुड़ और शक्करके लिये बहुत मशहूर है। यदि कोई शकर फेक्टरी खोलना चाहे तो उसके लिये यह स्थान बहुत उपयोगी है।

यहां एक मंडी कमेटी नामक संस्था खुली हुई है। इसका उद्देश व्यापारकी तरक्की करना है यहां कार्तिक मासमें हरसाल एक मेला लगता है। इसमें हजारों पशु विक्रयार्थ आते हैं। इस मंडीमें नीचे लिखे प्रमाणसे सन् १६२७ में माल आया तथा गया। ये नम्बर अन्दाजन लगाये गये हैं। पर बहुत अंशोंमें सत्य हैं।

जानेवाला माल

मूंग	३००००० मन	अरंडी	२०००० मन
चना	३००००० ,,	अलसी	१०००० ,,
अरहर	१७५६४० ,,	तिल्ली	२०००० ,,
सरसों	१२३७८ ,,	दाल चना	३०००० ,,
सोनहा	६८७० ,,	दाल अरहर	२०००० ,,
घी	१३८२५ ,,		

आनेवाला माल

चांवल	२६८६३ मन
गुड़	५०० वेगन
कांकड़ा, बिनोले	२०००० मन
तमाखू	२५०० मन
नमक	१५० वेगन

इस मंडीमें तोल पंगाठी मन से है। यानी ४० सेरका मन, १२ मनकी मानी।

बैंकर्स

मेसर्स नेमीचन्द मूलचन्द

इस फर्मके मालिक अजमेर निवासी हैं। आपका हेड आफिस भी अजमेरही है। अतएव आपका पूरा परिचय अजमेरके पोर्शनमें दिया गया है।

आपका यहां व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मोरेना—राय बहादुर नेमीचन्द मूलचन्द—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, गल्ला, घी आदिका काम होता है। आढ़तका भी काम यहां होता है।

मेसर्स सदासुख नारायणदास

इस फर्मके स्थापक सेठ सदासुखजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके संचालक हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके एक पुत्र तथा २ पौत्र हैं। आप सब लोग फर्मके कार्यका संचालन करते हैं। आपकी फर्मका कई बड़ी २ व्यापारिक कम्पनियोंसे सम्बन्ध है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मोरेना—मेसर्स सदासुख नारायणदास-बैंकिंग हुंडीचिट्ठी गल्ला तथा कमीशन एजंसीका व्यापार होता है। मनीहारीका कार्य भी यह फर्म करती है।

मोरेना—मेसर्स सदासुख नारायणदास-यहां सराफीका काम होता है।

मेसर्स हरनारायण भवानीप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान प्रोप्राइटर सेठ माधोप्रसादजी, सेठ गोविन्दप्रसादजी और सेठ [illegible] हैं। आप लोग अग्रवाल जातिके वैश्य हैं। आपका मूल निवास स्थान जिगनी (मुरेना) का है। [illegible] इसीसे आपकी फर्म यहां स्थापित है। इसे सेठ हरनारायणजीने स्थापित किया था। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। वर्तमान संचालक आपके पौत्र हैं। आपकी [illegible] एक मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया

आप ओसवाल जातिके जैन धनावलम्बी सज्जन हैं। आप उन व्यक्तियोंमेंसे हैं, जिन्होंने अपने व्यापारके कौशल्यसे बहुतसी सम्पत्ति भी उपार्जित की और उसके साथ व्यापारी समाजमें अच्छा नाम भी कमाया। बम्बईमें "मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स" नामक जो मशहूर चेम्बर है, वह एक प्रकारसे आपहीके द्वारा स्थापित की हुई है और भी कई सभा सोसायटियों, और संस्थाओंमें आपका बहुत अधिक हाथ रहा है। कई संस्थाओंसे आपको अच्छे २ मानपत्र भी प्राप्त हुए हैं। मतलब यह कि आप बड़े उत्साही, गम्भीर, और विचारक कार्यकर्ता हैं।

पहले आपने छोटी सादड़ीके मशहूर धनिक सेठजी गिरधरलाल के साझेमें बम्बईके अन्दर "नाथसिंह छगनमल" नामसे फर्म स्थापित की थी। इस समय अब आप अधिकतर सार्वजनिक कार्य्योंमें ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारोंके कार्य्यकर्ता हैं। पर्देके समान गन्दी और वीभत्स प्रथाको उठानेके लिए आप बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं। अपने घरमें आपने कुछ अंशोंमें इस प्रथाको उठा भी दिया है। इसी प्रकार आप अछूतोद्धारके भी बड़े पक्षपाती हैं। नीमचमें आपने चमारोंकी एक सभा खोल रक्खी है। उसके प्रेसिडेण्ट आप ही हैं। इसके अतिरिक्त स्थानकवासी कान्फ्रेन्स, और गांधीजीके खादी प्रचार आन्दोलनमें भी आप बहुत अधिक भाग लेते हैं। इन्दौरके भण्डारी मिलमें आपके करीब दो लाख रुपयेके शेयर हैं।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। (१) नाथोसिंहजी (२) सौभागसिंहजी (३) फतेसिंहजी आप तीनों बड़े बुद्धिमान और कुशल नवयुवक हैं।

मेसर्स नेतराम शंकरदास

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीनाथूलालजी दांतड़ (अग्रवाल) हैं। आपके पूर्वजोंका निवास स्थान जयपुर राज्यके अंतर्गत निवाई नामक गांव है। सौ वर्ष पूर्व यह कुटुम्ब यहां आया था। पहिले सेठ नेतरामजी ने इस दुकानकी स्थापना बहुत छोटे रूपमें की। सेठ नेतरामजीके दो पुत्र थे। श्रीशंकरदासजी और श्रीमुकुंदरामजी। श्रीमुकुंदरामजीने इस दुकानके कार बारको बढ़ाया। इनके चार पुत्र श्रीभगवानदासजी, हीरालालजी, तुलसीरामजी और सुखदेवजी थे। इनमें श्रीतुलसीरामजीने इस दुकानके व्यापारको बहुत तरक्की दी। आपके समयमें इस दुकानपर अफीम, गल्ला और आढ़तका बड़ा व्यवसाय होता था।

इस समय श्री हीरालालजीके पुत्र श्रीनाथूलालजी इस दुकानके कारोबारको सम्हालते हैं। और श्रीभगवानदासजीके पुत्र गोविंदरामजी अपना अलग व्यापार करते हैं। इस दुकानकी ओरसे सेठ

मौरेना—हरनारायण भवानीप्रसाद-यहां किराने तथा गल्लेका व्यापार होता है। आढ़तका कामभी यह फर्म करती है।

मौरेना—हरप्रसाद फतेराम-यहां कपड़ा तथा चांदी सोनेका काम होता है।

लश्कर—हरनारायण हरविलास, इन्द्रगंज—यहां शक्करका काम होता है।

दतिया—हरनारायण भवानीप्रसाद—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद संतोपीलाल
राय बहादुर नेमिचन्द मूलचन्द

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

मेसर्स छितरमल रामदयाल
,, बिहारीलाल जमनादास
,, सदासुख नारायणदास
,, शान्तिलाल सकलचन्द
,, शोभाराम गुलाबचन्द
,, शक्करचन्द भगूभाई
,, शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण
,, हरनारायण भवानी प्रसाद
,, हिम्मतराय घासीराम
,, हरनारायण मूलचन्द

दालके व्यापारी

मेसर्स जुहारमल भवानीराम
,, फूलचन्द रामदयाल
,, दन्सीधर भगवानदास
,, बिहारीलाल श्यामलाल

गुड़-शक्करके व्यापारी

मेसर्स रामसुन्दर बृजलाल (गुड़)
,, छितरमल रामदयाल (शक्कर)
,, चेतराम हरगोविन्द ,,
,, झंडूराम गुलाबचन्द गुड़
,, परमानन्द छेदालाल (शक्कर)
,, मूलचन्द अयोध्याप्रसाद ,,
,, मूलचन्द देवीराम ,,
,, हरनारायण भवानीप्रसाद ,,
,, हरप्रसाद नेतराम ,,
,, अगनाराम भोगीलाल ,,

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गिरवरलाल मक्खनलाल
,, गंगाप्रसाद बिरदीचन्द
,, द्वारका केदार
,, देवीसहाय लल्लामल
,, मूलचन्द शालिग्राम
,, हरप्रसाद फतेराम
,, हरप्रसाद नेतराम

सूतके व्यापारी

मेसर्स छिद्दीलाल रामलाल
,, गंगाराम देवीराम

बम्बई—मेसर्स मेघजी गिरधरलाल—पारसी गली धनजी स्ट्रीट—T. A. Lantarn—इस फर्मपर बैङ्किग काटन, सराफी तथा आढ़तका काम अच्छे स्केलपर व्यापार होता है।

बघाना

यह नीमच केम्पसे लगा हुआ ग्वालियर स्टेटका एक छोटासा कसबा है। बस्तीके मानसे यहां रुईका अच्छा व्यवसाय होता है। यहां १ जीन और १ प्रेस फेक्टरी पहिलेहीसे है। और १ नया प्रेस और तैयार हो रहा है।

काटन जीनप्रेस बघाना

यह कम्पनी उज्जैनके सेठ किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले, और कालिग्राम (फर्रुखाबाद) के मुंशी जीवालालजी इन दोनोंके साझेमें है। यह कम्पनी सन् १८१४ में यहांपर स्थापित हुई। इस फर्मके दोनों पार्टनरोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

—:—

मेसर्स किशनलाल अमृतलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गोकुलदासजी, दाऊलालजी और जमनादासजी हैं। इस दुकानकी स्थापना सेठ नारायणदासजी और रणछोड़दासजीके हाथोंसे हुई और उन्हींके जमानेमें इसकी उन्नति भी हुई। आप नीमा जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत गोकुलदासजी और दाऊलालजी, सेठ नारायणदासजीके तथा जमनादासजी, सेठ रणछोड़दासजीके पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले—यहां हुण्डी, चिट्ठी और मराठी लेन देनका काम होता है।

(२) बघाना—रणछोड़दास जमनादास T. A. Jahajwala—यहां रुई कपास तथा हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका व्यापार होता है।

—:o:—

मुंशी जीवालालजी

आपका मूल निवास [illegible] (फर्रुखाबाद) यू० पी० में है। सन १८[illegible] में आप [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। आपका देहावसान सन १९[illegible] के [illegible] [illegible] हुआ है। आपके ३ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े का नाम मुंशी मुन्नालालजी है। आप [illegible] [illegible] [illegible]

(सेठजी गिरधरलाल) छोटी सादड़ी श्री जमनादासजी नीमा (कॉटन जीन प्रेस) बयाना

...दानजी. ...डूडूनजी, बयाना तुंरी ...जी (कॉटन ... बयाना

जिनिंग फेक्टरियां

(१) जमनादास शिवप्रताप जिनिंग फेक्टरी
(२) नजरअली मूसाभाई " "
(३) प्यारेलाल अयोध्याप्रसाद " "
(४) श्रीराम सीताराम " "

प्रेसिंग फेक्टरियां

(१) नजरअली मूसाभाई काटनप्रेस
(२) श्रीराम सीताराम काटनप्रेस

आइल मिल

जमनादास शिवप्रताप आईल मिल

सन् १९२५ में यहांसे एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट होनेवाले मालकी सूची

आनेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य रुपया
चावल	१७४६३	...
गुड़	२८४४०	...
पीतल	...	१२५२३
कपड़ा	...	२२४१६२
मरचेंडाईस	...	२१५२४

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
मूंग	३७६६०	...
ज्वार	१४५८४०	...
चना	१५३२७	...
बाजरा	६६००	...
सरसों	१३८०९	...
अलसी	१००४२	...
घी	३६८३	...
रुई	८०९१	...

मेसर्स भागीरथ मथुराप्रसाद
" शिवसहाय विश्वम्भरनाथ

मेसर्स बिन्द्रावन शंकरलाल
" हीरालाल मोतीलाल

घीके व्यापारी

मेसर्स छितरमल रामदयाल
" बिरदीचन्द बालमुकुन्द
" मूलचंद नेमीचन्द
" शोभाराम गुलाबचन्द
" सदासुख नारायणदास
शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण

मिट्टीके तेल बेचनेवाले

मेसर्स नाथूराम कुंवरपाल
" फकीरचन्द हरनारायण

लोहेके व्यापारी

मेसर्स जवाहरलाल नाथूराम
" मोतीराम तेजसिंह
" हरप्रसाद लादूराम

जनरल मरचेन्ट्स

मेसर्स केशरीराम मनीराम
" चन्दनलाल रामप्रसाद
" प्यारेलाल रामस्वरूप
" रामचन्द्र हरप्रसाद
" शालिग्राम फतेचन्द
" शालिग्राम दुर्गाप्रसाद

भिण्ड

भिंड ग्वालियर स्टेटका एक जिला है। यह ग्वालियरके उत्तर पूर्वमें स्थित है। ग्वालियर लाइट रेल्वे यहीं तक आती है। यह ग्वालियरसे ५३ मीलकी दूरीपर है। यहांसे इटावा २२ मीलके करीब रह जाता है। इसका इटावेके साथ गहरा व्यापारिक सम्बन्ध है। यहांसे इटावा तक मोटर सर्विस रन करती है। ग्वालियर स्टेटके उत्तरीय हिस्सेकी वस्तुओंका एक्सपोर्ट करनेके लिये एक मात्र यही मंडी है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें कपास बाहर जाता है। बाजरा, चना और राछड़ भी बम्बईकी ओर बहुत एक्सपोर्ट होता है। यहांका घी अपनी अच्छी क्वालिटी होनेकी वजहसे कलकत्तेके मार्केटमें पाया जाता है। अलसी और सरसोंका एक्सपोर्ट भी यहांसे बहुत बड़ी तादादमें होता है।

यहां व्यापारियोंके मुखीने, व्यापारियोंके आपसमें होनेवाले व्यापारिक झगड़ोंको निपटाने और व्यापारिक उन्नतिके लिये एक मंडी कमेटी स्थापित है।

यहांसे पास ही मेहगांव नामक स्थानमें चैत्र मासमें हर साल एक पशुओंका मेला लगता है।

श्रीयुत मुन्शी सुन्दरलालजी और श्री जमनादासजी दोनों ही इस फर्मके प्रधान संचालक हैं। आपके पार्टनर शिपमें नीचे लिखी दुकानें हैं।

बघला—काटन जीनप्रेस कम्पनी—यहां जीन प्रेसके साथमें आइल मिल भी है। तथा काटन बिजिनेस हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। T. A. Joweshwar,

(२) नीमच (ग्वालियर-स्टेट)—काटन जीन कम्पनी—जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई कपासका व्यापार होता है।

(३) जावद (ग्वालियर-स्टेट) काटन जीन कम्पनी—उपरोक्त काम होता है।

मेसर्स नवलराम पोकरराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ फतेलालजी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मोई (जयपुर-राज्य) है। इस दूकानको पहिले सेठ नवलरामजीने स्थापित किया। आपके २ पुत्र थे, पोकररामजी और मोतीरामजी। श्रीमोतीरामजीने बघलामें सेठ उदयराम—धर्मदासकी नींव डाली थी। इनके बाद सेठ पोकरदासजीके पुत्र उदयरामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ उदयरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी इस फर्मके मालिक हैं।

इस समय आपकी दुकानपर हुण्डी चिट्ठी, रुई कपासका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। मन्दसौरकी नारायणदास फतेलाल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी तथा बघलाकी सावदा जीनिंग फेक्टरीमें आपका हिस्सा है

काटन मर्चेंट एण्ड कमीशनएजंट

न्यू काटन जीन प्रेस

नवलराम पोकरराम

रणछोड़दास आत्माराम

हरसुख रामनाथ

जीन प्रेस

काटन जीन प्रेस

न्यू काटन जीन प्रेस

इण्डस्ट्रियल जीन फेक्टरी

जिनिंग फेक्टरियां

(१) जमनादास शिवप्रताप जिनिंग फेक्टरी
(२) नजरअली मूसाभाई " "
(३) प्यारेलाल अयोध्याप्रसाद " "
(४) श्रीराम सीताराम " "

प्रेसिंग फेक्टरियां

(१) नजरअली मूसाभाई काटनप्रेस
(२) श्रीराम सीताराम काटनप्रेस

आइल मिल

जमनादास शिवप्रताप आईल मिल

सन् १९२५ में यहांसे एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट होनेवाले मालकी सूची

आनेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य रुपया
चावल	१७४६३	...
गुड़	२८४४०	...
पीतल	...	१२५२३
कपड़ा	...	२२५१५२
मरचेंडाईस	...	२१५२४

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
मूंग	३७६६०	...
अरहर	१४५८४०	...
चना	१५३२७	...
बाजरा	६६०७	...
सरसों	१३८७५	...
अलसी	१००४२	...
घी	३६८३	...
रुई	८३५१	...

मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास स्थान इटावा यू० पी० है। आप [illegible] जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ गोवर्धनदासजी हैं। आपके पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े पुत्र इटावा रहते हैं। शेष सब यहीं रहते हैं। [illegible] आप सब लोग इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मिंड—मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम T. A. Babu यहां गल्ला, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यहां होता है।

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप धूत

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान कुचामनरोड है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। भारतमें कई स्थानोंपर फर्में हैं। जिनका विशेष विवरण कुचामन रोडके पोर्शनमें दिया गया है। [illegible]

यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मिंड—[illegible] शिवप्रताप—T. A. Dhut—यहां पर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका [illegible] होता है। [illegible] तथा आढ़तका काम भी यह फर्म करती है। यहां इस फर्मकी ओरसे एक जिनिंग फैक्टरी और प्रेस मिल चल रही है। इस प्रेस मिलका [illegible] आदि स्थानोंका कुछ विशेष रेकार्ड [illegible] है।

मेसर्स दादाभाई चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक [illegible] (बड़ौदा) के रहनेवाले हैं। आपकी जाति [illegible] है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब [illegible] वर्ष हुए होंगे। इसका हेड आफिस [illegible] है। इसके स्थापक सेठ [illegible] थे। [illegible] पुत्र हैं। [illegible] चुन्नीलाल भाई। आप दोनों ही इस समय इस फर्मके संचालक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

[illegible]—मेसर्स दादाभाई चुन्नीलाल T. A. Damodardas यहां [illegible] और [illegible] है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

मिंड—मेसर्स दादाभाई चुन्नीलाल—T. A. D[illegible]—यहां [illegible] है।

संवत् १९५२ में सेठ रघुनाथजीका और १९६६ में रामनारायणजीका देहावसान होगया। इनके बाद सेठ रघुनाथजीके पुत्र रामचन्द्रजीने इस दुकानके कारोबारको सम्हाला। आपका भी देहावसान १९८० में होगया है। वर्तमानमें इस दुकानका कारोबार सेठ रामनारायणजीकेपुत्र सेठ कन्हैयालालजी सम्हालते हैं। सेठ रामचन्द्रजीके २ पुत्र सेठ मदनलालजी और बंशीलालजी अभी छोटी वयके हैं।

सेठ कन्हैयालालजी जिलाबोर्ड मंदसोरके मेम्बर हैं। इस दुकानकी ओरसे ढीकेड़में धर्मशाला रंगनाथजीका मंदिर तथा तालाब बना हुआ है।

आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—श्रीराम बलदेव—यहां आसामी लेनदेन, रुई कपासका व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ मंदसोर—श्रीराम बलदेव—यहां भी आसामी लेनदेन, रुई, कपास, गल्लेका व्यापार तथा आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

३ ढीकेड़—किशनराम नगजीराम, यह गांव तथा तीन गांव और स्टेट ग्वालियरने आपको जमींदारी हकसे दिये हैं। यहां आपका खास निवास है।

४ रतनगढ़ (ग्वालियर)—श्रीराम नगजीराम—आसामी लेनदेन,कपास तथा गल्लेका काम होता है।

५ सिंगोली—श्रीराम नगजीराम—ऊपर लिखे अनुसार काम होता है।

मेसर्स हरकिशन किशनलाल जावद

इस दुकानके मालिकोंको डीडवाना (जोधपुर स्टेट) से नीमचमें आये १०० वर्ष हुए। नीमच से आकर ७० वर्ष पहिले सेठ रामलालजीने जावदमें व्यापार शुरू किया। आपके बाद क्रमशः रामचन्द्रजी तथा शुकदेवजीने इस दुकानका काम सम्हाला। आपके समयमें इस दुकानपर अफीम और तिल्हनका काम होता था। सेठ शुकदेवजीने संवत् १९६७ में कृष्ण कॉटन जीनिंग फेक्टरी स्थापित की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ हरकिशनजी इस समय इस दुकानका संचालन कर रहे हैं। आपकी यह दुकान इस नामसे संवत् १९५२ से जावदमें व्यापार कर रही है। सेठ हरकिशनजी माहेश्वरी सज्जन हैं। आप यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस समय आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—हरकिशन किशनलाल—इस दुकानपर रुई, कपास, हुंडी चिट्ठी, गल्ला और आढ़तका काम होता है। यहां आपकी कृष्ण कॉटन जीन फेक्टरी है।

२ न्यू मालवा कॉटन प्रेस बघाना—इस प्रेसमें आपका साझा है।

३ न्यू कॉटन जीन प्रेस मंदसोर—इस जीन प्रेसके आप भागीदार हैं।

पड़नार (बड़ौदा) पटेल पुरुषोत्तमदास ... चन्द—इस स्थानपर गल्ला रुई और ... आढ़तका काम होता है।

मेसर्स लेखराज जमनादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान ग्वालियर है। अतएव आपका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—मेसर्स लेखराज जमनादास—यहां गल्ला, तिल्ली और ... का व्यापार होता है। आढ़तका काम भी बहुत होता है।

मेसर्स हजारीलाल श्रीराम

इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीलालजी हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए २ वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके हैं आपका निवास स्थान ... है। आप प्रायः २ यहीं रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

भिंड—हजारीलाल श्रीराम T. A. Lakshmiraj यहां गल्ला तथा तिल्लीका व्यापार और आढ़तका काम होता है। सरकारी लिक्विडेटरका काम भी यहां होता है। यहां आपकी ... है।

लश्कर—धनराज ताराचन्द बजाज T. A. Ram यहां चांदी सोनेका काम होता है। ... भी ठेकेदार लिखे हैं।

लश्कर—गौरीलाल धनचन्द ...—यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका काम होता है।

लश्कर—तुलसी नारायणदास अग्रवाल यहां गल्लेका व्यापार एवं घी की खरीदीका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन

इस फर्मके दो मालिक हैं। आप ... रहने वाले हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका विशेष परिचय बड़ा ... २ स्थानोंमें दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भिंड—मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है।

लिये एक कमिश्नर (food stuffo commissioner) नियत किया गया और चावलके कमिश्नर-का दर्जा उसके नीचे कर दिया गया। इस प्रतिबंधक प्रणाली (control scheme)का ध्येय यही था कि किस देशको कितना माल भेजा जाय इसका निर्णय सरकारके हाथमें रहे और जो चलान जावे उसके लिए सरकारसे लाइसंस लेना पड़े । ये लाइसंस तभी दिये जाते थे जब यह बात सिद्ध कर दी जाती थी कि बाहर जानेवाले चलानके लिए नियत किये हुए भावसे ऊंचा दाम नहीं दिया गया है। धानकी तेजीके कारण १९१९के मई महीनेमें सरकारको भी भावकी लिमिट बढ़ा देना पड़ी और फिर १९२०के जनवरीमें जब इस कानूनके पर्देमें सुधार हुआ तो दाम और भी बढ़ाने पड़े १९२०के अन्ततक प्रतिबंध चलता रहा पर उस समय चावलके लिए भारतीय मांगके एकदम घट जानेपर इस विषयमें फिरसे विचार करना आवश्यक हुआ। सन् १९२१में चावलके लिए रोकटोक उठा दी गई और निर्यात खुलाकर दिया गया। पर हां इस कामके लिये लाइसंस प्राप्त करना जरूरी रखा गया और यदि भाव अधिक ऊंचा चला जाय तो फिरसे प्रतिबंध कर दिया जायगा यह बात भी खुली रक्खी गई। सन्१९२१के दिसम्बरमें बरमासे चावलके निर्यातपर और सन् १९२२-की १ अप्रैलको भारतसे चावलके निर्यातपर सब तरहकी रोकटोक उठा दी गई। इस कंट्रोलसे ६ करोड़ रुपयेकी बचत रही जो रकम बरमा सरकारको वहांके प्रान्तीय सुधारके लिए सौंप दी गई।

गेहूं

गेहूं दुनियाकी सम्पूर्ण पैदावारका एक दसवां भाग भारतमें पैदा होता है और यद्यपि इसका व्यवहार भारतमें थोड़ा बहुत सब जगह होता है तथापि यह पंजाबका एक मुख्य पदार्थ है। सन्-१९२६-२७में इसका निर्यात २,७१ लाख रुपयेका हुआ। यह निर्यात घटता जा रहा है। इसका एक प्रधान कारण विदेशोंमें गेहूंकी पैदावारका बढ़ जाना है। सन् १९२४-२५में यहांसे ११,१२००० टनका निर्यात हुआ था वही सन् १९२५-२६में २,१२,००० टनका रह गया और उससे फिर घटकर सन् १९२६-२७में १,९६,००० टनका रह गया। सन् १९२६-२७में भारतमें गेहूंकी कुल पैदावार ८९१ लाख टनकी बैठी। सबसे अधिक गेहूं—अर्थात् १,५१००० टन—ग्रेट ब्रिटेनको भेजा गया। फ्रांस को १३,४०० टन बेलजियमको ५४०० टन इटलीको ९५० टन, अरबको १७०० टन और दक्षिण-अफ्रिकाको ३००० टन गेहूं भेजा गया। गेहूंका मुख्य निर्यात करांचीसे होता है जहांसे ९६ सैकड़ा और बम्बईसे ३ सैकड़ा माल गया। ४०,३७६ टन गेहूंका आयात भी हुआ जिसमें मुख्यतया आस्ट्रेलियासे आया। सन् १९२५-२६में ३५,४२० टन गेहूं आया था। भारतमें गेहूंका आयात बढ़ रहा है सन् १९२४-२५में केवल ४१९८ टन गेहूं आया था। गेहूंका आयात गत तीन वर्षोंमें किस प्रकार बढ़ा है यह बात इन अंकोंसे स्पष्ट हो जाती है। न जाने भारतके भाग्यमें क्या बदा है कि जो धन-धान्यका भण्डार था वहीं अन्य पदार्थोंके साथ अब धान्यके भी आयातका मौका आने लगा है।

भारतमें सब जगह गेहूंका भाव सेरपर होता है। करांचीमें इसका व्यापार ६५६ रतलकी खंडी पर किया जाता है और मालका चलान बोरोंमें प्रति बोरा २ हंडरवेटके हिसाबसे भरकर किया जाता है। बम्बईमें खण्डी ७५६ रतलकी होती है। बम्बईसे बोरोंमें चलान दिया जाता है और प्रति बोरेमें १८२ रतलसे लेकर २२४ रतलतक गेहूं भरा जाता है। ग्रेट ब्रिटेनको साधारणतया ४६२ रतलके एक क्वार्टरपर भाव दिया जाता है। एक समय भारतीय गेंहूंकी कुड़ा कचरा मिला हुआ होनेके कारण बड़ी बदनामी थी लेकिन सन् १९०७से इस बातमें बहुत सुधार हो गया है। यहांपर गेहूंको खरीदके लिए लंदन कानंट्रेड एसोसियेशनके कंट्राक्ट किये जाते हैं जिनमें यह शर्त रहती है कि गेहूंमें २ संकड़ा अन्य धान यथा जो मिले हो सकते हैं पर धूल बिलकुल नहीं होगा।

महायुद्धकी घोषणा होते ही संसार भरमें गेहूंका भाव ऊंचा हो गया और इसका असर भारतके गेहूंके बजारपर भी पड़ा। सन् १९१४में भारत सरकारने प्रान्तीय सरकारोंके लिये आज्ञा निकाली कि अपने प्रान्तोंमें जहां २ गेहूंका संचय हो इसकी जांच की जाय और आवश्यकता पड़े तो वह गेहूं ले लिया जाय। इससे भी गेहूंका भाव ऊंचे जानेसे नहीं रुका और तब सरकारने गेहूं और गेहूंके आटेका निर्यात दिसम्बर १९१४से १९१५तक १ लाख टनसे अधिक न हो ऐसी मनाई कर दी। तब भी भाव ऊपर चढ़ा और १९१५के फरवरी महीनेमें अगस्त जुलाईसे भाव ड्योढा हो गया। सन् १९१५के अप्रैल महीनेमें सरकारने भारतसे अन्य किसीके द्वारा गेहुंका निर्यात बंद कर देनेकी ठान ली और यह काम अपने हाथमें लेनेका विचार कर लिया। उस समय गेहूंके लिये एक कमिश्नर(Wheat Commissioner)की नियुक्ति की गई और इस तरहसे सरकारने गेहूंपर अपना अधिकार (कंट्रोल) आरम्भ किया तो जो पहले गेहूंका निर्यात करनेवाले फर्म थे उन्हें कमीशन देकर अपने लिए गेहूं खरीद करनेके लिए एजंट बना लिया। गेहूंका दाम सरकार नियत करती थी और उसका ध्यान भाव घटानेकी ओर ही अधिक रहता था। इस भांति सन् १९१५के अप्रैलसे १९१६के मई तक सरकारके खाते ५½ लाख टनसे भी अधिक गेहूंकी खरीद हुई जिसमेंसे ४,५८,०५७ टन करांची ४७८७० बंबई और २९६०६ टनका कलकत्तासे निर्यात हुआ।

सन् १९१६ के मई महीनेसे सरकारने गेहूं कमिश्नरको आज्ञा लेकर गेहूंका निर्यात प्राइवेट फर्मोंके लिये फिर खोल दिया। लेकिन यह बात अक्टूबर महीनेतक रही और फिर सरकारने गेहूंका कन्ट्रोल अपने हाथमें लिया और रायल कमीशन सन् १९१७ के फरवरी तक स्वयं खरीद करती रही। इसके बाद गेहूं कमिश्नरको गेहूंकी खरीदके लिये फिरसे पूर्ण सत्ता दी गई। सन् १९१७ की फसल और वर्षोंकी अपेक्षा बहुत अच्छी हुई और सन् १९१७-१८ में १४ | लाख —
निर्यात हुआ। इस वर्ष गेहूं कमिश्नरने रायल कमीशनके खाते १४,३८,३४[illegible]

११

बैंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बांकेलाल
" कुंवरपाल गुलजारीलाल
" बिन्द्राबन लछमनदास

——

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड, एजंट

मेसर्स गोर्धनदास श्रीराम
" जमनादास शिवप्रताप
" दादाभाई चुन्नीलाल
" दुर्लभदास आनन्दजी
" मनरखलाल छौंकोलाल
" रामदयाल रघुलाल
" लेखराज जमनादास
" शिवप्रसाद रामजीवन
" हजारीलाल श्रीराम

——

काटन मरचेन्ट्स

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप
" नजर अली मूसाभाई
" श्रीराम धोंडाराम

——

शक्करके व्यापारी

मेसर्स गनपतलाल रामेश्वर
" रामनारायन चम्पालाल
" लेखराज जमनादास
" शिवचन्द रामजीवन

कपड़ेके मरचेंट्स

मेसर्स गुलजारीलाल लक्ष्मीचन्द
" पूरनमल रामचन्द्र
" मनीराम उल्फतराय
" माधोराम रघुनाथप्रसाद
" रामजीवन ज्वालाप्रसाद
" रघुनाथ प्रसाद लक्ष्मीचन्द
" लक्ष्मीचन्द गणेशीलाल
" सुन्दरलाल बद्रीप्रसाद
" हूबलाल बिहारीलाल

——

घासलेट तेलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल
" दुर्गाप्रसाद गिरधरलाल

——

लोहा पीतलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल (लोह)
" गनपतलाल सिद्धगोपाल (पीतल)
" नाथूराम नीनामल (लोह)
" मिट्ठूलाल चन्द्रभान (पीतल)
" रामलाल हीरालाल (पीतल)

——

सूतके व्यापारी

मेसर्स धनपतराय ज्वालाप्रसाद

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स रामलाल हजारीमल डोसा

इस फर्मके मालिक मूलनिवासी, जूनी केकड़ी (जयपुर-स्टेट)के हैं। सेठ रामलालजीने यहां आकर गल्लेका व्यापार शुरू किया। इस दुकानको मुरारमें आए करीब ७२ वर्ष हुए। इसके पूर्व १० वर्ष तक यह दुकान शिवपुरीमें थी। सेठ रामलालजी के बाद सेठ हजारीलालजीने इस दुकानके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया। आपके बाद वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ गुलाबचन्दजी हैं। आपने मुरारसे एक मील दूरी पर एक धर्मशाला बनवाई है, उसमें एक मंदिर भी है। इसके अतिरिक्त जैनियोंके तीर्थ-स्थान सोनागिरीजीमें भी एक धर्मशाला और मन्दिर आपकी ओरसे बनवाया गया है। उसके स्थायी प्रबन्धके लिए आपने तेरह मकान मुरारमें दिये हैं, जिनकी आयसे इसका खर्च चलता है।

सेठ गुलाबचन्दजी स्थानीय मण्डी कमेटीके चौधरी तथा पंचायत बोर्डके मेम्बर हैं। आपके पुत्र [illegible]जी भी व्यापारमें सहयोग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार (ग्वालियर) रामलाल हजारीमल—लेन देन तथा स्थायी मिल्कियतका काम होता है।

(२) मुरार—रामकिशन गुलाबचन्द—इस दुकानपर घी और गल्लेकी आढ़तका तथा [illegible] काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

(३) मुरार—[illegible] गुलाबचन्द—यहां भी गल्ला और घीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त ग्वालियरके [illegible] मिल और [illegible] मिलमें भी आपका साझा है।

कंट्राक्टर्स

मेसर्स प्रेमराज [illegible]चंद

इस फर्मके मालिक संवत् १९६० में [illegible] (जोधपुर) से यहां आये [illegible] [illegible] किया। [illegible] [illegible]। इस फर्मके [illegible]

शिवपुरी

शिवपुरी, गवालियर स्टेट रेलवेके शिवपुरी गवालियर सेक्शनका अन्तिम स्टेशन है। यहांसे शिवपुरी गांव करीब आधा मील है। चारों ओर सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ होनेकी वजहसे यहांकी आबहवा बहुतही स्वास्थ्यप्रद और लाभकारी है। यही कारण है कि स्वर्गीय महाराजा माधवराव का यह स्थान बड़ा प्रियपात्र रहा। वे हमेशा एक सालमें करीब ६ माह यहीं रहते थे। इस शहरकी बनावट इतनी साफ सुथरी और सुन्दर है, कि देखते ही बनती है। महाराजाका प्रिय पात्र स्थान होनेसे उन्होंने यहां और गवालियरके बीच बेतारके तार लगवाये, इलेक्ट्रिक लाईटका प्रबंध करवाया तथा कई महल, बाग बगीचे और तालावोंका निर्माण करवाया।

संध्याके समय यदि कोई व्यक्ति घूमनेके लिये तालावकी ओर निकल जाय, तो उसे मालूम होगा कि वह एक इन्द्रपुरीमें प्रवेश कर रहा है। चारों ओर इलेक्ट्रिक लाईटकी रोशनी उसकी आंखोंमें चकाचौंधी पैदा करदेगी। बिजलीके इस प्रकाशमें उसे एक ओर महाराजाके महल, दूसरी ओर तालाबोंका सुन्दर दृश्य और उनमें विचरते हुए सुन्दर बजरे और तीसरी ओर गवालियरके रईसोंके बंगले बड़े ही भले मालूम होंगे कहनेका मतलब यह है कि यह शहर गवालियर स्टेटमें बहुत सुन्दर और नवीन ढंगका एक ही मालूम होता है।

व्यापारिक दृष्टिसे भी इस स्थानका अच्छा महत्व है। इसका कारण यह है कि इसके चारों ओर पहाड़ी स्थान आजानेसे और कोई दूसरा शहर पास न होनेसे आस पासके कई मील तकके देहातोंमें यहांसे माल जाता है और वहांकी पैदाईशका माल भी इसी स्थान द्वारा एक्सपोर्ट होता है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली वस्तुओंमें विशेषकर गोंद, शहद, मोम आदि जंगली पदार्थ हैं।

व्यापारियोंकी सुविधाके लिये यहांसे गुना और झांसी तक मोटरें रन करती हैं।

शिवपुरीके दर्शनीय स्थान—महाराजाकी छत्री, चन्द्रसागर, महाराजके महल, माधवलेक
भागोरा टैंक तथा जंगलके कई दृश्य आदि २।

शिवपुरी मंडीसे एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले मालका सन् १९२८ का विवरण इस प्रकार है।

मनराजजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीचंदजी हैं। आपके पुत्र श्री संतोषचन्द्रजी पढ़ रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरार—मेनराज लक्ष्मीचंद—इस फर्मपर ठेकेदारी, तथा लेनदेनका काम होता है। आपका खास काम ठेकेदारी है।

मेसर्स विरदीचंद कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीविरदीचंदजी हैं। आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े जयपुरमें वकालतका काम करते हैं। एक पुत्र विलायतमें डाक्टरीकी शिक्षा पा रहे हैं और एक तहसीलदार हैं आपकी फर्मपर लेनदेन और ठेकेदारी काम होता है।

मेसर्स मथुरादास रघुनाथप्रसाद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी सरहिन्द (पंजाब) के हैं। इनको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए हैं। इस फर्मके पूर्वज अंग्रेज साहबके साथ फौजमें भरती होकर आये थे। पहले समय बाबू [illegible] लालजीने यहांपर ठेकेदारीका काम शुरू किया। आप ब्रिटिश गवर्नमेंटके कमेसेरियट [illegible] मुलाजिम भी रहे थे। आपके ६ पुत्र हैं जिनके नाम शिवस्वरूपजी, गोविंदनारायणजी, बैजनाथप्रसादजी मथुराप्रसादजी, (ओवरसियर) रघुनाथप्रसादजी तथा शिवनारायणजी हैं। बाबू गोविंदनारायणजी कॉटन मिल [illegible]के मैनेजर थे। बाबू बैजनाथप्रसादजी, [illegible] ठेकेदार रहे, पश्चात् आपने संन्यास ग्रहण किया। श्री शिवनारायणजी निजी ठेकेदार हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री मथुराप्रसादजी और रघुनाथप्रसादजी हैं। श्री मथुराप्रसादजी मुरार म्युनिसिपैलिटीके सीनियर मेम्बर, और [illegible] हैं, [illegible] और ग्वालियर म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरार—मेसर्स मथुरादास रघुनाथप्रसाद—यहां लेनदेन, [illegible] और ठेकेदारीका काम होता है।

नाम	आनेवाला माल	
	वजन	मूल्य
चांवल		
गुड़	८३२ मन	...
तेल घासलेट	१६२०० „	...
खोपरा	१०३१० पीपे	...
कम्बल	३०९६ मन	...
तांबा पीतल टीन	...	...
लोहेका सामान	...	३६१७ रु०
कपड़ा	...	४५४४ रु०
मिलकी कपड़ा	...	२०६०४ रु०
ऊनी कपड़ा	...	१९८१६९ रु०
सूत	...	२८१९ रु०
जूटके थैले	६५१ मन	२८९९ रु०
लकड़ीका सामान	१०५८ „	...
मर्चेंडाइज	१०११ „	...
माचिस	...	...
	...	२१२३८
		३६४१

नाम	आनेवाला माल	
	वजन मन	मूल्य
गेहूं	१२९२४	...
चने	२६७५	...
मूंग	१३०१२	...
तुवर	३३२८	...
घी	७२३५	...
सरसों	४८६	...
तिल	६७०	..
अलसी	४२७८	...
ग्राउंड नट	१४२३५	...
[illegible] तेल	१६४१	...
[illegible]	१२२	..
[illegible]	१३४१	...
[illegible]	३६७२	...
[illegible]	५७१८	...
[illegible]	१८६	..
[illegible]	११६	...
[illegible]	३१२	..
	२३४८	.
	१९२	...

मेसर्स मोहनलाल शिवप्रसाद

इस फर्मके मालिक मथुराके निवासी अग्रवाल (गोयल) वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ शिवप्रसादजीने ९० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका ग्वालियर स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप यहांके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप ग्वालियरकी मजलिसे आम मशाउरतीबोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, साहुकारान बोर्ड, तथा म्युनिसिपल बोर्डके मेम्बर और कोआपरेटिव्ह बैंकके मैनेजिंग डायरेक्टर थे। आपने स्थानीय कन्याशालाके लिये स्थाई रुपये ५०) स्कालरशिपका भी प्रबंध किया है। आपने मुरारमें एक धर्मशाला बनवाई है। इस समय इस फर्मके संचालक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू ओंकारनाथजी हैं। आप भी शिक्षित सज्जन हैं। एवं उपरोक्त संस्थाओंमें काम कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार—मोहनलाल शिवप्रसाद—जमीदारी और ठेकेदारीका बहुत बड़ा काम होता है।

(२) मोरेना—शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण—यहां गल्ले और घीका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(३) भिंड—शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला, घी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इस दुकानमें आपका साझा है।

(४) सबलगढ़—शिवप्रसाद ओंकारनाथ—गल्ले तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका व्यापार होता है।

(५) शिवपुरी—मोहनलाल शिवप्रसाद—यहांपर आपकी शिवप्रसाद आइल मिल, आयर्न फाउन्डरी तथा फ्लावर मिल है।

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजण्ट

[illegible] देवकरणदास
[illegible] लखमीचंद
छोटेलाल कन्हैयालाल
[illegible] दुर्गाप्रसाद
नंदराम फूलचंद
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कन्ट्राक्टर्स

प्रेमराज लक्ष्मीचन्द
बद्रीचन्द कन्हैयालाल
मथुराप्रसाद रघुनाथप्रसाद
मोहनलाल शिवप्रसाद

बैंकर्स

रामलाल हजारीमल
[illegible]
[illegible]

मेसर्स गणेशराम गोपीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास निवाना (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब ६० वर्ष हुए होंगे। यह फर्म सेठ गणेशरामजी द्वारा स्थापित हुई थी। इसकी उन्नति भी उन्हींके हाथोंसे हुई। आपने यहां एक शिवजीका मन्दिर कुंआ और बगीचा बनवाया था। सेठ गोपीरामजीके तीन पुत्रोंमेंसे एक श्रीयुत [illegible] आगरा दुकानका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शिवपुरी—गणेशराम गोपीराम—यहां हुंडी, चिट्ठी, लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।

आगरा—गोपीराम [illegible], बेलनगंज—यहां हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजेंसीका काम होता है।

मेसर्स पीरचन्द फूलचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ [illegible] एवम् सेठ [illegible] हैं। आप [illegible] हैं। आपका मूल निवास स्थान [illegible] ([illegible]) का है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। [illegible] सेठ [illegible] थे। [illegible] उन्नति हुई। आपके पश्चात् [illegible], [illegible], [illegible], और [illegible] हुए। [illegible] इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई। [illegible] सेठ [illegible] आपके [illegible] हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

शिवपुरी—पीरचन्द फूलचन्द—यहां [illegible] हुंडी चिट्ठी और [illegible] काम होता है।

शिवपुरी—[illegible]—[illegible] काम होता है।

[illegible]—पीरचन्द फूलचन्द [illegible]—यहां हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

[illegible]—पीरचन्द फूलचन्द—यहां [illegible] हुंडी चिट्ठीका काम होता है। यहां [illegible] [illegible] है।

मेसर्स [illegible]

[illegible]

बिहारीलाल [illegible]

मथुराप्रसाद गंगाप्रसाद

रामबख्श रामजीवन

श्यामलाल सुखीमल

लोहेके व्यापारी

कुंजीलाल प्यारेलाल

कन्नुमल फुद्दनमल

जनरल मरचेंट

हाजी वली मोहम्मद

स्टेशनर

रामलाल घासीलाल

अत्तार और दवाईवाले

प्रभूदयाल कालीचरण

भूरामल जगन्नाथ

भूरामल खत्री

रामलाल रामसहाय

लालचन्दजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपके इन्द्रमलजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[illegible]—भगवानदास शिवदास—सराफी, लेनदेन, कपड़ेका व्यापार और कमीशन एजंसीका काम होता है।

[illegible]—नथमल इन्द्रमल—यहां चांदी सोनेका काम होता है। जेवर भी तैय्यार मिलते हैं या आर्डरपर बनाए जाते हैं।

मेसर्स ज्ञानमल केसरीचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ शिखरचंदजी एवम् सेठ नेमीचंदजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपका आदि निवास स्थान मेड़ता है। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब [illegible] वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ ज्ञानमलजी हैं। आपके पश्चात इस फर्मकी उन्नति आपके पुत्र सेठ केसरीचन्दजीने की। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ लालचन्दजी हुए। आपके हाथोंसे भी इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके समाजमें अच्छी मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र हैं।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। तथा बोर्ड [illegible] और डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर हैं। सेठ शिखरचंदजी बड़े सरल और मितभाषी हैं। दरबारमें आपका अच्छा सम्मान है। आपको कई बार दरबारसे पोशाकें इनाम मिली हैं। आपका ध्यान दान-धर्मकी ओर भी है। आपने [illegible] उदयपुर और आगरा अनाथालयोंमें अच्छी सहायता प्रदान की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

[illegible]—मेसर्स ज्ञानमल केसरीचन्द—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी और कमीशन एजंसीका काम होता है। आपकी बम्बई, कलकत्ता, आगरा आदि स्थानोंपर दुकानें हैं।

बैंकर्स

मेसर्स [illegible]
" [illegible]
" [illegible]
" [illegible]
" [illegible]
" पीरचन्द फूलचन्द
" [illegible]
" [illegible]
" [illegible]
" [illegible]

मेसर्स मोहनलाल शिवप्रसाद

इस फर्मके मालिक मथुराके निवासी अग्रवाल (गोयल) वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मको यहाँ सेठ शिवप्रसादजीने ९० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका गवालियर स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप यहांके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप गवालियरकी मजलिसे आम मजलिसे [illegible], डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, साहुकारान बोर्ड, तथा म्युनिसिपल बोर्डके मेम्बर और कोआपरेटिव बैंकके [illegible] डायरेक्टर थे। आपने स्थानीय कन्याशालाके लिये स्थाई रुपये ५०) स्कालरशिपका भी प्रबंध किया है। आपने मुरारमें एक धर्मशाला बनवाई है। इस समय इस फर्मके संचालक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू ओंकारनाथजी हैं। आप भी शिक्षित सज्जन हैं। एवं उपरोक्त संस्थाओंमें काम कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार—मोहनलाल शिवप्रसाद—जमींदारी और ठेकेदारीका बहुत बड़ा काम होता है।

(२) मोरेना—शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण—यहां गल्ले और घीका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(३) भिंड—शिवप्रसाद धनजीवन—यहां गल्ला, घी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इस दुकानमें आपका साझा है।

(४) सबलगढ़—शिवप्रसाद ओंकारनाथ—गल्ले तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है।

(५) डिगुई—मोहनलाल शिवप्रसाद—यहांपर आपकी शिवप्रसाद आईल मिल, आटेकी चक्की तथा फ्लावर मिल है।

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजण्ट

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कन्ट्राक्टर्स

प्रेमराज लक्ष्मीचन्द
बालीचन्द कन्हैयालाल
मथुराप्रसाद रूपनारायण
मोहनलाल शिवप्रसाद

बैंकर्स

[illegible]
[illegible]
किशनलाल धनीराम

कमीशन एजेंट्स

मेसर्स गंगाराम गोपीलाल
" छिगनमल नारायणदास
" मोहनराम जगन्नाथ
" जैराम चांपाराम
" हिराचन्द हीरालाल
" ठाकुरदास बल्लभदास
" मोतीचन्द फूलचन्द
" मांगीलाल रामदेव
" रामप्रसाद छोटमल
" हनुमंतराम रामनारायण
" हरदेव शिवसहाय

घी मरचेंट्स

मेसर्स जीवनराम जगन्नाथ
" छोगमल नारायणदास
" हनुमंतराम रामनारायण
" ज्ञानमल केसरीचंद

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द फूलचन्द
" चतुर्भुज रामचन्द्र
" जमनादास कन्हैयालाल
" दौलतराम फकीरचन्द
" पनराज अनराज
" भीमराज रामचन्द्र
" बिहारीलाल गोकुलचन्द
" मन्नालाल छोटमल
" रामचन्द्र फूलचन्द्र
" रामकुँवार जेठामल
" शालिगराम लालीराम
" हरदेव शिवसहाय

शक्करके व्या

मेसर्स गनेश गोपीलाल
" गणेशराम कन्हैयाला
" चतुर्भुज रामचन्द्र
" रामचन्द्र मुरलीधर

क्लाथ मर

मेसर्स ओंकारदास मुरलीधर
" गोविन्दराम श्रीनारायण
" जमनादास चुन्नीलाल
" जीवनराम बन्शीधर
" बलराम सुखचंद
" हनुमान रामदयाल
" भगवानदास शिवदास
" मोतीलाल ज्वालासहाय
" रतनलाल गनपतराम
" सुजानमल सुभलाल
" हजारीमल सोहनलाल

घासलेट-तेलके व्य

मेसर्स चतुरभुज रामचन्द्र

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

घीके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कपड़ेके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रूईके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

चांदी सोनेके

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लोहेके व्याप

[illegible]
[illegible]

जनरल मरचे

[illegible]

स्टेशनर

[illegible]

अचार और दवाईवाले

[illegible]
[illegible]
[illegible]

बड़नगर

बी० बी० सी० आई० रेलवेके खण्डवा रतलाम सेक्शनके बीच बड़नगर स्टेशनसे १मीलकी दूरी पर बसा हुआ गवालियर स्टेटका यह एक अच्छा कसबा है। यह स्थान बंबईसे ४३७ और इन्दौरसे ४५ मील दूर है। इस स्थानसे उज्जैन तथा बदनावर तक सड़कें गयी हैं। यह स्थान तमाखू और गेहूंके व्यापारके लिये बहुत मशहूर है। इस कस्बेके आसपास करीब २ लाख रुपये सालानकी काली तमाखू होती है, जो निखालिस (कोरी) और गुड़ मिलाकर दोनों प्रकारसे बाहर भेजी जाती है। तमाखूके अतिरिक्त गेहूं भी यहांसे अच्छी तादादमें बाहर जाता है। यहांके स्टेशन आफिसको सन् १९२६ में ५६६०८) रु० गेहूंकी निकासीसे आमदनी हुई थी। इस कस्बेमें १९३१ में आनेवाले तथा जानेवाले मालके आँकड़े इस प्रकार हैं:—

आनेवाला माल		जानेवाला माल		
केरोसिन तेल	२१४१९ पीपे	गेहूं	१५०१२०	मन
पीतल	८५८३)	चना	६३६१	मन
एल्यूमीनियम	— ६६३)			
लोहा	३१८५८)	कपासिया	२४९३[illegible]	मन
विलायती कपड़ा	१४८६३७)	तिलहन	[illegible]०२२	मन
सिन्धी माल	२०३०)	मेथी	६४०	मन
इन्दौरी कपड़ा	१९०८२)			
स्वदेशी कपड़ा	३०८७०)	काली तमाखू	६०[illegible]	मन
माचिस	४५४३)	जुवार	४७२५	मन
चमड़ा	१३११०)			
तमाखू	२०२३)			

इस स्थानपर इम्पीरियल बैंककी सब ब्रांच आफिस भी है। इस कस्बेमें नाडला [illegible] दिगम्बर जैन औषधालय नामक एक बहुत बड़ा औषधालय जैन समाजकी ओरसे [illegible]

गुनामंडी

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवेके बीना कोटा सेक्शनमें गुना नामक स्टेशनके पास है यह स्थान बीनासे ३५ मील, कोटासे ११४ मील और ग्वालियरसे २३० मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। गुना गेहूंका मण्डा [illegible] बाहरको भेजा जाता है। अफीम, [illegible] किया जाता है। यहां आनेवाले तथा जानेवाले मालका सन् १९२५ का विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल			जानेवाला माल		
नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०	नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०
शक्कर	८००१	...	गेहूं	१०२५२	...
गुड़	२२५५८	...	जुवार	७१३९	...
[illegible]	१२२०	...	चना	१५१४८	...
[illegible]	२०३९०	...	सरसों	२८०४	...
[illegible]	८८५	...	अलसी	७२१३	...
[illegible]	[illegible]	...	[illegible]	३५०८	...
सुपारी	१९५०	...	मिश्रित आइटम	२३४८	...
[illegible]	[illegible]	...			...
[illegible]	[illegible]	...	घी	६०९०	...
[illegible]	[illegible]	...	[illegible]	[illegible]	...
कपड़ा	—	[illegible]			
[illegible] कपड़ा	...	[illegible]			
[illegible]	[illegible]	—			
[illegible]	[illegible]	...			
[illegible]	...	[illegible]			
[illegible]	...	[illegible]			
[illegible]	...	[illegible]			

गया है। इसकी मशीनें बहुत ही लाजवाब हैं। इसके औषधालय के द्वारा केवल पोस्टेज एवं पैकिंग चार्ज लेकर ही औषधियां भेजी जाती हैं। इस औषधालयने जनताका बहुत उपकार किया है।

इस कस्बेमें कईसी २ जीनिंग फेक्टरियां हैं।

१—रतन बहादुर [illegible] जीनिंग फेक्टरी

२—[illegible] जीनिंग फेक्टरी।

इस स्थानके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है

बैंकर्स

मेसर्स श्रीचंद बापूलाल चौधरी

इस दूकानके संस्थापक सेठ भेरोंदासजी थे। पहिले इस दूकानका नाम भेरोंदास श्रीचन्द पड़ता था। सेठ श्रीचन्दजीके देहावसानके अनन्तर उनके तीन पुत्रोंकी अलग २ तीन शाखाएं हो गईं (१) श्रीचन्द बापूलाल (२) श्रीचन्द कस्तूरचन्द और (३) श्रीचन्द हजारीमल यहां यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित तथा पुरानी मानी जाती है। यह फर्म यहां अनुमान ३०० वर्षों से अधिक पुरानी है। इस समय इस फर्मका सञ्चालन श्री छगनलालजी करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीकनकमलजी श्रीसोभागमलजी, श्रीचन्दनमलजी तथा श्रीलालचन्दजी हैं। इस समय श्री-कनकमलजी मेसर्स श्रीचन्द हजारीमलके यहां दत्तक चले गये हैं। इस दुकानकी ओरसे ५० हजारसे अधिक की लागत लगाकर एक धर्मादा दूकान खोली गई है। जिसकी आमदनीसे मन्दिर, कन्या पाठशाला, महिला पाठशाला आदि संस्थाएं चलती हैं। श्रीयुत छगनलालजी ग्वालियर स्टेट की मजलिसे-आम तथा उज्जैनके डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर हैं। स्थानीय मंडी कमेटीके आप चौधरी हैं और सरकारी कन्याधर्मवर्द्धनी सभाके आप वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। आपकी खास दुकान बड़नगर ही में है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बड़नगर—मेसर्स श्रीचन्द बापूलाल चौधरी-इस दुकान पर गल्ला, अफ़ीम, हुण्डी चिट्ठी तथा आसामी लेन देनका व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीचंद हजारीमल

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कनकमलजी ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आप सेठ छगनलालजीके छोटे भाई हैं, तथा संवत् १६७२ में अपने काका सेठ हजारीमलजीके यहां गोदी लाये गये हैं। यह फर्म भी बड़नगरमें अच्छी मशहूर और पुरानी मानी जाती है।

बैंकस

छगनलाल जतनलाल (ग्रेन, कॉटन क्लॉथ मर्चेण्ट)
पन्नालाल गणेशदास (ग्रेन मर्चेंट)
भवानीराम चन्द्रभान (ग्रेनमर्चेंट)
मुरलीधर धोंकलराम (कॉटन ग्रेन मर्चेंट)
रतनलाल वखतावरमल (कॉटन और घी मरचेंट)
सेवाराम पन्नालाल (कॉटन ग्रेन मर्चेंट)
हिम्मतलाल किशनलाल (ग्रेन मर्चेण्ट)

गल्लेके व्यापारी

कुन्दनमल किशोरीलाल (घीके व्यापारी)
कन्हैयालाल हजारीमल
गंगाराम शिवनाथ (शक्करके व्यापारी)
भोलमचन्द रामप्रताप (कत्थे और घीके व्यापारी)
भगवानदास कस्तूरचन्द
मोनचन्द होतीलाल
मुकुन्दराम इन्दरमल (घीके व्यापारी)
मोहकमचन्द गोकुलचन्द
लछमनजी भगवानदास (घीके व्यापारी)

घीके व्यापारी

चुन्नीलाल छोटेलाल
[illegible] चुन्नीलाल
देवाराम गिरधारी
नानकचन्द हीरालाल

कत्थेके व्यापारी

अबदुलरज्जाक फैजअली
[illegible]चन्द [illegible]
मुल्ला मुजफ्फरहुसेन (शक्कर, सूत)
वासुदेव [illegible]

कपड़ेके व्यापारी

छोटेलाल गप्पूलाल
जोसेफ मक्का
दीपचन्द बरदीचन्द
भंवरलाल सुगनचन्द
रामानन्द शिवनारायण
सदाराम चुन्नीलाल
हरबखस चुन्नीलाल

शक्करके व्यापारी

खेरातमल भूरेलाल
नंदराम भागचन्द
परमानन्द चिरंजीलाल
मुरलीधर मोलादत्त

सूतके व्यापारी

रणवीरमल जगन्नाथ
लच्छीराम महादेव

केरोसिन आइल मरचेंण्ट

मुल्ला मुजफ्फर हुसेन
लछमनदास भगवानदास

जनरल मर्चेण्ट

[illegible]
[illegible] जगन्नाथ
[illegible]चन्द [illegible]
[illegible] कन्हैयालाल

सेठ कनकमलजी सुधरे हुए विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपके प्राइवेट वाचनालयमें पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। आप स्थानीय कन्यापाठशाला तथा जैन पाठशालाके संचालक हैं। विद्यार्थियोंसे आपको विशेष स्नेह रहता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स श्रीचन्द हजारीमल बड़नगर—इस दुकान पर हुंडी, चिट्ठी, बैंकिंग तथा असामी लेन-देन तथा गल्लेका काम होता है।

काटन मरचेंट्स

मेसर्स खानअली अलाबक्स

इस फर्मकी यहां पर एक जीनिंग फैक्टरी है। उज्जैनकी नजर अली मिलके मालिक सेठ लुकमान भाई इस फर्मके मालिक हैं। आपका पूरा परिचय उज्जैनमें ८१ पृष्ठमें दिया गया है।

मेसर्स गोविन्दराम नाथूराम

इस फर्मका हेड आफिस उज्जैनमें है। यहां आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है तथा दुकान पर हुण्डी, चिट्ठी, आढ़त रूई और कमीशनका काम होता है। इस दुकानका पूरा परिचय उज्जैनमें पृष्ट ६४ में दिया गया है।

बैंङ्कर्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया (ब्रांच आफिस)
मेसर्स गणेशदास किशनाजी
" श्रीचन्द बाबूलाल
" श्रीचन्द हजारीमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स छोटेलाल शंकरलाल
" [illegible]
" [illegible]
" [illegible]
" नारायण बालाराम
" मगनीराम अबजी
" श्रीराम भेरोंलाल

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अम्बालाल महासुख
" मथुरालाल हिम्मतराम
" पुरुषोत्तम हरगोविंद
" मगनीचंद चम्पालाल
" रतनलाल चम्पालाल
" हजारीलाल [illegible]

पिछौर मंडी

यह गवालियर स्टेटकी मंडी है। जी० आई० पी० रेल्वेके कोटा बीना सेक्शन पर [illegible] नामक स्टेशनके पास यह बसी हुई है। यह मंडी गुनासे २७ मील, बीनासे २१ मील और ईसागढ़से २२ मीलकी दूरी पर है।

यह स्थान खासकर गेहूं, मूंग, सरसों और [illegible]के एक्सपोर्टके लिये मशहूर है। घी भी यहांसे कलकत्ता, सी० पी० और पंजाब डिस्ट्रिक्टमें बहुत जाता है।

इम्पीरियल बैंकने यहांके व्यापारियोंके सुभीतेके लिये अपनी एक सब ब्रांच खोल रखी है। व्यापारकी तरक्कीके हेतु यहां एक व्यापारिक एसोशिएशन भी स्थापित है।

आनेवाला माल

नामवस्तु	वजनमन	मूल्य
गुड़	१०४७१	...
शक्कर	१५३४१	...
[illegible]	३००	...
[illegible]	१८०१४	...
[illegible]	३८६५	...
[illegible]	...	...
[illegible]	...	२११२)
[illegible]	...	१६००)
[illegible]	...	११२४६)
[illegible]	...	८१३१)
[illegible]	...	३८७२०३)
[illegible]	...	३१६३)
[illegible]	...	[illegible])
[illegible]	...	६३२३)
[illegible]	३३४३	...
[illegible]	४१३	...
[illegible]	[illegible]	...
[illegible]	८००	...
[illegible]	१३५	...

जानेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य
गेहूं	१००१४१	...
चना	२०९२१	...
जवार	१५१०	...
मूंग	४१२४	...
अम्बेरी सीड्स	११४०	...
सरसों	५८२३	...
अलसी	२९११	...
राम तिल्ली	१४४०१	...
घी	१२१२१	...
कपास	४१२५	...

[illegible] और इम्पोर्ट [illegible] १८९१ का है।

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स ओंकारजी हरीभाई
,, रूपचंद अमरचन्द

किरानेके व्यापारी

मेसर्स ईसा भाई इस्माइलजी
,, गुलामहुसेन दाउदभाई
,, जसराज मूलचन्द
,, मातरजी भोलाराम
,, नजरअली महम्मदअली
,, पूनमचन्द बालमुकुन्द
,, रामदयाल पन्नालाल

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स धूलजी बापूलाल
,, बरदीचन्द मिश्रीलाल

कमीशन एजंट

मेसर्स कल्याणमल छगनलाल
,, गोकुलचन्द मथुरालाल
,, बरदीचन्द गुलजारीलाल
,, रतनलाल अम्बालाल

काली तमाखूके व्यापारी

मेसर्स केशौराम कन्हैयालाल
,, बेनीराम रामनारायण

मुरार

मुरार, ग्वालियर और लश्करसे तीन मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। यह एक छोटा सा और व्यापारिक स्थान है। यहांके व्यापारका सम्बन्ध ग्वालियर और लश्करसे इतना अधिक है, कि लश्कर ग्वालियर और मुरार मिलकर एक ही शहर मालूम होता है। सैकड़ों व्यापारी रोजाना व्यापार करनेके उद्देश्यसे ग्वालियर और लश्करसे यहां आते हैं तथा यहांके व्यापारी वहां जाते हैं। यहां आनेके सुभीतेके लिये जी० एल० आर० रेलवेकी एक लाइन लश्करसे सीधी यहांतक आती है। तथा यहांसे वापस लौट जाती है। तीनों शहरोंमें बहुत कम अन्तर होनेसे यहां बने हुए हैं, कई कारखाने ग्वालियरके कारखानोंके नामसे मशहूर हैं।

यह मण्डी विशेषकर गल्ले तथा घीके व्यापार लिये मशहूर है। यहांसे हजारों मन गल्ला तथा घी दिसावरोंमें एक्सपोर्ट होता है। यहांके व्यापारी जी० एल० आरके मुरार स्टेशनसे कहीं भी माल भेज सकते हैं। पहले उन्हें जी० आई० पी० रेल्वेके ग्वालियर नामक स्टेशनसे माल भेजना पड़ता था।

यहां निवास करनेवाले व्यापारियोंका परिचय निम्न प्रकार है:—

बैंकर्स एण्ड एजेण्ट्स

छोगालाल जतनलाल
धनराज चुन्नीलाल
धनराज बृजलाल
पन्नाराम बन्सीधर
मोहनलाल गोकुलचन्द
मदन सराफ
मुंशीराम छोगालाल
मूलचन्द पन्नालाल
माणिकचन्द लछीराम

ग्रेन मरचेंट्स

कालूराम हीरालाल
गोपालदास काशीराम
चन्दूलाल चिमनलाल
छोगालाल जतनलाल
धनराज बृजलाल
पन्नालाल चुन्नीलाल
नन्दकिशोर मोतीलाल
पन्नाराम पंडित
मोहनलाल लालचन्द
माणिकचन्द हीरालाल
माणिकचन्द लछीराम
मोहनलाल गोकुलचन्द
मूलचन्द पन्नालाल
मिश्रीलाल रामचन्द

काटन मरचेंट्स

कालूराम हीरालाल
छोगालाल जतनलाल
पन्नाराम पंडित
[illegible]
मूलचन्द पन्नालाल

कपड़े के व्यापारी

आलमचन्द कन्हैयालाल
उदयचन्द पन्नालाल
गुमानचन्द लालचन्द
गौरीशंकर दीक्षित
छोगालाल केशरीचन्द
पन्नालाल धरमचन्द
भागचन्द लालचन्द
मोहनलाल लालचन्द
मोतीलाल गोपीलाल
बृजलाल कुंजलाल
हरचन्द जैन

सूतके व्यापारी

भागचन्द लालचन्द
मोहनलाल लालचन्द
मोतीलाल गोपीलाल

शक्करके व्यापारी

गनी आदमजी
जानकीदास दौलतराम
तुलसीराम गोंहाई
देवीप्रसाद मोतीलाल
पन्नालाल धरमचन्द
लक्ष्मीनारायण भगवानदास

तांबा-पीतलके व्यापारी

देवीप्रसाद मोतीलाल
गौरीशंकर शर्मा
[illegible]

तेलके व्यापारी

पन्नालाल धरमचन्द
[illegible]

यद्यपि सन् १९१८ के अक्टूबर महीनेमें रायल कमीशनके खाते गेहूंकी खरीद करना बन्द कर दिया गया था तोभी अगले वर्ष कमीशनकी तर्फसे ३,३१,५६४ टनका निर्यात हुआ।

सन् १९१८-१९ में वर्षाकी कमीके कारण पंजाबकी फसलमें अधिक हानि न हुई पर तोभी भारतमें अन्नका भाव बहुत मंहगा हो गया और इसलिये रायल कमीशनने कुछ समय पहले जो बहुतसा आस्ट्रेलियाका गेहुं खरीद रखा था उसमेंसे थोड़ा भारत सरकारने ले लिया। सन् १९१९ के मार्चसे जून तक ४ महीनोंमें यहांपर १६८००० टन आस्ट्रेलियाका गेहुं आया। सन् १९२० में फसल यहां अच्छी हुई और सरकारने ४ लाख टन गेहूं निर्यात करनेकी आज्ञा दे दी पर उस वर्ष करांचीसे केवल २२६००० टनका निर्यात हो सका। अगली साल फिर मानसूनकी खराबीके कारण फसलको धक्का पहुंचा और केवल ८०००० टनका निर्यात हुआ लेकिन आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे ४॥ लाख टन गेहूंका आयात हुआ। सन् १९२१-२२में फसल बहुत अच्छी हुई और गेहूंकी पैदावार ९८ लाख टनकी कूंती गई। इस वर्ष निर्यात सम्बन्धी सब तरहकी रुकावटें दूर कर दी गईं और तब २२००१० टनका,निर्यात हुआ।

गेहूंका आटा—

सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात १३२ लाख रुपयेका हुआ। गत वर्ष १५६ लाख रुपयेका ६७२०० टनका निर्यात हुआ था उसकी जगह इस वर्ष ५८९०० टन बाहर गया। इसमेंसे मिश्रको १९८००, अरबको ८६००, मेसोपोटामियाको २२०० ऐडनके राज्यको ७१००, फारसको ३७०० और सिलोनको ४००० टन भेजा गया। भारतमें आटा पीसनेकी मिलें भी बड़े बड़े शहरोंमें हैं जिनमें मैदा आटा और सूजी इस भांति तीन तरहका माल निकाला जाता है पर निर्यात मुख्यतया आटेका ही होता है।

अन्य खाद्य पदार्थ—

सब प्रकारके अन्य खाद्य पदार्थोंका निर्यात २०२ लाख रुपये मूल्यके १३३००० टनका हुआ। इनमें जौ, ज्वार, बाजरी और चना का निर्यात मुख्य है। जौका निर्यात यद्यपि सन् १९२५-२६ में ४२४०० टनका हुआ था सन् १९२६-२७ में केवल १९०० टनका हुआ जिसमेंसे १२०० टन फारसने लिया। ज्वार और बाजरीका १५३०० टन और चनेका १४००० टनका निर्यात हुआ।

चाय—

सन् १९२६-२७ में चायका निर्यात २९०४ लाख रुपयेका हुआ। सन् १९२६ में ७४०००० एकड़की खेतीमें ३९३० लाख रतलकी पैदावार हुई। चायकी खेतीमें आसाम प्रधान है जहां समूची पैदावारका ६२ सैकड़ा माल पैदा हुआ। ३४९० लाख रतलका निर्यात हुआ, जिसमें २९ करोड़ रतल ग्रेटब्रिटेनने ले लिया। चायके निर्यातमें कलकत्ता प्रधान है जहांसे समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा निर्यात हुआ। चटगांवसे २२ सैकड़ा और मदरासने १२ सैकड़ा माल भेजा गया।

सन् १९२६-२७ में समुद्री मार्गसे ६० लाख रुपयेकी ३½ लाख रतल चायका आयात भी हुआ पहले सौ रतल चायपर १॥) रुपया निर्यात ड्यूटी लगती थी वह सरकारने एक मार्च सन् १९२७ से उठा दी है।

दुनियांमें चायकी मांग अनुमानतः ७२ करोड़ रतलकी होती है जिसमें ४० से ५० सैकड़ेकी पूर्ति भारतके निर्यातसे होती है। चाय चीन और सीलोनमें भी बहुत होती है पर दुनियांमें इसकी सबसे अधिक पैदावार भारतमें ही होती है। भारतमें चायकी खपत बहुत कम होती है और इसकी पैदा-वारका ९० प्रति शत भाग बाहर भेज दिया जाता है। भारतमें चायकी कृषि थोड़े ही समयसे होने लगी है। १८ वीं शताब्दिके उत्तरार्द्धमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी इसका व्यापार चीनके साथ करती थी। सन १७८३ में ईस्ट इंडिया कम्पनीने चीनसे २ करोड़ रतल चाय भेजी और इसके अगले साल यह राय हुई कि इसकी खेतीके लिए भी भारतमें प्रयत्न किया जाय जिससे चीनमें यदि इसकी प्राप्तिमें कुछ बाधा उपस्थित हो तो कुछ क्षति न उठाना पड़े। सन् १८३४ तक इस विषयमें विशेष कुछ नहीं किया गया पर इस वर्ष तत्कालीन गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम बेंटिकने-जिन्हें यह मालूम नहीं था कि चायका पौधा आसाममें पहलेहीसे मौजूद है—चायके बीज और इसकी खेतीके जान-कार लानेके लिये यहांसे चीनको अफसर भेजे। आसाममें सरकारी खेतीसे जो चाय पैदा हुई वह पहले पहल सन् १८३८ में इंगलैंड भेजी गई। सन १८५२ के पूर्व यह बात प्रसिद्ध न हो सकी कि लण्डनमें चीनकी चायके साथ भारतीय चाय मुकाबला कर सकती है। इसके बाद इस कामनें इतनी सफलता हुई कि सन् १८६५ में सरकारने अपना हाथ इस काम से उठा लिया। सन् १८९८ में इसका ८० लाख टनका निर्यात हुआ। भारतमें चायकी मुख्य पैदावार आसाममें होती है जहां चायके बगीचोंमें इसकी खेती होती है। अनुमानतः ७-८ लाख मजदूर चायकी खेतीपर काम करते हैं। इसकी खेती और चायके बगीचोंका काम विदेशी कम्पनियोंके हाथमें अधिक है और भारतीय मजदूरोंके साथ उनके मालिकोंके व्यवहारके लिए बहुत कुछ शिकायत रहती है। मुख्य बगीचोंके लिये चायकी फेक्टरियां भी हैं जहां चाय बिकीके लायक बनाई जाती है। चायकी पत्ती तोड़ लेनेपर उसे तैयार करनेके लिये बहुत कुछ काम करना पड़ता है वह सब चायकी फेक्टरियोंमें किया जाता है।

तिलहन—

सन १९२६-२७ में सब तरहके तिलहनका निर्यात १९०६ लाख रुपयेका हुआ। इसमें अल-सी, तिल्ली, मूंगफली, अण्डी आदि सब पदार्थ आगये। ये सब पदार्थ यहांसे कच्चे रूपमेंही निर्यात कर दिए जाते हैं, यद्यपि बैलों द्वारा चलनेवाली घानियोंमें तेल निकालनेकी विधि यहां बहुत प्राचीन कालसे प्रचलित है एवं अब तो तेल निकालनेकी मिलें भी जगह जगह बन गई हैं। तेलके पदार्थोंके एक्सपोर्टके विषयमें फिसकल कमीशनकी रिपोर्टका कुछ भाग यहां उद्धृत किया जाता है—

चंदेरी

चन्देरी ग्वालियर स्टेटकी एक बहुत मशहूर मंडी है। इसका नाम बहुत दूर २ तक हुआ है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाले मालमें चन्देरीका बना हुआ देशी कपड़ा प्रधान है। स्थान कपड़ेमें की जानेवाली कारीगरीके लिये मशहूर है। यहां सोने और चांदीकी पक्की बत्तूके फेन्सी और चित्त आकर्षित करनेवाले सुन्दर बार्डरोंके सुसज्जित जरीन कपड़े बनते हैं। इस प्रकारके सुन्दर कपड़ोंका एक्सपोर्ट सालाना करीब १०००००)के होता है। घी भी अच्छी यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होता है।

चन्देरी जी० आई० पी० रेलवेकी मेन लाईनके ललितपुर नामक स्टेशनसे २० मीलकी दूरीपर स्थित है।

यहांके व्यापारी वर्गकी सूची इस प्रकार है:—

साहुकार

ओंकारलाल काशीप्रसाद
छक्कूलाल बालचन्द
पूनमचन्द रतनचन्द
मट्टूलाल आलमचन्द
मंगली चतुर्भुज
लक्ष्मीनारायन गोविन्ददास
शिवप्रसाद घनश्यामदास
सुरसिंह परमानन्द
पन्नालाल सिंगजी

ग्रेन मरचेंट्स

चतुर्भुज शंकरलाल
नत्थू दुलीचंद
पन्नालाल सिंगजी
भगवानदास
रूपनारायण मिश्र
रसूलखां

चन्देरी कपड़े के व्यापारी

उदयचन्द पन्नालाल
गोपालदास बंशीधर
गोरे एण्ड सन्स
चिमनलाल बिहारीलाल
घुरेलाल बालचन्द
परमानन्द पन्नालाल
मन्नीलाल कन्हैयालाल
रामप्रसाद जगन्नाथ
रामवल्लभ लक्ष्मीनारायण

मेसर्स रामनारायण भवानीराम बड़वाह

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेसर जयपुर स्टेटमें है। आप खण्डेलवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष हुए। श्रीयुत सेठ रामनारायणजीने सर्व प्रथम इसकी स्थापना की। आप बड़े ही उद्योगी एवं परिश्रमी व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। संवत् १९३३में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात आपके सुपुत्र श्री सेठ भवानीरामजीने इस फर्मके कार्यको और भी तरक्की दी। संवत् १९६६में आपका देहावसान हुआ। उनके पश्चात् उनके पुत्र व दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ नन्दलालजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। और आप ही इस समय इस फर्मके कामका संचालन कर रहे हैं, इस फर्मके मालिकोंका सार्वजनिक कार्योंमें भी विशेष हाथ रहा है, बड़वाहमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला तथा एक मन्दिर बना हुआ है। धर्मशालामें एक सुन्दर बगीचा भी लगा है। विमलेश्वरमें(बड़वाहमें) नर्मदा किनारे आपकी ओरसे एक धर्मशाला बनी हुई है यहांपर एक गौशाला बनी हुई है, उसके लिए आपने सारी जमीन मुफ्त दी है। आपकी ओरसे बड़वाहमें सदाव्रत भी बंटता है। इस समय आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

१—बड़वाह—रामनारायण भवानीराम—इस दूकानपर कॉटन कमीशन एजंसी बेङ्किग तथा देनलेनका काम होता है। यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

२—बड़वाह—कन्हैयालाल नन्दलाल—इस दूकानपर गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

३—सनावद—रामनारायण भवानीराम—बैङ्किग कमीशन एजंसी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स लछमनदास केशरीमल

इस फर्मके मालिक मूल निवासी पीपाड़ (मारवाड़) के हैं। आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। श्रीयुत लछमनदासजीने बड़वाहमें अपनी दुकान स्थापित की। और अपनी चतुराई तथा अपने व्यापार कौशलसे लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाई। इस समय बड़वाहकी नामी फर्मोंमें आपकी फर्म भी एक समझी जाती है।

हाल्हीमें आपने एक सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई है। इस कार्यमें आपने हजारों रुपये खर्च किये हैं।

बड़वाहमें आपकी दुकानपर रूईका अच्छा बिजिनेस है। आपकी यहां एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी बनी हुई है। श्रीयुत लछमनदासजीके पुत्र श्रीयुत केशरीमलजी हैं। आप दुकानका काम सम्हालते हैं।

लक्ष्मीनारायण कन्हैयालाल
शिवप्रसाद घनश्यामदास
हीरालाल कन्हैयालाल
हीरालाल चुन्नीलाल

घीके व्यापारी

गोरेलाल
प्यारेलाल सुखसिंह
भगवानदास गोविन्ददास
धन्नालाल पन्नालाल
सुखसिंह परमानंद

सूत और कपड़े के व्यापारी

घनश्यामदास मुरलीधर
दयाचन्द
पूनमचन्द रतनचन्द
पूनमचन्द रामनाथ
परमानन्द पन्नालाल
मट्टूलाल आलमचन्द
शंकरलाल गयाप्रसाद
सुखसिंह परमानंद

भेलसा

भेलसा मंडी जी० आई० पी० रेल्वेकी मेल लाइनके भेलसा नामक स्टेशनके पास बसी हुई है। यह ग्वालियरसे १८८ मील और बम्बईसे ५३५ मीलकी दूरी पर है। यहां गेहूं, चना, अलसी, तिल्ली, कपास आदि अधिक मात्रामें पैदा होते हैं। विशेषकर गेहूं और चनाकी पैदावार अधिक होती है।

व्यापारियोंकी सुभीतेके लिये इम्पीरियल बैंककी यहां एक ब्रॅंच सब आफिस है। यहां व्यापारिक एसोसिएशन और मंडी कमेटी नामक दो संस्थाएं स्थापित हैं। दोनोंका उद्देश्य यहांके व्यापारकी उन्नति करना है।

यहां पूस मासमें बेतवा नदीके तीर चरन तीर्थ नामक स्थानपर भारी मेला लगता है। इस मेलेमें विशेषकर पशुओंकी खरीदी बिक्री होती है। सन् [illegible] में यहां आने तथा जानेवाले मालका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

आनेवाला माल			जानेवाला माल	
नाम वस्तु	वजन मन	कीमत	नाम वस्तु	वजन मन
चावल	२०१५२	...	गेहूं	[illegible]
गुड़	२३०४०	...	चना	[illegible]
तेल घासलेट	३०३५०	[illegible]	अलसी	[illegible]
नारियल	[illegible]	...	तिल्ली	[illegible]
सुपारी	[illegible]	...	[illegible]	
पीतलका सामान	...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
लोहा	...	[illegible]	घी	
कपड़ा	...	[illegible]	[illegible]	
किराना	[illegible]	...	[illegible]	
तमाखू	[illegible]	...	[illegible]	
सोना		[illegible]		
मनिहारी		[illegible]		

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स छगनलाल नानचन्द
" मन्नालाल ताराचन्द
" मोहनलाल चुन्नीलाल
" रामनारायण भवानीराम
" लक्ष्मीचन्द फूलचन्द
मेसर्स महम्मदअली फीका भाई
" राधाकिशन सुखलाल
" राधाकिशन वृजलाल
" रामसिंह जुझारसिंह
" हसन भाई अब्दुलअली

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली जीवा भाई
" अब्दुलकरीम हाजी मूसाखान

किरानेके व्यापारी

मेसर्स मूसाखान जीवाभाई
" वलीमहम्मद ऊमर

सनावद

यह स्थान इन्दौर राज्यके प्रधान व्यापारिक केन्द्रोंमेंसे एक है। वैसे तो ७००० की बस्तीका यह एक छोटासा कस्बा है मगर जब इसके आकारकी दृष्टिसे हम इसके व्यापारको देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है। जिस समय यहां कपासका मौसिम चलता है उस समय यहांकी चहल पहल देखने योग्य होती है। अच्छी मौसिम चलनेपर किसी २ दिन यहांपर डेड़ २ हजार गाड़ियां प्रतिदिन आती हुई देखी जाती हैं। सबेरे आठ बजेसे गाड़ियोंका तांता लगता है सो मुश्किलसे रातको आठ बजे खतम होता है। इस कस्बेकी बनावट बड़ी पिचपिच और अव्यवस्थित है। व्यापारकी दृष्टिसे यह जितना उन्नत है स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उतना ही अवनत है। खासकर मौसिमके दिनोंमें दिनभर उड़नेवाली गर्दसे लोगोंके स्वास्थ्यपर बड़ा खराब धक्का पहुंचता है।

इस छोटेसे कस्बेमें करीब बारह तेरह - जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अच्छी मौसिम चलनेपर इन फैक्टरियोंसे करीब साठ हजार रुईकी पक्की गांठें तैय्यार होती हैं। इन फैक्टरियोंके नाम इस प्रकार हैं (१९२५)

(१) गोरेलाल मंगीलाल जीन सनावद
(२) मर्चेण्ट काटन प्रेस सनावद
(३) जसरूप बैजनाथ प्रेस सनावद
(४) जयकिशन गोपीकिशन जीन सनावद
(५) जयकिशन गोपीकिशन प्रेस सनावद
(६-७) जसरूप बैजनाथ जीन सनावद (२)

(८) हीरालाल सोहराबजी कॉटन प्रेस सनावद
(९) हीरालाल सोहराबजी कॉटन जीन सनावद
(१०) नर्मदा कॉटन प्रेस सनावद
(११) चिनोदीराम बालचंद जीन सनावद
(१२) नाथूलाल मथुरालाल जीन सनावद
(१३) मर्चेन्ट जीनिंग फेक्टरी सनावद
(१४) सरस्वती जीनिंग फेक्टरी सनावद

इस कस्बेमें फागुनके महीनेमें एक बहुत बड़ा मेला भी लगता है। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है:—

बैंकर्स एण्ड कॉटनमर्चेंट्स

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इस फर्मका हेड आफिस खण्डवामें है। यहांपर इसकी ब्रांच है। इसका संचालन श्री० सेठ [illegible] करते हैं। आप बड़े सज्जन, व्यापार कुशल और उदार व्यक्ति हैं। हालहीमें आपने सनावदमें एक नया बाजार (नयी गंज) डालनेका उद्योग प्रारम्भ किया है। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित खण्डवा पोर्शनमें दिया गया है। इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक प्रेसिंग और दो जीनिंग फेक्टरियां हैं।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका हेड आफिस खण्डवामें है। यहांकी दुकानका प्रबन्ध श्रीयुत [illegible] करते हैं। आप बड़े मिलनसार, चतुर, हंसमुख और शिक्षित सज्जन हैं। इस वंशके [illegible] इन्दौरके आप बड़े विश्वासपात्र हैं। आपका परिचय चित्रोंसहित खण्डवा पोर्शनमें दिया गया है। आपकी दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

सेठ [illegible] [illegible]

[illegible] सेठ [illegible] [illegible]

[illegible]

मे० बिनोदीराम वालचन्द

यह फर्म नीमाड़में सबसे बड़ी रुईकी व्यापारी मानी जाती है। इसका हेड आफिस भालरा पाटनमें है। यहांकी दुकानका सञ्चालन श्रीयुत रामगोपालजी मुनीम करते हैं। आप बड़े योग्य शिक्षित एवं वयोवृद्ध सज्जन हैं। इस फर्मपर रुई और बैंकिङ्गका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका पूरा परिचय चित्रों सहित भालरापाटनके पोर्शनमें दियागया है। इसी फर्मके अण्डरमें बिनउचंद केलाशचंद नामक एक फर्म और यहां पर है।

—

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल

इस फर्मके मालिक श्रीयुत मांगीलालजी सरावगी जैन जातिके हैं। इस दुकानपर बैङ्किग, रुई और कमीशन एजन्सीका काम होता है। श्री० मांगीलालजीका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा हुआ है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल—इस दुकानपर बैङ्किग और रुईका काम होता है।

इसके अतिरिक्त सनावदकी विनउचन्द केलाशचंद फर्ममें, खरगोनकी बिनोदीराम बालचंद फर्ममें, गोगांवकी विनउचंद केलासचंद फर्ममें और नीमार खेड़ीकी बिनोदीराम बालचंद फर्ममें भी आपका सम्बन्ध था।

—

मेसर्स रामनारायण भवानीराम

इस फर्मका हेड आफिस बड़वाहमें है। इसके मालिक बड़वाहके [illegible] श्रीयुत [illegible]लालजी हैं। आपका पूरा परिचय चित्र सहित बड़वाहमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैङ्किग, गल्ला और रुईका व्यापार होता है।

—

मेसर्स रामासा हीरालाल गंगराडे

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान [illegible] है। [illegible] नामक ग्राममें आये। आपकी दुकानको यहांपर आये करीब १०० वर्ष हो गये। [illegible] १२ वर्ष हुए [illegible] आये। इस समय इस दुकानके मालिक सेठ [illegible] तथा [illegible] हैं। सेठ [illegible] हैं। [illegible] है।

आपकी निम्नलिखित स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) शकरगांव—छुज्जुलालसा फत्तूसा—यहां रुई कपासकी आढ़त खरीद फरोख्त तथा लेन-देनका काम होता है।

(२) सनावद—रामासा हीरालाल—यहांपर बैङ्किग और कॉटन कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) खंडवा—छज्जूलालसा फत्तूसा—लेन देन एवं मनोतीका काम होता है।

(४) पंधाना—छज्जूलालसा फत्तूसा—पंधानाके आसपास आपके माल्गुजारीके गांव हैं। यहां मनोतीका भी व्यवसाय होता है।

बैंकर्स कॉटन मरचेण्ट्स एण्ड ग्रेन मरचेण्ट्स

मेसर्स अमोलकचंदसा फत्तूसा
- ,, खेमजी श्यामजी
- ,, जसरूप बैजनाथ
- ,, जयकिशन गोपीकिशन
- ,, धन्नालाल केशवसा
- ,, पदमसा हीरालाल
- ,, भिलोदीराम बालचंद
- ,, मांगीलाल गोरेलाल
- ,, रामनारायण भवानीराम
- ,, रामासा हीरासा
- ,, रामधन ॐकार
- ,, लखमीचंद केशरीमल
- ,, विमलचंद केवलचंद
- ,, हुकुमचंद दशरथसा

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स घनश्यामसा ज्ञानचंदसा
- ,, चन्दूलाल हणुतराम
- ,, गोवर्द्धनदास जगन्नाथ
- ,, पन्नालाल बिट्ठलदास
- ,, मांगीलाल कन्हैयालाल
- ,, मायाचन्दसा ज्ञानचन्दसा
- ,, लक्ष्मीचन्द घासीराम
- ,, हाजीअब्दुल गुलाबखां

चांदी सोनेके व्यापारी

अमोलकचन्दसा केशवसा
जड़ावचंद कुन्दनसा
बालमुकुन्द बिट्ठलदास
रूपचंदसा प्यारचंदसा

लोहेके व्यापारी

बाबूलाल बुकनदास
महम्मदहुसेन अल्लाबक्ष

आगर

गवालियर स्टेटकी आगर एक प्रसिद्ध मण्डी है। यह बहुत ही सुन्दर स्थानपर बसी हुई है। इसके दोनों ओर दो सुन्दर और रमणीक तालाब बने हुए हैं, जो राधियाना और बड़ा तालाबके नामसे बोले जाते हैं। यह मण्डी उज्जैनसे ४२ मील, सुसनेरसे १८ मील, सोयतसे ३० मील और सारङ्गपुरसे ३१ मीलकी दूरीपर स्थित है। उज्जैनसे यहांतक गवालियर मोटर सर्विस रन करती है। यहां जी० एल० आर०की एक लाईन उज्जैनसे यहांतक खुल रही है। यह मंडी खासकर कपास और घीके लिये मशहूर है। यहांसे ये दोनों चीजें काफी संख्यामें एक्सपोर्ट होती हैं। इस मंडीके आसपास रेल्वे न होनेसे इसके आसपासका सब माल यहीं आकर बिकता है। इससे इस मण्डीकी तरक्की है।

यहां नीचे लिखी कॉटन जीनिंग फेक्टरियां हैं।

विनोदीराम बालचन्द कॉटन जीनिङ्ग फेक्टरी।

नजरअली कॉटन जीनिङ्ग फेक्टरी।

खरगोन*

सनावदसे ४२ माइलकी दूरीपर इन्दौरका यह सबसे बड़ा कसवा बसा हुआ है। इसकी जन संख्या ११००० है जो इन्दौर राज्यमें इन्दौर शहरको छोड़कर सब स्थानोंसे अधिक है। यह स्थान इन्दौरके नीमाड़ जिलेका एक प्रकारसे सेन्टर है। यहांपर कपासका व्यापार अच्छे परिमाणमें होता है। यहांपर रुईके व्यापारियोंकी अच्छी २ दुकानें हैं। जिनमें मेसर्स विनोदीराम वालचन्द, मेसर्स जसरूप बैजनाथ, मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन, मेसर्स कपूरचन्द हीरालाल, मेसर्स हाजी हबीब महम्मदके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

यहांपर बहुतसी कॉटनकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां बनी हुई हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

(१) गोपीकिशन सुन्दरलाल कॉटन प्रेस खरगोन
(२) विनोदीराम वालचंद कॉटनप्रेस खरगोन
(३) हाजी हबीब महम्मद कॉटन प्रेस खरगोन
(४) विनोदीराम वालचंद जीन खरगोन
(५) हीरालाल कपूरचंद जीन खरगोन
(६) लश्करसिंह मरकरसिंह जीन खरगोन
(७) गोपीलाल सुन्दरलाल जीन खरगोन
(८) हाजी हबीब जीन खरगोन
(९) वल्लभदास गोकुलदास जीन खरगोन

रुईके अतिरिक्त गल्लेका व्यवसाय भी इस स्थानपर अच्छा होता है।

---

* पुस्तक छपनेमें बहुत शीघ्रता होने, और खरगोन महेश्वर आदिके व्यापारियोंको दिये हुए पत्रोंका उत्तर न मिलनेसे हम खरगोनके व्यापारियोंका परिचय एकत्रित नहीं कर सके। इसका हमें खेद है।

—प्रकाशक

गल्लेके व्यापारी

कुन्दनचंद गेंदालाल
चुन्नीलाल ब्रजलाल
चुन्नीलाल मथुरालाल
दौलतकुमार नथूकिशन
पूरनमल गलूरामजी
पूनमचन्द उम्मेदमल
भगवतीराम किशनराम
मुन्नालाल नेनसुख
सुखो रमजानी

—

तांबा-पीतलके व्यापारी—

चिमनमल पूनमचन्द
नानजी मुकुंदराम
हरीराम प्यारेलाल
मूलचन्द रामचन्द्र

—

घीके व्यापारी

कल्याण चौबे
बालचन्द धनसुख
दूलजी भूधरलाल

ब्रजलाल कन्हैयालाल
बालकृष्ण हजारी
मगनूराम रामकुमार

—

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम इलाही
चिन्तामण घासीराम
धारालाल पूरालाल
पदमसिंह जीतमल
बद्रीदास गोकुलदास
बागमल पूरालाल
बागमल मोतीलाल
रामरतन रामकिशन
रामरतन जवाहरमल
हीरालाल जगन्नाथ
हंसराज बछराज

—

घासलेट-तेलके व्यापारी

सिद्धहुसेन अलीभाई

—

महेश्वर

आर० एम० आर के बड़वाहा स्टेशनसे २६ मीलपर बसा हुआ यह एक सुन्दर और रमणीक स्थान है। यह स्थान नर्मदा नदीके किनारेपर बसा हुआ होनेसे हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है यहांपर देवी अहिल्या बाईके बनाए हुए घाट बहुत सुन्दर और दर्शनीय हैं।

यहांकी बनी हुई दक्षिणी ढंगकी साड़ियां सारे भारतवर्षमें महेश्वरी साड़ियोंके नामसे मशहूर हैं। यहांसे इस प्रकारकी बहुतसी साड़ियां बाहर जाती हैं।

रुई इत्यादिका व्यापार यहांपर साधारण है। यहांपर ईसाभाई एण्ड सन्सकी एक जीनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

कन्नौद

नेमावर जिलेका खास मुख्य है। यह स्थान नेमावर जिलेमें सबसे बड़ा है। यहांपर डिस्ट्रिक्ट सेक्रिटेरियट, डिस्ट्रिक्ट जज वगैरह जिलेके आला अफसरोंकी आफिसें बनी हुई हैं। लड़कोंके यहां शिक्षाके लिये पब्लिक स्कूल, और लड़कियोंकी शिक्षाके लिए कन्या पाठशाला चल रही है।

यह स्थान भी रुईका बहुत बड़ा केन्द्र है। यहांपर करीब दो लाख मन कपास प्रति वर्ष आता है। यहांसे हरदा, और इंदौरके स्टेशनोंपर माल जाता है। कपासके अतिरिक्त मक्का, गेहूं [illegible] इत्यादि भी यहां खूब पैदा होती है। यहांपर तीन जीनिंग फेक्टरियां [illegible] हैं जिनके [illegible] इस प्रकार है

(१) मालवा मिल जीनिङ्ग फेक्टरी कन्नौद
(२) जमरूप [illegible] जीन कन्नौद
(३) [illegible] नरसिंहदास जीन कन्नौद
(४) [illegible] हुकुमचन्द जीनिंग [illegible]

[illegible]

सेठ भागमल डालूराम

[illegible]

इन्दौर–राज्य

INDORE-STATE

और आपके भी थे। आपके पुत्र सेठ डालूरामजी थे, मगर उनका स्वर्गवास आपके पूर्व ही हो गया। इस समय सेठ भारमलजीके पौत्र सेठ राधाकिशनजी इस दुकानके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—भारमल डालूराम—इस दुकानपर कपास, अलसी, गल्ला इत्यादिका घरू और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

इन्दौर—[illegible] नरसिंहदास—इस नामसे यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स,
(मालवा मिल्सओनर)
मेसर्स चुन्नीलाल बद्रीनारायन
„ जवरूप बैजनाथ
„ भारमल डालूराम
„ स्वरूपचन्द हुकुमचंद
„ जयरामदास जयनारायण
„ भारमल डालूराम
„ राधाकिशन जयराम

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गंगाराम गजानन्द
„ गनेशराम नथूराम

गल्लेके व्यापारी

„ जयरामदास जयनारायण
„ नानकराम भगवान
„ भारमल डालूराम
„ रामसुख रामनारायण
„ हीरालाल भागीरथ

खातेगांव

यह स्थान इन्दौर रियासतके नेमावर जिलेका सेन्टर है। यह इन्दौर शहरसे ८२ मील पर नेमावर रोडपर है। इन्दौर राज्यके प्रधान २ शहरोंमें इन्दौरके बाद यह स्थान भी अपना खास स्थान रखता है। यहांके व्यापारियोंसे पूछनेपर पता चला कि यहांपर एक कमाला (एक लाख बीस हजार मन) कपास प्रतिवर्ष होता है। यहांका माल हरदा और इन्दौर इन दोनों स्थानोंके द्वारा एक्सपोर्ट होता है। कपास ही की तरह गेहूंके पैदावारका भी यह बहुत बड़ा केन्द्र है। व्यापारियोंके कथनानुसार यहां करीब ढाई तीन लाख मन गेहूं प्रतिवर्ष आता है। इस गेहूंमें अधिकतर गेहूं [illegible] जातिका होता है। कपास और गेहूंके अतिरिक्त मक्की, ज्वार, चना इत्यादि भी यहां काफी तादादमें पैदा होते हैं।

कपासको साफ करनेके लिए यहांपर निम्नांकित फेक्टरियां हैं:—

(१) [illegible] जीन फेक्टरी (२) जवरूप [illegible] जीन फेक्टरी

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट्स

धन्नाजी हंसराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मारवाड़के हैं, पर करीब १०० वर्षोंसे यहीं पर रहते हैं। इस फर्मको पहले पहल सेठ धन्नाजीने स्थापित किया। उस समय यह दुकान बहुत साधारण स्थितिमें थी। धन्नाजीके पुत्र सेठ हंसराजजीने इसे विशेष तरक्की पर पहुंचाया। इस समय सेठ हंसराजजीके पुत्र सेठ हजारीमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आपने अपने व्यापार और कृषिकी बहुत उन्नति की। आपके यहां इस समय करीब ४५०० एकड़ जमीनमें कृषि होती है। आपने यहीं एक अपनी जीनिंग फेक्टरी भी स्थापित कर रक्खी है।

आपकी ओरसे खामगांवमें एक जैन पाठशाला भी कुछ समय तक चली थी। इस समय आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम [illegible] है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खामगांव—धन्नाजी हंसराज—इस दुकानपर कपास, गल्ला, आढ़त और रुईका काम होता है। इसके अतिरिक्त साहूकारी और मनोतीका काम भी होता है।

(२) [illegible] (बरार)—हंसराज हजारीमल—इस दुकानपर लेन देनका काम होता है।

सेठ मनिराम चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मारवाड़के हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब [illegible] वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ मनीरामजी थे। उस समय इस फर्मकी बहुत साधारण स्थिति थी। मनीरामजीके पश्चात् उनके पुत्र चुन्नीलालजीने इस फर्मके [illegible] की। आपके पश्चात् इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ [illegible] ने [illegible]। आपने भी इस दुकानके कामको अच्छा बढ़ाया।

सेठ [illegible] एक अच्छी [illegible] है [illegible] है। [illegible] है। [illegible] आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम [illegible] है

बड़वाह

इन्दौर राज्यके अन्दर यह स्थान बड़ा प्राकृतिक सौन्दर्य्ययुक्त और रमणीक है। इसके एक तरफ नर्मदाकी निर्मल सलिल धारा बह रही है, और दूसरी ओर चोरल नदी इसके सौन्दर्यको बढ़ा रही है। एक ओर ओंकारेश्वरका रमणीक तीर्थ-स्थान इसकी पवित्रताको बढ़ा रहा है, और दूसरी ओर कलाकुण्ड का रमणीक पहाड़ इसकी छविको दीप्तिमान कर रहा है। यहींपर नागेश्वरका कुण्ड नामक एक बड़ा ही सुन्दर कुण्ड बना हुआ है। इस कुण्डमेंसे हमेशा एक सोता निकलता रहता है। सर्दीके दिनोंमें इस सोतेमेंसे बड़ा गर्म और सुहावना जल प्रवाहित होता है। इस शहरमें चोरल और नर्मदाके किनारे महाराज शिवाजीरावके बनाये हुए महल देखने योग्य हैं।

व्यापारिक दृष्टिसे भी यह स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। रुई और गल्लेका व्यापार यहांपर खूब होता है। यहां करीब दस ग्यारह जीनिङ्ग फेक्टरियां बनी हुई हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) जयकिशन गोपीकिशन कॉटनप्रेस बड़वाह
(२) सखाराम बैजनाथ कॉटनप्रेस बड़वाह
(३) जयकिशन गोपीकिशन जीन बड़वाह
(४) रामनारायण भवानीराम जीन बड़वाह
(५) रामनारायण भवानीराम कॉटनप्रेस बड़वाह
(६) सखाराम बैजनाथ जीन बड़वाह
(७) छगनलाल केसरीमल जीन बड़वाह
(८) छगनलाल केसरीमल प्रेस बड़वाह
(९) [illegible] रूपचन्द जीन बड़वाह
(१०) रामकिशन [illegible] जीन बड़वाह
(११) [illegible] मथुरालाल जीन बड़वाह

आपका व्यापारिका परिचय इस प्रकार है।

(१) खातेगांव--मनीराम चुन्नीलाल--इस फर्मपर कपास, रुई, गल्ला आदिका घल और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(२) हरदा---चुन्नीलाल प्रेमराज--यहां भी उपरोक्त काम होता है।

कपास और गल्लेके व्यापारी

सेठ गेंदालाल कोदरमल
,, घासीलाल मांगीलाल
,, चम्पालाल पोकरमल
,, धन्नाजी हंसराज
,, प्रेमराज चुन्नीलाल
,, मूलचंद डालूराम
,, मल्लूकचंद हेमराज
,, रामरख धनसुख
,, हीरालाल काला

कपड़े के व्यापारी

,, गेंदालाल रतनलाल
,, चौथमल याकलीवाल
,, मांगीलाल चंद्रलाल
,, लालजी घासीराम
,, हजारीमल घासीराम

महिदपुर

बी० बी० सी० आई की बड़ी लाईनपर महिदपुर स्टेशनसे १२ मील दूर बसा हुआ यह एक रमणीय और आबाद कसबा है। यह स्थान इंदौर स्टेटके महिदपुर जिलेका प्रधान कसबा है। मुगलराज्यके समय इस स्थानका नाम महम्मदपुर था। सन् १८१७में द्वितीय मल्हारराव होल्कर और सरजान मालकमके दरमियान यहां युद्ध हुआ था। इस स्थानके आसपास जंगल विशेष है। जिसमें चंदन कसरतसे पैदा होता है। यहांका धरातल समुद्रको सतहसे १७०० फीट ऊंचा है। यहांसे उज्जैन और इन्दौरतक सड़क गई है। यह स्थान क्षिप्राकिनारे बसी हुई पुरानी बस्ती है। यहांका किला प्रसिद्ध है।

इस स्थानके नामसे यहां कपासका व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा है। यहां कई जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। मौसिमके समयमें यहां की गति-विधि अच्छी रहती है। यहां रूईके कई अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं।

जीनिंग फेक्टरियां

महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग फेक्टरी
रणछोड़दास लक्ष्मीचन्द जीन महिदपुर
कापमल गजमल जीन महिदपुर
जसरूप [illegible] जीन

पूर्वकालीन परिचय

भारतके प्राचीन इतिहासकी भांति बम्बई द्वीपका प्राचीन इतिहास भी आज उपलब्ध नहीं है। अतीत्व शताब्दि-समूहने इसपर भी अनेक अन्धकारका पर्दा डाल रक्खा है, जो पुरातत्ववेत्ताओंकी एक मात्र सम्पत्ति, ऐतिहासिक प्रमाणके प्रसंगवश किसी अवसर कभी-कभी आंशिक रूपसे उठ जाता है और अन्धकाराच्छादित इतिहास के पृष्ठोंपर सहसा क्षणिक प्रकाश की झलक दौड़ जाती है। परिणाम यह होता है कि नवीन धाराएं प्रकट हो उठती हैं। ऐसे कई अवसर आये हैं, जब इस द्वीपपुञ्जके प्राचीन इतिहासपर प्रकाश अवश्य पड़ा है, फिर भी अभी तक इसका शृङ्खलाबद्ध इतिहास लेखबद्ध नहीं हो पाया है

इस द्वीपपुंजके प्राचीन इतिहासकी खोजमें लगे हुए व्यक्तियोंसे यदि यह पूछा जाय कि यह द्वीप समूह कहांसे निकल आया, तो एक सामान्य व्यक्तिकी दृष्टिमें ऐसा प्रश्न पूछना ही धृष्टता समझी जायगी परन्तु बात वास्तवमें ऐसी नहीं है। जहां कहीं भी इतिहासको अपने वास्तविक स्वरूपके निर्णय करनेका प्रश्न मिला है वहां अन्य प्रमाणोंकी अपेक्षा भूगर्भ-विद्या-प्रतिपादित तर्कका ही उसे आश्रय लेना पड़ा है। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि भूगर्भ विद्याका इतिहासकी छानबीनसे अत्यन्त निकट तम सम्बन्ध है।

भूगर्भ विद्याके सिद्धांतानुसार यदि इस भूखण्डकी परीक्षा की जाय, तो यही सिद्ध होगा कि यह बिल्कुल भूभाग कुछ काल पूर्व कमसे कम सात विभागोंमें अवश्य विभाजित था। इतना ही क्यों सन् १८८९ के बंबई गाईड्समें उद्धृत डा० [illegible] की खोजके आधार पर यह भी सिद्ध होता है कि कुछ शताब्दी पूर्व यह द्वीपपुंज भारतके प्रधान भूभागका एक अंग था और उसीसे निकला हुआ था। परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों प्रकृतिके स्वाभाविक गुणानुसार भूपृष्ठके ऊंचे-नीचे स्तरमें अधिक परिवर्तन हो गया और एक समय ऐसा भी आया, जब यह उससे अलग हो गया; तथा इसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया। इस द्वीप समूह की भूमि स्वयं इस बातका प्रमाण दे रही है कि उसने रत्नाकर सागरके आतंककारी थपेड़ोंसे भारतके पश्चिमीय तटकी रक्षा की है, वहां परिवर्तन प्रवर्तक अनिष्टकारी भूचालोंका स्वयं अनुभव किया है। इसीसे वहांके भूभागकी परीक्षा भूगर्भवेत्ताओंकी दृष्टिसे यदि की जाय तो पता चलेगा कि भूगर्भकी छिपी हुई अनन्त ज्वालाने अपना कठोर रूप अवश्य दिखाया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इस भागकी समुद्र तटवर्ती भूमि जहां ऊंची नीची हो इसकी शोभा बनी है वहां स्वयं इस द्वीप समूहके समीपकी समथल भूमि अगाध समुद्रके गर्भमें निमग्न हो गयी है।

---

* इन्होंने खोदते समय मेंढकोंकी हड्डियां निकलीं और १९ वीं शताब्दीके अन्तमें अब वर्तमान [illegible] की खुदाई हो रही थी उस समय २२ फीट नीचे जङ्गल और एक दबा हुआ जंगल [illegible] इस जंगलमें [illegible] आदिके वृक्ष थे जो बम्बईके समीपवर्ती जंगलोंमें अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। [illegible]

तराना

होल्कर स्टेटके महिद्पुर परगनेका यह एक अच्छा आबाद कसबा है। यह स्थान उज्जैनसे २४ मीलकी दूरीपर जी० आई० पी० लाइनके तरानारोड स्टेशनसे ५ मीलपर बसा है। इस स्टेशनसे गांव तक मोटरलारी जाती है। इस परगनेके आस पास जंगल बहुत हैं। यहांकी भूमि अच्छी उपजाऊ है। यहांकी पैदावारमें कपास, गेहूं, ज्वार, मक्का, घी आदि है। यहां स्वर्गीय महारानी अहिल्या बाईका बनवाया हुआ तिलकेश्वर महादेवका मन्दिर है। इस स्थानमें गर्मी की औसत १०२ और जाड़े की औसत ७२ रहती है। प्रति वर्ष सरासरी ३४ इंच वर्षा होती है।

इस स्थानके मालसे यहां जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियोंकी खासी संख्या है। मौसिमके समयमें इन फेक्टरियोंमें काफी चहल पहल रहती है। निम्न लिखित जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां यहांपर चल रही हैं।

रायबहादुर हुकुमचन्द कस्तूरचन्द	जीनिंग फेक्टरी
गोपालजी नन्दराम	,, ,,
मदनलाल नंदराम	जीनिंग प्रेसिंग
नारायणजी बद्रीनारायण	जीनिंग प्रेसिंग
ओंकार गणेशदत्त	जीनिंग फेक्टरी

कॉटन एण्ड ग्रेन मरचेंट्स

रा० ब० कस्तूरचंद काशलीवाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक रा० ब० सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका मुख्तिसर परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। आपकी यहांपर आपके बड़े भ्राता राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी नाइटके साझेमें एक जीनिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त इस फर्ममें गल्ला और रुईका व्यवसाय तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। इस फर्मकी यहांपर बहुतसी काश्त है, जिसके द्वारा हजारों मन गल्ला प्रति वर्ष पैदा होता है।

मेसर्स गोपालजी नंदराम *

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मदनलालजी हैं। आपकी फर्मपर रुई, कपास और गल्लेका बहुत अच्छा व्यापार होता है। इस फर्मकी यहांपर एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी भी है। सेठ मदनलालजी, नगरके बहुत प्रतिष्ठा—सम्पन्न पुरुष हैं। आपकी फर्म यहां अच्छी मानी जाती है

* खेद है कि आपका विशेष परिचय हमें नहीं प्राप्त हो सका। —प्रकाशक

होता है। भटका अर्थ प्रायः रियासतसे मिलता जुलता है, इस प्रकार कोल-भटका यदि कोई अर्थ हो सकता है तो यही है, कि कोलियोंकी रियासत। अतः ऐसा अनुमान होता है कि वर्त्तमान कोलावाके समीप ही इस द्वीप-पुञ्जके दो दक्षिणी द्वीपोंमें ही प्रथम कहीं पर बस्ती बसाना आरम्भ हुआ होगा।

बस्तीके तीसरे स्थानका पता वर्त्तमान मांडवी मुहल्लेकी कोलीवाड़ी अथवा डोंगरी कोलीवाड़ेके कितने ही जर्जरित घर अब भी दे रहे हैं। इस स्थानसे आजकल समुद्र दूर है, पर यह भी युगके परिवर्तनकारी स्वरूपकीही एक कला मात्र है। कोलियोंके झोंपड़े इस बीसवीं शताब्दीके ईंट रोड़ेमें दब गये हैं अवश्य, पर माण्डवीकी 'दरिया स्थान' नामक एक गली आज भी समुद्र-तटकी स्मृति दिला रही है।

इसी प्रकार वर्त्तमानका 'कैवेल' स्थान (जिसमें आजकल धोबी तलाव भी सम्मिलित है) भी किसी छिपे हुए इतिहासकी स्मृति दिलाता है। पुरातत्ववेत्ताओंका मत है कि 'कैवेल' शब्द 'कोल-वार' शब्दसे ही बिगड़ कर बना है। अतः कोलवार अर्थात् कोलियोंके झोंपड़ेसे भी यही सिद्ध होता है कि सम्भवतः कालबादेवी रोड, पुरानी हनुमान गली आदिके विस्तृत भागपर भी किसी समय कोलियोंके झोंपड़े रहे होंगे।

इस द्वीपपुञ्जमें टेकरियोंकी कमी नहीं थी। टेकरियों पर भी बस्ती बसी हुई थी जो टेकरी परके गांव कहाते थे, जैसा कि वर्त्तमानका गिरगांव सूचित करता है। यह गांव भी गिरि अर्थात् टेकरी पर ही बसा हुआ था। कैवेलसे गिरगांव जाते हुए जो मूंगभट्ट लेनी पड़ती है वह भी यही सूचित करती है कि मूंगा नामके किसी कोलीकी यहां जागीर सी थी। भट्टका अर्थ जागीर होती है।

इस द्वीपपुञ्जके चौथे द्वीपमें भी कोली ही रहते थे जैसा कि वर्त्तमानके मझगांव और और धुलपदेव मन्दिर से सिद्ध होता है। मझगांवमें भी कोली-वाड़ी है। कोली आरम्भसे ही मछली मारकर जीवन निर्वाह करते आये हैं, परन्तु इस गांववालोंने अपना व्यवसाय भी मछली मारना ही रक्खा। अतः इनके झोंपड़ोंके समूहका नाम ही मच्छ-गांव पड़ गया।

इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंके सम्बन्धमें किये गये उपरोक्त विवेचनसे यह बात निश्चित हो जाती है कि अशोकके बाद जब शातकर्णी राजवंशके हाथमें इस द्वीपका शासन भार गया, तब भी इस द्वीपमें कोली ही रहते थे। जिस युगमें दूर देशोंसे व्यवसायी आकर थानेके पासका स्थान अपने विश्रामके लिये निश्चित करते थे उस समय भी कोली ही इस द्वीपपुञ्जमें बसे हुए थे।

यह तो निश्चित ही है कि इस द्वीप पुंजके आदि निवासी कोली थे। ये लोग अनार्य परिवारके हैं इनकी भाषा, इनका भेष और इनके भाव सभीमें अनार्य सभ्यताकी झलक आज भी मिलती है। ये लोग भारतके प्रधान भूभागसे स्थल मार्ग द्वारा इस द्वीप पुञ्जमें गये, परन्तु इनकी आमदरफ्त बराबर जारी रही भारतके समुद्रतटवर्ती भूभाग परके प्रभावसे सदा ये लोग प्रभावित पाये गये हैं। कोंकन प्रदेशके शासनके साथ ही इस द्वीपपुंजका भी शासन सूत्र गुंथा हुआ था। जैसे-जैसे शासन परिवर्तन इस प्रान्तमें हुए, वैसे-वैसे परिवर्तनका प्रमाण इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंमें भी पाया जाता है। सम्भवतः एक युग यहां ऐसा भी आया होगा, जब यहां मौर्य शासन रहा होगा। क्योंकि किसी युगमें यहांके कोली अपने नामके पीछे 'मोरे' शब्द जोड़

मेसर्स जगन्नाथ नारायण दीक्षित

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० शंकरप्रसादजी दीक्षित हैं। आपके पितामह ६० वर्ष पूर्व अपने मूल निवास स्थान मोहनगंज (जिला कानपुर) से धार आये थे। धारसे उज्जैन आकर कुछ समय तक आपने सर्विस की। आपके देहावसानके बाद आपके पुत्र श्री जगन्नाथजी दीक्षितने बहुत छोटी मात्रामें दूसरेके साझेमें कारबार करना आरम्भ किया। और इस वर्षके बाद अपनी स्वतन्त्र दूकान की। तबसे यह दूकान बराबर तरक्की करती जा रही है। पं० शंकरप्रसादजी दीक्षित सज्जन व्यक्ति हैं। वर्तमानमें इसके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

तराना—मेसर्स जगन्नाथ नारायण दीक्षित—इस दूकानपर आसामी लेन देन, रुई, गल्ला और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स बिहारीलाल मांगूलाल अग्रवाल

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत मांगूलालजी हैं। करीब १०० वर्ष पहिले आपके पितामह बलदेवरामजीने जयपुर स्टेटसे आकर यहांपर मिठाईकी दूकान की थी। आपके बाद क्रमशः पन्नालालजी, बिहारीलालजी और मांगूलालजीने इस दूकानके गल्लेके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया। श्रीयुत मांगूलालजी बहुत सरल तथा सीधे व्यक्ति हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

तराना—बिहारीलाल मांगूलाल—इस दूकानपर गल्लेका बड़े प्रमाणमें व्यवसाय होता है।

काटन एण्ड ग्रेन मर्चेंट

राय बहादुर कस्तूरचन्द कासलीवाल
गोपालजी नंदराम
जगन्नाथ नारायन
जवरचंद बद्रीनारायन
रूपड़ूसिंह जुगुलकिशोर
नैनराज नाथूराम मंत्री
पन्नालाल मोतीलाल
बिहारीलाल मांगूलाल
रघुनाथ पारसराम
रतनचन्द रामगोपाल
लखराज भागीरथ

चांदी सोनेके व्यापारी

श्रीराम सारड़ा, पन्नालाल हीरालाल
लक्ष्मीनारायन बालमुकुन्द

किरानाके व्यापारी

परसराम गोकुलदास
मदनलाल कन्हैयालाल
मोदी आर० पी०
रेवाराम हीरालाल

कपड़ेके व्यापारी

पूनमी हीरालाल	नाथूराम मोतीराम
प्रह्लाद चतुर्भुज	नैनराज नाथूराम
बालेश खेमचन्द	नन्दकिशन छितरलाल

सभ्यताका प्रसार किया और महाराजके साथ आये हुए राजपरिवारने प्रचार कार्यमें जीवन फूंक दिया। आर्य परिवारने अपनी अपनी वंशपरम्पराके अनुसार हिन्दू संस्कृतिका बीज वपन किया। यह सब हो ही रहा था, कि सन् १३०३ ई० (शाके १२२५) में महाराज भीमदेवका स्वर्गवास हुआ और सन् १३१८ में दिल्लीके यवन शासक मुबारकने महिकावती (माहिम) पर आक्रमण कर दिया, परन्तु हिन्दू शासनका अन्त सन् १३४८ ई० के बाद हुआ और इसके पश्चात यहां पर गुजरातके मुसलमानोंका राज्य स्थापित हुआ। पर उन्होंने भी अधिक समय तक शासन नहीं किया और सन् १५३४ की बसई वाली सन्धिके अनुसार यह द्वीपपुञ्ज पुर्तगालवालोंके हाथ आया और सन् १६६२ में यह दहेजके रूपमें अंग्रेजोंको मिला।*

आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना चाहिये कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको अपनी कितनी शक्ति व्ययकर इस स्थलको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके मतानुसार कहा जायगा कि—

'बम्बई द्वीप मझगांव, सिवरी, वडाला, तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव, धारावी, और वदला बलात् लिये गये; तथा कुलाबा वहांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गया।

इस प्रकार वर्तमान बम्बई बनी।

इस द्वीपपुंजके गौरव प्राचीन इतिहास पर एक दृष्टि डालते ही कहना पड़ेगा, कि यहां ही रंगमंचपर कितनेही पात्रोंने समय २ पर यहां आकर अपना २ कौशल दिखाया है कालकी कालिमामें अलक्ष होते हुए भी उनके कार्योंकी स्मृतिके एक मात्र आधार चिह्न आज भी अनुभवमें आते हैं। असभ्य कोली जातिने [illegible] द्वीपपुञ्जमें झोपड़े खड़े किये और मछली मार कालक्षेप भी कर डाला। मौर्य राजवंशने यहां [illegible] किया। शिलाहार राजवंशने मन्दिर निर्माण कराये और देवगिरिके शासकोंने राज्यव्यवस्था को [illegible], जिससे यहां कला-कौशल और उद्योग-धन्धोंका सूत्रपात हुआ। अतः स्पष्ट ही है कि इस हिन्दू [illegible] इसके वास्तविक स्वरूपका निर्माण हुआ, परन्तु इसी बीच इस्लामकी आग सुलगी और [illegible] निकुञ्ज परतन्त्रताकी वह्निसे भस्मी भूत हो भूमिमें मिल गया।

नाम करण

इस द्वीपपुंजका नाम बम्बई कैसे पड़ा, इस सम्बन्धमें पूरा मतभेद है। [illegible] 'अपरान्तक' प्रदेशके अन्तर्गत माना जाता था यहां महाराज भीमदेवके समयमें [illegible] हो यह अपनी प्रतिष्ठा प्रस्थापित करनेका सूत्रपात करता है। परन्तु पुर्तगालवालों [illegible] के नामसे इसका सम्बोधन होता है। इसी आधारको लेकर लोग कहते हैं [illegible] कहना आरम्भ किया होगा। परन्तु यह युक्तियुक्त नहीं प्रतीत होता [illegible]

---

* आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना [illegible] शक्ति व्ययकर इसके स्वरूपको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके [illegible] सिवरी, वडाला तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव [illegible] बलात् [illegible] वहांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गया। इस प्रकार बम्बई बनी।

चन्द्रावती गंज

इस बस्तीको सेठ दीपचन्दजीने बसाया है। जिनका परिचय नीचे दिया जाता है। यह स्थान फतेहाबाद स्टेशनके सामने करीब ४ फर्लांगकी दूरीपर बसा हुआ है।

मेसर्स धन्नालाल दीपचन्द

इस फर्मके मालिक झाबा (रामगढ़) के निवासी हैं। इस दूकानको फतेहाबाद ग्वालियर स्टेटमें स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस दूकानके कामको सेठ मोहनलालजी और धन्नालालजीने जमाया। इनके बाद सेठ दीपचन्दजीने इसके कारोबारको सम्हाला। आपके जीवनमें एक बड़ी भारी घटना यह हुई, कि फतेहाबादके जागीरदारसे आपसमें मनोमालिन्य हो जानेके कारण आपने फतेहाबादके नजदीक इन्दौर स्टेटमें महारानी चन्द्रावती बाईके नामसे चन्द्रावतीगंज नामक मंडी, अपना निजका एक लाख रुपया खर्च करके बसाई।

इन्दौर स्टेटमें बस जानेसे आप की मान वृद्धि खूब हुई। महाराजा इन्दौरने [illegible] 'राय रतन' की पदवी प्रदान की [illegible] के सिरदार [illegible] हुए आप थे। [illegible] है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय [illegible]

मेसर्स धन्नालाल दीपचन्द [illegible] इस दूकानपर कपासका [illegible] व्यापार होता है।

रामपुरा

[illegible]

ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इस द्वीपपुंजका प्रबन्ध भार ले सबसे प्रथम आत्मरक्षार्थ एक दुर्ग निर्माण करनेका निश्चय किया और समुद्र पूरकर जलसे स्थलकी रचना करनेका आयोजन भी आरम्भ कर दिया। कम्पनीकी कल्पनामें यह बात इसलिये आयी, कि वह भूमि पूरकर नमक बनानेका कार्य करना चाहती थी और इसी उद्देश्य से यह कार्य भी अविलम्ब आरम्भ हो गया। सबसे प्रथम महालक्ष्मी और वर्लीके बीचसे जलराशि निकालकर भूमिकी रचना करनेका कार्य हाथमें लिया गया। इसके बाद द्वीपके मध्य भागमें समुद्र पूरने का कार्य आरम्भ हुआ, इस प्रकार आरम्भ होनेवाले कार्यने प्रारम्भमें बालशक्तिसे ही उन्नति करनी प्रारम्भ की, परन्तु कुछ काल व्यतीत हो जानेके बाद इस ओर लोगोंका ध्यान अधिक उत्साहसे जाने लगा और फल यह हुआ, कि व्यक्तिगत उद्योगके स्थानमें सामूहिक शक्तिसे काम आरम्भ हुआ। बम्बई टाइम्सके ता० ६ फरवरी सन् १८३९ वाले अंकसे ज्ञात होता है कि सन् १८३६-३७ के बीच कोई सुदृढ़ कम्पनी संगठित की गयी थी, जो कुलाबाकी ओर जोरोंका काम कर रही थी। सन् १८४४ की रेलवे कमेटी रिपोर्टसे पता चलता है कि वाड़ी बन्दर और चिंच बन्दरके बीचकी भूमि भी जलराशिके गर्भसे निकल चुकी थी। इसी प्रकार बम्बई क्वार्टरली रिव्हयू नामक मासिक पत्रका भी यही मत है, कि सन् १८५५ ई० तक द्वीपका अधिकांश भाग पूरा जा चुका था। इतना होते हुए भी इस कार्यका भार उठाने वाली कम्पनियोंके पास आर्थिक सामर्थ्य पर्याप्त न होनेसे इच्छित लाभ और मनचाही सफलता अभी तक न मिली थी; पर इसी समय अमेरिकन सिविल वार नामक घरेलू युद्धके छिड़ते ही इस द्वीप पुंजकी परिस्थितिने पल्टा खाया और कितनी ही कम्पनियां बन गयीं।

इस युद्धके छिड़ते ही बम्बई नगरको स्वर्ण सुअवसर मिला। इंग्लैण्डके लंकाशायर केन्द्रमें रूईका भयंकर अकाल पड़ा जिससे यहांका बाजार नवजीवनसे उत्फुल्लित हो उठा। यहांके व्यवसाय कुसुमकी मुकुलित कलिका प्रफुल्लित हो निज सौरभसे संसारको मंत्र मुग्ध करने लगी। पलक मारते यथेष्ट पूंजीकी प्रकट प्रतिमा अपने प्रकाश पुंजसे नवस्फूर्तिका संचार करने लग । कितनी ही नयी कम्पनियोंका जन्म हुआ और उन्होंने समुद्रको पूर कर भूमि निकालनेका उद्योग हाथमें लिया। इस कार्यमें यहांकी प्रबन्ध व्यवस्थाने सहायता दे उनके उत्साहको और भी पुष्ट कर दिया। इस द्वीपपुंजके पूर्वीय पार्श्व पर मोदी खाड़ी, एलफिन्स्टन, मझगांव, टांक बंदर तथा फ्रेयररोड़ और पश्चिमीय पार्श्व पर कुलाबासे मालबार पहाड़ी तककी भूमि समुद्रके गर्भसे निकाल कर बस्ती बसानेके योग्य बना दी गयी।

मोदी खाड़ीवाला क्षेत्र कर्नाक बन्दरसे टकसाल घरतक माना जाता है। इस क्षेत्रके पूरनेका कार्य, प्रथममें यहांका प्रबन्ध भार वहन करनेवाली सरकारने आरम्भ किया था, परन्तु कुछ समय बाद एक दूसरी व्यवसायी कम्पनीने यह कार्य अपने हाथमें लिया और उसे पूरा कर डाला। इसी पूरी हुई भूमिपर जी० आई० पी० रेलवेका प्रधान रेलवे स्टेशन जो बोरी बन्दरके नामसे सुख्यात है, बना हुआ है। इस कम्पनीने लगभग ३० लाखकी पूंजी व्यय कर ८३ एकड़ भूमि तैयार की थी। एलफिन्स्टोन क्षेत्रके पूरनेका काम एक दूसरी कम्पनीके हाथमें था। इसने १४½ लाख व्ययकर २८६ एकड़ भूमि निकालनेकी व्यवस्था की, परन्तु इसके शेयर-का भाव गिर जानेसे यह कम्पनी अधिक समय तक कार्य न कर सकी और अन्तमें टूट गयी। इधर यहांकी सर-

रहे हैं। एक समय ऐसा था जब यहांकी बनी तलवार, बंदूक और गुप्तियोंको प्रत्येक वीर युद्धमें साथ रखना बहुत आवश्यक समझता था। अस्त्र शस्त्रोंके जमानेमें इसने बहुत ख्याति पाई थी। आज भी यहां गुप्तियां, बंदूकें, तलवारें, व सरोते अच्छे बनते हैं।

यह स्थान अरावली पहाड़के ठीक नीचे बसा हुआ है। गर्मीके समय यहां तीव्र गर्मी होती है। शहरमें पानीके ५ तालाब हैं, पर गर्मीके दिनोंमें इनमें पानी नहीं रहता। यहां दूध कसरतसे होता है। इसके अतिरिक्त शहद, मोम, गोंद मेंहदी आदि भी यहांसे बाहर भेजी जाती है। यहांके व्यवसायियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स शिवलाल चिमनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मारवाड़ है। इस फर्मको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए। इसे सेठ शिवलालजीने स्थापित किया। आपके कोई पुत्र न था। सेठ शिवलालजीके बाद आपके भाई सेठ चिमनलालजीने इस दूकानके व्यापारको बढ़ाया। सेठ चिमनलालजीके ३ पुत्र थे। सेठ मगनजी सेठ जड़ावचन्दजी और सेठ गुलाबचन्दजी। इनमेंसे सेठ गुलाबचन्दजीके वंशज इस फर्मके मालिक हैं।

सेठ गुलाबचन्दजीके पुत्र मन्नालालजी अच्छे सरदार आदमी थे। आपके हाथोंसे इस दूकानके व्यापारमें अच्छी तरक्की हुई। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ छगनलालजी हैं। आपने यहां एक जीनिंग फेक्टरी खोली है। धार्मिक स्थानोंमें आपने कई जगहोंपर जीर्णोद्धार करवाये हैं। यह दुकान रामपुरेमें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ छगनलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री मानसिंहजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ रामपुरा—शिवलाल चिमनलाल—यहां मनोती, गल्ला, कपास, रुई, आढ़त और हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

२ रामपुरा—मगनीराम जड़ावचंद—इस नामसे कपड़े की दूकान है।

३ वर्द्धमान जीनिंग फेक्टरी रामपुरा—यहां इस नामकी आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

समुद्रके तूफानको कम करनेके लिये तथा व्यवसायकी सहूलियतके लिये नवीन जमीन तैयार करनेके लिये समुद्रके बीचमें एक सोलह फुटकी दीवाल बांधी जा रही है, इस दीवालको पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओरसे बांधनेका काम जारी है। इस दीवालके बनवानेमें करीब १२ लाख ५० हजार टन पत्थर और १०८५७४० घनफीट कीचड़ और सिमेंटकी आवश्यकता होगी। यह दीवाल बहुत वैज्ञानिक ढंगसे अत्यन्त व्यय पूर्वक बनवायी जा रही है।

इतना अधिक पत्थर आसानीसे मिलना अत्यन्त कठिन है इसकी सुविधाके लिये म्युनिसिपैलेटीने कांदीवलीके समीप एक टेकरीको तोड़ना आरंभ किया है और वहांका टूटा हुआ पत्थर वैगनों द्वारा समुद्र तक पहुंचाया जाता है। उपरोक्त दीवाल जब कुलाबासे मरीन लाइन तक पूरी हो जायगी तब इसके बीचका हिस्सा ड्रेजर नामकी एक मशीन द्वारा हारबरके तलमेंसे कीचड़ निकालकर भरा जायगा। इस बीचके स्थानको भरनेके लिये पचीस करोड़ घनगज कीचड़की आवश्यकता होगी। इस कीचड़को १०१० टन कीचड़ प्रति दिन ले जानेवाली २ ट्रेनें यदि सालमें ३०० दिन काम करें तो इतना स्थान ४१ वर्षमें भरा जा सकता है, परन्तु ड्रेजर नामकी मशीन द्वारा ७० क्यूबिक गज गहराईमेंसे २००० फुट कीचड़ निकाल कर १० हजार फुट दूर ले जाया जा सकता है। यह मशीन दिनमें १५ घंटा काम करके ३० हजार टन कीचड़ निकाल सकती है।

इस प्रकार इस काममें सन् १९२३ तक करीब ३ अरब से भी अधिक रुपयोंकी सम्पत्ति व्यय हो चुकी है। इस व्ययसे अभी करीब तिहाई काम हो चुका है। अनुमान है कि इतनी जमीनको भरनेके लिये ७ अरब २ करोड़ ४३ लाख रुपया व्यय होगा। इसके द्वारा ११४५ एकड़ नयी जमीन निकल आयेगी, वह जमीन नीचे लिखे अनुसार काममें लाई जायगी। २३७ एकड़ रास्तेके काममें, १८७ एकड़ मैदानमें, २६७ एकड़ मिलिटरीके काममें, तथा ४५४ एकड़ जमीन बिल्डिंग बनानेके काममें लायी जायगी।

इस प्रकार इस स्थान की विपुलता होनेके बाद पशुओंके तबेले कसाईखाने फैक्टरियां मिल्स वगैरह बम्बई-से दूर लगानेकी योजना भी यह विभाग कर रहा है।

म्यूनिसिपल कार्पोरेशन

द्वीपपुंजसे सुविस्तृत जनाकीर्ण नगरकी रचनाका इतिहास व्यवसायके विकासका ही प्रतिबिम्ब है। नगरके रूपमें यहांके सुप्रबन्धमें भारतीयोंको भी सेवा करनेका अवसर मिला है। जिस सामूहिक शक्तिके द्वारा लोग अपने घरका प्रबन्ध कर अपने सामीप्य जनोंकी सेवा कर सकते हैं उसे म्यूनिसिपैलिटी अथवा स्वायत्त्व शासनकी प्रतिमा कहते हैं। यहांके म्युनिसिपल कार्पोरेशनके वर्तमान स्वरूपका निर्माण पूर्वकालकी प्राकृतिक व्यवस्था-को आधार मानकर ही किया गया है, सुव्यवस्थाकी दृष्टिसे यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको छोटे २ वार्डोंमें विभाजित किया गया है। इन वार्डोंकी रचना पूर्व-कालीन प्राकृतिक विभागोंके आश्रयको लेकर की गयी है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रबन्धके आरम्भ कालमें इस द्वीपपुञ्जको बम्बई नगरके नामसे जब जब सम्बो-धित किया गया है तब तब उसका भाव बम्बई और माहिमकी संयुक्त बस्तीसे लिया गया है। बम्बई नगरसे दो स्थानोंके सम्मिलित स्वरूपका बोध होता था, जिनमेंसे एकको बम्बई और दूसरेको माहिम कहते थे।

कपड़ेके व्यापारी

किसनजी [illegible] नाहर
केसरीसिंह [illegible] भंडारी
छगनजी [illegible]
रूपजीजी राजमल सुराना
[illegible] चैनमल नाहर
पृथ्वीराज पन्नालाल कटारिया
मगनीराम [illegible]

गल्लेके व्यापारी

[illegible] मानकचन्द
[illegible]
[illegible] पन्नालाल बाफिया

शिवलाल चिमनलाल
शिवचंद पन्नालाल धाकड़

किरानाके व्यापारी

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

लोहेके व्यापारी

अब्दुल हुसेन महम्मदअली

पीतलके बर्तन

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

मानपुरा

[illegible] पहाड़के समीप [illegible] बसा हुआ यह एक छोटासा कसबा है। कहा जाता है कि इस नगरको मान नामक भीलने बसाया था। इसीसे इसका नाम मानपुरा पड़ा। [illegible] तक यह गांव जयपुर राज्यके अन्तर्गत था। जयपुरके तत्कालीन महाराजा [illegible] होलकरको यह दिया था। यह स्थान [illegible] बहुत पसन्द था। आपका स्वर्गवास भी इसी स्थानपर हुआ है। आपकी स्मृतिमें यहां [illegible] छत्री बनी हुई है। जो इन्दौर राज्यकी एक मशहूर वस्तु समझी जाती है।

कुछ समय पूर्व यह कस्बा व्यापारका एक अच्छा केन्द्र था जिन दिनों [illegible] [illegible] बहुत अच्छे व्यापारी व्यापार करते थे। [illegible] [illegible] [illegible] बहुत ही [illegible] [illegible] होता है। फिर भी [illegible] [illegible] है। [illegible] हुआ है।

[illegible] है, और [illegible] हुआ है। [illegible]

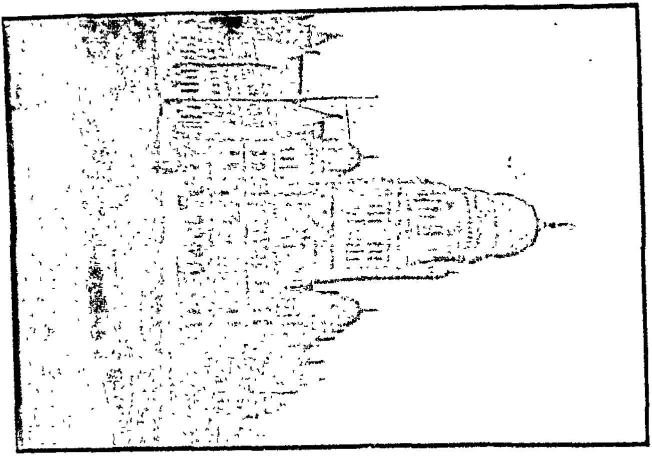

म्युनिसिपल ऑफिस, बम्बई

कपड़ेके व्यापारी

किशनजी जीवराज नाहर
केसरीचंद रखबचंद भंडारी
छव्याजी जड़ावचन्द
ख्यालीजी राजमल सुगना
पन्नालाल तेजमल मारू
पृथ्वीराज मन्नालाल कड़ावत
मगनीराम जड़ावचन्द

गल्लेके व्यापारी

गव्वाजी साकरचन्द
हिनीराज मोतीलाल
बच्छराज मन्नालाल खाविया
शिवलाल चिमनलाल
शिवचंद मन्नालाल धाकड़

किरानाके व्यापारी

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

लोहेके व्यापारी

अब्दुल हुसेन महम्मदअली

पीतलके बर्तन

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

भानपुरा

सुप्रसिद्ध भर वली पहाड़के रमणीय अंचलमें बसा हुआ यह एक छोटासा कसबा है। ऐसा कहा जाता है कि इस गांवको भाना नामक भीलने बसाया था। इसीसे इसका नाम भानपुरा पड़ा। करीब १००-१२५ वर्ष पूर्व यह गांव जयपुर राज्यके अंतर्गत था। जयपुरके तत्कालीन महाराजा माधौसिंहजीको मदद करनेके बदलेमें महाराजा यशवंतरावको यह जिला मिला था। यह स्थान महाराजा यशवंतरावको बहुत पसंद था। आपका स्वर्गवास भी इसी स्थानपर हुआ है। आपकी स्मृतिमें यहांपर एक बड़ी रमणीक छत्री बनी हुई है। जो इन्दौर राज्यकी एक मशहूर वस्तु समझी जाती है।

कुछ समयके पूर्व यह कसबा व्यापारका एक अच्छा केन्द्र था जिन दिनों अफीमका व्यापार चलता था, उन दिनों यहांपर बहुतसे अच्छे २ व्यापारी व्यापार करते थे। मगर अफीमका व्यवसाय बंद होने से और पासमें भवानीगंज मंडीके खुल जानेसे यहांका व्यापार नष्ट होगया और आज यह कसबा व्यापार शून्य होकर बरबाद होता जारहा है। फिर भी पानकी खेती होनेसे इसका व्यापार यहांपर अच्छा चल रहा है। यहांसे बहुत दूर दूरके प्रान्तों तक पान एक्सपोर्ट होता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य भी यहांका बड़ा रमणीक है इसके पाससे ही एक नदी बह रही है, और उसके दूसरे किनारे भरवली का रमणीक पहाड़ खुला हुआ है। इस पहाड़में कई सुन्दर प्राकृतिक कुण्ड, झर-

एक ओरसे दूसरी ओर जाना कठिन मालूम होता है। एक स्थान पर ५ मिनिट खड़े रहकर आने और जानेवाली मोटरोंकी संख्या गिनी जाय, तो ५०० मोटरें हमारी दृष्टिके सामने गुजर जावेंगी। बम्बईका सोनापुर स्मशानघाट भी इसी सड़कके एक किनारे है।

२५—गिरगांव—सब प्रकारके स्टोर्स एवं माल वेचनेवालोंकी दुकानें हैं।

२६—फारसरोड-गोलपीठा—यहां कई नाटक एवं सिनेमा कम्पनियां हैं। बम्बईके मवालियोंका यह खास स्थान है। इस स्थानपर जोखम लेकर जानेमें बड़ी जोखम है।

२७—नल बाजार-भिंडीबाजार:—यहां सब प्रकारकी सस्ती वस्तुएं बिकती हैं। नलबाजारका मारकीट यहीं पर है। यहां चोर बाजारके नामसे चार पांच गलियां हैं, जहां बहुत बड़ी तादादमें पुराने लोहेके सामान, तरह तरहके बढ़िया फरनीचर, हायकरीके सामान, पुराने कोट, कम्बल, कटलरी आदि आदि सब प्रकारके सामान पुराने और नये सभी प्रकारके बिकते हैं। सन्ध्या समय ठसाठस भरे हुए बाजारमें जेबकट और मवालियोंसे विशेष सावधान रहना चाहिये।

२८—ग्रांटरोड:—यहां मुतफर्रिक फर्म्स, होटल तथा नाटक-सिनेमा कम्पनियां है। इसके अतिरिक्त लेमिंगटनरोड चर्नीरोड आदि बहुत बाजार हैं। पर वे खास व्यापारिक बाजार न होनेसे उनका परिचय यहां देना व्यर्थ है।

२९—पुराना दारूखाना— यहां सब प्रकारका भारी पुराना लोहका सामान बहुत बड़ी तादादमें मिलता है।

बम्बई नगरकी बस्ती

यह शहर समुद्रके किनारेपर बहुत सुन्दर स्थानपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर समुद्र अपनी प्रचंड तरंगोंसे लहरा रहा है। कुछ समय पूर्व यहांके रास्ते व सड़कें बड़ी तंग और संकुचित हालतमें थीं। मगर गवर्नमेंटका एक प्रिय और कृपापूर्ण स्थान होनेसे यहांकी गवर्नमेण्टका ध्यान बहुत शीघ्र इस ओर गया और सन् १८०६ में यहांके गवर्नरने एक विज्ञप्ति निकालकर आज्ञा दी, कि परेलरोड और गिरगांवरोड नामक सड़कें बढ़ाकर ६० फीट चौड़ी कर दी जांय और शेखमेमन स्ट्रीट और डोंगरी स्ट्रीटकी सड़कें बढ़ाकर ४० फीट चौड़ी कर दी जांय। इसके पश्चात् सन् १८१२ में तीसरे आर्डिनेन्स और रेजोल्युशनके मुताबिक किले की सड़कोंमें सुधार हुआ। नगरमें भी सड़कें चौड़ी करनेका कार्य जोरोंसे होने लगा। सन १८३८ में मांडरोडका उद्घाटन हुआ। सन् १८५० में हार्नबी रोड बना और सन् १८६०, ७० के बीच नगरमें ३५ बड़े बड़े राज मार्ग बनकर तैयार हो गये। पहले इन सब सड़कोंका काम म्युनिसिपल कारपोरेशनके हाथोंमें था, परन्तु सन् १८८८ में जब सिटी इम्प्रूवमेण्ट-ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभाग स्थापित हुआ, तभीसे यह कार्य इस विभागके हाथमें है। यहांकी सड़कोंमें धीरे धीरे लगातार सुधार होता गया और आज वे सब इतनी सुन्दर और विशाल अवस्थामें हैं कि देखकर तबियत प्रसन्न हो जाती है। प्रायः सभी सड़कें अलकतरेसे पाट दी गयी हैं जो इस समय आईनेकी तरह चमकती हैं। इन सड़कोंपर प्रायः दिनमें दो बार छिड़काव होता है। पहले यह छिड़काव समुद्रके पानीसे होता था पर वैज्ञानिक दृष्टिसे यह अस्वास्थ्यकर सिद्ध होनेकी वजहसे अब मीठे पानी का छिड़काव होता है।

जातियोंमें इसका स्थान ऊंचा है। पारसी समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसके अंदर पाया जाने वाला स्त्री स्वातंत्र्य है। इस समाजकी सभी स्त्रियां ऊँची शिक्षासे शिक्षित और सुधरे हुए विचारोंकी होतीहैं। उनका गार्हस्थ-जीवन, दाम्पत्य-जीवन तथा मातृ-जीवन सभी उच्च कोटिके हैं। किसी प्रकारका परदा न होते हुए भी उनका चरित्र बड़ा उज्ज्वल है और शुद्ध आबहवामें अपने पति पुत्र और स्नेही व्यक्तियोंके साथ स्वच्छन्दता पूर्वक घूमते रहनेसे उनका स्वास्थ्य भी उच्च कोटिका रहता है। इस समाजके जीवनने सारे बम्बई शहरके ऊपर अपना एक अच्छा और वांछनीय प्रभाव डाला है।

भाटिया—बम्बईका भाटिया समाज एक धार्मिक समाज है। परंपरासे चले आये हुए धार्मिक विश्वासोंपर इस समाजकी अटल श्रद्धा है। यह समाज अपने धार्मिक विश्वासोंके नामपर लाखों रुपया उदारतापूर्वक खर्च कर देता है। इस समाजके व्यक्ति बड़े सरल सात्विक और व्यापार-कुशल होते हैं। इस समाज में स्त्री-स्वाधीनताकी भावनाएं पारसी समाजकी तरह उदार नहीं हैं। बालविवाह इत्यादि कुरीतियां भी इस समाजमें काफी तौरपर पायी जाती हैं। फिर भी यह समाज परदेकी गंदी, वीभत्स और स्वास्थ्य का नाश करनेवाली भीषण प्रथासे मुक्त है। गुजराती समाजकी स्त्रियां परदेका बंधन न होनेकी वजहसे स्वच्छन्द वायुमंडलमें टहल सकती हैं।

दक्षिणी—बम्बईका दक्षिणी समाज एक सुधरा हुआ सुशिक्षित और उन्नत विचारोंका समाज है। यद्यपि इस समाजने व्यापारिक जगतमें अधिक ख्याति प्राप्त नहीं की है पर अपने विचारोंकी गंभीरता एवं अपनी राजनैतिक प्रौढ़ताके लिये यह भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं। इस समाजमें भी स्त्रियोंकी शिक्षा—दिक्षा की ओर काफी ध्यान दिया जाता है। परदा, बाल विवाह आदि भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंसे यह समाज मुक्त है।

मारवाड़ी—मारवाड़ी समाज अपने व्यापार कौशल और अपनी उद्यमशीलताके लिये संसारमें प्रसिद्ध है। हिन्दुस्थानका शायद ही कोई नगर, शहर, कस्बा ऐसा होगा, जहां मारवाड़ी जातिने पहुंचकर अपने व्यापारका सिक्का न जमाया हो। मगर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि इस जातिकी व्यापारिक विशेषता और उदार प्रवृत्तियां जितनी बढ़ी हुई हैं उतने ही इसके सामाजिक रिवाज पिछड़े हुए हैं। यदि आज इस जातिके लिए विदेश यात्राके द्वार खुले हुए होते तो क्या आश्चर्य है कि कलकत्ता आदि स्थानोंकी तरह लन्दन और न्यूयार्कके बाजारोंमें भी इस जातिका व्यापार चमकता हुआ नजर आता। केवल विदेश यात्रा ही क्यों बालविवाह, वृद्धविवाह; अनमेल विवाह परदा आदि भयङ्करसे भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंने इस जातिको जर्जर कर रखा है। परदेकी प्रथाकी वजहसे इस जातिकी नारियां पालके आमोंकी तरह पीली, दुर्बल, अस्वस्थ और कमजोर संतानोंकी माताएं हो रही हैं। बाल और अनमेल विवाहकी वजहसे मारवाड़ी संतानें दुर्बल और सत्व-हीन होती हैं। जब इतनी बुरी सामाजिक अवस्थामें भी यह जाति व्यापारके इतने ऊंचे शिखरपर बैठी हुई है तब यदि ये कुरीतियां निकल जाय तो यह जाति और भी कितनी उन्नत हो जायगी उसकी कल्पना भी आनन्द दायक है।

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

अतः उपरोक्त विवेचनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह द्वीपपुञ्ज अभी कुछ वर्ष पूर्व जलराशिसे प्रकट नहीं हुआ वरन् यह बहुत ही प्राचीन भूखण्ड है। इसका आकार प्रकार अंग्रेजी भाषाके (H) अक्षरके समान था और सात छोटे २ द्वीपोंका यह एक द्वीपपुञ्ज था, जो आज एक भूभागका स्वरूप ग्रहण कर १२ लाखके जन समाजको आश्रय दे रहा है।

ईस्वी सन् से पूर्वका इतिहास इस बातका कोई भी विश्वासोत्पादक प्रमाण नहीं देता कि इस द्वीप पुञ्जका स्वतन्त्र रूपसे कोई भी राजनैतिक अस्तित्व था, परन्तु भारतके पौराणिक युगमें यह द्वीपपुञ्ज 'अपरान्तक' प्रदेशमें माना जाता था।

अशोकके समयमें इस द्वीपपुञ्जके समीपवर्ती सोपार (ophir) कल्याण तथा सिम्मुला (chenl) की चर्चा दूर देशोंमें पुरानी हो चुकी थी। * वहांके व्यवसायी संसारके अन्य भूखण्डोंकी यात्रा करते थे। इसी प्रकार मिश्र, फिनीशिया तथा बैबिलोनियांके व्यवसायी यदि अन्य स्थलोंको जाते समय इस द्वीपपुञ्जमें कुछ कालके लिये ठहर गये हों, तो कोई आश्चर्य्य नहीं।

अशोकके बाद शतकरणी अथवा शतवाहनका दौड़-दौरा यहां रहा। डा० भण्डारकरके मतानुसार यह समय लगभग १५० ई० का है। इसी प्रकार इस द्वीपपुञ्जके समीपके थाना नामक स्थानके प्राचीन कागजोंके आधारपर कहा जा सकता है कि पार्थिन बादशाहके समय दूर देशोंसे लोग व्यवसाय करनेके लिये यहां आया करते थे। अतः इन प्रमाणोंसे यही सिद्ध होता है कि इस द्वीपपुञ्जके अस्तित्वका पता पूर्वकालमें भी संसारको था। परन्तु यह भी इसीके साथ सिद्ध होता है कि चाहे मिश्र, मलाका, चीनकी यात्रा करते हुए यूनानी, अरब तथा फारसवालोंने भले ही इस द्वीपपुञ्जमें क्षणिक विश्राम किया हो, पर किसीने भी यहां अपना अड्डा जमानेकी कल्पना कभी नहीं की।

बस्तीका आरम्भ

इस द्वीपपुञ्जमें बस्ती किस प्रकार आरम्भ हुई, इसकी विवेचना यदि इतिहासकारोंकी दृष्टिसे की जाय, तो पता चलेगा कि इस द्वीपपुञ्जके आदि निवासी जल-मार्गसे नहीं, वरन् स्थलके मार्गसे यहां आये और छोटे-छोटे झोंपड़े डालकर रहने लगे। यह युग सन् ईस्वीसे पूर्वकालका है। यहां जिन लोगोंने सबसे प्रथम प्रवेश किया, वे भारतके प्रधान भूभागसे आये और अपनेको कुलिस या कोली कहते थे। इनका रंग काला था और ये मछली मारकर ही कालक्षेप करते थे। कुलिस अथवा कोली शब्दकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें पुरातत्ववेत्ताओंका मत है कि इन शब्दोंका सम्बन्ध भी अनार्य भाषाओंसे है। सम्भवतः ये शब्द द्राविड़ समुदायकी भाषाके हैं। चाहे जो हो; परन्तु ये लोग आज भी अपना अस्तित्व अक्षुण बनाये हुए हैं।

प्रारम्भमें इन लोगोंने इस द्वीपपुञ्जका कौन सा भाग अपने निवासके लिये उपयुक्त माना, यह कहना कठिन है। परन्तु इस नगरके कितने ही वर्तमान नामोंसे इतना तो अवश्य ही अनुमान हो जाता है कि किसी युगमें यहांके आदिम निवासियोंके झोंपड़े इसीके आसपास रहे होंगे। वर्तमान 'कोलाबा' स्थान पूर्वका कोल-भाटसा प्रतीत

* कठियावाड़के गिरिनार और पेशावरके यूसुफजईवाले अशोकके स्तम्भोंमें इस द्वीप पुञ्जकी चर्चा है देखिये Inscriptions of Ashoka vol II Page 24

देना पड़ता है । इससे वे उनकी कुछ भी फिक्र नहीं लेते, और इस प्रकार वे भूख और प्याससे मारे हुए छोटे २ मासूम बच्चे सूर्यकी कड़कड़ाती धूपमें तड़फ २ कर मर जाते हैं। कई ट्रामों और दूसरी गाड़ियोंसे कुचल जाते हैं। महालक्ष्मी नामक स्थानमें प्रति दिन पांच बच्चोंके करीब इस प्रकारके बहुतसे मरे हुए बच्चे म्युनिसिपेलिटीकी लारियों पर लदते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

इस प्रकार बम्बई शहरमें बड़े हृष्ट पुष्ट और दुधारू ढोर केवल थोड़ेसे घाटेके निमित्त कत्ल कर दिये जाते हैं। यह कत्ल बांद्रा और कुर्लाके कसाईखानोंमें होती है। बान्द्राके कसाई-खानेमें गाय, भैंस और बैल मिलाकर लगभग २०० जानवर रोज काटे जाते हैं, जिनमें अधिकांश पशु जवान, दुधारू और प्रथम श्रेणीके होते हैं।

इस कसाईखानेकी फर्शपर बलात्कार पशुओंको ले जाया जाता है। वहांपर जाते ही खूनके बहते हुए फव्वारों, कटे हुए धड़ों और मस्तकोंको देखकर वे निर्दोष पशु एकदम चमक उठते हैं और अत्यन्त भयभीत होकर करुण स्वरमें रोते हैं, चिल्लाते हैं, जीवन रक्षाके लिए वहांसे भागनेका प्रयत्न करते हैं, फिर बलात्कार वे वहां लाये जाते हैं, और आखिरी दूध निकालनेके लिये अत्यन्त निर्दयता पूर्वक लाठियोंसे मारे जाते हैं। जिससे उनके सब अङ्ग ढीले हो जाते हैं मारते २ जब वे मृतप्राय हो जाते हैं उस समय उनका आखिरी दूध निकाला जाता है, और फिर मशीनोंसे वे काट दिये जाते हैं।

इस प्रकार हजारों हृष्ट पुष्ट पशु मनुष्यकी रसना तृप्तिपर निर्दयता पूर्वक बलिदान कर दिये जाते हैं। जिस शहरमें धर्म प्राण भाटिया जैन और मारवाड़ी जातियां प्रचुर धनके साथ वास करती हैं। उसमें इस प्रकारके नारकीय कार्योंको देखकर आश्चर्य होता है। धार्मिक दृष्टिको छोड़कर आर्थिक दृष्टिसे भी इस प्रश्नपर विचार किया जाय, तो यह प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं है। गवर्नमेन्टका यह प्रधान कर्तव्य है कि जिन नारकीय काण्डोंसे देशकी सम्पत्ति का इस प्रकार शीघ्र गतिसे ह्रास होता हो उन्हें रोकनेका प्रयत्न करे और कमसे कम इस प्रकारके हृष्ट पुष्ट और उत्पादक प्राणियोंकी हत्याको रोकनेकी ओर ध्यान दे। यहांके जैन समाजका ध्यान आज इस ओर गया है, मगर इस दिशामें और भी बहुत अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

बम्बईके व्यापारिक साधन

जहाजी व्यापार—वर्तमान युगमें व्यापारकी उन्नतिका सबसे प्रधान साधन जहाजी बेड़ाही है। जिस देशका शीपिंग व्यवहार जितना ही अधिक सुव्यवस्थित होगा, वह देश उतना ही समुन्नत माना जायगा। जिस देशको पक्के मालका एक्सपोर्ट तथा कच्चे मालका इम्पोर्ट करनेकी सब जहाजी सहुलियतें प्राप्त हैं, वही देश आज संसारमें अपना सिर ऊंचा कर सकता है। आज इस व्यवसायमें अमेरिका, इंग्लेण्ड, जापान, फ्रांस, जर्मनी आदि २ देश वायु वेगसे अपनी उन्नति कर रहे हैं, दिन प्रतिदिन नयी २ खोज एवं सुधार हो रहे हैं। लेकिन

थे। इसके उपरान्त ऐसा भी समय यहाँ अवश्य आया होगा, जब यहाँ पर 'चालुक्य' राज परिवारका शासन रहा हो। क्योंकि कोली लोगोंके नामके पीछे 'चोलके' शब्द भी जुड़ा हुआ पाया जाता है।

इस द्वीपपुञ्जकी मलाबार पहाड़ीका इतिहास भी यही बताता है कि कोकन प्रदेशका सम्बन्ध इस द्वीप-पुञ्जसे रहा है। वालकेश्वरकी सेवा करनेके लिये दूसरे लोग यहाँ आते थे और वह युग सन् ६६७ ई० से १२६२ ई० के बीचका है। यद्यपि आज वह प्राचीन शिवमन्दिर नहीं है, पर चौपाटीसे मलबार पहाड़ीपर चढ़ते हुए 'लेडीज् डिमखाना' के पासका 'सिरी रोड' नामक मार्ग पूर्वकालकी पवित्र स्मृति दिखाही देता है। 'सिरी' शब्द 'सीढ़ी' का सूचक है। यह वही पुराना मार्ग है जिससे होकर सिलहरा राजवंशी भक्तमण्डलीके साथ श्री वालकेश्वरजीका दर्शन करने जाया करते थे। यह प्राचीन मन्दिर भी भारतके अनेक मन्दिरोंके समान समयकी भीषण चोटोंसे आज मिट्टीमें मिल गया है।

कोकन प्रदेशपरसे अनार्य-शासनकी जड़ उखड़ी और इस द्वीपपुञ्जपर आर्यसभ्यताका सूर्य चमका। कोकन प्रदेशमें आर्यसभ्यता-मण्डित शासनकी आधारशिला रखनेका श्रेय मुख्यतया देवगिरिके शासकोंको है। डा० फ्लीट० सी० आई० ई० के मतानुसार देवगिरिके नरेश इतिहासप्रसिद्ध रामदेवका अच्युत नायक नामक एक प्रधान, षष्टी द्वीप (वर्तमान साल्सेट) पर सन् १२७२ ई० के लगभग राज्य करता था। उस समय समस्त कोकन प्रदेश देवगिरिके शासनके अन्तर्गत था। परन्तु दिल्लीके यवन शासक अलाउद्दीन खिलजीने देवगिरि पर जब विजय प्राप्त की तो राजवंशकी रक्षाके उद्देश्यसे रामदेवने अपने द्वितीय पुत्र भीमदेवको राजगुरु भरद्वाज गोत्री पुरुषोत्तम पंथ कवळे तथा अन्य ११ सामन्तोंके साथ जलमार्गसे कोकन प्रदेश भेज दिया। पर मार्गमें ही महाराज भीमदेव परनेटा, थड़ी, संजान, दमन तथा शिरगांवके किलोंपर अधिकार कर माहिम (बम्बई) आ पहुंचे। यह स्थान निर्जन तो अवश्य था, परन्तु इसके प्राकृतिक सौन्दर्यसे रीझकर वे यहां पर ठहर गये। आपने अपने लिये यहां पर राज मन्दिर बनवाये और साथवालोंके लिये योग्य स्थान निर्माण कराये। आपने शासन प्रबन्धकी सुविधाके लिये अपने राज्यको १२ तालुकोंमें विभाजित कर दिया। तथा अपने राजगुरुको मळाड़ प्रांत सूर्य ग्रहणके अवसरपर दानकर दिया। *महाराजने इस द्वीप पुञ्जका नाम महिकावती (माहिम) रक्खा।

इस दान पत्रमें प्राप्त अधिकारोंका उपभोग राजगुरुके वंशज जो पटेल कहाते हैं, बाजीरावके समय तक करते रहे हैं। क्योंकि बाजीराव पेशवाने इन लोगोंके अधिकारके सम्बन्धमें एक पत्र बम्बईके अंग्रेज गवर्नरको लिखा था। जिसके उत्तरमें यहांके गवर्नर जानहोर्नने ६ मार्च सन् १७३४ को एक पत्र लिखा था।

राज परिवार और राज कर्मचारियोंके वंशजोंकी बस्तीका विस्तार भी क्रमशः हो चला। पूर्वकी कोळ नामक अनार्य जातिको आर्य सन्तानके समीप बैठ सभ्य बननेका सुअवसर मिला। राजसत्ताने अपन

* Vaidya ac oct appendix के पृष्ठ ८ पर लिखा हुआ है कि वह दानपत्र आज भी मळाड़ (बम्बईका उपनगर) में राजगुरुके वंशजोंके पास है। उस पर लिखा हुआ है कि 'शाके १२२० के माघमासमें महाराजाधिराज बिम्बराइने गोविन्द ठिळकरोंकी विनय अनुसारसे मळाड़ प्रांतको सरदेसाई और पटेल पदवीका वतन २४ हजार रायस्स Royals दे मोल लिया और एक वर्षके बाद राजगुरु पुरुषोत्तम पंथ कवळेको दान कर दिया।

रवाना होता है। इस कम्पनीके पूर्व सन् १८२५में सबसे पहिले बम्बईसे योरोपकी यात्रा भाफसे चलनेवाले जहाजपर की गई, इस यात्रामें ११३ दिन लगे। सन् १८३८ में मासिक डाक भेजनेका प्रबंध किया। यह डाक इण्डियन नेवीके क्रूजरपर मासकी पहिली तारीखको रवाना होकर स्वेज नहर तक स्टीमर पर ही जाती थी, वहां ब्रिटिश एजेंट उपस्थित रहते थे, क्रूजर उनको डाक सौंपकर और उनसे इङ्गलैण्डकी डाक ले वापस भारतके लिये रवाना हो जाता था। इंगलिश एजण्ट आई हुई डाकको कारवोंपर लादकर भूमध्यसागरकी ओर चल देते, रास्तेमें मिश्रकी राजधानी कैरो, तथा मिश्रके एकमात्र महत्वपूर्ण बंदर सिकंदरियामें विश्राम करते हुए समुद्रतटपर पहुंचते। वहांपर इंग्लिश जहाज डाककी प्रतीक्षामें खड़े रहते थे,वे अपनी डाक इन्हें सौंप भारतकी डाक लेकर माल्टा, मार्सेलीज तथा पेरिस होते हुए २६ दिनमें इङ्गलैंडपहुंचते। इतना प्रबंध होते हुए भी वर्षाऋतुके लिये कोई सुप्रबंध नहीं था। बम्बई टाइम्सके ५ सितम्बर सन् १८५३ के अंकसे पता चलता है कि डाकके कुप्रबंधपर असंतोष प्रगट करनेके लिये यहांके नागरिकोंने टाउनहालमें एक सार्वजनिक सभा कर प्रबंध की ओर संकेत करते हुए सरकारकी कड़ी आलोचना की थी।

परिणाम यह हुआ कि गवर्नमेंटने पी० एण्ड ० ओ० कम्पनीको भारत और इङ्गलैंडके बीच डाक लाने और ले जानेका कंट्राक्ट सन् १८५५में दे दिया यह कंट्राक्ट मासमें एकबार डाक ले जानेका था। इतनेपर भी जनता का आंदोलन शांत न हुआ। तब सन् १८६७में फिर पी० एण्ड० ओ० कम्पनीसे साप्ताहिक डाकका कंट्राक्ट किया गया। जहां पहिले २८ दिनमें डाक पहुंचती थी वहां २६ दिनमें ही डाक पहुंचने लगी। इस समय सारी अंग्रेजी डाकके लाने और ले जानेका केन्द्र बम्बई नियत किया गया। सन् १८६९में स्वेजनहर बनी और धीरे धीरे डाककी व्यवस्थाएं सोची जाने लगीं। सन् १८८० में पी० एण्ड० ओ कम्पनीने एक नवीन कंट्राक्ट किया जिससे २६ दिनमें पहुंचाई जानेवाली डाक १७½ दिनमें पहुंचने लगी। बादमें १७½ दिनसे १६½ दिनोंमें डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की गई और फिर अन्तमें सन् १८९८में १६½ दिनकी अवधिको कमकर १३½ दिनमें भारतसे इङ्गलैंड डाक पहुंचानेका नया करारनामा किया गया। यह सुप्रबंध आजतक भली प्रकार चल रहा है। इसप्रकार नियत मितीपर डाक पहुंचानेके लिए भारतसरकार, पी० एण्ड० ओ० कम्पनीको ३ लाख ३० हजार पौंडसे अधिककी आर्थिक सहायता हर साल देती है।

इस प्रकार भारतके डाक विभागके सुप्रबंधसे इस कम्पनीका बहुत सम्बन्ध है। सन् १८६८ के नियमके अनुसार जहाजपर ही डाक छांटकर भिन्न २ झोलोंमें बंदकर रक्खी जाती है। जहाजके बंदरपर पहुंचते ही सब झोले रेलवेके डब्बेमें लाद दिये जाते हैं। जहाजके बंदरपर पहुंचनेके कुछ घंटे बाद ही स्पेशल इम्पीरियल मेल नामक डाकगाड़ी डाक एवं दूर देशोंसे आये हुए यात्रियोंको लेकर भारतके विभिन्न शहरोंके लिये रवाना हो जाती है।

प्रमाणको कोई महत्व नहीं देते। पुर्तगालकी भाषामें Buon माँ का अर्थ अच्छा होता है और Bahia बहियाका अर्थ बन्दरगाह होता है अर्थात Buonbahia शब्दियाके अर्थ अच्छे बन्दरगाहके होते हैं। इस एक बात पर ही लोग अधिक जोर देते हैं कि एक अच्छा बन्दरगाह समझ उन्होंने ही इसे बम्बई कहना आरम्भ किया होगा। पर यदि ऐसी ही बात होती तो पुर्तगालवालोंके कागजोंमें भी इसी अर्थके आधारपर इस द्वीपपुंजका नाम Buonbahia लिखा रहता परन्तु वहां तो यह शब्द हो नहीं है। उनके कागजोंमें Buonbahia के स्थानपर इस द्वीपपुंजको Bombaim लिखा जाता था ऐसी दशामें यह युक्ति ठीक नहीं है। दूसरी युक्ति यह है कि दिल्लीके यवन नरेश मुबारकने माहिम और साल्सेट पर अधिकार कर इसका नाम अपने नामपर रख दिया। परन्तु इसका भी कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता कि मुबारक बादशाहने अपनी विजय स्मृति चिरस्थायी रखनेके लिये कोई ऐसा कार्य किया था यदि ऐसा होता तो मुबारकके नामके पीछे इसे मुम्बई न कहकर मुबारकपुर या मुबारकाबाद कहा जाता। अतः यह युक्ति भी उचित नहीं जचती, तीसरी बात यह कही जाती है कि इस नामका सम्बन्ध मुम्बादेवीसे ही है। परन्तु यह मुम्बा शब्द ही कहांसे आया, क्या किसी कोलीका नाम था जिसने यह मन्दिर बनवाया। बात यह भी ऐसी नहीं है। हां यदि कोई बात युक्तियुक्त है तो यह कि महा-अम्बा उस आराध्य शक्तिका सम्बोधन था जिसे इस द्वीपके आदि निवासी पूजते थे। महा अम्बा शिवप्रिया अथवा भवानी सब एक शक्ति विशेषके नाम हैं और ये समय २ पर अम्बा, अम्बिका, महाअम्बाके नामसे संबोधितकी जाती हैं। रह गयी आई शब्दकी बह भी स्पष्ट ही है। महाराष्ट्र भाषामें मां शब्दके लिये आईका प्रयोग प्रचलित है। अतः यह युक्तियुक्त है कि यहांके आदि निवासी जो निर्विवाद हिन्दू थे, उन्होंने ही अपनी आराध्यशक्तिके नामपर इस द्वीपपुञ्जको माम्बई अर्थात् मुम्बईका नाम दिया है।

द्वीप पुंजसे नगर

इस द्वीप पुंजके क्रमागत विकासके इतिहासकी एक एक पंक्ति व्यवसायकी स्थापना, आरम्भ और उन्नतिके इतिहासकी मूर्तिमान प्रतिमा है। द्वीपपुंजके विभिन्न टापुओंको एकमें सम्मिलित कर बस्तीके लिये तैयार करनेके उपक्रमकी ओर यदि ध्यान से देखा जाय, तो यह स्पष्ट हो जायगा कि इस कार्यको इच्छित स्वरूप देनेमें व्यवसायी कम्पनियोंने ही प्रधान भाग लिया था। उनके भगीरथ प्रयत्नका ही यह सुपरिणाम है कि आज यहां यह सुविस्तृत नगर हम देख रहे हैं। अतः इस द्वीपपुंजके इतिहासके इस पृष्ठ पर भी एक सरसरी दृष्टि डाल देना उचित होगा।

इस द्वीपपुंजको बस्तीके योग्य बनानेमें अगाध समुद्रके गर्भसे भूमि निकाली गयी है। इस प्रकारके आयोजनकी कल्पना सबसे प्रथम श्रीयुत सिमाऊ बोथेलो Simao Botelho नामक एक पुर्तगीज़ महाजन के मस्तिष्कमें उत्पन्न हुई। उन्होंने पुर्तगाल नरेशका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। पुर्तगाल वालोंके हाथसे जब यह द्वीपपुंज अंग्रेजोंके हाथमें आया, तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके बोर्डके डायरेक्टरोंने पूर्वकी आयोजनाको जारी रखनेके पक्षमें अपने बम्बई वाले प्रतिनिधिको आदेश दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सूचना निकालकर जमीन पूरने वालोंका उत्साह बढ़ाया और नाम मात्रका किराया लेकर निकाली हुई भूमिको निकालनेवालोंके अधीन कर उन्हें और भी प्रोत्साहित किया। परन्तु फिर भी इच्छित सफलता न मिल सकी। बृटिश प्रबन्धकी एक शताब्दी व्यतीत हो गयी, पर वैयक्तिक प्रयत्नसे इच्छित फलका रसास्वादन न मिल सका।

इस कम्पनीके जलबाला नामक जहाजका उद्घाटन आनरेबल मि० वी० जे० पटेलके हाथोंसे ग्लासगोमें हुआ था। इस कम्पनीमें भारतीय विद्यार्थियोंको इञ्जिनियरिङ्ग तथा नेवीगेशनकी शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध है, वर्तमानमें यह फर्म अच्छे रूपसे लाभ उठाते हुए काम कर रही है। करीब १०, १२ लाख रुपया प्रति वर्ष इस कंपनीको मुनाफा बच जाता है।

बम्बईसे दूसरे देशोंको लगनेवाला जहाजी किराया

	पहिला दर्जा रु०	दूसरा दर्जा रुपये
स्वेज नहर	९६५)	३३०)
लीवरपूल	७०४)	४६२)
लण्डन	८०६)	४८६)
माल्टा	६१६)	४१३)

यहांसे विदेश जानेके लिये पासपोर्टकी आवश्यकता होती है। बिना पासपोर्ट प्राप्त किये कोई व्यक्ति जहाजकी यात्रा नहीं कर सकता।

गोदियां— भिन्न २ माल लादने व लानेवाले जहाज अलग २ गोदियोंपर अपने लंगर डालते हैं। इन गोदियोंकी सुव्यवस्थाके लिए बाम्बे पोर्ट ट्रस्टने बहुत कमगरण रूपसे भाग लिया है। जहाजोंपरसे माल उतारने व लादनेका कुल काम मशीनों द्वारा ही होता है, गोदियोंपर जो माल आता व जाता था, वह रेलवे स्टेशनोंसे छकड़ों या लारियोंमें भरकर गोदीतक पहुंचाया जाता था, इस भयंकर कष्टको दूर करनेके लिये पोर्टट्रस्टके सदस्योंने सन् १८९४ में पोर्टट्रस्ट रेल्वे लाइन खोलनेका निश्चय किया जिसके द्वारा सीधे जहाजसे माल लेजाया जाय और जहाज तक पहुंचा दिया जाय। फलतः १९०० ईस्वीमें जी० आई० पी० के कुर्ला स्टेशनसे तथा बी०बी० सी० आई के माहीमके पाससे पोर्टट्रस्ट लाइनके बनाने का निश्चय होगया। अब भारतके विभिन्न प्रांतोंका माल बिना शहरमें प्रवेश किये ही सीधा बन्दरपर पहुंच जाता है, तथा बन्दरसे उतरनेवाला माल जहाजसे उतारकर रेलमें भर दिया जाता है और भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें पहुंचा दिया जाता है। यों तो यहां करीब ३५ गोदियां हैं। पर उनमेंसे प्रधान २ बन्दर इस प्रकार हैं (१) ससुन डाक (२) बेलर्डपीयर (३) विक्टोरिया डाक (४) प्रिंसेसडाक (५) मोदी बंदर (६) मजगांव बन्दर (७) डाकयार्ड (८) अपोलो बंदर (९) अलेक्जेण्ड्राडाक आदि इन सब स्थानों पर भिन्न २ माल उतरता है।

रेलवे—भारतमें रेल्वे लाइन चलानेका सूत्रपात १८५३ ई० में हुआ और बम्बईके समीप थाना नामक गांवतक रेल्वे लाइन बनानेका निश्चय किया गया एवं लाइन बनाई गई। प्रारंभमें

कार और म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने भी समुद्र गर्भसे भूमि निकालनेमें प्रशंसनीय कार्य किया है। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने नगरके कितने ही तालाबोंको पूरकर समतल भूमि बना दिया है। तारदेवसे परेल तककी भूमि को मिलें स्थापन करने योग्य बनानेका श्रेय यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको ही है। इस कार्पोरेशनके स्वास्थ्य विभागने भी लगभग ८६ एकड़ भूमिको समुद्रसे निकाल बस्ती बसानेके योग्य बनाया है। इसी प्रकार यहां पोर्टट्रस्ट नामक बन्दर प्रबन्ध विभागने भी समुद्र पूर कर भूमि निकालनेके कार्यमें अनुकरणीय उद्योग किया है। इस विभागने सन् १८७३ ई० से इस कार्यको अपने हाथमें लिया। और सन् १८६७ ई० तक कितने ही छोटे २ पर मनमोहक बंदर बना डाले। इनमेंसे सिवरी बंदर तथा फूंयर स्टेटका कार्य सबसे अधिक आदरणीय है। इस विभागने सन् १८७६ में एलफिन्स्टोन स्टेट, सन् १८८८ ई० में अपोलो बंदर, सन् १८६० ई० कुलाबा बंदर, सन् १८६२ ई० कस्टम बंदर, सन् १८६४-६५ में टांक बंदर तथा सन १६०४-५ में मझगांव बन्दर बनवा कर अपने नामको सार्थक किया। इसी प्रकार नगरके सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभागने सन् १६०६ में कुलाबाकी ओर समुद्र पूरनेका अच्छा कार्य किया है।

अमेरिकन सिविल वारके समय समुद्र पूरनेके कार्यको यहांकी सात सुदृढ़ कम्पनियां कर रही थीं। इनकी सम्मिलित पूंजी अनुमानतया ८०३४ करोड़की होगी, परन्तु युद्धके प्रचण्ड रूप धारण करने पर सन् १८६४-६५के बीच यह पूंजी अनुमानतया १७०१६ करोड़की हो गयी थी। इन कम्पनियोंमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं। *

नाम कम्पनी	वसूल पूंजी	नाम कम्पनीके महाजनका
(१) बैंक बे कम्पनी	१०४ लाख	एशियाटिक बैंक
(२) पोर्ट केनिङ्ग कम्पनी	६६ लाख	ओल्ड फाइनैनशियल
(३) मझगांव रेक्लेमेशन कम्पनी	८० लाख	अलायन्स बैंक
(४) कोलाबा लैण्ड कम्पनी	१४० लाख	सेन्ट्रल बैंक
(५) फूंयर लैण्ड कम्पनी	८० लाख	सिटी बैंक
(६) बाम्बे एण्ड ट्राम्बे रिक्लेमेशन कम्पनी	१० लाख	प्रेसीडेन्सी बैंक

इस प्रकार बम्बईमें दरिया पूरकर एकके बाद एक नवीन स्थान निकालनेका काम जारी रहा, लेकिन व्यवसायके अधिक बढ़नेसे म्युनिसिपैलेटीको और भी विशेष जमीनकी आवश्यकता प्रतीत हुई। फलतः म्युनिसिपैलेटीने चौपाटीसे ग्वाटर लाइट हाउस तक समुद्रको पूरनेकी नवीन योजनाको; तथा डेवलपमेण्टलोन द्वारा करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति भी एकत्रित की, एवं सर चिमनलाल सीतलवाड़की देखरेखमें एक डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना की।

* देखिये A financial chapter in the History of Bombay city नामक ग्रन्थ।

बन्दरगाह [illegible]

इस बन्दरगाहके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वर्षोंमें हुआ था। इस बन्दरगाहमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देनेका भी प्रबन्ध है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काम कर रही है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाता है।

बम्बईमें पहुंचने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किराया

	पोर्टट्रस्टका रु०	दूसरा दूसरे रुपये
[illegible] शहर	८६७)	३३०)
लिवरपूल	११४)	५६०)
ग्लासगो	८०६)	७८६)
कलकत्ता	६१६)	८१३)

यहांसे विदेश जानेके लिये पासपोर्टकी आवश्यकता होती है। बिना पासपोर्टके [illegible] [illegible] कोई व्यक्ति जहाजमें नहीं जा सकता।

गोदियां- जिनमें माल लादने व उतारनेके जहाज अन्दर ही गोदियोंमें चले जाते हैं। इन गोदियोंकी सुव्यवस्थाके लिए यहांके पोर्ट ट्रस्टने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है। जहाजोंपरसे माल लादने व उतारनेका कुछ काम मजदूरोंके द्वारा ही होता है, गोदियोंपर जो माल आता व जाता था, वह रेलवे स्टेशनोंसे गाड़ियों या मोटरोंके द्वारा गोदियोंतक पहुंचाया जाता था, इस असुविधाको दूर करनेके लिये पोर्टट्रस्टके अधिकारियोंने सन् १८६४ में पोर्टट्रस्ट रेलवे लाइन खोलनेका निश्चय किया जिसके द्वारा सीधे जहाजोंतक माल लेजाया जाय और जहाज तक पहुंचा दिया जाय। पश्चात् १९०० ई० में जी० आई० पी० के कुर्ला स्टेशनसे तथा बी० बी० सी० आई० के मझगांवके रास्ते पोर्टट्रस्ट लाइनके बनानेका निश्चय होगया। अब भारतके विभिन्न भागोंका माल रेलद्वारा सीधा बन्दरपर पहुंच जाता है, तथा बन्दरसे आनेवाला माल जहाजोंसे उतारकर रेलोंमें भर दिया जाता है और भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें पहुंचा दिया जाता है। यों तो यहां करीब ३५ गोदियां हैं। पर इनमेंसे प्रधान २ बन्दर इस प्रकार हैं (१) सासून डाक (२) मेलार्डपीयर (३) विक्टोरिया डाक (४) प्रिंसेसडाक (५) मोदी बंदर (६) मझगांव बन्दर (७) डाकयार्ड (८) अपोलो बंदर (९) अलेक्जेंड्राडाक आदि इन सब स्थानोंपर भिन्न २ माल उतरता है।

रेलवे—भारतमें रेलवे लाइन चलानेका सूत्रपात १८४३ ई० में हुआ और बम्बईके समीप थाना नामक गांवतक रेलवे लाइन बनानेका निश्चय किया गया एवं लाइन बनाई गई। प्रारंभमें

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

भाटियाः—कपड़ेके व्यवसायी, जमींदार और मिल मालिक हैं।

जैन (गुजरात) :—सर्राफ, महाजन, जौहरी, तथा कमीशन एजेन्ट हैं।

„ (कच्छ) :—अनाजके व्यापारी औररुईके दलाल।

मारवाड़ी महाजन,:— रुई, चांदी, सोनाका सट्टा तथा व्यापार करनेवाले।

बनियांमहाजनः—रुई, चांदी, सोनाका सट्टा और व्यापार करनेवाले।

खोजाः— जागीरदार, मिलमालिक, जेनरलमर्चेन्ट कंट्राक्टर, एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर।

वोहरा मेमनः—जागीरदार, कंट्राक्टर, स्टेशनरी और जेनरल मर्चेन्ट।

पारसीः—मिल ऑनर्स कॉटन मर्चेण्टस् एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर तथा और भी सभी प्रकारका व्यवसाय करते हैं।

योरोपियनः—एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर।

बम्बईके व्यवसायिक स्थल एवं बाजार

१ फोर्ट [हार्नबीरोड]—यह बस्ती बहुत सुंदर एवं साफ है। यहांकी भव्य एवं आलीशान इमारतें, स्थान २ पर दर्शनीय दृश्य वास्तवमें दर्शकोंके हृदयको मंत्र मुग्ध कर देती हैं।यह स्थान क्राफर्ड मार्केटसे आरंभ होकर अपोलो बंदरतक माना जाता है। इस स्थानमें बड़ी २ आफिसें, बैंक्स, इन्स्युरंस कम्पनीज़, मिल आफिस बड़े २ स्टोर्स,वाच कम्पनीज,मिशनरी मर्चेन्टस आदि बम्बईके बड़े से बड़े देशी एवं विदेशी व्यापारी और कम्पनियोंकी आफिसें इस स्थानपर हैं। भारतके साथ विदेशी वाणिज्यका सम्बन्ध रखनेवाली पेढ़ियां इसी स्थानपर है। यों तो इस विशाल बाजारका एक एक स्थान दर्शनीय है, पर उनमें खास खास स्थान बोरीबंदर, जनरलपोस्ट ऑफिस, जनरल टेलिग्राफ ऑफिस, म्युजियम, कालाघोड़ा व्हाइट हवे लेडला फार्म, हाईकोर्ट, क्वीन विक्टोरिया स्टेच्यू,ताजमहलहोटल,शेअर बाजार,गेट ऑफ इण्डिया (भारत द्वार) आदि विशेष दर्शनीय हैं इस बाजारकी चारकोल ऑइलसे बनी हुई स्वच्छ और चमकती हुई सड़कें भव्य मालूम होती है संध्या समय स्थान २ पर पानीके फव्वारे छोड़े जाते हैं। दिनभरके परिश्रमके बाद संध्या समय एक बार इधर भ्रमण कर लेनेसे सारा परिश्रम हलका मालूम होने लगता है।

२ धोबी तालाव—यह स्थान एक तालावको पाटकर बनाया गया है। यहां स्मालकाज कोर्ट, एलफ़िन्स्टन हाई-स्कूल, सेंटजेवियर हाईस्कूल, आदि हैं, तथा इनके सामने एक विशाल मैदान फुटबाल, क्रिकेट मेच आदि खेलनेके लिये बना है। वर्षाऋतुमें सुंदर लम्बी दूबपर दौड़नेसे बड़ा आनंद प्राप्त होता है।

३ क्राफर्ड मार्केट—फल, फूल, शाक भाजी तथा खुराकी सामानका बहुत बड़ा मार्केट है। इसके अतिरिक्त हजारों गाड़ियां सब प्रकारके फल बाहरसे यहां आती है।और फिर यहांसे सारे शहरके व्यापारी खरीद ले जाते हैं। इसके आस पास फल और खुराकी सामानका व्यापार करनेवाली बड़ी दुकानें हैं। इसके अतिरिक्त यहां सब प्रकारके पक्षी और झाड़ वगैरा भी मिलते हैं।

४ बेलार्ड स्टेट—यहां बड़ी २ देशी तथा विदेशी कम्पनियोंकी ऑफिसें हैं। विलायतके लिये डाक लेकर पी०

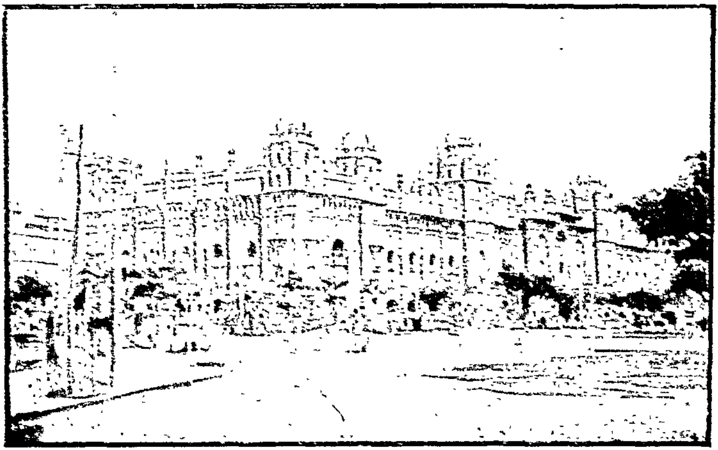

जनरल पोस्ट ऑफिस, बम्बई

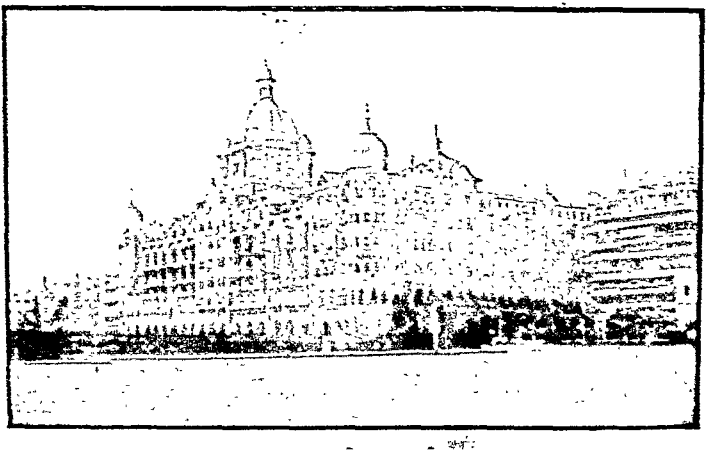

एक आना कर दिया गया । १८८० से बम्बईमें वी० पी० और मनीआर्डरकी प्रथा जारी हुई। सन् १८८१।८२ में यहां पोस्टकार्ड प्रचलित हुए। १८८२ में ही पोस्टल सेविंगबैंककी स्थापना और १८९८ में बीमा भेजनेकी प्रथा प्रचलित की गई।

वर्तमान बम्बई नगरमें ३६ पोस्ट आफिस हैं। कुछ पोस्टआफिसमें केवल डाक ली जाती है बांटी नहीं जाती और कई डाकखानोंमें डाक ली भी जाती है और बांटी भी जाती हैं। कई पोस्ट ऑफिस ऐसे हैं जिनमें दिनमें १३ वार डाक निकाली जाती है। नगरमें ७ डाकखाने ऐसे हैं जिनके साथ तार ऑफिस भी है। इसके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंपर लगे हुए नगरमें करीब ३३७ लेटर बक्स हैं। नगरके क्षेत्रफल और डाक विभागकी तुलना की जाय,तो प्रत्येक २ वर्गमीलके क्षेत्रमें ३ पोस्ट ऑफीस तथा ३० लेटरबॉक्सका औसत आता है।

सन् १८८८ से यहांके जनरल पो० ऑ० में घंटे-घंटेमें डाक बांटा जाना आरंभ हुआ। ब्रिटेनके लिये यहांसे प्रति शुक्रवारको मध्याह्नके १ बजे डाक रवाना की जाती है

तार

सन् १८३९ में ईस्टइण्डिया कम्पनीने डा० ब्रीनको तारकी प्रथा जारी करनेका भार सौंपा। आपने सिक्रेटेरियट भवनसे परेल गवर्नमेंट हाऊसके बीच बिजलीके तारसे बातचीत करनेकी व्यवस्था की। इस बातके लिये बम्बई सरकारने ७४२१) की सहायता आपको दी। सन् १८५३ में थानातक तार की लाइन बनी और १८५५ में बम्बई और मद्रासके बीच तारसे बातचीत करना आरंभ हो गया।

चेम्बर आफ कामर्सकी १८५४ की रिपोर्टसे पता चलता है कि उस समय गवर्नर जनरलने सपरिषद् तारके नियम तैयार किये वे इस प्रकार हैं।

एक शब्दसे सोलह शब्दतक १) सत्रहसे चौबीसतक १॥)

पचीससे बत्तीसतक २) तैंतीससे अड़तालीस तक ४॥)

सन् १८५६ में तारकी चार लाइनें और खोली गईं और सन् १८६४ की १५ मईसे बम्बईका योरोपसे तार सम्बन्ध स्थापित हुआ।

वर्तमानमें इस विभागने आशातीत उन्नति कर दिखाई है। इस समय नगरके प्रधान तार घरके अलावा ८ स्वतंत्र तारघर और हैं और ६ तारघर पोस्टके साथ जुड़े हैं नगरके सभी तार ऑफिसोंका सम्बन्ध नगरके बड़े सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिससे है। सेन्ट्रल टेलिग्राफ ऑफिस फ्लोराफाउण्टनपर है।

टेलीफोन—सन् १८८०।८१ के नवम्बर मासमें भारत सरकारने यहांके चेम्बर ऑफ कामर्ससे टेलीफोन स्थापित करनेके लिये पत्र व्यवहार किया। चेम्बरने सरकारको परामर्श दिया कि टेलीफोनका काम स्वयं सरकार हाथमें न ले, प्रत्युत किसी व्यवसायी कम्पनीके जिम्मे यह काम कर दिया जाय। सन् १८८१ में टेलीफोन कम्पनीको आज्ञा भी मिली पर वह काम न कर सकी। तब सन् १८८२ में बाम्बे टेलीफोन कम्पनीकी और

१३ प्रिंसेस्ट्रीट—यहां केमिस्ट और ड्रगिस्टकी बड़ी २ दुकानें हैं। देवकरण मेनशन नामक एक विशाल दर्शनीय बिल्डिंग यहांपर है।

१४ धुवारचाल—यहां सोना चांदीके दागीनेवाले और कागज़के व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१५ तुलसीवाड—यहां कांचका सामान बेचनेवाले व्यापारियोंकी फर्म्स हैं।

१६ मिरजा स्ट्रीट——पेपर स्टेशनरी तथा कांचके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१७—मूलजी जेठा मारकीट—(न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लिमिटेड) इसको मूलजी जेठा कम्पनीके मालिक स्वर्गीय सेठ सुंदरदास मूलजी जेठाने ६ लाखकी लागतसे बनवाया था। इस बाजारमें गांवठी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार करनेवाली सैकड़ों पेढियां हैं। इस विशाल बाजारमें भयंकर जन वृष्टिके समय भी एक बूंद पानी नहीं पड़ सकता। इसकी अनुमानतः ३ लाख रुपया साल किरायाकी आमद है। बम्बईकी कापड़ मारकीटमें यह सबसे बड़ा मारकीट है। मारकीटके भीतर प्रवेश करनेपर अपने २ मालके खरीदने और बेचनेमें व्यस्त व्यापारियोंकी कार्य दक्षता बड़ी ही भली मालूम होती है।

१८—विठ्ठलवाड़ी—इसमें कपड़ेकी गांठें बांधनेके संचोंकी दुकानें हैं।

१९—भुलेश्वर—यह बम्बईका एक खास धार्मिक स्थान है। श्रीवल्लभ संप्रदायका प्रसिद्ध बालकृष्णलालजीका मंदिर, भुलेश्वर महादेवका मन्दिर, पंचमुखी हनुमानका मंदिर, लालबाबाका मंदिर आदि पचीसों मंदिर हैं, जिनके दर्शनोंके लिये सैकड़ों स्त्री और पुरुष सायं एवं प्रातः उमड़े हुए नजर आते हैं। इस जगह गाड़ी, घोड़ा, मोटर आदिकी विचित्र धमाल रहती है। यहां भुलेश्वर कबूतरखाना भुलेश्वर फलका मारकीट, गंधीकी दुकानें, परचूरन किरियानाके व्यापारी, मिठाईके व्यापारी तथा नाटक वगैराकी फेंसी ड्रेस पेहरे आदिके व्यापारियोंकी दुकानें हैं, इसके अतिरिक्त स्त्रियोपयोगी शृंगारकी वस्तुएं एवं फेंसी वस्त्र यहां अच्छी मात्रामें मिलते हैं।

२०—दुकनवाड़ी—यहां तिजोरीके व्यापारियोंकी दुकानें हैं।

२१—जुम्मा मस्जिद—यहां चायनीज और जापानीज सिल्कका व्यापार करनेवाली अच्छी २ दुकानें हैं, तथा इसके आसपासके बाजारोंमें विलायती कटपीस (थोक वपरचूरन) बेचनेवाली कई दुकाने हैं।

२२—दाना बंदर—यहां अनाजके बड़े २ गोडाउन हैं तथा गल्लेका व्यवसाय करनेवाले बड़े २ मुकादमोंकी पेढ़ियां हैं।

२३—कर्नाक बंदर—मालका दोनकी नदियों एवं चर्टोंका बड़ा भारी जत्था है।

२४—मांडवी—इसमें कई बाजार हैं जिनमें सब प्रकारका थोक किराना, रंग, रद्दी, केशर, बारदान, शक्कर, जीरा, घी, आदि वस्तुओंका थोक व्यापार करनेवाली बड़ी २ पेढ़ियां हैं। व्यापारियोंके लिये यह बाजार बहुत ही आवश्यकीय है। यहां माल लदी हुई बैल गाड़ियोंकी विचित्र भीड़ रहती है।

२५—क्वीन्स रोड—इस रोडके एक ओर बी० बी० सी० आई० रेल तथा दूसरी ओर मोटर कम्पनियां हैं। प्रातः कालके समय तथा सन्ध्या समय यहांपर आने-जानेवाली मोटरोंकी रफ्तार दर्शनीय होती है।

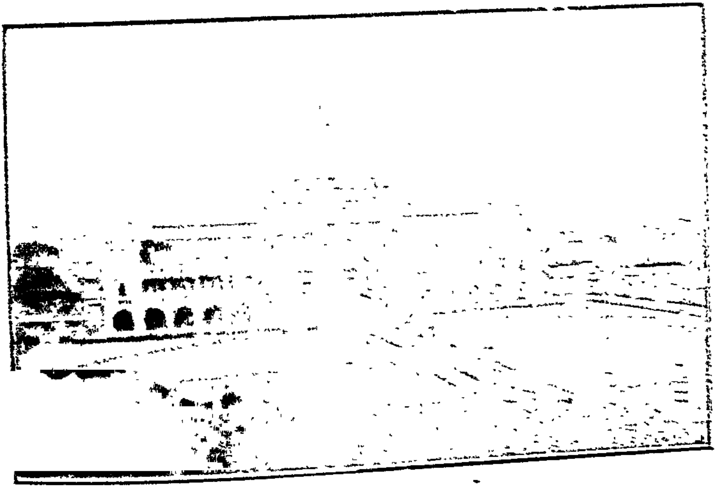

कहनेका मतलब यह है कि बम्बईकी विशाल २ इमारतोंके बीचमें यह चौड़े सुन्दर और सजे हुए राजमार्ग बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं। और बाहरी दृष्टिसे देखनेपर बम्बई एक इन्द्रपुरीकी तरह मालूम होती है।

मगर यह सब अमीरोंकी कहानियां हैं। इस मायाजालके पीछे गरीबीका जो दर्दनाक दृश्य बम्बई शहरमें अभिनीत होता है उसको देखकर हृदय बड़ा दुःखित हो जाता है। इस १२ लाखकी विशाल जन संख्या पूर्ण बस्तीमें केवल ३४८०८ रहनेके मकान हैं। जिनमेंसे दो तिहाईके करीब ऐसे हैं जिनमें केवल एक २ कमरा है ऐसा अंदाज लगाया जाता है कि जहां बस्तीकी गहराई है, वहांपर एक एकड़ जमीनके पीछे लगभग ७५० मनुष्योंके रहनेकी औसत पड़ती है। इस बातकी जांच करके शहरकी सोशियल सर्विस लीगने "मुम्बईनी गली कुच्चियों" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है। उसके अन्दर एक स्थान पर लिखा हुआ है कि बहुतसी चालें (बड़ा मकान जिसमें बहुतसे परिवार एक साथ निवास करते हैं) ऐसी देखनेमें आती हैं जहां भीतर और बाहर कीचड़ और कचरा भरा हुआ रहता है। एक स्थान पर पांच सौ मनुष्योंके लिये केवल दो जगह कपड़े धोनेके लिये बनी हुई हैं जहांपर २ फीट गंदा पानी हमेशा भरा रहता है।

जून सन् १९२२ को लोअर परेलकी म्युनिसिपल चालके लिये एक्जीक्युटिव्ह आफिसरके पास अर्जियां गयी थीं। उनमें एक जगह पर लिखा हुआ है कि ४० किरायेके कमरोंके पीछे केवल एक टट्टी और एक धोनेकी जगह बनी हुई है। दूसरी सात टट्टियां इतनी गन्दी हैं कि वहांपर एक मिनट भी खड़ा रहना असह्य मालूम होता है। यहां तक कि कई दफे इस गंदगीकी वजहसे डाक्टरोंने उस चालमें बीमार मनुष्योंको देखनेके लिये आनेसे भी इनकार कर दिया।

इस नारकीय स्थितिके अन्दर बम्बईकी अधिकांश गरीब जन संख्या अपने संकटमय जीवनको व्यतीत कर रही है। उनके यहां जन्म पाये हुए हजार बालकोंमें से लगभग ४४१ बच्चे जन्मके कुछ ही समय पश्चात् मृत्युको प्राप्त होते हैं।

हर्ष इतना ही है कि यहांके म्युनिसिपल कारपोरेशन और इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और वे इनमें सुधार करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

बम्बईका सामाजिक जीवन

बम्बई नगरमें हिन्दुस्थानकी प्रायः सभी जातियोंके तथा सभी भाषाभाषी लोग कमोबेश तादादमें पाये जाते हैं। फिर भी यहांपर प्रधानतया पारसी, भाटिया, गुजराती, मारवाड़ी, खोजा, पञ्जाबी, मुल्तानी, वोहरा इत्यादि जातियोंकी बस्ती विशेष रूपसे पायी जाती हैं।

पारसी—बम्बई नगरकी जातियोंमें सबसे आगे बढ़ी हुई और सुधारके ऊँचे शिखरपर पहुंची हुई यहांकी पारसी जाति है। जिस प्रकार यह जाति अपने अतुल धन और आश्चर्यकारी व्यापारी प्रतिभाकी वजहसे संसारमें प्रख्यात है उसी प्रकार अपने सुधरे हुए सामाजिक जीवनमें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना सानी नहीं रखती। केवल भारतवर्षमें ही क्यों, दुनिया भरमें सामाजिक दृष्टिसे आगे बढ़ी हुई सभी

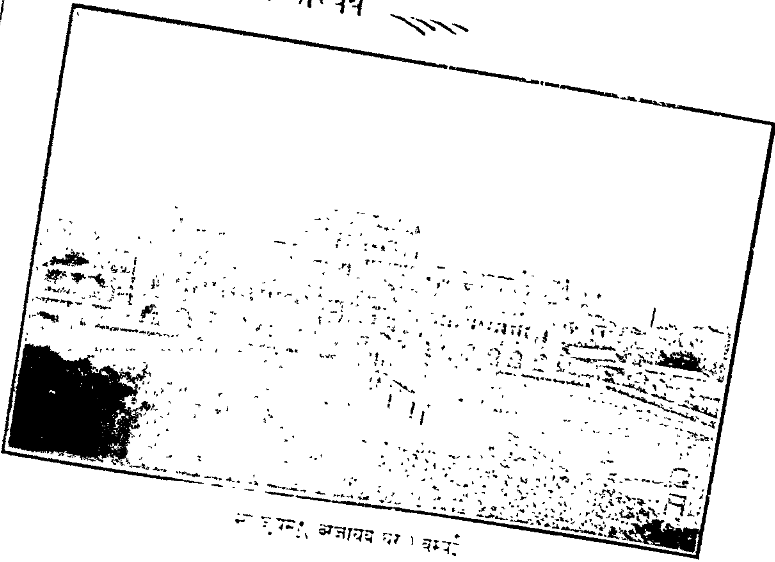

[illegible] अजायब घर, बम्बई

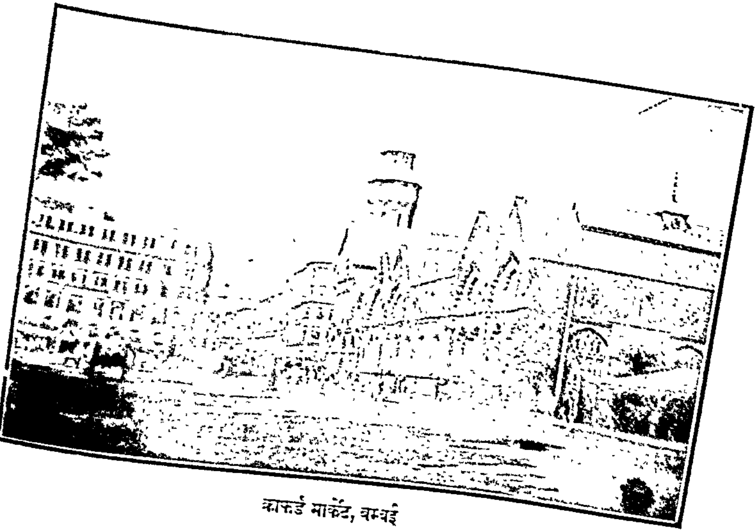

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

हर्ष है कि मारवाड़ी समाजका ध्यान इस ओर जाने लगा है और भविष्यके सुदूर पर्देपर प्रकाशकी चमकती हुई उज्ज्वल रेखा दिखाई देने लगी है।

वोहरा—यह समाज भारतवर्षके सभी समाजोंमें संगठन शक्तिके अन्दर बहुत बढ़ा हुआ है। इस समाजका कोई व्यक्ति अपनी असमर्थताके कारण भूखों नहीं मरता और न अपनी पेट पूजाके लिये वह किसी दूसरी जातिवालेके यहां नौकरी ही करता है। व्यापारिक कुशलतामें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना अच्छा स्थान रखती है। फिर भी सामाजिक दृष्टिसे इसमें पर्दे आदिकी कुप्रथाका काफी जोर है।

साधारण दृष्टिसे देखा जाय तो बम्बईका सामाजिक जीवन भारतके दूसरे शहरोंसे बहुत सुधरा हुआ और उन्नत है। खासकर पर्देकी नाशकारी प्रथाका प्रचार न होनेकी वजहसे स्त्रियोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके गार्हस्थ्य जीवनका यहांपर बड़ा सुन्दर रूप नजर आता है। यहांपर स्त्रियोंकी शिक्षाके लिये कई स्कूल तथा ऊंची शिक्षा देनेवाले हाईस्कूल और कालेज भी बने हुए हैं। जिनमें प्रतिवर्ष सैकड़ों स्त्रियां शिक्षा प्राप्तकर गार्हस्थ्य जीवनमें प्रवेश करती हैं। संध्या समय हिंगिंग गार्डन, चौपाटी तथा अपोलो बन्दरपर जाकर देखनेसे स्त्री-स्वाधीनता और शिक्षाका रमणीय परिणाम तथा दाम्पत्य जीवनका सुमधुर स्वरूप देखनेको मिलता है। इन स्थानोंपर सैकड़ों शिक्षा सम्पन्न दम्पति घूमने आते हैं और जीवनका लाभ और सुमधुर आनन्द लेते हैं। इस गुलाम देशमें भी स्वाधीनताके संसर्गसे बनेहुए इन स्वर्गीय दृश्योंको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

इसी प्रकार और २ जातियोंका सामाजिक जीवन भी भिन्न२ प्रकारका है मगर स्थानाभावसे हम उन सबका परिचय देनेमें असमर्थ हैं।

बम्बईके कसाईखाने और पशुओंकी करुणाजनक स्थिति

बम्बईमें दूध देनेवाले पशुओंकी दशा बड़ी शोचनीय है। यहांपर दूधका व्यापार करनेवाले लोगोंके तबेले बने हुए हैं। तबेलेवाले बाहर गांवोंसे अच्छे दूध देने वाले पशुओंको खरीदकर लाते हैं, और उन्हें तबेलोंमें रखते हैं। इस प्रकार इस शहरमें १०६ तबेले,तथा इसके आसपासके दूसरे स्थानोंमें १५१ तबेले बने हुए हैं। इस प्रकार इन तबेलोंमें लगभग ३६००० पशु रहते हैं जिनके छः हजार मन दूधसे बम्बई शहरके निवासी लाभ उठाते हैं। इन जानवरोंके लिये तबेलेवालोंको प्रति दिन प्रति ढोर करीब १॥, २ रुपया खर्च पड़ता है।

यह खर्च तबतक ढोरके दूधसे निकलता है अर्थात् जबतक वह ढोर कमसे कम पांच सेर दूध प्रति दिन देता है तबतक वे लोग उसे रखते हैं और जब दूधका औसत कम हो जाता है, अर्थात् वह ढोर पांच सेरसे घटकर चार या तीन सेर दूधपर आ जाता है तब खर्च पूरा न पड़ सकनेकी वजहसे ये लोग लाचार होकर इन हृष्ट-पुष्ट ढोरोंको कसाईयोंके हाथमें बेच देते हैं।

यह तो बड़े ढोरोंकी हालत हुई। बछड़ोंकी हालत इससे भी ज्यादा दर्दनाक और करुणाजनक है। तबेले वाले समझते हैं कि ये ढोर इनका तो [illegible] रहेंगे ही नहीं, इसलिये उनके बछड़ोंकी ओरसे प्रायः वे निर्मम रहते हैं। इनके [illegible] बछड़े तबेलेमें उन्हें दूधकी भी क्षति होती है, और उनके मृत्युका भी [illegible] सिवाय

चेम्बर्स एण्ड एसोसिएशन्स

बाम्बे चेम्बर आफ कॉमर्स—इस चेम्बरकी स्थापना बम्बई शहरमें सन् १८३६ में हुई। इसका मुख्य उद्देश अपने मालपर कस्टम हाऊससे स्पेशल सुविधाएं प्राप्त करनेका है। इसका संचालन ९ व्यक्ति मिलकर करते हैं। इनमेंसे एक सभापति, एक उपसभापति तथा सात मेम्बर हैं। इसमें खास २ जानेवाले तथा आनेवाले मालकी प्रति सप्ताह २ बार रिपोर्ट प्रकाशित होती है। कपड़ा तथा सूतकी गति विधिकी रिपोर्ट यहांसे प्रतिमास प्रकाशित होती है। इस चेम्बरकी विशेषता यह है कि इसमें व्यापारियोंके झगड़ोंको सुलझानेके लिये एक कमेटी बनी हुई है। इस चेम्बरके द्वारा १ मेम्बर स्टेटकौंसिलमें तथा २ मेम्बर बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिलमें नामांकित किये जाते हैं। इसी प्रकार बाम्बे कार्पोरेशन और इम्प्रूवमेंट ट्रस्टमें एक २ और पोर्ट ट्रस्टमें पांच मेम्बर चुनकर भेजे जाते हैं। इस चेम्बरमें दो प्रकारके मेम्बर रहते हैं। चेम्बर मेम्बर्स और एसोसियेटेड मेम्बर्स, इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकारके और भी अनियमित मेम्बर्स होते हैं। सन् १९२४में इसमें कुल मिलकर १५४ मेम्बर थे। जिनमें १६ मेम्बर बैंकिंग संस्थाओंके, ६ मेम्बर जहाजी एजंसियों और कम्पनियोंके, ३ मेम्बर सालीसीटरके, ३ मेम्बर रेलवे कंपनियोंके, ६ मेम्बर इंजिनियर तथा कंट्राक्टरके और बाकीके मेम्बर जनरल मरर्के-टाईल्सके थे।

दी इंडियन मरचेंट्स चेम्बर एण्ड ब्यूरो—इस इण्डियन मरचेंट्स चैम्बर एण्ड ब्यूरोकी स्थापना सन् १९०७में हुई। प्रारंभमें इसके १२१ सभासद थे इसका उद्देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे भारत निर्मित तथा और दूसरी व्यापारिक वस्तुओंके व्यापार तथा इसमें दिलचस्पी लेने वालोंका समुचित प्रबंध करना है। यह संस्था देशके आर्थिक लाभोंको रक्षाके लिये मजबूतीके साथ प्रयत्न करती है। इस चेम्बरमें बम्बईकी ११ प्रतिष्ठित २ व्यापारिक संस्थाएं (Association) शामिल हैं। जो कि भारतीय व्यापारमें दिलचस्पी लेनेवालोंकी प्रतिनिधि हैं। इस चेम्बरको अधिकार है कि यह बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा भारतीय लेजिस्लेटिव एसेम्बलीमें अपना एक २ प्रतिनिधि भेज सके। साथ ही बाम्बे पोर्ट ट्रस्टमें ५ प्रतिनिधि तथा बम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशनमें भी एक प्रतिनिधि नामांकित करनेका इसे अधिकार है। इसका कार्य सुन्दर और नियमित रूपसे होता है। यहांसे हर तीसरे माह "एक्सो गुजरात मरकेंट"के नामसे पत्र निकलता है। इसमें व्यापारिक तथा व्यापारसे सम्बन्ध रखनेवाले समाचार रहते हैं।

बम्बे मिल ओनर्स एसोसियेशन—मिल मालिकोंकी यह संस्था सन् १८७५ में स्थापित हुई। इसके स्थापित करनेका उद्देश भारतीय मिल-मालिकोंके स्वत्वोंकी तथा स्टीम, बंदर और

इस ओर जब आज हम अपनी परिस्थितिको देखते हैं तो हमें भारी निराशा होती है, वर्तमानमें हमारे देशमें मालको एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करनेवाली, डाकको लादनेवाली, और पेसेञ्जरोंको ले जानेवाली जितनी भी जहाजी कम्पनियां हैं प्रायः सभी विदेशी हैं। हां, एक समय ऐसा भी था जब हमारे देशमें भी इस व्यवसायका इतना उत्थान था कि हम अपने यहांके बने हुए जहाजोंपर माल लादकर इंग्लेण्ड वगैरह देशोंमें भेजते थे और विदेशोंमें हमारे जहाज टिकाऊ एवं मजबूत प्रतीत हो चुके थे। लोग बड़ी चाहसे उन्हें खरीदते थे। लेकिन ज्यों ज्यों अंग्रेजी आधिपत्य हमारे देशमें जड़ पाता गया, त्यों त्यों हम इस व्यवसायको भूलते गये एवं इस बातकी चेष्टाएं की गईं जिससे हम इस व्यवसायको सर्वथा भूल जांय।

प्रसन्नताका विषय है कि इधर कुछ वर्षोंसे हममें जागृतिके चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे हैं। बम्बईके प्रतिष्ठित मिल मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० और कई सज्जन इस विषयमें भारतीयोंका पैर आगे बढ़ानेके लिए बहुत अधिक प्रयत्न कर रहे हैं। आप लोगोंके परिश्रमसे सन् १९२६ से गवर्नमेंटने डफरिन ट्रेनिंग शिप नामक जहाजी विद्या सिखलानेका एक स्कूल स्थापित किया है। यह शिक्षा समुद्रमें डफरिन नामक जहाजपर ही दी जाती है। इस विद्याके सिखलानेके लिए करोड़ोंकी लागतसे डफरिन नामक एक स्पेशल जहाज बनवाया गया है, इसमें प्रति वर्ष ३० भारतीय छात्रोंको जिनकी वय १६ वर्षसे अधिक न हो, जहाजी शिक्षा देनेके लिए भरती किया जाता है। यहांका ३ वर्षका कोर्स है। यहां शिक्षा प्राप्त करनेके बाद ३ वर्ष दूसरे जहाजमें काम करनेपर यहांका छात्र जहाजी आफिसरका पद पा सकता है। गवर्नमेंट द्वारा भारतीयोंको इस प्रकारकी शिक्षा देनेका यह प्रथम ही स्कूल है। वर्तमानमें इस जहाजमें २९ छात्र हैं। महीनेके प्रथम रविवारको गेट आफ इण्डियासे २ बजे एक नौका उन छात्रोंसे भेंट करनेवाले मनुष्योंको ले जाती है। एवं जहाजपर सब छात्रोंसे भेंट कराकर वापस छोड़ जाती है, यह प्रबंध डफरिन जहाजकी ओरसे ही है। इसीप्रकार महीनेके अंतिम रविवारको सब छात्र शहरमें आ सकते हैं। इसमें ब्राह्मण, पंजाबी, क्रिश्चियन, गुजराती, दक्षिणी आदि सभी तरहके छात्र हैं।

हम ऊपर कह आये हैं कि हमारा विदेशोंके साथ जितना व्यवसायिक सम्बन्ध है उन सबके लिये हमें विलायती जहाजी कम्पनियोंकी शरण लेनी पड़ती है वर्तमानमें कुछ नीचे लिखी हुई प्रसिद्ध कम्पनियां विदेशोंके साथ भारतका व्यवसायिक सम्बन्ध जोड़नेका काम करती हैं दूसरे देशोंके पक्के मालको भारतमें लाती हैं, तथा यहांका कच्चा माल लादकर सात समुद्र पार पहुंचा देती हैं।

(१) पी० एण्ड० ओ० स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—यहांसे अदन, इजिप्ट माल्टा जिब्राल्टर होती हुई इङ्गलेण्ड जाती है। यह जहाज प्रति शनिवारको यहांसे मेल स्टीमर तथा पेसेंजर लेकर नियम पूर्वक

दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मरचेंट एसोसिएशन—इस एसोसिएशनका स्थापन सेठ ताराचन्द जुहारमलके मुनीम जगन्नाथजीके हाथोंसे संवत १९५५ में हुआ था। इस मंडलीके सदस्य कपड़ा, किराना, गल्ला, शक्कर तांबा पीतल सूत, चांदी तथा सोनेका, आढतका तथा सराफीका काम करनेवाले व्यापारी ही अधिक हैं। यह संस्था अपने मेम्बरोंमें पड़े हुए व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारके झगड़ोंको निपटाती है। इस संस्थाकी ओरसे इण्डियन चेम्बरमें एक प्रतिनिधि भेजा जाता है। इस संस्थामें सन् १९२६ में ७० आढ़तियोंके २३ हजार रुपयोंके झगड़े आये उनमेंसे ५० झगड़े निपटाये गये। बाहरसे आई हुई हुण्डी न सिकरनेपर यदि वापस जाय तो उसकी निकराई सिकराई प्राप्त करनेके लिये इस संस्थाकी मुहर की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इस चेम्बर द्वारा सन् १९२६ की दिवालीसे १९२७ की दिवाली तक ६२ लाख रुपयोंकी १४६०१ हुण्डियां वापस गईं। उनमेंसे ५२७२ पीछी दिखानेसे सिकर गई। इस संस्थाकी ओरसे एक मारवाड़ी व्यापारी स्कूल नामक हिन्दीका स्कूल चलता है जिसमें दस बारह हजार रुपया प्रति वर्ष यह संस्था खर्च करती है। इसके अतिरिक्त इस संस्थाने ३० हजार रुपया तिलक स्वराज फण्डमें तथा २१ हजार रुपया गुजरात जल प्रलयके समय दान दिये हैं। इस संस्थाके वर्तमान प्रमुख सेठ आनन्दराम मंगतु राम तथा उपप्रमुख गोरखराम गणपत राय हैं। इस संस्थामें ३५३ मेम्बर हैं। जिनमें फतेपुरके १०१ बीकानेरके ११ माहेश्वरी समाजके ५४ बड़ी मारवाड़के ७४ इन्दौरके २५ पखारके ४२ पंजाबी १८ सरावगी ६ तथा जनरल १७ हैं।

मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स—इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१५ में बम्बईके मशहूर सेठ रामनारायणजी रुइया, तत्कालीन माधोसिंह छगनलाल फर्मके पार्टनर नीमच निवासी श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया चम्पालाल रामस्वरूप फार्मके मुनीम श्रीयुत मिश्री लालजी; और गुलाब राय केदारमलके मुनीम श्रीयुत जयनारायणजीके प्रयत्नसे हुई। तबसे यह चेम्बर बराबर अपनी उन्नति करती जारही है। इस चेम्बरका मुख्य उद्देश्य हुण्डी चिट्ठी सम्बन्धी झगड़ोंको निपटाना तथा और भी दूसरे व्यापारिक झगड़ोंको सुलझाना है। गम्भीर व्यापार नीतिके प्रश्नोंपर भी यह चेम्बर अपनी विचारपूर्ण राय प्रकाशित करती रहती है। इस समय इसके प्रेसिडेण्ट मामराज रामभगतकी मशहूर फर्मके मालिक श्रीयुत बेणी प्रसादजी डालमिया है। इसके इस समय करीब २५० मेम्बर हैं।

नेटिव्ह शेअर्स एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोसियेशन—

आनरेरी पेट्रन—आरदेशर होरमसजी वादन

प्रेसिडेंट—के० आर० पी० श्राफ, जे० पी

(२) ओसका मरकंटाइल स्टीम शीपिंग कम्पनी—भारतसे प्रति पन्द्रहवें दिन अमेरिका तथा आस्ट्रे-लियाके लिये रवाना होती हैं।

(३) इटालियन मेल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—भारत और इटलीके बीच मेल तथा सवारी लेजाने वाली कम्पनी है।

(४) जापान मेल स्टीमशीपिंग कम्पनी लिमिटेड—बम्बई से जापानके लिये सफर करती है प्रति पंद्रहवें दिन रवाना होकर कोलम्बो, सिंगापुर, हांगकांग, संघाई, कोबी तक जाती हैं।

(५) लाइड ट्रिस्टो—बम्बईसे पेरिस लंदन, वेनिस आदि स्थानोंके लिये रवाना होती है।

इसके अतिरिक्त बाम्बे स्टीमनेवीगेशन कम्पनी, बाम्बे परशिया स्टीमनेविगेशन कम्पनी आदि कई जहाजी कम्पनियां हैं।

सिंधिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी लिमिटेड—इस जहाजी कम्पनीके शेयर होल्डर सब भारतीय हैं, इस प्रकारकी भारतीय कम्पनियोंके प्रति भारतको गर्व है।यह सेठ नरोत्तम मुरारजी(मालिक मेसर्स मुरारजी गोकुल दास एण्ड कम्पनी) के परिश्रमसे स्थापित की गई है। इसकी रजिस्ट्री २७ मार्च सन् १९१९में हुई है। इस कम्पनीका वर्तमान अथराइजड केपीटल १करोड़ ५० लाख है जिसमेंसे वसूल ८६८३५९५) हुए है।

मेनेजिंग एजेंट—मेसर्स नरोत्तम मुरारजी एण्ड कम्पनी सुदामा हाउस बेलार्ड स्टेट

डायरेक्टर्स—

सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० (चेयरमैन)

ओनरेबल सर दिनशावाचा

सेठ वालचंद हीराचंद सी० आई० ई०

सेठ लालजी नारायणजी

मि० एच० पी० मोदी

मि० एच० टी० नानावटी

वर्तमानमें इस कम्पनीके पास १० बड़ी स्टीमर है जो ४००० टनसे लगाकर ८७०० टन तक वजनके हैं।

हेड आफिस—बम्बई सुदामा हाउस बेलार्ड स्टेट

ब्रांचेस—कलकत्ता (क्लाइव स्ट्रीट) (२) रंगून (३) अक्याब (४) मोलमीन (५) कराची (६) कालीकट इसके अतिरिक्त भारतीय किनारोंपर इसकी ३० बंदरोंपर एजंसियां हैं।

सर्विस—इसमें कोलम्बो, कलकत्ता ? कराची सर्विस, बर्मास कलकत्ता, बर्मास इंडिया। यह कम्पनी भारतीय किनारोंपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर माल पहुंचानेका व्यापार करती है।

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल चोजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—रत्तमशन अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड ह्वीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्टस् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास मेटल मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी बम्बा-शाखा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

(२) ओसाका मरकंटाइल स्टीम शीपिंग कम्पनी—भारतसे प्रति पन्द्रहवें दिन अमेरिका तथा आस्ट्रे-
लियाके लिये रवाना होती हैं।

(३) इटालियन मेल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—भारत और इटलीके बीच मेल तथा सवारी लेजाने वाली
कम्पनी है।

(४) जापान मेल स्टीमशीपिंग कम्पनी लिमिटेड—बम्बई से जापानके लिये सफर करती है प्रति पंद्रहवें
दिन रवाना होकर कोलम्बो, सिंगापुर, हांगकांग, संघाई, कोबी तक जाती हैं।

(५) लाइड ट्रस्टिनो—बम्बईसे पेरिस लंदन, वेनिस आदि स्थानोंके लिये रवाना होती है।

इसके अतिरिक्त बाम्बे स्टीमनेवीगेशन कम्पनी, बाम्बे परशिया स्टीमनेविगेशन कम्पनी आदि कई जहाजी कम्पनियां हैं।

सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लिमिटेड—इस जहाजी कम्पनीके शेयर होल्डर सब भारतीय हैं, इस प्रकारकी भारतीय कम्पनियोंके प्रति भारतको गर्व है।यह सेठ नरोत्तम मुरारजी(मालिक मेसर्स मुरारजी गोकुल दास एण्ड कम्पनी) के परिश्रमसे स्थापित की गई है। इसकी रजिष्ट्री २७ मार्च सन् १६१६में हुई है। इस कम्पनीका वर्तमान अथराइजड केपीटल १करोड़ ५० लाख है जिसमेंसे वसूल ८६८३५७५) हुए है।

मैनेजिंग एजेंट—मेसर्स नरोत्तम मुरारजी एण्ड कम्पनी सुदामा हाउस वेलार्ड स्टेट

डायरेक्टर्स—

सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० (चेयरमेन)

ओनरेबल सर दिनशावाचा

सेठ वालचंद हीराचंद सी० आई० ई०

सेठ लालजी नारायणजी

मि० एच० पी० मोदी

मि० एच० डी० नानावटी

वर्तमानमें इस कम्पनीके पास १० बड़ी स्टीमर है जो ४००० टनसे लगाकर ८७०० टन तक वजनके हैं।

हेड ऑफिस—बम्बई सुदामा हाउस वेलार्ड स्टेट

ब्रांचेज—कलकत्ता (क्लाइव स्ट्रीट) (२) रंगून (३) अक्याब (४) मोलमीन (५) करांची (६) कालीकट इसके अतिरिक्त भारतीय किनारोंपर इसकी ३० बंदरोंपर एजंसियां हैं।

सर्विस—वर्मासे कोलम्बो, कलकत्ता ?.करांची सर्विस, वर्मासे कलकत्ता, वर्मासे इण्डिया। यह कम्पनी भारतीय किनारोंपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर माल पहुंचानेका व्यापार करती है।

इसके सदस्य श्रीयुत डब्ल्यू० एफ० हंटर, (२) पी० रश्वेल (३) मानिकजी पेटिट (४) बेहरामजी जी.जी भाई (५) इलियस डेविड सासून (६) वरजीवनदास माधवदास तथा अर्देशर खुरसेतजी दादी थे। इसके प्रथम प्रमुख श्रीयुत कर्सेलजी एन० कामा तथा जनरल मैनेजर श्रीयुत मखनजी फ्रामजी नियुक्त किये गये। यंत्र संचालन कलामें निपुण मि० डब्ल्यू बाऊन लंकाशायरवाले इसका प्रबन्ध देखते थे। तबसे यह कार्य निरंतर चल रहा है।

मिल व्यवसायके प्रधान प्रवर्तक

जिन सज्जनोंने बम्बईके उद्योग धन्धों और मिल व्यवसायको जीवन-दान देनेमें सहयोग दिया है, जिन्होंने अपने तन, मन, धनसे इस कार्यको उत्तेजन देनेका भगीरथ प्रयत्न किया है उनके नाम बम्बईके व्यवसायिक इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखने योग्य हैं। इन महानुभावोंमें श्रीयुत कावसजी दावर, (२) माणिकजी पेटिट (३) मेरवानजी पांड्या (४) सर दीनशा पेटिट (५) नसरवानजी पेटिट (६) बोमनजी वाडिया (७) धर्मसी पूंजाभाई (८) जमशेदजी टाटा (९) गोपीदास ब्रजदास (१०) केशवजी नाईक (११) खटाऊ मक्खनजी (१२) सर मङ्गलदास नाथूभाई (१३) जेम्स ग्रीव्ज (१४) सर जार्ज काटन (१५) मोरारजी गोकुलदास (१६) मंचेरजी बनाजी (१७) मूलजी जेठा तथा (१८) थैकरसी मलजीका नाम विशेष उल्लेखनीय है।

जापानी प्रतियोगिताका प्रारम्भ

हम ऊपर लिख आये हैं कि सन् १८५४ में सबसे पहले बम्बईमें कपड़ेकी मिलोंका प्रारंभ हुआ, तबसे सन् १८९१ तक बराबर इस कार्यकी अभिवृद्धि होती रही। पर इसके बाद इसकी उन्नतिमें कुछ शिथिलता आगई। जिसकी वजहसे कई मिलोंको अपना कार्य बन्द कर देना पड़ा। इस शिथिलताका प्रधान कारण एक ओरसे प्लेग और रोगका प्रचार था और दूसरी ओर इन मिलोंकी प्रतियोगितामें जापानका उतर पड़ना था। इस कालमें जापानके अन्दर नवीन जीवन और प्रबल उत्साहके साथ कई नये नये कारखाने खोले गये। इस प्रकार वायु-वेग से प्रबल उत्साहके साथ काम करनेवाले देशकी प्रतियोगितामें यहांकी मिलोंको बहुत धक्का पहुंचा। जापानने अपने सूतके साथ भारतीय सूतकी प्रतियोगिता करनेके लिये चीनका बाजार उपयुक्त समझा। इस प्रतियोगिताके फल-स्वरूप जो धक्का भारतको पहुंचा उसका सबसे अधिक प्रभाव बम्बईकी मिलों पर गिरा। जिसकी वजहसे यहांकी कई मिलें फेल होगईं और कई मिलें लिक्विडेशनमें जाकर पीछे नवीन रूपमें प्रगट हुईं।

बम्बईकी मिलोंका परिचय

स्वदेशी मिल्स कम्पनी लिमिटेड

(१) (इस कम्पनीमें बाम्बे युनाइटेडमिल्स भी सम्मिलित है यह मिल सबसे पहले सन् १८६० में कुर्ला मिल्सके नामसे स्थापित हुई थी। सन् १८६५ में सेठ धरमसी

कुलाबासे बरारतक करीब ९० लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। इस कम्पनीने भी जी० आई० पी० की तरह अपने लोकल व्यवहारमें बिजलीकी गाड़ीका आरंभ किया है। इस कम्पनीका गुड्स आफिस करनाक बंदरपर है। तथा रेलवे स्टेशनके अतिरिक्त टिकिट और पार्सलके लिये कालबादेवी, क्राफर्ड मार्केट, ताजमहल होटल, तथा आर्सनेबी स्ट्रीटपर प्रबंध किया है।

सन् १८८५ की पहिली जनवरीको जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० का कोचिंग और गुड्स स्टॉक परस्पर परिवर्तन किया जाने लगा। इससे एक दूसरेकी लाइनके डब्बे दोनों लाइनोंपर आने जाने लगे, जिससे व्यवसायमें बहुत सहूलियतें पैदा हो गईं।

पोस्ट ऑफिस

इस्ट इण्डिया कम्पनीके समय भारतमें डाककी कोई सुव्यवस्था नहीं थी। सन् १६६१ ईस्वीके लगभग ईस्ट इण्डिया कम्पनीके पास जो पत्र आते थे वे उन व्यापारी जहाजोंके द्वारा आते थे जो समय २ पर इधर होकर निकल जाते थे। इन जहाजोंमें लंदन होकर जानेवाले जहाज बहुत कम मिलते थे। इसी प्रकार भारतके भीतरी भागमें पत्रोंके पहुंचानेका कोई प्रबंध नहीं था। इसलिये १८८८ में ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने यहां पोस्टका व्यवहार जारी करनेके लिये विचार किया। परदेशी और विदेशी डाककी नियमित व्यवस्थाका परिचय सन् १८८७ से शृंखलाबद्ध मिलता है। उस समय प्रतिवर्ष ३० नवम्बरको क्रूजर जहाज कलकत्तेसे डाक लेकर मद्रास और बम्बई होता हुआ स्वेज नहरतक अपने एजेंटके पास पहुंच जाता था। सन् १८८७ में बम्बईमें पोस्टमास्टरकी नियुक्ति हुई। प्रांतकी डाक व्यवस्थाके लिये मि० चार्लस एल्फिस्टनकी देख-रेखमें बम्बई-का जनरल पोस्ट आफिस खोला गया। सन् १७९८ में मासिक रूपमें विलायत डाक भेजनेका प्रबंध किया गया।

यह प्रबंध ईस्टइण्डिया कम्पनीका निजका था। बम्बईके टाइम्स ऑफ इण्डियाके अक्टोबर सन् १८५४ के अंकसे पता चलता है, कि उस समय अपने प्राइवेट पत्र भेजनेवाले व्यक्तिको सेक्रटरी टू दि गवर्नमेंटको एक पत्र लिखना पड़ता था, तथा साथमें भेजा जानेवाला पत्र भी भेजना पड़ता था। पत्रमें भेजने वालेका परिचय एवं हस्ताक्षरकी आवश्यकता होती थी, इस प्रकार ४ इंच लम्बे २ इंच चौड़े तथा ¼ तोला वजनके पत्रकी १०), आधा तोला की १५) तथा १ तोलाकी २०) रकम फीस देनी पड़ती थी। पता चला है कि उन्नीसवीं शताब्दीमें मेहरबानदास पोस्टवाला नामक, एक पारसी सज्जनने एक स्थानसे दूसरे स्थानपर डाक भेजनेका अपना प्राइवेट प्रबंध कर रक्खा था, और वे प्रतिपत्र १ पैसा लेकर पत्र भी पहुंचा देता था। १८२५ में थैलेकी प्रथाका जन्म हुआ एवं बम्बई और पूनेके बीच बंधी पिटारोंमें कुलीके सिरपर डाक पहुंचाई जाती थी। सन् १८४१ में टेलिग्राफ स्टॉम्पकी व्यवस्था की गई और १८५४ में छपे कागजोंपरसे।) फीस उठाकर

इसमें मोटा सूत, सादा, रंगीन, कोरा तथा धुला हुआ कपड़ा तैयार होता है। इसके डायरेक्टर्स—सर डी० जे० ताता, कल्लूभाई सांवलदास मेहता, सी० आई० ई०, आर० डी० ताता०, नरोत्तम मुरारजी जे०पी०, एन०डी० सकलतवाला, जे०आर०डी० नवरोजी और एन० बी० सकलतवाला हैं। इसकी एजेंसी ताता सन्सके पास है। इसका आफिस २४ ब्रुस स्ट्रीट फोर्टमें हैं। इसका तारका पता—"ताता-मिल" (tata mill) तथा टे० नं, २५०४१ है।

उपरोक्त चारों मिलोंकी व्यवस्था (स्टैंडर्ड,स्वदेशी नं० १ स्वदेशी नं० २ ताता मिल) ताता सन्स कम्पनी लिमिटेड करती है।

दी बाम्बे डाइङ्ग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लिमिटेड

इस कंपनीके अन्तर्गत (१) बाम्बे डाईवर्स जिसकी स्थापना सन् १८७६ में हुईथी (२) टेक्सटाइल मिल्स जो सन् १८६६ में खुला था तथा (३)प्रिन्स मिल्स जिसका जन्म सन् १९०८में हुआ था, ये तीनों मिलें भी सम्मिलित हैं। इस कंपनीकी स्वीकृत पूंजी चौसठ लाख रुपयेकी है जो २५६०० साधारण शेअरोंमें विभक्ती गई है। इस कंपनीके डाइरेक्टर्स (१) श्रीयुत एन० एन० वाड़िया सी. आई. ई. (२) डब्लू०गेड (३) सर-जमशेदजी जीजीभाई सी० आई० ई० बेरोनेट (४) एन० पी सकलतवाला सी० आइ० ई० (५) लेस्लीव्लएट (६) बी० ए० मन्धम (७) बोमनजी आदेसरजी तथा (८)डी० एफ० बाटलीवाला हैं। इसका रजिस्टर्ड आफिस होम स्ट्रीट फोर्ट बंबईमें है। तथा तारका पता (Dying) है। इसकीएजेन्सी नवरोजजी वाड़िया एण्ड सन्सके पास है।

(१) इस कंपनीके अन्तर्गत जो तीन मिलें हैं उनमेंसे पहली बाम्बे डाइवर्स फेडेल रोड माहिममें हैं इसका टेली फोन नं० ४०८५६ हैं।

(२) दूसरी टेक्सटाइल मिल्स एलफिन्स्टन रोड पर हैं। इसका टेली फोन नं० ४०६२३ है। इस मिलमें सब मिलाकर ७०४४८ स्पेण्डिल्स और १६१४ लूम्स हैं। इस मिलमे ३३८६ आदमी काम करते हैं। और २ नंबरसे लगाकर ३६ नंबर तकका सूत तथा कोरा, धुला और रंगीन कपड़ा तैयार होता हैं।

(३) प्रिन्स मिल-यह मिल नये गांव रोड दादर पर हैं। इसका टेलीफोन नं० ४०६६६ हैं । इसमें १०६८४८ स्पेंडिल्स तथा ३११६ लूम्स हैं । इस मिलमें ५०६८ मनुष्य काम करते है। यहांपर ८॥ से लेकर ४० नम्बर तकका सूत तैयार होता है तथा कोरा, धुला और रंगीन कपड़ा निकलता है। उपरोक्त तीनों मिलें मेसर्स नवरोजजी नसरवानजी वाड़ियाके अधिकारमें है।

करीम भाई मिल्स लिमिटेड

इस कम्पनीमें दो मिल्स सम्मिलित हैं। (१) करीम भाई मिल्स (२) मोहम्मद भाई मिल्स। करीम भाई मिल्सकी स्थापना सन् १८८९ में हुई थी,और मोहम्मद भाई मिल्सकी स्थापना १८९९ में हुई थी। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख रुपयेकी है। जो ८८०० साधारण शेअर्समें विभाजित की गई है। इस कम्पनीका रजिस्टर्ड आफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्ट बम्बईमें है। इसका तारका पता (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२९७ है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(१) सर सासुन डेविड बैरोनेट।
(२) कर्सेतजी जमशेदजी वाड़िया।
(३) सर करीमभाई इब्राहीम बैरोनेट।
(४) सर जमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट।
(५) एफ० ई० दीनशा।
(६) सरफजलभाई करीम भाई के० टी०।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहीम एण्ड सन्सके पास है। इस कम्पनीके द्वारा जिन दो मिलोंका प्रबन्ध होता है उनका विवरण इस प्रकार है—

करीम भाई मिल्स—यह डिलाइल रोडपर बना हुआ है। इसका टेलीफोन नं० ४०८७२ है। इस मिलमें सब प्रकारके ८९८०४ स्पेण्डिल्स और १०५० लूम्स हैं। इस मिलमें ६ से ३४ नम्बरतकका सूत काता जाता है। तथा कोरा, रंगीन, धुला सब प्रकार कपड़ा तैय्यार होता है। ऊपर जिस मोहम्मद भाई मिलका विवरण आया है, वह भी इसीमें सम्मिलित हैं।

फ़ज़ल भाई मिल्स लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९०५ में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड ओफिस १२-१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। इसका तारका पता—(milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२९० है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(१) जमशेदजी अर्देशिरजी वाड़िया।
(२) सर सासुन डेविड बैरोनेट के० सी० एस० आई०
(३) सर करीम भाई इब्राहिम बैरोनेट।

पर्ल मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना १९१३में हुई। इसका रजिस्टर्ड आफिस, तारका पता और डायरेक्टर्स वही हैं जो उपरवाली मिलोंके हैं। इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २५लाखकी है जो १० हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। पर्ल मिलका कारखाना डिलाइड रोडपर है। वहांका टेलीफोन नं० ४०४४६ है। इस मीलमें ४९३५६ स्पेण्डिल्स तथा १७६० लूम्स हैं। इसमें १२ से ३० नम्बर तकका सूत तथा कोरा रंगीन और सफेद कपड़ा तैयार होता है।

क्रीसेंट मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८९३में दामोदर मिलके नामसे हुई थी सन् १९१५ में यही मिल क्रीसेण्ट मिलके नामसे प्रसिद्ध हुई। इसका तारका पता, रजिस्टर्ड आफिस और डायरेक्टर्स ऊपरकी मिलोंके अनुसार ही है। इसकी एजेन्सी भी सर करीमभाई इब्राहिम एण्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है। जो १५ हजार साधारण शेअरोंमें बांटी हुई है। यह मिल फर्ग्यूसन रोडपर बना हुआ है वहांका टेलीफोन नं० ४०-३१६ है। इस मिलमें सभी प्रकारके कुल ४४६८८ स्पेंडिल्स और १०५४ लूम्स हैं। यहां १० से ३४ नम्बर तकका सूत निकलता है और कपड़ा ऊपरकी मिलोंकी तरह ही बनता है।

कस्तूरचन्द मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस कम्पनीके अन्तर्गत २ मिलें शामिल हैं। पहला इम्पीरियल मिल और दूसरा कस्तूरचंद मिल। इम्पीरियल मिलकी स्थापना सन् १८८२ में हुई थी। सन् १९१५ में इसका जीर्णोद्धार करवाकर यह कस्तूरचन्द मिलमें मिला लिया गया। कस्तूरचन्द मिलकी स्थापना सन् १९१४ में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। तारका पता "Milloffice" है। तथा टेलीफोन नं० २१२९७ है। इसके डायरेक्टर्स निम्नलिखित हैं:—

(१) सर फजल भाई करीमभाई के० टी
(२) अर्देशर जमशेदजी वाड़िया
(३) सर करीम भाई इब्राहीम बेरोनेट
(४) हाजी गुलाम महम्मद आजम
(५) एफ० ई० दीनशा
(६) ऑ० सर फीरोज सेठना ओ० बी० ई०
(७) कोकाभाई प्रेमचन्द

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहीम एन्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४८ लाख रुपया है जो ३६०० साधारण शेअरमें विभाजित की गयी है। इन दोनों मिलोंमें

यहांके कुएँका जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

क्राफर्ड मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, खुराकी सामान, होयजरी, कटलरी, एवं जीवित पक्षी, तोता मैना आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकाने इस मारकीटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाड़ीकी तादादमें लगा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाव भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनचार फर्लाङ्गकायह स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैल्टीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलावाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ६ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलावासे थोड़ी दूरपर है। सुदूरदेशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलाबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान है। यहीं गवर्नमेंट हाऊस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी क्रांतिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी मातुश्रीके नामपर यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २५०० फुट ऊंची भव्य एवं कई रमणीय छोटी २ पहाड़ियां हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पानीके झरने हैं। यहांके छोटे २ पर्वतीय रास्ते, तरह तरहके प्राकृतिक दृश्य एवं शीतल मंद-सुगंध वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे घबराये हुए व्यक्तियोंको बहुत अधिक शान्ति प्रदान करते हैं।

३५८८४ स्पिंडलस और ६६२ करघे हैं। तथा इसमें १६४१ मजदूर कार्य करते हैं। यहाँ नं४ से नं० १२ तकका सूत काता जाता है। इस मिलमें सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

मुरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एण्ड विविङ्ग कम्पनी लिमिटेड:—इसकी स्थापना सन् १८७२ में सेठ मुरारीजीके हाथोंसे हुई। इसकी स्वीकृत पूञ्जी ११५०००० है। जो ११५० शेअरोंमें विभक्त की गयी हैं। इस मिलमें ८४००० स्पेंडलस तथा १६०० लूम्स हैं। इसमें ४२०७ मजदूर काम करते हैं। इसके डाइरेक्टर सेठ नरोत्तम मुरारजी (२) ऑ०सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी (३) एफ० ई० दीनशा (४) त्रीकमदास धरमसी मुरारजी (५) अम्बालाल साराभाई (६) ए० जे० रायमंड (७) शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। इसकी एजन्सी मेसर्स मुरारजी गोकुलदासके पास है। इसमें खाकी कपड़ा, ड्रील, शर्टिंग कोटिंग आदि २ सभी प्रकारके कपड़े बनाये जाते हैं।

एलायन्स कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कं० लिमिटेड—इसका मिल तारदेवमें है। लूम्स ५६२ स्पिंडल २८११६ और केपिटल ७ लाख है। इसकी एजंट मोरार भाई वृजभूषण दास एण्ड कम्पनी हैं।

अपोलो मिल्स लिमिटेड—मिल डेलिस्ले रोड में हैं। इसमें लूम्स ८६६ और स्पिंडलस ३६६५४ हैं। केपिटल २५ लाख है और इसके मेनेजिंग एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है। ऑफिसका पता—डगल रोड बेलार्ड स्टेट है।

डेविड मिल्स कम्पनी लिमिटेड—मिल फरोल रोड परेलमें है लूम्स ११३० और स्पेंडलस ८२६२६ हैं। केपिटल २२ लाख और एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

ई० डी० सासुन युनाइटेड कं० लिमिटेड—मिल मूप देव रोडपर है। इसमें लूमस ८०० और स्पेंडलस ३७१२० है। एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है।

जेकोब सासुन मिल—मिल सुपारी बाग रोडपर है इसमें २२८१ लूमस और १००८,२ स्पेंडलस हैं। एजंट ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड है।

रेचल सासुन मिल—चिंच पोकली रोड, लूम्स २०२० हैं। इसके एजंट है ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड।

ई० डी० सासुन मिल—मूप रोड, लूमस ८४१ स्पेंडलस ६००२६ एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड। ऊपरकी चार मिलें और मेंचेस्टर मिल, टर्की रेड डे ईवर्क्स नामकी ६ मिलोंकी सम्मिलित पूञ्जी ६ करोड़ है। इन सब मिलोंकी एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग कं० लि०—इसका मिल रिपन रोड में है। इसमें लूमस ६६० और स्पिंडलस ४१३२८ हैं। केपिटल ६ लाखका है। एजंट दामोदर थेकरसी मूलजी एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट हैं।

फिनिक्स मिल लिमिटेड—फरग्यूसनरोड, एजंट रामनारायण हरनन्दराय एन्ड सन्स १४३ एस्प्लेनेड-रोड फोर्ट, पूंजी ८ लाख, स्पिण्डल्स ५२५०० लूम्स ६९६ हैं।

बिरला मिल्स लिमिटेड नं० १—एल्फिंस्टन रोड, एजंट एलन रहीमतुल्ला एन्ड कम्पनी चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट, स्पिण्डल्स १९०८६ लूम्स ३२०।

बिड़ला मिल्स लिमिटेड नं २—सिवरीरोड परेल, एजंट एलन रहीम तुल्ला एण्ड कम्पनी चर्चगेट फोर्ट स्पिंडल्स २५५९२ लूम्स ४००-दोनों मिलोंकी मिश्रित पूंजी ६०९८८००।

कुरला स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल—कुरला, एजंट कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लूम्स ७१९, स्पिंडल्स २७६४०, पूंजी १३ लाख, ऑफिस चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट।

मून मिल्स लिमिटेड—शिवरीन्यूरोड, लूम्स ७५६ स्पिंडल्स ३६४१४ पूंजी २५००००० एजण्ट पी० ए० होरमसजी एण्ड कम्पनी ७० फ्रारबसस्ट्रीट फोर्ट।

एम्प्रेस एडवर्ड स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—रेरोड मजगांव, लूम्स१३९३ स्पिंडल्स ४६-४५२, पूंजी १५ लाख ए० बी० डी० पेटिट ए० सन कम्पनी ७।११ एलफिंस्टन सरकल फोर्ट।

सेंचुरी स्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—एल्फिंस्टनरोड, २९६६ लूम्स स्पिण्डल्स १०४-६८० पूंजी १८५०००० एजंट सी० एन वाडिया एण्ड कम्पनी।

क्राउनस्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लि०—परेल, लूम्स ६६८ स्पेण्डल ४१७६८ पूंजी ८ लाख एजण्ट पुरुषोत्तम विठ्ठलदास एण्ड कंपनी १९ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट।

फ्रेनेट मिल्स लिमिटेड—फार्यूसन रोड लूम्स ६३० स्पिण्डल्स २५८९ एजेंट त्रिलोकचंद कल्यानमल एण्डको कालबादेवी कल्याण भवन, पूंजी १६ लाख।

सिंप्लेक्स मिल्स कं० लिमिटेड - भायखला, स्पिण्डल्स ३७२०८ लूम्स १२३० पूंजी २२ लाख ५० हजार, एजण्ट एलन ब्रदर्स एण्ड कं० (इण्डिया) लि० हार्नबीरोड।

ग्लोबमेन्युफेक्चरिंग कं० लि—लूम्स ७४४ स्पिण्डल्स २९१०४, पूंजी १० लाख एजण्ट टर्नर मरीसन एण्ड कं० लि १६ बैंक स्ट्रीट फोर्ट।

कोहिनूर मिल्स कं० लि – दादर, पूंजी ११ लाख, २९११४ स्पेंडल्स ७४४ लूम्स, एजंट किलिक निक्सन एण्ड कम्पनी लि० होम स्ट्रीट फोर्ट।

गोल्ड मोहर मिल्स कं० लि०—दादर—लूम्स १०४० स्पिंडल्स ४२४७२ पूंजी २० लाख, एजण्ट जेम्स फिनले कं० लिमिटेड फोर्ट।

फिनले मिल्स लिमिटेड—परेल, लूम्स ८१२, स्पिण्डल्स ४६१७२ पूंजी २१ लाख, एजण्ट जेम्सफिनले एण्ड कंम्पनी लि० फोर्ट

इसके अतिरिक्त और भी कई मिलें हैं सब मिला कर इनकी संख्या करीब ८० है। पर उन सबका परिचय स्थानाभावसे यहां देनेमें हम असमर्थ हैं।

बिजलीकी शक्तिका उपयोग करनेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षा करना है। साथ ही जन समुदाय और इसके उपयोग करनेवालोंमें परस्पर बहुत अच्छा सम्बंध स्थापित करना भी है। इसके मेम्बर भारतीय हैं। इसका संचालन २० व्यक्तियोंके हाथमें है। इन्हीं व्यक्तियोंमें प्रेसिडेण्ट तथा वाईस प्रेसिडेण्ट भी शामिल हैं। यह एसोसियेशन लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके लिये एक प्रतिनिधि अहमदाबाद मिल ऑनर्स एसोसियेशनके साथ क्रमशः भेज सकती है। साथ ही बाम्बे गवर्नरकी लेजिस्लेटिव कौंसिल बाम्बे पोर्टट्रस्ट बोर्ड, सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशन तथा इंडियन सेंट्रल काटन कमेटीमें भी अपना प्रतिनिधि भेज सकती है। यह संस्था अपने मेम्बरोंके द्वारा उपयोगमें आनेवाले (रजिस्टर्ड नम्बरों) ट्रेडमार्कोंकी एक लिस्ट रखती है।

इस प्रकारके ट्रेडमार्कोंके रजिस्ट्रेशन स्पेशल नियमों द्वारा रजिस्टर्ड होते हैं, आपसमें ट्रेडमार्कके सम्बन्धमें होनेवाले झगड़े सुलझानेके लिये इसमें पेश होते हैं।

जनवरी सन् १९२४में इस एसोसियेशनके कुल ६४ मेम्बर थे। जिसमें एक सिल्क मिलकी तरफसे, २ फ्लावर मिलसे, ६ जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरीजसे, २ रंगने तथा धोनेके कारखानोंसे, और शेष काटन स्पीनिंग एण्ड विविंग मिल्सकी ओरसे थे।

यह एसोसियेशन हरसाल एक स्टेटमेंट इस आशयका निकालती है कि भारतमें कितने काटन स्पिनिंग विविंग मिल्स काम करते हैं। उनकी पूंजी कितनी है, तथा उनमें कितने २ लूम्स और सिंडल्स हैं। उनमें कितने २ व्यक्ति कार्य करते हैं। उनमें कितनी रुई खर्च होती है, आदि आदि, यह एसोसियेशन इसकी भी जांच रखती है कि बाम्बेसे कितना कपड़ा तथा सूत बाहर गया तथा बाहरसे कितना २ बम्बईमें आया।

४ बाम्बे नेटिव्ह पीस गुड्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—इस संस्थाका स्थापन सन् १८८२ में सेठ दामोदर गोकुल दास मास्तरके हाथोंसे हुआ। इस संस्थाका प्रधान उद्देश व्यापारियोंके भीतर एकता स्थापितकर बम्बईके कपड़ेके व्यवसायको उत्तेजन देना एवं उसके लाभोंकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना है। कपड़ेके व्यवसाय सम्बन्धी सबप्रकारके झगड़े यहीं निपटानेका प्रयत्न किया जाता है। इस संस्थाकी मैनेजिंग कमेटीके ४५ मेम्बर हैं। एवं इसके कुल १६३ मेम्बर हैं इस संस्थाका प्रमुख पद सन् १८९६ से ऑनरेबल सर मनमोहनदास रामजी सुशोभित करते हैं। आप बम्बईकी प्रतिष्ठित व्यापारिक संस्थाओंके सफल कार्यवाहक महानुभाव हैं। इस संस्थाके उपप्रमुख सेठ देवीदास माधवजी ठाकरसी हैं। इस मंडलकी ओरसे एक औषधालय और लायब्रेरी भी है औषधालयमें अंग्रेजी दवा लेनेवाले व्यक्तियोंकी औसत प्रति दिन ७९ और देशी दवालेनेवालोंकी ३४ आती है। इस मंडलका ऑफिस मूळजी जेठा मारकीट पर है।

बम्बईका पता पो०बा० नंबर १६८ है। और विलायतका पता ७३ विंटवर्थ स्ट्रीट मेंचेस्टर है। इसके अतिरिक्त बम्बई इण्डियन ऊलन मील कंपनी लिमिटेड और धरमसी मुरारजी ऊलन मील ये दो मिलें और है।

लोहेके कारखाने

(१) गहगनजी० ओ० एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकलमें है। यहां पर लोहा गलाया जाता है और ढलाईका काम होता है। यह कम्पनी इंजनियरिङ्गसे सम्बन्ध रखने वाला सामान तैय्यार करती है।

(२) सी० डी केरावाला एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना चिंचपोकली परेलमें है। यहां लोहा तथा पीतलकी ढलाईका काम होता है, इसके मालिक हैं मि० सी० डी० केरा वाला। तारका पता है "मशनिरी" machnery।

(३) कारोनेशन आयर्न वर्कस—इसका कारखाना गिल्डर स्ट्रीट लेमिंगटन रोड पर है। यहां पर लोहे की ढलाईका काम होता है। इस कम्पनीमें मि० गफूर मेहर अली, मि० जाफर मेहर अली आदि व्यक्ति भागीदार हैं।

(४) एम्प्रेस आयर्न एण्ड ब्रास वर्कस—इसका कारखाना परेलमें है। यहां पर लोहा और पीतलकी ढलाईका काम होता है। इसके मालिक हैं बरजोरजी पेस्तनजी एण्ड सन्स।

(५) गार्लिक एण्डको—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकल पर है। इस कम्पनीमें इंजनियरिङ्ग तथा लोहेकी ढलाईका काम होता है। इसकी एक ब्रेंच ऑफिस मस्कती मार्केट अहमदाबादमें है। इसके पास नीचे लिखे विदेशी कारखानोंकी एजंसियां हैं।

(१) श्यॅंग्स एण्ड को लिमिटेड सेनेटरी इञ्जिनियर ग्लासगो।
(२) सी. एफ. विल्सन एण्ड को ऑइल एञ्जिन मेकर एवर्डीन।
(३) ब्रिज एण्ड आयर्न वर्क शिकागो।
(४) स्टॅंडर्ड मेटल विंडोस कम्पनी ब्राम्बीज.

इस कम्पनीका तारका पता गार्लिक (Garlik) है।

(६) मार्शलेंड प्राइस एण्डकम्पनी लिमिटेड—इसका कारखाना मजगांवमें हैं। तथा ऑफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग वेलार्ड स्टेट पर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। यह पूंजी १००) प्रति शेअरके हिसाबसे वसूल करली गई है। इसके निम्न लिखित डायरेक्टर हैं।

(१) सर लल्लूभाई सामलदास कैटी. सी० आई० ई०
(२ माधवजी डी० ठाकरसी
(३) एच० पी० गिब्स
(४) वालचंद हीराचंद

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

„ „ (२) मनुतलालजी कालीदास

उद्देश—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन—

ऑफिस—वास बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइस प्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मेक

सेक्रेटरी—टी० मेहता बी० ए०

उद्देश—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सुव्यवस्थित करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ओनर्स एसोसिएशन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराव हाउस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीजके व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ओनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोसिएशन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट छगन भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश—हुंडी चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, कालबादेवी। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएशन है। इसकी ओरसे व्यापारिक झगड़ोंकी एक अदालत भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री चम्पक भाई इन्द्रजित भाई (चेयरमेन)

श्री चन्दनमलजी बिड़ला

लकड़ीका कारखाना

मेसर्स टिम्बर एण्ड ट्रेडिङ्ग को० लि०—इसका नाम सन् १९२२के पूर्व मेसर्स कर्री एण्ड जर्रह् को० लि० था। इसका भारतमें प्रधान आफिस बम्बईके हार्नबी रोडपर यार्क बिल्डिङ्गमें है। इसकी एजेण्ट और डीपो भारतमें इस प्रकार हैं।

कलकत्ता—एजेन्सी गोलेण्डर्स अर्व्यूथनाट एण्ड को, डीपो—खिदरपूर पर है।

मद्रास—डीपो बोचपर है।

करांची—एजेन्ट मैकीनान मैकेन को एण्डको, डीपो मैक्लाड रोड पर है। भारतमें इसकी सभी आफिसोंका तारका पता है जिर्रा jarrab.

चमड़ेके कारखाने

वेस्टर्न इण्डिया आर्मी बूट एण्ड इक्वीपमेन्ट फेक्टरी—इसका कारखाना बम्बई नगरसे थोड़ी दूर उपनगर धरावी (Dharavi) जि० शिवमें है और आफिस तारदेव बम्बई नं० ७ में है।

हाजी नूर मुहम्मद एण्ड हाजी इस्माइलका कारखाना—२०, फ्रेर बैंकरोड भाईखलामें है यहांपर चमड़ा और खाल पकाकर कमाई जाती है। इसके मालिक हाजी नूर मोहम्मद, हाजी-लाल मोहम्मद, हाजी ईसा तथा हाजी उस्मान हैं। इनके लंदनवाले आफिसका पता एच० ईसा एण्ड को० ५६ बर्माण्डसे स्ट्रीट लन्दन S. E. I. है।

कॉटन प्रेस

१—वन्दारामजी प्रेस - कोलाल, मालिक मूलजी हरीदास ।

२—कोलावा प्रेस कम्पनी लि०—इसका आफिस स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है और इसकी फेक्टरियां आगरा, बांदा, कोपवल (Kopbal) हुबली, गड़ग, काजगांवमें है।

३—फार्बेस प्रेस एण्ड मैन्यू फेक्चरिंग कम्पनी लि०—इसका आफिस फार्बस बिल्डिङ्ग होम स्ट्रीटमें है। इसमें स्वीकृत पूंजी १० लाखकी लगी हुई है। इसके पार्टनर्समें प्रधान फार्बस एण्ड फार्बस कैम्पबेल एन्ड को० लि० हैं।

४—कोर्ट प्रेस कम्पनी लि०—इसका आफिस कोलावा रोड बम्बई नं० ५ में है। इसमें २ लाख ८५ हजार-की पूंजी लगी हुई है जो ४७५)रु०प्रति शेयरके हिसाबसे छः सौ शेयर बेचकर इकट्ठी की गयी है। इसके डायरेक्टरोंमें सेठ करसनदास टी० रावजी जे० पी०, (चेयरमैन) मानेक शाह, एन० पोचखानवाला, (सालीसीटर) जमशेदजी ए० एच० चिनाय, पेस्तमजी शापुरजी नारियलवाला तथा .मगनलाल डी० खख्खर जे० पी० हैं। इसके सिक्रेटरी है अमियतराम जगजीवन कपाड़िया।

फेक्ट्रीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

बम्बईकी कपड़ेकी मिलें

आधुनिक युगके समुन्नत व्यवसायी केन्द्रोंमें बम्बईका स्थान बहुत ऊंचा है। बम्बई भारतमें व्यवसायका प्रधान केन्द्रस्थल है। इसके वर्तमान प्रतिभा-सम्पन्न स्वरूपको बनानेमें यहांके नागरिकोंने बहुत बड़ा भाग लिया है। अतः उसके स्वरूपका विवेचन करते समय जहां कला-कौशलके औद्योगिक तत्त्वकी मीमान्साकी जायगी वहां व्यवसाय कुशल नागरिकोंके आर्थिक सामर्थ्य-जनित प्रोत्साहनकी चर्चा करना भी अनिवार्य्य ही है। जो बम्बई नगर आजसे कुछ समय पूर्व एक छोटासा मछुओंका गांव था वही आज अपने औद्योगिक सामर्थ्यके बल पर १२ लाख प्रजाजनोंको आश्रय प्रदान कर रहा है। बम्बईके औद्योगिक विकासमें प्रधान स्थान यहांकी मिलोंका है। अतः इस स्थानपर हम उन मिलोंका कुछ वर्णन कर देना आवश्यक समझते हैं।

मिलोंका इतिहास और क्रमागत विकास

बम्बईमें मिलके उद्योगकी स्थापना करनेका विचार सबसे प्रथम सन् १८५१ में श्रीयुत कावसजी नानाभाई दावर नामक एक पारसी व्यवसायीके मस्तिष्कमें उठा। आप सूत कातनेका कारखाना खोलनेके उद्योगमें लगे परन्तु भारतमें ऐसे कारखाने न होनेके कारण आपको नैतिक सहानुभूति भी प्राप्त न हो सकी। अतः आपने ओल्डहम (इंग्लैंड) की मेसर्स प्लेट ब्रादर्स एण्ड को० लिमिटेडसे इस विषयका पत्र व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। इन गोरे व्यवसाइयोंने अपनी योजनगंधा बुद्धिसे भावी स्वरूपका विवेचन कर कारखाना खोलनेके लिये सहानुभूति सूचक परामर्श दिया और इस प्रकार एक होनहार पारसी व्यवसायीके मस्तिष्कमें आई हुई कल्पनाने ब्रिटिश मशीनरीके सहयोगसे कार्यका स्वरूप ग्रहण किया। फलतः सन् १८५५ के फरवारी मासकी २२ वीं तारीखको शुक्रवारके दिन बाम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनीके नामसे २०००० स्पेंडल्सकी शक्तिका एक बड़ा कारखाना खोला गया। इस प्रकार बम्बईमें मिलोंकी स्थापनाका सूत्रपात प्रारंभ हुआ और सन् १८५५ से सन् १९२० तक ६७ मिलें खुल गईं। इनमेंसे ४६ मिलोंने लिक्विडेशनमें जा नवीन नाम धारण कर पुनः कार्य प्रारंभ कर दिया। १२ मिलें जलकर नष्ट हो गईं और १३ मिलोंने अपनी एजेंसियां दूसरोंको दे दीं। अब केवल २५ ही ऐसी मिलें हैं जो अपनी परंपराकी रक्षा करते हुए प्राचीन नामसे काम कर रही हैं।

मिल व्यवसायमें एजेंसी प्रथाका जन्म

मिलोंके प्रबन्ध-संचालनकी एजेंसीका जन्म सन् १८६० में हुआ था और तबसे यह प्रथा बराबर चले जा रही है। सबसे प्रथम कुछ व्यवसाइयोंका एक संचालक मण्डल बनाया गया था

मिल-ऑनर्स

MILL-OWNERS.

पूंजाभाईने इसका सर्वाधिकार खरीद लिया था उस समयसे इसका नाम धरमसी पूंजाभाई मिल्स होगया। सन् १८८६ में यह मिल बन्द होगई और फिर सन् १८८७ में स्वदेशी मिल्सके नामसे प्रारंभ हुई। इस कम्पनीने सन् १९२५ में ताता मिल्सलिमिटेडसे बाम्बे युनाइटेड मिल खरीद लिया। जो अभी भी इसमें शामिल है इसका टे० न० २६०४१ है। इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २० लाख रुपयोंकी है। और इसका प्रत्येक शेअर १००) का है।

इस कंपनीके हाथमें २ मिलें हैं। (१) कुर्लामें तथा (२) गिरगांवमें। कुर्ला मिलमें ६६०८४ स्पेंडल्स तथा १५४२ लूम्स (करघे) हैं। इसमें ३५५३ आदमी काम करते हैं। यहां पर ४ नंबरसे ३० नंबर तकका सूत निकलता है। इसका टेलीफोन नं० ८७०१६ है।

(२) गिरगांव वाले मिलमें ४५१२८ स्पेंडल्स और ११८७ लूम्स हैं। इसमें २१७० आदमी काम करते हैं। इसमें विशेषतया ८१ नंबरका मोटा सूत तैय्यार होता है। इस कंपनीके डायरेक्टरोंमें सर डी० जे० ताता, आर० डी० ताता, नरोत्तम मुरारजी, जे० डी० गांधी, एस० डी० सकलतवाला सम्मिलित हैं। इसकी एजेंसी ताता एण्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रुस स्ट्रीट फोर्टमें है तथा तारका पता "स्वदेशी" 'Swadeshi' है। टेलीफोन नं २१४५२ है।

स्टेंडर्ड मिल्स कम्पनी लिमिटेड

सन् १८६० में याल्डीन नामसे एक मिलकी स्थापना हुई थी। उसी मिलका यह नवीन रूपान्तर है। यह रूपान्तर सन् १८९१ में हुआ। इस कंपनीका मिल प्रभादेवी रोडपर है। मिलका टे० नं० ४०८८१ है, इसमें सभी प्रकारके ४४५३६ स्पेंडल्स तथा ११७६ लूम्स हैं। इसमें २२७८ मजदूर काम करते हैं। इसमें ६ से लेकर १० नंबर तकका सूत, और कोरा, धुलाहुआ तथा रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है। इसका मूलधन १२०००००) है। इसके डायरेक्टर्स सर डी० जे० ताता, आर० डी० ताता, मफतलाल गगल भाई, एस० डी० सकलतवाला, प्राणसुखलाल मुफतलाल और एन० बी० सकलतवाला सी० आई० ई० हैं। इसकी एजेंसी ताता सन्स लिमिटेडके पास है। इसका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रुस-स्ट्रीटफोर्टमें है। तारका पता 'तस्तनदेवी है। ("Tastandevi") टेलीफोन नं २६०३१ है।

ताता मिल्स कम्पनी लिमिटेड

(३) इसकी स्थापना सन् १९१३ में हुई। इसकी स्वीकृत पूंजी १०००००००) एक करोड़की है। जो ११००० प्रिफ्रेन्स शेअर और ६००० साधारण शेअरोंमें विभाजित कर दी गई है। इसका कारखाना दादरमें है। इस कारखानेमें ६३२५८ स्पेंडल्स तथा १८०० लूम्स हैं। इसमें ४२०० मजदूर काम करते हैं।

मिल ऑनर्स

सर ई० डी सासून एण्डको लिमिटेड

इस समय इस फर्मके चेअरमेन सर विक्टर सासून थर्ड बैरेनोट हैं। आपका जन्म सन् १८८१ में हुआ। आपकी शिक्षा केम्ब्रिजके ट्रिनीटी कालेजमें हुई। आप ई० डी०सासून एण्ड को० के सिनियर हिस्सेदार हैं, जोकि भारतवर्ष में सबसे ज्यादा स्पिंडलस् और लूम्सकी मैनेजिङ्ग एजंट है। सासून महोदयने गत युरोपीय महायुद्धके समय सन् १९१४—१८ तक केप्टनशिप की थी। उसमें आप जख्मी भी हुए थे। अपने पिताजी सर ई० डी० सासूनकी मृत्युके पश्चात आप सन् १९२४ में बेरोनेटकी गद्दीपर बैठे। इस समय आप एडवर्ड सासून एण्ड० को लि० के चेअरमैन हैं। आप व्यापार और उद्योग धन्धे सम्बन्धी विषयोंमें बड़ी दिलचस्पी रखते हैं तथा आर्थिक जगतमें प्रभाव पैदा करनेवाले महत्वपूर्ण प्रश्नोंमें अग्रगण्य पार्ट लेते हैं। आप बम्बईकी मिल ऑनर्स एसोसियेशनकी ओरसे सन् १९२० और २६ में लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिलके मेम्बर चुने गये थे। आप कई मिलोंके मैनेजिंग एजंट तथा मालिक हैं। जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है।

सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी

इस फर्मके संस्थापक बम्बईके प्रसिद्ध परोपकारी गृहस्थ सर कावसजी जहांगीर थे। आपका जन्म सन् १८२४ में बडौदा राज्यके नवसारी ग्राममें हुआ, १५ वर्षकी आयुमें आप मेसर्स डंकन गीपकी कम्पनीमें नौकर हुए, पश्चात् और कई भिन्न २ कम्पनियोंमें आपने सर्विस की, कुछ समय तक सर्विस करनेके बाद आपने दो यूरोपियन फर्मोंकी दलाली करना प्रारम्भ किया और उसके पश्चात आपने चीनके साथ स्वतन्त्र व्यापार शुरू कर दिया जिसमें आपको बहुत लाभ हुआ।

आप बड़े दानी और उदार सज्जन थे सबसे पहिले आपने २ हजार पौंड इंग्लैंडकी लंदन फीवर अस्पतालमें दिये, उसके पश्चात् आपने सुरतमें सर कावसजी जहांगीर हास्पिटल, सर कावसजी जहांगीर युनिवर्सिटी हाल, पूनेमें इन्जिनियरिंग कालेज, डिस्ट्रेंजर्स होमफ्रेंड सोसाइटी, सर कावसजी

दीमानेकजी पेटिट मैन्युफैक्चरिंग कं० लिमिटेड

(१) इस कम्पनीमें दीमानेकजी पेटिट मिल्स लिमिटेड (२) दी दीनशा पेटिट मिल्स लिमिटेड, तथा (३) दीबोमनजी पेटिट मिल्स लिमिटेड, सम्मिलित हैं। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख ५० हजार रुपया है जो ४०५० साधारण शेअर्समें विभाजित है। इसका रजिस्टर्ड आफिस ३५६ हार्नबी रोड, फोर्टमें है। तारका पता (Dinpetit) तथा टेलीफोन नं० २००७५ है। इसके डायरेक्टर्स निम्नाङ्कित सज्जन हैं—

(१) सरदिनशा एम० पेटिट बेरोनेट।
(२) दादा भाई मेरवानजी जीजी भाई।
(३) मानेकजी फारबजी पेटिट।
(४) जहांगीर बोमनजी पेटिट।
(५) बेरामजी जीजी भाई।

इसकी एजेन्सी डी० एम० पेटिटसन्स एण्ड कम्पनीके पास है। इस कम्पनीके द्वारा सञ्चालित तीन मिलोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) मानेकजी पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८६० में हुई थी यह बम्बईकी प्रमुख प्राचीन तथा अपने पूर्व नामसे जीवित रहने वाली मिलोंमें एक प्रधान मिल है। यह मिल तारदेवमें बनी हुई है। इसका टेलीफोन नम्बर ४१८१८ है। इस मिलमें सब प्रकारके ६८६६६ स्पेण्डिल्स तथा २३७६ लूम्स हैं। इसमें ४६०० मजदूर काम करते हैं। इस मिलमें ४ से १० नम्बर तकका सूत काता जाता है तथा कोरा रंगीन और धुला हुआ कपड़ा तैय्यार होता है। इस मिलमें कातने और बुननेकी कलामें निपुण भारतीय व्यक्ति ही काम करते हैं।

(२) दिनशा पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८९३ में रायल मिल्सके नामसे हुई थी। १८८० में यह दिनशा पेटिट मिल्सके नामसे काम करने लगी। यह लालबाग परेलमें हैं तथा इसका टलीफोन नं० ४०८५३ है। इस मिलमें ४२२९६ स्पेण्डिल्स तथा २४०० लूम्स हैं। इसमें काम करनेवाले व्यक्तियोंकी संख्या २५३६ है। यहां ४ से लेकर ३२ नं० तकका सूत तथा कोरा, धुला, रंगीन सब तरहका कपड़ा तैय्यार होता है।

(३) बोमनजी पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८८२ में गार्डन मिल्सके नामसे हुई थी। सन् १८८२ में इसे वर्तमान नाम मिला। यह महालक्ष्मीपर बना हुआ है। तथा इसका टेलीफोन नं० ४०८८४ है। इसमें सब प्रकारके ४२३६८ स्पेण्डिल्स और १२६३ लूम्स हैं। काम करनेवाले मजदूरोंकी संख्या २१११ है यहांपर ६ से २६ नं० तकका सूत तथा सभी प्रकारका कोरा धुला, रंगीन माल तैय्यार होता है।

(४) सर जमशेदजी जीजीभाई बैरोनेट के० सी० एस० आई०

(५) एफ० ई० दीनशा।

(६) कर्सेतजी जे० ए० वाड़िया।

(७) सर फ़जल भाई करीम भाई के० टी० सी० बी० ई०

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहीम एण्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख रुपयेकी है। जो ८००० साधारण शेअरोंमें विभक्त की गई है। यह मिल डिलाइल रोडपर है। इसका टेलीफोन नं० ४०९६७ है। इस मिलमें ५२२५६ स्पेण्डिल्स और १६७६ लूम्स हैं। इसमें २५६० मजदूर काम करते हैं। इस मिलमें १० से ३४ नम्बर तकका सूत काता जाता है तथा कोरा धुला और रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है।

इब्राहीम भाई पबानी मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९२१ में हुई। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। टेलीग्राफिक एड्रेस milloffice और टेलीफोन नं०२१२६७ है। फजलभाई मिल्स कम्पनीके डायरेक्टर्स ही इसके भी डाइरेक्टर हैं। इनके नामऊपर दिये हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी बीस लाखकी है जो८०००शेअरोंमें विभक्त है। यह मिल डिलाइल रोडपर है इसका टेलीफोन नं० ४१०२१ है। इसमें ५७८८० स्पेण्डिल्स और १०५४ लूम्स हैं। इस मिलमें ५ से३२ नं०तकका सूत काता जाता है। तथा कोरा,धुला और रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है।

प्रीमियम मिल्स लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९२१ में हुई। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस, टेलिग्राफिक एड्रेस, इत्यादि वही है जो ऊपरकीदो मिलोंके हैं। इसके डायरेक्टर्स निम्नाङ्कित सज्जन हैं—

(१) सर सासुन डेविड बैरोनेट।

(२) सर जमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट।

(३) जमशेदजी अर्देसरजी वाड़िया।

(४) एफ० ई० दीनशा।

(५) सर करीमभाई इब्राहीम बैरोनेट।

(६) सर फजलभाई करीमभाई के० टी०।

इसकी एजन्सी करीमभाई इब्राहीम एण्ड सन्स लिमिटेडके हाथमें है। इसकी स्वीकृत पूजी २० लाखकी है।जो बीस हजार साधारण शेअर्समें विभक्त है। इसका मिल फ़र्ग्युसन रोडपर है। जहांका टेलीफोन नं०४१५५६है। इस मिलमें ११९६० स्पेण्डिल्स,और ४७३ लूम्स हैं। इस मिलमें १०से३५नंबरतकका सूत कतता है। तथा कोरा,धुला,रंगीन कपड़ा बनाया जाता है।

एक्जिक्यूटिव्ह कौंसिलकी मेम्बरी भी बड़ी योग्यता और बुद्धिमानीके साथ की थी। आपको सन् १६२७ में के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। यह फर्म कई मिलोंकी मैनेजिंग एजण्ट है।

करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स

भारतके कपड़ेके व्यवसायी और मिल मालिकोंमें सेठ करीम भाई इब्राहिमका स्थान बहुत ऊँचा है। इस फर्मकी स्थापना सेठ करीमभाई इब्राहिमने १६ वर्षकी आयुमें की थी। आपके पिताका नाम सेठ इब्राहिम भाई पबानी था। वे अफ्रिकाके जंजीबार नामक बन्दर और बम्बईके बीच निजकी नावोंमें माल लादकर लाते और व्यवसाय करते थे। सन् १८५५ में सेठ इब्राहिम भाई पबानीका देहावसान होगया। अपने पिताके देहावसानके पश्चात् सर करीम भाईने उस व्यवसायको छोड़कर सुधरे हुए तरीकेसे पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करना आरम्भ किया, एवं आपने १६ वर्षकी उम्रमें ही स्वयं पूर्वीय देशोंकी यात्रा की। उस समय सुदूर चीन आदि देशोंके साथ भारत अच्छा व्यवसाय होता था। इसलिये सेठ करीम भाईने इस ओर अपनी पूर्ण शक्ति लगानेका निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् आपने अपने पिताश्रीके नामसे सन् १८५७ में हांगकांगके अंदर एक फर्म खोली। इसके बाद आपने शंघाई, कोबी और सिंगापुरमें भी अपनी फर्म स्थापितकी, एवं कलकत्तेमें भी अपने नामसे एक शाखा खोली। सेठ करीम भाईने अपनी व्यवसायिक योग्यताके बलपर व्यापारको खूब तरक्की दी और थोड़े ही समयमें यह फर्म पूर्वीय देशोंसे व्यवसाय करनेवाली फर्मोंमें बहुत ऊँची मानी जाने लगी। उस समय यह फर्म अफीम, रूई, सूत, रेशम, चाय आदि वस्तुओंका व्यवसाय करती थी।

बहुत समय तक सर करीमभाई स्वयं सब प्रबन्ध देखते रहे पश्चात् आपने अपने सुपुत्र मोहम्मद भाई तथा फजलभाईको भी सन् १८८१ से साथ ले लिये कुछ समय बाद आपके तीसरे पुत्र हुसेन भाई भी एक हिस्सेदारके रूपमें फर्ममें काम करने लगे और अन्तमें सर करीमभाईके शेष चारों पुत्र सेठ अहमदभाई, सेठ रहीमतुल्ला भाई, सेठ हबीब. भाई और सेठ इस्माइल भाई भी फर्मके हिस्सेदार बनाये गये और अन्तमें फर्मका सारा कारोबार इन्हीं सब भाइयोंके हाथमें आया। सर करीमभाईने अपने देहावसानके समय अपनी फैमिलीका बहुत सुप्रबन्ध कर दिया था।

सर करीमभाईने पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करते हुए देशी उद्योग धन्धेकी ओर भी खूब ध्यान दिया। पुराने प्रिन्स आफ वेल्स मिलकी मैनेजिङ्ग एजेंसी जब आपने अपने हाथोंमें ली, तबसे आपने रूईके व्यापारको विशेष बढ़ाया। आपने सन् १८८८ में करीम भाई इब्राहिम मिल्स कं० लि० की स्थापना की। इस मिलने इतनी अधिक उन्नतिकी, कि उसकी आमदसे मोहम्मद भाई मिल नामक एक मिल और खोली गयी। इसके बाद सर करीमभाईने इब्राहिमभाई पबानी मिल्स

मिलाकर ८१६३४ स्पिंडल्स और ६१३ लूम्स हैं। इसमें भी ऊपरकी मिलों ही की तरह कपड़ा तैयार होता है।

मथुरादास मिल्स लिमिटेडः—इस मिलकी स्थापना सन् १८८३ में क्वीन्स मिल्सके नामसे हुई। सन् १९१३ में यह किङ्गजार्ज मिल्सके नामसे प्रसिद्ध हुई। उसके पश्चात् इसका जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम मथुरादास मिल्स हुआ। इसके डाइरेक्टर्स प्रायः वही लोग हैं जो कस्तूरचन्द मिलके हैं। केवल कीका भाई प्रेमचन्दकी जगह इसके डायरेक्टरोंमें जमशेदजी वाड़ियाका नाम है।

इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है। जो ४८०० साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गई है। यह मिल डिलाइलरोड पर बना हुआ है। जहांका टेलीफोन नं० ४०८५१ है। इस मिलमें ४३५६६ स्पेंडिल्स और ९०७ लूम्स हैं। इसमें २४६५ मजदूर काम करते हैं। यहां पर भी रंगीन, सफेद, कोरा और धुला हुआ कपड़ा बनता है।

माधवराव सिन्धिया मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८८६ में सन मिलके नाम से हुई थी। सन् १९१७ में जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम बदलकर माधवराव सिंधिया मिल्स कर दिया गया। इसका आफिस आउट्रम रोड फोर्टमें है। इसके तारका पता मिलआफिस (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२१७ है। इसके डायरेक्टर्स (१) सर सासुन डेविड बेरोनेट (२) जमशेदजी अर्देसर वाड़िया (३) करीमभाई इब्राहिम बेरोनेट (४) एफ० ई० दीनशा (५) आ० सर फिरोज सेठना (६) अर्देसर जमशेदजी वाड़िया बार (७) सर फजल भाई करीम भाई के० टी० हैं।

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एन्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २८ लाख है जो २० हजार प्रिफेरेन्स तथा १८ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। इसका कारखाना लोअर परेलमें है। इसका टेलीफोन नं० ४०११० है। इस मिलमें ४४३२० स्पिंडल्स तथा ६०४ लूम्स हैं। इसमें २३१० मजदूर काम करते हैं। यहां सब प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

क्रेसेन्ट मिल्स लिमिटेड—इसकी स्थापना सन् १८८३ में रिपन मिलके नामसे हुई थी इसी मिलका नाम बदलकर सन् १९१४ में क्रेसेन्ट मिल हो गया। इसका रजिस्टर्ड आफिस १२।१४ आउट्रम रोड (फोर्ट) में है। तारका पता-मिल आफिस (Milloffice) और टेलीफोन नं० २१२९७ है इसके डाइरेक्टर करीब २ उपरोक्त मिलवाले ही हैं। सिर्फ आर० डी० जीजी भाई और बेगनजी जीजी भाई विशेष हैं।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स लिमिटेड के पास है। स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी है। जो ६ हजार प्रिफरेन्स तथा ४ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गयी है इसका कारखाना रिपन रोडपर है जिसका टेलीफोन नं० ४०८४१ है। इस मिलमें

जमशेद मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—मिल फरग्यूसन रोडपर है। एजंट होरमसजी अरदेशर एण्ड संस हार्नवीरोड। लूम्स ४६४ और स्पेंडल्स ३१३०० हैं।

वेस्टर्न इण्डिया स्पीनिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग कं० लि०—एजंट थैकरसी मूलजी संस एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है। इसमें स्पिंडल्स ४१७६० और लूम्स ६७७ हैं, केपिटल १२ लाख है।

माधवजी धरमसी मेन्युफेक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—पूञ्जी २०२३७५० है। स्पेंडिल्स ३७८१२ और लूम्स ६०३ हैं। एजण्ट—गोकुलदास माधवजी संस एण्ड कम्पनी होर्नवीरोड है।

मुबिके मिल्स लिमिटेड:—न्यूशिवरी रोड—लूम्स ४५२ स्पिण्डल्स ३६२५२ केपिटल १५ लाख, एजंट मंगलदास मेहता एण्ड कम्पनी १२३ एस्लेनेड रोड फोर्ट है।

बाम्बे काटन मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड:—मिल काला चौकीरोड, केपिटल २२४०७७०, स्पिण्डल्स ३३६४८ और लूम्स ७१५ है। एजण्ट होरमसजी संस ऐण्ड कम्पनी हार्नबी रोड फोर्ट है।

जेम्स मेन्युफेक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—मिल फरग्यूसन रोड पर है। एजण्ट बालजी शामजी एण्ड कम्पनी ४ दलाल स्ट्रीट फोर्ट है। केपिटल १२ लाख, लूम्स ८७४ और स्पिण्डल्स ३०५८० है।

विक्टोरिया मिल्स लिमिटेड:—गाम देवीरोड, एजण्ट मगनलाल मेहता एण्ड कंपनी १२३ एस्प्लेनेड रोड फोर्ट है। पूञ्जी ८ लाख, लूम्स २७ हजार और स्पिण्डल्स ५५६ हैं।

डायमंड स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कं लिमिटेड—परेलपर है। एजंट गुलाबचन्द ऐण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है। पूञ्जी ३९१७६१८) हैं लूम्स ३४५५२ और स्पिंडल्स ७५८ हैं।

किलाचंद मिल कं० लि०—एजंट किलाचन्द देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० ५५ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है, पूंजी ४०३३४४५) है।

न्यु केसरे हिन्द मिल—चिंच पोकली, एजंट वसनजी मनजी एण्ड कम्पनी एल्फिंस्टन सर्कल, पूंजी ६ लाख स्पिंडल्स ४०१४४ और लूम्स ११०४ हैं।

खटाऊ मकनजी स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लि०—भायखला एजंट खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनी लक्ष्मी बिल्डिंग ४२ बेलार्ड पेअर फोर्ट, पूंजी २९६५००० स्पेंडल्स ६२८४४ और लूम्स १५१२ हैं।

न्यु. बीरजी मिल्स लिमिटेड—टोमर परेल एजन्ट एच० एफ० कोमिसरी एन्ड कम्पनी। पूंजी ४१६७८२०) स्पिंडल्स ३६२०८ लूम्स ६०० हैं।

(२) दिल्ली—मेसर्स करीम भाई इब्राहीम (T. A. mill office)
(३) इन्दौर—मे० करीम भाई इब्राहीम (T. A. creson)
(४) कलकत्ता—एजंट सुन्दरमल परशुराम (T. A. Sitapal)
(५) अमृतसर—एजेंट नौकाराम परमानन्द (T.A mill office)
(६) कानपुर—एजेंट-गनेशनारायण पन्नालाल (T. A Durgaji)

इसका हेड ऑफिस- १२ ।१४ आउट्रम रोडफोर्ट, बम्बई है।

डेविड सर सासून वैरोनेट

आपका जन्म सन् १८४८ में हुआ। आप जेविश जातिके सज्जन थे। बम्बईके जेविश समाजमें आप बड़े उन्नतिशील तथा कुशल व्यापारी हुए हैं। बंबई प्रेसिडेन्सीके उद्योग धंधे और व्यापारकी तरक्कीमें आप एक स्वतंत्र व्यक्तिकी हैसियतसे सम्मानित हुए थे। बम्बईकी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके आप करीब २० वर्ष तक अग्रगण्य मेम्बर तथा सन् १९२१, २२ में उसके सफल सभापति रहे थे। इंडिया बैंक आदि और भी कई व्यापारिक संस्थाओं तथा प्रजा-हितमें आपका अच्छा हाथ रहा है। आप कई संस्थाओंके डायरेक्टर तथा प्रेसिडेन्ट रहे हैं। इसके अतिरिक्त सन् १९०५ में आप मिल-आनर्स एसोसिएशनके सभापति, बांबे इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टके मेम्बर और बंबई लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके मेम्बर रहे हैं। भारत सरकार गवर्नर जनरलकी कौंसिलके भी आप मेम्बर रहे हैं। आपको सन् १९०५ में भारत सरकारने नाइट (Knight) की पदवीसे सम्मानित किया। साथ ही सन् १९२२ में आप के० सी० एस० आई भी हो गये। आपको सन् १९०१ में बेरोनेटका खिताब भी मिल गया। कहनेका मतलब यह है कि आपका व्यापारमें तथा गवर्नमेंटमें बहुत अच्छा सम्मान रहा है। आप कई मिलोंके डायरेक्टर तथा मैनेजिंग एजेंट हैं। जिनका परिचय प्रथम दिया जा चुका है।

ताता सन्स लिमिटेड

भारतके आधुनिक औद्योगिक विकासमें, कलाकौशलकी उन्नतिमें तथा मिल व्यवसायके इतिहासमें ताता परिवारका बहुत ऊंचा स्थान है। श्रीयुत जमशेदजी नसरवानजी ताताका नाम भारतके व्यवसायिक इतिहासमें प्रकाशमान नक्षत्रकी तरह चमक रहा है। आपने हिन्दुस्थानकी कला और कारीगरीमें, उद्योग और आर्थिक उन्नतिमें एक नया जीवन फूंक दिया था। आपका जन्म सन् १८३९ में बड़ौदा राज्यके नौसारी नामक ग्राममें हुआ था। आपके पिता एक बहुत साधारण स्थितिके पारसी पुरोहित थे। श्रीयुत जमशेदजीकी शिक्षा बम्बईके एलफिन्स्टन कॉलेजमें

रेशम के कारखाने

(१) सासून एण्ड अलायन्स सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड आफिस ३ वालेस स्ट्रीट फोर्टमें है। इसका कारखाना विक्टोरिया रोड मझगांवमें है। इसमें २८५ लूम तथा ९५२० स्पेंडल्स हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। इसमें ९९७ आदमी काम करते हैं। इसके मैनेजिंग एजंट डेविड सासून एण्ड कंपनी लिमिटेड है। और डायरेक्टर निम्न लिखित सज्जन हैं।

(१) एच० एच० स्कायर
(२) सिडने ग्रुड डब्ल्यू
(३) एच० टेम्पल
(४) ईश्वरदास लक्ष्मीदास
(५) एफ. आर. वाड़िया
(६) रणछोड़दास पी० मेहरा

(२) ओरियंटल सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड आफिस २०७ हार्नबी रोड फोर्ट बम्बईमें है और कारखाना सुपारी बाग रोड परेलमें है। इसमें सन् १९२५ में ३८० आदमी काम करते थे।

ऊनके कारखाने

(१) बम्बे ऊलन मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड—इसका आफिस ईवर्ट हाउस, टेमिरंड लेन फोर्टमें है इसका कारखाना दादरमें है। यहां पर ऊनी माल तयार होता है। इसके मैनेजिंग एजण्ट एंग्लोइण्डियन कार्पोरेशन लिमिटेड है। तारका पता—ईवर्ट (Ewart) है। इसमें सन् १९२५ में ६६१ आदमी काम करते थे।

(२) इण्डियन ऊलन मिल्स (हांगकांग मिल्स लिमिटेड)—इसका आफिस उटवी रोड फोर्टमें है। कारखाना चिंचपोकली पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोडकी है। जिसमेंसे ८० लाखकी पूंजी वसूल हो चुकी है। इसमें २२० लूम औरको १०४०० स्पिंडल्स हैं। इसके अतिरिक्त ४८०० सूत बनानेके स्पिंडल्स हैं। और २८८० ऊन कातने वाले स्पिंडल्स हैं। इसके एजंट दुनेन भाई जिवाजी वाड़िया एण्डको है।

(३) थेंक ऊलन मिल्स लिमिटेड—इसका आफिस ई० डी० सासुन बिल्डिंग्स डूगल्ड रोड बेलार्ड एस्टेट पर है। इसकी मिल थाना (बम्बई) में है। इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाखकी है। इसमें सन् १९२५ में ६०० आदमी काम करते थे। इसकी भारत और इङ्गलैण्डमें एजन्सी ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेडके पास है। इस कंपनीका

उपरोक्त घटनाएं ताताके जीवनकी प्रस्तावना मात्र हैं। इस महा पुरुषके जीवन-नाटकके तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण और मनोरञ्जक अंक और हैं। (१) लोहेका कारखाना (२) बिजलीघर और (३) रिसर्च इन्स्टीट्यूट। ताता महोदयका बहुत दिनोंसे विचार था कि इस देशमें बड़े स्केलपर लोहेका कारखाना खोला जाय। बहुत तहकीकात और जांच करनेके पश्चात् पता चला कि मयूर-भंजमें बहुत लोहा निकलनेकी संभावना है। इसपर आपने सब जगह पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। उत्तरमें मयूर-भंज रियासतने सहायता देनेका वचन दिया, बङ्गाल नागपुर रेलवेने किराया कम करनेका वायदा किया। भारत सरकारने प्रतिवर्ष २० हजार टन माल खरीदनेकी जिम्मेदारी ली। सन् १६०७ ई० में २३१००००००) की पूंजीसे टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी स्थापित हुई, मगर खेद है कि आप अपने जीवनमें इस कम्पनीको न देख सके। क्योंकि इसकी स्थापनाके पूर्व ही सन् १६०४ में आपका देहान्त हो गया था। सन्तोषकी बात है कि आपके पश्चात् आपके सुयोग्य पुत्रोंने इस कार्य्यको बहुत सफलताके साथ चलाया। यह कारखाना सारे भारतवर्षमें एकही है। जापान, स्काटलैण्ड, इटली, फिलीपाइन आदि देश और हिन्दुस्थानकी रेलवे कम्पनियां इस कारखानेका माल बड़ी प्रसन्नतासे खरीदती हैं। यह इस देशके लिए कम गौरवकी बात नहीं है।

ताता महोदयके जीवनका दूसरा महत्वपूर्ण काम उनके द्वारा चलाया हुआ ताता इलेक्ट्रिक वर्क्स है। आपने देखा कि पश्चिमीय घाटमें बहुत अधिक बरसात होती है और बरसातका वह सब पानी बहकर अरब समुद्रके खारे पानीमें मिल जाता है। कोई उसका उपयोग लेनेवाला नहीं है। प्रकृतिकी इस बृहत् शक्तिका उपयोग करनेके लिए मिस्टर ताताने प्रसिद्ध इञ्जीनियर मि० डेविड गासलिंगसे परामर्श किया। कई वर्षोंतक आप इस विषयमें विचार करते रहे। अन्तमें सन् १८६७ में आपने इस कार्य्यको करनेका निश्चय कर लिया। मगर सन् १६०४ में आपका देहान्त हो जानेसे इसे भी आप कार्य्यरूपमें न देख सके। आपके पश्चात् आपके पुत्रोंने सन् १६११ में इस कार-खानेकी इमारतकी नींव डाली और सन् १९१५ में इस बृहत् कार्य्यका आरम्भ कई करोड़की पूंजीसे प्रारम्भ हो गया। पानी इकट्ठा करनेका इतना बड़ा कारोबार शायद दुनियामें दूसरा नहीं है। इस कारखानेमें पीपेसे इतना पानी निकलता है जितना टेम्स नदीमें सात महीनेमें बहता है। इस कार-खानेसे निकलनेवाली बिजलीकी शक्तिके द्वारा बम्बईकी कई मिलें चल रही हैं। इसके सिवाय पीनेके पानीके अतिरिक्त इस कारखानेके पानीसे तीस चालीस हजार एकड़ जमीन सींची जा सकती है। इस कारखानेसे लगभग एक लाख बीस हजार घोड़ोंकी शक्तिकी (Horse power) बिजली पैदा होती है। जिसमेंसे ५०००० घोड़ोंकी पावरसे बम्बई की २७ मिलें चलती हैं।

ताता महोदयका ध्यान देशके सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रहा। आपने भारतीय नवयुवकोंको व्यवसायिक रसायन शास्त्रकी उत्तम शिक्षा देने तथा विज्ञानकी सहायतासे भारतके

(५) एन० बी० सकलतवाला
(६) जे० डी० गांधी

रिचर्डसन एण्ड क्रूडस—इसका कारखाना भायकलामें है, इसके यहां मकान बनानेका ठेका तथा लोहा और पीतल गलानेका व ढालनेका काम होता है। यह कम्पनी धातु और हार्डवेअरकी व्यापारी हैं। इसका तारका पता, "आयर्न वर्क्स" है।

एलकाक ऐश डाउन एण्ड को लि०—इसके कारखाने मझगांव और कर्नाक बन्दरपर हैं। इनके यहां सभी प्रकारका जहाजी तथा इमारती काम होता है और सभी प्रकारकी मरम्मतका काम भी यह लोग करते हैं। इनके तारका पता रिपेयर्स 'Repairs' है।

सीमेन्ट कम्पनी

पोर बन्दर स्टोन कम्पनी लि०—इसका आफिस २०३—५ हार्नबी रोड पर है। तारका पता 'लाइटस्टोन' है इसके कारखाने पोर बन्दरमें और बम्बईमें है।

इण्डिया सीमेन्ट कम्पनी लि०—इसका आफिस बाम्बे हाउस ब्रूस स्ट्रीट पर है। कारखाना पोरबन्दरमें हैं, इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाख है जिसमेंसे ३६७७१५० रु० शेअर बेंचकर वसूल किये गये हैं। इसके एजंट टाटा सन्स लि० है। तारका पता है "टाटासीमेन्ट"।

रंग और वार्निश

पायोनियर इण्डियन पेण्ट एण्ड आईल वर्क्स लि० इसका कारखाना भाईकलामें है। यहां पर सब प्रकारके आंइल, पेन्ट वार्निश और दूसरे तेल तैयार होते हैं। इसका आफिस ११ लवलेन भाईकलामें है।

चांवलका मिल

श्री अन्नपूर्णा राइस मिल—कालबादेवीमें हैं।

पेपर मिल

गिरगांव पेपर मिल्स—इसका कारखाना गिरगाममें है। और आफिस ७७—७६ अपोलो स्ट्रीटमें हैं।

खपड़ा नाठिया कारखाना

भारत फ्लोरिङ्ग टाइल्स कम्पनी—आफिस मोरारभाई बिल्डिङ्ग अपोलो स्ट्रीटमें है। इसके प्रधान पार्टनर हैं खान बहादुर नसरवानजी मेहता।

(२) सर दीनशा मानेकजी पेटिट—(प्रथम बेरोनेट) आप स्व० मानेकजी नसरवानजीके पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १८२३ में हुआ था। बंबईके मिल व्यवसायको बढ़ानेमें आपने बहुत अच्छा भाग लिया। आपने सन् १८६० में माणेकजी पेटिट मिलकी स्थापनाकी, इसके पश्चात दिनशा पेटिट मिल्स, फ्रामजी पेटिट मिल्स, विक्टोरिया मिल्स तथा गार्डन मिलोंकी स्थापना की। आपने बम्बईके प्रसिद्ध कला-कौशलकी शिक्षा देनेवाले विद्यालयकी स्थापनामें बड़ा भाग लिया, और उसकी इमारतके लिए तीन लाख रुपये दान किये। आप बंबई बैंकके डायरेक्टर, बाम्बे चेम्बर आफ कौमर्सके सदस्य, और मिल ओनर्स एसोसिएशनके करीब चौदह वर्ष तक प्रेसिडेन्ट रहे। बंबई विश्वविद्यालयके फेलो तथा वाईसरायकी कौन्सिलके भी आप मेंबर बनाए गये। सन् १८८७ में आपको सरकी उपाधि प्राप्त हुई और सन् १८९० में बैरोनेटके सम्माननीय पदसे आप सम्मानित किये गये। आपका स्वर्गवास सन् १९०१ में हुआ।

(३) सर दिनशा मानेकजी (द्वितीय बैरोनेट)—आप प्रथम बैरोनेटके पौत्र हैं। आपके पिता श्री फ्रामजी दिनशा पेटिटका स्वर्गवास आपके पितामहकी उपस्थितिमें हो गया था। इस कारण आप ही आपने पितामहकी मृत्युके पश्चात द्वितीय बैरोनेट हुए। आप मानेकजी पेटिट तथा फ्रामजी पेटिट मिलके डायरेक्टर हैं।

(४) धूनजी भाई फ्रामजी पेटिट—आप सर दिनशा मानेकजी पेटिट प्रथम बैरोनेटके प्रपौत्र हैं। आप एम्परर एडवर्ड मिलके मैनेजिंग डायरेक्टर और एजेंट हैं।

(५) बोमनजी दिनशा पेटिट-पेटिट समुदायके मिलोंकी एजेंसीसे आपका ३० वर्ष तक सामीप्य सम्बन्ध रहा। आप बांबे बैंक और मिल ओनर्स एसोसिएशनके सभापति भी रहे थे। आपने पारसियोंके लिए अस्पताल खोलनेके लिए सात लाख रुपयेका दान दिया था। आपका जन्म १८५६ में और देहान्त १९१५ में हुआ।

(६) जहांगीर बोमनजी पेटिट —आप मानेकजी पेटिट तथा फ्रामजी पेटिट मिल्स कंपनीके एजेण्ट तथा डायरेक्टर हैं। आप सन्१९१५-१६ में मिल ओनर्स एसोसिएशनके, १९-२० में इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके, १९१८ में इण्डियन इण्डस्ट्रियल कान्फरेंसके तथा बांबे टेक्स टाइल एण्ड इञ्जीनियरिङ्ग एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट रहे हैं। वर्त्तमानमें आप इण्डियन एकानमिक सोसायटी, टेरिफ रिफार्म लीग तथा लेंड लार्ड एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट है। बंबईके मशहूर पत्र इण्डियन डेलीमेलके आप जन्म-दाता हैं।

(७) कावसजी होर्मुसजी पेटिट—आपका जन्म सन् १८९३ में हुआ। सन् १९१८ में आपने बी० ए० पास किया। तत्पश्चात् बोमनजी पेटिट मिलमें आपने कार्य्यारंभ किया। पश्चात् आप विलायत गये और वहां कपड़े बुननेकी कलाका विशेष रूपसे अध्ययन किया।

५—मद्रास यूनाइटेड प्रेस कम्पनी लि०—इसमाइल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर इसका आफिस है। इसकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरीज़ बम्बईके अतिरिक्त गुन्टकाल, कोइम्बटोर, तीरुपुर, तथा डिन्डिगलमें हैं। इसमें स्वीकृत पूंजी १५ लाख की है जिसमेंसे ६ लाख ८० हजार वसूल करके लग चुका है। इसके डायरेक्टरोंमें सेठ शान्तिदास आशकरण जे० पी० चेयरमैन हैं तथा पाठक सन्स एन्ड कम्पनी इसकी मैंनेजिंग ऐजेन्ट है इसका तारका पता है "वेस्टर्न" (Western)

६—मनगढ़ मैन्यू फेक्चरिंग कम्पनी लि०—की जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी चलती हैं। इसका आफिस ४७ मेडोलस्ट्रीट में है इसमें स्वीकृत पूंजी ३ लाख ५० हजार की लगी हुई है जो २५०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १ हजार ४ सौ शेयर बेचकर वसूल कर ली गयी है। इसके डायरेक्टरोंमें निम्नाङ्कित व्यक्ति है:—

सेठ मेघजी लक्ष्मीदास (चेयरमैन)

" मगनलाल दलपतराम खखर

" मागजी ईश्वजी

" गिरधरलाल हरीलाल मेहता

" नारायणदास गोकुलदास

इसकी एजेन्सी नेनसी शिवजी ए० को० के पास है।

७—न्यू प्रिन्स आफ वेल्स प्रेस को० लि०—इसके द्वारा कॉटन जिनिङ्ग, प्रेसिङ्ग फेक्टरी तथा आइल मिल चल रहे हैं। इसका आफिस फार्बेस बिल्डिंग होम स्ट्रीटपर है। इसकी फेक्टरी बम्बईके अतिरिक्त बरसी, बीजापुर, बुढ़ानपुर,हुबली,खांबगांव, डोंडइचा, मल्कापुर,धूलिया मूर्तिजापुर, तथा पुल्गांवमें हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाख है जो ५००) रु०प्रति शेयरसे ६ सौ शेअरों में विभाजित हैं। इस पूंजीमेंसे ५९५ शेयर बेचकर २ लाख ९७ हजार ५००की रकम वसूल की गयी है। इसके सेक्रेटरी तथा ट्रेजरर्स फार्बेस एन्ड को० लि० है।

८—फ्रॉस केम्पस वेस्टर्न इन्डिया काटन को० लि०—इसका आफिस ओरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है डायरेक्टर हैं जो० ई० डी० लेंगली, जो० बायगिस, एम० एन० पोच खानवाला, ए० एच० रोडेश। इसकी मेनेजिंग ऐजेन्सी लेंग्ली एन्ड कम्पनीके पास है और तारका पता है लेंगलेट (Langlet)।

नशा माणेकजी पेटिट (द्वितीय बेरोनेट)

श्रीमान् एन० एन० वाडिया

श्री० सर फिरोज सेठना के० टी०

सर शापुरजी बरजोरजी भरोंचा के० टी०

ऑनरेबल सर फ़िरोज सेठना के० टी०

सर फ़िरोज सेठना एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका सम्बन्ध कई प्रकारके आन्दोलनोंसे रहा है आपने बहुतसे विभागोंमें बहुत ही बहु मूल्य सेवाएं की हैं। आपका जन्म स० १८६६ ईस्वीमें हुआ था। आप व्यवसायी कुलके एक विख्यात व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवनको बीमा कम्पनियों, बैंकों, रूईकी मिलोंकी कम्पनियों, तथा ज्वाइण्ट स्टॉक (joint stock) के कामोंमें लगाया है। आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरके सभापति, और सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डियाके चेयर-मैन थे। आप बम्बईकी पुरानी प्रदर्शिनी, जो हिज मेजेस्टी बादशाहके भारत भ्रमणके समय १९११ में की गई थी, मन्त्री थे। आप बम्बई पोर्टट्रस्ट और सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त आपका म्युनिसपैलिटीके शासनसे भी गहरा सम्बन्ध रहा है। आप १९०७ से कौर-पोरेशनके सदस्य हैं और १९११ में स्टैन्डिङ्ग कमिटीके चेयरमेन एवं १९१५ में उसके सभापति रह चुके हैं। आप बहुतसे सार्वजनिक चन्दोंके अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे। प्रिन्स ऑफ वेल्सके स्वागत एवं ड्यूक ऑफ कनाटके स्वागतके लिये जो चन्दे एकत्र किये गये थे उसके आप ही कोषाध्यक्ष थे। चोल्डरन लीगका भी फन्ड आपके ही पास रखा गया था। लड़ाईके समयमें, की गई सेवाओंके सम्बन्धमें विशेष परिचय दिखलानेके लिये कमान्डर-इन चीफने बम्बई प्रेसिडेन्सी से १० व्यक्तियोंका नाम उल्लेख किया था जिनमें बम्बई शहरसे केवल आपका ही नाम था। आप स्कीन कमेटीके भी सदस्य थे। आप भारत सरकारकी ओरसे दक्षिण अफ्रिकामें प्रतिनिधि बनाकर १९२६ में भेजे गए थे। १९१६ में आप बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलमें वहांकी सरकार द्वारा निर्वाचित किए गये। इसके पश्चात् १९२१ से ही आप कौन्सिल ऑफ स्टेटके निर्वाचित सदस्य रहे हैं। १९१६ में आपने आनरकी, तथा सन् १९२६ में नाइट हुडकी उपाधि पाई।

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा

सर सापुरजी बरजोरजी भरोंचा नाइट जे० पी० उन महानुभावोंमेंसे हैं जो साधारण स्थितिसे निकल कर अपने पैरोंके बल उच्चस्थितिमें प्रवेश करते हैं। जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय आपके पिताकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी इस कारण आप ऊँचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त न कर सके और छोटी उम्रमें ही आपको व्यापारके अन्दर प्रवेश करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् सूरतके एक प्रसिद्ध जैन गृहस्थ सेठ तलकचन्द मानकचन्दके साथ आपका हिस्सा हो गया और बम्बईमें आपने तलकचन्द एण्ड सापुरजीके नामसे एक फर्म स्थापित की। यह फर्म बम्बईकी एक प्रतिष्ठित फर्म गिनी जाती है और बम्बईको बैंकों, मिलों तथा रुई और सूतके व्यापारियोंके साथ वृहत रूपमें व्यापारिक सम्बन्ध रखनेके लिये प्रसिद्ध है सन १८६९ से सर सापूरजीने मिल

जहांगीर आई-हास्पिटल, (आंखका दवाखाना) एल्फिस्टन कालेजका मकान, तथा सिन्ध हैदराबादमें एल्बर्ट का हास्पीटल और बगीचा इत्यादि सार्वजनिक संस्थाएं निर्माण की। बम्बईके दानवीरोंमें आपका नाम बहुत ऊंचा था। आपकी योग्यता और दानवीरतासे प्रसन्न होकर सरकारने आपको जे० पी० की उपाधिसे सम्मानित किया है। इसके बाद सन् १८६० में आप इनकमटेक्स डिपार्टमेन्टके कमिश्नर नियुक्त हुए। सन् १८७१ में आपको सी० एस० आई० और १८७२ में सर नाइटका अलकाब प्राप्त हुआ। १८७८ में आपका स्वर्गवास हुआ आपके कोई पुत्र न होनेकी वजहसे आपने अपने बड़े भाईके पुत्र जहांगीरजीको गोद लिया।

सर कावसजी जहांगीर बेरोनेट जे० पी०

आपका प्रथम नाम जहांगीरजी था। आप सर कावसंजीके (प्रथमके) बड़े भाई हीरजी जहांगीरके बड़े पुत्र सेठ [illegible]जीके पुत्र थे। आपका जन्म सन् १८५२ में हुआ। आपकी शिक्षा एल्फिन्स्टन कालेजमें हुई। आपने अपनी पत्नी श्रीमती धनबाईके साथ कई बार विलायत यात्रा की। सन् १८९७ में जब आप चौथी बार लन्दन गये थे तब श्रीमती विक्टोरिया महारानीने अपने हाथोंसे आपको नाइटके प्रसिद्ध खिताबका चांद प्रदान किया। उस समय आपने इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटको [illegible] के लिये २ लाख रुपये प्रदान किये उसके पश्चात सन १९१२ में बम्बईके [illegible] ८ लाख रुपये दान किये। आपकी दानवीरतासे प्रसन्न होकर गव्हर्नमेंटने आपको बेरोनेटका अत्यन्त सम्मान पूर्ण खिताब प्रदान किया। सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एक अत्यन्त सम्माननीय पुरुष, म्युनिसिपल कारपोरेशन, लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके मेम्बर, प्रसिद्ध मिल मालिक, और पारसी पंचायतके सम्माननीय ट्रस्टी रहे हैं गवर्नमेन्टने सन् १९१८ सालके लिये आपको बम्बईके शेरिफके [illegible] पद प्रदान किया था। टाटा आयरन स्टील एण्ड कम्पनी, हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी, जुबिली मिल आदिके समान व्यापारिक उद्योग धन्धोंके उद्देशोंके साथ आपकी बहुत सहानुभूति रही।

जहांगीर सर कावसजी [जूनियर]

आपका जन्म सन् १८७९ में हुआ। आपने केम्ब्रिजके सेन्ट जॉन्स कालेजमें शिक्षा प्राप्त कर [illegible]। बम्बईके पब्लिक-जीवनमें आपका बुद्धिमत्ता पूर्ण हाथ रहा है। आपने म्युनिसिपल कार्पोरेशनकी सन् १९०४ से सन् १९२१ तक बहुत अच्छी सेवाएं की हैं। आप इसकी स्टेंडिंग कमेटीके सन् १९१४-१५ में चेअरमेन रहे और सन् १९१९—१९२० में आप इसके सभापति रहे हैं। आपने युद्धके समयमें गवर्नमेंटकी बहुत सेवाएं की थीं। इसके बदलेमें गवर्नमेंटने आपको सन् १९१८ में ओ० बी० ई० तथा सन् १९२० में सी० आई० ई० की पदवीसे विभूषित किया है। आपने

ऑनरेबल सर फ़िरोज सेठना के० टी०

सर फ़िरोज सेठना एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका सम्बन्ध कई प्रकारके आन्दोलनोंसे रहा है आपने बहुतसे विभागोंमें बहुत ही बहु मूल्य सेवाएं की हैं। आपका जन्म स० १८६६ ईस्वीमें हुआ था। आप व्यवसायी कुलके एक विख्यात व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवनको बीमा कम्पनियों, बैंकों, रूईकी मिलोंकी कम्पनियों, तथा ज्वाइण्ट स्टॉक (joint stock) के कामोंमें लगाया है। आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरके सभापति, और सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डियाके चेयर-मैन थे। आप बम्बईकी पुरानी प्रदर्शिनी, जो हिज मेजेस्टी बादशाहके भारत भ्रमणके समय १९११ में की गई थी, मन्त्री थे। आप बम्बई पोर्टट्रस्ट और सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त आपका म्युनिसपेलिटीके शासनसे भी गहरा सम्बन्ध रहा है। आप १९०७ से कौर-पोरेशनके सदस्य हैं और १९११ में स्टैन्डिङ्ग कमिटीके चेयरमैन एवं १९१५ में उसके सभापति रह चुके हैं। आप बहुतसे सार्वजनिक चन्दोंके अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे। प्रिन्स ऑफ वेल्सके स्वागत एवं ड्यूक ऑफ कनाटके स्वागतके लिये जो चन्दे एकत्र किये गये थे उसके आप ही कोषाध्यक्ष थे। चील्डरन लीगका भी फन्ड आपके ही पास रखा गया था। लड़ाईके समयमें, की गई सेवाओंके सम्बन्धमें विशेष परिचय दिखलानेके लिये कमान्डर-इन चीफने बम्बई प्रेसिडेन्सी से १० व्यक्तियोंका नाम उल्लेख किया था जिनमें बम्बई शहरसे केवल आपका ही नाम था। आप स्कीन कमेटीके भी सदस्य थे। आप भारत सरकारकी ओरसे दक्षिण अफ्रिकामें प्रतिनिधि बनाकर १९२६ में भेजे गए थे। १९१६ में आप बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलमें वहांकी सरकार द्वारा निर्वाचित किए गये। इसके पश्चात् १९२१ से ही आप कौन्सिल ऑफ स्टेटके निर्वाचित सदस्य रहे हैं। १९१५ में आपने आनरकी, तथा सन् १९२६ में नाइट हुडकी उपाधि पाई।

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा नाइट जे० पी० उन महानुभावोंमेंसे हैं जो साधारण स्थितिसे निकल कर अपने पैरोंके बल उच्चस्थितिमें प्रवेश करते हैं। जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय आपके पिताकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी इस कारण आप ऊँचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त न कर सके और छोटी उम्रमें ही आपको व्यापारके अन्दर प्रवेश करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् सूरतके एक प्रसिद्ध जैन गृहस्थ सेठ तलकचन्द मानकचन्दके साथ आपका हिस्सा हो गया और बम्बईमें आपने तलकचन्द एण्ड सापुरजीके नामसे एक फर्म स्थापित की। यह फर्म बम्बईकी एक प्रतिष्ठित फर्म गिनी जाती है और बम्बईकी बैंकों, मिलों तथा रुई और सन [illegible] साथ वृहत रूपमें व्यापारिक सम्बन्ध रखनेके लिये प्रसिद्ध है सन १८६८ से [illegible]

स्व० सेठ सर करीम भाई इब्राहीम (प्रथम बेरोनेट)
बम्बई

सर फाजल भाई करीम भाई, बम्बई

सेठ महम्मद भाई करीम भाई (द्वितीय बेरोनेट)

कं० लि० नामक एक मिल और खोली। तत्पश्चात् आपने दामोदर लक्ष्मीदास मिलकी एजेंसी ली। कुछ समय बाद आपने इस मिलकी सम्पत्ति बढ़ाई और इसका नाम बदलकर क्रिसेंट मिल कं० लि० रक्खा।

सर करीमभाईने सन् १९०५ में फजलभाई मिल्स कं० लिमिटेडकी स्थापनाकी, एवं सन् १९१२ में पर्ल मिलको जन्म दिया। इन्दौरकी मालवा युनाइटेड मिल भी आपहीके हाथोंमें है।

आपने इतने अधिक मिल खोले कि उनके कपड़ेकी धुलाई व रंगाईकी सुव्यवस्थाके लिये करीमभाई डाइंग एण्ड ब्लीचिंग मिल नामक एक स्वतन्त्र मिल आपको स्थापित करना पड़ा। भारतसे जो रद्दी रूई विलायत जाती है उसका मोटा कपड़ा और सस्ते कम्मल आदि बनते हैं उस रुईका प्रयोग करनेके लिये आपने प्रीमियर मिल कम्पनी लिमिटेड नामसे विशेष कारखाना खोला। वर्तमानमें आपकी फर्म करीब १३।१४ मिलोंकी एजेण्ट है। जिनके नाम इस प्रकार हैं, करीमभाई मिल (महम्मद-भाई मिल सहित) फाजल भाई मिल, पर्लमिल, पवानी मिल, क्रिसेंट मिल, इन्दौर मालवामिल, इण्डियन ब्लीचिंग मिल, प्रीमियर मिल, कस्तूरचन्द मिल, इम्पीरियल मिल, ब्रेडबरी मिल, मथुरादास मिल, माधोराव सिंधिया मिल, सीलोनमिल, उस्मान शाहीमिल (हैदराबाद) है। (इन सब मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।) इन सब मिलोंके मेनेजमेंटमें इसफर्मकी करीब ३ करोड़की सम्पत्ति लगी हुई है। इस उद्योगकी सफलतामें इस कार्यके सुप्रबन्धक निरीक्षक मि० एम० एम० फकीरा का बहुत बड़ा हाथ था।

यह खानदान खास कच्छ-मांडवीका रईस है खोजा समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य है। कच्छकी स्टेटको छोड़कर भारतकी शायदही किसी देशी रियासतको इतना बड़ा व्यवसायी कुटुम्ब पैदा करनेका गर्व होगा। यह फर्म भारतके मशहूर रुई और कपड़ेके व्यवसाइयोंमेंसे एक है।

सर करीमभाई (प्रथम बेरोनेट) ने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग धन्धोंको जो उन्नति दी है वह इतिहासके पन्नोंमें अमिट है। इसप्रकार परम गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए आपका देहावसान २९ सितम्बर सन् १९२४ ईस्वीको हुआ। आपने बारह तेरह लाखका दान अपने जीवनमें किया है। जिसमेंसे ढाई लाख रुपया एक आर्फनेजके लिये दिया है। कच्छमांडवीमें आपका एक गर्ल्स स्कूल, एक दवाखाना और एक धर्मशाला है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक (१) सर फाजलभाई करीमभाई (२) सेठ हबीबभाई करीमभाई (३) सेठ इस्माइलभाई करीमभाई (४) सेठ करीमभाई हुसेनभाईभाई बीसरे बेरोनेट (५) अहमदभाई सर फाजलभाई और (६) इब्राहिमभाई गुलाम हुसेन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर कपड़ेकी दुकानें तथा एजेंसियां हैं।

(१) मेसर्स करीमभाई इब्राहिम एण्डसन्स—(शेखमेमनस्ट्रीट-बम्बई) (T. a. Setaran)

इस फर्मपर १३ मीलोंका बना हुआ करीब ४।५ करोड़का माल प्रतिवर्ष बेंचा जाता है।

सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाउ—सेठ मकनजीके पुत्र सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाऊ, अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके बाद केवल १७ वर्षकी आयुसे ही व्यापारिक कामोंमें भाग लेने लगे। आप अपने भ्राता सेठ जयराज मकनजीकी मौजूदगीमें ही खटाऊ मकनजी स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग मिल्स कम्पनी लिमिटेड और बाम्बे युनाइटेड स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी लिमिटेडका कार्य संचालन करने लगे। उपरोक्त खटाऊ मकनजी मिल, आपके पिता श्री सेठ खटाऊने सन् १८७४ में स्थापित की थी।

सेठ मकनजी खटाऊ मोतीका व्यापार भी करते थे, एतदर्थ सेठ गोवर्द्धनदास खटाऊने भी उस व्यापारकी ओर लक्ष दिया। कुछ दिनोंतक आप इस व्यापारको अपने व्यक्तिगत नामसे चलाते रहे। पश्चात् सन् १९०८ में आपने एक संघ बनाकर उसका नाम मेसर्स खटाऊ मकनजी सन्स एण्ड को० रक्खा, और मोतीके व्यापारको खूब बढ़ाया। इस फर्मपर बिक्रीके हेतु विदेश भेजनेके लिये मोती आते थे। आपने अपने एजेंट लंदन और पेरिसमें नियत कर रक्खे थे, जो वहां आपके संकेतानुसार मोतीका व्यापार बड़ी सावधानीसे करते थे। आपने इस व्यापारमें अच्छी ख्याति प्राप्त की। एक समय ऐसा भी था, जब बम्बईका मोतीका व्यापार आपकी मुट्ठीमें था, पर आपने सन् १९१० में इस फर्मको बंद कर दिया, तथा पुनः अपने व्यक्तिगत नामसे यह व्यापार करने लगे।

सेठ गोवर्द्धनदासजी सन् १८९०में स्थानीय म्युनिसिपल कारपोरेशनके सदस्य निर्वाचित हुए थे। आप कितनी ही मिलोंके प्रबंधकर्ता व कितनी ही कम्पनियोंके डायरेक्टर भी थे, आपने अपने छोटे भाई सेठ मूलराज खटाऊके साथ शिक्षा प्रचारार्थ २ लाख रुपयोंका दान दिया था, जिसकी ब्याजकी आमदनीसे आज भी गोकुलदास तेजपाल हाईस्कूलमें शिक्षा प्राप्त करनेवाले, भाटिया विद्यार्थियोंके भरण-पोषणका कार्य होता है। आपने थानेमें बाल-राजेश्वरका एक विशाल मन्दिर निर्माण कराया, आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था।

सन् १९१३ में आपने अपने पुत्र सेठ तुलसीदासजी एवं अपने जामात्र सेठ नरोत्तम मुरारजीके साथ योरोपकी यात्रा की। अपने भोजनादिके प्रबंधके लिये आप यहांसे रसोइया, भट, ब्राह्मण आदि साथ लेते गये थे। लेकिन तोभी वहांसे लौटनेपर भाटिया समाजके कट्टर लोगोंने आपसे सामाजिक संबन्ध विच्छेद कर लिया। मगर इससे कोई प्रभावात्मक कार्य नहीं हुआ, बल्कि आपके सामाजिक संबन्धने ज्यादा दृढ़ता पकड़ी। कई व्यक्तियोंने "कच्छी तथा हलाई समस्त भाटिया महाजन" नामक सामाजिक संस्थाको जन्म दिया, उसी दिन इसके साथ ही "बंबई भाटिया महाजन" नामक एक नवीन सामाजिक संस्थाको जन्म दिया, इसी दिन इसके सदस्य नियुक्त किये गये। आपके सदस्य हो गये। इसके प्रथम सभापति राव बहादुर सेठ वसनजी खीमजी नियुक्त किये गये।

स्व० जमशेदजी नसरवानजी ताता

सर विक्टर सासुन

स्व०सर दोराबजी जमशेदजी ताता नाइट, जे०पी०, सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एम०ए०,जे०पी०,ओ०बी०ई०

व्यवसाय कुशलताके साथ २ धार्मिक कार्यों की ओर भी आपकी अच्छी रुचि है, शिक्षाकी वृद्धि एवं समाज सेवाकी आपके दिलोंमें अच्छी लगन रहती है। (१) आप सर जगदीशचन्द्र बोसके रिसर्च इन्स्टिट्यूटमें १४ हजार रुपये वार्षिक नियमित रूपसे देते हैं। (२) सेठ लटाऊ मकनजी फ्री डिस्पेन्सरी एण्ड भाटिया मेटर्निटी एण्ड नर्सरी होम (प्रसूतिकागृह) बाजार कोटमें आप हर साल २५ हजार रुपया देते हैं। इसकी कुल देख रेख आप ही के हाथोंमें है। इस संस्थाके खर्चके लिये आपने अपनी एक बिल्डिङ्ग भी ट्रस्टके सिपुर्द कर दी है। उक्त संस्था बहुत ही उत्तमरूपसे कार्य कर रही है। (३) आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें इंजिनियरिंग क्लासका खर्च चलानेके लिये १ लाख रुपयोंका दान पं० मदनमोहन मालवीयजीको दिया है, उक्त रकमका ब्याज इस क्लासके खर्चमें दिया जाता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय वनिता विश्राम, सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसाइटी बम्बई, स्पेशल सर्विस लीग पूना एवं भारतकी कई गोशालाओं आदि अनेक संस्थाओंको प्रचुर धन दान करके समय-समय पर सहायता किया करते हैं। इसके अलावा अपनी जातिके अनाथ स्त्री तथा पुरुषोंके भोजन प्रबन्धनार्थ प्रतिमास नियमित रूपसे सहायता करते रहते हैं। मतलब यह कि लोकोपकारार्थ आपने कई प्रकारके स्थाई दान किये हैं।

सेठ मूलराजजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्री मुरारजी, श्री धरमसीजी, श्री लक्ष्मीदासजी। श्री चन्द्रकान्तजी और श्री ललित कुमारजी हैं। इनमेंसे सेठ मुरारजी, धरमसीजी एवं श्री लक्ष्मी दासजी, भिन्न २ कार्यों में सेठ साहबके साथ व्यापारमें सहयोग देते हैं

मेसर्स मथुरादास गोकुलदास

सेठ मथुरादास गोकुलदासका जन्म सम्बत् १९२१ में हुआ। आप बम्बईके एक बहुत बड़े एवं प्रतिष्ठित मिल मालिक हैं। आपके पूर्वज कच्छ कोठाराके निवासी थे। सबसे प्रथम आपके प्रपितामह सेठधरमसीजी बम्बई आये थे। आपको धीरे २ अपने उद्योग तथा व्यापारमें सफलता मिलती गई और आगे जाकर आपके पौत्र सेठ गोकुलदासजीने मिल व्यवसायके अन्दर हाथ डाला। उसमें आपको बड़ी सफलता मिली। सेठ मथुरादासजी जे० पी० आपही के पुत्र हैं। आप भी अपने पूर्वजों द्वारा चलाये हुवे रुईके व्यवसायमें जुट गये और वही व्यवसाय अब भी कर रहे हैं। आपने अपनी कार्य कुशलता और बुद्धिमानीसे अपने कार्यको इतना बढ़ाया कि इस समय आप बम्बईके एक प्रथम श्रेणीके रुईके व्यापारी तथा मिल एजन्ट माने जाते हैं। आपकी एजंसीके नीचे इस समय कई मिलें चल रही हैं। इसके अतिरिक्त कई दूसरी मिलों तथा कम्पनियोंके भी आप डायरेक्टर हैं। संक्षिप्तमें यों कह सकते हैं कि बम्बईके प्रथम श्रेणीके मिल मालिकोंमें सेठ मथुरादास भी एक हैं। सेठ मथुरादासके ५ पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े पुत्र सेठ पुरुषोत्तमदास हैं। आप अपना अभ्यास पूरा करके

हुई। १९ वर्षकी अवस्थामें आपने कालेज छोड़ दिया और उसके कुछ समय पश्चात् सन् १८५९ में आप काम सीखनेके लिये हांगकांग चले गये। यहांपर आपको कई प्रकारके व्यापारिक अनुभव हुए।

सन् १८६१ में अमेरिकाके उत्तरी और दक्षिणी सूबोंमें युद्ध प्रारम्भ हुआ। जिससे अमेरिकासे इंग्लेंड रूईका आना बिल्कुल बन्द होगया इस वजहसे लङ्काशायरके कपड़ेके कारखानोंको बड़ा धक्का पहुंचा। यह देख भारतके व्यवसाय कुशल पारसियोंने इस अवसरसे लाभ उठानेका पूरा २ निश्चय किया। प्रसिद्ध पारसी प्रेमचन्द रायचन्द्र इसके नेता बने। इस समय रूईके व्यापारमें इन लोगोंको करीब ८१ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। श्रीयुत जमशेदजीको भी इस अवसरपर बहुत लाभ हुआ, मगर सन् १८६५ में एकाएक युद्धके बन्द हो जानेसे बम्बईके व्यवसायिक जगत्में एक बड़ा-भारी अनिष्टकारी परिवर्तन हुआ। पहली जुलाई सन् १८६५ ई० का दिन बम्बईके इतिहासमें अभाग्यका दिन समझा जाता है। उस दिन बम्बईकी कई प्रतिष्ठित फर्म्सका पल्ला बैठ गया। अमीर गरीब हो गये, गरीब भिखारी बन गये और भिखारी भूखों मरने लगे। इस घटना चक्रमें ताता परिवारको भी बहुत हानि उठानी पड़ी, मगर जमशेदजी ताता बड़े हिम्मत बहादुर और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। आपने इस भयंकर दुर्दिनमें भी अपने साहसको न छोड़ा और इंग्लेंडका कारोबार बन्द करके भारतका व्यवसाय चलाते रहे। इसी बीच थोड़े दिनोंके बाद अबीसीनियाकी लड़ाई शुरू हुई, उस समय जो अंग्रेजी पल्टन बम्बईसे भेजी गई थी उसको रसदका ठेका आपने लिया था उसमें आपको बड़ा मुनाफा हुआ और आपका व्यवसाय फिर सम्हल गया। जिस रूईके रोजगारने बम्बईको धक्का दिया था उसीको आपने फिरसे सम्हाला और बम्बईमें चिंचपोकली नामक आईल मिलके कारखानेको खरीदकर उसे एलेक्जण्ड्रा स्पिनिंग एण्ड विविंग नाम देकर चलाया। आपने सन् १८७१ में ताता एण्डको नामक एक व्यवसायिक कम्पनीकी स्थापनाकी और लंदन, हांगकांग, शंघाई, याकोहामा, कोबी, पेकिंग, पेरिस, न्यूयार्क आदि संसारके भिन्न२ व्यवसाई केन्द्रोंमें उसकी शाखाएं खोलीं। इसके पश्चात् विलायतके कई नये अनुभवोंके साथ आपने नागपुरमें सेंट्रल इण्डियन स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी खोलकर १ जनवरी सन् १८७७ के दिन प्रसिद्ध एम्प्रेस मिलकी स्थापना की। इस मिलमें आपको आशातीत सफलता हुई। सन् १९११ के अन्ततक इस कम्पनीने २८३४५,७०३) रु० मुनाफेमें बांटे।

सन् १८८० में आपने धर्मसीडरसी कुरलाके धर्मसी मिलको खरीद लिया और उसमें कई नये यंत्र लगाकर इसे चलाया। इसने भी भारतकी फर्स्टक्लास मिलोंमें नाम पाया। ताता महोदयने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने बारीक सूत कातनेके लिये सबसे पहले मिश्रके कपासकी खेती करनेका इस देशमें उद्योग किया और महीन माल तैयार करवाया।

ो० सर मनमोहनदास रामजी के० टी० बम्बई

श्री० (स्व०) सेठ मुरारजी गोकुलदास, सी० आई० ई० बम्बई

सेठ धरमसी मुरारजी गोकुलदास, बम्बई

सेठ नरोत्तम मुरारजी गोकुलदास जे० पी० बम्बई

प्राकृतिक वैभवका उपयोग करने और भारतके व्यवसायकी वृद्धिके मार्गकी बाधाएं दूर करनेके लिये बंगलोर (मैसूर) में एक रिसर्च इन्स्टीट्यूट कायम किया। इस इन्स्टीट्यूटमें ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा मैसूरके महाराजने भी बड़ी सहानुभूति तथा सहायता प्रदान की थी।

इस भारतीय औद्योगिक उन्नतिके विधाता कर्मवीर पुरुषका देहावसान सन् १६०४ के मई मासमें हो गया। भारतके कच्चे मालसे व्यवहारकी वस्तुएं बनाने तथा यहांके प्राकृतिक भण्डार से वास्तविक लाभ उठानेका जितना कार्य्य आपने किया उतना किसी दूसरे भारतीयने नहीं किया।

स्व० आर०डी० ताता:—आप यहांकी ताता एण्ड सन्स को० लिमिटेडके भागीदार तथा जीवित कार्य कर्त्ता रहे। आपही प्रथम भारतीय थे जिन्होंने जापानकी मिलोंमें भारतीय रुईका प्रचार करवाया। जमशेदजी ताता द्वारा आरंभ की गयी योजनाओंमें आपने सर दोराबजी ताताको पूर्ण सहायता दी।

सर दोराबजी जमशेदजी ताता नाइट:—आप जमशेदजी ताताके पुत्र थे। आपने अपने पिताजीके जीवन-कालमें ही उनके कार्यों में भाग लेने लग गये थे। आपने फर्मकी सुव्यवस्था और मिलोंका सञ्चालन बड़ी सफलताके साथ किया। यह आपकी प्रखर बुद्धि और विद्वताका ही परिणाम था कि ताता महोदयकी मृत्युके पश्चात् भी उनके द्वारा आरम्भ किये हुए ताता आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी, ताता हाइड्रो-ईलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी तथा रिसर्च इन्स्टिट्यूटके समान भारी २ काम इतनी सफलताके साथ सम्पन्न हुए।

सर रतनजी जमशेदजी ताता:—आपका जन्म १८७१ में हुआ। आप जमशेदजीके द्वितीय पुत्र थे। आप ताता सन्स एण्ड को० के हिस्सेदार थे तथा अपने भ्राता दोराबजी ताताको उनके काममें सहायता प्रदान करते थे। आपका स्वर्गवास १९१८ में हुआ।

इस समय यह कम्पनी कई मिलोंकी एजेण्ट है जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है। इसकी शाखाएं लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क, रंगून, कलकत्ता, कोबी, शङ्घाई आदि स्थानोंमें हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स

(१) मानेकजी नसरवानजी—इस कम्पनीके संस्थापक श्रीयुत मानेकजी नसरवानजी पेटिट हैं। आपका नाम बंबईके मिल व्यवसायके जन्मदाताओंमें बहुत अग्रगण्य है। आपका जन्म सन् १८०२ में हुआ। १८ वर्षकी आयुसे ही आपने व्यवसायमें हाथ डाल दिया। सन् १८५८ में आपने ओरियण्टल मिलकी स्थापनाकी और उसे भली प्रकार चलाया। कुलाबालेण्ड कम्पनी और कुलाबा प्रेस कंपनीके भी आप प्रवर्तक थे। आपके पास दो हजार टन वजनका एक जहाज भी था जो भारत और चीनके बीच माल ढोता था।

गोकुलदासजी तथा पितामहका नाम सेठ जीवणजी था। सेठ जीवणजी, रवजी गोविंदजीके नामसे पोरबंदरमें संवत् १८७० में व्यवसाय करते थे। संवत् १८७३के करीब इस खानदानको बहुत व्यापारिक नुकसान लगा। फलतः सेठ गोकुलदासजी संवत् १८७४में बम्बई आये और बादमें आपने अपने पिता सेठ जीवणजी और अपने भाईको भी यहां बुलिया। आप यहां खांडकी दलाली और कपड़ेका व्यवसाय करते थे।

मुरारजी सेठको अपने पिताश्रीके द्वारा धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा अच्छी मिली थी। आपने अपने पिताश्रीके साथ तीर्थक्षेत्रों और नगरोंका बहुत पर्यटन किया था इसलिये १२ वर्षकी अल्पवयसे ही आपको व्यवसायिक हिताहितका ज्ञान हो गया था। संवत् १९०४से आप अपने काकाके साथ व्यवसायमें सहयोग देने लगे। उस समय आपको उनकी ओरसे केवल ४५१) प्रति वर्ष मिलता था। थोड़े ही समयमें मुरारजी सेठका कई बड़ी२ अंग्रेजी कम्पनियोंसे परिचय होगया एवं उन कम्पनियोंने आपको अपने यहां आनेके लिये आमंत्रित किया। जवाहरात और कपड़ेके व्यवसायमें आपकी दृष्टि बहुत थी। विलायती कपड़ेकी माल आनेके पूर्व ही आप बहुत बड़ी खरीदी कर लेते थे। आपके इस साहसको देख व्यापारी चकित रहते थे। इस प्रकार संवत् १९१६में वाटसन बोगले एण्ड कम्पनीके साथ आप हिस्सेदारके रूपमें शरीक हुए। १९वीं शताब्दीमें विलायती कपड़ेके व्यवसाइयोंमें मुरारजी सेठका बड़ा नाम था। सन् १८७१से आपने मिलोंके स्थापनका काम करना आरंभ किया। उस समय सोलापुरमें अकाल बहुत पड़ता था इसलिये अकाल पीड़ितोंको मजदूरी देने और मिल उद्योगकी वृद्धिके लिये सन् १८७४में आपने सोलापुर स्पीनिङ्ग वी० कं० लि० के नामसे ५ लाखकी पुंजीसे सूत कातने और कपड़ा बुननेका कारखाना खोला। प्रारंभके २५ वर्षके इतिहासमें यह मिल सर्व श्रेष्ठ मानी जाती थी। पीछेसे इस मिलकी पूंजी बढ़ाकर ८ लाख कर दी गयी। इस समय मिलमें १११३६० स्पेंड्ल्स और २१७२ लूम्स हैं। यह मिल १९ हजार गांठ माल हर साल तैयार करती है। इसके अतिरिक्त यह फर्म बम्बईके मुरारजी गोकुलदास स्पी० वि० मिलकी भी मैनेजिंग एजंट है। इस मिलमें ८४ हजार स्पेंडल और १६०० लूम है। इसकी स्थापना १८७२ में सेठ मुरारजी गोकुलदासके हाथोंसे हुई इसकी केपिटल ११ लाख ५० हजारकी है यह मिल प्रति वर्ष १५ हजार गांठ माल तैयार करती है।

इस प्रकार १९ वीं शताब्दीमें भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिकी चिंता रखनेवाले इन महानुभावका देहावसान सन् १८८० में ४६ वर्षकी वयमें हुआ। गवर्नमेंटने आपको जे०पी० और सी०आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया था। आपको होमियोपैथी चिकित्सासे बड़ा प्रेम था। आपके बड़े पुत्र सेठ धरमसीजीका देहावसान सन् १९१२ में होगया।

वहांसे १९२४ में आप वापिस लौट आये, और दिनशा मानेकजी पेटिट एण्ड सन्स कंपनीमें काम करने लगे। आजकल आप स्वयं अपनी देख-रेखमें मिलोंका संचालन कर रहे हैं। पेटिट परिवारमें आप बड़े होनहार व्यक्ति मालूम होते हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स कंपनी, मानेकजी पेटिट मिल्स, दीनशा पेटिट मिल्स और वंमन जी पेटिट मिलसकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय पहले दिया जा चुका है।

नवरोजी नसरवानजी वाडिया एण्ड सन्स

१—नवरोजी नसरवानजी वाडिया सी० आई० ई०—उपरोक्त फर्मके आप जन्मदाता हैं। आपका जन्म सन् १८४६ में हुआ। आप बम्बईके मिल व्यवसायको उन्नतिपर लानेवाले सुफल व्यवसायी थे। सन् १८७० में आप बम्बईकी एम्प्रर्ट मिलसके तथा सन् १८७३ में मानेकजी पेटिट मिल्सके मैनेजर हुए। सन १८७८ में आपने नवरोजी वाडिया एण्ड सन्स नामक स्वतन्त्र कम्पनीकी स्थापना की। यन्त्रकलामें आप बड़े प्रवीण थे। आपने नेशनल मिल, नाड़ियाद मिल, इ० डी० सासुन मिल, डेविड सासुन मिल, करीमभाई मिल, वाड़िया मिल, आदि कई मिलोंके डिजाइन तैयार करवाये। सन् १८८४ में आपने मानेकजी पेटिट मिलके लिए बहुत बड़ा यन्त्र बनवाया। सन् १८८० में आपने विलियम रोड़के साथ माहिममे एक रंगका कारखाना खोला। आपने टेक्सटाइल और सेंचुरी मिलका भी आयोजन किया था।

(२) सी० एन० वाडिया – आप नवरोजी नसरवानजीके पुत्र हैं। सेंचुरी मिलके आप एजण्ट तथा वाड़िया एण्ड को० के आप हिस्सेदार हैं। बम्बईकी मिल मालिकोंकी सभाके आप एक जीवित कार्य्यकर्ता हैं। आप सन् १९१८ में इसके प्रमुख रहे थे। इस संस्थाकी ओरसे आप सन १९२४ से २६ तक बम्बई कौंसिलके निर्वाचित सदस्य रहे।

(३) सर नैस वाड़िया के० बी० ई०, सी० आई० ई०, एस० आइ० एम० ई०—आप नवरोजी नसरवानजी वाड़ियाके द्वितीय पुत्र हैं। आप एक अत्यन्त सफल मिल व्यवसायी हैं। सन १९२५ में आप मिल आनर्स एसोसियेशनके प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप मजदूरोंके हित और स्वास्थ्यकी ओर अत्यन्त दयापूर्ण दृष्टि रखनेवाले मिल ऑनर हैं। आपने अपने पिताकी स्मृतिमें १६ लाख रुपयेका दान दे मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंके लिए एक सूतिकागृह बनवाया है।

यह फर्म बाम्बे डाइंग, स्प्रिंग और टेक्सटाइल इन तीन मिलोंकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विलायतके चार मशहूर कारखानोंकी एजेंसियां भी इसके पास हैं।

आपने खोपरेके तेलमें शुद्धता लानेके लिये खास प्रबन्ध किया था, इसका परिणाम यह हुआ कि आपको कई बड़ी २ कम्पनियोंके कंट्राक्ट मिल गये, जिनमें ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे व बाम्बे पोर्ट ऑफ ट्रस्टके कण्ट्राक्ट मुख्य थे।

सेठ मूलजी भाईके पुत्र सेठ सुन्दरदासजी ज्योंही वयस्क हुए त्योंही अपने पिताजीके साथ व्यापार करने लगे। आपके हाथोंसे कम्पनीको बहुत अधिक तरक्की हुई, सबसे पहले अमेरिकन सिविल वार छिड़नेके समय आपके मस्तिष्कमें यह बात आई, कि लंकाशायर रुई भेजी जाय, तदनुसार आपने ६ जहाज रुईके भरकर केप ऑफ गुड होपके रास्तेसे लंकाशायर भेजे। आपके जहाज मर्सेकी खाड़ीमें पहुंचे थे, कि अमेरिकन सिविलवार (गृहयुद्ध) छिड़ गया। फलतः अमेरिकाके बन्दर बन्द होगये और लंकाशायरमें रुईका अकाल पड़गया, ऐसे समयमें आपका माल वहां पहुंचा। उस समय आपको अपने मालका मूल्य सोनेके बराबर मिला। उस समय सारा व्यापारी समाज मिलोंके शेअरोंपर टूट रहा था। पर सेठ सुन्दरदासजी इतने दूरदर्शी थे कि सट्टबाजीमें न आकर शांत रहे व आपने उस व्यापारमें हाथ नहीं डाला। सेठ सुन्दरदासजीकी मेधा शक्ति बड़ी तीव्र थी। सन् १८७० से आपने ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनीके रूपमें व्यापार करना आरम्भ किया।

सबसे प्रथम आपने ३ लाख ५० हजारकी पूंजीसे दि न्यू ईस्टइण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड स्थापितकी। इसके बाद आपने ७ लाख ५० हजारकी पूंजीसे खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी स्थापित की। इसके अतिरिक्त १ लाखकी पूंजीसे सिंध एण्ड पंजाब काटन प्रेस कम्पनी लिमिटेड एवं ५ लाख पूंजीसे मद्रास स्पीनिंग वीविंग मिल कम्पनी लिमिटेड और ८ लाखकी पूंजीसे सुन्दरदास स्पीनिंग वीविंग मिल्स कम्पनी स्थापित की। और अन्तमें ६ लाखकी लागतसे न्यू पीस गुड्सबाजार कम्पनीलि० जो मूलजीजेठा मारकीटके नामसे मशहूर है स्थापित की। इन सब कम्पनियोंकी मेनेजिङ्ग एजेण्ट, सेक्रेटरी, और ट्रेजरर मूलजीजेठा कम्पनी थी।

सन् १९०५ में भयंकर आग लग जानेके कारण सुन्दरदास स्पीनिङ्ग वीविङ्ग मिल बरबाद हो गया, और वह कम्पनी लिक्विडेशनमें चली गई। सिंध पंजाब कम्पनी भी ५ लाख रूपये शेअर्स होल्डरोंको अदा करनेके बाद स्वेच्छासे लिक्विडेशनमें चली गई।

खानदेश स्पीनिङ्ग वीविंग कम्पनी जलगांव, न्यूईस्टइण्डिया कम्पनी व न्यूपीस गुड्सबाजारके मेनेजिङ्ग एजेंटस अब भी आप हैं।

श्रीयुत सुन्दरदासजीको अल्पवयमें ही सन् १८७५ के जनवरी मासमें ३६ वर्षकी अवस्थामें खेद जनक मृत्यु हो गई। आपका चिर विछोह सहन करनेके लिये आपके वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजी भाई और आपके दो पुत्र श्री धरमसी जी एवं गोवर्द्धनदासजी विद्यमान थे। आपके दोनों पुत्र नाबा-

मेसर्स लालजी नारायणजी

सेठ लालजी नारायणजी भाटिया जातिके सज्जन हैं। आप अपने समाजमें जिस प्रकार एक अग्रगण्य एवं विचारवान अगुआ समझे जाते हैं,उसी प्रकार बम्बईके व्यापारिक समाजमें भी आप बड़े प्रतिष्ठित एवं व्यवसाय कुशल नेता माने जाते हैं। आपका जन्म सन् १८५८में हुआ। आपने अपने व्यवसायी जीवनके प्रभात कालसे ही अपनी अनोखी सूझका परिचय दिया। फल यह हुआ कि थोड़े ही समयमें आप यहांकी कितनीही व्यापारिक संस्थाओंके सदस्य और कितनी ही संस्थाओंके प्रमुख बनाए गए। यहांकी प्रतिष्ठित फर्म मूलजी जेठा कम्पनीके सीनियर मैनेजरके रूपमें आप समस्त फर्मका कार्य संचालन करते हैं। आप एक सफल मिल मालिक एवं सिद्ध हस्त व्यापारी हैं। आप समयकी प्रगतिके अनुसार राजनैतिक क्षेत्रमें भी भाग लेते हैं। यही कारण है कि यहांकी प्रतिष्ठित व्यवसायी संस्थाने आपको अपना प्रतिनिधि बना बम्बई कौंसिलमें भेजा है, आप भारतीय व्यवसाय और उसकी अर्थवृद्धिके लिये सदैव संकोच रहित होकर सरकारसे भिड़ते हैं। आप यहांकी मिल ओनर्स एसोसिएशन एवं इन्डियन मर्चेंट चेम्बर नामक प्रसिद्ध व्यापारिक संस्थाओंके जीवित कार्यकर्ता एवं सदस्य हैं। आप इन्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके सन् १९२१ और सन् १९२६ में प्रसिडेंट भी रहे हैं। आप स्थानीय स्वान मिल, तथा गोल्ड मुहर मिलके डायरेक्टर तथा यहांकी अन्य कितनी ही ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं, आप लालजी नारायणजी कम्पनीके मालिक हैं। मूलजी जेठा मारकीट चौकमें आपकी कपड़ेकी दुकान है। आपका आफिस ईवर्ट हाऊसमें है।

इनके अतिरिक्त बम्बईमें और भी कई बड़े २ प्रतिष्ठित मिल मालिक हैं। पर चेष्टा करनेपर भी हम उनका परिचय न प्राप्त कर सके इसका हमें खेद है। वैसे तो कई मिल मालिकों और एजेंटोंकी नामावली हम पीछे मिलोंके परिचयमें दे चुके हैं।

बैंकर्स

BANKERS.

यहांका नमक कलकत्ता, चटगांव, सिंगापुर और रंगूनको भेजा जाता है। इस कंपनीने जहाजोंमें कोयला लादनेके लिये एक गोदी भी बनवाई है।

बम्बई फर्मके व्यवसायकी वृद्धि चुकंदर और जावाकी शक्करके व्यवसायसे हुई। इस कंपनी के वर्तमान मालिक हैं (१) अब्दुला भाई लालजी (२) फजल भाई जुम्मा भाई लालजी (३) इस्माइल भाई ए० लालजी (४) नासर भाई ए० लालजी (५) हुसेन भाई ए० लालजी (६) जाफर भाई ए० लालजी

इस फर्मकी शाखाएं, कलकत्ता, चटगांव, अदन, बसेरा आदि कई प्रसिद्ध बन्दरोंमें हैं। यह फर्म जनरल मर्चेंट, गवर्नमेंट कंट्राक्टर, मिल एण्ड इंश्युरेन्स एजेंटका काम करती है। इस कंपनीके तारके पते 'Prim,' security 'Veteran' है।

भाटिया और गुजराती मिल ऑनर्स

मेसर्स खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित एवं प्रतापी फर्मकी, स्थापना सेठ खटाऊ मकनजीने की। आपका जन्म कच्छ प्रान्तके टेरा नामक स्थानमें हुआ था। आप बाल्यावस्थासे ही बम्बईमें आगये। एवं अपने मामा सेठ द्वारिकादास बसनजीकी प्रसिद्ध फर्म जीवराज बालू कम्पनीमें कार्य करने लगे। अल्पवयमें ही आपने अपनी व्यवसायिक दूरदर्शिताका परिचय दिया, व थोड़े ही समय पश्चात् आप उस कम्पनीके भागीदार बनाये गये। इस कम्पनीने अपना व्यवसाय कुमटामें खोला। कुछ समय बाद बम्बई दूकानका सारा प्रबंध आपके हाथमें आ गया।

अमेरिकाकी सिविल वारके (गृहयुद्ध) छिड़ते ही तरुण वय सेठ खटाऊको अपने व्यवसाय सम्बन्धी विशेष गुणोंके प्रगट करनेका सुअवसर प्राप्त हुआ। अमेरिकाके बंदरोंका बंद होना था, कि इंग्लैंडके लंकाशायर नामक केन्द्रमें रूईका भयंकर अकाल पड़ गया। कितने ही कारखाने बंद हो गये। बाकी कारखानोंके चलानेके लिये भारतसे आनेवाली रूईपर निर्भर रहना पड़ा। फल यह हुआ कि भारतमें भी रुईका बाजार बहुत ऊँचा हो गया। जोरकी सट्टेबाजीने बाजारमें अपना अच्छा दबदबा जमा दिया। सेठ खटाऊ मकनजी उन दूरदर्शी नवयुवकोंमेंसे थे, जिन्होंने इस प्रकार सट्टेबाजीकी अनिष्टकारी आमदसे दूर रहनेमें ही नीतिमत्ता समझी। फल यह हुआ कि यहांके व्यापारिक समाजमें आपकी प्रतिष्ठा दिनोंदिन अधिकाधिक होने लगी, एवं अपने समयके आप माननीय व्यवसायी समझे जाने लगे। आपका देहावसान सन् १८७६ में हुआ।

आपके देहावसानके पश्चात् व्यवसायका संचालन-भार आपके छोटे भाई सेठ जयराम मकनजीने उठाया।

बैंकिंग-बिज़िनेस

(सराफी व्यापार)

पारस्परिक व्यापारिक सुविधाके लिए, बाजारके नियमके अनुसार ब्याज लेकर, उधार (credit) पर, अथवा जमीन, जेवर, मकान, मिल्कीयत, प्रामेसरीनोट, इत्यादि पर रुपया देनेका जो व्यवसाय होता है, अथवा एक स्थानसे दूसरे स्थानपर रुपया भिजवाने या मंगवानेके लिए, हुण्डी चिट्ठी या एक्सचेंज बिलका जो व्यवहार चलता है उसे अंग्रेजीमें बैंकिंग बिज़िनेस और हिन्दी भाषामें सराफी-व्यापार कहते हैं।

किसी भी व्यापार प्रधान देशके लिये, बैंकिंगका बिजीनेस उतना ही आवश्यक है जितना किसी युद्ध प्रधान देशके लिए बारूद, गोला या शस्त्रास्त्रकी सामग्री आवश्यक है। तब तो यह यह है कि बिना बैंकिङ्ग-व्यवसायके विकसित हुए किसी देश अथवा शहरकी व्यापारिक उन्नति हो ही नहीं सकती। जो देश प्राचीन कालमें व्यवसाय प्रधान रहे हैं, उन देशोंमें बैंकिंग बिज़िनेसका अस्तित्व भी अवश्य पाया जाता है। हमारे देशमें भी पूर्वकालमें सराफी [illegible] प्रचलित था। उस समय चीन, जावा, सुमात्रा, ईरान, इत्यादि देशोंसे [illegible] एक्सपोर्ट (निर्यात) और वहांके मालका इम्पोर्ट (आयात) होता था। इस [illegible] भुगतानके लिए इन देशोंके बीचमें हुण्डीका व्यवहार प्रचलित था। कौटिल्यके अर्थशास्त्र, [illegible] तथा और भी प्राचीन अर्थशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें इस व्यवसायके [illegible] जाता है।

फिर भी यह निश्चित है कि वर्तमान युगमें इस व्यापारका [illegible] विकसित होगया है उतना पूर्वकालमें नहीं था। इस युगके बैंकिंग [illegible] निक बैंकोंमें दिखलाई देता है।

बैंक—एक या एकसे अधिक व्यक्तियोंकी सम्मिलित पूंजीसे [illegible] निश्चित स्थानपर अपना आफिस खोलकर उचित व्याजपर [illegible] सिफ़ोंको कुछ अधिक व्याज लेकर दूसरे व्यापारियोंको [illegible] जङ्गम सम्पतिपर कर्ज देती हैं ऐसी संस्थाको बैंक कहते हैं [illegible] हुण्डियोंको भी अपनी उचित फी [illegible] खरीदती तथा बेचती है।

स्व० सर दीनशा मानिकजी पेटिट जे० पी० बेरोनेट
(मिल उद्योगके पिता)

स्व० सेठ मूलजी जेठाभाई बम

सेठ मथुरादास गोकुलदास जे० पी० बम्बई

सेठ मूलराज खटाऊ मकनजी जे० पी० ब

और वह रसीद उसे देदी जाती है। इस रसीदको दिखाकर वह जहाजपरसे अपना माल ले आता है। इस बिलपर सही होजानेके पश्चात्, जबतक उसकी मुद्दत पूरी नहीं होती, तब तक वह नोटोंकी तरह भिन्न २ व्यापारियोंके पास आता जाता रहता है और मुद्दत पूरी होनेपर वह उस व्यापारीके पास आ जाता है जिसे रुपया देकर वह व्यापारी लेलेता है।

इस प्रकार दुनियाके सब देशोंके बीच बिल आफ एक्सचेंजके द्वारा लेनदेनका काम चलता है लेकिन इस प्रकारके व्यवहारमें बड़ी सावधानी रखनेकी आवश्यकता पड़ती है साधारणतया ऐसा होता है कि जिस देशसे माल आता है उसी देशसे सीधा बिल आफ एक्सचेञ्जका व्यवहार करनेमें सुभीता होती है। मगर कभी २ ऐसा होता है कि सीधे उस देशके सिक्केके भावमें रुपया भरनेसे भाव अधिक पड़ता है, मगर यदि वही रुपया दूसरे देशके सिक्केके द्वारा भरा जाय तो उसमें भाव सस्ता पड़ता है। उदाहरणार्थ हमें फ्रान्स देशके फ्रांक नामक सिक्केमें मूल्य चुकाना है। अब कल्पना कीजिए कि हमारे देशके एक रुपयेके बदलेमें ६ फ्राङ्क मिलते हैं, मगर इंग्लेंडके एक पौण्डके बदलेमें ८६ फ्राङ्क मिलते हैं, इधर हमारे देशमें एक पौण्ड तेरह रुपयेमें मिलता है। यदि हम रुपयोंके द्वारा वहांका बिल चुकावेंगे तो तेरह रुपयोंके बदले केवल ७८ फ्राङ्कका बिल चुकेगा, मगर उन्हीं तेरह रुपयोंसे एक पाउण्ड लेकर उसके द्वारा हम वह बिल चुकाएंगे तो ८६ फ्राङ्कका बिल चुक जायगा। इसी प्रकारका अन्तर और २ देशोंके सिक्कोंमें भी कभी २ रहा करता है। जो व्यापारी सब देशोंके सिक्कोंपर दृष्टि रखकर इस प्रकारके बिल चुकाता है उसे कभी २ बड़ा लाभ हो जाता है। इस प्रकारके एक्सचेञ्ज सम्बन्धी कार्य्योंमें इस प्रकारका कार्य्य करनेवाले बेङ्कों तथा दलालोंके द्वारा हुण्डीका कार्य्य करवाना विशेष अच्छा है।

परदेशी हुण्डीके भेद

इस प्रकारकी परदेशी हुण्डियां तीन प्रकारकी होती हैं। (१) डी० टी० (तुरन्त सिकरनेवाली) (२) टी० टी० (तारके द्वारा भेजी जानेवाली (३) साइबिल (मुद्दती) यह हुण्डी लिखी हुई मुद्दत और मेलके दिनोंकी मियाद पूरी हुए पश्चात् सिकरती है। (४) बिल आफ कलेक्शन, वह कहलाता है जो मालके डाक्यूमेण्टके साथ उसकी कीमतका बिल बनाकर दिया जाता है। इस प्रकारके बिलका रुपया वहांसे वसूल हो जानेपर मिलता है।

देशी हुण्डी

देशी हुण्डी चार प्रकारकी होती है। (१) शाहजोग हुण्डी (२) नामजोग हुण्डी (३) धणीजोग हुण्डी और (४) फरमानकी हुण्डी। इन सब प्रकारकी हुण्डियोंका परिचय प्रायः सब व्यापारी जानते हैं अतः इनका यहांपर विस्तारपूर्वक वर्णन करना व्यर्थ है। फिर भी जो सज्जन इस विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहें उन्हें मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, और बम्बई सराफ एसोसियेशनकी नियमावली मंगाकर पढ़ना चाहिए।

योरोपमें सेठ गोवर्द्धनदास खटाउने जिस प्रकार शुद्ध धार्मिक आचार-विचारकी रक्षा की थी, उसपर संतोष प्रगट किया।

योरोपमें रहकर सेठ गोवर्द्धनदासजीने अपनी फर्मकी ओरसे लन्दन और पेरिसमें खटाऊ सन्स कम्पनीके नामसे आफिस खोली।

सेठ गोवर्द्धन दासजी ओरियन्टल गवर्नमेंट सेक्योरिटी लाइफ इन्स्यूरेंस कम्पनी लि० के २३ वर्ष तक, बम्बई टेलीफोन कम्पनी लि० के २५ वर्ष तक, डायरेक्टर तथा १२॥ वर्ष तक, चेयर मैन रहे। इसके अतिरिक्त खटाऊ मकनजी स्पी० वी० कं० लि०, मोरारजी गोकुलदास मि० कं०लिमिटेड, और प्रेसिडेंसी मिल्स कम्पनी लिमिटेडके भी आप चेयर मेन रहे। जबसे बाम्बे युनाईटेड स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड, तथा बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड स्थापित हुई, तबसे आप उनके डायरेक्टर रहे। इस प्रकार अत्यंत प्रतिष्ठा सम्पन्न जीवन व्यतीत करते हुए आपका देहावसान सन् १९१६ के नवम्बर मास में ५१ वर्षकी आयुमें हुआ।

सेठ गोवर्द्धन दासजी अपनी मौजूदगीमें खटाऊ मकनजी मिलका काम देखते थे, एवं बाम्बे युनाइटेड मिलका संचालन सेठ मूलराजजी करते थे। आपके देहावसान होजानेके बाद कुछ समय तक आपके दोनों पुत्र सेठ मूलराजजीके साथ कार्य करते रहे, वर्तमानमें सेठ गोवर्द्धनदासजीके दोनों पुत्र सेठ भीकमदासजी तथा सेठ तुलसी दासजी अपना स्वतंत्र व्यापार अलग २ करते हैं और इस समय मेसर्स खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनीका कुल काम सेठ मूलराज खटाऊके जिम्मे है। उक्त फर्मके मालिक इस समय आप ही हैं।

सेठ मूलराजजी—खटाऊ मकनजी स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी लिमिटेड भायखलाका कार्य साञ्चलन आपही करते हैं इसके अतिरिक्त आप सी० मेकडानल्ड कम्पनी और कटनी सीमेंट इण्डस्ट्रियल कम्पनीके मेनेजिङ्ग एजेंट हैं। आप प्रेट्रियाटिक इंश्योरेंस फायर एण्ड मरीन कंपनी लिमिटेड तथा पर्ल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेडके चीफ रिप्रजेंटेटिव्ह (प्रतिनिधि) हैं। युनाइटेड सीमेंट कंपनी ऑफ बाम्बेके आप भागीदार हैं।

सेठ मूलराजजी बड़े व्यवसाय दक्ष पुरुष हैं जब आप जापान, अमेरिका, यूरोप आदि देशोंकी यात्रा करके वापस लौटे, तो वहांसे आते ही १५ दिनके भीतर आपने बाम्बे युनाइटेड मिल, टाटा कम्पनीको १ करोड़ ५१ लाख में बेंच डाली। यह कम्पनी केवल १५ लाखके केपिटलसे स्थापित हुई थी, इसे आपने इतनी उन्नतिपर पहुंचाया, कि १ करोड़ ५१ लाख रुपये शेअर होल्डरोंमें बांटकर अपने देशी शेअर होल्डरोंको निहाल कर दिया, एवं मिलोंके इतिहासमें यह बात चिरस्मरणीय कर दी।

अपने पिताको व्यापारमें सहायता प्रदान करते हैं। तथा आप एक प्रसिद्ध चित्रकार भी हैं। आपके चित्र बीसवीं सदीमें निकला करते हैं।

ऑ० सर मनमोहन दास रामजी के० टी०

बम्बई शहरमें विरलाही कोई ऐसा व्यक्ति निकलेगा जो कि आपसे परिचित न हो। ऑनरेवल सर मनमोहन दास रामजीका जन्म सन् १८५७ ईस्वीमें बम्बई नगरमें हुआ, प्रारंभिक शिक्षा समाप्तकर व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश करते ही ईश्वर प्रदत्त दैवी गुणोंने आप की ख्याति व्यवसायिक समाजमें फैला दी। थोड़े ही समयमें आपने अपनेको चतुर मिलमालिक एवं कुशल व्यवसायी सिद्ध किया। फल यह हुआ कि व्यवसायी संस्थाओंने आपको अपनी ओर आमंत्रित किया, एक एक करके आप सभी बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओंमें सम्मिलित हुए। आप बम्बईकी बड़ीसे बड़ी व्यापारिक संस्था इण्डियन मर्चेंट चेम्बरके स्थापकोंमें हैं एवं उसके १९०७ से १९१३ तक और १९२४में सभापतिका स्थान सुशोभित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त मिल ऑनर्स एसोसियेशन इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, पीस गुड्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन, आदि कई व्यापारिक संस्थाओंके आप प्रधान कार्यकर्त्ता, अथवा जीवन स्वरूप हैं। बम्बईके कापड़ बाजारकी मंडलीके आप सन् १८९६से सभापति हैं, इससे आपकी लोक प्रियताका पता लगता है।

आप भारतीय औद्योगिक उत्कर्षके कट्टर पक्षपाती हैं। भारतीय व्यवसाइयों एवं कारीगरोंकी ओरसे उनके हितके विरोधियोंसे आपने अच्छी लड़ाई की है। आपको भारत सरकारने सर नाइटकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप कौंसिल आफ स्टेटके करीब १५ वर्षोंसे मेम्बर हैं।

आपका जीवनकाल औद्योगिक दृष्टिसे बड़ा आदर्श रहा है। सरकार द्वारा नियोजित कितनी ही कमेटियोंमें आपने लोकोपकारी योजनाओंका सूत्रपात कराया है। आप प्राचीन विचारोंके कट्टर सनातनधर्मी सज्जन हैं।

आप फैंसेर हिन्द हिन्दुस्तान और इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग नामक मिलोंके डायरेक्टर और मैनेजिङ्ग एजंटोंके भागीदार हैं।

इस समय आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे श्री नारायण दास, श्री कृष्णदास, और श्री भगवानदास है।

मूलजीजेठा मारकीटमें आपकी कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित फर्मके स्थापक सेठ मुरारजी गोकुलदास सी० आई० ई० हैं। आपका जन्म सन् १८३४ में हुआ था। आपके कुटुम्बका आदि निवास स्थान पोरबंदर है। आपके पिताश्रीका नाम सेठ

इम्पीरियल बैंक ऑफ पर्शिया

सन् १८८९ में शाही फरमान द्वारा स्थापित हुआ था। इसकी वसूल पूंजी [illegible] पौण्ड है। जिसके शेयर [illegible] पौण्ड हैं। [illegible] पौण्ड हैं। इसकी [illegible] [illegible] [illegible] शाखायें हैं।

बैंक ऑफ इंडिया, लिमिटेड

बैंक ऑफ इंडियाका जन्म सन् १९०६ ईस्वी में हुआ था। [illegible] [illegible] की थी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया। [illegible] सर सासून डेविड, सर [illegible], सर कावसजी जहांगीर, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया। इसकी रजिस्ट्री [illegible] हुई थी।

इसकी वसूल पूंजी [illegible]

रिजर्व फण्ड [illegible]

इसके तारका पता "बैंकिंडिया" बम्बई है पोस्ट बाक्स नं० [illegible] है।

इसकी मुख्य शाखायें — बम्बई कलकत्ता [illegible] हैं।

इसका बम्बईका पता [illegible] है।

ईस्टर्न बैंक लिमिटेड

इसका प्रधान दफ्तर लन्दनमें है। इसका निर्धारित मूलधन [illegible] पौण्ड है जो [illegible] हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन [illegible] पौण्ड है और रिजर्व फण्ड [illegible] पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्दनमें है और इसका पता [illegible] लन्दन ई० सी० है। इसकी भारतीय शाखायें—[illegible], कलकत्ता, बम्बई, [illegible], मद्रास और [illegible] हैं। इसका बम्बईका पता [illegible] है, तारका पता "[illegible]" फोन नं० [illegible] और पो० बो० नं० [illegible] है।

इन्टरनेशनल बैंक ऑफ वेस्टर्न इण्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता [illegible] स्ट्रीट फोर्ट है।

इसका स्वीकृत धन ४,०००,००० पौ० वसूल धन, २,०००,००० पौ० और रिजर्व फण्ड २,६००,००० पौ० है।

नेशनल सिटी बैंक आफ न्यूयार्क

इसका बंबईका पता १२-१४ चर्चगेट स्ट्रीट बंबई है। इसका हेड ऑफिस ५५ वालस्ट्रीट न्यूयार्क है। इसकी अविभाजित और बचत पूंजी १, ४३,७७६,६४५ है। इसकी हिन्दुस्तानकी शाखाएं बंबई, कलकत्ता और रंगूनमें हैं।

बड़ोदा बैंक लिमिटेड

बड़ोदाका बैंक वहांके महाराजाके कर्मचारियोंके द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। इसकी लोगोंमें बहुत ही ज्यादा साख है। इसका प्रबन्ध दो कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। मि० सी० ई० रेन्डल इसके अध्यक्ष हैं और इनके सहकारी मि० सी० जी० कौलिंगुस हैं। सर विठ्ठलदास थैकरसी और सर लल्लूभाई सामलदासके कारण इसकी विशेष ख्याति हो गई। इस बैंककी आर्थिक स्थिति नीचे दी जाती है।

वसूल धन	६००००००
उधार धन	३००००००
रिजर्व फण्ड	२२,५००००

हेड आफिस – मन्डावी, बड़ोदा
बंबई " हार्नबी रोड.

मुख्य शाखाएं :—बंबई, अहमदाबाद, सूरत, पाटन, भावनगर, द्वारका इत्यादि।

बैंक्को नेसिओनल अल्ट्रा मेरो

इस बैंकका जन्म १८६४ ईस्वीमें हुआ था। यह पोर्चुगालवालोंका बैंक है। इसका हेड आफिस लिस्बनमें है। इसका वसूल मूल धन ५०,०००,००० रु० है और रिजर्व फन्ड ४२, ०००, ०००, रु०इसका बंबई दफ्तर स्प्लेनेड रोड पर है।

"बम्बई मर्चेंट्स बैंक

इसका पता ७६ एपोलो स्ट्री० फोर्ट० है। इसका निश्चित मूल धन १००, ००, ०००, रिजर्व फन्ड ३,० ३, २४० है।

मर्कण्टाइल बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड

बम्बईका पता नं० ५२-५४ एसप्लेनेड रोड है। इसका हेड आफिस १५ ग्रेस चर्चस्ट्रीट लन्दन है। इसकी शाखाएं बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, कोलंबो; हांगकांग मद्रास, न्यूयार्क, रंगून, शिमला, और अन्य स्थानोंपर हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे०पी०(२)ऑनरेबल सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी, (३) सेठ त्रिकमदास धरमसी मुरारजी एवं (४) सेठ शान्तिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० से बम्बईका शिक्षित समाज भलीप्रकार परिचित है। बम्बईके व्यवसायिक भवनके आप स्तंभ-स्वरूप हैं। भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिके लिये आपके हृदयमें गहरी लगन है। आपहीके परिश्रमसे सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी नामक एकमात्र बड़ी भारतीय जहाजी कम्पनी स्थापित हुई है. वर्तमानमें उसके मैनेजिंग एजंट आपही हैं। *भारतीय युवकोंको जहाजी विद्या सिखानेके लिये गवर्नमेंट द्वारा १९२६में खोले गये 'डफरिन' नामक जहाजके लिए आपने अनवरत परिश्रम उठाया है। आप टाटाके हाइड्रो, स्टील, टाटा मिल आदि कारखानोंके डायरेक्टर हैं। १९११ में आपको सरकारने शरीफके पदसे सन्मानित किया है। सन् १९१२ के देहली दरबार (कोरोनेशन दरबार) की कमिटीपर आप सेक्रेटरी निर्वाचित हुए थे। आपने १९१३में विलायत यात्रा की, एवं अभी भी सन् १९२८की जिनेवाकी ११ वीं लेबर कान्फ्रेन्समें गवर्नमेंट ऑफ इण्डियाके प्रतिनिधि होकर गये हुए हैं। आप कई मिल्सएवं ईन्स्यूरेंस कम्पनीतोंके डायरेक्टर हैं। आपने बम्बईका प्रसिद्ध मुरारजी गोकुलदास मारकीट सन् १९०९में बंधवाया है। आपके सुपुत्र सेठ शान्तिकुमार नरोत्तम मुरारजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। आपको देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

इस फर्मका व्यवसाइक परिचय इसप्रकार है।

(१) मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी सुदामा हाउस बेलार्ड स्टेट फोर्ट बम्बई

(२) नरोत्तम मुरारजी एण्डको, ८९मेस चर्च स्ट्रीट, लंदन ई सी. ३ एक्सपोर्टर, इंपोर्टर।

(३) आपके दोनों मिलोंकी ब्रान्चशाप, मुरारजी गोकुलदास मारकीट कालबादेवी पर है इसके अतिरिक्त ऑ० धरमसी, मुरारजीका धरमसी मुरारजी केमिकल वर्क्स भी है।

मेसर्स मूलजी जेठाभाई कम्पनी

इस मशहूर फर्मका आरम्भ सेठ मूलजीजेठाभाईके हाथोंसे सन् १८३४ ईस्वीमें हु प्रारम्भमें इस फर्मने बहुत छोटे रूपमें व्यापार करना आरंभ किया था। उस समय सेठ मूलजी नारियलका तेल, (कोकोनेट आइल) नारियलकी रस्सियां (क्वायर रोपस) व मलाबार प्रा देशमें होने वाली वस्तुओंका व्यापार करते थे। आप बड़े व्यापारिक ढंगके ज्ञाता एवं चतुर थे। थोड़े ही समयमें आपका व्यापार खूब चल निकला, जिसकी वजहसे आपको कामपर आदमी रखने पड़े। २० वर्षतक इसी प्रकार लगातार आप व्यापार करते रहे। बादमें ब मूलजीजेठा कम्पनीके नामसे एक कम्पनी स्थापित की। इस फर्मका सब माल कोचीनमें इ किया जाता था, एवं डोंगियोंके द्वारा करांची और बम्बई भेजा जाता था।

---

* इसका परिचय बम्बईके सार्वजनिक विभागमें दिया जा चुका है।

लिग थे इसलिये व्यापारका सारा भार वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजीभाईकोही उठाना पड़ा। उस समय सेठ मूलजीके भतीजे सेठ वल्लभदासजीने कार्य संचालनमें हाथ बढ़ाया और श्रीधरमसीजीके बालिग होकर कार्य भार गृहण करनेतक आपने व्यापारकी देख भालकी। कुछ समय बाद श्री गोवर्द्धनदासजीने भी व्यापारमें सहयोग लेना आरम्भ किया, जिससे व्यापारमें फिर उन्नति होने लगी। इसी बीचमें सन् १८८९ में सेठ मूलजी भाईका स्वर्गवास हो गया। तथा इस घटनाके १० वर्ष बाद सेठ धरमसी भाईका भी स्वर्गवास हो गया। इस समय सारा कारबार सेठ गोवर्द्धनदासजी ही सम्हालते थे। सन् १९०२ में सेठ गोवर्द्धन दासजीका भी देहान्त हो गया। उस समय आप दोनों भाइयोंके एक एक नाबालिग पुत्र विद्यमान थे। सन् १९०८ ईस्वीमें आपकी सम्पतिका बँटवारा हो गया। तथा सेठ धरमसीजीके पुत्र कृष्णदास मूलजी जेठाके हिस्सेमें मद्रास स्पीनिङ्ग एण्ड विविंग कम्पनी लि० आई, उसे आपने अपने नामसे चलाया और गोवर्द्धन दासजीके पुत्र सेठ चतुर्भुजजीने मूलजी जेठा कम्पनीका काम अपने हाथमें लिया।

खानदेश स्पीनिग एण्ड वीविंग कम्पनी लि० जिसकी रजिस्ट्री सन् १८७३ में हुई थी, इसके मिल जलगांवमें सात एकड़ भूमिपर बने हुए हैं। इस मिलमें आरंभमें १२ हजार स्पिडल्स और २५० लूम्स थे। परन्तु वर्तमानमें २० हजार स्पिडल्स तथा ४२५ लूम्स हैं। इस कंपनीका आरंभ पहिले ५ लाखकी पूंजीसे हुआ था पर पीछेसे बढ़ाकर ७लाख ५० हजारकी कर दी गई. मिलमें लगभग ३५० खांडी रुईकी खपत है, इसमेंसे अधिकांश सूतका कपड़ा बुना जाता है, तथा शेषांश सूत बाजारमें बिकता है मिलमें धुलाई व रंगाईके स्वतंत्र कारखाने हैं।

सन् १८७४ में जिस न्यू इण्डिया प्रेस कंपनी लिमिटेडकी रजिस्ट्री की गई थी, इसकेमेनेजिङ्ग एजंट भी आप ही हैं। उस समय इस कंपनीकी ओरसे बरार प्रान्तके मूर्तिजापुर एवं जलगांवमें कॉटन प्रेस खोले गये थे, परन्तु तबसे व्यापारने अब अधिक उन्नतिकी है और आज मूर्तिजापुर, नगर देवला, नेरी (पूर्व खानदेश) सांकली (पूर्व खानदेश) में इस कंपनीकी जीनिङ्गकी फेक्टरियां तथा कारंजा, अकोला, वासिम, बरसी (सोलापुर) और करमला (सोलापुर) में प्रेसिंग फेक्टरियां चल रही हैं।

मूलजी जेठा कम्पनीकी ओरसे कपासकी खरीदी तथा बेचवालीका अच्छा व्यापार होता है। कम्पनीने अपना एक एजेंट यूरोपमें भेजकर वहांके विभिन्न देशोंमें अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कराया है।

सेठ चतुर्भुजजी, न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लि० के मेनेजिङ्ग एजेंट हैं। इस बाजारसे लगभग ३ लाख रुपये वार्षिक किराया वसूल होता है। इसके अतिरिक्त मूलजी जेठा कम्पनीकी बम्बई नगरमें एवं बाहर बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति है।

धामें डाइंग स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी द्वारा तैयार किया गया माल बेंचने के लिये मेसर्स चतुर्भुज एण्ड कम्पनीकी स्थापना की गई है।

१ जबलपुर (हेडऑफिस) मेसर्स वल्लभदास मन्नूलाल कन्हैयालाल	यहां बैङ्किंग,हुंडी चिट्ठी और जमींदारीका काम होता है। यहांपर इस फर्मकी एक पोटेरी फेक्टरी है, और चांदा जिलामें लाल पेठ कोलेरीके नामसे एक कोयलेकी खान है। इसके अतिरिक्त जबलपुरमें खुशालचन्द गोपालदास और वल्लभदास मन्नूलालके नामसे २ शाखाएं और हैं। सी० पी० में इस फर्मकी बहुतसी जमींदारी है।
२ कलकत्ता—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास ७० बड़तल्ला स्ट्रीट	यहां बैङ्किंग और हुंडी चिठ्ठीका काम होता है।
३ नागपूर—मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास	यहां भी बैङ्किंग और आड़तका काम होता है।
४ बम्बई—मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास गोपाल भवन भुलेश्वर T. A. Sambhan	यहां हुंडी चिठ्ठी, सराफी और आड़तका काम होता है।
५ हिंगनघाट (C. P.) मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास T.A-Sambhan	यहां आपकी जमींदारी और जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी हैं।
६ कांटोला (C. P.) मेसर्स खुशालचन्द गोपाल दास	जीन-प्रेस फेक्टरी है और सराफी व्यवसाय होता है।
७ हरदुआ (C. P.) मेसर्स वल्लभदास मन्नूलाल T,A Diwan	जीनिङ्ग फेक्टरी है तथा रूई और जमींदारीका काम होता है।
८ होशंगाबाद—मेसर्स वल्लभदास कन्हैयालाल	जमींदारी तथा बैङ्किंग (सराफी) व्यापार होता है।
९ भोपाल—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास T. A. Laxmi	जमींदारी और आड़तका काम होता है।
१० सागर—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास T.A Gopal	कमीशन एजंसी तथा जमींदारीका काम होता है।
११ मिर्जापुर—मेसर्स खुशाल चन्द गोपाल दास	कमीशन तथा जमींदारीका काम होता है।
१२) इटारसी—मेसर्स मन्नूलाल कन्हैयालाल	यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है तथा हुंडी चिट्ठी, आड़त और रूईका व्यापार होता है।

तैयार हो रहा है ! शीघ्रही प्रकाशित होगा !!

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

[दूसरा भाग]

यू० पी० और पञ्जाबके प्रतिष्ठित व्यापारियोंका चमकता हुआ एलबम, १००० तस्वीरों का अपूर्व भण्डार, व्यापार साहित्यकी अद्भुत सामग्री, संसारकी तमाम भाषाओंमें अनूठो ग्रन्थ, भावी सन्तानोंके लिये अद्भुत स्मृति उपहार ।

बहुत ही शीघ्रः—

कृपा करके यू० पी० और पञ्जाबके व्यापारी अपने फोटो, अपना जीवन चरित्र, अपना व्यापारिक परिचय और अपनी दुकानों तथा सार्वजनिक कार्य्योंका विवरण भेजनेकी कृपा करें।

कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस भानपुरा (इन्दोर)

(३) बम्बई मेसर्स गणपतराय रुक्मानन्द ३२५ कालबादेवी रोड—इस फर्म पर टिम्बरका व्यापार होता है तथा बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम भी होता है।

(४) रंगून—मेसर्स राधाकिशन नागरमल मुगल स्ट्रीट—इस फर्मपर टिम्बरका बहुत बड़ा व्यापार होता है इसके सिवाय बैंङ्किग, हुंडी चिट्ठीका भी काम होता है। यहांपर श्रीयुत नागरमल-जी काम करते हैं जो आपके पार्टनर हैं।

मेसर्स गाढ़मल गुमानमल

इस फर्मके मालिक प्रसिद्ध लोढ़ा परिवारके हैं। आपका मूल निवास स्थान अजमेरमें है अतएव आपका परिचय अजमेरमें दिया जायगा। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मण्डावा (जयपुर) में हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ गुलाबरायजीने की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पौत्र केदारमलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। क्योंकि सेठ गुलाबरायजीके पुत्र सेठ भूरामलजीका देहावसान पहिलेही हो गया था। सेठ केदारमलजीका जन्म संवत् १९२१ में हुआ।

आपकी ओरसे मण्डावेमें अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा एक औषधालय चल रहा है। बम्बईमें आपका एक आयुर्वेदिक विशुद्ध औषधालय भी चल रहा है। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सन्मान है। आपकी यहां ११ बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स बनी हुई हैं।

सेठ केदारमलजी पहिले यूनियन बैङ्कके डायरेक्टर थे। तथा वर्तमानमें आप सनातन धर्मा-वलम्बीय अग्रवाल सभाके सभापति हैं।

इस समय आपके एक पुत्र हैं, जिनका नाम कुं० कीर्तिकृष्ण है। इनके जन्मके समय आपने २ लाख रुपये दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

(१) बम्बई—गुलाबराय केदारमल कालबादेवी T. A. Yellowrose—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी, बैंकिंग, गल्ला, कपड़ा, रूई, आदिका काम होता है। कमीशन एजंसीका कार्य भी यह फर्म करती है।

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बजरंगदासजी और सेठ फूलचंदजी हैं। आप अग्रवाल जातिके तायल गौत्रीय टिकमाणी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान राजगढ़में (बीकानेर) है। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। इसके पूर्व इस फर्मपर गोपीराम भगतराम नाम पड़ता था। कलकत्तेमें इस नामसे यह फर्म ५२ वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इस फर्मकी स्थापना सेठ शंकरदासजीके द्वारा हुई थी। सेठ शंकरदासजी संवत् १८८८ में कलकत्ता आये। आपका स्वर्गवास संवत् [illegible] में हुआ। आपके सामने ही आपके पुत्र श्रीगोपीरामजी, श्रीभगतरामजी और श्री

पेपर, डीवीडेण्ट वारण्ट, इत्यदिको पटाकर उनको अपने ग्राहकोंके खातेमें जमा करती हैं और यदि उन्हें आवश्यकता हो तो उनके लिए खरीद भी देती हैं। इस प्रकार की बैंकें संसारमें स्थान २पर खुल गई हैं। भारतवर्षमें भी कई बैंकें काम करती हैं, जिनका परिचय आगे दिया जायगा।

इन बैंकोंकी वजहसे, अथवा इस प्रकारके बैंकिंग व्यवसायसे व्यापार करनेवालोंको अत्यन्त सुविधाएं होती हैं: उनके मार्गकी बहुतसी कठिनाइयां नष्ट हो जाती हैं। इस व्यवसायके द्वारा उनका बहुतसा खर्च बच जाता है। उदाहरणार्थ एक व्यापारी यहांपर खपनेवाला माल बाहरसे मंगाता है, और दूसरा व्यापारी अपना माल यहांसे बाहरी देशोंको भेजता है। यदि बैंकिङ्ग व्यवसाय न हो तो पहले व्यापारीको भी मंगाये हुए मालका रुपया मनीआर्डरसे वहांकी कम्पनीको भेजना पड़ता, और दूसरे व्यापारीको भी अपने भेजे हुए मालका रुपया वहांसे मंगवाना पड़ता। इस प्रकार करोड़ों रुपयोंके एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले सामान पर केवल मनीआर्डरका खर्च ही कितना लगता, यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मगर बैंकिंग व्यवसायके प्रचलित होनेपर यह सब कठिनाई और खर्च एकदम बचगया है। आप अपना माल जापान, अमेरिका, इंग्लेण्ड कहीं भी भेज दीजिए और जिस व्यक्तिको माल भेजा है उसपर एक हुण्डी लिखकर किसी दलालको दे दीजिये। बस वह दलाल जाकर आपकी हुण्डी उस व्यापारीको बेच देगा जिसके यहां उस देशसे मालका इम्पोर्ट होता है वह व्यापारी आपकी हुण्डीके रुपये आपको चुकाकर, उसे अपने आढतियेके पास भेजदेगा, और वह आढतिया आपके आढतियेसे अपने रुपये मंगवा लेगा। हिसाब साफ हुआ, न आपको तकलीफ हुई न आपके आढतियेको। हां, इतनी बात अवश्य है कि यदि बाजारमें हुण्डीकी आमदसे खप अधिक हुई तब तो आपको बाजार भावसे कुछ पैसे अधिक मिल जायगे, और यदि खपतसे आमद अधिक हुई तो कुछ पैसे बट्टे के कट जाएंगे। बैंक भी इस प्रकारकी हुण्डियां उनकी फीस लेकर लेते बेचते रहते हैं जिससे इस कार्य्यमें और भी सुविधा हो जाती है।

बिल आफ एक्सचेंज परदेशी हुण्डी—

जिन देशोंमें एक ही प्रकारके सिक्के प्रचलित रहते हैं उन देशोंके बीच जिन पुर्जोंके द्वारा देन लेनका व्यवहार होता है उन्हें परदेशी हुंडी कहते हैं। मगर जिन देशोंमें भिन्न २ प्रकारके सिक्के प्रचलित हैं उन देशोंके बीच लिखे जानेवाले इस प्रकारके कागजोंको बिल आफ एक्सचेंज कहते हैं। इन बिलोंमें और परदेशी हुण्डियोंमें कुछ अन्तर होता है। ये बिल बैंकोंके द्वारा ही आते जाते हैं। बाहरी देशोंके जो व्यापारी यहांपर माल भेजते हैं वे मालको रवानाकर यहांके व्यापारी (माल मंगानेवाले) के नामकी हुण्डी या बिल, उस मालकी रसीदके साथ यहांके बैंक पर भेज देते हैं। यह बैंक बिल आते ही उसपर यहांके व्यापारीकी सही ले लेता है। इस सहीके होजानेपर वह व्यापारी उस बिलमें लिखी हुई निश्चित अवधिके भीतर उस बिलका रुपया भरदेनेके लिए बाध्य हो जाता है।

ठ गोपीरामजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

श्री० सेठ बजरंगदासजी (गोपीराम रामचन्द्र)

सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

स्व० सेठ रामचन्द्रजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

बैंकोंका इतिहास

बम्बईके इतिहासमें सबसे प्रथम बैंकका यदि परिचय कभी मिलता है तो वह सन् १७२० ई० में ही। इसके पूर्व बैंक नामकी कोई वस्तु भी न थी और न उसके स्वरूपकी किसी प्रकारकी कल्पना ही की गयी थी। सन् १७२० ई० के दिसम्बर मासमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नगरकी साधारण प्रजाके लाभकी दृष्टिसे एक बैंककी स्थापना की गयी। ईस्ट इण्डिया कंपनीने अपनी रोकड़से १ लाखकी रकम निकाल कर बैंकको प्रारम्भिक पूंजीके रूपमें दी और इस प्रकार "बैंक आफ बाम्बे" नामके प्रथम बैंकका जन्म हुआ। इस बैंककी सुव्यवस्थाका प्रबन्ध भार बम्बई सरकारके हाथमें दिया गया। बैंकमें १००) रु० की रकम जमा करने वालेको बैंक एक दुगानी दैनिक ब्याज देती थी। यदि बैंक किसीको ऋण देती तो वह ९ प्रतिशत ब्याजके अतिरिक्त एक प्रति शत ब्याज बैंकके सुप्रबन्ध संचालनके लिये लेती। इस प्रकार १० प्रतिशत ब्याज पर बैंक रुपये कर्ज देती थी। लगभग २५ वर्ष तक इसी प्रकार बराबर काम होता गया परन्तु बैंकने कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं की। फल यह हुआ कि इस प्रयोगसे लोग उदासीन हो चले और प्रबन्धमें भी शिथिलता आ गयी। सन् १७४४ ई० के लगभग १००३१३) रु० बैंक की रकममेंसे उधार खातेमें निकल चुके थे। इस रकममेंसे केवल ४२१००) रु० की रकम ही वसूल हो पायी। सरकारने लाख चेष्टा की परन्तु दुर्बलता दूर न हुई और अन्तमें सन् १७५८ में इस बैंकने अपनी जीवन लीला समाप्त की। इस प्रकार प्रथम बैंककी समाप्ति हुई।

वहांके महाजन—इस १८ वीं शताब्दीमें बैंकने फिर जोर मारा, परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। १६ वीं शताब्दीमें इतिहाससे पता चलता है कि इस नगरमें लगभग १०० हिन्दू महाजन सर्राफी का व्यवसाय खूब जोरोंसे करते थे। १८ वीं शताब्दीमें भी यहांके हिन्दू महाजनोंका व्यवसाय अच्छी उन्नत अवस्थामें था। जिस समय 'बैंक आफ बाम्बे' नामक बैंक की स्थापना हुई थी उस समय भी ये लोग बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठासे देखे जाते थे।* इनके पास पर्याप्त पूंजी थी अतः इनकी हुण्डीकी प्रतिष्ठा समस्त भारतमें थी। सन् १८०२ ई० में सेठ पेस्तमजी बोमनजीने सरकारको आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार स्वर्गीय बाजार गेट स्ट्रीटके निवासी आत्माराम भूखनने भी सरकारको मुक्तहस्तसे आर्थिक सहायता प्रदान की। उस समय इस पेढ़ीकी ख्याति काफी पारख की पेढ़ीके नामसे थी।

[illegible] बैंक—इस परिस्थितिमें साहूकार चुप बैठ न सकते थे। सन् १८३६ ई० में उसने एक

* इस समयके महाजनोंमें [illegible] का नाम सबसे अधिक उल्लेखनीय है। [illegible] सरकारको आर्थिक सहायता दी है परन्तु इन्होंने भारतीय [illegible] को भी [illegible] आर्थिक सहायता दी थी।

५ फिरोजाबाद—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र T. A. Tikamani.	यहांपर कमीशन सम्बन्धी काम होता है।
६ सिरसागंज—(मैनपुरी) मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र T. A. Tikmani.	यहांपर गल्ले तथा रुईका प्रधान व्यापार होता है।
७ मैनपुरी—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र	यह फर्म रुई तथा गल्ला खरीदकर शिकोहाबाद भेजती है।
८ राजगढ़ [बीकानेर] मेसर्स गोपीराम बजरंगदास	यहां आपका खास मकान है तथा जागीरदारों और तालुकेदारोंसे लेनदेन होता है।

मेसर्स चैनीराम जेसराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजीके पुत्र श्री घनश्यामदासजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं।

इस खानदानका मूल निवासस्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) में है। इस दुकानको यहांपर स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। पहिले पहिल इस फर्मको सेठ नाथूरामजीने स्थापित किया। आपके बाद क्रमशः सेठ रामनारायणजी, सेठ किशनदयालजी तथा सेठ सीतारामजीने इस फर्मका संचालन किया। सेठ सीतारामजीने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। आपने जनतामें अच्छी प्रतिष्ठि पाई। इस फर्मकी ओरसे बम्बई ठाकुर द्वारमें हिन्दू गृहस्थोंके ठहरने और ब्याह शादीके कार्योंके लिये वाड़ी बनवाई हुई है। आपकी ओरसे बम्बईमें सीताराम पोद्दार बालिका-विद्यालय, मारवाड़ी औषधालय, मारवाड़ी सम्मेलन तथा बिसाऊमें, बिसाऊ कन्या पाठशाला, लायब्रेरी, डिस्पेंसरी तथा एक लड़कोंका स्कूल चल रहा है। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ।

सेठ सीताराम, यूनियन बैंकके डायरेक्टर थे तथा इसकी स्थापना भी आपने ही की थी। इसके अतिरिक्त आप एडवांस मिल तथा आर० डी० ताता कम्पनीके डायरेक्टर थे।

इस फर्मका संबन्ध टाटाकी मिलोंसे बहुत पूर्वसे—ही सेठ नसरवानजी टाटाके समयसे है। सेठ नाथूरामजी उनके साथ भागीदारीमें चीनके साथ अफीमका व्यापार करते थे। इस प्रकारसे व्यापारिक हिस्सेदारीका सम्बन्ध सेठ किशनदयालजीके देहावसानके पश्चात् तक जारी रहा।

इस समय इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

१ बम्बई—मेसर्स चैनीराम जेसराज कालबादेवी रोड T. A. Swaraj.	यहां टाटा संसकी इंप्रेस मिल नागपुर, टाटा मिल बम्बई स्वदेशी मिल नं० १ तथा २ बंबई, एडवांस मिल अहमदाबाद इत्यादि मिलोंकी आढ़तसे कपड़ा बेचनेकी सोल एजन्सी है। इसके अतिरिक्त सराफ बैंकिङ्ग एक्सचेंज, हुंडी तथा कमीशन बिजिनेस भी होता है।

बैंकर्स

इलाहाबाद बैंक

यह बैंक सन् १८६५ ईस्वीमें स्थापित हुआ था। इसकी इमारत बम्बईमें इलाहाबाद बैंक बिल्डिङ्गके नामसे विख्यात है। यह एपोलो स्ट्रीटमें है। आजकल यह बैंक पी० एण्ड० ओ० बैंकिङ्ग कारपोरेशन लिमिटेडमें सम्मिलित कर दिया गया है। इसका निश्चित मूलधन ४०,००,००० है। वसूल मूलधन ३४,१०,००० और रिजर्व फण्ड ४४,५०,००० है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। इसकी मुख्य २ शाखायें—बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावलपिन्डी, नागपुर और पटना में है।

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया

बङ्गाल बैंक, मद्रास बैंक, और बम्बई बैंक, इन तीनों बैंकोंके मिश्रणसे सन् १९२१ के जनवरी मासमें इस बैंकका जन्म हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य सोनेकी अमानतको सुरक्षित रखना है। इस बैंककी लगभग १६५ शाखायें सारे भारतमें भारतीय गवर्नमेन्टसे किये हुए करारके अनुसार, भिन्न २ शहरों, बन्दरों, और व्यापारिक केन्द्रोंमें स्थापित की गई हैं। जिनमेंसे मुख्य २ के नाम इस प्रकार हैं—बम्बई, इलाहाबाद, कलकत्ता, मद्रास, आगरा, धनबाद, अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, खण्डवा, जेपुर, अमृतसर, बङ्गलोर, बनारस, कालिकट, ढाका, दार्जिलिङ्ग, ग्वालियर, जमशेदपुर, जोधपुर, जबलपुर, लाहोर, लखनऊ, लुधियाना, मदुरा, माण्डले, मछलीपट्टम, नागपुर, नासिक, रङ्गून, रावलपिण्डि, शिलाङ्ग, शिमला, सूरत, श्रीनगर इत्यादि।

यह बैंक सरकारी खजानेको भी सम्हालता है और आवश्यकताके समय सरकारको उचित व्याजपर रुपया भी देता है।

इसका निश्चित मूलधन,	११,२५००,०००
वसूल मूलधन, ३० जून १९२६ तक	५,६२,५०,०००
रिजर्व फण्ड,	५,०३,००,०००
डिपाजिट	५,६२,५०,०००

इसका लन्दन आफिस— २२ ओल्ड ब्राड स्ट्रीट ई० सी० २ पर है।

स्व० सेठ रामनारायणजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज) बम्बई

स्व० सेठ किशनदयालजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज)

स्व० सेठ सीतारामजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज) बम्बई

श्री० घनश्यामदासजी पोद्दार ... ।ज) बम्बई

बम्बई तक बढ़ाया। सेठ चतुर्भुजजीके पश्चात् उनके पौत्र सेठ ताराचन्द्रजीके पुत्र सेठ घुरसामलजी एवं हरसामलजीने इस फर्मके व्यापारको और भी विशेष उत्तेजन दिया। उस समय मालवा, बम्बई और मारवाड़ आदि स्थानोंमें इस फर्मकी सैकड़ों शाखाएं थीं। सुदूर चीन देशमें भी इस फर्मकी शाखा स्थापित की गई थी। उस समय दोनों भाई रामगढ़ में ही रहकर सब दुकानोंका संचालन करते थे।

सेठ घुरसामलजीने मथुरामें राधागोविन्ददेवजीका मन्दिर बनवाया, और उसके स्थाई प्रबंधके हेतु बहुतसा गहना और जमींदारी खरीदकर मन्दिरको भेंट किया। इसके अतिरिक्त आपने रामगढ़में बद्रीनारायणजीका मन्दिर, धर्मशालाएं, कुएं और तालाब बनवाये। आपका देहावसान संवत् १९२१ में हुआ। आपने इस कुटुंबमें अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

सेठ घुरसामलजीके पश्चात् उनके पुत्र सेठ घनश्यामदासजी व्यवसायिक कार्य देखते रहे, इन्होंने भी काशी, मथुरा, प्रयाग आदि स्थानोंपर क्षेत्र (सदावर्त) एवं पाठशालाएं जारी कीं। आपका स्वर्गवास संवत् १९४० में हुआ।

सेठ घनश्यामदासजीके पांच पुत्रोंमेंसे (१) सेठ जयनारायणजी (२) सेठ लक्ष्मीनारायणजी और (३) सेठ राधाकृष्णजीका देहावसान हो गया है। आपके चौथे पुत्र सेठ केशवदेवजी वर्तमानमें अपना सब व्यापारिक भार अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहे हैं। सेठ जयनारायणजीका देहावसान, अपने पिताश्री के देहावसानके ५ दिन पूर्वही हो गया था। इन पांचों भाइयोंकी धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रुचि रही है। सेठ लक्ष्मीनारायणजीने मथुरामें बरसाना और नन्दगांवके बीच प्रेम निकुंज नामक स्थानमें श्री राधागोविन्दचन्द्रदेवजीका मन्दिर बनवाया और वहां बहुत अधिक मूल्यके आभूषण भेंटकर सदावर्त, गौशाला, क्षेत्र, और संस्कृत पाठशाला स्थापित की जो अबतक चल रही हैं। आपने अपने जीवनमें मन्दिरों एवं धार्मिक संस्थाओंमें करीब ५ लाख रुपयोंकी संपत्ति दान की है। आपका देहावसान संवत् १९४८ में हो गया। सेठ राधाकृष्णजी अन्तिम समयमें चित्रकूटमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका संवत् १९७६ में देहावसान हुआ। सेठ केशवदेवजी तथा सेठ राधाकृष्णजीने इस फर्मके वर्तमान व्यापारको अच्छा बढ़ाया। बर्मा आइल कम्पनीकी भारतभरकी एजेंसी आपहीने स्थापित की और उसके प्रबंधके लिये कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं करांचीमें दुकानें स्थापित कीं। आप दोनों भाइयोंका व्यवसाय अभीतक शामिल ही चला आ रहा है। इस समय सेठ केशवदेवजी सब व्यापारिक कार्य अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहे हैं। से[illegible]रजीने अपनी २१ वर्षकी आयुमें स्त्रीके देहावसान हो जानेपर भी द्वितीय विवाह नहीं [illegible] तथा इस समय सांसारिक कार्योंसे विरक्त होकर आप गङ्गा तटपर निवास करते हैं।

मारवाड़ी बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। इसकी बम्बईकी फर्मका पता—राजमहल, मूलेश्वर है। यहां श्रीयुत मुनीम ओच्छवलालजी काम करते हैं। इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौर (सेंट्रल इंडिया) में दिया गया है।

मेसर्स खुशालचंद गोपालदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी हैं। आप माहेश्वरी (मालपाणी गौत्र) जातिके सज्जन हैं।

इस खानदानका मूल निवास जैसलमेरमें है, पर बहुत समयसे जबलपुरमें रहनेके कारण जबलपुर वालोंके नामसे यह कुटुम्ब विशेष प्रख्यात है।

इस फर्मका हेड आफिस जबलपुरमें है। बम्बईमें इसे स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। राजा गोकुलदासजीके हाथों इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। राजा गोकुलदासजी और सेठ गोपालदासजी दोनों भाई २ थे। पहिले आप दोनों भाइयोंका शामिल व्यवसाय सेवाराम खुशालचन्दके नामसे होता था, पर आगे जाकर दोनों अलग अलग हो गये, और यह फर्म दीवान बहादुर सेठ वल्लभ रायजीके हिस्सेमें आई। आप माहेश्वरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। आपका देहावसान हुए तीन चार वर्ष हुए। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ जमना दासजी मालपाणी एम० एल० ए० हैं। आप बड़े शिक्षित एवं सुधरे विचारोंके सज्जन हैं। आप आल इंडिया लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली (वाइसरायकी कौंसिल) के मेम्बर निर्वाचित किये गये है। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार (ताराचन्द घनश्यामदास)

श्री० कुंवर पन्नालालजी पित्ती (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर [illegible]

... की। कुछ समय पश्चात् हैदराबादमें भी आपकी दुकान स्थापित हो गई। ... इस फर्मपर शिवदत्तराय जेसीरामके नामसे व्यापार चलता था। संवत् १८८० में आपने ..., इन्दौर इत्यादि भारतके भिन्न २ प्रान्तोंमें अपने व्यापारको बढ़ाया और दुकानें ... श्री समय बुरहाई प्रान्तके एलारड़ी, चिचकुंडा, अमरावती, खामगांव आदि स्थानोंमें दुकाने स्थापित की गई। उस समय इन सब फर्मोंपर खास व्यापार अफीम, गल्ला, सराफी और ... होता था। सेठ शिवदत्तरायजीका देहावसान संवत् १९०० के करीब हुआ। थोड़े ही समयमें ... इतना व्यापार फैल गया कि जहां २ आपकी फर्म थी वहां २ के आप प्रतिष्ठित व्यापारी ... जाने गये। उस समय बरार प्रांतकी सब तहसील इस फर्मपर ही आती थी, एवं इसके द्वारा ... होती थी। सेठ जेसीरामजीके पश्चात् इस फर्मके कामको उनके पुत्र सेठ शिव... ... लाल ... ।

सेठ ... के भतीजे सेठ शिवलालजी एवं उनके पौत्र सेठ किशनलालजी (सेठ शिव... ... पुत्र) जो इस समय इस फर्मके मालिक थे, अलग २ हो गये। सेठ किशनलालजी-... ... शिवदत्तराय जेसीराम, एवं सेठ शिवलालजीने शिवदत्तराय लक्ष्मीरामके नामसे ... ... इस प्रकार यह दुकानें संवत् १९०८ के वैसाख द्वितीय सुदी ६ के दिन एवं दिसावरोंमें ... फागुन बदी ८ के दिन अलग २ हुई। (सेठ किशनलालजीका देहावसान संवत् ... । आपके पश्चात् आपकी फर्मका काम आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी एवं सेठ मदन-... (... के पुत्र) ने सम्हाला—मोहनलालजीका देहावसान संवत् १९६२ में एवं मदन-... ... में हुआ।)

... फर्मके मालिक सेठ शिवलालजीके यहां सेठ मोतीलालजी साहब संवत् १९०२ मे ... ।

... को दानधर्मकी ओर विशेष रुचि थी। आपने मद्रास प्रान्तमें श्री रंगजी, श्री ... धर्मशालाएं बनवाईं, एवं सदाव्रत जारी किये। नागोरमें आपने सदाव्रत ... आपने एक धर्मशाला बनवाई। सेठ शिवलालजीका निजाम सरकार बहुत ... संवत् १९१४ (सन् १८५७) के भारत व्यापी गदरमें इन्होंने सरकारको अच्छी ... अच्छे प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए थे, एवं सरकारने आपको रसिडेंसीमें ... । आपका देहावसान संवत् १९१९ में हुआ।

... सेठ मोतीलालजीका जन्म संवत् १८९६ में नागोरमें हुआ था। आपने ... संचालन किया। आपने इन्होंने अपने बैंकिंग कार्यको बढ़ाया, एवं ... की। इसके अतिरिक्त आपने स्थाई सम्पत्ति भी अच्छी एकत्रित की। ... (... मालिक) को संवत् १९८८ में निजाम सरकारने ... किया।

मेसर्स गणेशदास सोभागमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कोटा (राजपूताना) है। आपकी फर्मकी कई ब्रांचेस हैं। बम्बई ब्रांचका पता—मुंबादेवी, बम्बई है। यहां सराफीका व्यवसाय होता है। आपका विशेष परिचय कोटा (राजपूताना) में दिया गया है।

मेसर्स गणपतराय रुक्मानंद बागला

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ रुक्मानंदजी बागला तथा सेठ राधाकिशनजी बागला हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूरू (बीकानेर) में है।

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब १२ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ राधाकिशनजी बागलाने की। आप सेठ गनपतरायजी बागलाके पुत्र हैं। आपके हाथसे इस फर्मकी विशेष तरक्की भी हुई।

इस फर्मकी ओरसे बनारसमें एक श्रीसत्यनारायणजीका मंदिर बांसके फाटकके पास बना हुआ है। इसमें एक अन्नक्षेत्र तथा एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित है। इसके अतिरिक्त चूरूमें आपका एक बागला औषधालय भी बना हुआ है। आपने गत वर्ष २१ मकान मय १ सालके खाद्य-द्रव्योंके ऐसे ब्राह्मणोंको दान दिये हैं, जो बहुत गरीब थे तथा जिनके रहने आदिका कोई प्रबंध नहीं था। आपने एक हजार बीघा जमीन बीकानेर स्टेटसे खरीदकर गौओंके चरनेके लिये छुड़वा दी है। ऐसा कहा जाता है कि इन दोनों महानुभावोंने एक बहुत बड़ी रकम परोपकारी संस्थाओंको खोलनेके लिये निकाली है। अभी आपने मोघाके एक मशहूर डाक्टरको चूरू बुलाकर ४०० मनुष्योंकी आंखोंका इलाज अपने व्ययसे करवाया, जिससे बहुतसे लोगोंको लाभ हुआ था।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हेड आफिस कलकत्ता—क्रॉस स्ट्रीट रोड मेसर्स मोतीलाल राधाकिशन T A. Bagla	इस फर्मपर टिम्बरका (इमारती लकड़ी) बहुत बड़ा बिजनेस होता है। कलकत्तेके मशहूर टिम्बरके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।
(२) मोलमीन—(बर्मा) पुष्प० रुक्मानंद ब्रोडमेन रोड T A. Rukamanand	यहांपर आपकी एक टिम्बरकी फेक्टरी तथा एक चावलकी फेक्टरी है। यहांपर आपका एक बहुत विशाल बगीचा है। इसमें यूरोपियन, मारवाड़ी, भाटिया बर्मीज आदि सब जातियोंके लिये वायु सेवन और आरामके लिये अलग २ सुविधाएं रक्खी गई हैं। यहांपर आपके ५ हाथी हैं जिनसे लकड़ी ढोनेका काम लिया जाता है।

णदासजी डागा (मुनीम रा०ब० बंशीलाल अबीरचंद) बंबई,

श्री रामगोपालजी (मुनीम रा०ब० सरूपचंद हु०) बम्बई

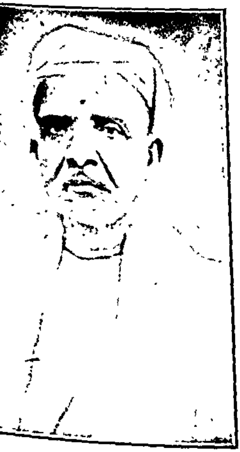

म गंगारामजी (गोवीराम रामचन्द्र) बम्बई,

लिलुआंका बंगला कलकत्ता (शिवप्रसाद रामनारायण)

श्री० सेठ केदारमलजी (मे० गुलाबराय केदारमल) बम्बई

कुंवर कीर्तिकृष्णजी S/o सेठ केदारमलजी बम्बई

बंगला (मे० गुलाबराय केदारमल) बम्बई

इस दुकानके संचालक मुनीम श्रीयुत लक्ष्मणदासजी डागा हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आप मारवाड़ी जातिके अग्रगण्य सज्जनोंमेंसे हैं। मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके पूर्व जो पंच सराफ एसोसिएसन नामक संस्था थी उसके संस्थापक आपही थे। इसके अतिरिक्त मारवाड़ी चेम्बरके मूल संस्थापकोंमेंसे भी आप एक प्रधान व्यक्ति हैं। पहले आप इसके वाइस चेअरमेन भी रहे हैं। बुलियन मर्चेण्ट एसोसिएशनके स्थापकोंमें भी आपका नाम अग्रगण्य है। इस समय आप उसके वाइस चेअरमेन हैं। मारवाड़ी विद्यालय और मारवाड़ी सम्मेलनके भी आप सभापति रह चुके हैं। वर्तमानमें यूनियन बैंक ऑफ् इंडिया, यूनिवर्सल फायर इन्स्युरेन्स कम्पनी, मॉडल मिल नागपुर, बरारमिल बड़नेरा, औरङ्गाबाद मिल और बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, बाम्बे स्टाक एक्सचेंज इत्यादि संस्थाओंके आप डाइरेक्टर हैं। बाम्बे पंसेरियर रिलिफ् एसोसिएशनके आप वाइस चेअरमेन हैं। मतलब यह कि बम्बईमें आप बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति हैं।

मेसर्स बच्छराज जमनालाल बजाज

इस फर्मके वर्तमान मालिक भारत प्रसिद्ध देशभक्त त्यागमूर्ति से० जमनालालजी बजाज हैं। इस समय सेठ जमनालालजीका कुछ भी परिचय लिखना सूर्यको दीपक दिखाना है। आपके नामसे आज भारतका बच्चा २ परिचित है। आपके त्यागमय जीवनसे भारत-भूमिका एक २ रज: कण गौरवान्वित हो रहा है।

सेठ जमनालालजी उन महापुरुषोंमेंसे हैं जिन्होंने एक साधारण स्थितिमें जन्म लेकर, अपनी कर्मवीरतासे लाखों रुपयेकी दौलत उपार्जन की और फिर बड़ी उदारताके साथ उसे अपनी जातिके लिए और अपने देशके लिए अर्पण कर रहे हैं।

आपका जन्म सीकरके समीपवर्त्ती एक छोटेसे गांवमें श्रीकनीरामजी बजाजके यहां हुआ था। श्रीयुत कनीरामजी बहुतही साधारण स्थितिके पुरुष थे। जब आप पांच वर्षके हुए तब आप वर्धाके सेठ बच्छराजजीके पुत्र स्व० रामधनजीके नामपर दत्तक लाए गए। सेठ बच्छराजजी बड़े प्रतिष्ठित, धनाढ्य और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आप रायबहादुर, आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल मेम्बर थे। इस खानदानमें आजानेपर श्रीयुत जमनालालजीको अपना विकास करनेका अच्छा मौका मिला। उचित अवसर मिलनेके कारण आपकी प्रतिभा धीरे २ चमकती गई। गवर्नमेण्टमें, तथा व्यापारिक समाजमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। सन् १९०८ में सी० पी० की गवर्नमेन्टने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट और सन् १९१८ में भारत गवर्नमेन्टने आपको रायबहादुरकी सम्माननीय उपाधिसे विभूषित किया, मगर ईश्वरने आपको इन मोहक इन्द्रजालोंमें फंसनेके लिए पैदा नहीं किया था। कुदरत

दुकानके कामको सम्हालते थे। सेठ गोपीरामजी तथा सेठ भगतरामजी संवत् १९२३ में व्यापार करनेके लिये कलकत्ता आये। यहां आकर आपने दलालीका कार्य शुरू किया। पश्चात् संवत् १९५१ में फर्मकी स्थापना की। संवत् १९७२ में सेठ गोपीरामजी तथा बजरंगलालजी से सेठ भगतरामजी अलग हो गये। सेठ गोपीरामजीका देहावसान संवत् १९७३ में काशीजीमें जन्माष्टमीको हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ फूलचन्दजी तथा सेठ बजरंगलालजीके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी इस फर्मके कार्यका संचालन करने लगे। लेकिन सेठ रामचन्द्रजीका देहावसान संवत् १९७८ में २१ वर्षकी आयुमें ही हो गया। वर्तमानमें इस फर्मका सारा भार सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी सम्हालते हैं। आपने इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

दोनों भाई सेठ गोपीरामजी, सेठ भगतरामजी एवम् सेठ बजरंगलालजीके द्वारा जो सार्वजनिक कार्य हुए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—बनारसके संस्कृत टिकमाणी कालेजमें जो सेठ गोपीरामजीके स्मारक स्वरूप बनाया है, करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति लगी है। इस समय इसका सारा काम भार सेठ फूलचन्दजी सम्हालते हैं। राजगढ़के एक मन्दिरमें आपकी ओरसे करीब ५००००) की लागत लगी है। आपकी ओरसे बहुतसी गोचर भूमि छुड़ाई गई है। राजगढ़में आपकी ओरसे २ धर्मशालाएं तथा १ कुआं भी बने हुए हैं। आप तीनोंही भाइयोंकी ओरसे राजगढ़ पाठशालाके लिये २१ हजार रुपया दिया गया है। आपकी ओरसे एक घंटाघर भी राजगढ़में बना हुआ है। इसके अतिरिक्त सेठ फूलचन्दजीने प्रायवेट रूपसे २५ हजार रुपया और सिक्योरिटीमें दिया है।

कलकत्तेमें टिकमाणी कोठीके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी २५।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें बनी हुई है। जिसका फोटो इस पुस्तकमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—हेड आफिस—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र २५।३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Tikamani—इस फर्म पर बारदान तथा हेसियनका व्यापार होता है। बारदानकी कई अच्छी २ कंपनियोंसे आपका व्यापारिक संबन्ध है। पेरिसकी प्रसिद्ध कपड़ेकी कंपनी आर एण्ड कम्पनीके आप मुनीम हैं। बंगालके अन्तर्गत कुल्सडेरामें 'पाड़रिया कुलयारी' नामक आपकी एक कोयलेकी खान है।

बम्बई—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र टिकमाणी लिमिटेड कालबादेवी रोड, T. A. Tikamani—यहां हुंडी चिट्ठी, रुई, गल्ला, सिल्वर आदिका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त सब प्रकारका आढ़तका काम भी यहां होता है। इस फर्मको मुनीम गंगारामजीने संवत् १९८३ में स्थापित किया था। बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आपका अच्छा सम्मान था। आप मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके आनरेरी सेक्रेटरी भी रहे थे।

छिन्दवाड़ा—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। यहां कपासका व्यापार तथा आढ़तका भी काम होता है।

कानपुर—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इण्डिया इन्स्योरेंस कम्पनीकी स्थापना की थी, अब भी आप इसके डायरेक्टर हैं। बम्बईके शेयर बाजारके संस्थापकोंमें आप भी एक खास व्यक्ति थे। [illegible] के बाद आप इसके चेयरमेन भी रहे थे। मतलब यह कि आपका व्यापारिक जीवन भी बड़ा गौरवपूर्ण रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—भगवानदास ब्रजलाल, कालबादेवी रोड	इस फर्मपर बैंकिङ्ग, हुंडी चिट्ठी और कॉटनका व्यवसाय होता है।
[illegible]—भगवानदास ब्रजलाल	यहां हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स भगवानदास बागला रायबहादुर

इस समय इस फर्मके मालिक श्री मदनगोपालजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूरू (बीकानेर) है।

इस फर्मका हेड आफिस रंगून (बर्मा) में है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब १० वर्ष हुए। इस फर्मको स्थापना सबसे पहिले रा० ब० भगवानदासजी बागलाने की। आपको भारत गवर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवी प्रदान की थी। आप बड़े योग्य एवं चतुर व्यक्ति थे। आपका देहावसान संवत् १९७५ में हुआ। आपके पश्चात् आपकी धर्मपत्नी इस फर्मको चलाती रहीं, क्योंकि भगवानदासजीके पुत्र महादेवप्रसादजी छोटी वयमें गुजर गये थे, तथा उनके पुत्र श्री मदनगोपालजी नाबालिग थे। मदनगोपालजीने होशियार होनेपर इस फर्मका काम सम्हाला, तथा इस समय आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे रंगून, [illegible], [illegible], चूरू आदि स्थानोंपर धर्मशालाएं बनी हुई हैं। रंगून, चूरू [illegible] आदि स्थानोंपर मन्दिर तथा अन्य कई स्थानोंपर तालाब एवं कुएं बने हुए हैं। [illegible] आपका रा० ब० भगवानदास बागला हाईस्कूल नामसे एक हाईस्कूल भी चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ रंगून—रा० ब० भगवानदास बागला, मुगलस्ट्रीट T. A. [illegible]	टिम्बर एवं राइस मर्चेंट तथा [illegible] का काम होता है।
२ बम्बई—रा० ब० भगवानदास बागला, [illegible] T. A. [illegible]	यहां आपकी एक टिम्बरकी और एक [illegible] है तथा [illegible] व्यापार होता है।

२ अमृतसर—मेसर्स रामनारायण किशनदयाल। ३ कानपुर ” ४ जबलपुर ”	यहां टाटा संसकी मिलोंका कपड़ा बेचा जाता है।
५ देहली मे० नाथूराम रामनारायण ६ उज्जैन ” ७ मुजफ्फरपुर ” ८ गुजराहो बाल घाट ”	यहां आपकी एक पोद्दार जीनिंग फैक्टरी है। कपड़ेका व्यापार होता है। यहां आपकी एक मेगनीज (फौलाद)की खान है।
९ बम्बई—नाथूराम रामनारायण पर्मानन्द गल्ली मूलजी जेठा मारकीट	यहां सिला बंध कपड़ेकी गाठोंका व्यापार होता है।
१० बम्बई—नाथूराम रामनारायण कल्याणजी, मूलजी जेठा मारकीट	यहांपर खुदरा कपड़ेका व्यापार होता है।
११ बम्बई—चंनीराम जेसराज थार्क बिल्डिंग फोर्ट	यहां एक्सपोर्ट-इम्पोर्टका काम होता है।
१२ बम्बई—मे० चंनीराम जेसराज टाटा बिल्डिंग फोर्ट	यहां टाटा संसकी एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स जुहारमल मूलचन्द सोनी

इस प्रतिष्ठित फर्मका हेड आफिस अजमेर है। बंबईकी फर्मका पता—अजमेरका पाशियाकालबादेवी रोड है। तथा आफिसका पता—जुहारपेलेस, कालबादेवी है। यह पेलेस आपहीका है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। बंबईमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा एक्सपोर्ट इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स तिलोकचंद कल्याणमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास-स्थान इन्दौरमें है। यहांकी फर्मका पता [illegible] भवन, कालबादेवी रोड है। यह फर्म यहांके हुकुमचंद मिलकी एजंट है। इसका विशेष परिचय इन्दौर (सेंट्रल इण्डिया) में चित्रोंसहित दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास

इस मन्दसौर फर्मका स्थापन सेठ [illegible] के हाथोंसे हुआ था उस समय आपका कुटुम्ब चूरूमें रहता था। महाराज होल्करके बहुत आग्रहसे सेठ चतुर्भुजजी ([illegible]) [illegible] इन्दौरमें निवास करने लग गये। उस समय [illegible] थे, वहां इन्होंने ही सर्व प्रथम अपनी दो हवेलियां बनवाईं।

सेठ चतुर्भुजजीने प्रथम [illegible] अपनी दूकान स्थापित की और वहांसे [illegible] हुआ [illegible] बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। धीरे २ इस कुटुम्बने अपने व्यापारको बढ़ाया [illegible]

सेठ हरिकृष्णदासजी डालमियां (मामराज रामभगत)

श्री दुलिचन्दजी डालमियां (मामराज रामभगत)

व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त बनारस, बुलानालापर आपकी ओरसे एक बड़ी विशाल और सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। हिंगोली और नारनोलमें भी आपकी एक २ धर्मशाला बनी हुई है। इसके अतिरिक्त तिलक-स्वराज्य-फंड, अग्रवाल जातीय कोष, मारवाड़ी विद्यालय कलकत्ता, तथा विशुद्धानन्द अस्पताल कलकत्तामें भी आपने अच्छी आर्थिक सहायता पहुंचाई है।

इस समय दुकानके संचालकोंमें सेठ रामभगतजीके पुत्र सेठ हरकिशनदासजी सबसे बड़े हैं। आप बड़े शांत-प्रकृतिके पुरुष हैं। सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलीचंदजी और सेठ बेणी प्रसादजी, सेठ मानराजजीके पौत्र हैं। आप तीनों ही बड़े योग्य और सज्जन हैं। श्रीयुत दुलीचंदजी के हाथोंसे इस फर्मके अन्दर कई नये २ कार्यों की तरक्की हुई है। आप बड़े उदार, उत्साही एवम् व्यापार निपुण पुरुष हैं। श्रीयुत बेणीप्रसादजी डालमियां भी बड़े उत्साही, नवयुगके नवीन विचारोंके पोषक और सच्चे कार्यकर्ता हैं। आप इस समय मारवाड़ी चेम्बर आफ कॉमर्सके प्रेसीडेन्ट तथा ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसियेशन और सेन्ट्रल बैंक आफ् इंडियाके डायरेक्टर हैं। गतवर्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके आप सेक्रेटरी रह चुके हैं। इसी प्रकारके और भी सार्वजनिक कार्योंकी ओर आपका बहुत प्रेम है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड आफिस, बम्बई—मेसर्स मानराज रामभगत, मुम्बादेवी T. A. dalmiya	इस फर्मपर रुई और गल्लेका प्रधान व्यवसाय होता है। बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है। इस समय इस फर्मका काम निम्नांकित विभागोंके द्वारा होता है।
बम्बई—मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत	इस विभागमें रुईका जत्था और कमीशन एजंसीका कार्य होता है। इसके अधीन बम्बई प्रान्तमें कई स्थानोंपर शाखाएं हैं। खामगांव और पाचोरेमें २ जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी इसकी ओरसे चल रही है। इसी फर्मकी एक शाखा जापान-कोबी बन्दरमें है। यहांसे जापान तथा यूरोपके दूसरे देशोंको रूईका एक्सपोर्ट होता है इस दुकानमें इन्दौरके सेठ सर हुकुमचन्दजीका साझा है।
बम्बई—मेसर्स मानराज [illegible]	इस फर्मपर गल्लेकी दलालीका व्यापार होता है। गल्लेकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है यह फर्म [illegible] प्रसिद्ध [illegible] बम्बईके सीड ब्रोकर है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता, कानपुर, करांची आदि [illegible] भी आपकी फर्में खुली हुई हैं। इन सारी फर्मों के अधीन [illegible] और [illegible] भिन्न २ स्थानोंमें आपकी करीब ४० शाखाएं भिन्न २ नामोंसे चल रही हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ केशवदेवजी और उनके पुत्र कुंवर श्रीनिवासजी एवं कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार, एवं स्वर्गीय सेठ राधाकृष्णजीके पुत्र सेठ रघुनाथ प्रसादजी, सेठ प्रसादजी, सेठ लक्ष्मण प्रसादजी और सेठ हनुमान प्रसादजी हैं।

कुंवर श्रीनिवासजी तथा कुंवर बालकृष्णलालजी दोनों सज्जन बड़े समाजसेवी एवं सुधरे विचारोंके हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस समाजकी उन्नतिमें आप अच्छी लेते रहते हैं। हालहीमें बम्बईमें जो अग्रवाल महासभा हुई थी, उसकी स्वागतकारिणीके सभापति कुंवर बालकृष्ण लालजी थे।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई-मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास मारवाड़ी बाजार T. A. seth, poddar	इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, और बैंकिंगका व्यापार होता है बर्मा आइल कंपनीकी भारतभरकी सोल एजंसी है। इस कं भारतभरमें जितना तेल खपता है वह सब इसी फर्मके द्वारा सप्लाई होता है। भारतके प्रायः सभी बड़े २ रेलवे इस फर्मकी शाखाएं तथा एजन्सियां कायम हैं।
२ कलकत्ता—मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar १८ मल्लिक स्ट्रीट	इस फर्म पर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और बर्मा कम्पनीकी एजन्सीका काम होता है।
३ मद्रास—मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar	"
४ कराची-मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास T. A. Poddar	"

मेसर्स नैनसुखदास शिवनारायण

इस फर्मके मालिक श्रीजयनारायणजी डागा बीकानेर रहते हैं। वहीं आपका हेड आफिस है। यहांकी फर्मका पता—केदार भवन, कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग हुंडीचिट्ठी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इस फर्मका संचालन मुनीम जगन्नाथ प्रसादजी पुरोहित करते हैं। इस फर्मका विशेष हाल बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है।

राजा बहादुर बंशीलाल मोतीलाल

इस सुप्रसिद्ध फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी हैं। आप अग्र... जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान नागोर में (मारवाड़) है।

इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ शिवनारायणजी तथा उनके पुत्र सेठ ... संवत् १८३१ में, नागोरसे आकर जिला बीड़ (निजाम हैदराबाद) के ...

मगनबाकोठी (टिकमाणी बन्धु) कलकत्ता

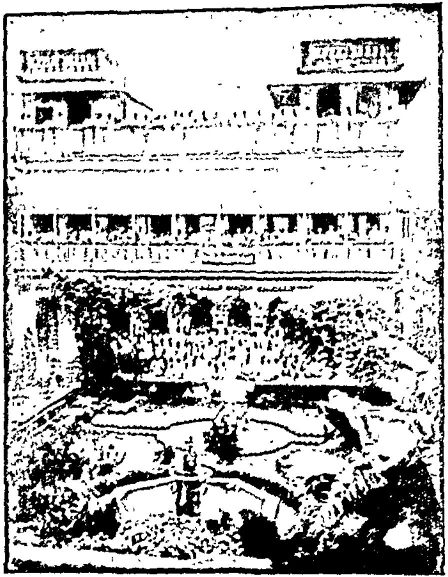

टिकमाणी संस्कृत कालेज, बनारस

रा० बा० सेठ मोतीलालजीके पश्चात इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी हैं। आपका जन्म संवत् १९१८ की चैत सुदी १२ को जहाजपुर (मेवाड़) में हुआ, एवं आप संवत् १९२४ के अगहन मासमें हैदराबादकी मशहूर फर्मके मालिक राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीके यहां गोद लाये गये। सेठ बंशीलालजी १८ वर्षकी आयुसे ही व्यवसाय एवं राज दरबारका कार्य करने लगे। प्रारम्भमें करीब १५ वर्षोंतक आपने तालुकेदारीका सरकारी काम किया था। वर्तमानमें आप हरिद्वारमें एक अच्छी धर्मशाला बनवा रहे हैं जिसकी जमीन ५१०००) में ली गई है। आपने २ साल पूर्व करीब ५० हजार रुपया लगाकर श्री विष्णुयज्ञ किया था। उसमें श्रीमद् भागवत, वालिमकी रामायणके १०८ पारायण कराये थे। रा० बा० सेठ बन्सीलालजीका हैदराबाद राज्यमें अच्छा सम्मान है। निजाम सरकारके सम्मुख आपको कुरसी मिलती है। इसके अतिरिक्त वहांके ... एवं जगीरदार भी आपका अच्छा सम्मान करते हैं।

इस फर्मकी बम्बई, अजमेर, हैदराबाद आदि स्थानोंपर अच्छी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल रेसिडेंसी बाजार हैदराबाद (दक्षिण)	इस फर्मपर बेङ्किग, हुन्डी चिट्ठी, स्टेटमार्गेज एवं जवाहरात का व्यापार होता है।
२ राजाबहादुर मोतीलाल बन्सीलाल बेगम बाजार हैदराबाद	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।
३ राजा बहादुर बन्सीलाल मोतीलाल कालबादेवी रोड बम्बई	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इस समय आपके तीन बड़े पुत्र श्री सेठ गोविन्दलालजी, श्री सेठ मुकुन्दलालजी, एवं सेठ धनलालजी अपना अलग २ व्यापार कर रहे हैं। एवं आपके दो छोटे पुत्र श्री पन्नालालजी एवं गोवर्द्धनलालजी आपके साथ हैं।

मेसर्स बन्सीलाल अबीरचन्द

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। बम्बईमें आपकी फर्मका पता मारवाड़ी बाजार, शेखमेमन स्ट्रीट है। यहां बेङ्किग तथा हुन्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। यहींपर आपकी एक कम्पनी है जिसपर रुई आदिका विलायत एक्सपोर्ट होता है और कई वस्तुएं विलायतसे यहां आती हैं। आपका विशेष परिचय बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है। यहांका तारका पता Raibansi. है।

आपने अपनी फर्मके कार्यको उत्तमतासे सम्हाला है । आपका विशेष परिचय तथा फोटो छोटी सादड़ीमें दिया है स्थानकवासी समाजमें आप समाज-सुधारके बहुतसे काम करते रहते हैं ।

वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है ।

१ हेड आफिस—छोटी सादड़ी-नेमजी गिरधरलाल गोधावत	इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा लेन-देनका काम होता है। पहिले इस दुकानपर अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था ।
२ बम्बई—मेसर्स नेमजी गिरधरलाल शास्त्री गली धनजी स्ट्रीट T. A. [illegible]	इस फर्मपर कॉटन, सराफी, बैंकिंग तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका अच्छे स्केलपर व्यापार होता है ।

मेसर्स शिवनारायण बलदेवदास बिड़ला

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका निवासस्थान पिलानी (जयपुर-राज्य) है। अतएव आपका पूरा परिचय चित्रों सहित वहीं दिया गया है ।

यहां इस फर्मका पता—मारवाड़ी बाजार, बम्बई है। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका काम होता है ।

आफिसका पता—बिड़ला ब्रदर्स, युनुस बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट है यहां कटन और एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्टका काम होता है ।

मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजगढ़ (बीकानेर स्टेट) में हैं। तथा इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तामें है। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ६०—७० वर्षोंसे चालू है। इस फर्मपर पहिले कलकत्तेमें गोपीराम भगतरामके नामसे व्यापार होता था। संवत् १९७२ में आपके भाई अलग २ हो गये। अब इस समय कलकत्तेमें भगतराम शिवप्रतापके नामसे व्यापार होता है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए ३ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ शिवप्रतापजीने की। आपने बनारसमें टिकमणी संस्कृत कालेज स्थापित किया। उसमें आपके खानदान ओरसे करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति लगी है। राजगढ़में आपकी ओरसे एक सत्यनारायणजीका मन्दिर—जिसमें ८० हजारकी लागत लगी है—बना है, तथा वहींपर आपकी २ धर्मशालाएं एवं ६ बड़े बड़े कुएं बने हैं।

आपने कोजी (जिला हिसार) नामक गांव जो आपकी जागीरीका था एक ट्रस्टके जिम्मे कर उसकी आमदनीसे राजगढ़की धर्मशाला, सदाव्रत एवं स्कूल आदि संस्थाओंके सञ्चालनका स्थाई प्रबन्ध कर दिया है। राजगढ़में आपकी १ पाठशाला भी चल रही

क्ष्मीनारायणजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

श्री धनराजजी S/o सेठ रामनारायणजी

श्री तेजपालजी S/o सेठ रामनारायणजी

कुंवर लाला S/o श्री

आपसे देश सेवाका महान कार्य्य करवाना चाहती थी। समाज सेवा और देश सेवाकी भावनाएं बीज रूपमें तो आपके अन्दर विद्यमान थी ही, सौभाग्यसे उनको विकसित करनेके लिए आपको बहुत ऊंचे दर्जेकी सोसायटी भी मिल गई, जिससे आपके अन्तर्गत समाज सेवाकी भावनाएं प्रबल रूपसे जागृत हो उठीं। सबसे पहले आपका ध्यान अग्रवाल समाजकी उन्नतिकी ओर गया। जिसके फलस्वरूप आपने सन् १९१२ में वर्धाके अन्तर्गत मारवाड़ी हाई स्कूल खोला। तथा कुछ समय पश्चात एक कन्या पाठशालाकी भी स्थापना की।

सन् १९१५ में वम्बईके सुप्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालयकी नींव पड़ी। इस संस्थाकी स्थापनामें आपका खासभाग था। इसके पश्चात संम्वत् १९७६ में आपने अपने मित्रों सहित दीर्घ प्रयत्नके साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल सभाका संगठन किया, जो आपके जीवनकी एक महत्वपूर्ण घटना है।

मगर आपका ध्येय यहींतक परिमित न था जातिकी सीमासे निकालकर कुदरत आपको देशके विराट क्षेत्रमें लाना चाहती थी, और इसी कारण वह आपके जीवनकी घटनाओंको बदलती गई। सन् १९१९ में आपका महात्मा गांधीके साथ परिचय हुआ। यह परिचय दिन २ दृढ़ होता गया। कुछ समय पश्चात् महात्मा गान्धीका देश व्यापी आन्दोलन जारी हुआ। इस आन्दोलनमें आपने तन, मन, धनसे पार्ट लिया। सन् १९२१ में आपने अपना राय बहादुरीका खिताब लौटा दिया। और मोटी खादीके वस्त्र धारण कर आपने असहयोगका झण्डा पकड़ लिया। असहयोग के आन्दोलनमें आपका बहुत अधिक भाग रहा। जिस दिन भारतकी राजनीतिके इतिहासमें असह योगका अध्याय लिखा जायगा, उस अध्यायमें उसके प्रधान प्रवर्तकोंके साथ सेठ जमनालालजी बजाजका नाम भी स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जायगा।

तभीसे सेठ जमनालालजी बजाज देशभक्तिके रंगमें मतवाले होगये हैं। आज भी इस शिथिलताके युगमें भी सेठ जमनालालजी सिरसे पैर तक खादीके वस्त्र धारण किये हुऐ स्थान २ पर भ्रमणकर भारत विस्तृत लोगोंको उत्साहवर्द्धक सन्देश देते फिरते हैं। इस त्यागी वीरको इस वेषमें देखकर सचमुच आत्मा पुलकित हो जाती है, और हृदयमें एक उन्नत गौरवका अनुभव होता है।

जिस समय श्रीयुत सेठ बच्छराजजीका स्वर्गवास हुआ था, उस समय आप केवल पांच छः लाखकी स्थावर और जंगम सम्पत्तिके उत्तराधिकारी हुए थे, मगर आपने अपनी प्रतिभा और सच्चाईके बदौलत इस कार्यको इतना अधिक बढ़ा लिया कि गत पन्द्रहवर्षोंमें आप इस सम्पत्तिमेंसे करीब ११ लाख रुपया तो दानही कर चुके हैं। आपका व्यापारिक ज्ञान बहुतही उच्चकोटिका है। बम्बईके प्रतिष्ठित धनी मानी समाजमें आपकी बहुतही अच्छी प्रतिष्ठा है। जिस समय आप बम्बईके व्यापारिक क्षेत्रमें थे, उस समय कई व्यापारी कम्पनियोंके डाइरेक्टर थे। आपहीने टाटाके साथ मिल

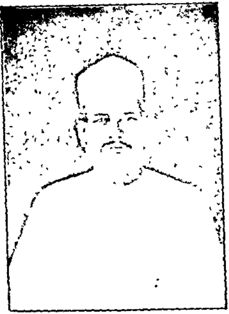

त्यागमूर्त्ति सेठ जमनालालजी बजाज

स्व० सेठ भगवानदास बागला रायबहादुर

स्व० सेठ महादेवप्रसादजी बागला

सेठ मदनगोपालजी बागला

किया। आपके पिताजी सेठ रामेश्वरदासजी अभी विद्यमान हैं। इस फर्मको विशेष उत्तेजन सेठ शिवचन्द्ररायजीने दिया। कलकत्ता तथा बम्बईमें इस फर्मकी अच्छी साख एवं प्रतिष्ठा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ रामकुंवारजी, सेठ श्रीरामजी, सेठ मुरलीधरजी सेठ शिवचन्द्र रायजी एवं सेठ सदारामजी हैं।

सेठ शिवचंद्ररायजी ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनके डायरेक्टर हैं। अभी २ आपहीके परिश्रमसे सनातनधर्मावलम्बीय मारवाड़ी अग्रवाल पञ्चायत स्थापित हुई है।

वर्तमानमें आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

१ कलकत्ता—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल बड़तल्ला स्ट्रीट बड़ाबजार	यहां हुंडी, चिट्ठी, रुई, हेशियन तथा चीनीका धन्धा एवं आढ़त का काम होता है।
२ बम्बई—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी	यहां हुंडी चिट्ठी, रुई, गल्ला, सराफी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मके अन्डरमें शिवरीके पास एक न्यू ऑइल मिल है।
३ कानपुर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल नयागंज	यहां हुंडी, चिट्ठी, सराफी तथा मिलोंको रुई सप्लाईका काम होता है।
४ अमरावती (बरार) मेसर्स नन्नालाल शिवनारायण	यहां हुंडी, चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है।
५ खामगांव [बरार]—मेसर्स नन्ना-लाल शिवनारायण	यहां भी हुण्डी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।
६ मन्दसौर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल	यहां रुई तथा गल्लेका व्यापार होता है।
७ अकोला—मेसर्स शिवदयाल चिन्ताराम	इसफर्ममें आपका साझा है, तथा रुईका व्यवसाय होता है।
लक्ष्मीगंज- [पटियाला] मेसर्स गनेशनारायण ओंकारमल	इसमें गनेशनारायण ओंकारमलका तथा आपका साझा है। इस नामका यहां एक शुगर मिल है।
९ धनोरा (बरार) १० दिग्रस (बरार)	यहां आपकी एक एक जीन है।
११ करांची—मेसर्स चन्दनमल रामकुँवार बाई रोड	यहां गल्ला तथा रुईका व्यापार होता है।

बम्बईमें आपका चार और फर्मोंपर व्यवसाय होता है। जिनके नाम नीचे दिये जाते हैं।

(१) टुपकान एन्ड को० लिमिटेड—

(२) शिवचन्द्रराय सूरजमल—

१ मोलमीन (बर्मा) रा० ब० भगवानदास बागला T. A. Bahadur.	यहांपर भी आपकी एक टिम्बर और एक राइस फेक्टरी है तथा बेङ्किग बिजिनेस होता है
[illegible] (बर्मा) रा० ब० भगवानदास बागला	यहां जमींदारी तथा बेङ्किग बिजिनेस होता है।
[illegible]—रा० ब० भगवानदास बागला [illegible] T. A. Kavora	टिम्बर मर्चेंट, बेङ्किग वर्क तथा आयरनका काम होता है। यह फर्म गव्हर्नमेंट रेल्वे कंट्राक्टर है।
बम्बई—मेसर्स भगवानदास बागला रा० ब०—कालबादेवी रोड T. A. Sarvabhom	इस फर्मपर बेङ्किग, टिम्बर तथा राइस एवं कमीशन एजंसी-का काम होता है।
चूरू—मेसर्स [illegible] भगवानदास [illegible]	यहां आपका खास निवास स्थान है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलीचन्दजी, सेठ [illegible], सेठ मुरारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशरदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके [illegible] गोत्रके सज्जन हैं। इस खानदानका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर-स्टेट) में है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए ५० वर्षसे ऊपर हुए। सबसे पहले यहांपर इसकी स्थापना सेठ [illegible] की। शुरुमें आपने अपनी दुकानपर मालवेसे आनेवाली अफीमका व्यवसाय शुरू किया। [illegible] मालवेमें भी कई स्थानोंपर दुकानें स्थापित कीं। इस व्यापारमें आपको [illegible] और सम्पत्ति प्राप्त हुई। श्रीयुत मामराजजीके पश्चात् उनके भाई रामभगतजी और [illegible] इस फर्मके कार्यको बहुत उन्नत किया। सेठ [illegible] बड़े [illegible] थे।

इस प्रकार इस फर्मने श्रीयुत मामराजजी, श्रीयुत रामभगतजी और श्रीयुत [illegible] के [illegible] हैं। सेठ [illegible] स्वर्गवास हो गये हैं। इस खानदानको इस फर्म और [illegible] भी अच्छी [illegible] रही है। आपकी ओरसे चिड़ावेमें एक [illegible] चल रहा है। चिड़ावेके १० [illegible] एक मात्र यही [illegible] है। इस [illegible] के रहने [illegible] भोजनकी भी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त चिड़ावेमें आपकी ओरसे एक [illegible], एक संस्कृत पाठशाला, एक [illegible] हिन्दी-पाठशाला और [illegible] चल रही हैं। हालहीमें यहांपर आपने [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है। यहांपर [illegible]

स्व० सेठ हरनन्दरायजी रुइया (हरनन्दराय सूरजमल)

श्री० सेठ रामनारायणजी रुइया (हरनन्दराय रामनारायण

श्री० सेठ सूरजमलजी रुइया (हरनन्दराय सूरजमल)

कुंवर रामनिवासजी रुइया (हरनन्दराय रामनारायण

१ मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण कालबादेवी रोड-बम्बई २ मेसर्स रामनारायण हरनन्दराय एलफिन्स्टन १४२ एस्प्लेनेड रोड फोर्ट	यहांपर बेङ्किग हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यवसाय होता है यह फर्म यहांके फिनिक्स मिलको मैनेजिंग एजंट तथा ट्रेजरर है। यहां फिनिक्स मिलका आफिस है।

मेसर्स हरनंदराय सूरजमल रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान रामगढ़ है। इस नामसे यह फर्म संवत १८५३ से व्यापार करती है। पहिले इस फर्मपर खेतसीदास हरनंदरायके नामसे व्यापार होता था। इस फर्मके व्यवसायको सेठ सूरजमलजीने विशेष तरक्की दी। आपके पिता सेठ हरनंदरायजीका देहावसान हुए करीब १७'१८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ सूरजमलजीने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालयमें ५० हजार रुपया तथा अग्रवाल महासभामें ५० हजार रुपया प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयमें भी आपने अच्छी रकम दी है आपकी ओरसे कनखल (हरिद्वार) में एक धर्मशाला बनी हुई है; और वहांपर सदाव्रत जारी है। अभीतक उस स्थानपर आप करीब ३॥ लाख रुपया व्ययकर चुके हैं इसके अतिरिक्त आपके बड़े भ्राता सेठ रामनारायणजी तथा आपके साझेमें रामगढ़में एक बोर्डिंग हाउस व एक विद्यालय चल रहा है। जिसमें २० विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं। आपका वहां एक आयुर्वेदिक औषधालय भी चल रहा है। रामगढ़ (गोपालना-जोड़ा) में आपकी १ धर्मशाला बनी हुई है तथा वहां सदाव्रतका प्रबंध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स हरनंदराय सूरजमल बड़ाम काकाड़ कालबादेवी रोड T·A Chhuhara	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा रुईके जत्थेका व्यापार होता है। तथा यहांसे जापानको रुई भेजी जाती है।
२ कोबे—(जापान) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल T. A.Surajmal	यहां कॉटनका व्यवसाय होता है। तथा आपका रुईका जत्था है।
३ बनोदा (हरिपुर-बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।
४ धानोरा (बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां भी आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है।

कॉटन मिल्स

१ अहमदाबाद—न्यू स्वदेशी मिल्स लिमिटेड	इस मिलमें २४०००० स्पेंडिल्स लूम और ७०० लूम्स है इसमें आपका और शिवनारायणजी नेमाणीका साझा है।
२ अकोला—अकोला काटन मिल्स लिमिटेड	यह मिल पहले हुकुमचन्द डालमियां मिल्सके नामसे चलती थी। इसमें २३००० स्पेंडिल्स और ४५० लूम्स हैं। इसके साथ एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

फेक्टरिज

हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जो कारखाने हैं उनके अतिरिक्त हिंगोली (निज़ाम), सेलु (निज़ाम), पानीपत (पंजाब) कानपुर, मोरानीपुर और कुडपहाड़, इन स्थानोंपर आपकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरियां चल रही हैं।

आईल मिल्स

हरपालपुरमें आपकी एक आईल मिल चल रही है।

इन्दौरके सरसेठ हुकुमचन्दजी और बम्बईके सेठ ताराचन्द घनश्यामदासके इस फर्मका बहुत पुराने समयसे व्यापारिक सम्बन्ध चला आया है। हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जितना काम चलता है, उन सबमें सेठ हुकुमचन्दजीका व आपका साझा है। इसके अतिरिक्त कराची डिस्ट्रीक्ट्स, बर्मा आईल कंपनीका कुछ काम आपके और ताराचन्द घनश्यामदासके साझेमें चल रहा है।

मेसर्स मेघजी गिरधरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री छगनलालजी गोधावत हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना छोटी सादड़ीमें हुई। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना संवत् १६७८ में हुई। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ मेघजी हैं तथा इसकी विशेष तरक्की सेठ मेघजीके पौत्र सेठ नाथूलालजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य, दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने छोटी सादड़ीमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गीय नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम नामक एक आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रमके स्थायी प्रबन्धके हेतु आपने सवा लाख रुपयोंका दान कर रक्खा है। सेठ नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १६७६ की ज्येष्ठ वदी १० को हुआ। आपके पुत्र श्री हीरालालजीका देहान्त आपकी मौजूदगीमें हो चुका था। अब इस समय सेठ नाथूलालजीके पौत्र श्रीयुत् छगनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं, युवावस्थामें ही

स्व० हीराचन्द लूनिंदाराम (तीरथदास लूनिंदाराम) बम्बई

स्व० प्रेमचन्द सेवाराम (तीरथदास लनिंदाराम) बंबई

सेठ भोजराज प्रेमचन्द (तीरथदास लुणिंदाराम) बम्बई

सेठ द्वारकादास ज्ञानचन्द (नन्दराम द्वारकादास) बम्बई

३ लाहोर—मेसर्स तीरथदास लुधिंदाराम घासमंडीगेट T. A. Joti swarup
४ मुलतान—मेसर्स तीरथ दास लुधिंदाराम चौकबाजार T. A. Jotiswarup
५ मांटगोमरी (पंजाब) तीरथ दास लुधिंदाराम T. A. Jotiswarup
६ अमृतसर—तीरथदास लुधिंदाराम गुरु बाजार T. A. Jotiswarup
७ भटिंडा—तीरथदास लुधिंदाराम T. A. Jotiswarup
८ कराची—तीरथ दास लुधिंदाराम बन्दर बाजार T. A. Jotiswarup
९ लायलपुर—लुधिंदाराम तेजाराम T. A. Jotiswarup
१०. सरगोधा—लुधिंदाराम तेजाराम T. A. Jotiswarup

इन सब फर्मों पर मेसर्स होयो मेनका फेसा (जापानी फर्म) बाम्बे ब्रदर्स तथा स्टोरेस ए०ट्रेडो०इन कम्पनियोंके लिए गेहूं, रुई आदि माल खरीदने तथा नाणा सट्टाई करनेका काम होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी व कमीशन एजेंसीका काम भी इन दुकानोंपर होता है।

इस फर्मकी काटन तथा व्हीट सीजनमें पंजाब, सिंध तथा यू० पी०में करीब ६० टेम्परेरी ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स नंदराम द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब सेठ द्वारकादास ज्ञानचंद हैं, आपका मूल निवास स्थान शिकारपुरमें (सिंध) है। आप अरोड़ा क्षत्रिय (जेलिंग) जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्म बम्बईमें करीब १८२० वर्षोंसे व मजाबारमें ६० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ द्वारकादासजीको ४।६ वर्ष पूर्व गवर्नमेंटने रायसाहबकी पदवी दी है। आप शिकारपुरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा हिन्दू पंचायतके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—नन्दरामदास ज्ञानचंददास } यहां हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।
२ बम्बई—मेसर्स नन्दरामदास द्वारकादास कल्बी बिल्डिंग धानजी मोहल्ला पो० नं० २ T. A. shining } „

१६

सेठ भगतरामजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

सेठ शिवप्रतापजी (शिवप्रताप रामनारायण) बंबई

सेठ रामनारायणजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई,

कुंवर रामेश्वरदासजी S/o (सेठ शिवप्रतापजी)

३ लाहौर—मेसर्स तीरथदास लुधींदाराम शाहआलमीगेट T. A. Jotiswarup
४ मुलतान—मेसर्स तीरथदास लुधिंदाराम चौकबाजार T. A. Jotiswarup
५ मांटगोमरी (पंजाब) तीरथदास लुधिंदाराम T. A. Jotiswarup
६ अमृतसर—तीरथदास लुधींदाराम गुरु बाजार T. A. Jotiswarup
७ भटिंडा—तीरथदास लुधींदाराम T. A. Jotiswarup
८ करांची—तीरथदास लुधींदाराम बन्दर बाजार T. A. Jotiswarup
९ लायलपुर—लुधींदाराम सेवाराम T. A. Jotiswarup
१० सरगोधा—लुधींदाराम सेवाराम T. A. Jotiswarup

इन सब फर्मों पर मेसर्स टोयो मेनका कैशा (जापानी फर्म) का लठ्ठा मलमल तथा इम्पोर्टेड एक्सपोर्ट कम्पनियोंके लिए गेहूँ रुई आदि माल खरीदने तथा माल भेजनेका काम होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी व कमीशन एजेंसीका काम भी इन दुकानोंपर होता है।

इस फर्मकी काटन तथा शीड़ सीजनमें पंजाब, सिंध तथा यू० पी०में करीब १६ ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स नंदराम द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब सेठ द्वारकादास नन्दराम हैं, आपका मूल निवास स्थान शिकारपुरमें (सिंध) है। आप अरोड़ा (वैश्य) जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्म बम्बईमें करीब १२० वर्षोंसे व मद्रासमें ६० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ द्वारकादासजीको ... वर्ष पूर्व गवर्नमेंटने रायसाहबकी पदवी दी है। आप शिकारपुरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा हिन्दू पंचायतके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स नन्दराम द्वारकादास
२ बम्बई—मेसर्स नन्दराम द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट ...

यहां हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।

। सेठ भगवतीरामजी इस समय वृद्धावस्थाके कारण काशी-निवास कर रहे हैं। आपने
मी २ मास पूर्व अपनी जागीरका मेहल्सरा (जिला हिसार) नामक ग्राम भी राजगढ़की संस्था
के प्रबन्धके लिये ट्रस्टके सुपुर्द किया है। इसके अतिरिक्त इस खानदानने राजगढ़ दि
रोड़में २८ हजार रुपयोंकी सम्पत्ति दी है, तथा ५ हजार रुपया विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय
सेठ भगवतीरामजी टिकमाणीके नामसे स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं।

इस समय इस फर्मका संचालन सेठ शिवप्रतापजी, सेठ रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी
करते हैं। श्री लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी गत वर्ष अग्रवाल महासभाके सहायक मंत्री रह चुके
हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। तथा अग्रवाल समाजके अच्छे कार्यकर्ता हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स भगवतीराम शिवप्रताप १।१ आरमेनियन स्ट्रीट	यहां हुंडी चिट्ठी, गल्ला तथा हेशियनका व्यापार होता है।
२ बम्बई—मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण कालबादेवी रोड T. A. Anandmaya	यहां रुई, सोना, चांदी तथा कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।
३ कानपुर—मेसर्स भगवतीराम रामनारायण	यहां बारदान, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।
४ हिसार—मेसर्स भगवतीराम रामनारायण	यहां रुई, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।
५ ढंढेरी (पंजाब) मेसर्स भगवतीराम रामनारायण	यहां आपकी १ जीनिंग और १ प्रेसिंग फैक्टरी है, तथा रुई गल्ले का व्यापार होता है।
६ फाजिल्का (पंजाब) मेसर्स भगवतीराम रामनारायण	यहां रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।
७ [illegible] मेसर्स भगवतीराम शिवप्रताप	रुई, गल्लेकी आढ़तका काम होता है।
८ राजगढ़ (बीकानेर स्टेट) मेसर्स [illegible]	यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा गल्ला, किराना आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर स्टेट) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १६ वर्ष हुए। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ४० वर्षोंसे काम कर रही है। इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमानमें सेठ ...

स्व० सेठ सतरामसिंह मंगूमल (मंगूमल जेसासिंह)

सेठ लुणिन्दासिंह सतरामसिंह (मंगूमल लुणिन्दासिंह)

स्व० सेठ जेसासिंह सतरामसिंह (मंगूमल जेसासिंह)

सेठ नारायणसिंह सतरामसिंह (मंगूमल हरगोविन्दसिंह)

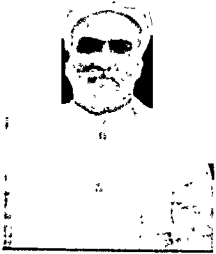

ी० सेठ रामकुमारजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

श्री० सेठ श्रीरामजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—मेसर्स मंगूमल जेसासिंह	यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।
(२) बम्बई—मेसर्स मंगूमल जेसासिंह नागदेवी स्ट्रीट मस्जती बिल्डिंग T. A. Bajaj	यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
(३) मद्रास-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह साहुकार पेठ	बैंकिंग, आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(४) बंगलोर सिटी-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह हूंडा पेठ T.A. Satguroo	बैंकिंग आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(५) त्रिचनापल्ली-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह T.A, satnam	बैंकिंग आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(६) रंगून—मंगूमल जेसासिंह मुगल स्ट्रीट	यहां राइस शिपमेंट राइसपर रुपया देना तथा बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सतरामसिंहजीके तृतीय पुत्र सेठ नारायण सिंहजी हैं, आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपके [illegible] बम्बईके मुल्तानी बैंकरोंमें बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है। इस समय सेठ नारायणसिंहजी के एक पुत्र सेठ हरगोविंद सिंहजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[१] शिकारपुर-मेसर्स सतरामसिंह नारायण सिंह	यहां इस फर्मका हेड आफिस है।
[२] बम्बई-मेसर्स मंगूमल हरगोविन्दसिंह लक्ष्मी बिल्डिंग पारसी मोहल्ला-पो० नं० २ T. A. Narsingh	यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और [illegible]
[३] मद्रास-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह साहुकार पेठ T.A Sahkar	"
[४] कोलम्बो मेसर्स मंगूमल हर-[illegible]	

(३) सनेहीराम जुहारमल एण्ड को०—

(४) अनोपचन्द मगनीराम—इसमें आपका साझा है।

इसके अतिरिक्त आपकी १०। १५ दुकानें पंजाब प्रांतमें हैं जो रुईके दिनोंमें खरीदीका काम करती हैं। इसफर्मके द्वारा कोबी (जापान) तथा यूरोपमें भी रुईका एक्सपोर्ट होता है तथा जापानसे इस फर्मपर डायरेक्ट कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

ओजो बोशिन कम्पनी जापानी फर्मका बम्बईका काम नामक भीयही फर्म करती है।

मेसर्स सदासुख गम्भीरचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसके मालिकोंका निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित अन्यत्र दिया गया है इस फर्मकी बम्बई ब्रांचका पता - कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामनारायणजी रुइया हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर-स्टेट) में है।

सेठ रामनारायणजीको बम्बई आये करीब ४५ वर्ष हुए, इसफर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ हरनन्दरायजीने की थी। पहिले यह फर्म खेवसीराम हरनन्दरायके नामसे व्यवसाय करती थी। सेठ रामनारायणजीके हाथोंमें इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला आपने साबुन जेन्डरिंग वेंचेन्सकी रुआयमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की।

सेठ रामनारायणजी रुइया बड़े योग्य और व्यापारदक्ष पुरुष हैं। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। आप दम्बई बैंक आफ इण्डिया, न्यू इण्डिया इन्शुरेंस कम्पनी, इंडस्ट्रियल कारपोरेशनके डायरेक्टर हैं। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके कई वर्षों तक आप सभापति रह चुके हैं। बम्बईके प्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूलके स्थापकोंमें आपका नाम बहुत अग्रगण्य है। और वर्तमानमें आप उसके सभापति हैं। इसके स्थापनमें आपने बहुत अधिक रकम दान की है। आप यहां अग्रवाल महासभाके दूसरे अधिवेशनके समय आप स्वागतकारिणी समितिके सभापति थे। एवं इस समय आपने इसमें १ लाख रुपयोंका चन्दा दिया था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें आपने १ लाख रुपयोंकी रकम प्रदान की है। आपके इस समय चार पुत्र हैं, जिनके नाम श्री राम निवासजी, श्री मदनमोहनजी, श्रीराधाकृष्णजी एवं श्री सुशीलकुमार हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेठ चेलासिंह सतरामसिंह (मंगूमल चेलासिंह) बम्बई

सेठ [illegible] (मंगूमल [illegible]) बम्बई

[illegible]

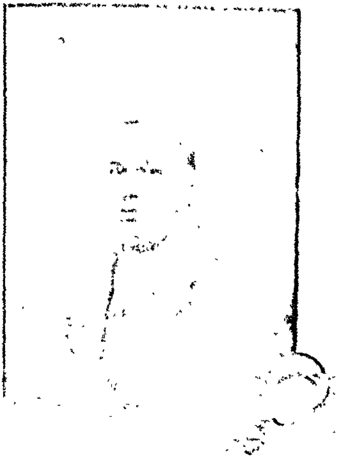

[illegible]

मुलतानी बैंकर्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

मेसर्स तीरथदास लुणींदाराम

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अरोड़ा क्षत्रिय (सिंधी) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ लुणींदारामजीने स्थापित किया था, तथा आरम्भसे ही यह फर्म इसी नामसे व्यापार कर रही है। आपके पश्चात् सेठ खेमारामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और इनके बाद सेठ हीरानंदजी व प्रेमचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रेमचन्दजीके पुत्र सेठ भोजराजजी हैं; इस फर्मकी ओरसे शिकारपुरमें एक हीरानंद आई हास्पिटल चालू है। यहां आंखका इलाज व सब तरहके आपरेशनका अच्छा प्रबंध है। इस कामके लिये दो तीन अमेरिकन डाक्टर भी इलाज करनेके लिये बुलाये जाते हैं। इस हास्पिटलमें बीमारोंके रहने व भोजन आदिका भी प्रबंध है।

आपकी ओरसे शिकारपुरमें स्टेशनके पास १ मुसाफिरखाना और श्री द्वारिकानाथजीमें एक धर्मशाला बनी हुई है। फिलहाल सेठ हीरानंदजीके नामसे एक जनाना अस्पताल बननेवाला है। जेकबाबादमें इस फर्मकी ओरसे एक कुआ बनवाया है जिसमें करीब २५ हजार रुपयोंकी लागत लगी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर-मेसर्स तीरथदास लुणींदाराम — यहां इस फर्मका हेडआफिस है।

२ बम्बई-मेसर्स तीरथदास लुणींदाराम [illegible] [illegible] टेलिफोन नं० [illegible] T. A. [illegible] — यहां बैंकिङ्ग, तथा बैंकोंके साथ हुंडी चिट्ठीका व्यापार व कमीशन-का काम होता है यह फर्म मेसर्स [illegible], [illegible] कम्पनी की आढ़तदार तथा बम्बईके वास्ते सूरतकी [illegible]

मेसर्स खूबचंद दीपचंद *

इस फर्मको १० वर्ष पहिले सेठ दीपचंदजीने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ खूबचंदजीके पुत्र चेतनदासजी, दीपचंदजी और थावरदासजी हैं। आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी बधवा जातिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स खूबचंद चेतनदास	यहां आपका हेड ऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स खूबचंद दीपचंद ७० नागदेवी स्ट्रीट T.A.Deepa	बैङ्किंग और कमीशनका काम होता है।
३ सेलम [मद्रास] मेसर्स खूबचंद दीपचंद	बैङ्किंग और कमीशनका होता है।

पंजाबी बैङ्कर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स किशनचंद वूंटामल

इस फर्मके मालिक डि० अटकके निवासी हैं। आप खुखरायन सेठी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ किशनचंद वूंटामलने सन् १६२४में स्थापित किया था, इस फर्मके वर्किंग पार्टनर सेठ मूलचंदजी, हरीचंदजी, सेठ किशनचंदजी, सेठ परमानन्दजी, सेठ दुरानाशाहजी और सेठ देहराशाहजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—पेशावर—मेसर्स अमीरचंद लखमीचंद अन्दर-शहर T. A. bansriwala	यह हेड ऑफिस है। इसका स्थापन सन् १८८० में हुआ। यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, शकर और जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेझरर और इम्पीरियल बैंकको ट्रेझरर है।
२ करांची—किशनचंद वूंटामल, बम्बई बाजार T. A. mormukat	बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।
३ रावलपिंडी—मेसर्स मूलचंद मेहरचंद	" " "
४ होती (पंजाब) मेसर्स दुनीचंद हरीचंद प्याजागंज	बैङ्कर्स कमीशन एजंट और जमींदार।
५ होती (पंजाब) मेसर्स हरीचंद किशनचंद प्याजागंज	कमीशनका काम होता है।

---

* इस फर्मका परिचय देरीसे मिला, अतएव यथा स्थान नहीं छाप सके।

मेसर्स धनपतमल दीवानचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ ज्वालादासजी तथा इनके छोटे भाई सेठ दीवानचंदजी हैं। इस फर्मको आपने लायलपुरमें करीब ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान लायलपुर (पंजाब) है। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप दोनों भाइयोंके हाथोंसे हुई।

आपकी ओरसे लायलपुरमें एक धनपत-हाईस्कूल चल रहा है। तथा आपने अपनी माता के नामसे लायलपुरमें स्त्रियोंके लिये एक अस्पताल खोल रक्खा है।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं—

१ लायलपुर (पंजाब) मेसर्स धनपतमल दीवानचंद T.A.Dhanpat	यहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा हुंडी चिट्ठी और आड़त का काम होता है।
२ लाला ज्वालादास दीवानचंद लायलपुर पंजाब T.A.Brmani	यहां आपकी एक २ जीनिंग फेक्टरी व प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा रुईका व्यापार होता है। आइल मिल भी जीनिंग फेक्टरीके साथ है। (entries २–५)
३ धनपतमल दीवानचंद जेड़ावाला लायलपुर (पंजाब) T.A.Dhanpat	
४ लायलपुर धनपतमल दीवानचंद-गोदड़वाला (पंजाब) T.A- Dhanpat	
५ धनपतमल ज्वालादास-चारकवाला लायलपुर (पंजाब	
६ दीवानचंद जीवनलाल लायलपुर [पंजाब]	आपकी यहां एक आइल फेक्टरी तथा फ्लोअर मिल है।
७ करांची—धनपतमल दीवानचंद बंदररोड T. A. Dhanpat	यहांपर हुंडी चिट्ठी तथा आड़तका काम होता है।
८ बम्बई—धनपतमल दीवानचंद पायधुनी T. A.Dhanpat	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आड़तका काम होता है।
९ अकालगढ़ [पंजाब] धनपतमल दीवानचंद	यहां आपकी राइस मिल है।
१० मंडी बिलोचन [पंजाब]	यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

इसके अतिरिक्त रामनारायण सत्यपालके नामसे, लाहौर, झरिया, कलकत्ता, रानीगंज, तथा लायलपुरमें कोलका व्यापार होता है। कलकत्तेका तारका पता फेथ (Fath) तथा अन्य स्थानोंपर (Fortune) है।

मेसर्स मंगूमल लुनिंदासिंह

इस फर्मके मालिक सेठ लुनिंदासिंह, सेठ सवरामसिंहजीके पुत्र अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपका कुटुम्ब बम्बईमें १०० वर्षोंसे बैङ्किंग व्यवसाय कर रहा है। वर्तमानमें आपकी फर्मको इस नामसे स्थापित हुए १०।१२ वर्ष हो गये हैं। इस कुटुम्बकी ओरसे शिकारपुरमें एक मुसाफिर खाना बना है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—मेसर्स सवराम-सिंह लुनिंदासिंह	यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।
(२) बम्बई-मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह बारभाई मोहल्ला नं०३ T.A. Amritdhara	यहां बैङ्किंग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है।
(३) मद्रास—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह साहूकार पेठ T.A.Getmalani	यहां बैङ्किंग हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजेंसीका कार्य्य होता है।
(४) बंगलोर-सिटी—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह कुंदा पेठ T.A. Pursotam	यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैङ्किंग बिजिनेस होता है।
(५) रंगून—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह T.A Satguru	यहां राइस शिपमेंट व राइसपर रुपया देना तथा बैङ्किंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स मंगूमल जेसासिंह

इस फर्मके मालिक शिकारपुरके निवासी अरोड़ा क्षत्रिय जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब एक शताब्दि हुई है।

इसके प्रधान पुरुष सेठ सवरामसिंहजीके चार पुत्र सेठ लुनिंदासिंहजी, सेठ जेसासिंहजी, सेठ नारायणसिंहजी और सेठ चेलासिंहजी हुए। कुछ वर्षों पूर्व चारों भाई अलग अलग हो गये और आप दोनोंने सेठ मंगूमलजी (पितामह) के नामसे अपनी २ स्वतंत्र पेढ़ियें स्थापित कीं। इस फर्मके संचालक सेठ जेसासिंहजी थे। आपका देहावसान इसी साल संवत् १९८५ के बैशाखमें हो गया है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ जेसासिंहजीके ४ पुत्र सेठ हासासिंहजी, सेठ आत्मासिंहजी, सेठ रामसिंहजी और सेठ चतुर्भुज दासजी हैं। आपके यहां बहुत पुराने समयसे बैङ्किंग बिजिनेस होता है।

कॉटन मर्चेंगट्स एगड ब्रोकर्स

COTTON MERCHANTS & BROKERS.

कॉटन मर्चेन्ट्स

रुईका इतिहास

भारतमें सूत कातने और कपड़ा बुननेकी कलाका आरम्भ कबसे हुआ, यह निश्चित् रूपसे नहीं कहा जा सकता, परन्तु एक बात जो निश्चित् रूपसे कही जा सकती है वह यह है कि इस कलाके आधार भूत सिद्धान्तोंकी चर्चा स्वयं वेदोंमें आती है; अतः इस कलाका जन्म यहां सहस्रों वर्ष पूर्व हुआ होगा, यह मानना असङ्गत न होगा। यद्यपि पाश्चात्य विद्वानोंके मतके आधारसे भारतकी परम्परा गत परिमाण प्रथापर पक्षपात जनित प्रभाव पड़ता है, फिर भी इसमें तो सन्देह नहीं कि जहां गिलो नामक देशसे लाकर सूती कपड़ोंका प्रथम प्रचार लन्दनमें सन् १५९० ई०में किया गया वहां भारतमें कम-से-कम आजसे तीन हजार वर्ष पहिलेसे सूती कपड़ोंका प्रचार था।

मि० हेनरी ली एफ०एल०एस०ने अपने The vegetable Lamb of Tartary नामक ग्रन्थमें लिखा है कि बहामा (Bahamas)के लोगोंने कोलम्बसको प्रथम बार सूत दिखाया और कोलम्बसने अपने जीवनमें पहिली बार क्यूबाके लोगोंको सूती कपड़े पहिने हुये देखा। इससे सिद्ध होता है कि ब्रिटेनवालोंने कोलम्बसकी यात्राके बाद ही सूतका वर्णन सुना। परन्तु भारतवासी हजरत ईसाके सैकड़ों वर्ष पूर्वसे इसका व्यवहार करते आये हैं। सिकन्दर बादशाहकी चढ़ाईके विवरणमें रुईकी चर्चा बराबर मिलती है। अतः भारतमें इसके व्यवहारकी प्रथाका पाया जाना कुछ नया नहीं है। इसका व्यवसाय भी यदि बहुत पुराना नहीं, तो पुराना अवश्य ही है।

पुराने कागजोंके आधारपर मानना पड़ेगा कि १८ वीं शताब्दीके आरम्भमें यहांसे रुई विदेश नहीं भेजी जाती थी। बम्बईकी भौगोलिक स्थितिने इसे इस व्यवसायका प्रधान केन्द्र बननेमें सबसे अधिक सहायता प्रदान की है। भारतके कपास उत्पन्न करनेवाले केन्द्रोंके समीप होनेके कारण भी इसे अच्छा अवसर मिला है। बम्बईका बन्दर भी सब प्रकारसे जहाजोंके आनेके लिये उपयुक्त है। इन सब कारणोंसे यह स्थान बहुत शीघ्र रुईके व्यवसायका प्रधान केन्द्र बन गया और ज्यों ज्यों समय बीतता गया, त्यों त्यों उन्नति ही करता गया। यहांतक कि आज संसारभरमें यही एक प्रधान बाजार है जहां सबसे अधिक रुईका व्यवसाय होता है।

[illegible]

[illegible] है। [illegible] है। [illegible] है।

[illegible] ([illegible]) [illegible] है। [illegible] और [illegible] है।

[illegible] है। [illegible] और [illegible] है।

[illegible]

[illegible] है। [illegible] और [illegible] है।

[illegible] है। [illegible] और [illegible]।

[illegible] है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] है। [illegible] और [illegible] है।

[illegible] है। [illegible] (१) [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible]। [illegible] और [illegible] है। [illegible]

(५) त्रिचनापल्ली-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह चिगबाजार T.A. Hargobjnd	यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(६) बंगलोर-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह हुब्बपेठ T.A. Omnarayan	„
(७) रंगून—मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह मरचेंट स्ट्रीट T. A. Om Satanam	यहां बैङ्किग हुण्डी चिट्ठी कमीशन तथा राइसका काम होता है।

मेसर्स मंगूमल चेलासिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चेलासिंह सतरामसिंह अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपकी वय अभी ५२।५३ वर्ष की है। आपके खानदानकी ओरसे शिकारपुरमें एक मुसाफिर खाना बना हुआ है। सेठ चेलासिंहजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम सेठ ईश्वरसिंह और लक्ष्मणदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स सतरामसिंह चेलासिंह	यहां हेड आफिस है।
२ बम्बई—मंगूमल चेलासिंह बारभाई मोहल्ला भागदेवी स्ट्रीट पो० नं० ३ T.A- Saguroo	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।
३ मद्रास-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह साहूकार पेठ T. A. Saguroo	„ „ „
४ बंगलोर-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह हलसूर T. A. Parmatama	„ „ „
कालीकट [मलाबार] मेसर्स मंगूमल चेलासिंह गुजराती स्ट्रीट	„ „ „

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डेके बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १६८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १६२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी हैं। यहां सौदा करनेके लिये अच्छा कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गाँठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट् आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठ तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ बैठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ बैठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ौंच तथा ऊमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डेके बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १६२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी हैं। यहां सौदा करनेके लिये अलग कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गाँठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठे तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ बैठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ बैठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ोंच तथा ऊमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डेके बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १६२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी है। यहां सौदा करनेके लिये अलग कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गाँठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट् आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठे तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ येंठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ येंठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ौंच तथा ऊमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

६ पारवोतेरी मंडी (फ्रंटियर) डि० पेशावर हरीचंद किशनचंद	यह गुड़, अनाजकी मंडी है। यहां आपका कमीशनका काम होता है।
७ बन्नू—(फ्रंटियर) अमीरचंद बलमीचंद	यहां पर कमीशनका काम होता है।
कोहाट—(फ्रंटियर) बूटामल परमानन्द T. A. Bhagat	बैङ्कर्स कमीशन एजंट और शुगर मरचेंट।
८ बम्बई—मेसर्स किशनचंद बूटामल T. A. Brijwasi	बैङ्किंग और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स जवाहरसिंह हरनामदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भुरुवा जिला शाहपुर (पंजाब) है। आप अ वंशी जातिके सज्जन हैं। वर्तमानमें आपका निवास सरगोधामें (पंजाब) है। इस फर्मकी स्था सेठ हरनामदासजीने सन् १९२५ में की थी। इनके अतिरिक्त ज्यादा कारबार करने वाले आ बड़े भाई ज्वाहरसिंहजी हैं। आपने सरगोधामें एक बहुत बड़ा कुआं बनवाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ सरगोधा (पंजाब) हेड आफिस T. A. minocha	मेसर्स जवाहरसिंह हरनामदास यहां हुंडी चिट्ठी आढ़ बैंकिंग बिजिनेस होता है।
२ मिर्जावाली मंडी (पंजाब) जवाहरसिंह हरनामदास T. A. minocha	उपरोक्त व्यापार होता है।
३ मियांचन्नू मंडी (पंजाब) T. A. minocha	यहां आपकी काटन जीन और प्रेस फेक्टरी है।
४ चक झुमरा मंडी (पंजाब) हरनामदास गोपालदास	आढ़त और बैंकिंग व्यापार होता है।
५ कराची-बन्दर रोड स्ट्रीट मेसर्स जवाहर सिंह हरनामदास T. A. Dhanwantary	यहां काटन, गेहूं, असली सोना, चान्दीकी आढ़त बैंकिंग बि नेस होता है।

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डेके बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १९२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी है। यहां सौदा करनेके लिये अलग कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गांठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट् आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठे तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ येंठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ येंठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ौंच तथा ऊमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डेके बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १९२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी है। यहां सौदा करनेके लिये अलग कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गाँठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठ तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ इंचतक है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ इंचतक है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ोंच तथा उमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

मेसर्स राय नागरमल गोपीमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान फीरोजपुर है। इस फर्मको बम्बईमें ३० वर्ष पूर्व लाला बेद्धामल जी ने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक लाला बेद्धामल जी के पुत्र लक्ष्मीचनदास जी ए० एम० एस० टी० बी० एस० सी० हैं। आप बहुत शिक्षित एवं सज्जन महानुभाव हैं। यह फर्म यहांकी पंजाबी फर्मोंमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कैथल—मेसर्स बेद्धामल निरंजन दास डि० करनाल [पंजाब] T. A. Pawan	(हेड आफिस) यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और कॉटन बिजिनेस होता है।
२ मथुरा—मेसर्स बेद्धामल निरंजन दास T. A Pawan	यहांपर आपके पंजाबी कारखानेका नाम जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा कॉटन बिजिनेस होता है।
३ फाजिल्का [पंजाब] ,, ,, —	जीन प्रेस फेक्टरी तथा काटन बिजिनेस होता है
४ मोगा [पंजाब] T. A [illegible]	,, ,, ,,
५ फीरोजपुर सिटी—पंजाब। राय नागरमल गोपीमल बड़ाबाजार T. A. Pawan	यह फर्म करीब १००वर्षोंकी पुरानी है। यहां बैङ्किंग व हुंडी चिट्ठीका बिजिनेस होता है।
६ बम्बई—राय नागर मल गोपीमल भोंगा बिल्डिंग—कालबादेवी	यहां बैङ्किंग, आढ़त व रुईका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे राय नागरमल गोपीमलके नामसे फीरोजपुरमें एक बहुत बड़ी धरमशाला बनी हुई है और फीरोजपुरमें आपका लाला हरभगवानदास मेमोरियल हाई स्कूल नामसे एक स्कूल चलता है। आपकी ओरसे लाहोरके डी० ए० वी० कालेजमें कई इमारतें बनी हुई हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि इस खानदानके मालिकोंका शिक्षाकी उन्नतिकी ओर विशेष लक्ष्य रहा है। पंजाबमें यह खानदान मशहूर रईस व्यापारी माना जाता है, एवं बहुत प्रतिष्ठाकी नजरोंसे देखा जाता है।

मेसर्स भगवानदास माधोराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप खत्री जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ भगवानदासजीने करीब २० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ माधोरामजी व आपके पुत्र सेठ नरोत्तमदासजी हैं। नरोत्तमदासजी शिक्षित सज्जन हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—मेसर्स भगवानदास माधोराम, गुरु बाजार T. A Saraswati—यहां बैंकिंग व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स भगवानदास माधोराम, माधोराम बिल्डिंग कालबादेवी— T. A [illegible] यहां भी बैंकिंग बिजिनेस व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

[illegible] बम्बई, [illegible] बम्बई

[illegible] बम्बई

सेठ [illegible] बम्बई

सदस्य थे। उस समय कौन्सिलमें आप ही एक ऐसे सदस्य थे जिन्होंने बम्बईमें आनेवाली रुईकी प्रत्येक गांठपर १) रु० नगद कर लिये जानेका विरोध किया था। आपने नगरके आयात और निर्यातपर कर लगानेके सिद्धान्तकी तीखी तथा जोरदार आलोचना की थी। सन् १९२०में आपने इण्डियन रेलवे कमेटी, सन् १९२२ में इंचकेप कमेटी तथा सन् १९२३ में ऐट ले कमेटीमें सदस्य रहकर भारत हित रक्षणके लिये अच्छी चेष्टा की। आप इम्पीरियल बैंकके लोकलबोर्डके सदस्य हैं। इसके प्रमुख होनेके नाते आप इम्पीरियल बैंकके गवर्नर भी हैं। आप यहांकी लगभग ३० बैंकों, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों तथा इन्स्यूरेंस कम्पनियोंके सदस्य तथा डायरेक्टर भी हैं। सन् १९१५ से आप बम्बई पोर्ट ट्रस्टके ट्रस्टी हैं। तथा सन् १९२७ में इण्डियन चेम्बर आफ कामर्सके फिडरेशनके उप-प्रमुख नियुक्त किये गये थे। सन १९२६ में आपने रायल करेंसी कमीशनमें एक भारतीय सदस्यके रूपमें काम किया और भारतकी वास्तविक स्वार्थकी दृष्टिसे उसके स्वत्वके लिये अपना विरुद्ध मत निडर भावसे व्यक्त कर १६ पेंसकी हुण्डीकी दरके लिये देश व्यापी आन्दोलन खड़ाकर यहांकी प्रान्तीय कौन्सिलमें सन् १९१६ में सरकारी ननोनीत सदस्यके रूपसे काम किया। आप सन् १९२० में यहांके शरीफ भी रहे। सन १९११-१२ के अकालके समय प्रपीड़ितोंको सहाय पहुंचानेमें प्रधान भाग लेनेके कारण सरकारने आपको कैसरे-हिन्दका स्वर्णपदक प्रदान किया। योरोपीय युद्धके सम्बन्धमें चलाये गये वार रिलीफ फण्डमें काम करनेके उपलक्षमें सरकारने आपको एम० बी० ई० की उपाधि दी। इसी प्रकार अकाल प्रपीड़ितोंको सहाय पहुचानेका आपने सन १९१८-१९ में कार्य किया और सरकारने आपकी सेवाको सी० आई० ई० की प्रतिष्ठासे अलंकृत किया। सन १९२३ में आप सरके सम्मानसे सम्मानित किये गये। इस समय आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरकी ओरसे केन्द्रीय सरकारकी लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके सदस्य हैं।

आप यहांके वालकेश्वर पहाड़के मलाबार कैसल रिजरोडपर रहते हैं और आपके आफिसका पता नारायणदास राजाराम कम्पनी है।

सेठ मेघजी भाई थोवण जे० पी०

सेठ मेघजी भाईका मूल निवास स्थान कच्छ (भुज) है। आप ओसवाल जैन स्थानकवासी कच्छी गुर्जर सज्जन हैं। आपके पिता श्री सेठ थोवन भाईकी आर्थिक परिस्थिति बहुत साधारण थी। प्रारंभिक गुजराती शिक्षा प्राप्त करनेके बाद सेठ मेघजी भाई ११ वर्षकी अवस्थामें बम्बई आये। दो तीन वर्षतक मामूली उम्मेदवारीका काम करनेके बाद आप अपने बड़े भाईके साथ गोड कम्पनीमें रुईकी दलालो कमीशन एवं मुकादमोके व्यवसायमें भागीदारके रूपमें काम करने लगे उस समय

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहाँसे रुई विदेश गयी थी या [illegible]
इस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् [illegible]
में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०० पौंड वजन [illegible]
रुईकी मंगाई, परन्तु लूटने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२९से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके [illegible]
सट्टेबाजोंसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैंडके कारखानोंमें [illegible]
खपनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैंड गयी। अमेरिकाके [illegible]
और बम्बईको अवसर मिलता हो गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकाके [illegible]
युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय खूब [illegible]
गया। इस समय रुईके निर्यातका औसत २१५८२८७३ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके समाप्त [illegible]
बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८९०के बादसे आजतक यह व्यापार
उन्नति ही करता आ रहा है।

इस ओर पुराने देशी [illegible] इतिहासके आधारपर पता चलता है कि भारतमें यहां रुईका बाजार
वर्तमान [illegible] के समीप लगता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकों [illegible]
[illegible] सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस
समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे [illegible]
[illegible] भी लाई जाता था, यह सरलता पूर्वक बाजारमें लाया जा सकता था और विदेशोंके
[illegible] के लिये [illegible] जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि यह स्थान
[illegible] उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि [illegible]
[illegible] बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई [illegible] और मनुष्यसे दूर [illegible]
[illegible] आगे आयगी और वैसी हालतमें वर्तमान कुलाबेमें भी यह बाजार स्थान
बदल।

[illegible] दूर नहीं आयी। एक समय वह भी आया, जब [illegible] मजदूर [illegible]
[illegible] और [illegible] (रिक्लेमेशन) के कानूनोंको आवश्यकताने रुईके [illegible]
[illegible] काम कर दिया। बहुत [illegible] पहाड़ [illegible] एकड़ भूमिपर [illegible]
हुआ और इस [illegible] कॉटनग्रीन नामक रुईका बड़ा बाजार बनाया गया। आजकल यहीं
[illegible] हो गया है।

श्री० सेठ शांतिदास आसकरण शाह जे० पी० बम्बई

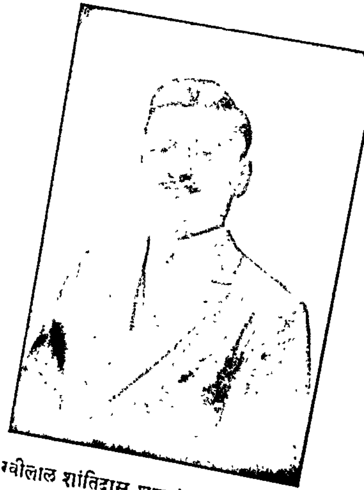

सेठ रवीलाल शांतिदास शाह (शांति भुवन) बम्बई

वीरचन्द भाई मेघजी भाई बम्बई

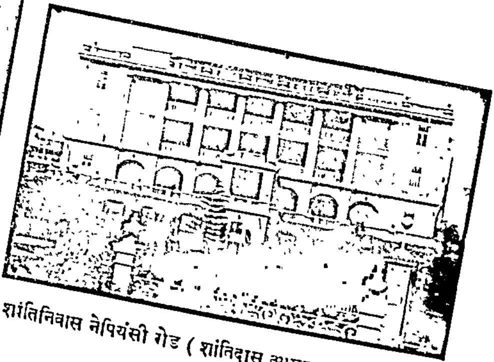

शांतिनिवास नेपियंसी रोड (शांतिदास आसकरण शाह) बम्बई

सन् १७८२ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७[illegible] ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी रुईकी मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंके सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें पेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१५९२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८६०के बादसे आजतक वह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि आरम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने लगता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकोंके कष्टोंके कारण सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर सुन्दर विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गोदीसे छोटे छोटे स्टीमरोंपर भी माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिना किसी कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि यह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेल्वेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेलवे-स्टेशनपर उतारी जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार हटाना पड़ेगा।

[illegible] होते देर नहीं लगी। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने इससे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र तटपर ५०१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानमें वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहीं रुईका व्यापार होता है।

पश्चात कुछ समय गीज कंपनीमें काम करते हुए आपने बहुत अधिक सम्पत्तिप्राप्त की। उस समय कुलाबाके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें आपकी गिनती थी।

संवत् १९७४ में सेठ शांतिदासजीने इस कंपनीसे अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाय स्थापित किया। इस समय आप चांदी सोना रुई और शेअरका बहुत बड़े स्केलपर व्यवसाय करते है।

सेठ शांतिदासजी, देशभक्त गोखले द्वारा संस्थापित डेकन एज्यूकेशन सोसाइटी और हिन्दू-जीम खानाके पेट्रन हैं। आप जैन एसोसिएशन आफ इण्डियाके प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आप कई प्रतिष्ठित जैन संस्थाओंके सहायक हैं। आपके एवं सेठ मेघजी भाई थोबणके परिश्रम से महियर स्टेटमें हर साल हजारों जीवोंका होनेवाला वध बंद हुआ है। उस कार्य्यके लिये आप दोनोंने १५००१ देकर महियर स्टेटमें एक अस्पताल बनवा दिया है। मांडवीमें विद्यार्थियोंके शिक्षण-के लिये आपकी ओर स्कालरशिपका भी प्रबंध है।

संवत् १९६८ के अकालके समय १५००१) आपने वहांकी पिञ्जरापोलको दान दिये थे। एवं उस समय हमेशा १०० आदमियोंको भोजन (खीचड़ी) देनेकी व्यवस्था भी आपने करवाई थी। इसी प्रकार १९७७।७८ में अहमदनगरमें दुष्कालके समय १००० मनुष्योंको प्रतिदिन भोजन देनेका प्रबंध आपकी ओरसे किया गया था। आपने ५० हजार रुपया मालवीयजीको हिन्दू युनिवर्सिटीके लिये दिये हैं।

सेठ शांतिदासजीके प्रति जनताका विशेष प्रेम है। आप सन् १९२० में गिरगांव इलाकेकी ओरसे म्युनिसिपेलेटी मेम्बर निर्वाचित हुए थे। सन १९८८ में आपको गवर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। यूरोपीय महासमरके समय आपने एक वर्षमें करीब २॥ लाख रुपयोंके लोन खरीदे थे। प्रिन्स आफ वेल्सके भारत आगमनके समय आप पूवर फीडिंग कमिटीके प्रेसिडेण्ट थे। उस समय आपने उसमें २५०००) भी दिये थे।

इस समय आप न्यू ग्रेट मिल, कोहिनूरमिल, मॉडल मिल नागपुर, ज्युपिटल जनरल इंश्युरेन्स कंपनीके डायरेक्टर और मद्रास युनाइटेड प्रेसके प्रेसिडेंट हैं। आपका कई राजा महाराजाओंसे अच्छा परिचय है। इस समय आप विलायत यात्राके लिये गये हुए हैं।

आप बम्बईके नेशनलपेन्ट एण्ड वार्निस कंपनी नामक रंगके कारखानेमें एलन मद्र्सके साथ भागीदार हैं।

आपका निवासस्थान है नेपियंसी रोड, शांति-निवास टे० नं० ४०२८८ है।

इस समय आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ रवीलालजी है। आप भी अपने पिताश्री के साथ व्यवसायमें भाग लेते हैं। वर्त्तमानमें आपकी उम्र २७ वर्षकी है।

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७९३ ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी रुई मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें प्रवेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता हो गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१५८९८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८६०के बादसे आजतक वह क्रमशः उन्नति ही करता जा रहा है।

इस ओर पुराने ऐतिहासिक इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकोंको बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटे छोटे जहाजोंद्वारा जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और रेलोंसे आनेके बाद बिना कठिनाईके सड़कोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि यह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलोंके लाइनोंका विस्तार होने से यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेलोंसे आयेगी और समुद्रसे दूर रेलोंके माल-स्टेशनपर आती जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार हटाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने मजदूर सब भार लिया और ग्रेनाइट कॉटनग्रीन (शिवड़ी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र पाटकर ५०१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर ग्रेनाइट कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहीं रुईका व्यापार होता है।

सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार, बम्बई

सेठ रामगोपालजी (रामगोपाल जगन्नाथ), बम्बई

सेठ [illegible]जी (आनन्दीलाल [illegible]

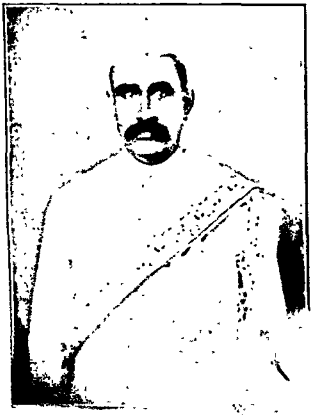

सेठ रामजीमलजी

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७९० ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी रुई मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंके सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें प्रवेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय खूब बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१५८२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८६०के बादसे आजतक यह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकोंको बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटे २ डोंगियोंपर जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिकी हो जानेके बाद बिना कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि यह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेलवेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेलवेके माल—स्टेशनपर उतारी जायगी और ऐसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार उठाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र पाटकर ५७१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहींसे रुईका व्यापार होता है।

न्यू काटन डिपो सिवरीका टेलीफोन नं ४०५७३ है। इसके हिस्सेदार किशनचन्द देवचन्द, नंदीलाल किशनचन्द और तुलसीदास किशनचन्द हैं।

केशवदास गोकुलदास एण्ड को०—इसका आफिस १८ चर्चगेट स्ट्रीटमें हैं।

खीमजी विश्राम एण्ड को०—इसका आफिस इस्माईल बिल्डिङ्ग, हार्नबीरोड, फोर्टमें है। यह कम्पनी सन् १८८५में स्थापित हुई थी। इसकी शाखाएं ५४ कम्बरलैंड स्ट्रीट मेनचेस्टर, इर्विंग चेम्बर्स फाशा कालीस्ट्रीट लिवरपुल और करांचीमें हैं। इसका तारका पता मगनोलिया है। टेलीफोन नं० २४८४० है। तथा न्यू काटन डिपो सिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०४३४ है। इसके यहां कोड ए० बी० सी० ५ वेस्टलेका उपयोग होता है। इसके हिस्सेदार भूलजी जीवनदास, काकूजीवनदास, जमनादास रामदास, वीरजी नंदाजी, हरगोविन्ददास रामनभाई, त्रिभुवनदास और हरिजीवनदास हैं। यह कंपनी अपना माल यूरोप, अमेरिका आदि देशोंमें भेजती है।

गोकुलदास एण्ड को०—इसका आफिस १४ हमामस्ट्रीटमें है। इसकी शाखाएं कोबो और एन्टवर्पमें हैं इसका तारका पता "हीरो" है। इसमें ए० बी० सी० प्रायवेटकी ५ व ६कोडका उपयोग होता है। इस कंपनीका टेलीफोन नं२२१६३ है। सिवरीका टे०नं० ४०५७१ है। यह कंपनी अपना माल इंग्लैन्ड, जापान आदि स्थानोंमें भेजती है। इसमें वल्लभदास गोकुलदास दोसा, जमुनादास गोकुलदास दोसा, और लक्ष्मीदास गोकुलदास दोसा भागीदार हैं।

गोवर्धन एण्ड सन्स—इसका ऑफिस डोंगरीस्ट्रीटमें है। इसका टेलीफोनका नम्बर है २५१२६ हैं।

बापूभाई अम्बालाल एण्ड को—इस कम्पनीकाआफिस ४२ अपोलोस्ट्रीट फोर्टमें है। यहांका तारका पता एक्सटेन्शन (Extension) तथा टे० नं० २२४६७ है। यह कम्पनी बेंटलीके ए० बी० सी०के ६वें संस्करणके कोडका उपयोग करती है, तथा प्रायवेट कोडका व्यवहार भी होता है। इस कंपनीकी लंदन एजेन्सीका पता बापूभाई एण्ड अम्बालाल ५३ न्यू ब्रांडस्ट्रीट लन्दन ई०सी० २ है। इस कम्पनीके बड़े मालिक हैं सेठ अम्बालाल दोसा भाई। यह कम्पनी अफ्रिकासे रुई यहां मंगवाती है और यहांसे विलायत भेजती है।

भाईदासकरसनदास एण्ड को०—इसका आफिस ३१० एलफिन्स्टन सरकल, फोर्ट बम्बईमें है। इसका टेलीफोन नं० २०५७३ है। इसका गोदाम न्यू काटन डिपो शिवरीमें है। गोदामका टे० नं० ४०५५४ है। इसका कालबादेवीरोड ३६३।६५ पर रुईको दलालीका काम होता है। इस आफिसका टे०नं०।२४८३५ है। इस कंपनीकी।स्थापना सन्१९०५ई०में हुई थी। इसकी शाखाएं करांची, भड़ोंच, यवतमाल और सांगलीमें हैं। इसके सेलिंग एजेंट घेट, हावरे, ब्रीमेन, बार्सिलोना, मिलन, वियाना, एनवेट और लिवरपुलमें है; इसका तारका पता केपिटल

सन् १७८२ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७९३ ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनको रुईकी मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लेण्डके कारखानोंमें जोड़ करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि अब और बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१५८२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८९०के बादसे आजतक वह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकोंको बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटी डोंगियोंपर जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिकी हो जानेके बाद बिना कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि वह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेलवेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेलका माल—स्टेशनपर उतारी जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार उठाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र पाटकर ५७१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहीं रुईका व्यापार होता है।

तारका पता—स्टार (Star) है, टेलीफोनका नम्बर २००३६ है । इसके लंदन और मैनचेस्टरके प्रतिनिधियोंके नाम क्रमशः जान इलियट एण्ड सन्स, मझालेन हाउस ई० सी० ४ तथा जेम्स ग्रीव्ज एण्ड को० हैं ।

कसेतजी पोननजी एण्ड को०—इसका आफ़िस बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८९८ में हुई थी। यह कंपनी स्थानीय ईस्ट इंडिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसके एजेंट हैं कावसजी पाउनजी एण्ड को० । इसका व्यवसाय हांगकांग, शंघाई, कोबी और ओसाकामें होता है। इसके मालिक सेठ बी० सी० सेठना, पी० पी० सेठना, बी० सी० पी० सेठना, और सी० पी० सेठना हैं। इस कंपनीमें भारतके पूर्वीय भागकी रुईका व्यवसाय होता है। इसका टे० नं० २०६३९ है।

रपानी (के० एच०) एण्ड को०—इसका आफ़िस ७।११ एल्फिंस्टन सर्कल फोर्टमें है। यह कंपनी अपना माल यूरप, चीन, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसका टे० फो० २३३०६ है। इसके यहां बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है।

टाटा (आर० डी०) एण्ड को०—इसका आफ़िस बम्बई हाउस नं० २४ ब्रूसस्ट्रीट, फोर्टमें है। इसका स्थापन सन् १८७०में हुआ है। इसकी शाखाएं शंघाई, ओसाका, रंगून, लिवरपुल और यार्कमें है। इसका तारका पता "फ्लूटरनोटी" है। इस कंपनीमें बेंटले, सेवर्स वेस्टर्न यूनियन और प्रायव्हेट ए० बी० सी० ए० आई० का कोड़ उपयोग होता है। इसके संचालक आर० डी० टाटा हैं। इसके डायरेक्टर बी० एफ० मदन, एन० डी० टाटा, बी० ए० बिलीमोरिया, और बी० जी० पोद्दार हैं। इसके सेक्रेटरी एम० डी० दाजी हैं।

नरोत्तम मानिकजी पंधिवाला—इनका आफ़िस ७८ बाजारगेट स्ट्रीटमें है। यहांका टेलीफोन नं० २३२९९ है।

पेटेक कॉटन एण्ड को० लि०—इस कंपनीका पता गुलिस्तां (gulestan) है, नेपियर रोड फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ६९९ है। इसमें वेस्टलेमेअर ४०, ५० कोडका उपयोग होता है। इसके संचालक ए० जी० रेमन्ड और पेस्तनजी डी० पटेल हैं। इसका न्यूकॉटन डिपो शिवड़ीके टेलीफोनका नम्बर ४०५७१ है। इस कंपनी द्वारा यूरोप और जापानमें माल सप्लाय होता है।

पशारी (वाल्टर) एण्ड को०—इसका आफ़िस १९ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह अपना माल यूरोपमें भेजती है। इसका टे० नं० २१२११ है। इसका तारका पता—फोलियेज है।

फतहभजी एण्ड सन्स—इसका आफ़िस १६ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह कंपनी सन् १८८० में स्थापित हुई थी। इसकी शाखा कोबी (जापान) में है। इसका तारका पता—फ्लेड्-

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७९३ ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी रुईकी मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंके सट्टेबाजोंसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें प्रवेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१६८२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८९०के बादसे आजतक यह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ोंसे किलेके नागरिकोंको बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटी छोटी डोंगियोंपर जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिक्री हो जानेके बाद बिना कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि यह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेलवेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेलवेका माल—स्टेशनपर उतारी जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार उठाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत चौड़ा समुद्र पाटकर ५७१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहीं रुईका व्यापार होता है।

हबीब एण्ड सन्स—इस कम्पनीका ऑफिस हनुमान बिल्डिंग तांबा कांटा पायधुनीमें है।

हाजीभाई लालजी—(जे० एन० एण्डको०)—इस कम्पनीका ऑफिस ३१४ हार्नबी रोड फ्रोर्ट में है। यूरोपमें इसका सम्बन्ध ल्यूक थॉमसन एण्डको० लिमिटेड १३८ लीडनहाल स्ट्रीट लन्दन इ० सी० ३से है इसका तारका पता "हेण्डसम" है। इस कम्पनीमें वेस्टलेके ए०बी०सी०कोडका उपयोग होता है। इसका टेलीफोन नं० २०३४२ है। सेम्यूएल स्ट्रीट में इसका टेलीफोन नं० २०५८३ है। इसके सञ्चालक ओ०महम्मद हाजीभाई, बी हाजी भाई, और सुल्तान भाई हाजी भाई हैं।

विदेशी एक्सपोर्टर्स

एवार्ट लेथन एण्ड को०—यह डेमरिल्ड लेन (बम्बई) में है इसका पो० बॉ० नं०५० है। इसकी करांची बैंकाक और सिङ्गापुरमें भी शाखाएं हैं। पत्र व्यवहार लन्दनके नीचे लिखे पतेके अनुसार होता है। एंग्लो स्याम कौरपोरेशन लि०—५ से० हेलेन पैलेस बिशोप गेट ई० सी० ३ टेलीफोन न०२००५ है।

इजिप्शियन काटन को० लि०—मैकमिलन बिल्डिङ्ग हॉर्नबी रोड फोर्टमें है। इसका टेलीफोन न० २२६२८ है।

जापान ट्रेडिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि०—२४ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ४०१ है। यह सन १८६२में स्थापित हुई थी। इसका हेड आफिस ओसाका (जापान) है। इसके प्रतिनिधि रेलवेपुरा पोस्ट अहमदाबादमें हैं। तारका पता "वौविन वर्क"। कोड वेस्टर्न यूनियन ए०बी० सी० ५ वेन्टलेज प्राइवेट है। इसका हर किस्मका माल जापानमें जाता है टेलीफोन नं० २२५७५ है। टी० ओगावा, के०ओगावा, और के०मुडा इसके सञ्चालक हैं।

गोसीओ लिमिटेड—अहमदाबाद हाउस वीटेट रोड बेलार्ड स्टेटमें है। तारका पता गोसीओ, टूकानो पेनेरसी, चोवेनो है। कोड—ए० बी० सी० ५ वेन्टले स्ट्रीट वेस्टर्न यूनियन है। टेली-फोन २१०६०, २१०११, २१२४६ है। इसका मैनेजिंग डाइरेक्टर डा० जी० गौरियो है।

गोसो काबूशी-कैशा—अलबर्ट बील्ड हॉर्नबीरोड फोर्टमें है। इसका हेड आफिस ओसाका जापान है। टेलीफोन २१०८४, ४१५५५ (न्यू काटन डीपो शिवरी) ४१२७८ (गोडाउन, काटन डीपो शिवरी है।

ग्रहम (इण्डि० ए०) एण्ड को०—फोर्टमें है। पो० बा० नं० १० है। इसके एजेंट ग्लासगो, लिवरपूल, मैन्चेस्टर, लन्दन, ओपोर्टो, मद्रास, कलकत्ता, करांची और रंगून है। इसका टेलीफोन नं० २२६८५ है।

नामक प्रसिद्ध व्यवसायी संस्थाओंकी सदस्य हैं। इसके यहां कपास और रुईका काम होता है। यह तैयार और वायदे दोनों प्रकारके सौदेका व्यवसाय करती है। यह भारतकी सभी प्रकारकी रुई तथा पूर्व अफरिकाकी रुईका व्यवसाय करती है। इसके सिवाय भारत तथा पूर्व अफरीकाकी रुईको इङ्गलेंएड, फ्रान्स, जर्मनी, इटली, स्पेन आदि दूर देशोंको थोकबन्द स्वयं भेजती है। इसकी रुईकी खरीद पूर्व अफ्रिकाके बाजारोंमें भी होती है। इस कम्पनीका स्थान भारतकी प्रतिष्ठित व्यवसायी कम्पनियोंमें माना जाता है। इस कम्पनीकी इतनी उन्नति में इसके मालिकोंकी व्यवसाय सिद्ध बुद्धि तथा उनकी व्यवसाय कुशलतत्परताका सबसे अधिक हाथ है। उन्हींके लोकप्रिय व्यवहारके कारण यह कम्पनी आज अपने गौरवको अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। इस कम्पनीके मालिकोंमें सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के. टी. सी. आई. ई. सी. बी. ई. एम. एल. ए., वरजीवनदास मोतीलाल बी. ए. तथा रमनलाल गोकुलदास सरैया बी. ए. बी. एस. सी. हैं।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के०टी०, सी० आई ई० सी० बी० ई० बम्बईके अग्रगण्य तथा प्रतिष्ठित नागरिक एवं सफल व्यवसायी हैं। आपने केवल बम्बई नगरके ही व्यवसाय एवं औद्योगिक स्वरूपको समुज्वल बनानेमें अनुकरणीय भाग नहीं लिया, वरन् समस्त भारतके व्यवसायको बढ़ाने तथा भारतीय कला कौशल एवं उद्योग धन्धोंकी उन्नतिमें आदर्श कार्यकर दिखाया है। इस नाते आप केवल बम्बईके ही नहीं, वरन् समस्त भारतके एक प्रभावशाली नेता हैं। आपका जन्म सन् १८७९ ई० में हुआ था। आपने बम्बई नगरमें ही शिक्षा पाई। स्थानीय एलफिन्स्टन कालेजसे ग्रेज्युएट हो, आपने व्यवसायी क्षेत्रमें पदार्पण किया और थोड़े समयमें ही नारायणदास राजाराम कम्पनीके प्रधान हिस्सेदार हो गये। यहांके प्रभावशाली व्यवसायी संघ इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर के आप संस्थापकोंमेंसे हैं। आप सन् १९२४ तथा २६ में इस संस्थाके प्रमुख रहे; तथा इन्हीं वर्षोंमें इस संस्थाकी ओरसे आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके सदस्य भी रहे। आपने केन्द्रीय सरकारके असहनीय व्यवसायको कम करानेके लिये भारतीय तथा योरोपियन व्यवसायियोंका एक संयुक्त शिष्ट मण्डल स्थापित कर इस सम्बन्धमें सन् १९२२ में वायसरायसे भेंट की। आप यहांकी काटन एक्सचेंज तथा कॉटन ऐसोसिएशनके कुशल एवं जीवित कार्यकर्ता हैं, तथा यहांकी ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशनके आजकल आप प्रमुख हैं। आप रुईमें अन्य वस्तुओंकी मिलावटके कट्टर विरोधी हैं। विदेश भेजनेमें अधिक सुविधा उत्पन्न करानेके हेतु आपने कपासकी विशुद्ध उन्नतिके लिये अटूट परिश्रम किया है। आपके ही उद्योगसे सन् १९२२ में भारत सरकारने कॉटन ट्रान्सपोर्ट ऐक्ट नामक कानूनकी रचनाकी। आप इण्डियन सेन्ट्रल कॉटन कमेटीके सीनियर सदस्य रहे हैं तथा इन्दौरकी प्लान्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामक कपासके पौधोंके सम्बन्धकी खोज करनेवाली संस्थाके संचालक मण्डलके सदस्य हैं। बम्बईकी प्रान्तीय कौंसिलमें योरोपीय युद्धके पूर्व आप

स्व० सेठ गुरमुखरायजी, बम्बई

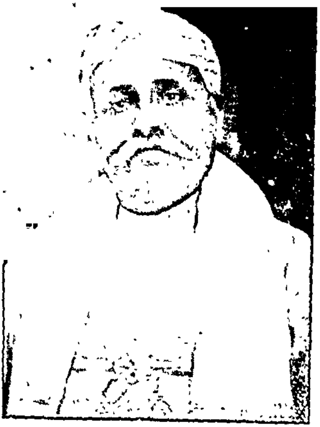

श्री सेठ सुखानन्दजी, बम्बई

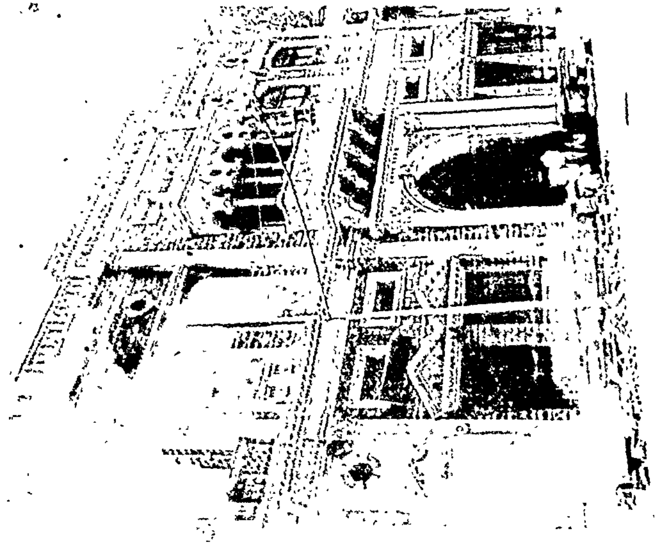

सुखानन्द धर्मशाला, बम्बई

रूईका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय ब्याव (राजपूताना) में दिया गया है।

मेसर्स दौलतमल कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक बूंदीके निवासी हैं। बम्बई दुकानका पता कालबादेवी, दौलत बिल्डिंगमें है। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई और ऊनका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय बूंदीमें दिया गया है।

मेसर्स फूलचंद मोहनलाल

इस फर्मके मालिक हाथरस (यू० पी०) निवासी मारवाड़ी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह फर्म कलकत्तेमें ८५ वर्षोंसे एवं कानपुरमें करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ फूलचंदजीके द्वारा यह फर्म विशेष तरक्कीपर पहुंची। आपका देहावसान संवत् १९५६ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे हाथरसमें फूलचंद एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल चल रहा है, जिसमें करीब ४०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं तथा वहां आपकी चिरंजीलाल बागला डिसपेन्सरी भी चल रही है। इसके अतिरिक्त कर्णवास, रुद्र प्रयाग आदि स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं बनी हैं एवं अन्नक्षेत्र चल रहे हैं।

सेठ फूलचंदजीके पश्चात् इस फर्मका काम सेठ शिवसुखरायजीने सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानका संचालन रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी और आपके भतीजे सेठ प्यारेलालजी (शिवसुखरायजी के पुत्र) करते हैं। रा० ब० चिरंजीलालजी हाथरसमें आनरेरी मजिस्ट्रेट और वहांके डिस्ट्रिक्टबोर्ड एवं म्युनिसिपैलेटीके चेयरमैन हैं। सेठ प्यारेलालजी बम्बई फर्मका काम सम्हालते हैं। बम्बई, हाथरस, कलकत्ता, बुलन्दशहर आदि स्थानोंपर इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—(हेड आफिस) मेसर्स मटरूमल शिवसुखराय—इस फर्मपर सराफी जमींदारी और रुई, गल्ला, सूत आदिकी आढ़तका काम होता है। इसके अतिरिक्त हाथरसमें २।३ दूकानें भिन्न २ नामोंसे और हैं जिनपर आढ़त, गल्ला, किराना, दाल आदिका व्यवसाय होता है। यहां आपके अधिकारमें फूलचंद बागला जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी और यू० पी० इञ्जिनियरिंग वर्क्स नामका धातुका कारखाना है।

गील साहब भी मुफस्सिल कम्पनीमें काम करते थे। आपके भाइयोंने उन्हें उस कामसे छुड़ाकर रूईका व्यापार सिखाया, तथा उस समयसे पचास वर्ष हुए आप सब भागीदारके रूपमें काम करते हैं आपका व्यापार दिनोंदिन तरक्की करता गया। आप मद्रासकी चार पांच तथा बम्बईकी तीन चार मिलोंको रुई सप्लाई करते हैं तथा यहांसे लिवरपुलमें भी रुईका एक्सपोर्ट करते हैं।

सेठ मेघजी भाई ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपको गवर्नमेंटने सन १९२१ में जे० पी० की उपाधि दी है। मढ़ियर राज्यमें हरसाल होनेवाले हजारों जीवोंका वध आपहीके परिश्रमसे बन्द हुआ था। इस कार्यके लिये आपने एवं सेठ शान्तिदास आसकरण शाह दोनों सज्जनोंने १५००१) देकर मढ़ियरमें एक अस्पताल बनवा दिया है तथा भविष्यमें इस प्रकारकी जीव हिंसा न होने देनेके लिये उक्त स्टेटसे परवाना लिखा लिया है। कच्छ मांडवीमें आपने एक स्वजाति सहायक फण्ड और एक जैन संस्कृत पाठशाला स्थापित की है। आपकी ओरसे मांडवी हाई स्कूलमें जैन विद्यार्थियोंके लिये फोर्थ क्लाससे मैट्रिक तक स्कॉलरशिपका भी प्रबन्ध है। इसप्रकार आपने अभीतक करीब ३॥ लाख रुपयोंका दान किया है। बम्बई स्थानवासी जैन सकल संघके आप २२।२३ वर्षोंसे सभापति हैं, स्था० जै० कान्फ्रेंसके मलकापुर अधिवेशनके समय आप प्रमुख तथा बम्बई अधिवेशनके समय आप स्वागत कारिणीके प्रमुख रह चुके हैं।

सेठ मेघजीभाईके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ वीरचन्द भाई है। आप भी व्यवसायमें सहयोग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

१ मेसर्स गील एण्ड कम्पनी बेलार्ड पियर पोर्ट बम्बई T. A. Gilco	इस कम्पनीके द्वारा मिलोंको रुई सप्लाई करने तथा एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है, इसमें आपका साझा है।
२ मेसर्स गीलएण्ड कम्पनी—करांची	यहां भी उपरोक्त काम होता है इस कम्पनीमें आपका पर्सनल साझा है।

मेसर्स शान्तिदास आशकरण शाह जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ शांतिदास आसकरण शाह जे० पी० हैं। आप कच्छ मांडवीके निवासी कच्छी जैन ओसवाल (स्थानकवासी) सज्जन हैं।

सेठ शांतिदासजीके पिताश्री सम्वत् १९२२ में बंबई आये थे प्रारम्भमें आप निकल कंपनीकी दलालीका काम करते थे। उस समय रुईके व्यवसायमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। अन्तिम अवस्थामें आप अपने वतनमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका देहावसान संवत् १९५५ में हुआ।

सेठ शांतिदासजी संवत् १९६७ में बंबई आये। यहां आरम्भमें आपने भाटिया समाजके प्रतिष्ठित व्यक्ति रा० ब० सेठ बसन सेमजीके हाथके नीचे व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की

मेसर्स रामजीमल बाबूलाल

इस फर्मके संचालक हाथरसके रहनेवाले हैं। आप अग्रवाल (वैश्य) जातिके हैं। इस फर्मको करीब १५ वर्ष पूर्व सेठ रामजीमलजीने स्थापित किया था, तथा श्रीबाबूलालजीने इसे विशेष उत्तेजन पहुंचाया। सेठ रामजीमलजीकी वय वर्तमानमें ५० वर्ष की है हाथरसमें यह फर्म बहुत पुरानी मानी जाती है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स रामजीमल बाबूलाल, हाथरस—यहां गल्ला व रुईका घरू व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई - मेसर्स रामजीमल बाबूलाल अलसीका पाटिया—इस फर्मपर रुई एवं अलसी गेहूं चांदी सोनाके हाजर तथा वायदेका व्यापार होता है।

(३) कानपुर—मेसर्स बाबूलाल हरीशंकर—यहां हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका व्यापार होता है।

मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ

इस फर्मके सञ्चालक नवलगढ़ (शेखावाटी)के निवासी खंडेलवाल जातिके (वैष्णव) हैं। इस फर्मको करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ रामगोपालजीने स्थापित किया, तथा इसे विशेष उत्तेजन सेठ भूरामलजीके द्वारा मिला। इस फर्मका प्रधान व्यापार रुईका है।

आपकी ओरसे नवलगढ़के पास एक शाकम्बरी माताका मन्दिर करीब ६०।७० हजारकी लागतसे बनवाया हुआ है सेठ भूरामलजी कलकत्तेमें खंडेलवाल महासभाके सभापति भी रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ बम्बई अलसी का पाटिया	रुई, अलसी, गेंहू, तथा चांदी सोनाके हाजर तथा वायदेका व्यापार होता है।
२ धूलिया (खानदेश) मेसर्स—रामगोपाल जगन्नाथ	यहां आपकी १ जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी है।
३ मालेगांव (खानदेश) मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ	यहां आपकी जीन फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।
४ नेर, पो० धूलिया [खानदेश] मेसर्स—रामगोपाल जगन्नाथ	यहां आपकी १ जीनिङ्ग फेक्टरी है और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम नारायणदास

इस फर्मके मालिक पोकरन (जोधपुर) के निवासी हैं। इस फर्मका स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व हुआ था। इसके वर्तमान मालिक राय साहब सेठ नारायणदासजी राठी हैं। आपके पूर्वज सेठ

...त्ननारायणजी नेमाणी जे० पी०, बम्बई

स्व० से० फतेलालजी गठो (शालिगराम नारायणदास), बंबई

[illegible] (सरदार [illegible])

[illegible]

अर्जुन खीमजी एण्ड को०—इस कंपनीका बंबई आफिसका पता डोंगरी स्ट्रीट मांडवी है। यह स्थानीय ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसका मुख्य टे० फो० नं० २४८५३ है। इसके एक्सपोर्ट आफिसका टेलीफोन नं० २५७३८ है। इसके रूईका गोदाम न्यू कॉटन डिपो सिवरीमें है। गोदामका टे०नं०४१०४२,इस कंपनीकी स्थापना सन् १८८५ ई०में हुई। यह कंपनी पुरानी और प्रतिष्ठित है। इसकी शाखाएं खामगांव,कारंजा, धारवाल हुबली, अमलनेर धूलिया, वनोसा, डिग्रस, जलगांव, दरियापुर और मलकापुरमें हैं। इसके एजंट—बार्सिलोना, घेंट, राटर्डम, मिलन, एम्सटर्डम, शङ्घाई, ज्यूरिक आदि शहरोंमें फैले हुए हैं। इसके तारके पते—कबुलथू, चिदनचंद, और आनन्द (कारंजा) है इसके यहां बेंटलीके ५ वें और ६ वें ए० बी० सी० एडीशन ३८ वें मेयरके कोडसे काम होता है। इसके अतिरिक्त प्रायवेट कोडका भी उपयोग होता है।

यहां पूर्वीय भारत,ऊमरा, वरार, खानदेश,गुजराती सुरती आदि २ काटिंके रुईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी ब्रिटिश, अमेरिका, जापान, चीन आदि देशोंको रुई भेजती है।

इसके डायरेक्टर्स हैं:— (१) सेठ अर्जुन खीमजी, (२) सेठ देवजी खीमजी (३) सेठ भवनजी अर्जुनजी, (४) सेठ मानजी देवजी, (५) सेठ मेघजी चतुर्भुज, (६) सेठ मेघजी रायसी (७) सेठ पदमसी तेजपाल।

असुर वीरजी कंपनी—इसका आफिस ३२० मिंटरोड, फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन १८८५ ई०में हुई। इसका तारका पता सन् (Sun) है तथा टे० नं० २०१३८ है। इस कंपनीके मालिक सेठ खीमजी असुर वीरजी हैं। यह कंपनी सभी प्रकारकी भारतीय रुईका व्यवसाय और एक्सपोर्ट करती है।

काकाभाई उम्मेदचन्द— इसका हेड आफिस अहमदाबादमें है। बम्बई आफिसका पता सूरती मोहल्ला २ टांकीमें है। इसके तारका पता सेन्सेशन है।

कुवरजी पिताम्बर एन्ड को०—इसका आफिस ६४ चकलास्ट्रीट, पायधुनीमें है। यह कंपनी स्थानीय ईस्टइन्डिया काटन एसोसियेशनकी सदस्य है। यहांसे विदेशोंमें रुई भेजी जाती है इसका एक आफिस कोबी (जापान)में भी है। इसका गोदाम न्यू काटन डिपो सिवरीमें है। यहांका टे० नं० ४१६३५ है।

किशनचन्द देवचन्द एन्ड को—इसका आफिस ५१ अपोलोस्ट्रीट, फोर्टमें है। तारका पता सीड्स है। कोड ए० बी० सी० ५,६ वेस्टर्नेज प्रायव्हेट है। इसका टेलीफोन नं० २१८८१ है। इसका

किया। आप इस व्यापारमें इतने चतुर, मेधावी और दक्ष हैं कि इस धन्धेमें १६५० से अब तक आपने करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जन की। इस समय बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आप बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। रूईके बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है। बोलचालमें आपको लोग कॉटनकिंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप मारवाड़ी अग्रवाल सभाके सातवें अधिवेशनके सभापति रहे हैं। नासिकमें आपकी तरफसे धर्मशाला बनी हुई है। बम्बईमे आपका एक दवाखाना भी बना हुआ है इसके अतिरिक्त आजितगढ़में आपकी तरफ़से एक दवाखाना और गौशाला बनी हुई है।

आपके कार्य्योंसे प्रसन्न होकर बम्बईकी गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की उपाधि प्रदान की है।

आपके इस समय एक पुत्र और तीन पौत्र हैं पुत्रका नाम श्रीयुत सूरज मलजी नेमाणी है।

मेसर्स समरथराय खेतसीदास

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (सीकर) निवासी अग्रवाल जातिके (बांसल गोत्रीय) सज्जन हैं। पहिले इस फर्मपर फकीरचंद समरथरायके नामसे व्यापार होता था। वर्तमान इस नामसे यह फर्म करीब ५० वर्षोंसे काम कर रही है। यह बहुत पुरानी फर्म है। इसे सेठ खेतसीदासजीने स्थापित किया। आप रामगढ़ हीमें रहते हैं। आपके पुत्र श्री० मोतीलालजी इस समय इस दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे नीचे लिखे स्थानोंपर व्यापार होता है।

(१) बम्बई—मेसर्स समरथराय खेतसीदास मारवाड़ी बाजार—हुंडी चिट्ठी, सराफी तथा कपड़ा रूई एवं गल्लेकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) अमृतसर-मेसर्स समरथराय खेतसीदास आलू कटरा—इस फर्मपर विलायतसे डायरेक्ट कपड़ा आता है तथा सराफीका काम होता है।

(३) मन्दसोर—मेसर्स समरथ राय खेतसीदास—यहां आपकी एक जीन फेक्टरी है, तथा रूई व आढ़तका काम होता है।

(४) प्रतापगढ़—(मालवा) मेसर्स समरथराय खेतसीदास—यहां आपकी १ जिनिंग फेक्टरी है। तथा रूई और आढ़तका व्यापार होता है।

(५) नयानगर (व्यावर) मेसर्स रामबक्स खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है।

(Capital) है। इस कम्पनीके मालिक सेठ भाईदास नानालाल और किसनदास हरिकिशनदास हैं। यह कम्पनी भारतकी प्रायः सभी प्रकारकी रुईका व्यवसाय करती है। इसका व्यापार प्रायः प्रतिवर्ष ७५ हजार गाँठोंका होता है।

लक्ष्मीचन्द पदमशी एण्डको०—कालबादेवीरोड, इसका पो० बॉ० नं० २००७ है। इसके सञ्चालक लक्ष्मीचंद मानकचंद जोशी इत्यादि हैं। तारका पता पोपुली है। टेलीफोन नं० २०१८७ (ऑफिसका) है। और मारवाड़ी बाजारका २१२६१ है।

शामजी हेमराजजी एण्डको०—रेडीमनीमेंनशनचर्चगेट स्ट्रीटमें है। तारका पता नरपाणी, टेलीफोन नं० २५१२८ है। इसके मालिक शामजी हेमराज हैं। ये रुईके व्यापारी हैं।

शोलस ब्रा (जे० सी०) लि०—११३ एसप्लेनेड रोड फोर्टमें हैं। टेलीफोन नं० २१०४६ है। ये कमीशन एजेन्ट हैं।

हरनन्दराय सूरजमल इस फर्मका ऑफिस २५३ कालबादेवी रोडपर है। इसका टे० नं २११४६ है। इसके मालिक हैं सेठ सूरजमलजी। इस फर्मकी एक ब्राञ्च कोचीनमें भी है। यह सब प्रकारकी रुईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका विशेष परिचय बैंकरोंमें दिया जा चुका है।

हीरजी नेनसी एण्डको०—इस कम्पनीका आफिस पोद्दार बिल्डिंग ७।११ एलफिन्स्टनरोड, (रस्का सरकल) में है। इसका स्थापन सन् १८६५ ई० में हुआ था। इसकी शाखाएं पाचड (ईस्ट खानदेश), और गदाग (धारवाड़) में हैं। इसका तारका पता—रिप्लेनिश है।यहां बेंटले, मेयर्स तथा प्रायवेटके ए बी सी ५ ६ एडिशनका कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २१११४ है। शिवरी न्यूकाटनडिपोका टे० नं ४२१६० है तथा जवरी बाजार और रेसिडेन्सीका टे० नम्बर क्रमशः २३६६१ और ४१३७३ हैं। इसके भागीदार सेठ पदमसी हीरजी नेनसी और थेकरसी हीरजी नेनसी हैं। इस कम्पनीके द्वारा हर किस्म की रुई फ्रान्स, इटली, बेलजियम, स्पेन, हालैंड, इङ्गलैंड, आष्ट्रिया, जर्मनी, जापान, स्विट्जरलैंड और शंघाई जाती है।

पारसी तथा खोजा काटन एक्सपोर्टर्स

आदमजी हाजी दाऊद एण्ड को०—इसका हेड आफिस ६२ मुगल स्ट्रीटमें है। बम्बई ऑफिस का पता—मन्हारी स्ट्रीट है। कलकत्तामें भी इसकी एक ब्रांच है। यहाके तारका पता—गनीवाला, बम्बई है। इनके यहां बेन्टलीका ए०बी० सी० ५ वां संस्करणका कोड उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रमहाल और प्रायवेट भी व्यवहार किया जाता है।

करीमभाई एण्ड को० लिमिटेड—इसका हेड आफिस नं० १२।१४ आउट्रम रोड, फोर्टमें है। इसकी शाखाएं—कलकत्ता, हांगकांग, शंघाई, कोबी तथा ओसाका (जापान) में हैं। इसका

अली' है। इसमें बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २०१२४ है। इसका व्यापारिक संबंध चीन और जापानसे है। इसके अन्तर्गत अहमद एन० फतेह अली, रहीम एन० फतेह अली० आराद एन० फतेह अली, आबू एन० फतेहअली और आदनन् एन० फतेह अली पार्टनर हैं।

बाम्बे कॉटन कम्पनी—इसका आफ़िस हार्नबी-बिल्डिंग हार्नबीरोड, फोर्टमें है। इसका टे० नं० २३११० है। इस कंपनीका एक छोटा आफिस रायबहादुर बन्सीलाल अबीरचंदकी कोठी-पर मारवाड़ी बाजारमें है। इस कंपनीका स्थापन संवत् १६१५ है। इसका एक एजेंट फर्सेतजी बोमनजी एण्ड को० कोबीमें है। इसका तारका पता—स्कायर (esquire) है। इस कंपनीमें सिंध, उमरा, भरोच, अमेरिकन आदि रूईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी अपना माल यूरोप, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसके पार्टनर फिरोजशाह सोराबजी गामपर और फ़ाजलभाई इब्राहिम एण्ड को० लिमिटेड हैं।

बोरा मियाभाई नाथू—इसका आफ़िस हनुमानबिल्डिंग तांबा कांटा, पायधुनीमें है। इसका टेलीफोन नं० २०६६८ और २२०६१ है।

डेमून डेविड एण्ड को० लि०—१६ फ़ॉर्बस स्ट्रीट, पो बॉ १६७। इसका हेड ऑफिस लन्दनमें है। इसकी शाखायें मेन्चेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, हांगकांग, संघाई, बगदाद, बसरा, और हैंकोमें हैं। टेलीफोन नं० २००२५ है।

डेमून ई० डी० एण्ड को० लि०—हार्नबीरोड वेलार्ड स्टेट पो० बॉ १६८, शाखायें लन्दन, मान्चेस्टर, कलकत्ता, हाङ्गकाङ्ग करांची, बगदादमें हैं। तारका पता "एलियस" और टेलीफोन नं० २६६११ है। कोड मारकोनी ए, बी,सी, ५, ६ वेस्टर्टेज है।

डोराबजी रामजी एण्ड को०—७ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। यह सन् १८१६में स्थापित हुई थी। इसके एजेन्ट लन्दन, हेमबर्ग, पेरिस और जिनोवा इत्यादिमें हैं। तारका पता 'इयूनी-व्हिटी' है कोड़ ए. बी. सी ५ प्राइवेट,टेलीफोन नं० ४१३८१ है। इसके मालिक आर, एस, फूनजी हैं।

डेविड एच० एन० एण्ड को०—१२३ एसप्लेनेड रोड फ़ोर्टमें है। इस फ़र्मकी स्थापना सन १८८६में हुई। इसका तारका पता "मर्करी" है। कोड यूज्ड ए० बी० सी० पांचवा एडिशन है इसका आफिस टेलीफ़ोन नं० २० ३५४, और २३५२१ है। और न्यूकाटन डिपो सिवरीके गोदामका टेलीफ़ोन नम्बर ५०७११ है। इसका माल लिवरपूल और यूरोपके अन्य प्रान्तोंमें जाता है।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके (गर्ग गौत्री) जैन धर्मावलम्बी हैं। आपका आदि निवासस्थान फतहपुर (सीकर स्टेट) में हैं। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना ६०। ७० वर्ष पहिले सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुई थी। तथा इस फर्मको विशेष तरक्की सेठ सुखानन्दजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। आपने संवत् १९५६ में जब शेखावाटी प्रान्तमें दुर्भिक्ष पड़ा था तब रुपयेका सोलह सेर अनाजका भाव बान्धकर जनताको बहुत लाभ पहुंचाया था। फतहपुरमें आपने गुरुमुखराय जैन स्कूल खोल रक्खा है। आप श्रीशिखरजीकी रक्षार्थ तीर्थक्षेत्र कमेटीमें अभीतक करीब ३० हजार रुपया दे चुके हैं। बम्बईके माधोबागमें आप की एक विशाल तथा प्रसिद्ध धर्मशाला है,जिसमें हमेशा सेकड़ों मुसाफिर विश्रान्ति पाते हैं। इसमें करीब ५ लाख रुपयोंकी लागत लगी है। एक धर्मशाला आपने श्रीमन्दार गिरिमें जैन यात्रियोंके सुभीतेके लिये करीब तीस हजार रुपयोंकी लागतसे खोली है। इसके अतिरिक्त आप एक विशाल मन्दिर बनवानेका आयोजन कर रहे हैं जिसके लिये आपने अनेक स्थानोंके भव्य मन्दिरोंकी इमारतोंकेफोटो मंगवाये हैं।

आपका मैसूरके महाराज तथा सीकरनरेशसे भी परिचय है। वर्तमान सीकरनरेशके पिता महाराज माधोसिंहजीको आपने अपनी धर्मशालाका दरवाजा खोलनेके लिये आमन्त्रित किया था। उन्हीं के उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशहरेके दिन भैंसा मरवाना बन्द करनेकी आज्ञा जारी की थी। इसके पूर्व एक बार महाराज सीकर यहां और आये थे, उस समय आपने जैन समाजकी ओरसे महाराजको मानपत्र दिया था। इस उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशलक्षणी पर्वमें तथा अष्टमी चतुर्दशीको जीवहिंसा बिल्कुल बन्द करवानेकी आज्ञा दी थी।

वर्तमानमें आपकी दूकान मारवाड़ी बाजारमें है। (T.A. Clondy) इस फर्मपर हुण्डी, चिट्ठी, रूई, अलसी, गेहूं, चांदी, सोना, तथा सराफी बिजिनेस एवं कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स गोरखराम साधूराम

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। बम्बईकी फर्मका पता कालबादेवी रोड बम्बई है। यहांपर रूई और बैंकिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इस फर्मका विस्तृत परिचय अन्यत्र दिया गया है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके संचालक ब्यावरके निवासी हैं। ब्यावरमें यह फर्म एडवर्ड मिलकी मैनेजिंग एजंट है। बम्बईकी फर्मका पता लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग, रुई और

(२) बम्बई—मेसर्स फूलचंद मोहनलाल कालबादेवी रोड—यहाँ सराफी, रुई गल्लाका एवं और आढ़तका व्यवसाय होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद मड़वला स्ट्रीट, बड़ा बाजार—इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी तथा कमीशन और नीलका काम होता है। यह फर्म करीब २ करोड़ रुपयोंका प्रति वर्ष कपड़ा खरीदती है। यह वाम्बे कम्पनी लिमिटेडकी बेनियन है।

(४) कानपुर—मेसर्स फूलचंद मोहनलाल नयागंज—सराफी, रुई गल्लेकी आढ़त और जमींदारीका काम होता है।

(५) हरदुआगंज—(अलीगढ़) मोहनलाल चिरंजीलाल—यहाँ इस फर्मकी एक जीनिंग फेक्टरी है और रुई गल्लेका व्यापार होता है।

(६) कासगंज—प्यारेलाल सुबोधचन्द—आढ़त, रुईका व्यापार होता है और दाल फेक्टरी है।

(७) उत्तरीपुरा (कानपुर) प्यारेलाल सुबोधचंद्र—कपड़ा और गल्लेका व्यापार होता है।

(८) हिसार—चिरंजीलाल प्यारेलाल—कमीशनका काम होता है।

कॉटनकी सीजनमें पंजाबमें इस फर्मकी कई टेम्परारी ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स वसंतलाल, गोरखराम

इस फर्मके मालिक चिड़ावा (जयपुर-राज्य) के निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ वसंतलालजीने की। आप तीन भाई हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ वसंतलालजी, सेठ गोरखरामजी, सेठ द्वारकादासजी एवं सेठ बनारसीलालजी करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—(हेड आफिस) मेसर्स वसंतलाल गोरखराम-मारवाड़ी बाजार, तारका पता-संतसरिता, कॉटन और सीनका व्यापार तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है। शेयर बाजारमें आपका आफिस है। आपका शिवरीमें रुईका तथा बंदरपर शोडमका गोडाउन है।

(२) [illegible]—मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल—यहांपर आपकी एक जीनिंग व एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

(३) [illegible]—मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल—यहांपर सराफी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(४) [illegible]—मेसर्स वसंतलाल गोरखराम, सराय रोड, यहांपर बछिया तथा आढ़तका काम होता है।

(५) [illegible] (बदायूं) मेसर्स वसंतलाल द्वारकादास—यहांपर सराफी तथा आढ़तका काम होता है।

व्यापार रुईका है। सेठ भागचंदजीका सब व्यवसाय सी० पी० में है। वहांपर आपकी कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

बम्बईमें यह फर्म कपेडुल स्ट्रीट, (कालबादेवी रोडके पास) पर है। इस फर्म पर हुंडन, सराफी और गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हीरालाल रामगोपाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी हैं। आप फतहपुर (सीकर) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना ६० वर्ष पूर्व सेठ हीरालालजीने की। आपका देहावसान सं० १९४२ में हुआ। आपके पुत्र सेठ रामगोपालजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष उत्तेजन दिया था। आपका देहावसान भी संवत् १९७८ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे देशमें एक संगमरमरकी छत्री और एक मन्दिर बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपने ४ लाख ५५ हजारका एक ट्रस्ट किया है। जिससे धार्मिक कार्योंका प्रबंध बराबर होता रहे। आपकी फतहपुर, मथुरा और ऋषीकेशमें धर्मशालाएं बनी हैं, और सदाव्रत चालू है। हरिद्वारमें भी सदाव्रतका प्रबंध है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल शेख मेमन स्ट्रीट—T. A. Honar—यहां सराफी और आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रामगोपाल केशवदेव—इस नामसे रुईका जत्थेका व्यापार होता है।

(३) वर्धा (C. P.) हीरालाल रामगोपाल—यहां आपकी एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। और रुईका व्यापार होता है। आपका एक: जमींदारीका गांव भी है। इस फर्मके पास सुलान, जापान, फारवस आदि विदेशी कम्पनियोंको एवं मॉडल मिल नागपुरकी रुईकी खरीदीकी एजेंसी रहती है।

(४) नागपुर—हीरालाल रामगोपाल काटन-मार्केट—रुईका व्यापार और उपरोक्त कम्पनियोंकी रुई खरीदनेकी एजेंसी है।

(५) सांवनेर (नागपुर) हीरालाल रामगोपाल—रुईका व्यापार और एजेंसीका काम।

(६) पाण्डुरना (नागपुर)—हीरालाल रामगोपाल— " " "

(७) धामनगांव (बरार) हीरालाल रामगोपाल—जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी है।

(८) चंदौसी (यू० पी०) मे० रामगोपाल हीरालाल और रामगोपाल केशवदेवके नामसे २ दुकानें हैं यहां रुई और गल्लेकी आढ़त का काम होता है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर २ जीनिङ्ग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। ट्रस्टके २ जागिरीके गांव भी यहांपर हैं।

सालिगरामजीने पोकरनमें बल्लभ सम्प्रदायका एक मन्दिर स्थापित किया है, तथा धर्मशालाएं, कुंए, सदाव्रत आदि जारी किये हैं। सेठ सालिगरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी माहेश्वरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठा-सम्पन्न व्यक्ति हो गये हैं। आपने नागपुर अधिवेशनके समय माहेश्वरी महासभाके सभापतित्वका पद सुशोभित किया था। आपने कई धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार कराया, कुएं खुदवाये तथा विद्यालयों एवं संस्थाओंको सहायताएं दीं। आपने एक बड़ी रकमका धर्मादे फंडका ट्रस्ट कर रक्खा है, जिसकी ओरसे एक सदाव्रत चालू है। तथा नासिकमें एक बड़ी धर्मशाला आपने बनवाई है। आपने करीब १॥ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति एक विद्यालय स्थापित करनेके लिये दान की है। आपका देहावसान हुए करीब १८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ फतेलालजीके भतीजे सेठ नारायणदासजीको गवर्नमेन्टने सन् १९२५ में रायसाहबकी पदवी दी है। आप उमरावतीमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने पोकरनमें एक अस्पतालकी स्थापना की है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कमालको-मेसर्स शिवलाल सालिगराम T. A. Diamond	यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और जमीदारी, बैंकिंग व काटनका बिजिनेस होता।
२ बम्बई—मेसर्स सालिगराम शिवनारायण एण्ड कम्पनी मस्जिद बंदर T. A. Rainfall	बैंकिंग कमीशन एजेंसी तथा काटन बिजिनेस होता है। रुईका जत्था, काटनका एक्सपोर्ट तथा काटन बिजिनेस होता है।
३ खिरसोद (बरार) मेसर्स श्रीराम सालिगराम	जमीदारी-बैंकिंग तथा काटन कमीशनका काम होता है। यहां आप की २ जीनिङ्ग व एक प्रेसिंग फेक्टरी है।
४ अकोला (बरार) मेसर्स श्रीराम सालिगराम	बैंकिंग व काटनका बिजिनेस होता।
५ [illegible]	जमीदारी और बैंकिंग वर्क होता है। तथा जीनिङ्ग कंपनी

इसके अतिरिक्त अकोला, खामगांव आदि कई जीनिङ्ग प्रेसिङ्ग फेक्टरीजमें आपके भाग हैं। [illegible] मिल्स के आप शेयर होल्डर हैं।

सेठ शिवनारायण नेमाणी जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीमान सेठ शिवनारायणजी नेमाणी जे० पी० हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूड़ी (शेखावाटी-जयपुर) है। संवत् १९०१ में आपके पिता सेठ बंशीलालजी नेमाणी बम्बई आये। आप यहां [illegible] के यहां काम करते थे। बादमें संवत् १९३० से १९४२ ई० तक [illegible] के यहां पर काम किया। संवत् १९४२ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्थान संवत् १९४९ में आपके पुत्र श्रीयुत शिवनारायणजी नेमाणी बम्बई आये। संवत् १९५० तक आपने [illegible] में काम किया। उसके पश्चात् आपने स्वतंत्र व्यापार [illegible]

४ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० मलकवल (पंजाब)—यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है। तथा कॉटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कंपनी

इस फर्मका स्थापन सन् १८९१ में सेठ धरमसीजीके हाथोंसे हुआ। इस फर्मके मालिक जामनगर (हालार) के निवासी भाटिया जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कम्पनी धारमजी—मांडवी	कॉटन मरचेंट और कमीशन एजंसीका काम होता है।
२ अमरावती—धरमसी जेठा कम्पनी कॉटन मार्केट	कॉटन बिजिनेस होता है।

ठक्कर माधवदास जेठाभाई

इस फर्मकी स्थापना सेठ माधव दासजीने संवत् १९४७ में की। आप हालार जामनगर के निवासी भाटिया जातिके हैं। वर्तमानमें सेठ माधवदासजी ही इस फर्मके मालिक हैं। आपकी ओरसे हालारमें सेठ माधव दास जेठा भाई भाटिया बोर्डिंग हाउस चल रहा है। इसमें २६ विद्यार्थियों के भोजन एवं शिक्षणका प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—ठक्कर माधव दास जेठा भाई होली बन्दर—कोट	यहां कॉटन कमीशन.एजंसी और मुकादमीका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त निर्जीव एक्स्पोर्टरका काम मुकादमी तरीके से यह फर्म करती है। इस फर्मका शिवरीमें रुईका काम है।

मेसर्स मोतीलाल मूलजी भाई

इस फर्मको ३६ वर्ष हुए सेठ मोतीलाल मूलजीभाईने स्थापित किया था, आपका देहावसान संवत् १९६१ में होगया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मणीलाल मोतीलाल भाई हैं। आप राधनपुरके निवासी जैन सज्जन हैं। मणीलाल सेठको सन् १९२५ में गवर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। आपने १।। लाखकी लागतसे राधनपुरमें एक फ्री डिस्पेंसरी स्थापित की है। तथा वहां २० हजारकी लागतसे एक सदाव्रत की स्थापना की है। २० हजार रुपया आपने स्वजाति फण्डमें दिया है। तथा २० हजार रुपया राधनपुरसे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये बाहर जानेवाले विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं। १० हजारकी लागतसे आपने एक जैन-पाठशाला स्थापित की है। और ४० हजारकी लागतसे आपने एक पार्श्वनाथ संघ निकाला। इसके अतिरिक्त ३० हजार रुपया महावीर बोर्डिंग हाउसमें और ३० हजार रुपया पंजाब गुरुकुलमें दान किये हैं।

मेसर्स बाबूलाल गंगादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गंगादासजी यहांपर करीब १४ वर्षोंसे रुई व गल्लेका व्यापार करते हैं। इसके पूर्व आप केवल ३०) मासिकपर सर्विस करते थे। इतने थोड़े समयमें आपने रुई बाजारसे अच्छी सम्पत्ति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स बाबूलाल गंगादास मारवाड़ी बाजार—(T. A. Babsicarn) इस फर्मपर रुई, गल्ला, और तिलहनके वायदेका काम होता है।

मेसर्स परी मूलचन्द जीवराज

इस फर्मको सेठ मूलचन्द जीवराजने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। वर्तमानमें इसके मालिक सेठ मोहनलाल मूलचन्द और केशवलाल मूलचन्द हैं।

लीमड़ीमें आपकी ओरसे मूलचंद जीवराज कन्या-विद्यालय स्थापित है। बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालयमें आपने १० हजार रुपये दिये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

बम्बई—मेसर्स मूलचन्द जीवराज—शिल्कर मेन्शन पारसी गली—यहां चांदी सोना रुई शक्कर और कमीशनका काम होता है, इसके अतिरिक्त रणछोड़लाल केशवलालके नामसे एरण्डा अलसी, गेहूं, शक्कर और कमीशनका काम होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी बढ़वान शहरमें एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, बोटादमें एकजीनिंग फेक्टरी, तथा बढ़वान केम्पमें एकजीनिंग फेक्टरी है और लीमड़ीमें कॉटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक सेठ रतीलाल त्रिभुवनदास ठक्कर हैं। आप सूरत निवासी मोढ़ल्य जातिके सज्जन हैं। सेठ रतीलाल भाईने इसफर्मको सन् १८९० में स्थापित किया, तथा इसकी विशेष उन्नति भी आपहीके द्वारा हुई, आप ईस्ट इण्डिया कॉटन ओवर्स एसोसिएशनकी रिप्रेजेंटेटिव्ह कमेटीके मेम्बर तथा कॉटन ओवर्स एसोसिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी कॉटन केबिन—कालबादेवी-बम्बई T. A. Cabin इस फर्ममें रुईके वायदेका काम बम्बई लिवरपूल तथा न्यूयार्कके बाजारोंसे होता है। इसके अतिरिक्त सोना, चांदी, अलसी, गेहूंका काम भी यह फर्म करती है।

---

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबख्श खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्री है, तथा रुईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़)—यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (विन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १९४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १९१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १९२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडऑफिस है। तथा आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रुईका घरू और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्म द्वारा मिलोंको रुई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आलू कटरा (T. A Bagla)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरमुखराय भागचंद

इस फर्मके दो पार्टनर हैं। सेठ हरमुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरमुखरायजीका हेड ऑफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दुकाने हैं। इस फर्मका प्रधान

रुईके व्यापारी और ब्रोकर्स

अमूलख अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट एण्ड कमीशन एजन्ट
अमृतलाल लखमीचंद खोखानी शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स एण्ड कमीशन एजंट
अमरसी एण्ड संस खुदाना हाउस बेलार्ड स्टेट मर्चेण्ट
अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट
अबूबकर अब्दुल रहमान एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट, मरचेंट ब्रोकर्स
आदम दाऊजी हाजी एण्ड कं० लि० मन्हारी स्ट्रीट
अमरसी दामोदर भुलेश्वर मरचेंट
अर्जुन खीमजी एण्ड को० डोंगरी स्ट्रीट मरचेंट
अनुर वीरजी मिंटरोड फोर्ट मरचेंट
आसाराम मूलचंद मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
ईश्वरदास एण्ड कम्पनी मारवाड़ी बाजार कमीशन एजेंट
करमचंद जगजीवन एण्ड को० कालबादेवी रोड ब्रोकर्स
करानी के० एम० एण्ड को० एल्फिन्स्टन सर्कल फोर्ट मरचेंट
करीम भाई एण्ड को० लि० आउट्रम रोड मरचेंट
काटन एजेंट लिमिटेड चर्चगेट स्ट्रीट मरचेंट
किसनचंद देवचंद बरोडा स्ट्रीट मरचेंट
कोकाभाई प्रेमचंद रायचन्द शेअरबाजार
कुंवरजी पीताम्बर एण्ड को० चकला स्ट्रीट मरचेंट
केशरीमल अमीलाल कालबादेवी मरचेंट
कुन्दनलाल को० लिमिटेड कालबादेवी मरचेंट

कृष्णदास वसनजी खेमजी वालेस स्ट्रीट मरचेंट
खीमजी विश्राम एण्ड को० हार्नबी रोड मरचेंट
खुशालचंद गोपालदास भुलेश्वर मरचेंट
गजाधर नागरमल मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
गुलराज चूड़ीवाला केदार भवन कालबादेवी ब्रोकर्स
गाड़मल गुमानमल मम्बादेवी, मरचेंट
गोरखराम साधूराम कालबादेवी मरचेंट
गोपीराम रामचंद्र कालबादेवी मरचेंट
गोकुलभाई दौलतराम ब्रोकर्स
गोरिया लि० बेलार्ड स्टेट मरचेंट
गोकुलदास डोसा एण्ड को० हनुमानगली मरचेंट
गोविंदजी वसनजी एण्ड संस गिरगांव बैंक रोड
गोविन्दजी कानजी चिंचबंदर मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
गुजरात काटन कम्पनी हार्नबी रोड मरचेंट
चम्पालाल रामस्वरूप कालबादेवी मरचेंट
चांदमल घनश्यामदास कालबादेवी मरचेंट
चिमनलाल ताराभाई मारवाड़ी बाजार
चुन्नीलाल भाईचंद मारवाड़ी बाजार—ब्रोकर्स
जमनादास अडूकिया कालबा देवी रोड ब्रोकर्स
जमशेदजी आर दलालिया मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
जगजीवन उजमसी मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
जवाहर सिंह हरनाम दास पारसीगली मरचेंट
जीवनलाल अमरसी शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स
जुहारमल मूलचंद, [illegible] मरचेंट,
[illegible] मारवाड़ी बाजार मरचेंट
[illegible] देवजी नाटकी, मरचेंट एण्ड [illegible]

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबक्स खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्ट्री है, तथा रूईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़)—यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १६४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १६१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १६२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी [illegible] मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. हुंडी चिट्ठी तथा रूईका धरू और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Rata ढ़ाग मिलोंको रूई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आलू कटरा (T. A Bagl हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरसुखराय भागचंद

इस फर्मने दो पार्टनर हैं। सेठ हरसुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरसुखरायजी। हेड ऑफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दुकाने हैं। इस फर्मका प्रथ

कपड़ेके व्यापारी
CLOTH-MERCHANTS

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबख्श लेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है, तथा रूईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़)—यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १९४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १९१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १९२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडऑफिस है। यहां आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद पदामका भाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रुईका घरू और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्मके द्वारा मिलोंको रूई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आलू कटरा (T. A Bagla)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरमुखराय भागचंद

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। सेठ हरमुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरमुखरायजीका हेड ऑफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दूकाने हैं। इस फर्मका प्रधान

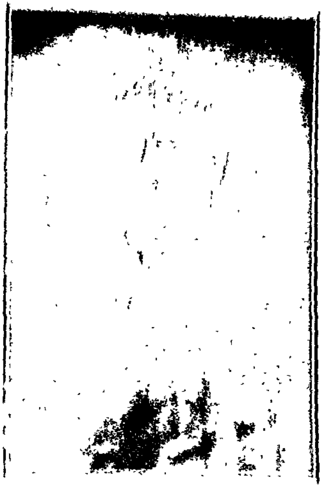

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबक्स चेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है, तथा रूईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़)—यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला हीरालालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्र—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १९४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १९१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत् १९२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडऑफिस है। तथा आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रूईका धन्धा और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—हीरालाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्मके द्वारा मिलोंको रूई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आढ़त कटरा (T. A Bagla)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरमुखराय भागचंद

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। सेठ हरमुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरमुखरायजीका हेड ऑफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दुकाने हैं। इस फर्मका प्रधान

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स गोकुलदास डूंगरसी मूलजी जेठा मारकीट चौक T. A. Premsukh इस फर्मपर यान्वे कॉटन मिलकी २० वर्षसे, जमशेद मिलकी १२ वर्षसे तथा आसर मीलकी ३ वर्षसे एजंसी है। यह फर्म इसी मिलमें पार्टनर भी है।

मेसर्स घेलाभाई दयाल

इस फर्मका स्थापन सेठ घेलाभाई दयालने ६५ वर्ष पूर्व किया तथा सेठ जीवराज दयाल और सेठ घेलाभाई दयालके हाथोंसे इसके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरीदास घेलाभाईदयाल और गोकुलदास जीवराजदयाल हैं। सेठ गोकुलदासजी, पीसगुड्स मरचेंट्स एसोसिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप (जामनगर) खम्भालियाके निवासी भाटिया जातिके हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स घेलाभाईदयाल पड़ियागली मूलजी जेठा मारकीट—इस फर्मपर विलायती, कोरी-जगन्नाथी और मलमलका व्यापार होता है। इस फर्मपर कपड़ेका विलायतसे डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स दामोदर गोविन्दजी

इस फर्मके मालिक खम्भालिया (जामनगर) के निवासी भाटिया (वैष्णव) जातिके सज्जन हैं। इस को सेठ दामोदरदासजीने संवत् १९६०में स्थापित किया था। इसके पूर्व आप सेठ घेला-दयालके साथ सालेमें कपड़ेका व्यापार करते थे। आपका देहावसान संवत् १९८१में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ विठ्ठलदास दामोदर गोविन्द जी और सेठ पदमसी दामोदर गोविंद जी हैं। सेठ विठ्ठलदास जी संवत् १९५५से कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपने संवत् १९५६के भयङ्कर दुष्कालके समय बहुत फंड एकत्रित करके जानवरों और गरीबोंकी सहायतामें बहुत परिश्रम उठाया था। आप सन् १९१८से पोर्टट्रस्टके और १९२५से बाम्बे कार्पोरेशनके मेम्बर हैं। आप कपड़ा बाजारके सरवेयर और एम्पायर हैं।

सेठ विठ्ठलदास जी कपड़ेके व्यापारियोंकी मंडलीके वाइसप्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बरकी कमिटीके मेम्बर और सर हरकिशनदास हास्पिटल और सनकी संस्थाओंके ट्रस्टी हैं। भाटिया कान्फ्रेन्सके दूसरे अधिवेशनके आप सभापति भी रह चुके हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबक्स खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़)—यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १६४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १९१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १९२१ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडआफिस है। तथा आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रुईका सट्टा और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्मके द्वारा मिलोंको रुई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आदू कटरा (T. A Bagl.)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरमुखराय भागचंद

इस फर्मके दो पार्टनर हैं। सेठ हरमुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरमुखरायजीका हेड आफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दुकाने हैं। इस फर्मका प्रधान

[illegible] बम्बई

श्री० केशवदेवजी गनेड़ीवाला (ही० ग०) बम्बई

श्री० विश्वेश्वरलालजी टीबड़ेवाला, बम्बई

उप प्रमुख और प्रमुख तथा बाम्बे पोर्टट्रस्टके ट्रस्टी रह चुके हैं। करीब १५ वर्षोंसे आप आनरेरी प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट हैं। आप कापड़ बाजारके बड़े आगेवान व्यापारी माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—माधवजी ठाकरसी एण्ड कम्पनी गोविन्दचौक मूलजी जेठा मारकीट—इस दुकानपर रङ्गीन छींट चेक और सूती कपडेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—देवीदास माधव जी ठाकरसी, चम्पागली मूलजी जेठा मारकीट—इस दुकानपर मानिकजी पेटिट मिल्स कम्पनीकी एजेन्सी है।

(३) बम्बई—माधवजी ठाकरसी कम्पनी फर्बेसस्ट्रीट फोर्ट—यहां छींट तथा विलायती मालका इम्पोर्ट घरू और कमीशनसे होता है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत

इस फर्मके मालिक बम्बईके निवासी गौड़ सारस्वत ब्राह्मन जातिके हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व इस फर्मको सेठ बलवंतराव रामचन्द्रने स्थापित किया, तथा आपहीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष तरक्की मिली। वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता सेठ भालचन्द्रजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत, नारायन चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—(T. A. Pice goods) यहां सफेद, कोरा तथा विलायती मालका थोक व्यापार और एक्सपोर्ट इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

मेसर्स मुरारजी केशवजी

इस फर्मको सेठ हरिभाई हेमराजने ३२ वर्ष पहिले स्थापित किया था। वर्तमानमें आपके छोटे भाई सेठ केशवजीके पुत्र सेठ तुलसीदास केशवजी और सेठ मुरारजी केशवजी इस फर्मका संचालन करते हैं। सेठ पुरुषोत्तम केशवजी अपना अलग व्यवसाय करते हैं। मुरारजी सेठ खंभालियाके (जामनगर) निवासी हालाई लुहाना समाजके सज्जन हैं। आप २२ वर्षोंसे देशी मिलोंकी कपड़ेकी एजंसीका काम करते हैं। लुहाना समाजमें मुरारजी सेठ अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मुरारजी एण्ड होरमसजी, चम्पागली मूलजी जेठा मा०—यहां स्वान, फीनले, गोल्ड मुहर फिनिक्स और नून मिलकी कपड़ेकी एजंसी है।

मेसर्स वेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी

इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ वेगराजजीने स्थापित किया। आप मावन (रेवाड़ी गुड़गांव) के निवासी सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री वेगराजजी गुप्त, रामस्वरूपजी गुप्त और प्यारेलालजी गुप्त हैं। आप तीनों भाई शिक्षित हैं, एवं मारवाड़ी समाजके हरएक कार्यमें अग्रगण्य रहते हैं। आप मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी वाचनालय, मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स कॉटनशीड व्हीट ब्रोकर्स एसोशिएशनके जीवित कार्यकर्ता हैं। श्रीवेगराजजी गुप्त मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर और ईस्ट० इण्डिया का० ए० के रिप्रेज़ेंटेटिव कमेटीके मेम्बर हैं। बाम्बे काटन ब्रोकर्स एसोशियेशनके स्थापनमें आपने विशेष रूपसे भाग लिया था। श्री० प्यारेलालजी गुप्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयके मैनेजिङ्ग कमेटीके सदस्य और उपमंत्री हैं। आप यहांके मारवाड़ी वाचनालय (जो बम्बईमें एक मात्र हिन्दी सार्वजनिक वाचनालय है) के मंत्री हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) वेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी * कालबादेवी बम्बई T, A, sodalabha—यहां कॉटन अलसी, गेहूं कमीशन व दलालीका बिजिनेस होता है।

(२) वेगराम रामस्वरूप—रेवाडी—आढ़तका काम होता है।

कॉटन मुकादम

मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक काठियावाड़ प्रांतमें जामनगरके पास शापर नामक स्थानके निवासी भाटिया जातिके हैं। इस फर्मको यहां सेठ जेठाभाई देवजीने संवत् १९६० में स्थापित किया था।

सेठ जेठाभाई देवजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। इस फर्मकी ओरसे सेठ देवजी वसनजी एंग्लोवर्नाक्यूलर स्कूलके नामसे एक प्राइवेट स्कूल शापरमें चल रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक (१) सेठ जेठाभाई देवजी, (२) गोकुलदास देवजी, (३) सेठ लक्ष्मीदास देवजी, (४) सेठ नारायणदास जेठाभाई हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स जेठाभाई देवजी शाकगली-मांडवी बम्बई—इस फर्मपर कॉटन व शीड्सका धरू व इनकी मुकादमी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर एक्सपोर्टका भी काम होता है।

२ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० केम्पवेल स्ट्रीट करांची—यहां भी कॉटन शीड्सका व्यवसाय एवं एक्सपोर्टका काम होता है।

३ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० गोंडल-काठियावाड़—यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन बिजिनेस होता है।

* परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथा स्थान नहीं छप सके—प्रकाशक।

इस फर्मको सेठ हरजीवन वालजीने ३५ वर्ष पूर्व स्थापित किया तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई है। आपको गवर्नमेंटने सन् १९२३में जे॰ पी॰ तथा सन् १९२७में जे॰ पी॰ की पदवीसे सुशोभित किया है। आप बम्बई नेटिव्ह पीस गुड्स मरचेंट्स एसोसियेशन तथा बम्बई गौरक्षक मंडलीके ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप बम्बई जीवदया मंडलीके वाइस प्रेसिडेंट तथा इण्डियन चेम्बर आफ कामर्सकी कमेटीके मेम्बर हैं। कपड़ा बाजारमें आप बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं।

गौरक्षाके लिये आपने बहुत परिश्रम उठाया है। आपकी ओरसे सेनेटोरियममें उच्च वर्णके हिन्दुओंके लिये एक ब्लाक आपके भाई सेठ गोवर्द्धनदास वालजीके नामपर स्थापित है।

सन् १९१८।१९में व्यापारियों और मिलवालोंमें एक्सचेंजका जो बड़ा भारी व्यापारिक झगड़ा उपस्थित हुआ था उसके निर्णयमें आपने बहुत अग्रगण्य रूपमें भाग लिया था। उस समय करीब २-२॥ करोड़का फैसला आपके हाथोंसे हुआ था। कपड़ा मारकेटकी तरफसे आप एसायर और सरवेयर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स हरजीवन वालजी १२ चम्पागली बम्बई—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) मेसर्स टा॰ हरजीवन मूलजी जेठा मारकेट चौक बम्बई (T, A, Bazarwala)—यहां मलमल और विलायती धोती जोड़ेका व्यापार होता है।

(३) मेसर्स हरजीवन गोवर्द्धनदास चम्पागली बम्बई—यहां सब प्रकारके गांठों कपड़ेका व्यापार होता है

(४) मेसर्स जमनादास सुन्दरदास, मूलजी जेठा मारकेट चौक-बम्बई—यहां रंग, सूत, कोटिंग तथा सब प्रकारके देशी कपड़ेका व्यापार होता है।

कपड़ेके व्यवसायमें आप परमानेंट कंट्राक्ट भी लेते हैं।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स अमीन भाई इब्राहिम एण्ड संस रेशम मरचेन्ट्स
" इन्दुलाल मूलजी जेठ बिल्डिंग
" केशवजी धनजी अमरचन्द चौक मूलजी जेठा मारकेट
" गोकुलदास मोरारजी मूलजी जेठा मारकेट
" गोवर्द्धनदास कल्याणजी गोविन्द चौक "

सेठ मणीलाल भाई बम्बईके महावीर विद्यालय बोर्डिंग हाउसके एवं एरंडा एण्ड शीड मरचेंट्स एसोसिएशनके ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप काटन ब्रोकर्स एसोसियेसन, बाम्बे सराफ महाजन एसोसिएशनके वाइस प्रेसिडेंट हैं। आप जैन कान्फ्रेन्सके सुजानगढ़में प्रेसिडेंट रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त जैन कान्फ्रेंसके जनरल सेक्रेटरीके रूपमें आपने १० वर्ष तक काम किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मोतीलाल मूलजीभाई बांदरावाला माला T. A. mahabir यहां काटनका हाजिर और वायदेका तथा चांदी एरंडा और शीडका व्यवसाय होता है।

(२) वीरमगांव-मोतीलाल मूलजीभाई—काटनका व्यापार है।

(३) वढ़वाण-मोतीलाल मूलजीभाई—काटनका व्यवसाय होता है।

कॉटनब्रोकर्स (गुजराती)

मेसर्स खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी

इस फर्मको सेठ खीमजीभाईने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था और इसकी विशेष तरकी भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ खीमजीभाईका देहावसान १९८४ में हो गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपालदास पुंजा, सेठ पुरुषोत्तमदास जेठाभाई और सेठ खटाऊ खीमजी हैं। यह फर्म कई व्यापारिक एसोशिएशनकी मेम्बर हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी १३ हमामस्ट्रीट-बम्बई T. A. Gainsure—शेअर और स्टॉककी दलालीका काम होता है।

(२) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी-मारवाड़ी बाजार बम्बई—यहां रुई और चान्दी सोनेकी दलालीका काम होता है। इस फर्मके द्वारा न्यूयार्क वगैरह बाहिरी देशोंसे भी रुईके सौदे दलालीसे होते हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मेहता

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चुन्नीलाल भाईचन्द हैं। आप वणिक जैन सज्जन हैं। सेठ चुन्नीलाल भाईको काटनका काम करते हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके हाथोंसे व्यवसायकी विशेष तरक्की हुई। आप शिक्षित व्यक्ति हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मारवाड़ी बाजार—यहां काटन सोना चांदी अलसी और गेहूंकी दलाली तथा कमीशनका काम होता है।

श्रीयुत् विश्वम्भरलाल माहेश्वरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीविश्वम्भरलालजी माहेश्वरी हैं। आपका मूल निवास स्थान फागी (जयपुर-स्टेट) में है। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब १२।१३ वर्ष हुए। सेठ विश्वम्भरलालजीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष तरक्की हुई। रूईके सौदेमें आपको अच्छा अनुभव है। मंडी बाजारमें आप अच्छे साहसी व्यापारी माने जाते हैं। आप ईस्ट इण्डिया काटन एसोसिएशनके मेम्बर हैं।

आपकी ओरसे फागीमें एक अपर स्कूल चल रहा है। जिसे आप बहुत शीघ्र मिडिल स्कूल करने वाले हैं। इसका फंड भी आपने अलग कर दिया है। इसके अतिरिक्त एक कन्या पाठशाला भी आपकी ओरसे फागीमें चल रही है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स विश्वम्भरलाल माहेश्वरी मोतीशाकी चाल मारवाड़ी बाजार - यहां रूई चांदीके व्यापारका अच्छा काम होता है। तथा न्यूयार्क और लिवरपूलके बाजारोंसे डायरेक्ट तार आते हैं।

श्रीयुत बिसेसरलाल चिड़ावावाला

इस फर्मके मालिक सेठ बिसेसरलालजी टीबड़ेवाले, चिड़ावा (खेतड़ी) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। १८ वर्ष पूर्व आपने इस दुकानको स्थापित किया, एवं रूईके व्यापारमें आपने इसको उन्नति दी थी।

यह फर्म ईस्ट इण्डिया काटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर व काटन मर्चेण्ट्स एसोसिएशनकी मेम्बर है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—बिसेसरलाल चिड़ावावाला कालबादेवी रोड—मारवाड़ी बाजार } यहां खासकर रूईके व्यापारका सौदा होता है और अलसी, गेहूं, चांदी सोनेका भी काम होता है। यहां न्यूयार्क, लिवरपूल मार्केटके काम आते हैं।

मारवाड़ी कपड़ेके व्यापारी और क० ए०

मेसर्स आनन्दराम मंगतूराम

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको यहां सेठ आनंदरामजीने संवत् १९७१ में स्थापित किया। सर्व प्रथम सेठ आनन्दरामजी अकोलेमें संवत् १८५२ तक गल्ला रुई एवं आढ़तका काम करते रहे। पश्चात् करीब १२ वर्षतक कलकत्तेमें सुखदेवदास रामप्रसादके साझेमें आपने रंगलाल मोतीलालके नामसे व्यवसाय किया। बादमें आपने ४ वर्षतक मेसर्स ताराचंद घनश्यामदासके साझेसे व्यवसाय किया। तत्पश्चात् संवत् १९७१ से कलकत्तेमें और बम्बईमें आपने अपनी फर्में स्थापित की।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन कर्ता सेठ आनन्दरामजी, आपके पुत्र मंगतूरामजी एवं आपके भतीजे गजाधरजी और पूर्णमलजी हैं। आपकी ओरसे नवलगढ़में श्रीचतुर्भुजजीका मंदिर बना है। उसमें २१ विद्यार्थी रोज भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स आनंदराम मंगतूराम बादामका झाड़ कालबादेवी इस फर्मपर कपड़ेकी आढ़तका व्यापार तथा हुंडी चिट्ठी, सोना, चांदी सूत इत्यादि की कमीशन एजंसीका व्यवसाय होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स आनंदराम गजाधर पांचागली—इस फर्मपर जापान और विलायतसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स कालूराम वृजमोहन

इस फर्मके मालिक सेठ वृजमोहनजी फतहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपने इस फर्मको बम्बईमें १८ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके व्यवसायकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स कालूराम वृजमोहन दूसरा भोईवाड़ा—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

जेसूजी एण्ड संस हानेबी रोड—मरचेंट
जोगी राम जानकीदास कालबादेवी मरचेंट, एण्ड कमीशन एजंट
जोतराम केदारनाथ कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट,
धरमसी जेठा मांडवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
दुलेराय एण्ड कंपनी अपोलो स्ट्रीट, ब्रोकर्स
द्वारकादास त्रिभुवनदास शेखमेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
दामजी शिवजी शेख मेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
दुर्गादत्त सांवलका मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
देवकरणदास रामकुँवार मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
देवसी सेवसी ब्रोकर्स
दौलतराम कुन्दनमल कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
देहदारवी (एम०एच०)१ आसलेन फोर्ट, मरचेन्ट एण्ड कमीशन एजंट
धनपतमल दीवानचंद भोंबाकाटा, मरचेंट
नरसिंहदास जोधराज कालबादेवी, मरचेंट
नवीनचंद दामजी हमाम स्ट्रीट
नैनसुखदास शिवनारायण मरचेंट
पूनमचंद वखतावरमल मम्बादेवी, मरचेंट
मावजी भीमजी मरचेंट
न्यू मुर्चेस्टिल कंपनी हमाम स्ट्रीट फोर्ट
मामराज रामभगत मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
मेहता (एच० एम०) रुस्टेनेडरोड फोर्ट, मरचेंट
रत्तीलाल एण्ड कं० मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
रामकुँवार मुरारका ब्रोकर्स मारवाड़ी बाजार
लच्छीराम चूड़ीवाला ब्रोकर्स मारवाड़ी बाजार
लक्ष्मीनारायण सरावगी ब्रोकर्स
लक्ष्मीदास मावजी मरचेंट
लक्ष्मीचंद पदमसी कालबादेवी, मरचेंट
लालजी देकरसी मूलराज खटाऊ हाऊस चिंचबंदर, मरचेंट
लक्ष्मीनारायण वृजमोहन कालबादेवी, ब्रोकर्स
संवलाल विश्वेसर लाल कालबादेवी।
शिवदान अग्रवाला कालबादेवी, ब्रोकर्स
शिवजी पुंजा कोठारी, ब्रोकर्स
सरूपचंद पृथ्वीराज मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
हरविलास गंगादत्त कालबादेवी, ब्रोकर्स
हरसुखराय गोपीराम कालबादेवी, मरचेंट
हरसुखराय सुन्दरलाल मारवाड़ी बाजार
हीरजी नेनसी एल्फिन्स्टन सर्कल,
हुकुमचंद राम भगत मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
हरगोविंददास भयजी,
हीराचंद धनेचंद कालबादेवी
हरदत्तराय रामप्रताप शेख मेमन स्ट्रीट, कमीशन एजंट एण्ड मरचेंट
हरनंदराय रामनारायण मरचेंट
हरनंदराय सूरजमल, मरचेंट
हरनंदराय वैजनाथ कालबादेवी मरचेंट

मेसर्स गोरखराय गणपतराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रामगढ़ मारवाड़में है। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहां ५५ वर्ष पूर्व सेठ गोरखरामजीने स्थापित किया था। आपका देहावसान हुए करीब ५२।५३ वर्ष हुए। वर्तमानमें इस फर्मका सञ्चालन आपके पौत्र सेठ गनपतरायजी करते हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई।

रामगढ़में आपकी एक धर्मशाला बनी है, एवं एक पाठशाला चल रही है। सेठ गनपतरायजी यहांकी कपड़ा कमेटीके सभापति रह चुके हैं। आपके १ पुत्र हैं जिनका नाम रामगोपालजी है। आप ही यहांकी फर्मका काम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

बम्बई—मेसर्स गोरखराय गनपतराय गनपतबिल्डिंग—धनजी स्ट्रीट नं०३—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी कपड़ेका घरू तथा सब प्रकारकी आड़तका काम होता है।

मेसर्स चांदमल घनश्यामदास

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसके हेड ऑफिस अजमेरमें दिया गया है। बम्बई शाखाका पता कालबादेवी रोड है। यहां हुंडी चिट्ठी बैंकिंग, रूई और कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स जौहरीमल रामलाल

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल जातिके (पोद्दार) हैं। इस फर्मका सम्बन्ध सेठ भीमराजजीसे है। आपके समयमें इस फर्मपर माउरेमें अफीमका व्यापार होता था। बैंकिंग काम भी यह फर्म करती थी। इसके अतिरिक्त यह फर्म अनूपसरके परगना बड़ी तादादमें विजयपत भेजती थी।

सेठ भीमराजजीके पुत्र हरदेवदासजीके समयमें उपरोक्त नामसे यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व मुनीम रामचन्द्रजीने बम्बईमें स्थापित की। अमृतसरमें यह फर्म राजा रणजीतसिंहजीके समयसे स्थापित है।

इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ रामकुंवारजी एवं हनुमानबक्सजीने की। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामकुंवारजीके पुत्र नन्दकिशोरजी व हनुमानबक्सजीके पुत्र सेठ दुर्गादासजी सेठ किशनलालजी तथा सेठ गोविन्दबल्लभजी हैं।

आपका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(४) मंगलदास मारकीट—यहां देशी, कटपीस और सब प्रकारका माल थोक और परचून बिकता है।

(५) जकरिया मस्जिद और चकला स्ट्रीट—इस बाजारमें विलायती कटपीस और वायला सिल्कके व्यापारी बैठते हैं।

(६) मोलेश्वर—यहांपर स्त्रियोपयोगी सब तरहके फेन्सी कपड़े और फीतें परचून बिकते हैं।

बम्बईके कपड़ेके व्यापारको सुदृढ़ रूपसे चलाने और उसके सम्बन्धमें पड़नेवाले झगड़ोंको निपटाने, तथा नियम बनानेके लिए बाम्बे नेटिव पीसगुड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन बहुत अच्छा है। इसके प्रमुख ऑनरेबुल सर मनमोहनदास रामजी हैं।

व्यापारिक नियमके अनुसार इन बाजारोंमें गांवठी और विलायती दोनों प्रकारके मालपर भिन्न २ रूपमें बटाव (कमीशन) मिलता है। यह बटाव तीन प्रकारका होता है:—

(१) बटाव—यह प्रति सैकड़ा और कहीं २ प्रति थानके हिसाबसे निश्चित रहता है। इसमें भी बंधी गांठ और खुले मालके बटाव, और मेमेण्टकी मुद्दतके दिनोंकी तादादमें अन्तर रहता है।

(२) शाही—यह भी एक प्रकारका बटाव है। जो पूरी गांठपर मिलता है।

(३) बारदान—यह भी एक प्रकारका बटाव है जो विलायती तथा और भी कई किस्मके मालपर मिलता है।

इस बटावकी तादाद तथा इस सम्बन्धकी विशेष जानकारीके लिए बाम्बे नेटिव्हपीस गुड्स एसोसिएशनकी नियमावली मंगाकर देखना चाहिए।

कपड़ेके व्यवसायी

मेसर्स गोकुलदास डुंगरसी जे० पी०

इसफर्मके मालिक खंभालिया (जाम नगर) के निवासी भाटिया जातिके सज्जन हैं।

इसफर्मका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ डुंगरसी पुरुषोत्तमके हाथोंसे हुआ था। इसके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ रतनसी डुङ्गरसीके हाथोंसे प्राप्त हुई।

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोकुलदास डुंगरसी जे० पी० हैं। आपने मट्ट छगनलाल से व्यापारिक शिक्षा पाई है। इसफर्मपर पहिले वल्लभदास लखमीदासके नामसे व्यापार होता था। सेठ गोकुलदासजीको इसी साल २२ अप्रैलको गवर्नमेंटसे जे० पी० की उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी ओरसे सेठ रतनसी डुंगरसीके नामसे गायवाड़ीमें एक औषधालय तथा सेठ लखमीदास गोकुलदासके नामसे एक व्यायामशाला स्थापित है।

खम्भालिया (जाम नगर) में सेठ पुरुषोत्तम डुंगरसीके नामसे आपका एक अस्पताल चल रहा है। द्वारकाजीमें और पोरबन्दर स्टेशनके पास आपकी विशाल धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

३ जयपुर—मेसर्स श्रीराम नारायण जौहरीबाजार-झाड़दला—यहां सराफी तथा आढ़तका काम होता है।

४ ब्यावर—देवकरणदास रामकुंवार—यहां आपकी एक जिनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरी है।

५ कलकत्ता (मानभूमि) करमाटान कोलेरी—श्रीराम कोलकम्पनी—यहां इस फर्मकी १ कोयलेकी खान है।

६ महुवा रोड—(ब्यावर) मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार—यहां रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास जोधराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी भिवानी (हिसार)के हैं आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ बंशीलालजीने संवत् १८५३ में स्थापित किया, इसकी विशेष तरक्की भी आपही के हाथोंसे हुई। इस समय आप अधिकतर देशहीमें निवास करते हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन आपके छोटे भाई श्री सेठ रामचन्द्रजी बी० ए० करते हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं, तथा अग्रवाल समाजके कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त आप मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर भी हैं।

श्रीयुत रामचन्द्रजी बी०ए० ने देशव्यापी असहयोगआन्दोलनके समय अच्छा भाग लिया था। उस समय आपने अपना अमूल्यसमय देकर देश सेवा करते हुए १ मासतक जेलयात्रा भी की थी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज धानजीका झाड़—यहां हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलसी, सोना, चांदी तथा शेयरकी आढ़तका काम होता है।

२ करांची—मेसर्स रामप्रताप रामचन्द्र जोरर बोल्टन मार्केट बंदररोड—(T. A. Bansal) यहां हुण्डी चिट्ठी तथा रुई, गल्ला, तिलहन आदि सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे भिवानीमें एक धर्मशाला है, तथा मथुरामें एक अन्नक्षेत्र एवं धर्मशाला एवं अन्य क्षेत्र चालू है।

मेसर्स फूलचंद केदारमल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (सीकर) निवासी माहेश्वरी (सोढ़ानी गोत्र) के सज्जन हैं। इस फर्मको ३० वर्ष पूर्व सेठ फूलचन्दजी और उनके छोटे भाई सेठ केदारमलजीने स्थापित किया था। आप दोनोंका देहावसान होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ फूलचन्दजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी एवं हनुमानबख्शजी तथा सेठ केदारमलजीके पुत्र श्री मंगलचन्दजी हैं। लक्ष्मणगढ़में आपका एक मंदिर, एक धर्मशाला, और एक बगीचा बना हुआ है। आपकी ओरसे वहां १ कन्यापाठशाला भी चल रही है जिसमें ८० कन्याएं शिक्षा पाती हैं। लक्ष्मणगढ़के ब्राह्मण विद्यालयके लिए आपने एक मकान दिया है।

मेसर्स ब्रजमोहन सीताराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लच्छीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको आपके पुत्र श्री० ब्रजमोहनजीने स्थापित किया। श्रीयुत ब्रजमोहनजीके २ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः सीतारामजी तथा श्रीकृष्णदासजी हैं। वर्तमानमें आप सब सज्जन दुकानके काममें भाग लेते हैं। आपकी फर्म इण्ट इण्डिया काटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स और ग्रेन एण्ड सीड्स मरचेन्ट एसोसिएशनकी मेम्बर है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) ब्रजमोहन सीताराम १९२।१९४ कालबादेवी, बम्बई (T. A. Pooddarbares) यहां सब प्रकार की कमीशन एजंसीका काम होता है। साथ ही वायदेका काम भी होता है।

(२) मानकराम लच्छीराम फतेहपुर—(सीकर) यहां आपका निवास स्थान है। तथा आपकी यहां शानदार इमारत बनी हुई है।

मेसर्स बालमुकुन्द चन्दनमल मूथा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पीपाड़ (राजपूताना) है। आप ओसवाल स्थानक वासी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ बालमुकुन्दजीने स्थापित किया तथा इसकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। ८ वर्ष पूर्व आपका देहावसान होगया। आप अ० भा० स्थानकवासी कान्फ्रेन्स अजमेरके सभापति रहे थे।

इस समय इस फर्मका संचालन सेठ बालमुकुन्दजीके पुत्र सेठ चन्दनमलजी तथा आपके भतीजे सेठ मोतीलालजी करते हैं। सेठ मोतीलालजी स्था० जै० कान्फ्रेंसके [illegible] हैं। सितारामें आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सतारकी फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

(१) हेड आफिस—मुकुन्ददास हजारीमल सतारा	इस फर्म पर हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है। कमीशन एजेंसीका काम भी यह फर्म करती है।
(२) सोलापुर—चन्दनमल मोतीलाल सोलापुर	यहां सराफी तथा कपड़ेकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।
(३) बम्बई—बालमुकुन्द चन्दनमल टिकमजी बिल्डिंग कालबादेवी	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी [illegible] का काम होता है।

मेसर्स मुरारजी वृन्दावन

इस फर्मका स्थापन २५ वर्ष पूर्व सेठ मुरारजी दामोदरके हाथोंसे हुआ था। आप भाटिया जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान खम्भालिया (जामनगर) है।

सेठ मुरारजी अपनी जातिमें बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपने प्रारंभमें सेठ विश्राम धनजीके भागमें व्यापार किया, एवं मुरारजी वृन्दावन नामक फर्म स्थापित की। आपका देहावसान अभी कुछ मास पूर्व होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके भागीदार सेठ वृन्दावन वालजी, सेठ मूलजी वालजी, और सेठ गोकुलदास दामोदरदास हैं।

इस फर्मके मालिक वैष्णव संप्रदायके सज्जन हैं। सेठ वृन्दावन वालजी, श्री गोकुलदासजी महाराजके ऑनरेरी प्राइवेट सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मुरारजी वृन्दावन, चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—(T a Dominion) इस फर्मका प्रधान व्यापार गांठी थोक और सूतीका हैं। यह फर्म बड़ी २ मिलोंके देशी कपड़ेका थोक व्यवसाय करती हैं। अभी २ वर्षसे फ्रामजी पेटिट मिलका कमीशनका वर्क भी इस फर्मके द्वारा होता है।

सेठ राघवजी पुरुषोत्तम

राघवजी सेठ लुहाना जातिके कच्छ (तुरला) के निवासी सज्जन हैं। आप ३० वर्षोंसे देशी कपड़ेका व्यापार करते हैं। तथा २३ वर्षोंसे सेठ करीम भाई इब्राहिमके साथ कपड़ेकी सेलिंग एजंसीका व्यापार पार्टनरके रूपमें करते हैं। पहिले आप २ वर्षतक पेटिट मिलकी एजंसीमें भी पार्टनर थे। इसके भी पूर्व आप जीवराज बालू और खटाऊ मकनजीकी मिलोंकी सेलिंग एजंसीका काम करते थे। राघवजी सेठ कच्छी लुहाना समाजकी ८।१० संस्थाओंके ट्रस्टी हैं। तिलक स्वराज फंडके ट्रस्टी भी आप रहे थे। उस फण्डमें आपने अपनी ओरसे ४० हजार रुपये भी दिये थे। वर्तमानमें आप सर करीम भाई इब्राहिमकी १३ मिलोंका करीब ४।५ करोड़का माल प्रति वर्ष बचते हैं।

आपका पता राघवजी सेठ c/o करीम भाई इब्राहिम एण्ड संस शेख मेमनस्ट्रीट बम्बई है।

मेसर्स रावसाहब हरजीवन वालजी जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक राव साहब सेठ हरजीवन वालजी जे० पी० हैं। आपका मूल निवास स्थान खंभालिया (जामनगर) है, पर आप बहुत समयसे बम्बईहीमें निवास करते हैं। आप भाटिया सज्जन हैं।

मेसर्स चतुर्भुज गोवर्द्धनदास मूलजी जेठा मारकीट
,, चतुर्भुज शिवजी मूलजी जेठामारकीट
,, जेठाभाई गोविन्दजी ,,
,, जेठाभाई हीरजी मूलजी जेठामारकीट
,, जेठाभाई रामदास ,,
,, जेठाभाई वालजी लक्ष्मीदास मारकीट ३ री गली
,, देवकरणमूलजी गोमुखगली मूलजी जेठा मारकीट
,, डी० डी० पटेल मूलजी जेठामारकीट
,, दामोदर हरीदास मूलजीजेठामारकीट चौकल गली
,, गनेश नारायण ओंकारमल मूलजी जेठामारकीट
,, प्रागजी वृंदावन चौखलगली ,,
,, वालजी सुन्दरजी पडियालगली ,,
,, नटवरलाल केशवलाल प्रागराजगली मूलजी जेठा मारकीट
,, नाथूराम रामनारायण धर्मराज गली
,, वल्लभदास चतुर्भुज शिवजी चौक मू० जे० मा०
,, वालजी शामजी कम्पनी चौक मू० जे० मा०
,, वंशीधर गोपालदास चौक मू० जे० मा०
,, भीमजी द्वारकादास लक्ष्मीदास मारकीट १ गली
,, मोतीलाल कानजी चौक मू० जे० मा०
,, मनमोहनदास रामजी गोविन्दचौक मू० जे० मा०
,, धरमसी माधवजी चौकलगली
,, मुरारजी गोकुलदास एण्डकम्पनी मुरारजी गोकुलदास मारकीट कालबादेवी
,, राव साहब हिम्मतगिरि प्रतापगिरि चम्पागली बम्बई
,, वामनश्रीधर आपटे मूलजी जेठामारकीट
,, लालजी नारायणजी चौक मू० जे० मा०
,, मुरारजी कानजी संचागली मू० जे० मा०
,, रघुनाथदास प्रागजी मूलजीजेठामारकीट
,, मफतलाल गगलभाई प्रागराजगली मू० जे० मा०
,, राघवजी पुरुषोत्तम c/o करीमभाई इब्राहिम एण्ड संस शेखमेमन स्ट्रीट
,, हरीदास धनजी मूलजी छीपीचाली
,, राघवजी आनन्दजी चौकलगली मू० जे० मा०
,, रामदास माधवजी चम्पागली
,, वालजी सुन्दरजी पडियागली मू० जे० मा०
,, मुरारजी कानजी मूलजी जेठा मारकीट

सन् १९१६ में गवर्नमेंटसे राव बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई है। आपका अपने समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपकी ओरसे पूनामें मारवाड़ी विद्यार्थी बोर्डिंग हाऊस नामक एक बोर्डिंग हाऊस बना हुआ है जिसमें ४० विद्यार्थियोंके रहनेका स्थान है। इसके अतिरिक्त करीब ५० हजारकी लागतकी एक धर्मशाला आपकी ओरसे वृन्दावनमें बनी हुई है। पूनाके पब्लिक हास्पीटलके चंदेमें आपने ५० हजार रुपया दिये हैं। पूना एवं वृन्दावनमें आपकी ओरसे अन्नक्षेत्र चल रहे हैं। आप तृतीय महाराष्ट्र प्रांतीय माहेश्वरी परिषद्के स्वागताध्यक्ष, और छठी बम्बई प्रांतीय माहेश्वरी परिषद्के अध्यक्ष रह चुके हैं। पूना रविवार पेठमें आपका एक आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय चल रहा है।

श्रीहनुमंतरामजी सेठ रामनाथजीके यहां दत्तक आये हैं। वर्तमानमें आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीनिवासजी और श्रीवल्लभजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ पूना—(हेड आफिस) मेसर्स ताराचन्द रामनाथ रविवार पेठ-कपड़गंज—यहां यह फर्म करीब १०० वर्षोंसे स्थापित है। इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। आपकी फर्मकी यह विशेषता है कि इसपर विदेशका बुना कपड़ा नहीं बेचा जाता।

२ बम्बई—रामनाथ हनुमन्तराम रा० ब० लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी नं० २—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार होता है। आपकी फर्म रुई व किसी प्रकारके वायदेका व्यापार नहीं करती।

३ नागपुर—रामनाथ रामरतन इतवारिया बाजार—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

४ कोयम्बतूर—(मद्रास) श्रीनिवास श्रीवल्लभ—यहांपर हैंडलूमका बना देशी कपड़ा बेंचा जाता है।

५ सूरत—बद्रीनारायण झूमरमल छापरिया सेरी—यहांपर देशी कपड़ेका व्यापार होता है।

६ बम्बई—हनुमन्तराम रघुनाथ मूलजी जेठा मार्केट- यहांपर देशी कपड़ेका तथा आढ़तका व्यापार होता है।

७ उमरेड (नागपुर) रामनाथ रामरतन—यहांपर कपड़ेका बिजिनेस होता है।

८ पौनी (नागपुर) मेसर्स रामनाथ राठी—यहांपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकरणदास खेतान

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रामकरणदासजीके पुत्र श्रीरामविलासरायजी अग्रवाल जातिके झूंझनूं निवासी हैं। आप फर्मका कार्य अपने पुत्रोंको सौंपकर हरिद्वार निवास करते हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब २०।२५ वर्ष हुए।

सें० आनन्दरामजी (आनन्दराम मंगतूराम) बम्बई

से० ब्रजमोहनजी (छाजूराम ब्रजमोहन) [illegible]

[illegible] (ग [illegible]) बम्बई

कुंवर [illegible] ([illegible]

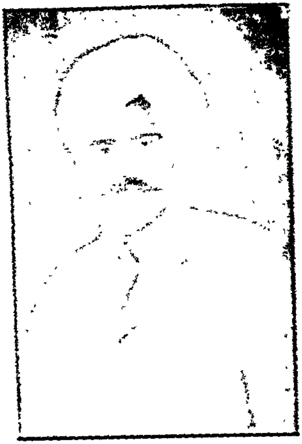

[illegible] सेठ [illegible] ([illegible]) बम्बई

सेठ [illegible] ([illegible]) बम्बई

स्व: [illegible] ([illegible]) बम्बई

सेठ [illegible] ([illegible]) बम्ब...

२ कलकत्ता—मेसर्स कालूराम बृजमोहन १८० मल्लिक कोठी—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

३ कटनी (सी० पी०) मेसर्स कालूराम पूरनमल—यहांपर कपड़ेका व्यवसाय होता है।

४ जयपुर (जयपुर) कालूराम शिवदेव—यहां आपका खास निवास है, तथा सोने चांदीका व्यापार होता है।

५ बम्बई—पूरनमल रामनिवास मूलजी जेठा मारकीट चम्पागली—यह फर्म रेमंड ऊलन मिलकी कमीशन सोल एजंट है।

मेसर्स गणेशनारायण ओंकारमल

इस फर्मके मालिक मलसीसर (जयपुर) के निवासी अग्रवाल जातिके (गर्ग-गोत्र) के हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं इस फर्मको करीब ८ वर्ष पूर्व बम्बईमें आपहीने स्थापित किया। आप विशेषतर पडरौना (हेड आफिस) में ही रहते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ पडरौना (गोरखपुर) मेसर्स देवीदास सूरजमल—यहां कपड़ेका व्यापार और जमींदारीका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल सागरमल, नं० ६ नारायणप्रसाद लेन—यहां आढ़त तथा कपड़ेका व्यवसाय और कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स गणेशनारायण ओंकारमल-बालाभाईका माड़ कालबादेवीरोड (ता० प० मलसीसरका) यहां हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़त व मिलोंके कपड़ेको सप्लाईका काम होता है।

४ कानपुर—मेसर्स सूरजमल हरीराम जनरलगंज—यहां गुड़, शक्करकी आढ़त तथा कमीशनका काम होता है।

५ कानपुर—मेसर्स गणेशनारायण मन्नालाल जनरलगंज—यहांपर सर करीमभाई इब्राहिमकी १४ मिलोंके कपड़ेकी कमीशन एजंसी है।

६ कलकत्ता—सूरजमल हरीराम बड़ाबाजार कटला—यहां कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है।

७ बगहाबाजार (गोरखपुर) देवीदास सूरजमल—इस दुकानपर कोठी गल्लेका और अनाजका काम होता है।

८ सिसवा बाजार (गोरखपुर) सूरजमल हरीराम—कमीशन एजंसीका काम होता है।

श्री लाला दुनीचन्दजीको सन् १९२० में गवर्नमेण्टने रायबहादुरकी पदवी प्रदानकी है, आप अमृतसरमें सेकण्ड क्लास ऑनररी मजिस्ट्रेट हैं। आपके पितामह लाला जिवन्दामलजीका महाराजा रणजीतसिंहजीसे अच्छा स्नेह था।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रा० ब० दुनीचन्द दुर्गादास चौकसी बाजार, (T. A. Laranja) यहां कपड़ेकी आढ़तका व पक्का व्यापार होता है।

(२) अमृतसर—दुनीचन्द बिशनदास आलूवाला कटड़ा, T. A. mehara यहां कपड़ेके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

मेसर्स नीकाराम परमानंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहराइस्माइलखां है। आप पंजाबी सज्जन हैं। इस फर्मको आपका बम्बईमें सेठ नीकारामजी व परमानन्दजी दोनों भाइयोंने करीब २५ वर्ष पूर्व की थी। इस समय बम्बई फर्मके मैनेजर श्री रामचन्द्रजी परमानन्द जी हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) देहराइस्माइलखां—टिकायाराम नीकाराम—यहां बैंकिंग व कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) कलकत्ता—नीकाराम परमानन्द १५६ हरिसन रोड-यहां भी आढ़त व बैंकिंग वर्क होता है।

(३) बम्बई—नीकाराम परमानन्द मस्जिद बन्दररोड बारभाई मोहल्ला नं० ३, T. A. [illegible]-der आढ़त व सराफीका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—नीकाराम परमानन्द-इस फर्मपर कई मिलोंकी कपड़ेकी एजेंसी है, तथा आढ़तका काम होता है।

(५) देहली-नीकाराम परमानन्द-यहां बैंकिंग व कमीशन एजेंसीका काम होता है।

मेसर्स मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान [illegible] है। आप [illegible] जातिके सज्जन हैं। इस- [illegible]

(१) बम्बई—मेसर्स जौहरीमल रामलाल कालबादेवी, भीमराज बिल्डिंग...यहां हुंडी, चिट्ठी व कपड़ेका थोक व आढ़तका काम होता है।

(२ अमृतसर - मेसर्स जौहरीमल रामलाल आलू कटरा—यहां सब प्रकारके कपड़ेका थोक व्या तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक पंजाब (भिवानी) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको करीब ३० वर्ष पूर्व सेठ तुलसीरामजी व रामस्वरूपजीने स्थापित किया। तुलसीरामजीका देहावसान करीब ८।१० वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ रामस्वरूपजी तथा श्री म नलालजी एवं तुलसीरामजीके पुत्र श्री प्रह्लादरायजी करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप-बादामका झाड़ कालबादेवी नं० २—यहां गेहूं अलसी, र तथा गल्लेका, हाजिर और वायदेका व्यापार व आढ़तका काम होता है।

२ ब्यावर—तुलसीराम रामस्वरूप —यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

३ भिवानी—बल्देवदास तुलसीराम लाहेड बाजार —यहां आपका निवासस्थान है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। बम्बईमें यह फर्म बहुत पुरा है। यहां इसे स्थापित हुए करीब १०० वर्षसे अधिक हुए। इस फर्मपर पहिले श्रीराम दौल रामके नामसे व्यापार होता था। करीब ४१ वर्षसे वर्तमान नामसे यह फर्म काम कर रही है इसे सेठ देवकरणजीने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आपका देहावसान संवत् १९७४ में हुआ आपके पुत्र सेठ रामकुंवारजीका भी देहावसान हो गया है। अब इस समय इस फर्मके मालि मोतीलालजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। नवलगढ़में इस फर्मकी ओरसे एक धर्मशाला ए मन्दिर और ब्यावरमें एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार मारवाड़ीबाजार—यहां हुंडी चिट्ठी सराफी तथा क गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार काटन स्ट्रीट नं० १३७—यहां सराफी तथा आढ़तक काम होता है।

सेठ पन्नालाल गोपालदास, बम्बई
(पृ० नं० ५६८)

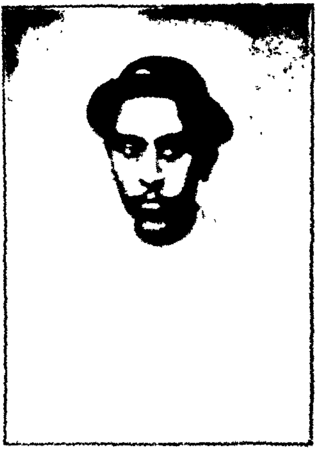

स्व० सेठ गोकुलदास [illegible], बम्बई

सेठ [illegible] बम्बई

सेठ [illegible] बम्बई

स्व० सेठ फूलचन्दजी सोदानी (फूलचन्द केदारमल) बंबई

स्व० सेठ केदारमलजी सोदानी (फूलचन्द केदारमल) ब

सेठ मानकचन्दजी ~ ० सेठ फूलचन्दजी, बंबई

सेठ हनुमानबक्सजी ० सेठ फूलचन्द

(३) बेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचन्द दीपचन्द कम्पनी T. A, Gheo यहांपर मोती, अनाजका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(४) दुबई (पारशियन गल्फ)—T. A Ghee यहां भी मोती अनाज और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्मको सेठ ठाकुरदासजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ पेरूमल देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास, और अगरिभाई हैं। आप लोग शिकारपुरके निवासी रोहेड़ा जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर (हेड ऑफिस) ठाकुरदास देऊमल—कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई-ठाकुरदास देऊमल; आदिभाई मोहल्ला—कपड़े की खरीदीका काम होता है।

(३) करांची-ठाकुरदास देऊमल-बम्बई बाजार—कपड़े का व्यवसाय होता है

मेसर्स तेजभानदास उद्धवदास

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी हैं। इस फर्मपर पहिले तेजभानदास सुंदरदासके नामसे व्यापार होता था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत ठारूमल, तेजभानदास तथा उद्धवदासजीके पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—उद्धवदास ठारूमल-यहां हेड ऑफिस हैं तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई--तेजभानदास उद्धवदास बाराभाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Tejbhan) यहां आपकी फर्मोंपर भेजनेके लिये कपड़ेकी घरू खरीदीका काम होता है।

(३) करांची--तेजभानदास ठारूमल बम्बई बाजार T, A, Hanuman यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम मोहनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास शिकारपुर (सिंध) है। आप छावड़िया जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ३० वर्ष हुए और इस नामसे व्यापार करते हुए १० वर्ष हुए। इसे सेठ दौलतरामजीने स्थापित किया तथा इसके वर्तमान मालिक आपही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, केदार-भवन कालबादेवी रोड (T. A. Phul Kedar) यहां सराफी, चांदी, सोना, गल्ला, किराना, कपड़ा तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका व्यापार और चांदी सोना तथा रुईका काम होता है। इस फर्मपर हनुमानबख्श मंगलचन्द के नामसे तिल्हन और गेहूंका भी काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, सौदागर हाऊस नं० ३ चितरंजन एवेन्यू रोड (T. A. Fresh) यहां गल्लेका व्यवसाय होता है इसके अतिरिक्त कलकत्तेके कर्लिंग स्ट्रीटमें आपकी एक आफिस है उसके द्वारा हैसियनका एक्सपोर्ट और चीनीका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। यहां आपकी २ बिल्डिंग्ज हैं।

(३) देहली—मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद न्यूक्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी व्यवसाय होता है।

—:*:—

मेसर्स बंशीधर गोपालदास

इस फर्मके मालिक फर्रुखाबाद (यू० पी०) के निवासी रस्तोगी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ बंशीधरजीने ६० वर्ष पूर्व स्थापित किया था, तथा इस फर्मके व्यवसायकी वृद्धि सेठ बंशीधर जी और उनके पुत्र सेठ माधोदास जी और गोपालदास जी के हाथोंसे हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ गोपालदासजी एवं उनके पुत्र सेठ हरनारायणजी तथा सेठ गोपालदासजीके भतीजे सेठ रामनारायणजी एवं सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। इस कुटुम्बकी ओरसे बद्रिकाश्रम और प्रयागमें धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स बंशीधर गोपालदास मुरारजी गोकुलदास मारकीटके ऊपर कालबादेवी रोड, इस फर्मपर कपड़ेका थोक व आढ़तका व्यापार तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स माधवदास गोपालदास मूलजी जेठा मारकीट गोविंदचौक—इस फर्मपर मदुराके वेंकटेश्वर, व कर्नाटक मिल तथा बंगलोर मिलकी एजेन्सी है। इसके अतिरिक्त कपड़ेका थोक व परचूनी व्यापार होता है

(३) कानपुर—मेसर्स बंशीधर गोपालदास मनालगंज—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) फर्रुखाबाद—मेसर्स बंशीधर गोपालदास—यहां आपका खास निवास है, तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स वेरामल परशुराम

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अनूजा जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वेरामलजी, परशुरामजी और जुहारमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स वेरामल परशुराम, यहां कपड़े का व्यापार होता है।

२ बम्बई—वेरामल परशुराम मूलजी जेठा मारकीट चौक (Ghgharui) यहां गांठी कपड़ेका व्यापार होता है।

३ करांची—वेरामल केवलराम गोवर्द्धनदास मारकीट, यहां गांठी कपड़ेका व्यापार होता है।

४ सक्खर—वेरामल जुहारमल " "

कमीशन एजंट्स

आशाराम मोतीलाल, कालबादेवी
अनोलकचंद नेवाराम, कालबादेवी
आसाराम लालावत कसाराचाल
अनूलक अनोपचंद कं०, सराफ बाजार
ओंकारलाल निर्भीलाल, नदानका काड़, कालबादेवी
उसमान हाजी जूलब फरनीचर बाजार
केवलचंद कानचंद कालबादेवी रोड
कालूराम चौथमल कालबादेवी रोड
काकासिंह जगन्नाथ, मारवाड़ी बाजार
किशनलाल हीरालाल, कालबादेवी रोड
कुंवरजी बनसी कम्पनी, सराफ बाजार
केशरीमल आनन्दीलाल, कालबादेवी
कोडूमल जेठानंद, मुम्बादेवी लेन
खेमलीलाल सुंदरलाल, मोतीबाजार
गोविन्दराम सेक्सरिया, कालबादेवी रोड
गिरधारीलाल बालबक्स, कसाराचाल
गोरधनदास ईश्वरदास, सराफबाजार
गंगाराम आसाराम तांबाकाटा
चंदूलाल गनेशदास, कालबादेवी
चांदमल घनश्यामदास कालबादेवी
चांडूमल वलीराम कर्नाक बन्दर
चतुर्भुज गनेशीराम, कालबादेवी
चतुर्भुज पीरमल शेखमेमन स्ट्रीट
चिरंजीलाल हनुमानप्रसाद कालबादेवी रोड
चौथमल मूलचंद कालबादेवी
छोटेराम जेवर कसाराचाल
जयगोपालदास घनश्यामदास पारसीगली
जगन्नाथ किशनलाल कालबादेवी
जीवनराम मोदी कालबादेवी
जीतराम केदारनाथ सराफबाजार
जोगीराम ज्ञानीमलचंद कालबादेवी
जूलब मक्का कोलेबाड़ रहिम बिल्डिंग
जोहरीमल ज्ञानचन्द्र पादूनका काड़, कालबादेवी

मंगलचन्दजी (फूलचन्द केदारमल) बम्बई

सेठ मोतीलालजी मूथा (बालमुकुन्द चन्दनमल) बम्बई

मथुरादासजी (भीमाजी मोतीजी) बम्बई

सेठ सागरमलजी (रामकिशनदास सागरमल बम्बई) पृ० १३८

मेसर्स भीमाजी मोतीजी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान देलदर (रियासत सिरोही) है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब ५५ वर्ष हुए। इसे यहां सेठ भीमाजीके पुत्र सेठ चत्राजीने स्थापित किया था। आप पोरवाल (बीसा) जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चत्राजीके पुत्र सेठ भभूतमलजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजन मिला। बम्बईकी पालाड़ पार्टीके सभापतिका काम करते हुए आपको करीब १५ वर्ष हो गये हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स भीमाजी मोतीजी चम्पागली, मूलजी जेठा मारकीटके सामने—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स भीमाजी भभूतमल सराफ बाजार—यहां भी हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

३ अहमदाबाद—मेसर्स भीमाजी मोतीजी मस्कती मार्केट—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

४ अहमदाबाद—मोतीजी भभूतमल मस्कती मार्केट—यहां आपकी एक कपड़े की दुकान है।

मेसर्स रघुनाथमल रिधकरण बोहरा

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रिधकरणजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास जोधपुर (मारवाड़) है। श्रीयुत रिद्धकरणजी संवत् १८५० में सर्व प्रथम बम्बई आये कुछ समयके पश्चात् आपने यहांपर दुकान स्थापित की। वर्तमानमें आप दि हिन्दुस्तानी नेटिव मरचेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—रघुनाथमल रिधकरण विट्ठलवाड़ी, पत्थरका माला—यहां कपड़ा किराना चांदी सोना तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स रामनाथ हनुमंतराम रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ हनुमंतरामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान खाड़ोपा ग्राम (जोधपुर-स्टेट) में है।

इस फर्म का हेड आफिस पूनामें है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ हनुमंतरामजीने स्थापित किया। आप सेठ रामनाथजीके पुत्र हैं। आपको

१० तनरीफ (नार्थ अफ्रिका) ११ कटेनिया १२ माल्टा १३ जिब्राल्टर १४ लैसपालमस १५ बाउपरेसो १६ मेलीलिया १७ कोलोन १८ पनामा १९ मनीला २० बताव्या २१ केंटान २२ हांगकांग २३ शंघाई २४ योकोहामा २५ कोबी आदि स्थानों पर भी है।

मसर्स पोमल ब्रदर्स

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान—हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८५८ में स्थापित हुई। इस फर्मको सेठ पोमल लियामल एवं, आपके ४ भाई सेठ वलीरामजी, सेठ मूलचन्दजी, सेठ लेखरामजी एवं सेठ सहजरामजीने स्थापित किया था। प्रारंभसे ही यह फर्म भारतीय पुरानी कारीगरी एवं पुरानी विचित्र वस्तुओंको चीन, यूरोप, अफ्रिका आदि विदेशोंमें भेजकर उनके विक्रय करनेका व्यवसाय करती है। भारतीय अनुपम वस्तुओंका प्रचार विदेशोंमें करना, एवं भारतीय कारीगरीको उत्तेजन देना ही इस फर्मका काम है। ज्यों ज्यों आपका व्यापार विदेशोंमें ख्याति पाता गया, त्यों-त्यों आप हरेक देशमें अपनी ऑफिसें स्थापित करते रहे, आज दुनियाके कई प्रसिद्ध २ देशोंमें आपकी दुकानें हैं, एवं बहुत प्रतिष्ठाके साथ वहां आपका माल खपता है। यह फर्म सिंधवर्कके नामसे मशहूर है।

इस फर्मकी ओरसे हैदराबाद (सिंध) में सेठ पोमलजीके नामसे एक अस्पताल स्थापित है, तथा वहींपर आपका एक स्कूल भी है। वालकेश्वरपर सेठ नारायणदासजीके नामपर सिंधी सज्जनोंके लिये एक सेनेटोरियम आपकी ओरसे बना हुआ है।

इस समय इस फर्मके मालिक इस फर्मके स्थापनकर्ता पांचों भाइयोंके पांच पुत्र हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं। (१) सेठ नारायणदास पोमल, (२) सेठ टोकूमल सहजराम (३) सेठ पेसूमल मूलचंद (४) सेठ रोचामल वलीराम (५) सेठ किशनचन्द लेखराज। इन पांचों सज्जनोंमेंसे इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता एवं सबमें बड़े सेठ नारायणदासजी हैं। सेठ नारायणदासजी हैदराबादमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। तथा सेठ पेसूमलजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नरीका काम करीब ७ वर्षोंसे कर रहे हैं। सेठ किशनचन्दजी हैदराबाद सनातनधर्म सभाके स्थापक हैं एवं वर्तमानमें आप उसके प्रेसिडेन्ट भी हैं। आपने उक्त सभाके लिये एक स्थान भी दिया है, तथा बम्बईकी जापानी सिल्क मर्चेंट्स एसोसियेशनके आप ६ वर्षोंसे सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद—(सिंध) मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता-पोमल—यहां इस फर्मका हेड आफिस है, तथा यहां आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है।

(२) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ तारका पता—पोमल—यहां रेशमी कपड़ेका आयात व चालके साथ बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा रेशमी माल, फ्रूंसका

स्व० सेठ हनुमंतरामजी (हनुमंतराम राममनाथ) बम्बई

सेठ द्वारकादास नागपाल (पोकरदास मेराज)

(१३) तनरीफ (नार्थ आफ्रिका) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, (Teneriffe) तारकापता पोमल—यहां भारतीय कारीगरी तथा हीरा पन्ना और जवाहरातका व्यापार होता है।

(१४) त्रिपोली (इटली)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारकापता पोमल यहां भी उक्त व्यापार होता है।

(१५) अलजेर (फ्रांस)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल ,,

पूर्वीय देशोंकी दुकानें

(१६) बटाव्या (जावा) मेसर्स पोमल ब्रदर्स (Batavia) तारकापता पोमल—यहां भारतकी पुरानी कारीगरी तथा जवाहरातका व्यापार होता है। आपकी यहां आसपास बेंगाजी, गुलाब्या आदि स्थानोंपर तीन चार दुकानें हैं।

(१७) जावा—मेसर्स, पोमल ब्रदर्स, तारको पता पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है

(१८) कोआलामपुर (मलायास्टेट)—उपरोक्त व्यापार होता है, तथा यहां पर आपकी रबर की खेती है।

(१९) सेगून (फ्रेंच कालोनी)—यहां रेशमी कपड़ोंका व्यापार होता है।

(२०) मनेला (फिलिपाइंस—अमेरिका) यहां भी रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है। इसके आसपास आपकी तीन चार दुकानें हैं।

(२१) हांगकांग—मेसर्स पोमल ब्रदर्स HongKong तारका पता पोमल—इस बंदरके द्वारा चीन और भारतका सब व्यापार विदेशोंके साथ होता है, तथा चीनकी कारीगरीका माल भी इस बंदरसे विदेशोंमें भेजा जाता है।

(२२) केंटन (चीन) (Canton) इस बन्दरपर भी हांगकांगकी तरह काम होता है।

(२३) शंघाई (Shanghai)—(चीन) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारका पता पोमल चीनसे रेशम खरीद कर यहांके द्वारा बड़ी तादादमें सब मुल्कोंको एक्सपोर्ट किया जाता है, इसके अतिरिक्त कमीशनका काम होता है।

(२४) कोबी (जापान) kobe)—एक्सपोर्टका व्यापार होता है।

(२५) कोलोन (Colon)—(नार्थ एण्ड साउथ अमेरिकाके सेंटरमें, पनेमा नहरके पासमें) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल—यहांसे रेशम एक्सपोर्ट होता है।

(२६) बेरा (ईस्ट आफ्रिका) पोर्तुगीज—उपरोक्त व्यापार होता है।

(२७) सेल्सबरी (,,)— ,,

(२८) योकोहामा (जापान) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, मेसर्स पेसूमल मूलचंद—इन दोनों फर्मों पर रेशमी व सूती माल, जापान की हाथ की कारीगरी व कलोंके मालका व्यापार दुनियाके साथ होता है।

मेसर्स शिवदयालमल बखतावरमल

इस फर्मके मालिक बेरी जिला रोहतक के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २२ वर्ष हुए। बम्बई दुकानमें शिवदयालमलजी तथा बखतावरमलजी का साझा है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स शिवदयाल बखतावरमल बादामका झाड़-कालबादेवी, तारका पता—परमात्मा—इस फर्मपर कपड़ा, किराना, चान्दी, सोना, तथा रुईकी आढ़तका काम होता है। तथा वायदाकी अढ़तका काम भी होता है।

शिवदयालमलजीकी फर्म—

(१) बम्बई—शिवदयाल गुलाबराय दानाबंदर-मरीचा स्ट्रीट (Beriwala) यहां गल्ला तथा तिजारतकी मुकदमी का काम होता है।

(२) भिवानी—चिरंजीलाल रोडमल, यहां गल्ला आढ़त तथा वायदेका काम होता है।

(३) मानसा—अतमाराम परशुराम—यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

(४) दिल्ली—देवानन्द गुलाबराय नया बाजार-हुंडी, चिट्ठी तथा गल्ला और कपड़ेकी आढ़तका काम होता है। इस फर्मके मालिक बखतावरमलजी हैं।

किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मको स्थापित हुए करीब १२ साल हुए। यह लिमिटेड कम्पनी है। इस फर्मके वर्तमान मैनेजर राय किशनचन्दजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर (हेड आफिस) किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड (Nitanpha)—यहां बैंकिंग एण्ड कमीशन एजन्सीका वर्क होता है।

(२) बम्बई—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड कालबादेवी (तिन नम्बर) यहां कॉटन और बैंकिंग एजेन्सी व कमीशनका वर्क होता है।

(३) करांची—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड मोरी बजीचा (तिन नम्बर) यहां कॉटन, बैंकिंग एजेन्सी व कमीशनका वर्क होता है।

रायबहादुर दुर्गाचंद दुर्गादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप खत्री (पंजाबी) सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री दुर्गाचन्दजी राय बहादुर हैं। आपहीने इस फर्मको करीब ४० वर्ष हुए स्थापित किया था।

इस फर्मकी वहां २ शाखाएं हैं, वहां २ इसकी स्थाई सम्पत्ति भी बहुत है, जापानके भूकम्पके समय योकोहामाकी प्रतिष्ठित वसियामल बिल्डिंग जिसमें जुदे २ पांच स्टोरीज थे, गिर गई। वर्तमान में इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर ब्रांचेज हैं।

हेड ओफिस-बम्बई-मेसर्स वसियामल आसूमल एण्ड को० जकरिया मस्जिद बम्बई नं० ३ चायनीज और जापानीय सिल्क मरचेंट और बैङ्कर्स

ब्रेंचज हिन्दुस्थान-(१) करांची (२) अमृतसर (३) सिंध हैदराबाद।

स्ट्रेटसेटिलमेंट—सिंगापुर, पेनांग, ईपो (Singapore, Penang, Ipoh,)

जावा—बटाव्या, सोरबाया (Balavia, Sourabaya)

चीन—शंघाई, हांगकांग, केंटान (Hongkong, Canton Shanghi)

जापान—कोबी, योकोहामा (Kobe, yokohama)

आस्ट्रेलिया—मेलबर्न सिडनी, (melbourne, sydney)

फिलिपाइंस—मनेला (Manilla)

फ्रेंच इण्डोचायना—सेगून (saigon)

सेठ वसियामलजीका देहान्त सन् १९१६ में हुआ। इस समय इस फर्मके प्रधान काम करनेवाले सेठ आसूमलजी सेठ जीवन दासजी, सेठ दोलूमलजी, सेठ श्यामदासजी व सेठ गंगारामजी तथा और और कई सज्जन हैं।

सिंध हैदराबाद, अमृतसर, हरिद्वार, बम्बई आदि जगहोंमें आपकी धर्मशालाएं बनी हुई हैं। हैदराबादमें आपका एक वाचनालय तथा फ्री वैद्यक औषधालय भी है।

इस फर्मकी ग्रांटरोड पर बनी हुई वसियामल बिल्डिंग बम्बईकी प्रसिद्ध बड़ी बड़ी इमारतोंमेंसे एक है। इसके अतिरिक्त सेठ वसियामलजीके नामसे गवालियाटेंक, चौपाटी, बाबुलनाथ, कोलाबा, जकरिया मस्जिद आदि स्थानोंमें आपकी अच्छी २ बिल्डिंग्स हैं।

उपरोक्त व्यापारके अलावा यह फर्म बहुत बड़ा बैंकिंग बिजिनेस एवं पारसींका व्यवसाय भी करती है। तारका पता सब जगह (T. A. wassiamall) (वसियामल) है।

सिल्क मरचेंट

मेसर्स गोभाई करंजा लिमिटेड

मेसर्स एन० एन० गोभाई एण्ड कम्पनीका व्यापार सन् १८८१ में चीनमें स्थापित हुआ और इस फर्मका व्यापार चीन, जापान, और यूरोपमें सन् १९१९ तक जारी रहा। इसके बाद यह कम्पनी लिमिटेड कम्पनीके रूपमें परिवर्तित हो गई। वर्तमानमें इस कम्पनीका करंजा लिमिटेडके

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेडऑफिस) हीरालाल दीवानचन्द T. A. Diwanchand-आलू कटला—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२) अमृतसर-हीरालाल दीवानचन्द—यहां इस फर्मका शाल डिपार्टमेन्ट है।

(३) अमृतसर- दुर्गादास बिहारीलाल कृष्णामारकीट-यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—दीवानचन्द द्वारकादास आलू कटला-यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(५) अमृतसर—हेमराज मनमोहनदास गुरूवाला बाजार—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टाका व्यापार होता है।

(६) अमृतसर—दीवानचन्द एण्ड संस—इस ऑफिसके द्वारा विलायतसे शाल व कपड़ेका एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यापार होता है।

(७) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल मारवाड़ी बाजार—(तारकापता—पश्मीना) यहां पश्मीना,बनारसी साड़ियां व काश्मीरी शालका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

(८) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल दीवानचन्द बिल्डिंग मारवाड़ी बाजार—T. A Pashmina इस फर्मपर आढ़तका व्यापार होता है।

(९) बनारस—दुर्गादास द्वारकादास नन्दन साहका मोहल्ला—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टेका व्यापार होता है।

मुलतानी कमीशन एजंट

मेसर्स गोकमल डोसामल कम्पनी

इस फर्मके मालिक कराचीके निवासी लुहाना रघुवंशी जातिके हैं। इसफर्मको सेठ गोकमलजीने स्थापित किया, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मूलचन्द दीपचन्द हैं। आपहीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायमें तरक्की मिली। इसफर्ममें श्री पुरुषोत्तमदास गोकुलदासका पार्ट है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कराची (हेड आफिस) मेसर्स गोकमल डोसामल कम्पनी—T. A. Ghzo, यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है यह फर्म ३० वर्षोंसे स्थापित है।

(२) बम्बई-मेसर्स गोकमल डोसामल कम्पनी दरभाई मोहल्ला पो० नं० ३ T. A. [illegible] यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रीकूमल दुहिलानामल और आपके छोटे भाई टीकमदास दुहिलानामल तथा आपके पार्टनर सेठ मूलचंद मतनमल हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T.A. whitesilk) यहां आपका जापानी व चायनी रेशमी मालका पीस गुड्स डिपार्टमेंट है।

(२) बम्बई—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T. A whitesilk) यहां आपका रेशमी हेण्डकरचीफका डिपार्टमेंट है।

(३) देहली—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स चांदनी चौक—(T.A. white silk) यहां रेशमी पीसगुड्स तथा हेण्डकरचीफ दोनोंका बिजिनेस होता है।

(४) हैदराबाद (सिंध) मेसर्स दुहिलानामल तोलाराम शाही बाजार (T.A, whitesilk) यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा सराफी और रेशमका बिजिनेस होता है।

(५) योकोहामा (जापान)—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स यामास्टाचो (T. A. white silk) यहांसे जापानी रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

मेसर्स हीरानंद ताराचंद (मुखी)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी जातिके सज्जन हैं। यह खानदान मुखीके नामसे मशहूर है, तथा सिंधी व्यापारियोंमें बहुत मशहूर माना जाता है। इस फर्मको १०० वर्ष पूर्व मुखी हीरानंदजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक मुखी हरकिशनदास गुरनामल तथा मुखी दयाराम किशनदास हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

(१) हैदराबाद (सिंध)—हीरानंद ताराचंद (T. A Mukhi)—यहां आपका हेड ऑफिस है।

(२) बम्बई मेसर्स हीरानंद ताराचंद जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T, A, Mukhi,) यहां जापानीज तथा चायनीज सिल्कका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद कल्याण बिल्डिंग—यहां बैंकिंग व बुलियनका बिजिनेस होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद खारक बाजार—यहां खजूर, बादाम, खोपरा, छुहारा आदिका व्यापार व कमीशनका काम होता है।

(५) करांची—मेसर्स हीरानंद ताराचंद बंदर रोड T. A. mukhi—बैंकिंग बुलियन और कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स सीताराम जयगोपाल

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास अमृतसरमें (पंजाब) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसफर्मका हेड आफिस अमृतसर है। इसे यहां बम्बईमें लाला गंगाविशनजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक लाला जयगोपालजी हैं। आपके भाई लाला सीताराम-जीका देहावसान होगया है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेड आफिस) मेसर्स सीताराम जयगोपाल गुरु बाजार, यहां शालका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स सीतारामजयगोपाल मारवाड़ी बाजार, यहां काश्मीरी शाल, बनारसी साड़ी और दुपट्टोंका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स जयगोपाल लक्ष्मीनारायण कुंजगली, यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा सब प्रकारके बनारसी रेशमी मालका व्यापार होता है।

मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मका परिचय ऊपर कमीशन एजंट्समें दिया गया है। इस फर्मपर काश्मीरी तथा बनारसी रेशमी मालका अच्छा व्यापार होता है।

चायनीज़ और जापानी सिल्क—मरचेंट्स

ओंप्रसाद दुर्गादास मसजिद बंदर रोड,
आदम अब्दुल करीम ब्रदर्स मसजिद बंदररोड,
एदलजी फ्रामजी
ए० सी० पटेल कम्पनी हार्नबी रोड, फोर्ट,
कं० हासाराम कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,
केशवलाल व्रजलाल मसजिद बन्दर रोड,
कपूरचन्द मोहनजी कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,
किशनचंद चेलाराम मसजिद बन्दर रोड,
गुमानमल परशुराम कोलीबाड़ा,
चेलाराम ज्ञानचंद दानाबन्दर,

१ शिकारपुर—मेसर्स दौलतराम मोहनदास (हेड आफिस) यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।
२ बम्बई—मेसर्स दौलतराम मोहनदास यार भाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Lalpagari) इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।
३ बम्बई—मूलजी जेठा मारकीट सुन्दर चौक (Lal pagari) यहां कपड़ेका व्यापार होता है।
४ करांची—दौलतराम मोहनदास बम्बई बाजार " " "
५ सक्खर—दौलतराम मोहनदास " "
६ बम्बई—दौलतराम डाइंग एण्ड ब्लीचिंग मिल अपर माहीम मुगल गली पो० नं० ६—इस मिलमें कोरे कपड़ेकी धुलाई और पालिस होती है। इस मिलका माल बाजारमें लाल पगड़ी बाबू टिकिटके नामसे बिकता है, तथा इसका माल पंजाब, अफगानिस्तान, रूस और भारतके कई प्रांतोंमें जाता है।

मेसर्स पोकरदास मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान शिकारपुर (सिंध) है। आप नागपाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म सेठ द्वारकादासजीके समयमें स्थापित हुई थी, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ द्वारकादासजीके पुत्र सेठ मेघराजजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—पोकरदास मेघराज हेड आफिस (Sinah) यहांपर बैङ्किङ्ग और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।
२ बम्बई—पोकरदास मेघराज यार भाई मोहल्ला पो० नं० ३, (Red cloth) इस दुकानपर बैङ्किग, कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।
३ करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्द्धनदास मारकीट (Swadeshi) यहां स्वदेशी, विलायती तथा जापानी कपड़ेका बिजिनेस होता है।
४ करांची—द्वारकादास फतेचंद मूलजी जेठा मारकीट, यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।
५ करांची—पी० द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट (Swadeshi), इस आफिस पर विलायतसे इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।
६ मेहर (डि० लाड़काना सिंध)—मेसर्स मेघराज लख्सोमल, यहां फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।

इस फर्मके करांचीके चीफ मैनेजर मि० फतेचंद सोहनदास करारा और बम्बई फर्मके वर्किंग मैनेजर मि० दौलतराम मलचंद करारा तथा नेवंदराम जवरदास बजाज हैं।

श्री सेठ छोटालाल [illegible], बम्बई

स्व० सेठ लखमसीभाई (नप्पूनेनसी) बम्बई

श्री सेठ वेलजी लखमसी (नप्पूनेनसी) बम्बई

इस फर्मको लार्ड मिंटो, लार्ड किचनर, कमिश्नर इनचीफ इण्डिया, महाराज काश्मीर, महाराज कोलापुर व बम्बई गवर्नरने अपाइण्टमेंट किया है। सन् १९०३के देहली दरबार एक्जीबीशनमें इस फर्म को फर्स्टक्लास सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ है। तथा १९०४ के बम्बई एक्जीबीशनके समय एक गोल्ड मेडेल और १९०७में कलकत्ता एक्जीबीशनके समय २ गोल्ड मेडिल्स प्राप्त हुए हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिन्ध)—मेसर्स ताराचन्द परशुराम बड़ाबाजार, यहां आपका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स ताराचन्द परशुराम जकरिया मस्जिद पो० नं ०३, यहां जापानी व चायनी रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ६३ मेडोजस्ट्रीट फोर्ट—यहां हीरा, पन्ना, मोती, जवाहरात तथा क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम करनाक ब्रिज—यहां फरुखाबाद, मिर्जापुर आदिके पीतलकी कारीगरीके बर्तन व क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(५) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ५७ पार्क स्ट्रीट कलकत्ता—यहां हीरा, पन्ना तथा दूसरे जवाहिरात और क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(६) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम स्टार्टसरेग मार्केट हीरा, पन्ना और जवाहिरातका व्यापार होता है।

(७) कलकत्ता- मेसर्स ताराचन्द परशुराम लिण्डसे ष्ट्रीट, " "

(८) योकोहामा (जापान) योमास्टाचौ, मेसर्स ताराचन्द परशुराम यहांसे जापानी डाप खरीद-कर भारतके लिये भेजा जाता है।

सब जगह तारका पताः— (showroom) है।

मेसर्स धन्नामलचेलाराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध (हैदराबाद) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ धन्नामल चेलारामने सन् १८६० में स्थापित किया। इस फर्मकी ब्रांचेज यूरोप चायना, अमेरिका, जापान आदि देशोंमें हैं। यहां इस फर्मपर सिल्क, ज्वेलरी और क्यूरियोका बिजिनेस होता है। आपका हेड आफिस बम्बई है। जिसका परिचय इस प्रकार है। -

बम्बई—मेसर्स धन्नामल चेलाराम ६३ मेडोजस्ट्रीट-फोर्ट (T, A, Allgoms) यहां सिल्क ज्वेलरी तथा क्यूरियोका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी और फर्मे भारतमें-बम्बई, मद्रास, और विदेशोंमें १ केरो (इजिप्त) २ अलेक्जेंड्रिया (इजिप्त) २ पोर्टसैड ४ मसाउन ५ लक्सो ६ नेपल्स ७ पाल्र्मो ८ जिनोवा ९ ...

स्व० सेठ पोहमल खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ मूलचन्द खियामल (पोहम

स्व० सेठ [illegible] खियामल (पो

(२) रंगून—मेसर्स वेलजी लखमसी एण्ड कम्पनी मुगलस्ट्रीट, T.A.Prominent यहां चावलका

बहुत बड़ा व्यापार होता है।

सेठ वेलजी भाईके छोटे भाई श्रीजादवजी हैं। आप दुकानका कार्य सम्हालते हैं। सेठ वेलजी

भाईके २ पुत्र हैं जिनका नाम प्रेमजी तथा कल्याणजी हैं। प्रेमजी अभी पढ़ते हैं।

मेसर्स सेवाराम गोकुलदास

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जैसलमेर है, पर आप लगभग सवा सौ

वर्षसे जबलपुरमें निवास करते हैं, इसीसे जबलपुर वालोंके नामसे विशेष विख्यात हैं। जबलपुरमें

आपके महल, गोविन्द भवन नामक कोठी और बगीचा, केवल यहां ही नहीं किन्तु सी० पी० भरमें

दर्शनीय समझे जाते हैं। आपका यहां वल्लभ कुल सम्प्रदायका एक बहुत बड़ा मन्दिर है जिसका

लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति का पृथक् ट्रस्ट है। इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ जीवन

दास जी एवं आनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी "मेंबर कौंसिल ऑफ स्टेट" हैं।

सेठ सेवारामजी जैसलमेरसे जबलपुर आये तथा उनके पौत्र राजा गोकुलदासजीके हाथोंसे

इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। राजा गोकुलदासजी एवं सेठ गोपालदासजी दोनों भाई भाई थे।

पहिले यह फर्म सेठ सेवाराम खुशालचन्दके नामसे व्यवसाय करती थी। यह फर्म यहां करीब ७८

वर्षोंसे स्थापित थी। संवत् १९६४ से आप दोनों भाइयों की फर्म अलग अलग हुई और

तबसे इस फर्मपर 'सेवाराम गोकुलदास' एवं दीवान बहादुर वल्लभदासजीकी फर्मपर "खुशालचन्द

गोपालदास" के नामसे व्यवसाय होता है। इस फर्मका हेड ऑफिस जबलपुर है।

यह खान्दान माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं माननीय समझा जाता है। गवर्नमें

ने सेठ गोकुलदासजीको राजाकी उपाधि दी थी और सेठ जीवनदासजी साहबको प्रथम राय बहादुर

एवं फिर दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी साहब

कौंसिल आफ स्टेटके मेम्बर हैं। आप बड़े शिक्षित एवं प्रतिष्ठासम्पन्न महानुभाव हैं।

असहयोग आन्दोलनके आरंभसे देशके राजनैतिक आन्दोलनोंमें आपका सदैव हाथ रहा है।

जबलपुरमें प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओंका निर्माण राजा गोकुलदासजी और उनके

खानदानवालोंके हाथों हुआ है। जबलपुरका टाउनहाल, यहांकी स्त्रियोंके लिए "लेडी एल्गिन

हॉस्पिटल" और "क्राम्प विक्टोरिया हॉस्पिटल" नामक दवाखाना आपहीके खान्दान द्वारा

बनवाया गया है। आपहीने जबलपुर वाटर वर्क्सके निर्माणके लिये जबलपुर म्युनिसिपेल्टीको

सात लाख रुपया कुछ कम ब्याजपर और कुछ बिना ब्याज दिये थे। जिसके द्वारा जबलपुरमें वाटर

वर्कसका सुप्रबंध आजतक चला आता है। इस फर्मको आई लगभग २० वर्षोंमें हुई, करीब

गलीचा, विलायती गलीचा, और जम्फरके आर्डर वी० पी० से व खातेसे सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त वेङ्किग विजिनेस भी होता है। इसी नामकी यहां पर आपकी १ दुकानें हैं।

(३) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स अपोलो बंदर—तारका पता—पोमल यहां मोतीके हार, हीरेकी अंगूठी तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है, इसके अतिरिक्त भारतकी पुरानी हाथकी कारीगरी, एवरी, एन्टिक, ईरानी गलीचा आदि अंग्रेज गृहस्थोंके ऐश आराम की वस्तुएं भी यहां बहुत बड़ी तादादमें मिलती हैं।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद वलीराम करनाक ब्रिज तारका पता—पोमल—यहां जयपुर, मुरादाबाद, बनारस आदि स्थानोंपर बने हुए पीतलकी कारीगरीके बर्तन, मिर्जापुर, आगरा अहमदाबाद आदि स्थानोंके गलीचे, काश्मीरका टेबल कवर व नमदा तथा काश्मीर सहारनपुर और जयपुरका लकड़ीकी कारीगरीका काम और मद्रासके भरतके कामका माल बहुत बड़ी तादादमें स्टाकमें रहता है एवं बिकता है, इस फर्मके द्वारा अमेरिका तथा आस्ट्रेलियामें अच्छी तादादमें माल भेजा जाता है, तथा यह फर्म येमली एक्जीबीटन (इंग्लेंड) को २ वर्षोंसे अच्छी तादादमें माल सप्लाई करती है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स पोमल ब्रदर्स ३३ केनिङ्गस्ट्रीट—तारका पता—पोमल—यहां जापानी चीनी रेशमी गलीचा व मुक्ताका थोक व्यापार होता है।

(६) देहली—मेसर्स पोमल ब्रदर्स चांदनी चौक तारका पता—पोमल—उपरोक्त व्यापार होता है।

(७) करांची—मेसर्स पोमल ब्रदर्स बंदररोड—तारका पता—दीपमाला—यहां ओढ़ना इमोर्ट तथा गेहूं आदि वस्तुओंका एक्सपोर्ट व कमीशनका काम होता है।

अ.देशवरोंके देशोंका व्यापार

(८) कैरो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स (cairo) तारका पता—पोमल—यहां भारतकी पुरानी कारीगरी तथा हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है यहांसे अमेरिकन लोग बहुतसा माल खरीदते हैं।

(९) इस्मो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहां भी यही व्यापार होता है अमेरिकन यात्रियोंके साथ ६ महीना अच्छा व्यापार रहता है।

(१०) अलेक्जेंड्रिया (इजिप्ट) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल—भारतीय पुरानी कारीगरी तथा हीरापन्ना जवाहरातका व्यापार होता है।

(११) जिब्राल्टर—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है यहां आपकी ५१ दुकानें और हैं।

(१२) माल्टा (माल्टा) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है।

यह इस फर्मका व्यापारिक परिचय हुआ, इस प्रकारकी फर्मोंका परिचय हमारे देशके कारीगरोंके लिये गर्वका विषय है, जिस समय दुनियाके और और देशोंकी निगाहोंमें हमारा यह भारत नीची नजरोंसे देखा जाता है, उस समय इस प्रकारकी फर्में विदेशोंके एक्जीबीशनमें यहांके कारीगरोंकी वस्तुओंको भेजकर सार्टिफिकेट्स प्राप्त करती हैं व भारतवासियोंका सिर ऊंचा करती हैं।

योकोहामामें जब भयंकर नाशकारी भूकम्पका आगमन हुआ था और उसके कारण सारा योकोहामा नष्ट हो गया था, उस स्थान पर इसी भारतीय फर्मने फिरसे रेशमका व्यापार स्थापित कर जापान गवर्नमेंट द्वारा प्रशंसा प्राप्त की थी।

इसके अतिरिक्त वेमले एक्जीबीशनमें पीतलकी कारीगरीके वर्तन व दूसरे जवाहरातके लिये अमेरिकन यात्रियों द्वारा इस फर्मको अच्छे २ सार्टिफिकेट्स मिले हैं।

इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति जहां २ इसकी शाखाएं प्रायः सभी स्थानों पर बनी हुई है।

इस फर्मके बम्बईके प्रधान काम चलानेवाले सेठ मूलजमल करनमल हैं। आप २८ वर्षोंसे इस फर्म पर प्रधान मैनेजरके रूपमें काम करते हैं।

मेसर्स वासियामल आसूमल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध (हैदराबाद) है, आप सिंधी सज्जन हैं, जो बम्बईमें भाइबन्दोंके मुल्तानीके नामसे प्रसिद्ध हैं। इस फर्मकी स्थापना लगभग ४१ वर्ष पहिले सेठ वासियामलजीने की।

आरम्भमें आपका इस फर्मका यही उद्देश था, कि हिन्दुस्तानका माल एवं दूसरी सामान विदेशोंमें भेज दिया जाय। इस उद्देशके साथ साथ यह फर्म जापान व चीनके पुराने [illegible] सामानका व्यापार भी करने लगी। एवं सिंगापुर जावा, मेनला हांगकांगमें इसकी दुकानें स्थापित हुईं। इन स्थानों पर कारीगरीके मालकी बिक्री ज्यादा बढ़नेसे यह माल इस फर्मने खुद बनाने और [illegible] बनाना शुरू किया। चीन और जापानका माल यूरोपियन यात्री लोगोंमें विशेष बिकता था। इसलिये इस फर्मने जापानके आसपास सब देशोंमें अपने आफिस खोले।

इस भारतीय फर्मने जापानमें ४० वर्ष पूर्व फर्म स्थापित की, तथा [illegible] [illegible] [illegible] व हिन्दुस्थानके [illegible] [illegible] विचार मिलाकर जापानी मालके नमूने व [illegible] शुरू किया।

आपने [illegible] व दूसरी कारीगरीका हाथका काम बहुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अच्छा किया बहुत अधिक बढ़ी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बहुत विशेष पसंद करते थे। इसलिये वे यात्री जहां २ जाते थे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की।

(५) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास २०१ हरिसनरोड कलकत्ता—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

(नोट)—पहिले आपका यहां विलायती कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार था। आप गिलैंडर्स आरबथ नॉट एन्ड कम्पनीके बेनियन थे। यह कार्य लगभग ३० वर्षतक चलता रहा। असहयोगके जमानेमें विलायती कपड़ेका व्यापार होनेके कारण सेठ गोविन्ददासजीने यह कार्य छोड़ दिया। कलकत्तेमें केवल आपहीकी फर्मने सदाके लिये विलायती कपड़ेके व्यापारको छोड़ा।

(६) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास कालबादेवी, बम्बई—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका काम होता है।

(७) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास दानाबन्दर, बंबई—यहां गल्लेका व्यापार होता है। आपका यहां अनाजका गोडाउन है।

(८) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जौहरी बाजार जैपुर—यहां बैंकिंग व हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। इसके सिवा यहांके जागीरदारोंके साथ लेनदेनका काम भी होता है।

(९) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास मलकापुर—यहां आपकी कॉटन जीन व प्रेस फेक्टरी तथा आइल फेक्टरी है।

(१०) सेठ रामकिशनदास गोकुलदास बरेली (भोपाल स्टेट)—यहां आपकी जमींदारी है तथा बैंकिङ्गका काम भी होता है।

(११) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जैसलमेर—यह आपका आदि निवास स्थान है। यहां आपका प्राचीन मकान है और यहांकी दुकानमें बैंकिङ्ग और आढ़तका काम होता है।

स्व० सेठ वसियामल आसूमल, बम्बई

स्व० सेठ बन्सीधरजी (बन्सीधर गोपाल
(पृ० नं० १२८)

स्व० सेठ [illegible] आसूमल (वसियामल आसूमल)

सेठ माधवदासजी (बन्सीधर [illegible]
([illegible])

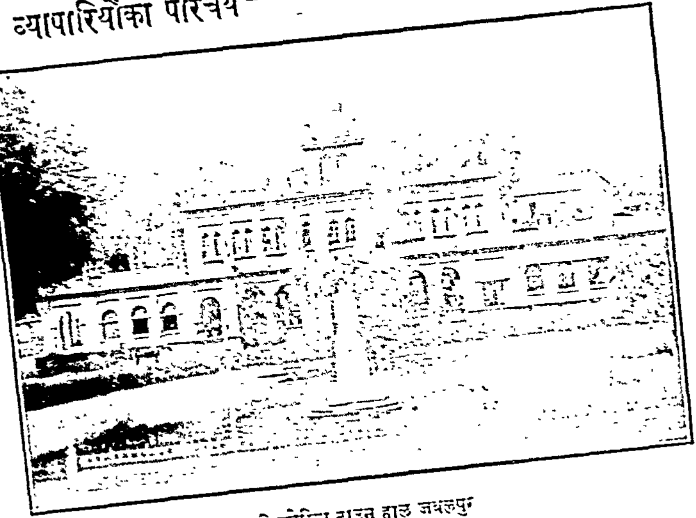

विक्टोरिया टाउन हाल जबलपुर

राज. गोकुलदास ड्राइंग रूम जबलपुर

नामसे व्यापार होता है। यह फर्म सिल्क मरचेंट्समें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। मरीन ड्राइव बंदर रोड बम्बईपर इस फर्मकी ३ शाखाएं हैं। (१) हेड आफिस (२) जापानी सिल्क ब्रांच और (३) शंघाई सिल्क ब्रांच।

भारतकी अन्यत्र शाखाएं— करांची और अमृतसर हैं।

विदेशी ब्रांच—शंघाई और कोबी।

इन सब फर्मोंपर इसी प्रकारके सामानका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट होता है तथा सिल्क बिजिनेस होता है।

मेसर्स गागनमल रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक हैदराबाद (सिंध) के निवासी भाईबंद जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सन् १८८४ में सेठ कुंदनमल गागनमलने स्थापित किया और आपहीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजना मिली। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुंदनमलजीके पुत्र सेठ जीवतरामजी, सेठ लूणचंदजी और सेठ मुरलीधरजी हैं। इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता सेठ जीवनरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिंध)—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र (Popularity) यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T. A. Bharatavasi) यहां जापानीज व चायनीज़ रेशमी कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स जीवतराम कुंदनमल जकरिया मस्जिद—यहां रेशमी हेण्डकरचीफ तथा पेंसी गुड्सका व्यापार होता है।

(४) योकोहामा (जापान) मेसर्स जी० रामचन्द्र कम्पनी यामाश्टाचो (T. A. Ramchandra) यहांसे रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध हैदराबाद है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ रीझूमलजीने सन् १९१९ में स्थापित किया।

मेसर्स नारायणजी कल्याणजी
,, नानजी लखमसी (जाव बाजार)
,, नोपचन्द मगनीराम
,, परमानन्द जादवजी
,, प्रधान बंधु
,, प्रेमजी हरिदास
,, पोहुमल ब्रदर्स
,, प्रेमजी डोसा
,, फूलचन्द केदारमल
,, भगवानदास मूलजी
,, भगवानदास सुरजी,
,, भारमल श्रीपाल
,, मगनलाल प्रेमजी
,, मनसी लखमसी
,, मदनजी रवजी
,, मेघजी चतुर्भुज
,, मोतीभाई पवान
,, मोनराज दलचन्दीलाल
,, नामराज रामनाथ
,, मेघजी हरिराम
,, रणछोड़दास प्रागजी
,, रवजी नेनसी
,, रतनसी पूंजा
,, रामजी रवजी
,, रामचन्द्र रामविलास
,, रामजी भोजराज
,, लखमीदास हेमराज
,, लहरचन्द सोभागदास
,, लालजी गनपत
,, लालजी दुल्हो
,, लालजी हेमू

मेसर्स वल्लभदास मगनलाल
,, वल्लभजी गोविन्दजी
,, वलनजी पदमसी
,, वसनजी मेघजी
,, वालजी हीरजी
,, वालजी लीलाधर
,, वीरजी जेठा
,, विट्ठलदास उधवजी
,, वेलजी कानजी
,, वेलजी दामजी
,, वेलजी रामजी
,, वेलजी लखमसी
,, साकरचन्द त्रिकमजी
,, शिवजी भाण
,, शिवजी हीरजी
,, शिवजी राघवजी
,, शिवनारायण बलदेव
,, शिवदयाल गुलाबराय
,, सुन्दरजी लधा
,, सुन्दरलाल गोरधनदास
,, सेवंतीलाल नगीनदास
,, सेवाराम गोकुलदास
,, सेठमल सुगनचन्द
,, सोमचन्द धारसी
,, हरिदास शिवजी
,, हरिदास प्रेमजी
,, हनुलदास सोदपत
,, हरजीवन [illegible]
,, हाथी भाई [illegible]
,, हीरजी [illegible]
,, [illegible]

(६) मुलतान (पंजाब)—हीरानंद ताराचंद (T. A. Mukhi) यहां बैंकिंग और कुल्यिनका व्यवसाय होता है।

(७) सरगोधा (पंजाब) हीरानंद ताराचंद (T.A.Mukhi) बैङ्किग और कुल्यिनका काम होता है।

(८) पुलरवार (पंजाब)—हीरानंदताराचंद—यहां कमीशनका काम होता है।

(९) सिलांवाली मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(१०) चीचवतनी मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(११) नवादेरा (सिंध)—गुरनामल दयाराम—यहां राइस फेक्टरी है। तथा कमीशनका काम होता है।

(१२) टंडावागा (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद—कमीशनका काम होता है।

(१३) बिंदाशहर (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद ,, ,,

(१४) वदीना (सिंध)—सुखरामदास हीरानन्द ,, ,,

विदेशी ब्रांचेज्

(१५) पोरसेड -(इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स, क्यूरियो, जापानी, चायनीज सिल्क मरचेंट्स तथा पुरानी कारीगरीके सामानके व्यापारी।

(१६) इस्माइलया (ईजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स,क्यूरियो,जापानी,चायनीज सिल्क मर्चेट्स।

(१७) बेरूथ—(सीरिया) मेसर्स ए० नेचामल- ,, ,,

(१८) एथेन्स—(ग्रीस) मेसर्स सी० डी० मुखी ,, ,,

(१९) योकोहामा—[जापान] १२६ यामास्टाचो (T. A. Mukhi) मुखी हीरानंद ताराचंद, यहांसे जापानीज तथा चायनीज माल भारतके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

बनारसी व काश्मीरी सिल्क मरचेण्ट

मेसर्स अहमदई-ईसाअली

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बम्बई है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसे सेठ ईसाअली जी ने स्थापित किया था।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अहमदई, ईसाअली हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स अहमदई ईसाअली बोरी बन्दरके पास इम्पायर बिल्डिङ्ग बम्बई—यहां कोर, थाडर, व जरीके कामका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त रेशमी कीमती साड़ियोंकी रहनका काम होता है। बम्बईके जामली मोहल्लामें आपकी इसी नामसे २ दुकानें और हैं।

जौहरी

JEWELLERS

माने जाते हैं। इस फर्मका आफिस ५५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है। T.A. sheed है। इस फर्म रिशयमें कॉटनडेपो हैं। एवं दानाबंदरपर ग्रेनका गोडाउन है। इसके अतिरिक्त बम्बईसे बाहर कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यह फर्म किलाचंद मिल्स कम्पनी लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है।

मेसर्स नप्पू नेनसी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वेलजी भाई हैं आप ओसवाल स्थानक वासी संप्रदाय के सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कच्छ है।

इस फर्मकी स्थापना सेठ नप्पू भाईने करीब ६४ वर्ष पूर्व की थी। आप श्रीमान् नेनसी भाईके पुत्र थे, सेठ नप्पू भाईके बाद इस फर्मके कामको सेठ लखमसी भाईने सम्हाला, आपका जन्म संवत् १९०३ में हुआ, आपके हाथोंसे इस फर्मको खूब उन्नति हुई, आपको गवर्नमेन्टने जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था। आप ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशनके सभापति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। इस समय इस फर्मके कामको आपके पुत्र सेठ वेलजी भाई संचालित करते हैं। आप बड़े विद्याप्रेमी देश एवं जाति भक्त सज्जन हैं आप बम्बई युनिवर्सिटीकी बी० ए० एल० एल० बी० परीक्षा पास हैं। कुछ समय पूर्व आप बम्बई म्युनिसिपलेटी व बाम्बे पोर्टट्रस्टके सदस्य रह चुके हैं। लेकिन जिस समय सारे देशमें असहयोगकी सात्विक क्रांतिका प्रवाह उठा था उस समय आपने देश भक्तिसे प्रेरित हो इन पदोंको छोड़दिया तथा आप ऑल इण्डिया कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बर हो गये। उक्त कमेटीके ट्रेझरारका सम्माननीय कार्य भी आप ही करते थे। उसी समय आपने ५० हजार रुपया एक मुश्त तिलक स्वराज फंडमें दान दिया था।

आप बम्बई ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशनके कई वर्षोंसे सभापतिके पदपर प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त कच्छी बीसा ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज बम्बईके आप प्रेसिडेन्ट हैं व बम्बई स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके आप वाइस प्रेसिडेन्ट हैं। इसके अतिरिक्त ऑल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके, मलकापुर अधिवेशनके समय आप ऑनरेरी सेक्रेटरी नियत हुए थे, तथा अब भी उसी पदपर कार्य कर रहे हैं। आपने १५ हजार रुपया कांदावाड़ी संस्थामें दान दिया है। आप अत्यन्त सरल एवं शांत प्रकृतिके सज्जन हैं। आप शुद्ध खादीका व्यवहार करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—(हेड आफिस) मेसर्स नप्पू नेनसी दाणाबन्दर-मस्जिदरोड (T. A. Impax) यहां ग्रेन मर्चेंट तथा कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

हीरे और जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल रायचन्द जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अमृतलाल भाई हैं। आप ओसवाल जातिके श्वे० जैन सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर (गुजरात) है। आपकी फर्मको बम्बईमें व्यवसाय करते करीब २५ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई। आपके पिता सेठ रायचन्द भाईका देहावसान हुए करीब ३५ वर्ष हुए।

सेठ अमृतलाल भाई स्थानकवासी ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवम् आगेवान सज्जन हैं। आप जैन स्थानक वासी संघके ट्रस्टी हैं, तथा सार्वजनिक घाटकोपर जीव-दया-फण्डके ट्रस्टी एवम् ट्रेन्जरर हैं। आप स्थानकवासी जैन रत्न चिन्तामणी मण्डलके प्रेसिडेण्ट हैं।

इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—अमृतलाल रायचन्द जवेरी जवेरीबाजार, इस फर्मपर हीरा, मोती, पन्ना तथा सब प्रकारके जवाहरातका काम होता है। खास व्यवसाय हीरे, पन्ने तथा मोतीका है आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी

इस फर्मके मालिक पालनपुर(गुजरात)के निवासी हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ अमूलख भाई खूबचन्दने ८० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। बम्बईके जौहरी समाजमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है सेठ अमूलख भाई पालनपुरके जौहरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके स्मारकमें आपके कुटुम्बियों एवं आपके सम्बन्धियोंकी ओरसे एक स्मारक भवन खड़ा किया गया है। आपका देहावसान सम्वत् १९६६की पौष सुदी १४ को हुआ।

वर्तमानमें सेठ अमूलख भाईके पुत्र सेठ केशवलालजी सोभागमल जी, मेमगलालजी और कान्तिलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द धनजीस्ट्रीट—T.A.Actira इस फर्मपर हीरा,पन्ना मोती, माणिक तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है। और विलायतसे हीरा इम्पोर्ट होता है।

(२) करांची—बाम्बे ज्वेलर्स एल्फिंस्टनस्ट्रीट-यहां हीरेका व्यापार होता है।

बाबू दौलतचन्द अमीचन्द जौहरी, बम्बई

बाबू अमीलाल पन्नालाल जौहरी, बम्बई

अमीचन्द बाबू पन्नालाल जौहरी, बम्बई

यदि व्याजका हिसाब लगाया जावे तो एक प्रकारसे आपकी यह कुल रकम वाटर वर्क्सके लिये दान सममी जा सकती है। मध्य प्रान्तके अनेक पुराने खान्दानोंको बचानेके लिये भी आपने इसी प्रकारकी अनेक रकमें कम व्याजपर कर्ज दी थीं। इस कार्यमें आपका लगभग २५ लाख रुपया सदैव लगा रहता था। इस खान्दानकी ओरसे खंडवा स्टेशनके पास "सौभाग्यवती सेठानी पार्वती बाई धर्मशाला" के नामसे एक बहुत उत्तम धर्मशाला बनी हुई है। इस धर्मशालाके निर्माणमें लगभग दो लाख रुपया व्यय हुआ है। जबलपुरमें नर्मदा किनारे भृगुक्षेत्र (भेड़ाघाट) नामक तीर्थ स्थानपर आपके द्वारा बनाई हुई एक बड़ी धर्मशाला है जिससे यहां आने वाले अनेक यात्रियोंको बड़ा आराम मिलता है। इसके अतिरिक्त गाडरवाड़ा, अजमेर, इटारसी, मथुरा आदि स्थानोंमें भी आपकी धर्मशालाएं हैं जिनमें लाखों रुपयोंकी लागत लगी है। इन्होंने कुछ वर्ष हुए, जबलपुरमें राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर नामक संस्थाका आपकी खान्दानने ५० हजार रुपया देकर निर्माण कराया है और गत अप्रैल महीनेमें 'राजकुमारीबाई अनाथालय' भवन निर्माणके लिये आपने दस हजार रुपया दिये हैं। इस अनाथालयकी नींव महामना मालवीयजीके द्वारा डाली गई है। इसी प्रकार हर एक सार्वजनिक कार्योंमें आपके खानदानवालोंने उदारता पूर्वक अनेक दान दिये हैं। जबलपुर म्युनिसिपेल्टीने राजा गोकुलदासजीके स्मारकके लिये जबलपुर स्टेशन के पास ही एक बहुत अच्छी धर्मशालाका निर्माण कराया है। इस धर्मशालाके सामने दीवान बहादुर जीवनदासजीने अपने पिता और माताकी पाषाण मूर्त्तियां स्थापित की हैं।

आपके यहां प्रधानतया जिमींदारीका काम है। मध्य प्रान्तमें आपके सैकड़ों गांव हैं और हजारों एकड़ जमीनमें आपकी घरू खेती होती है। आपके किसानोंकी संख्या भी हजारों है और इन किसानोंके साथ आपके खानदानका अन्य जिमींदारोंके सदश व्यवहार न होकर यथार्थमें जैसा व्यवहार जिमींदार और किसानमें होना चाहिये वैसा ही होता है जिसका प्रमाण यह है कि समय समय पर आपने लगभग १५ लाख रुपया अपने ऋणका इन किसानोंपर छोड़ा है।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) राजा गोकुलदास जीवनदास गोविन्ददास जबलपुर—यहां आपका हेड आफिस है—

(२) राजा गोकुलदास जीवनदास जबलपुर—इस फर्मके ताल्लुक जमींदारीका कुल काम है

(३) सेठ सेवाराम जीवनदास जबलपुर—इस फर्मके ताल्लुक आपके जबलपुरके बंगले व मकानोंके किरायेका काम होता है।

(४) गोविन्ददास मिलौनीगंज, जबलपुर—यहां गल्ला व आढ़तका व्यापार

मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल जवेरी

मिस्टर गफूर भाईको हीरा तथा मोतीका व्यापार करते हुए करीब १८ वर्ष हुए। आपका खास निवास पालनपुर है। आप जैन सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल संढइर्स्ट रोड प्रार्थना समाजके पास फिलेदार मंजिल, आपके यहां हीरा तथा मोतीका व्यापार होता है।

२ बम्बई—चिमनलाल वीरचंद जौहरी बाजार, इस स्थानपर मोतीका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स डाह्यालाल मकनजी जवेरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्यालाल मकनजी भाई तथा सेठ अमृतलाल भाई प्राणजीवनदास हैं। आप श्रीमाल जातिके वैष्णव धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है।

इस फर्मकी स्थापना संवत् १९६० में सेठ डाह्यालाल भाईने की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की भी हुई। श्रीयुत अमृतलाल भाई इसके पार्टनर हैं। आप श्रीयुत डाह्या भाईके भतीजे हैं।

इस फर्मको मोरवी, ध्रांगधरा, राजपीपला और देवगढ़ बारिया आदि स्टेटोंने अपाईण्टमेण्ट दिया है।

श्रीयुत डाह्यालाल भाई दी डायमेण्ड मरचेंट्स एसोसियेशनके वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप इंडियन मरचेंट्स एसोसिएशनकी मैनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपको कई अच्छे २ स्थानोंसे सार्टिफिकेट मिले हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ बम्बई—मेसर्स डाह्यालाल मकनजी शेखमेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर हीरे तथा अन्य प्रकारके जवाहिरातका काम होता है। यहां जवाहिरातके दागिने भी बनाये जाते हैं।

मेसर्स नगीनदास लल्लुभाई एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्याभाई नगीनदास, लहरचन्द नगीनदास; नाथालाल डाह्याभाई, और कीर्तिलाल डाह्याभाई हैं। आप बीसा ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर है।

(ग्रेनमर्चेण्ट्स एसोसिएशनकी लिस्टसे)

मेसर्स अब्दुल अजीज हाजी तैय्यब
,, अमरसी हरीदास
,, आनन्दजी प्रागजी;
,, इबराहिम आमद
,, उमेदचंद काशीराम
,, ओंकारलाल मिश्रीलाल
,, कालीदास नारायणजी
,, काराभाई रामजी
,, किलाचन्द देवचन्द
,, केसरीमल रतनचन्द
,, केशवजी देवजी
,, खरसेदजी अरदेसरजीदीवेचा एण्ड ब्रादर्स
,, खटाऊ शिवजी
,, खीमजी धनजी,
,, खीमजी लखमीदास
,, खेराज मणसी
,, गंगुभाई डूंगरसी
,, गुरुमुखराय सुखनन्द
,, गोकुलदास मुरारजी
,, गोपालदास परमेश्वरीदास
,, गोविन्दजी मारमल
,, गोपीराम रामचन्द्र
,, गोरधनदास भीमजी
,, गोरधनदास वल्लभदास
,, गंगाराम धारसी
,, घनश्यामलाल एण्ड को०
,, घेलाभाई हंसराज
,, चनाभाई वीरजी
,, चांपसी मारा
,, चुन्नीलाल रामरतन,

मेसर्स चुन्नीलाल अमथालाल
,, चुन्नीलाल अमरजी
,, चन्दूलाल हीराचन्द
,, चन्दूलाल रामेश्वरदास
,, छोटालाल किलाचन्द
,, जमनादास प्रभुदास
,, जमनादास अरजण
,, जयन्तीलाल मूलचन्द
,, जैराम परमानन्द
,, जैराम लालजी
,, जेठाभाई देवजी
,, जैराम हरिदास
,, जवेरचंद देवसी
,, टोकरशीभवानजी
,, डूंगरसी प्रागजी
,, डूंगरसीवीरजी
,, डूंगरसी वेलजी
,, डूंगरसी एण्ड सन्स
,, तात्या रावजी
,, त्रीकमदास रतनसी
,, त्रिभुवनदास बापूभाई
,, दयालदास छबीलदास
,, देवसीकुरपाल
,, धनजी देवसी
,, धारसीनानजी
,, नवीनचंद सरूपचन्द
,, नवीनचन्द्र दामजी
,, नंदराम नारायणदास
,, नथूभाई कुंवरजी
,, नथूभाई नानजी
,, नारायणजी नरसी

बाबू पूर्णचन्द्र पन्नालाल जौहरी

इस प्रतिष्ठित एवं पुराने जौहरी वंशमें प्रख्यात पुरुष श्रीमान् बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी० हुए हैं। आपका जन्म संवत् १८८५ की कार्तिक वदी ६ को काशीमें हुआ था। आपका आदि निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। आप जैन वीशा श्रीमाली वाणिया सज्जन हैं।

आपका प्रारंभिक जीवन कलकत्तेमें व्यतीत हुआ था, एवं हिन्दी अंग्रेजी भाषाओंका ज्ञान भी आपने वहीं प्राप्त किया था। आपके पिता श्री सेठ पूर्णचन्द्रजी तथा आपके नाना स्वयं जौहरी थे; परंतु पराई दृष्टिके नीचे शिक्षा अच्छी मिलती है इसी सिद्धान्तको ध्यानमें रखकर आपके पिताश्रीने आपको कलकत्तेमें प्रसिद्ध जौहरी बाबू बलदेवदासजीके पास जवाहरातकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये रक्खा था।

आपके जीवनका करीब आधा हिस्सा कलकत्तेकी ओर हुआ इसीसे गुजराती सज्जन होते हुए भी आप बाबूके नामसे विशेष सम्बोधित किये जाते थे।

आपके पिताजीका संवत् १६०६ में देहावसान हुआ। तबसे आपने साहसके साथ व्यापारमें भाग लेना प्रारंभ कर दिया।

उस समय बर्मामें बहुत थोड़े मूल्यमें अमूल्य जवाहरात मिलता था बाबू पन्नालालजी तीन गृहस्थोंके साथ संवत् १६११।१२ में दरियाके रास्तेसे बर्मा गये, तथा वहांसे रंगून और रूबी माइंसकी भी यात्रा आपने की। इस सात मासके सफरमें आपने बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जित की। इसी मुसाफिरीमें आपने बर्माके महाराज "थीबो" से भी मुलाकात की थी। इस प्रकार संवत १६२१ तक आप कलकत्ता, लखनऊ, कानपुर आदि शहरोंमें व्यापार करते रहे और बाद १६२२ में बम्बई आये। तबसे आपका खानदान एक प्रसिद्ध जौहरी कुटुम्बकी तरह बम्बईमें निवास कर रहा है।

बाबू पन्नालालजीने जोधपुर, जयपुर, अलवर, इन्दौर, हैदराबाद त्रावनकोर, भावनगर, जम्बू; (काश्मीर) विजय नगर, उदयपुर, जूनागढ़, झालरापाटन, डुंगरपुर, भोपाळ, पटियाळा, कच्छ, वड़वान, पाळीताना, व नैपाळ आदि नरेशोंको जवाहरात बेंचकर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की थी।

केवल भारतीय नरेशोंके साथ ही नहीं। वरन् कई यूरोपीय बड़े २ पुरुष, जैसे लार्ड रिपन, एशियाके जार्ज निकोलस, जर्मनीके प्रसिद्ध केसर विलियम, ड्यूक ऑफ़ कनॉट, आस्ट्रेलियाके एम्परर लार्ड लैंसडाऊन, लार्ड एल्गिन आदि पाश्चात्य राजवंशियोंके साथभी आपका सहयोग हुआ था, तथा इन लोगोंने प्रसन्न होकर समय समयपर आपको प्रशंसा पत्र भी दिये थे। उस समयके प्रिंस ऑफ़ वेल्स (भावीएडवर्ड) के पास भी आपने अपने जवाहिरात भेजे थे एवं आप स्वयंभी भारतमें इनसे मिले थे।

नाथालाल भाई (नाथालाल गिरधरलाल) बम्बई

सेठ माणिकलाल नरोत्तमदास जौहरी, बम्बई

जवाहिरातका व्यापार

भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार और उपयोग बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। कालिदास इत्यादि कवियोंके काव्योंमें भी इन जवाहिरातोंका वर्णन पाया जाता है। जिस समय यह देश सौभाग्यके शिखरपर मण्डित था उस समय यहांके समृद्धिशाली लोग अपने महलोंके चौक जवाहिरातोंसे जड़ाते थे। यहांके पुराण-साहित्यमें कौस्तुभमणि (हीरा) सूर्य्यमणि (माणिक) चन्द्रमणि (पुखराज) मरकतमणि (पन्ना) इत्यादि नव प्रकारके रत्नोंका वर्णन प्रचुरतासे पाया जाता है। पहले यहांके व्यापारी विदेशोंसे भी जवाहिरातका लेनदेन करते थे, ऐसा कई प्रमाणोंसे ज्ञात होता है।

मुगल कालीन भारतवर्षमें जवाहिरातोंका बहुत प्रचुरतासे उपयोग होता था। मुगल सम्राटोंके महलोंकी सौभाग्यशालिनी रमणियां इन जवाहिरातोंसे बनेहुए जेवरोंको बड़े चावसे धारण करती थीं। शाहजहां बादशाहके मुकुटका कोहिनूर हीरा जगत् प्रसिद्ध है, जो कई स्थानोंपर घूमता हुआ अब भारतसम्राटके मुकुटकी शोभा बढ़ारहा है।

इस समय भी भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार प्रचुरतासे होता है। पर रुई और दूसरे व्यापारों की तरह यह व्यापार भी विदेशाश्रित हो गया है।

इस समय भारतवर्षमें जितने जवाहिरातके बाजार हैं बम्बईका उनमें सबसे पहला नम्बर है। इस शहरमें इस कार्य्यके करनेवाले सैकड़ों बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी निवास करते हैं, जो लाखों करोड़ोंका व्यवसाय करते रहते हैं। बाजारके टाइमपर सैकड़ों व्यापारी अपनी सूक्ष्म दृष्टिसे जवाहिरातकी परीक्षा करते हुए दिखलाई देते हैं। इनकी इसी सूक्ष्म दृष्टिपर हजारों लाखोंके वारे न्यारे होजाते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो जवाहिरातका व्यापार दृष्टि व नजरका व्यापार है। इस व्यवसायके अन्दर वही व्यापारी विजयी और सफल हो सकता है जिसकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और बारीकी पकड़नेवाली हो। क्योंकि यह व्यापार इतना चपल और चमकदार है कि कभी २ बड़े २ सूक्ष्मदृष्टि अनुभवी और चंचल बुद्धिवाले भी इसमें गोता खा जाते हैं। बात यह है कि हीरे या दूसरी वस्तुओंकी परीक्षाके जैसे निश्चित नियम हैं ऐसा कोई निश्चित नियम जवाहि-

अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर बैङ्किग, सोना, चांदी तथा शेअर्सका बिजिनेस भी होता है।

मेसर्स परमानंद कुंवरजी जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीपरमानंद भाई बी० ए० एल० एल० बी० हैं। आप जैन बीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान भावनगर (काठियावाड़) है। इस फर्मका स्थापन परमानंद भाईने करीब ५ वर्ष पूर्व किया था। सेठ परमानंद भाई डायमंड मरचेंट्स एसोशिएशनकी मैनेजिंग कमेटीके सभ्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स परमानंद कुंवरजी जौहरी, जौहरी बाजार, T, A, Kalpataru—इस फर्मपर हीरा, पन्ना तथा प्रेशस स्टोनका व्यापार होता है। खासकर आप हीरेका व्यापार करते हैं। आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

(२) भावनगर—आनंदजी पुरुषोत्तम—यहां कपड़ेकी थोक बिक्रीका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स चुन्नीलाल कुँवरजी चौक T, A, Kalabattu—यहां पक्के कलाबत्तूका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स चुन्नीलाल कुँवरजी, गुलालवाड़ी—यहां कलाबत्तूका व्यापार होता है।

मेसर्स भोगीलाल लहरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद उभयचन्द व भोगीलाल लहरचंद हैं। सेठ लहरचंद भाई करीब ५०वर्षोंसे हीरेका व्यवसाय करते हैं। आप जैन बीसा श्रीमाल सज्जन हैं आपका मूल निवासस्थान पाटन (गुजरात) है। इस फर्मकी तरक्की सेठ लहरचंद भाईके हाथोंसे हुई।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स भोगीलाल लहरचंद चोक्सी बाजार बम्बई। T. A. Shashikant.—इस फर्मपर हीरा, पन्ना, मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है तथा विलायतसे डायरेक्ट जवाहिरातका इम्पोर्ट होता है।

(२) माटली वाई कम्पनी फोर्ट—इस फर्मपर मिल, जीन, एवं एग्रीकल्चर (खेतीबारी) सम्बंधी मशीनरीका बहुत बड़ा व्यापार व्यापार होता है।

होता है। यह मोती उत्कृष्ट श्रेणीका समझा जाता है। इसके सिवाय परसियन गल्फमें से निकलने वाला अरबियन मोती भी बहुत अच्छा समझा जाता है। मस्कतसे निकलनेवाला मोती भी गोल होता है इन मोतियोंको सीलीदाणा कहते हैं। इन मोतियोंके अतिरिक्त अफ्रिकाके "नीनोसार" जातिके, चीन समुद्रके "मगज" जातिके, सीलोनके "उडन" जातिके, आस्ट्रेलियाके "टाल" जातिके, और नगरके किनारेके गामशाई जातिके मोती भी बाजारमें बिकते हैं, मगर ये सब उपरोक्त जातिसे हल्के होते हैं।

जो मोती जितना ही सफेद, गुलाबी झांईवाला, गोल, बड़ा और अधिक वजनवाला होता है वह उतना ही कीमती समझा जाता है। इसके अतिरिक्त मोतीके छिद्रसे भी उसकी बहुमूल्यताका बहुत सम्बन्ध है। जिस मोतीका छिद्र छोटा होगा वह मोती बेशकीमती होगा। बड़े छिद्रवाला मोती यदि आबदार और गोल भी हुआ, तो भी उसकी कीमत बारीक छिद्रवाले मोतीसे कम हो जायगी। मोतीका आब बढ़ानेके लिये तथा उसका छिद्र छोटा करनेके लिए अनुभवी लोग कई तरहके प्रयोग करते हैं। आब बढ़ानेके लिए उन्हें एसिडकी बोतलोंमें रक्खा जाता है, और छिद्र छोटा करनेके लिए उनमें एक ऐसा पदार्थ भर दिया जाता है जिससे उनका छिद्र भी छोटा हो जाय और उनका वजन भी बढ़ जाय। मोतीको सुधारनेकी और भी कई तरकीबें हैं जिनके बदौलत बांके टेढ़े और कम आबवाले मोतीको भी सुधारकर अनुभवी लोग उसे बढ़िया बना लेते हैं।

उपरोक्त रत्नोंके सिवाय नीलम, पुखराज; गोमेधक, लहसुनिया, ओपाल राजावर्त, पीरोजा, सुलेमानी, गजदन्ती, चकमक इत्यादि कई प्रकारके नग तथा मोतीका चूरा और इमीटेशन नग इत्यादि वस्तुओंका व्यापार भी बम्बईके बाजारमें चलता है। कुछ दिनोंसे माणिकको भी एक नई जाति बाजारमें चालू हुई है। इसका रंग और इसकी लाली कभी २ तो ऐसी देखनेमें आती है कि असल माणिक भी उसके आगे फीका नजर आने लगता है। इसकी कीमत भी असली माणिकसे बहुत सस्ती होती है। अर्थात् एक रुपया रत्तीसे लेकर चार पांच रुपया रत्ती तक यह बिकता है। आजकल बम्बईमें इन नगोंका प्रचार बड़े जोरोंसे हो रहा है।

उपरोक्त रत्नोंका तोल अधिकांशमें रत्तीसे ही होता है, जौहरी लोग आपसमें कैरेटके हिसाबसे लेन देन करते हैं। ये सब तोल यहांके धर्म कांटेपर होता है। इन सब रत्नोंपर भिन्न २ प्रकारके प्रमाणसे बटाव भी मिलता है। जवाहिरात सम्बन्धी झगड़ोंको निपटानेके लिए "दी डायमण्ड मरचेण्ट्स एसोसियेशन" नामक मण्डल बना हुआ है। जवाहिरातका व्यापार जौहरी बाजार, मोती बाजार और खाराकुआपर होता है, कुछ दुकानें फोर्टमें भी है।

इस प्रकारके कार्य्यमें मालको जाननेवाले, समझनेवाले, और बाजारके अनुभवी आदमीकी सलाह या सहायता लेनेसे किसी प्रकारकी ठगीका डर नहीं रहता है।

सेठ कीर्तिलाल मनीलाल (मूलचन्द लल्लूभाई) बम्बई

सेठ हेमचन्द मोहनलाल जौहरी बम्बई

सेठ मोहनलाल हेमचन्द (चिमनलाल मोहनलाल) बम्बई

सेठ चिमनलाल भाई (चिमनलाल मोहनलाल) बंबई

सेठ अमृतलाल रायचन्द भाई जौहरी, बम्बई

सेठ अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी, बम्बई

सेठ [illegible] जौहरी, बम्बई

सेठ [illegible] भाई जौहरी, बम्बई

मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी

इस फर्मको २५ पूर्व सेठ चिमनलाल भाईने स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान अहमदाबाद है। आप जैन सज्जन हैं।

सेठ मोहनलाल हेमचंद भाईकी उम्र इस समय ६० वर्ष की है। सेठ मोहनलालजीके ७ पुत्र हैं जिनमें सेठ मणीभाई और सेठ चिमनभाई व्यापारमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनलालभाई सेठ भाईचंदभाई, तथा सेठ नवलचंद भाई हैं। सेठ नवलचंदभाई तथा सेठ भाईचंद भाईका मूल निवास सूरत है। आप इस फर्ममें पाटनर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी शेखमेमनस्ट्रीट-जवेरी बाजार T. A. Droph
यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त हीरा, पन्ना का व्यापार भी होता है।

आपका व्यापारिक सम्बन्ध पेरिस्से भी है। पेरिसके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स रोजन थालके साथ यह फर्म मोतीका व्यापार करती है।

मेसर्स नगीनचंद कपूरचंद जवेरी

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी वीसा ओसवाल जातिके श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ नगीनचंद कपूरचंदने करीब ६२ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपने सूरतमें एक जीवदया संस्था स्थापित की थी। उसमें इस समय करीब १॥ लाख रुपया जमा है। इसके व्याजसे जीव रक्षाका कार्य होता है। इसके अतिरिक्त आपने श्रीशांतिनाथजीके मन्दिरमें २५०००) का एक मुकुट अर्पण किया है। इस समय आपका बहुत बड़ा कुटुम्ब है। आपके ८ पुत्र हैं, सबसे बड़े श्रीफकीरचंद नगीनचन्द हैं। आप जीवदयाका कार्य संचालन करते हैं। आपके भाई सेठ गुलाबचन्द नगीनचन्द जौहरी महाजन धर्मकांटेके प्रमुख हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१)—मेसर्स नगीनचन्द कपूरचंद जौहरी, मुम्बादेवीके सामने जौहरी बाजार—T. A monner
यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त सब तरहके जवाहरातोंका काम भी होता है।

(२) सूरत—नगीनचंद कपूरचंद, गोपीपुरा सूरत—T. A. Naginchand यहां मोती तथा जवाहिरातका व्यापार होता है।

मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू अमीचंदजीके पुत्र बाबू दौलतचंदजी और बाबू [illegible]चंदजी हैं। आप जैन वीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास पाटन (गुजरात) है।

इस फर्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पूर्व बाबू पन्नालालजीके पुत्र बाबू अमीचंदजीने किया था। बाबू अमीचंदजीकी धार्मिक कार्योंकी ओर अच्छी रुचि थी। आपने वालकेश्वरपर तीन बत्तीके पास श्री आदिश्वर भगवानका एक सुन्दर जैन मंदिर बनवाया है। आप निजाम साहबके खास जौहरी थे। निजाम साहबके साथ जवाहिरात बेचनेका सम्बन्ध आपके कुटुम्बमें आपहीने स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त आपने ग्वालियर, पटियाला, ट्रावनकोर, उदयपुर, रामपुर आदि नरेशोंको भी अच्छा जवाहरात बेचा था। आपका देहावसान ७८ वर्षकी आयुमें सम्वत् १९८४ में हुआ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी, वालकेश्वर तीन बत्ती, यहां हीरा तथा सब प्रकारके जवाहिरातोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैङ्किग और शेअरका व्यापार होता है।

बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी

बाबू पन्नालालजी जौहरीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९०५ में कलकत्तेमें हुआ था। अल्प वयमें ही आपके पिताजीने आपको २ लाख रुपये देकर अलग कर दिया था। आपने अपनी व्यापार एवं व्यवहार कुशलतासे बहुत सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपने पटियाला भावनगर आदि रजवाड़ोंमें अच्छा जवाहिरात बेंचकर द्रव्य संचय किया था। आपका देहावसान संवत् १९५९ की ज्येष्ठ सुदी १५ को हुआ। मरहूम बाबू साहबके स्मरणार्थ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मोतीबाईने करीब १० जैन ग्रंथोंका प्रकाशन कर जैन जगतमें अच्छा ज्ञान प्रचार किया। बाबू अमीचंदजीने अपनी मातु श्री रतनबाईके स्मरणार्थ एक उपाश्रय, अपने अल्पवयमें स्वर्गवासी हुए पुत्र माणकलालके नामपर राधनपुरमें एक ज्ञान मंदिर, और गुजरमें एक उपाश्रय बनवाया। इस समय इस फर्मके मालिक बाबू रतनलालजी चुन्नीलालजी जौहरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

बम्बई—बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी, वालकेश्वर तीन बत्तीके पास—यहां हीरा मोती तथा सब प्रकारके जवाहरातोंका व्यापार होता है।

मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी

इस फर्मको २५ वर्ष हुए सेठ चिमनलाल मगनलालने स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान अहमदाबाद है। आप जैन सज्जन हैं।

सेठ मोहनलाल हिमचंद भाईकी इस समय ७० वर्षकी है। सेठ मोहनलालजीके ४ पुत्र हैं जिनमें सेठ मणिलालजी और सेठ चिमनलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनलालजी सेठ मणिलालजी तथा सेठ [illegible] हैं। सेठ [illegible] तथा सेठ [illegible] अधिक मूल निवासी [illegible] हैं। आप इस फर्मके [illegible] हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी, शेखमेमनस्ट्रीट-जवेरी बाजार T. A. [illegible]
यहाँ जवाहरातका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त हुंडी, चिट्ठी का व्यापार भी होता है।

आपका व्यापारके सम्बन्ध [illegible] है। [illegible] आपकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यापार करते हैं।

मेसर्स नगीनचंद कपूरचंद जवेरी

इस फर्मके मालिक मूल निवासी सेठ [illegible] जातिके श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ नगीनचंद कपूरचंदने करीब ६० वर्ष हुए स्थापित किया था। आपके [illegible] [illegible] [illegible] स्थापित की थी। आपने इस समय करीब [illegible] [illegible] [illegible] है। इसके आपके [illegible] व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त आपने [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] किया है। इस समय आपका [illegible] [illegible] [illegible] है। आपके ८ पुत्र हैं, जिनमें बड़े [illegible] [illegible] है। आप [illegible] [illegible] [illegible] करते हैं। आपके यहाँ सेठ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) —मेसर्स नगीनचन्द कपूरचंद जवेरी, [illegible] [illegible] T. A. [illegible]
यहां जवाहरातका [illegible] होता है। इसके अतिरिक्त [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

(२) सूरत—नगीनचंद कपूरचंद, [illegible] [illegible]—T. A. [illegible] यहां [illegible] [illegible] [illegible] व्यापार होता है।

सेठ नगीनभाई मंछुभाई जौहरी, बम्बई

स्व० सेठ माणकचन्द पानाचन्द, बम्बई

सेठ नगीनचन्द कपूरचन्द जौहरी, बम्बई

स्व० वाड़ीलालजी (हीरालाल वाड़ीलाल) बम्बई

इस फर्मके मूल स्थापक सेठ नगीनदास लल्लूभाई हैं। आपकी फर्मपर ५० वर्षसे हीरेका व्यापार होता चला आया है। आपका स्वर्गवास हुए करीब ७ वर्ष हुए।

सेठ नगीनदास भाईके २ पुत्र हैं (१) सेठ डाह्या भाई (२) सेठ छद्दरचन्दजी, भोगुर आप स्वरूपचन्द जी डायमण्ड मरचेण्टस् एसोसियशनके प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप पालनपुर जैन मण्डलके भी प्रेसिडेंट हैं। पालनपुर नवाब साहबके आप खास जौहरी हैं। यहां जौहरी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) बम्बई मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई एण्ड सन्स धनजीस्ट्रीट T.A. Pendont इस फर्मपर खास व्यापार हीरा पन्ना तथा जवाहरातका होता है। यहां थोक और खुदरा दोनों तरहसे हीरा बेचा जाता है।

(२) पालनपुर (गुजरात) मेसर्स नगीनादास लल्लूभाई ज्वेलर्स। इस फर्मपर भी हीरेका व्यापार होता है।

(३) रङ्गून मेसर्स नाथा भाई डाह्यालाल एन्ड को० ज्वेलर्स T. A. Honesty इस फर्मपर भी हीरे तथा दूसरी प्रकारके जवाहरातका काम होता है।

(४) एण्टवर्प (बेलजियम) मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई T. A. Dahyabhai यहांपर भी आपकी दुकान है एवम् यहांसे डायरेक्ट हीरा आपके यहां आता है।

इस फर्मकी ओरसे देशी राजाओंमें बहुत जवाहिरात जाता है। आपके ट्रवलिंग एजेंट मिस्टर एम० डब्ल्यू एडवानी राजधानोंमें घूमते रहते हैं।

मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ नाथालाल भाई तथा गिरधरलाल जी हैं। आप दोनों पार्टनर हैं। इस फर्मके तीसरे भागीदार श्री रतनचन्द जीका देहावसान हो गया है।

इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३० वर्ष हो गये हैं। सेठ नाथालाल भाईका मूल निवास खंभात है। आप पाटीदार सज्जन हैं। सेठ गिरिधरलाल जी पहिली बार १९००में एवं दूसरी बार १९२५में व्यापारके लिये विलायत जाकर आये हैं। वहांसे आपने अच्छी सम्पत्ति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी कसाराचाल इस फर्मपर हीरा पन्ना माणिक, आदि सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है।

श्री नाथालाल भाईके भतीजे माणिकलाल भाई भी माणिक पन्ना और नीलमका व्यापार करते हैं।

आपकी ओरसे हीराचंद गुमानजी बोर्डिंग हाउस चल रहा है उसमें करीब ८० हजार रुपये आपने दिये हैं। आपने ४०हजार रुपयोंकी लागतसे अहमदाबादमें सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस स्थापित किया तथा कोल्हापुरमें २२ हजार रुपयोंकी लागतसे दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया, सूरतमें दस हजार रुपयोंकी लागतसे एक चन्दावाड़ी धर्मशाला बनवाई, सम्मेदशिखर-रक्षा फण्डमें आपने करीब १० हजार रुपये दिये व आपने अपनी जिन्दगीके बीमेके दस हजार रुपये कोल्हापुर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके नाम तबदील कर दिये। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें करीब ५ लाख रुपयोंका दान किया है।

आपने चौपाटीपर रत्नाकर राज भवन नामक इमारत बनवाई तथा उसमें श्रीचन्द्राप्रभु स्वामीका सुन्दर चैत्यालय बनवाया।

बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके स्थापन कर्ता आपही थे तथा सर्व प्रथम उसके सभापतिका आसन आपहीने सुशोभित किया था। भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीके आप महामंत्री थे। सम्मेद शिखरजीपर भा० दि० जैन महासभाके आप स्थायी सभापति नियत किये गये थे। सहारनपुरकी भा० दि० जैन महासभाके सभापति भी आप रह चुके हैं। आपहीने लाहौरमें दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस भी स्थापित किया था।

आपकी सेवाओं और गुणोंसे प्रसन्न होकर बम्बई सरकारने आपको सन् १९०१ में जे० पी० (जस्टिस आफ दी पीस) की पदवीसे सुशोभित किया था। इसके अतिरिक्त दक्षिण महाराष्ट्रीय जैन सभाने दानवीर, एवं भा० दि० जैन महासभाने आपको जैन कुल भूषण, आदि पदवियोंसे सम्मानित किया था। आपने अपने जीवनमें ही अपनी प्रापर्टीका ट्रस्ट किया है जिसका नाम जुबिली बाग ट्रस्ट फण्ड है, इस ट्रस्ट की सब सम्पति धर्मादामें दीगई जिसकी मासिक आय करीब २ हजारके है। इसकी सुव्यवस्थाका सब भार ट्रस्टके अधीन है।

इस समय इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीचंदजीके पौत्र श्रीरतनचंदजी, सेठ पानाचंदजीकेपुत्र श्री ठाकुरदासजी। सेठ माणिकचंदजीके पुत्र श्री चिमनलालजी एवं सेठ नवलचंदजीके पुत्र श्रीताराचंदजी हैं। इस समय सारे कुटुम्बमें श्रीताराचंदजी ही प्रधान रूपसे कार्य करते हैं। आप शिक्षित एवं सादगी प्रिय सज्जन हैं। आपकी विधवा बहिन सेठ माणिकचंदजीकी पुत्री मगन बेनके नामसे एक विधवाश्रम [illegible] रहा है। इसके अतिरिक्त आपने १८ हजार रुपयोंकी लागतसे एक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी तयार [illegible]

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स माणकचंद पानाच [illegible] जवेरी मोती [illegible] [illegible]

व्यापार मोतीका है तथा दूसरे प्रकारके [illegible] [illegible]

आपके द्वारा मो[illegible] एक्सपोर्ट होता है।

रा० बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी०

बाबू जीवनलाल पन्नालाल जौहरी जे०पी० (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बसन्तलाल पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बाबू मोहनलाल पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल

बाबू साहबने साधारण परिस्थितिसे अपने व्यापारको स्थापितकर बहुत अधिक सम्पत्ति, मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आप जैन एसोसियशन ऑफ इण्डियाके प्रधान थे। गवर्नमेंटने बाबू साहबको जे० पी० पदवीसे सम्मानित किया था। जिस समय लार्ड एडिनबरा कलकत्ता आये थे तब बाबूसाहबको बम्बईके प्रतिनिधिकी हैसियतसे उपस्थित रहनेके लिये आमंत्रित किया था।

बाबूसहबकी धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि थी। अपनी मौजूदगीमें आपने करीब दो लाख रुपयोंकी सम्पत्ति दान की थी, एवं आठ लाख रुपये आपके देहावसानके समय विलमें फरमा गये थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन व्यतीत करते आपका देहावसान संवत् १९५५ की कार्तिक बदी ८ के रोज़ ७० वर्षकी उम्रमें बम्बईमें हुआ था।

बाबू पन्नालालजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू चुन्नीलालजी, बाबू अमीचंदजी, बाबू जीवनलालजी, बाबू भगवानदासजी व बाबू मोहनलालजी हैं। इनमें बाबू चुन्नीलालजी तथा बाबू अमीचंदजीका देहावसान हो गया है।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू जीवनलालजी जे० पी०; बाबू भगवानदासजी एवं बाबू मोहनलालजी हैं।

बाबू जीवनलालजी भी जवाहरातके व्यापारमें दक्षता रखते हैं। बाबू पन्नालालजी द्वारा की गई चेरिटीके आप प्रधान ट्रस्टी हैं। तथा आप तीनों भाइयोंने उस चेरिटीमें १ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति और प्रदान की थी।

बाबू जीवनलालजी जैन एसोसिएशन ऑफ इण्डियाके प्रेसिडेंट रह चुके हैं। आपने मुनि महाराज श्रीमोहनलालजी द्वारा स्थापित की हुई जैन सेंट्रल लायब्रेरी लालबागमें भी अच्छी सहायता दी है। इसके अतिरिक्त पालीताना, बालाश्रम आदिमें भी आप प्रेसिडेण्टके रूपमें काम करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे आप तीनों भाइयोंने मालवीयजीको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें ८००००) अस्सी हजार रुपये आपकी मातुश्री श्रीपार्वती बाईके नामसे दिये हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात जल-प्रलयके समय भी आपने उसमें अच्छी सहायता प्रदान की थी। हकीम अजमलखांके तिब्बिया कॉलेज देहलीमें, और तिलक स्वराज फंड आदिमें भी आपने सहायता दी है।

इसी प्रकार बाबू जीवनलालजीके भाई बाबू मोहनलालजी भी हरेक धार्मिक, सार्वजनिक एवं ज्ञाति सम्बन्धी कामोंमें भाग लिया करते हैं। बाबू विजयकुमार भगवानलाल भी फर्मके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स पूर्णचन्द्र बाबू पन्नालाल जौहरी निजाम बिल्डिंग कालबादेवी रोड T. A. Jewel store यहां हीरा पन्ना मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है। जवाहरातका आपके यहां

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी शेखमेमनस्ट्रीट बम्बई—इस फर्मपर सब प्रकारका चांदी व सोना का खरा दागीना, चांदीके वर्तन, मानपत्र, मेडिल्स, हीरा,मोती माणिक आदि जवाहरातके दागीने हर समय अच्छी तादादमें तैयार रहते हैं, तथा बाहरके आर्डर सप्लाई करनेमें बहुत सावधानी रक्खी जाती है।

(२) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी सुनारचाल—यहां सब प्रकारका चांदीका दागीना मिलता है।

मोतीके मुलतानी व्यापारी

मेसर्स आसनमल लालचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगरटट्ट (सिंध) है। यह फर्म पहिले जागूमल आसनमल नामसे करीब ४० वर्षोंसे व्यापार करती थी,वर्तमानमें ३।४ वर्षोंसे इस फर्मपर इस नामसे व्यापार होता है।

इस फर्मको सेठ जागूमलजी व आपके भानजे आसनमलजीने तरक्की दी। सेठ जागूमल जीका देहावसान १९७०में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र सेठ आसनमलजी, जेठानंदजी तथा श्रीयुत सेठ जागूमलजीके पुत्र सेठ धमनमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स आसनमल लालचंद बारभाई मोहल्ला नं०३ T.A.Fertile इस फर्मपर मोतीका व्यापार होता है, तथा कमीशनका काम भी यह फर्म करती है।

(२) बसरा (परशियन गल्फ) मेसर्स आसनमल लालचंद—यहां अनाजका व्यापार तथा मोती का व्यापार होता है। यह फर्म यहां करीब १०० वर्षोंसे व्यापार कर रही है।

(३) दुबई—(परशियन गल्फ) यहां कमीशनका व अनाजका काम होता है।

मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद रघुवंशी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगरटट्ट (सिंध) है आप रघुवंशी जातिके हैं। इस फर्मको सेठ गिरधारी दासजीने संवत १९८०में स्थापित किया, तथा वर्तमानमें इसके मालिक सेठ गिरिधारीदास जेठानंद तथा आपके छोटे भाई सेठ नारायणदास जेठानंद है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) नगरटट्ट—(सिंध) मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद T.A.Ragoowansi यहां इसफर्मका हेड आफिस है तथा इसफर्मके यहां राइस और फ्लावरमिल भी है।

स्व० सेठ लखमीदास टेकचन्द जौहरी बम्बई

सेठ दामोदर हेमनदास जौहरी बम्बई

हीरालाल हेमराज (३) जेसिंगलाल प्रेमचन्दलाल और (४) कीर्तिलाल मनीलाल। श्रीसूरजमल लल्लूभाई व्यवसायदक्ष व्यक्ति हैं।

आपका बम्बईका निवास स्थान डायमण्ड हाउस वरच्छा गंद्रीरोड है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई--मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई जौहरी कालबादेवीरोड—इस फर्मपर हीरा तथा सब प्रकारके आर्टिफल्स का व्यवसाय होता है।

मेसर्स हेमचन्द मोहनलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक पाटन (गुजरात) के निवासी जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म २५ वर्षोंसे बम्बईमें हीरेका व्यवसाय कर रही है, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हेमचन्द्र भाई, सेठ भोगीलाल भाई, सेठ मणिलाल भाई एवं सेठ चन्दुलाल भाई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हेमचंद मोहनलाल जौहरी, धनजीस्ट्रीट। यहां हीरे और पन्नेका माल व्यापार होता है। यह फर्म विलायतसे डायरेक्ट माल मंगाती है। यहां सिर्फ व्यापारियोंके साथही व्यवसाय होता है।

(२) एण्टवर्प (वेलजियम)—मेसर्स हेमचन्द्र मोहनलाल-इस-फर्मके द्वारा भारतके लिये हीरा खरीद कर भेजा जाता है।

मोतीके व्यापारी—

कल्यानचन्द घेलाभाई

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन हैं। इस फर्मको यहां करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ कस्तूरचन्दजीने स्थापित किया था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ प्रेमचन्दभाई व केसरीचन्दजी हैं।

आपने बम्बईमें महावीर स्वामीकी प्रतिष्ठामें करीब १० हजार रुपया खर्च किया तथा यहां के सार्वजनिक अस्पतालोंमें भी आपने १० हजार रुपया दिया। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स कल्यानचन्द घेलाभाई जौहरी बाजार—यहां मोतीका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा पेरिस मोती भेजे जाते हैं।

नामपर एक अस्पताल स्थापित किया है जो अभीतक म्युनिसिपैलिटीकी स्वाधीनतामें भली प्रकार चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स लखमीदास टेकचन्द जौहरी चारभाईमोहल्ला-इस फर्मपर मोतीका बिजिनेस होता है तथा विलायत भी मोतीका एक्सपोर्ट यह फर्म करती हैं इसके अतिरिक्त कमीशनका काम भी आपके यहां होता हैं।

मेसर्स लल्लूमल नाथामल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगर ठठ्ठ (सिंध) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ किशनदासजी हैं। आप भाटिया (वैष्णव-पुष्टिमार्गीय) सज्जन हैं। यह फर्म यहां संवत् १६८४ में स्थापित हुई।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स लल्लूमल नाथामल मस्जिद बंदररोड (हेड ऑफिस) यहां कमीशन एजंसी तथा मोतीका व्यापार होता है।

(२) बैरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (T.a. krishna) यहां कमीशन एजन्सी अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

(३) दबई (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (T.A. Kisani) —यहां भी कमीशन, अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

नगीनचंद मंच्छूभाई *

इस फर्मके मालिक सूरतके निवासी वीसा ओसवाल जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मंच्छू भाईने स्थापित किया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन सेठ नगीन भाईने ४० वर्षोंतक किया। आपका देहावसान संवत १६७७ में हो गया है।

सेठ नगीनचंद भाईने सूरतमें २५ हजारकी लागतसे एक साहित्य उद्धार फण्डकी स्थापना की है, जिसके द्वारा सस्ते मूल्यमें ग्रन्थ प्रकाशितकर ज्ञान प्रचार किया जाता है। तथा सूरतमें आपने २५ हजारकी लागतसे एक जैन श्वेताम्बर मंदिर बनवाया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भाईचंद नगीन भाई तथा सेठ पानाचंद चुन्नीलाल हैं। सेठ नगीन भाईके पुत्रोंने इनके स्मरणार्थ ३० हजारकी लागतसे सूरत लाइंसमें एक सेनेटोरियम बनवाया है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स नगीनभाई मंच्छूभाई शेख मेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर प्रधानतया मोतीका व्यापार होता है।

---

* इस फर्मका परिचय पृष्ठ १८० में छपना चाहिये था। पर भूलसे रह जानेके कारण यहां दिया गया—प्रकाशक—

हीरालाल हेमराज (३) जेसिंगलाल फेरावलाल और (४) कोर्तिलाल मनीलाल । श्रीसूरजमल लल्लूभाई व्यवसायदक्ष व्यक्ति हैं।

आपका बम्बईका निवास स्थान डायमण्ड हाउस वरच्छा गंड्रोरोड है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई--मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई जौहरी कालबादेवीरोड—इस फर्मपर हीरा तथा सब प्रकारके आर्टिफल्सका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हेमचन्द मोहनलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक पाटन (गुजरात) के निवासी जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म २५ वर्षोंसे बम्बईमें हीरेका व्यवसाय कर रही है, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हेमचन्द्र भाई, सेठ भोगीलाल भाई, सेठ मणिलाल भाई एवं सेठ चन्दुलाल भाई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हेमचंद मोहनलाल जौहरी, धनजीस्ट्रीट। यहां हीरे और पन्नेका थाक व्यापार होता है। यह फर्म विलायतसे डायरेक्ट माल मंगाती है। यहां सिर्फ व्यापारियोंके सायही व्यवसाय होता है।

(२) एण्टवर्प (बेलजियम)—मेसर्स हेमचन्द्र मोहनलाल-इस-फर्मके द्वारा भारतके लिये हीरा खरीदकर भेजा जाता है।

मोतीके व्यापारी—

कल्यानचन्द घेलाभाई

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन हैं। इस फर्मको यहां करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कल्याणचन्दजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ प्रेमचन्दभाई हेमचन्दजी हैं।

आपने बम्बईमें महावीर स्वामीकी प्रतिष्ठामें करीब १० हजार रुपया खर्च किया तथा पालीताणाके ब्रह्मचर्याश्रममें भी आपने १०हजार रुपया दिया। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स कल्यानचन्द घेलाभाई जौहरी बाजार—यहां मोतीका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा पेरिस मोती भेजे जाते हैं।

चांदी सोनेके व्यापारी

BULLION-MERCHANTS

सोने और चांदीका व्यवसाय

सोना खानमेंसे निकलनेवाली धातु है। दूसरी धातुओंकी तरह यह खानोंमेंसे थोकबन्द नहीं निकलता, प्रत्युत् बिखरा २ बहुत ही थोड़ी तादादमें निकलता है। कहीं २ नदियोंकी बालूमें से भी सोनेके परमाणु निकलते हुए देखे जाते हैं।

दुनियाके अन्दर सबसे अधिक सोना दक्षिण अफ्रिकामें निकलता है। यहांका सोना होता भी बहुत बढ़िया है। उसके पश्चात् अमेरिकाके संयुक्त राज्य और अफ्रिकाका नम्बर है। भारतवर्ष में बहुत कम सोना निकलता है। दुनियाकी पैदावारकी अपेक्षा यहां ३ प्रतिशतसे भी कम सोना निकलता है। औसत दृष्टिसे यहां प्रति वर्षकी पैदावार छः लाख औंसके लगभग मानी जाती है। इस पैदावारका बहुत अधिक भाग अर्थात् करीब ६४ प्रतिशत तो अकेले मैसूर राज्यकी कोलर गोल्ड फील्ड नामक खदानसे निकलता है। इस खदानसे १९०५ में ६१६७५८ औंस सोना निकाला गया था। मगर उसके बादसे वहांकी तादाद कुछ कम हो गई है। सन् १९१६ में वहां कुल ५५४००० औंस सोना तैयार हुआ था। इन खानोंमें काम करनेके लिये मैसूर दरबारकी ओरसे कावेरी नदीके जलप्रपातसे बिजली तैयार की जाती है, और वहींसे खानोंमें बिजलीकी शक्ति भेजी जाती है। इस कारखानेका काम सन् १९०२ से प्रारम्भ हुआ है और तबसे इसकी बड़ी तरक्की हो गई है। इसकी वजहसे खानोंमें पड़नेवाला खर्च भी बहुत कम हो गया है।

मैसूरके पश्चात् भारतवर्षमें सोना निकालनेवाले प्रांतोंमें निजाम राज्यका नम्बर है। यहां लिंग सागर जिलेके हट्टी नामक स्थानमें सोनेकी खान है। सन् १९१६ में इस खानसे १७६०० औंस सोना निकला था।

खानोंको छोड़ नदियोंकी बालूको धोकर सोना निकालनेकी चाल भी भारतमें कई स्थानोंपर प्रचलित है। बिहारके सिंहभूम और मानभूमि जिलेमें सुवर्णरेखा और उसकी सहायक नदियोंकी बालू धोनेसे सोना निकलता है। सन् १९१५ सिंहभूमसे करीब ४५० और १९१६ में ८६४ औंस सोना निकाला गया था। बर्माकी इरावती नामक नदीकी बालूमें भी सोना पाया जाता है। सन् १९०२ में इस उद्योगके लिये वहां एक कम्पनी खड़ी की गई थी कुछ वर्षों तक इसकी खूब

मेसर्स नेमचंद खीमचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप वीसा ओसवाल श्वेताम्बरी सज्जन हैं। सेठ अभयचन्दजीके पिताजीके हाथोंसे इस फर्मका स्थापन हुआ था। सेठ अभयचन्दजीका देहावसान संवत् १९७१ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन सेठ नेमचन्द अभयचन्द करते हैं। अभी १ मास पूर्व आपको गव्हर्नमेंटने जस्टिस ऑफ दी पीसकी पदवी दी है। आप मोतीके धरम-कांटेके ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप गुलाबचंद रायचंदके केळवणी (शिक्षा) फण्डके ट्रस्टी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नेमचन्द अभयचन्द जौहरी बुलियन एक्सचेंजके सामने मोती बाजार, यहां खास मोतीका व्यापार होता है तथा हीरेका भी काम होता है। यह फर्म विलायत भी माल भेजती है।

मेसर्स माणकचंद पानाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास सूरत है। आप वैश्य वीसा हुमड जातिके सज्जन हैं। इस वंशमें प्रतिष्ठित व्यक्ति दानवीर जैन कुल भूषण सेठ माणिकचंदजी जैन जे० पी० हुए हैं। आपके पितामहका नाम सेठ गुमानजी व आपके पिताजीका नाम सेठ हीराचंदजी था। आपका जन्म मिती कार्तिक वदी १३ संवत् १९०८ में सूरतमें हुआ था। आप ४ भाई थे। सेठ मोतीचन्दजी, सेठ पानाचन्दजी, सेठ माणकचन्दजी, व सेठ नवलचंदजी।

सेठ माणिकचन्दजी प्रारंभमें बहुत साधारण स्थितिके व्यक्ति थे। प्रारम्भमें आपने केवल १५) मासिकपर सर्विस की थी। संवत् १९२० में आप अपने भाइयोंके साथ बम्बई आये, एवं १७ वर्षकी आयुसे भाइयोंके साथ मोतीका व्यापार आरंभ किया। संवत् १९२५ में आपने माणकचंद पानाचंदके नामकी फर्म स्थापित की। संवत् १९३४ से आपने यूरोपीय देशोंसे मोतीका व्यापार आरंभ किया तथा उससे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बम्बईमें बहुतसी स्थावर मिल्कियत स्थापित की।

व्यापारिक जीवनके साथ २ बाल्यकालहीसे आपकी धर्मकी ओर अधिक रुचि थी। ८ वर्षकी अवस्थासेही आप अपने पिताश्रीके साथ श्री जिनेश्वरजीकी पूजामें शरीक हुआ करते थे। आप अपने समयके एक प्रख्यात धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने कई तीर्थोंकी व्यवस्थामें सुधार किया। बम्बईमें आपकी ओरसे हीराबाग धर्मशाला नामक एक बहुत प्रसिद्ध धर्मशाला बनी हुई है। सैकड़ों यात्री रोज इस धर्मशालामें विश्राम पाते हैं इसका प्रबंध बहुत अच्छा है। बम्बईमें

सेठ मोतीलालजी (चिमनराम मोतीलाल) बम्बई

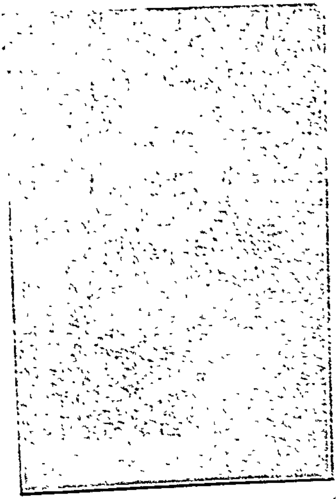

सेठ गोवर्द्धनदासजी (नारायणदास मनोहरदास) बम्बई

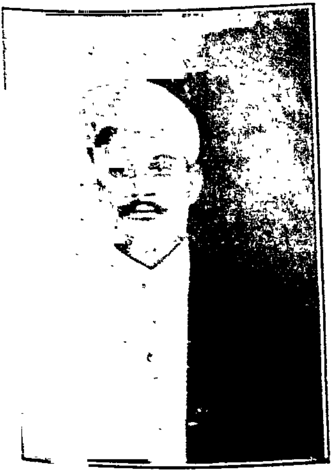

सेठ राधाकृष्णजी दम्मानी (बालकिशनदास रामकिशनदास),

सेठ देवकिशनदासजी दम्मानी (बा० रा०

यह खानदान सिंध प्रांतमें बहुत मशहूर माना जाता है, तथा मुखीके नामसे विशेष प्रसिद्ध है। मुखी जेठानंदजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नर रह चुके हैं, आप बम्बई कौंसिलके भी ६ वर्षतक मेम्बर रहे हैं। बम्बईके सिंधी व्यापारियोंमें मुखी जेठानंदजीकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी स्थायी सम्पत्ति बाग बगीचा वगैरः करांची, हैदराबाद, सक्खर, फिरोजपुर नवाबशाह जिला आदि स्थानोंपर अच्छी तादादमें हैं। मुखी प्रीतमदासजीके नामसे प्रीतमाबाद नामका एक गांव नवाबशाह जिलामें बसा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद(सिंध)—मेसर्स चांडूमल वलीराम (T. A. Bulion) यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स चांडूमल वलीराम फरलाक ब्रिज (T. A. Mukhi) यहां बुलियन, बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) करांची—मेसर्स चांडूमल वलीराम (Bullion) यहां हाजिर रुई, ग्रेन, चांदी, सोना तथा कमीशनका काम होता है।

(४) फीरोजपुर सिटी-मेसर्स चांडूमल वलीराम (Mukhi) यहां बैंकिंग, चांदी, सोना तथा कपड़ा और शक्करके कमीशनका काम होता है।

(५) फाजिलका—(Mukhi) बैंकिंग, सोना, चांदी, कमीशन, और शक्करका काम होता है।

(६) अबोर—(Mukhi) बैंकिंग, सोना, चांदी, ग्रेन, कपड़ा शक्कर और कमीशनका काम होता है।

(७) भटिंडा - मेसर्स चांडूमल वलीराम (Mukhi) बैंकिंग बुलियन मर्चेन्ट व कमीशनका काम होता है।

(८) जैतू—(पंजाब) (Mukhi) बैंकिंग, बुलियन, कमीशन व शक्करका काम होता है।

(९) बरनाला—(पंजाब) मेसर्स चांडूमल वलीराम „ „

(१०) टंडावन—(हैदराबाद) (mukhi) „ „

मेसर्स नारायणदास मनोहरदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप [illegible] सज्जन हैं। इस फर्मको करीब १८५ वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने स्थापित किया था। तबसे यह फर्म बराबर तरक्की करती आ रही है। यह फर्म चांदी बाजारमें बहुत पुरानी मानी जाती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ [illegible] हैं। आप सेठ नारायणदासजीकी सातवीं पीढ़ीमें हैं। आप [illegible] अच्छा काम किया करते हैं।

मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक अहमदाबादके निवासी हैं। इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ भोगीलाल भाईने स्थापित किया था। आप ओसवाल जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अहमदाबाद—(हेडऑफिस) मेसर्स दौलतचंद जवेरचंद, डोसीवालानी पोल—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खास व्यापार मोतीका है एवं इसके अतिरिक्त हीरे तथा जवाहरातका काम भी होता है।

(३) बम्बई—चिमनलाल साराभाई जौहरी हार्नबीरोड नवाब बिल्डिंग—यहां हाजर रुईका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—चिमनलाल साराभाई मारवाड़ी बाजार, यहां रुईके वायदेका काम होता है।

(५) अहमदाबाद—चिमनलाल साराभाई डोसीवालानी पोल यहां रुईका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल

इस फर्मके मालिक पाटन (पालनपुर) के निवासी बीसा ओसवालजैन (साधु मार्गीय) हैं। बम्बईमें इस फर्मको सेठ वाड़ीलाल भाईने ४०।४५ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका देहावसान संवत् १९७३में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ वाड़ीलाल भाईके भतीजे सेठ हीरालालजी हैं। सेठ वाड़ीलाल भाईने पालनपुरमें जीवनलाल त्रिभुवनदासके नामपर २८ हजारकी लागतसे एक वाड़ी बनवाई है। सेठ हीरालालजीके पिता सेठ छोटालालजीने ६ हजारकी लागतसे पालनपुरमें एक लायब्रेरी बनवाई है, तथा फीमेल हास्पिटलमें सेठ सरूपचंद त्रिभुवनदासके नामसे १४ हजारकी सहायता दी है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खासतौरसे मोतीका व्यापार होता है।

गोल्डस्मिथ

मेसर्स नरोत्तम भाउ जौहरी

इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पहिले सेठ नरोत्तम भाउनेकी थी। आप मोढ़ जातिके भावनगर निवासी सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादास नरोत्तमदास हैं। आपको फर्मको भावनगरने अपाइंटमेंट किया है।

बुलियन मर्चेण्ट्स

सेठ अगरचन्दजी बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग
,, अमुलख अमीचंद बुलियन एक्सचेंज
,, फक्कड़ भाई जुमखराम बुलियन एक्सचेंज
,, कस्तूरचंद पूनमचंद बुलियन एक्सचेंज
,, कान्तिलाल कल्याणदास बुलियन एक्सचेंज
,, केदारमल सांवलदास बुलियन एक्सचेंज
,, गजानन्दजी बियाणी बुलियन एक्सचेंज
,, गणपतलाल माधवजी बुलियन एक्सचेंज
,, गोविन्दराम नारायणदास बुलियन एक्सचेंज
,, गोरधनदास पुरुषोत्तमदास बुलियन एक्सचेंज
,, गोविन्ददास भैय्या c/o चांददास दम्माणी
,, चम्पकलाल नगीनदास बुलियन एक्सचेंज
,, चांददास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
,, चिमनराम मोतीलाल बुलियन एक्सचेंज
,, चेतनदास बनेचंद बुलियन एक्सचेंज
,, जगजीवनदास सेवकराम बुलियन एक्सचेंज
,, जमुनादास मथुरादास बख्शी हार्नबी रोड
,, जीवनलाल प्रतापसी बुलियन एक्सचेंज
,, जीवनलाल भीकिशन बुलियन एक्सचेंज
,, जीवाभाई केशरीचंद बुलियन एक्सचेंज
,, ठाकरसी पुरुषोत्तम मारवाड़ी बाजार
,, ठाकुरभाई दीपचंद खारा कुंआ
,, दयालदास खुशीराम बुलियन एक्सचेंज
,, द्वारकादास मीनराज बु० ए० बिल्डिंग
,, देवकरण नानजी बुलियन एक्सचेंज
,, नारायणदास केदारनाथ बुलियन एक्सचेंज
,, नारायणदास मनोहरदास बु० ए० बिल्डिंग
,, नारायणदास मणीलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, प्रेमसुख गोवर्द्धनदास बु० ए० बिल्डिंग
,, बालाबक्स बिरला बु० ए० बिल्डिंग
,, बिड़ला ब्रदर्स बु० ए० बिल्डिंग
,, ब्रजमोहनदास बिरला c/o बिरला ब्रदर्स
सेठ भोगीलाल अचरजलाल खारा कुंआ
,, भोगीलाल मोहनलाल जवेरी खारा कुंआ
,, भोलाराम सराफ बु० ए० बिल्डिंग
,, भोगीलाल चिमनलाल सराफ बाजार
,, भोगीलाल अमृतलाल बु० ए० बिल्डिंग
मेसर्स एम० बी० गांधी एण्ड को० बु० ए०
सेठ मगनलाल मणिकलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, मंगलदास मोतीलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, माणीलाल चिमनलाल सराफ बाजार
,, मनुभाई प्रेमानन्ददास लहारचाल
,, माणेकलाल प्रेमचंद रामचन्द अपोलो स्ट्रीट
,, मोतीलाल वृजभूषणदास श्राफ बाजार
,, रतनजी नसरवानजी लाकड़ावाला बु० ए०
,, रामकिशनदास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
,, रामकिशन सीताराम बु० ए० बिल्डिंग
,, रामकिशनदास खत्री बु० ए० बिल्डिंग
,, हरजीवन नागरदास कम्पनी बु० ए०
,, हिम्मतलाल हेमचंद बु० ए० बिल्डिंग

सेठ जग्गूमल टीकमदास (आसनमल लालचन्द) बम्बई

सेठ गिरधारीदास जेठानन्द बम्बई

शेअर- मर्चेण्ट्स

SHARE-MERCHANTS

जी चार भाई थे मूलचंदजी २ प्रह्लाददास जी ३ सतरामदासजी ४ ईश्वरदास जी । इनमेंसे सेठ मूलचंदजी, प्रह्लाददास जी तथा ईश्वरदास जी इन तीनों भाइयोंके पुत्र इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) बम्बई नं० ३ मेसर्स मूलचंद हेमराज बारभाई मोहल्ला T.A. Histori इस फर्मपर चांवल काधीतथा शक्करका परशियाके लिये एक्सपोर्ट होता है तथा बेङ्किग व कमीशन एजंसीका वर्क और मोतीका व्यापार होता है ।

(२) बेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचंद प्रह्लाददास T.A. Totai यहां चावल काफी आदिका व्यापार कमीशन एजंसी तथा मोतीका भारतके लिये इम्पोर्ट होता है।

मोतीकी सीजनके समय आपकी एक और ब्रेंच चेनसे कार्निफ्तक यहां खुल जाया करती है इस फर्मपर समुद्रसे निकाले जानेवाले मोतीकी खरीदका व्यापार होता है।

(३) गेत (परशियन गल्फ)—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नारायणदास—यहां चांवल, काफी, खांड एवं मोतीका व्यापार होता है यह फर्म सीजनके समय रहती है।

(४) दुबई-(परशियन गल्फ) पुरुषोत्तमदास नारायणदास इस नामसे यह फर्म सीजनके समय मोतीकी खरीदीका काम करती है ।

सिन्ध प्रांतके दरा नामक स्थानमें आपकी द्वारकादास भगवानदास एण्ड कंपनीके नामसे गड्डा फ्रेक्टरी और पेटी मिल है। आपकी ओरसे सेठ प्रह्लाददास हेमराज इस नामसे नगर ठट्ठमें एक बगीचा और तालाब बना हुआ है । सेठ मूलचंद हेमराजके नामसे भी एक बगीचा और कुंआ बना हुआ है । सेठ पुरुषोत्तमदास प्रह्लाददासके नामसे आपकी बहारा खेती है।

मेसर्स लखमीदास टेकचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगर ठट्ठ (सिन्ध) है। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब १४ वर्ष हुए। सेठ लखमीदासजीने इसे यहां स्थापित किया था। आप सेठ टेकचंदजीके पुत्र थे। आपका देहावसान संवत् १९६७में हुआ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लखमीदासजी के भानजे सेठ तोलाराम जी हैं। सेठ— लखमीदासजी, बम्बई निवासी नगरठट्ठके भाटिया तथा ठट्ठाना व्यापारियोंके संघके प्रेसिडेंट थे।

सेठ लखमीदास जी ने नगरठट्ठमें एक श्री रामजीका मंदिर बनवाया है तथा एक मंदिर और श्री लक्ष्मीनारायण भगवानकी गो-स्वामियोंके ठहरनेके लिए बनवाया है। धर्मशाला भी चालू है जिसमें सेठ तोलाराम जी ने सेठ लखमीराम जी के स्मारक स्व

शेअर बाजार

शेअरका व्यवसाय सर्व साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता। इस व्यवसायके करनेमें बहुत सम्पत्ति की आवश्यकता होती है। शेअरका शाब्दिक अर्थ है, हिस्सा—बहुत अधिक लोग मिल, एक निश्चित रकमके द्वारा एक कम्पनी स्थापित करके इस रकमको कई हिस्सोंमें बांट देते हैं। इन्हीं हिस्सों-को शेअर कहते हैं। इस प्रकारके शेअरोंके भाव कम्पनीकी व्यवसाइक परिस्थितिके अनुसार हमेशा घटा बढ़ा करते हैं। बम्बईके व्यवसाइक जीवनमें शेअर बाजारका इतिहास भी बहुत पुराना है। बम्बईकी दरिया भरनेके लिये खड़ी की जानेवाली कम्पनियोंके शेअरोंकी, शेअर बाजारके राजा सेठ प्रेमचंद रायचंद द्वारा की गई उथल पथलकी बातें आज भी सुनने वालोंको चकित कर देती हैं। सन् १९६३।६५ के आस पास सारा शेअर बाजार सेठ प्रेमचंद रायचन्दके हाथोंमें था। आपके द्वारा स्थापित की हुई एक कम्पनीके शेअर जिसके पहले कालके ५०००) भरे जा चुके थे,का भाव करीब ३६०००) तक चढ़ गया था। इस बाजारके व्यवसायिक समाजने सेठ प्रेमचन्द रायचंदके मान स्वरूप आपका एक स्टेच्यू शेअर बाजारमें बनवाया है।

बम्बई, अहमदाबाद, तथा और स्थानोंकी मिलों तथा और कई ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके शेअरोंके सौदे यहांके शेअरबाजारमें लाखोंकी संख्यामें प्रतिदिन होते हैं। इस व्यवसायके करने वाले करीब ७०० दलाल हैं। यह व्यवसाय बहुत सूक्ष्म दृष्टिका है। मिलोंकी परिस्थिति कैसी है, हवा पानी एवं उपजकी हालत क्या है, बाजारका धोरण क्या है, शेअर बाजारमें बड़ी बड़ी उथल पथल करनेवाले व्यापारियोंकी व्यवसायिक करामाते किस तरफ काम कर रही हैं आदि २ कई बातोंका बड़ी सावधानी पूर्वक ध्यान रखना पड़ता है।

शेअर बाजारके विशाल चौकमें सौदा करते हुए व्यापारियोंकी जमघटका अपूर्व दृश्य होता है, ऐसा मालूम होता है कि सब व्यापारी अपने २ भाग्यका फैसला करनेके एवं एक तिजोरीकी रकम दूसरी तिजोरीमें ले आनेके लिये जी जानसे प्रयत्न कर रहे हैं। शेअर ३ प्रकारके होते हैं। (१) आर्डिनरी (२) डीफर्ड (३) प्रिफरन्स। इसके अतिरिक्त लोन, पोस्टल सार्टिफिकेट, करंसीनोट आदि कई प्रकारके सौदे इस बाजारमें होते हैं। इसमें व्यवसाय करनेवाले करीब ७०० दलाल हैं। तथा प्रति मास करीब ३४ करोड़ रुपयोंका लुकसान; करना [illegible] है। इस बाजारमें व्यवसाय

हो रही थी। उस समय सेठ प्रेमचंदजीकी बाजार पर जबर्दस्त धाकथी, कि व्यापारी कहते थे "कि आज तो आ भाव छै पन काले प्रेमचंद सेठ करे सो खरा," इस प्रकार इस व्यवसायमें आप इतने सफल हुए कि देखते २ करोड़ पति बन गये। उस समय सेठ प्रेमचंदजीकी मीठी नजरही किसी व्यापारीको लखपती बनानेमें काफी थी।

सन् १८६३में कुलबासे बाळकेश्वर तक दरिया पूरनेके लिये कम्पनी स्थापित करनेके लिये सरकारने प्रेमचंद सेठको परवानगी दी, इस कामके लिये जो अनेक कम्पनियां निकलीं उनमें दि बाम्बे रेक्ले-मेशन कम्पनी दस दस हजारके शेअरसे प्रेमचंद सेठ की सूचनासे निकली। इन शेअरोंमें पांच हजार रुपयेके पहिले कलत भरे ही थे, कि बहुतही शीघ्र शेअरके भाव एकदम बढ़ गये, और बाकी पांच हजारके शेअरके छत्तीस २ हजार रुपये व्यापारियोंको मिले; इस घटनासे कई नई कम्पनियां अपने शेअरोंका भाव बढ़ानेके लिये प्रेमचंद सेठसे प्रार्थना करने लगी। मतलब यह कि सेठ प्रेमचंदजी हिन्दुस्थान होमें नहीं; पर विलायतमें भी एक बड़े व्यापारी माने जाने लगे। इस प्रकार करीब ३५।४० वर्षों तक आपने बम्बईके नाणा बजार पर काबू रक्खा था।

कालकी गति निराली है, एक समय ऐसा भी आया कि जब शेअरोंका भाव एक दम गिर गया, इधर प्रेमचंद सेठने महंगे भावमें रूई खरीद कर विलायत भेजना आरंभ किया, पर अमेरिकाका युद्ध शांत होजानेसे रूईका भाव भी बहुत गिर गया, इससे प्रेमचंद सेठको बहुत अधिक नुकसानमें आना पड़ा। उस समयकी भीषन परिस्थितिको देख कर लोग आश्चर्य करने लगे।

व्यापारिक चतुराई और नाणाकी उथलपथलके साथ २ सेठ प्रेमचंदजीने परोपकारके कार्योंमें भी बहुत अधिक सम्पत्ति दान की। आपके किये हुए लाखों रुपयोंके स्थायी दान को याद लोग सैकड़ों वर्षोंतक न भूलेंगे। आपने अपने जीवनमें करीब ६० लाखका भारी दान किया था जिसका कुछ परिचय इस प्रकार है।

(१) सवा छः लाख रुपया बम्बई यूनिवर्सिटीमें
(२) सवा चार लाख रुपया, कलकत्ता युनिवर्सिटीमें
(३) पांच लाख रुपया बम्बईमें अपने नामसे स्थापित किये हुए बोर्डिंगमें
(४) अस्सी हजार रुपया प्रेमचन्द रायचन्द ट्रेनिङ्ग कालेज अहमदाबादमें
(५) पैंसठ हजार रुपया सूरतकी धर्मशालामें
(६) साठ हजार रुपया फीयर फ्लेयर कन्याशालामें
(७) पचास हजार रुपया स्कोटिश आर्फनेजमें
(८) चालीस हजार रुपया गिरनार की तलहटीकी धर्मशालामें
(९) पैंतीस हजार रुपया भरोंच की रायचन्द दीपचंद कन्याशालामें
(१०) बीस हजार रुपया सूरतकी रायचंद दीपचंद कन्याशालामें

हीरा पन्ना मोती और जवाहरातके व्यापारी

अलीभाई अब्बाभाई धनजी स्ट्रीटका नाका
अरदेसर होरमसजी माउंटवाला
कन्हैयालाल ईश्वरलाल एण्ड को० जौहरीबाजार
के० वाडिया एण्ड० को० मांट रोड
कल्याणचंद सोभागचंद विट्ठलवाड़ीका नाका
सौगनीअल सुन्दरलाल शेखमेमनस्ट्रीट (आपका परिचय जयपुरमें दिया गया गया है ।)
गोरड़ भाई डोसूजी जौहरी बाजार (मोती)
गुलाबचंद देवचंद जौहरी बाजार
चिमनलाल छोटालाल जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
चुन्नीलाल खेमचंद शाह, जौहरी बाजार
जुगल किशोर नारायणदास कालबादेवी (पन्ना) (आपका परिचय उज्जैनमें दिया गया है)
जौहरा वेचर भाई कोठारी जौहरी बाजार
जीवा भाई मोहकम जौहरीबाजार
डायाभाई छगनलाल जौहरी
धन्नामल चेलाराम फोर्ट मेडोज़स्ट्रीट
ताराचंद परशुराम फोर्ट (क्यूरियो मरचेन्ट)
नगीनचंद फूलचन्द जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
पोनल ब्रदर्स रत्नाकरंदर, अपोलोस्ट्रीट,
फरामरोज सोराबजीखान फोर्ट
विट्ठलदास चतुर्भुज एण्ड कं० जौहरी बाजार
बापूजी बालूजी सरकार जौहरी बाजार
फूलचन्द कानूरचन्द, लखमीदास मारकेटकेपास
मानचन्द चुन्नीभाई सराफ कालबादेवी
मणीलाल अमूलखभाई जौहरी बाजार
मणीलाल रिखबचन्द जौहरी बाजार
मंगलदास मोतीलाल मम्बादेवी
मणीलाल सूरजमल एण्ड को० धनजी स्ट्रीट
रामचन्द्र ब्रदर्स मेडो स्ट्रीट फोर्ट
रामचन्द मोतीचन्द जौहरी बाजार
रूपचन्द घेलाभाई पारसीगली
पी० डुवास एण्ड कं० मेडो स्ट्रीट फोर्ट
लल्लूभाई गुलाबचन्द जौहरी चोकसी बाजार
वाड़ीलाल हीरालाल एण्ड को० जौहरी बाजार
लखमीदासचुन्नीलाल मारवाड़ी बाजार
रेवाशंकर गजजीवन शेखमेमनस्ट्रीट
न्यू पर्ल ट्रेडिंग कम्पनी गनेशवाड़ी
लालभाई कल्याणभाई एण्ड कम्पनी

स्व॰ सेठ प्रेमचन्द रायचन्द (जे॰ नाइट) बम्बई

सेठ के॰ आर॰ पी॰ श्राफ, बम्बई

पता—Seaworthy यहां आपका हेड आफिस है इसमें बैंकिंग और फ्रेंड ब्रोकरका काम होता है।

२ बंबई—मेसर्स देवकरण नानजी कोल्ड शेअर बाजार—यहां आपके २ आफिस हैं। जिनमें शेअर, स्टाक ब्रोकर्स और गवर्नमेंट सेक्यूरिटीका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार—यहां रुईको दलालो निजी व्यवसाय होता है।

४ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी शिवरी—यहां रुईका व्यवसाय होता है।

५ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी जवेरी बाजार—यहां बुलियन मर्चेन्ट तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास हीरालाल गांधी

इस फर्मके मालिक खंभात निवासी ... धर्म मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्मको २८ वर्ष पूर्व सेठ माणिकलाल देवचंद गांधीने स्थापित किया था। आपका देहावसान सन् १९२१ में हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदास हीरालाल और सेठ मथुरादास हीरालाल भाई हैं। सेठ भगवानदासजीने सन् १९०८ में विलायतकी कम्पनीका ... काम आरंभ किया तथा वर्तमानमें आप सब बैंकोंके साथ दुकानका लिक्विडेशन करते हैं। आपने सन् १९२० में अपनी ... सन् १९२१ में ८८ ... लिये बम्बईमें एक ... बनवाया तथा अपनी मातुश्रीके नामसे होमियोपैथिक डिस्पेंसरी स्थापित की। आपने सन् १९२० में बुलियन मार्केटमें अपनी फर्म स्थापित की। आपको शुद्ध देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स एम० बी० गांधी कम्पनी ८० एस्प्लेनेड रोड फोर्ट—यहां ... का व्यापार होता है।

(२) बम्बई-मेसर्स भगवानदास हीरालाल ...—यहां शेअर और सिक्यूरिटीका व्यवसाय होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स एम० बी० गांधी बुलियन एक्सचेंज ...—यहां चांदी सोनेका व्यापार तथा ... लिक्विडेशन होता है।

(४) मेसर्स भगवानदास हीरालाल गांधी जौहरी बाजार बम्बई—यहां कॉटन लिक्विडेशन होता है।

मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान ... (काठियावाड़) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखलाल ... हैं। आप १५ वर्षोंसे ... व्यवसाय करते हैं।

सोने चांदीके व्यापारी

मेसर्स चिमनराम मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मलसीसर (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसे सेठ मोतीलालजीने स्थापित किया, और आपहीके द्वारा इस फर्मको अच्छी तरक्की मिली। सेठ मोतीलालजी चांदी बाजारमें अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी माने जाते हैं। साधारण बोल-चालमें लोग आपको सिलवर किंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं। आपकी अवस्था इस समय ६२ वर्षकी है। आप जयपुरमें अग्रवाल सम्मेलनके सभापति रहे हैं। चांदी बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ बम्बई—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेख मेमन स्ट्रीट, यहां चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस और वायदेका बहुत बड़ा काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल १३२ तुलापट्टी, यहां चांदी सोनेके हाजर तथा वायदे बिजिनेस होता है।

३ कानपुर—कमलापत मोतीलाल, यहां इस नामसे एक शक्करकी मिल है, उसमें आपका साझा है।

४ अहमदाबाद—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल स्टेशनके पास, यहां कपड़ेको आढ़तका काम होता है।

मेसर्स चांदूमल वलीराम मुखी

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए यहां ८० वर्ष हुए। इसे मुखी चांदूमलजीने स्थापित किया था। आपके बाद सेठ वलीरामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें मुखी [illegible] जी और मुखी गोविंदरामजी इस फर्मके मालिक हैं।

पता—Seaworthy यहां आपका हेड आफिस है इसमें बैंकिंग और फ्रेण्ड ब्रोकर्सका काम होता है।

२ बंबई—मेसर्स देवकरण नानजी ओल्ड शेअर बाजार—यहां आपके २ आफिस हैं। जिनमें शेअर, स्टाक ब्रोकर्स और गवर्नमेण्ट सेक्यूरिटीका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार—यहां रूईकी दलाली निजी व्यवसाय होता है।

४ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी शिवरी—यहां रूईका व्यवसाय होता है।

५ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी जवेरी बाजार—यहां बुलियन मर्चेण्ट तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास हीरलाल गांधी

इस फर्मके मालिक खंभात निवासी लाड़वाणियां बीसा जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको २८ वर्ष पूर्व सेठ मानिकलाल बेचरदास गांधीने स्थापित किया था। आपका देहावसान सन् १९२१ में हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदास हीरालाल और सेठ मङ्गलदास हरीलाल भाई हैं। सेठ भगवानदासजीने सन् १९०८ में विलायतकी हुण्डीकी दलालीका काम आरंभ किया तथा वर्तमानमें आप सब बैंकोंके साथ हुण्डीका बिजिनेस करते हैं। आपने सन् १९२० में अपनी जातिके लिये नडाडमें एक सेनेटोरियम बनवाया तथा अपनी मातुश्रीके नामसे सन् १९२१ में एक होमियोपैथिक डिस्पेंसरी स्थापित की। आपने सन् १९२७ में बुलियन मार्केटमें अपनी फर्म स्थापित की। आपको शुद्ध देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स एन० बी० गांधी कम्पनी ८० एस्प्लेनेड रोड फोर्ट—यहां फारेन एक्सचेंजका व्यापार होता है।

(२) बम्बई-मेसर्स भगवानदास हीरालाल दलालस्ट्रीट-शेअरबाजार—यहां शेअर और सिक्यूरिटीजका व्यवसाय होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स एन० बी० गांधी बुलियन एक्सचेंज हाल शेखमेमन स्ट्रीट—यहां चांदी सोनेका व्यापार तथा इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

(४) मेसर्स भगवानदास हीरालाल गांधी जौहरी बाजार-मुम्बादेवी—यहां काटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जूनागढ़ (काठियावाड़) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखलाल भाई हैं। आप १३ वर्षोंसे शेअरका व्यवसाय करते हैं।

प्रारंभिक जीवन नौकरीसे आरंभ हुआ। आपने स्वयं अपने हाथोंसे व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त कर नाम, सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। प्रथम आप रामगोपाल कम्पनीमें कार्य करते थे, फिर आप पी० क्रिस्टल कम्पनीमें शेयरके तौरके काम करने लगे। इसमें आप २ वर्षतक कार्य करते रहे। इस समयमें आपने अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। पश्चात् लल्लूदास दुलारीदास कम्पनीके नामसे आप अपना स्वतन्त्र काम करने लगे। स्वास्थ्यकी अस्वस्थताके कारण आपने इस व्यवसाय को छोड़ दिया। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स लल्लूदास भगवानदास १२ ए दलाल स्ट्रीट शेअर बाजार—यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स लल्लूदास मगनलाल एण्ड कम्पनी अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां मिल तथा जीन सम्बन्धी सब सामानका स्टोर है।

—

शेअर मार्केटके व्यवसायी

मेसर्स अमरचंद झवेरचंद
,, अमृतलाल मोहनदास
,, अमृतलाल कालीदास
,, ए० पी० कांगा
,, कांगा एण्ड हीलेस
,, केशवलाल मूलचंद
,, खीमजी पूनजी एण्ड कं०
,, गिरधरलाल एण्ड त्रिभुवनदास
,, चुन्नीलाल वीरचन्द एण्ड संस
,, छगनलाल जवेरी एण्ड को०
,, जीवनलाल प्रतापसी
,, जमनादास सुरजलदास
,, जमनादास मथुरादास
,, जे० एस० गज्जर एण्ड संस
,, डूंगरसी एस० जोशी
,, देवकरण नानजी
,, दारायास एण्ड को०
,, नारायणदास रामसुख
,, पारख जमनादास मूलचंद
,, पटेल एण्ड रामदास
,, प्रेमचन्द रायचन्द एण्ड संस

मेसर्स प्रेमजी नागरदास
,, प्रभूदास जीवनदास
,, पी० एन० नादून
,, भगवानदास शेठ भाई
,, बाटलीवाला एण्ड कम्पनी
,, बी० ए० बिलिमोरिया
,, भाईलाल पूनमचन्द
,, मंगलदास चिमनलाल
,, मंगलदास हुकुमचन्द
,, मनमोहनदास नेमीदास
,, मेहता वकील एण्ड को०
,, मेरवानजी एण्ड संस
,, एन० पी० मलबा एण्ड संस
,, एन० आर० वेद एण्ड को०
,, एन० व्ही० खांडवाला एण्ड को०
,, राजेन्द्र सोमनारायन जे० पी०
,, लक्ष्मीदास पीताम्बर
,, वसनजी गोरधनदास
,, एस० पी० बिलिमोरिया
,, शामलदास प्रभूदास
,, हरजीवनदास मूलजी

नोट—उपरोक्त व्यवसायियोंकी आफिसें अधिकतर शेअर बाजारमें ही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेखमेमन स्ट्रीट यहां चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस एवं वायदेका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास जौहरी बाजार, यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना १०० वर्ष पूर्व बीकानेरमें हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ राधाकृष्णजी दम्माणी एवं सेठ देवकिशनदासजी दम्माणी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास कालबादेवी रोड, इस फर्मपर बेङ्किग हुंडी चिट्ठी और कमीशनका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास दम्माणी बुलियन मार्केट—इस फर्मपर चांदीके इम्पोर्ट एवं वायदे-का बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

—:—

मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री मदनगोपालजी दम्मानी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर है।

यह फर्म यहांपर करीब १०० वर्षोंसे स्थापित है। परन्तु इस नामसे इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३०।३५ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ बालकिशनदासजीके समयमें हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। श्री रामकिशनदासजी व श्री मदनगोपालजी। सम्वत् १९७६ में दोनों भाइयोंका कार्य अलग २ विभक्त हो जानेसे अब इस फर्मका संचालन श्री मदनगोपालजी करते हैं। आप विशेषकर बीकानेरहीमें रहते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम चिमनलालजी तथा हरगोपालजी हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ हेड ऑफिस—बीकानेर—श्रीकिशनदास बालकिशनदास दम्माणी (Dammani) यहां बेङ्किग वर्क होता है, तथा मालिकोंका निवास स्थान है।

२ बम्बई—मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास विट्ठलवाड़ी (Dammani) यहां आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी और चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। आपकी इसी नामसे बुलियन एक्सचेंज हालमें भी दुकान है।

—:※:—

प्रारंभिक जीवन नौकरीसे आरंभ हुआ। आपने स्वयं अपने हाथोंसे व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त कर मान, सम्पति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। प्रथम आप रामगोपाल कम्पनीमें कार्य करते थे, फिर आप पी॰ क्रिस्टल कम्पनीमें शेअर्स तरीके काम करने लगे। इसमें आप २ वर्षतक कार्य करते रहे। इस समयमें आपने अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। पश्चात् लालदास दुलारीदास कम्पनीके नामसे आप अपना स्वतन्त्र काम करने लगे। स्वास्थ्यकी अस्वस्थताके कारण आपने इस व्यवसाय को छोड़ दिया। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स लालदास भगतलाल १२ ए दलाल स्ट्रीट शेअर बाजार—यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स लालदास मगनलाल एण्ड कम्पनी अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां मिल तथा जीन सम्बन्धी सब सामानका स्टोर है।

——

शेअर मार्केटके व्यवसायी

मेसर्स अमरचंद जवेरचंद
,, अमृतलाल मोहनदास
,, अमृतलाल कालीदास
,, ए० बी० कांगा
,, कांगा एण्ड हीलेज
,, केशवलाल मूलचंद
,, खीमजी पूनजी एण्ड कं०
,, गिरधरलाल एण्ड त्रिभुवनदास
,, चुन्नीलाल वीरचन्द एन्ड संस
,, छगनलाल जवेरी एण्ड को०
,, जीवनलाल प्रतापसी
,, जमनादास खुशालदास
,, जमनादास मथुरादास
,, जे० एस० गज्जर एण्ड संस
,, डूंगरसी एस० जोशी
,, देवकरण नानजी
,, दाराशाव एण्ड को०
,, नारायणदास रामसुख
,, पारख जमनादास मूलचंद
,, पटेल एण्ड रामदत्त
,, प्रेमचन्द रामचन्द एण्ड संस

मेसर्स प्रेमजी नागादास
,, प्रभूदास जीवनदास
,, पी० एम० मादन
,, भगवानदास जेठा भाई
,, बाटलीवाला एण्ड कम्पनी
,, वी० ए० बिलिमोरिया
,, वाडीलाल पूनमचन्द
,, मंगलदास चिमनलाल
,, मंगलदास हुकुमचन्द
,, मनमोहनदास नेमीदास
,, मेहता वकील एण्ड को०
,, मेरवानजी एण्ड संस
,, एम० पी० भरूचा एण्ड संस
,, एम० आर० वेद एण्ड को०
,, एन० व्ही० खांडवाला एण्ड को०
,, राजेन्द्र सोमनारायण जे० पी०
,, लक्ष्मीदास पीताम्बर
,, वसनजी गोरधनदास
,, एस० बी० बिलिमोरिया
,, सामलदास प्रभूदास
,, हरजीवनदास मूलजी

नोट—उपरोक्त व्यवसायियोंकी आफिसें अधिकतर शेअर बाजारमें ही हैं।

" रामदयाल सोमाणी मु० ए० बिल्डिंग
" रामचंद्र मोतीचंद मु० ए० बिल्डिंग
मेसर्स शिवकरणदास कावरा एण्डको० मु० ए०
सेठ बाड़ीलाल चुन्नीलाल बुलियन एक्सचेंज
" विठ्ठलदास ठाकुरदास मु० ए० बिल्डिंग
" विठ्ठलदास ईश्वरदास पारेख मु० ए० बिल्डिंग
" विठ्ठलदास कसलचंद मु० ए० बिल्डिंग
" शिवप्रताप पी० जोशी c/o भीखमचंद लाल किशनदास
" शिवलाल शिवकरण मु० ए० बिल्डिंग
" शिवप्रताप रामरतनदास मु० ए० बिल्डिंग
" श्रीवल्लभ पीती मु० ए० बिल्डिंग
" साकलचंद दामोदरदास बुलियन एक्सचेंज

वर्तमानमें इस कार्यालयके मालिक सेठ खेमराजजीके पुत्र राव साहब सेठ रंगनाथजी एवं श्री श्रीनिवासजी बजाज हैं।

सेठ रंगनाथजीको जनवरी सन् १९२६ में गवर्नमेंटसे राव साहबकी उपाधि प्राप्त हुई है।

सेठ श्रीनिवासजी बजाज शिक्षित एवं व्यवस्था-कुशल सज्जन हैं। प्रेसके प्रबन्धमें आपने अच्छी उन्नति की है। आप मारवाड़ी विद्यालयके वाइस प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी हैं। मारवाड़ी विद्यालयके संचालनमें आप बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं।

आप की ओरसे उज्जैन, नासिक, हरिद्वार, बालाजी (दक्षिण) भूतपुरी श्रीरंगम आदि स्थानों पर धर्मशालाएं बनी हैं। तथा वहां पर भोजनका भी प्रबन्ध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस ७ खेतवाड़ी-खम्बाटालेन बम्बई तारका पता—वेंकटेश्वर	यहां आपका विशाल प्रेस है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें पुस्तकें बाहर जाती हैं।
२ लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्यान (बम्बई)	यहां भी आपका बड़ा प्रेस है।
३ श्रीवेंकटेश्वर प्रेस कोलापुर	यहां भी आपके प्रेसकी एक ब्रांच है।
४ मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास कालबादेवी खेमराज बिल्डिंग	यहां सराफी तथा पुस्तक विक्रयका काम होता है।
५ खेमराज श्रीकृष्णदास बुक डिपो—चौक बनारस	यहां आपके प्रेसकी छपी पुस्तकें बेचनेका डिपो है।
६ खेमराज श्रीकृष्णदास इलाहाबाद	यहां एक फ्लावर मिलके आप लेसी हैं।
७ खेमराज श्रीकृष्णदास लखनऊ	यहां पर आपका फ्लावर मिल है।
८ खेमराज श्रीकृष्णदास आगरा	यहां आपकी १ जीन व १ प्रेस फेक्टरी है। तथा कांटन बिजिनेस होता है।
९ वर्धा—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां भी आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है। और मोटर बिजिनेस होता है।
१० पुलगांव—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है।
११ धामनगांव—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन फेक्टरी है।

इस प्रेसके द्वारा श्री वेंकटेश्वर समाचार नामक एक साप्ताहिक समाचारपत्र करीब ३३।३४ वर्षोंसे निकलता है।

बम्बई विभाग

मार्टिन हैरिस ११६ पारसीबाजार स्ट्रीट फोर्ट

एम० डी० मेहता एण्ड को० ६ बेंकट मोहल्ला कोलभाट लेन

एन० मिस्त्री एण्ड को० २३२ बोरा बाजार

श्रावक भीमसी माणेक पारसी गली

मुन्शी एण्ड सन्स जी० एन० खानबहादुर गिरगांव रोड

मेघजी हीरजी बुकसेलर पायधुनी

यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डिया लि० ७४ होमजी स्ट्रीट फोर्ट

राधाभाई आत्माराम सगून कालबादेवी रोड

आर० बनमालीदास एण्ड को० कालबादेवी रोड

रामचंद्र गोविन्द एण्ड सन्स कालबादेवी रोड

रेले एण्ड को० जी० जी० ओ० पी० टैंक रोड

आर० मंगेश एण्ड को० न्यू चिंचबंदर स्ट्रीट

रत्नाकर एण्ड को० २७ मेडास स्ट्रीट

लखपति ७५ चिमना बचेर स्ट्रीट

लांगमेन्स ग्रीन एण्ड को० ५३ निकल रोड बेलार्ड स्टेट

व्हीलर एण्ड को० हार्नबी रोड

एस० आई० सी० लिडर कैम्प मैनेजर कैलिस डाइरेक्टरी लिमिटेड पो० बॉ० नं ८५८

श्रीधर शिवलाल कालबादेवी

एस० पी० सी० के० प्रेस स्प्लेनेड रोड

स्टेशनरी एण्ड बुक एजन्सी ठाकुर द्वार

स्टुडेण्ट्स प्रिण्टिंग प्रेस गिरगांव

सनशाइन पब्लिशिंग हाउस इन्जिनियर बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट

हरिप्रसाद भागीरथ कालबादेवी रोड

हॉकेन एण्ड इलियट ग्रेट वेस्टर्न बिल्डिंग वाकर हाउस लेन फोर्ट

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, गिरगांव

—:*:—

कृत्रिम नीलकी आमद

१८९६ - ९७ में	२.८ करोड़	१९०३ - ४ में	८ करोड़
१९११ - १२ में	१२.२५ करोड़	१९१२ - १३ में	१४.१७ करोड़
१९१३ - १४ में	१७.८६ करोड़		

भारतमें रंग बनानेके नीचे लिखे द्रव्य हैं

(१) नील एक छोटासा पौधा होता है इसके पत्तोंको सड़ाकर रंग तैयार किया जाता है। यूरोपवालोंने सोलहवीं सत्रहवीं शताब्दीमें हमारे यहांसे नील खरीदना आरंभ किया था। पहिले पोर्तगालवाले फिर डच और फिर ईस्ट इण्डिया कम्पनी यहांकी नील खरीदने लगी। इसमें नफा अधिक होनेसे अमेरिकाके उपनिवेशोंमें इसकी खेती भी की जाने लगी। सन् १८९७में जर्मनीने एक ऐसी कृत्रिम नील निकाली, जो बहुत सस्ती पड़ती थी। इसकी प्रतियोगितासे भारतकी नीलका रोजगार किस प्रकार नष्ट हुआ उसका पता नीचेके अंकोंसे चलेगा।

भारतसे नील भेजी गई:—

१८८६-८७ में	३.७ करोड़ रुपयोंकी
१८९६-९७ में	४१ करोड़ रुपयोंकी
१९०३ में	१ करोड़ रुपयोंसे ऊपरकी
१९०६-७ में	७० लाख रुपयोंकी
१९१०-११ में	३५ लाख रुपयोंकी
१९१२-१३में	२२ लाख रुपयोंकी

भारतमें नील बोई गई:—

(१) १८९५में १३ लाख- एकड़में
(२) १९१४ में १४८ हजार ए०में

नीलकी कोठियां थीं

सन् १९०१में	९२३
सन् १९०३में	५११

(२) कुसुम—इसके फलसे तेल व फूलसे रङ्ग निकलता है, जिन गुणोंके कारण विलायती माल प्रतिष्ठा पा रहा है वे सब गुण इसमें हैं। सन् १८७३-७४में ७। लाख रुपयोंका कुसुम बाहर भेजागया था। मगर सन् १९०३-४में यह संख्या ६७। हजारकी रह गई।

(३) हल्दी—इसकी पैदावार खासकर मद्रास प्रांतमें और बंगाल बिहार और बम्बईमें भी होती है।

(४) आलू—इसकी पैदावार राजपूताना, मध्यभारत, बरार, सी० पी० और यू० पी० में होती है इसका लाल रङ्ग अच्छा बनता है।

इसके अतिरिक्त लाख, त्रिपला, कतुआ, सेनकी, बबूलकी छाल आदि कई वृक्षोंसे भी रङ्ग बनाया जाता है।

बम्बईमें रङ्गके व्यापारी कई जगह बैठते हैं, कई रंगवालोंकी फर्में बड़गादी, तथा बेअर्डपेयर बम्बईमें हैं। इसके अतिरिक्त पेन्टिङ्गके रंगवाले व्यापारी दूसरे स्थानोंपर बैठते हैं। रंगोंमें एलीजराईन माल्में, तीनचन्द्र छाप, बाघ छाप,घोड़ा छाप, डी. डी. मार्का, आदि रंग विशेष मशहूर हैं तथा इसी तरह ब्लीच करनेके रंग तथा केमिकल्सकी भी कई क्वान्टिटी आती हैं जिसके व्यापारी प्रिंसेस स्ट्रीट और मसोजी स्ट्रीटमें बैठते हैं।

(११) बीस हजार रुपया आनन्द धर्मशालामें

(१२) दस हजार रुपया अठेरुजेंड़ा कन्याशालामें

इसके अतिरिक्त जे० एन पेटिट इन्स्टीट्यूशन, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, दि नेटिव जनरल लायब्रेरी, तथा तारंगा की धर्मशालामें भी आपने अच्छी रकमें दी थीं। गुजरात काठियावाड़के ७६ गांवोंमें धर्मशाला, कुए और तालाबोंके जीर्णोद्धारमें करीब ६। लाख रुपये आपने दिये थे। जैन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें आपने ८।१० लाख रुपया लगाये थे, अपने अच्छे समयमें आप आठ हजार रुपया मासिक धार्मिक एवं परोपकारके काममें व्यय करते थे, और पीछेसे प्रतिमास ३ हजार रुपया व्यय करते थे। ऐसे प्रतिभाशाली एश्वर्यवान एवं दानी महानुभाव की जीवनी पढ़ते हुए हरेक व्यक्तिके मुंहसे यह सहसा निकल पड़ता है कि हे भारत जननी तू हमेशा इसी प्रकारके व्यक्ति पैदा किया कर, जिसमें धर्म, समाज एवं शिक्षाकी रक्षा होती रहे।

आपकी ओरसे बंधाया हुआ आपकी मातश्रीके नामसे राजाबाई टावर बम्बईमें दर्शनीय चीज है।

इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए उक्त प्रभावशाली व्यक्तिका देहावसान सन् १६०६ की ३१ अगस्तको ७६ वर्षकी अवस्थामें हुआ था, आपका स्वर्गवास होनेके शोकमें बम्बईके कई एक बाजारोंमें हड़ताल मनाई गई और शेअर बाजारके राजाके नातेसे आपकी शेअर बाजारमें एक प्रस्तर मूर्ति स्थापितकी गई।

इस समय आपके पुत्र सेठ कीकाभाई फर्मका सञ्चालन करते हैं। इस समय भी आप शेअर और कॉटनके नामाङ्कित व्यापारी हैं। आप कई ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनियोंके डाइरेक्टर हैं।

मेसर्स के० आर० पी० श्राफ

सेठ के० आर० पी० श्राफ महोदय आर० पी० श्राफ एण्ड सन्स फर्मके पार्टनर हैं। आप पारसी सज्जन हैं। वर्तमानमें आप नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोशिएशनके प्रेसिडेण्ट हैं। आप शेअर बाजारके बहुत प्रतिष्ठित एवं आसेवान व्यापारी माने जाते हैं। आपकी फर्म दलाल स्ट्रीट वाड़िया बिल्डिङ्ग फोर्टमें है। यहां सब प्रकारके शेअर और स्टॉक सिक्यूरिटीजका अच्छा बिजिनेस होता है।

मेसर्स जीवतलाल प्रतापसी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राधनपुर (गुजरात) है। आप जैन (श्वेताम्बर मंदिर मार्गी) सज्जन हैं। सेठ जीवतलालजीका प्रारम्भिक जीवन नौकरीसे शुरू हुआ एवं

दास गुप्ता एण्ड सन्स २५ कंकूरगंधीरोड
नेशनल एनी लाइन केमिकल्स कम्पनी
स्टैंडर्ड केमिकल्स कम्पनी ।
बिलीमोरिया कोटवाल एण्ड को०चूड़गली, मांडवी
हीरालाल एच० ब्रदर्स १ केनेल स्ट्रीट, कालबादेवी
हुसेनअली महम्मदअली एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट

कच्ची ऊनका व्यापार

भारतवर्षमें कच्ची ऊनके प्रधान उत्पत्ति स्थान सिंध, पंजाब, तथा राजपूताना हैं । इन प्रांतोंमें ऊनकी प्रधान प्रधान मंडियां शिकारपुर, अबोर, फाजिलका, पाली, ब्यावर,केकड़ी और नसीराबाद है । इन मंडियों द्वारा प्रति वर्ष हजारों गांठें ऊन लिवरपूलके मार्केटमें बिकनेको करांची और बम्बईके बंदरोंसे भेजी जाती हैं। भारतमें सबसे बड़ी ऊनकी मंडी फाजिलका (पंजाब) है। दूसरे नम्बरकी मंडी ब्यावर है। ब्यावरसे ऊन साफकर पक्की गांठें बंधाकर करीब २० हजार गांठें प्रतिवर्ष विलायत भेजी जाती हैं। यहां दो हजार मजदूर प्रति दिन ऊन साफ करनेका काम करते हैं। जिस प्रकार फाजिलकाके व्यापारियोंको अपना माल सीधा फाजिलकासे लिवरपूलके लिये बुक कर देनेकी सुविधा है उस प्रकार यहांके व्यापारियोंको नहीं है। यहांके व्यवसाइयोंको बम्बईके द्वारा अपना माल विलायतको भेजना पड़ता है। ऊन भेड़ोंसे सालमें दो बार काटी जाती है। जिन प्रांतोंमें गर्मी विशेष पड़ती है और जहांकी रेतीली भूमि होती है, वहां भेड़ें विशेष मात्रामें पायी जाती हैं। भारतमें सबसे बढ़िया ऊन बीकानेरकी होती है। यहांकी ऊनी लोई बहुत मजबूत, मुलायम एवं सुन्दर होती है। ऊनकी कई किस्में हैं जिनमें सफेद, काली, लाल, और मैली खास हैं ।

भारतकी अधिकतर ऊन लिवरपूल जाती है। वहां दो दो तीन तीन मासमें एक सेल होता है उसके पूर्व यहांके व्यापारी सेलमें बिकनेके लिये अपना माल भेज देते हैं। उस सेलमें बिकनेवाले मालका रुपया पौं० शि० पे० के हिसाबसे नूरभाड़ा,(जहाजका भाड़ा) आढ़त, बीमा, ब्याज आदि कई व्यापारिक खर्च बादकर एक्सपोर्ट करनेवाले व्यापारियोंके द्वारा अपने आढ़तियोंको मिलता है ।

इस कच्ची ऊनके गोडाऊन यहांकी पिञ्जरापोल (माधोबागके पास) की पहली, दूसरी तथा तीसरी गलीमें हैं। यहां कई देशी और विदेशी व्यापारियोंके गोडाऊन हैं। जिनकी आढ़तमें बम्बईके व्यापारी बाहरसे आनेवाले मालको उतारते हैं । यहांके ऊनके व्यवसाइयोंकी संक्षेप सूची नीचे दी जाती है।

माचिसके व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली इब्राहीम माचिसवाला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बम्बई है। आप दाऊदी बोहरा जातिके सज्जन हैं इस फर्मको यहां सन् १८८१में सेठ अब्दुलअली भाई और सेठ इब्राहीम भाईने स्थापित किया। आप दोनों सज्जनोंका देहावसान हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स अब्दुल अली इब्राहीम माचिस वाला १२१ नागदेवी स्ट्रीट पो० नं०३—इस फर्मपर सेफ्टी, सल्फर, फासफोरस और सब तरहकी माचिसका व्यापार होता है। T.A. Diyaslai
इस फर्मका कुरलामें एक माचिसका बड़ा भारी कारखाना है। उसमें करीब १३०० मनुष्य रोज काम करते हैं। यहां सब प्रकारकी माचिस तथा दारूखानाका माल तैयार होता है। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ इस्माइलजी अब्दुलअली, सेठ गुलाम हुसेन इब्राहिम, सेठ तय्यब अली इब्राहिम, सेठ साले भाई इब्राहिम और हीरालाल मशरुवाला हैं।

—o—

वेस्टर्न इण्डिया मेच कम्पनी लि० बेलार्ड स्टेट
बर्मा मेच कम्पनी बेलार्ड स्टेट

महाजनीकम्पनियां

(१) इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स लि० की रजिस्ट्री २८ फरवरी सन् १९२२ ई० को सराफीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ की थी परन्तु कम्पनीने शेअर बेंचकर १७ लाख ८५ हजारकी रकम कम्पनीकी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसका आफिस सेन्ट्रल बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लैनेड रोड फोर्टमें है।

(२) इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि० की रजिस्ट्री २ फरवरी सन् १९२५ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु २ ला० २५ हजारके शेअर बेचकर वसूल पूंजी लगायी गयी है। इसी पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाडिया बिल्डंग दलाल स्ट्रीट फोर्टमें है।

(३) बाम्बे इनवेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की थी, परन्तु शेअर बेचकर ३४ ला० ५७ हजार ७० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(४) मिस्लेनियस इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ ई०को महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु शेअर बेंचकर ३२ लाख ७२ हजार ७० रु० वसूल किये गये इसी वसूल पूंजीसे व्यवसाय चल रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड पर है।

(५) प्राविडेण्ट इन्वेस्टमेण्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ४ दिसम्बर सन् १९२६ ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है। इसका आफिस ५४ स्प्लैनेडरोड फोर्टमें है।

(६) मफतलाल छगनलाल भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २२ दिसम्बर सन् १९२० ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख २५ हजार की है। इसका आफिस २६५ हार्नबीरोडपर है।

(७) यूनिवर्सल ट्रेडिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १३ अगस्त सन् १९१८ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख थी परन्तु शेअर बेंचकर ९ लाख १९ हजार २सौ रुपयेकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस हरानन्द महल चौपाटीपर है।

(८) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री २१दिसम्बर सन् १९११ ई०में महाजनका व्यवसायकरनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसकी वर्तमान वसूल पूंजी १६७६७२७१ की है।

शेअर बेचकर वसूल पूंजी इकट्ठी की गयी और उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस धान्जे हाउस मूल रोड फोर्टमें है।

(७) खिलचंद देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १९१८ में करायी गयी थी। इनके यहां जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय होता है, इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख की घोषित की गयी, वह सब वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठी कर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस इलाहाबाद बैंक बिल्डिंग ६३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(८) गोविन्दजी माधवजी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९१८ में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ३० हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस २ रेमपार्ट रो फोर्टमें है।

(९) खानदेश श्रीकृष्ण ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ दिसम्बर सन् १९१९ ई० में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजी इस व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस ६ चकलावाड़ीका नाका गिरगांव बैक रोडपर है।

(१०) विट्ठलदास दामोदर थैकरसी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ सितंबर सन् १९२१ ई० में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी परन्तु शेअर बेचकर ५५ लाखकी वसूल पूंजी इकट्ठी कर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(११) जापान इम्पोर्टर्स लि० की रजिस्ट्री ता० ८ सितंबर सन् १९१४ में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाखकी घोषित की गयी थी। वह शेअर बेचकर इकट्ठी की गयी और वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है इसका आफिस बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१२) पेउ एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जनवरी सन् १९२१ ई०में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ५० हजार घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेचकर १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस गोकुलदास तेजपाल अस्पतालके सामने कर्नाक रोडपर है।

(१३) डेविड एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १५ जनवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी वही वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १०७ स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

कुछ प्रेसवर्ग एवं पत्रिकाएं

मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास

[illegible]

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) वेरस लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ चेइराम महल कालवादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोवस काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २९ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्वेस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नवी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगेण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुलिस्तान हाउस नेपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६सितम्बर सन्१९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) यूनाइटेड इञ्जिनियरिङ्ग एण्ड बिल्डिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २७ फरवरी सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १३ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस फार्बस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) जे० सी० गैनान लि०की रजिस्ट्री ता० १५जून सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे १५ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस ५ मर्जवान रोड फोर्टमें है।

(६)नेक्वेथ मर्स लि०की रजिस्ट्री ता० १ दिसम्बर सन् १९१५ ई०में मकान बनानेका कन्ट्राक्ट लेने तथा अन्य प्रकारका कन्ट्राक्ट और इञ्जिनियरिङ्गका काम करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी इसकी स्वीकृत पूंजी ९ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ५ लाख ४० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस कोडक हाउस हार्नबीरोड फोर्टमें है।

विलायती शराब

(१) फिप्सन एण्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० १९ जनवरी सन् १९२०ई में करायी गयी थी। ये विलायती शराबके बड़े व्यापारी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २० लाखकी वसूल रकमसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) हर्बर्ट सन् एन्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० २३ फरवरी सन् १९२३ ई० में करायी गयी थी। इनके यहां विलायती शराबका व्यवसाय होता है। इसमें ३ लाखकी पूंजी लगी हुई है इसका आफिस एल्फिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है।

चाय

(१) ऐन्सर टिम्ब टी कम्पनी लि०की रजिस्ट्री तारीख ३ दिसम्बर सन् १९२८ ई० में चायकी खेती और उसका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक लाखकी है। इसका आफिस खड़े पारसीके पास भाईखलामें है।

दियासलाईके व्यवसायी

(१) वेस्टर्न इण्डिया मेच कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ७ दिसम्बर सन् १९२३ ई०में दियासलाईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ४७ लाख ८ सौ की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस बालकन हाउस निकोलसरोड बैलार्ड स्टेटमें है।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

आदरजी कावसजी मास्टर गिरगांव रोड
आर्मीएण्ड नेवी कोआपरेटिव्ह सोसायटी लिमिटेड
स्प्लेनेडरोड
ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस निकोल रोड
एंग्लो ओरियण्टल बुकडिपो
१३२ कालबादेवी, रोड
एम्पायर पब्लिशिंग कम्पनी गिरगांव बैंकरोड
इण्डियन पब्लिशिंग कम्पनी लि० कावसजी
पटेल स्ट्रीट फोर्ट
इण्डियन बुकडिपो मेडासस्ट्रीट
इण्डियन एन्ड कॉलोनियल बुक एजन्सी
४५-४६ हार्नबी रोड़
वेस्टर्न प्रिंटिंग वर्क्स फूरे रोड
कान्तिलाल एण्ड को० आर० गिरगांव
...किंग एण्ड को० हार्नबीरोड़
...के० पी० मिस्त्री कालबादेवीरोड
...मराज श्रीकृष्णदास कालबादेवी रोड
...पीवाला पारख एन्ड को० ३१ काण्डेल
कालबादेवी
...ल नारायण एण्ड को० कालबादेवी रोड
...न्द एण्ड को० एस, सेन्डर्स्टरोड़
...न प्रेस, गिरगांव
...पब्लिशिंग कम्पनी लि० ४६ फोर्टस्ट्रीट
...बुकडिपो घोगा स्ट्रीट फोर्ट
...ड को० कान्देवाड़ी पो० नं० ४
...स एन्डको० ४०, ब्रिटिश होटल लेन
...० करानी सन्स घोगा
बाजार स्ट्रीट

टाइम्स ऑफ इण्डिया, टाइम्सबिल्डिङ्ग ह...
ट्रैक्ट एन्ड बुक सोसायटी कालबादेवी०
डी०एस० दत्त एन्ड को० सारस्वत कोआपरेटिव
बिल्डिङ्ग में० रोड़
तारापुरवाला सन्स एन्ड को०, ११०. किताब
महल हार्नबीरोड
त्रिपाठी एन्ड को० (एन० एम०)
कालबादेवी रोड
थैकर एन्ड को एस्प्लेनेड रोड
नरेन्द्र बुक डेपो लेडी जमशेदजी रोड दादर
नेशनल पब्लिशिंग कंपनी लि० गिरगांव
बैकरोड़
न्यू लक्ष्मी प्रिन्टिङ्ग प्रेस १८-२० कासी
सैय्यदस्ट्रीट
निर्णयसागर प्रिन्टिङ्गप्रेस कालबादेवी;
पापुलर बुक डेपो गुवालिया टैंक रोड
बाम्बे बुकडिपो गिरगांव
ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबिल सोसायटी
हार्नबी...
बरागंझा एण्ड को० सी० एम० १०६ ...
ब्लेकी एण्ड सन्स लिमिटेड फोर्ट स्ट्रीट
मैनेटकालेमन एण्ड को० लि० हार्नबी रोड
बैटरवर्थ एण्ड को० लिमिटेड यार्क बिल्डिंग
हार्नबी रोड
मेकमिलन एण्ड को० हार्नबी रोड

(४) यूनाइटेड इञ्जिनियरिङ्ग एण्ड बिल्डिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २७ फरवरी सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १२ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ५ लाख २० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस [illegible] फोर्टमें है।

(५) जे० सी० [illegible] लि०की रजिस्ट्री ता० [illegible] जून सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे [illegible] लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस ५ [illegible] रोड फोर्टमें है।

(६) [illegible] लि०की रजिस्ट्री ता० १ दिसम्बर सन् १९१५ ई०में मकान बनानेका कन्ट्राक्ट लेने तथा अन्य प्रकारका कन्ट्राक्ट और इञ्जिनियरिङ्गका काम करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी इसकी स्वीकृत पूंजी ९ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ५ लाख ४० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस कोडक हाउस हार्नबीरोड फोर्टमें है।

विलायती शराब

(१) फिप्सन एण्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० १९ जनवरी सन् १९५० ई०में करायी गयी थी। ये विलायती शराबके बड़े व्यापारी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २० लाखकी वसूल रकमसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस [illegible] स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) हर्बर्ट सन् एन्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० [illegible] सन् [illegible] ई० में करायी गयी थी। इनके यहां विलायती शराबका व्यवसाय होता है। [illegible] इसका आफिस एलफिन्स्टन सरकल फोर्टमें है।

चाय

(१) ऐन्ड्रर टिप्स ही [illegible] चायकी खेती और उसका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। [illegible] इसकी आफिस खवे पारसीके पास [illegible] है।

दियासलाईके व्यवसायी

(१) वेस्टर्न इण्डिया मैच कम्पनी लि०की रजिस्ट्री [illegible] दियासलाईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। [illegible] गयी थी, परन्तु ४७ लाख ८ सौ की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। [illegible] हाउस निकोलरोड बैलार्ड स्टेटमें है।

शील्ड, मेडल, घड़ी तथा विशेष अवसरोंमें उपहार देने योग्य सभी प्रकारकी मूल्यवान वस्तुओं तथा जवाहिरातका काम होता है। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

वाद्य यंत्र

(१) रोज एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २५ जून सन् १९२२ ई० में ५ लाख की स्वीकृत पूंजी घोषित कर करायी गयी थी। इसके यहां सभी प्रकारके बाजे मिलते हैं। यह कम्पनी स्वयं बाजे तैयार भी कराती है। इसका आफिस रैम्पर्ट रोड फोर्टमें है।

(२) दिलोफोन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ मार्च सन् १९२० ई० में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ ला० ५० हजारकी घोषित की गयी थी। इसके यहां ग्रामोफोन और उनका सभी प्रकारका सामान मिलता है। इसका आफिस फोर्टमें है।

(३) बाम्बे रेडियो कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ दिसम्बर सन् १९२६ ई० को बेतारके तार द्वारा समाचार भेजने तथा उनके उतारने योग्य स्थल तैयार करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाख है। इसने रेडियोके द्वारा दूर देशोंमें होने वाले गाने और बजाने का सुरीला राग घर बैठे सुन सकनेकी पूरी व्यवस्था की है। इसका आफिस मैरीन लाइन्स क्वीन्स रोडपर है।

बेतारका तार

(१) इन्डियन ग्राड कास्टिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जून सन् १९२६ ई० को करायी गयी थी। इसका उद्देश्य जन साधारणके लाभार्थ बेतारके तार द्वारा सभी विषयोंका समाचार भेजना है। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाख की है। इसको सफलतासे व्यवसायको [illegible]ब अधिक लाभ होनेकी आशा है। इसका आफिस ३४।३८ अपोलो बन्दर रोड फोर्टमें है।

[illegible]टर कम्पनी

(१) फोर्ड मोटर कम्पनी आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री ता० ३१ जुलाई सन् १९२६ ई० को करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी घोषित की गयी है। इनके यहां मोटर तथा साइकलमें लगनेवाला सभी प्रकारका सामान और उनके पुर्जे मिलते हैं। ये मोटर और साइकलका व्यवसाय करते हैं। इसका आफिस कामर्स हाउस करीमभाईरोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(२) जेनरल कार्पोरेशन लि०की रजिस्ट्री ता० ५ अगस्त सन् १९२६ ई०में ३ लाखकी स्वीकृत पूंजी घोषित कर करायी गयी थी। इनके यहां मोटर, साइकल और उनके सामानका व्यवसाय होता है। इसका आफिस रणछोड़-भवन हेमिङ्गटनरोडपर है।

(३) आटोमोबाइल कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० २६ मार्च सन् १९१२ ई०में मोटर तथा

रंगके व्यापारी

मेसर्स सूरजी भाई वल्लभदास

इस फर्मके मालिक सेठ सूरजी भाई वल्लभदासका मूल निवास स्थान कच्छ है। इस फर्मको आपने १८।२० वर्ष पूर्व स्थापित किया। वर्तमानमें आप अपने व्यवसायका सब भार अपने पार्टनरोंके सिपुर्द कर रिटायरके रूपमें आराम करते हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपको हिन्दी-भाषा एवं शुद्ध देशीवस्त्रोंसे विशेष प्रेम है। आपने कच्छ कान्फ्रेंसके समय २० लाख रुपयोंका चंदा एकत्रित करनेमें विशेष भाग लिया था, एवं खुद भी जुदे जुदे धर्मार्थ कार्य्योंमें करीब १। लाख रुपये दिये थे। आप अपनी जातिके ११।१२ खातोंके ट्रष्टी एवं आर्यसमाजकी मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपने २ बार विलायत यात्रा की एवं वहाँ शुद्ध शाकाहारी जीवन बिताया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स सूरजी वल्लभदास एण्ड कम्पनी हार्नबीरोड-फोर्ट—यहां सब प्रकारके रङ्ग, केमिकल काटलयार्न आर्टिफिशल, सिल्क और मिल स्टोर्सका व्यापार होता है।

(२ बम्बई – सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी बड़गादी, यहां रङ्गका थोक व्यापार होता है।

(३) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी पुरानागंज-कानपुर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

(४) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी अमृतसर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

रंग और वार्निसके व्यापारी

अब्दुला समसुद्दीन एण्ड सन्स, शेखमेमन स्ट्रीट
इब्राहिम सुलेमान जी एण्ड सन्स बाजारगेट
ईस्माइल जी करीम भाई एण्ड सन्स फूलगली
कापड़िया ब्रदर्स अब्दुलरहमान स्ट्रीट
कासिमअली जिन्नामपूंजा महमदअली मेन्शन, भिंडी बाजार
पेरु भाई जमशेद जी खामभट्टा, कालबादेवी रोड,
दादमी पाकजी एण्ड को० यूसुगली, मांडवी

वैद्य हरिशङ्कर लाधाराम बम्बई

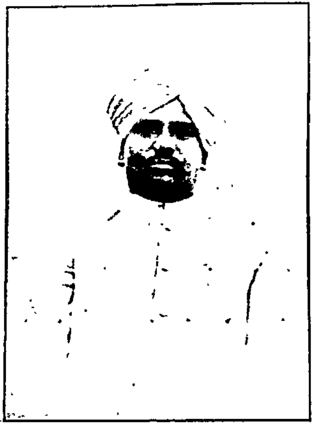

पं० गजाननजी शर्मा वैद्य बम्बई

स्व० पं० हनुमान प्रसादजी वैद्य बम्बई

उनके जत्थेदार

(१) मेसर्स नरसूमल गोकुलदास नागदेवी स्ट्रीट बम्बई—हेड ऑफिस –शिकारपुर, ब्रांचेज फाजिलका और ब्यावर। यह फर्म फार्बस केम्बिल एण्ड कम्पनीकी कराची आफिसकी शिकारपुर, अभोर, तथा फाजिलकाके लिये तथा बम्बई आफिसकी, पाली, ब्यावर, केकड़ी और नसीराबादके लिये ग्यारंटेड ब्रोकर्स है इसका जत्था पिंजरापोल गलीमें है।

(२) मेसर्स वीरचंद उमरसी, पांजरापोल ३ गली बम्बई T' A. Promotion, यह फर्म वोल्स एण्ड किंग्स कम्पनीकी बम्बईकी ग्यारंटेड ब्रोकर है। तथा लीवरपूलके लिये अन्न एक्सपोर्ट करनेका व्यापार करती है। जत्था पांजरापोल ३ गलीमें है।

(३) मेसर्स मूलजी उमरसी पांजरापोल (मेनलाइन) बम्बई—यहां इस फर्मका जत्था है और इनके मुकादमी का काम होता है।

(४) कासमअली इब्राहीम डोसा खड़ग डूंगरी

(५) डेविड सासुन एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(६) भवानजी हरभगवान पांजरापोल ३ गली

(७) बाम्बे कम्पनी लिमिटेड पांजरापोल गली

(८) रतनसी तुलसीराम पांजरापोल गली

(९) हाजी महम्मद धरमसी खड़ग डूंगरी

(१०) शेरअली नानजी पांजरापोल

(११) मावर नृसिंह एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(१२) ग्लेंडर्स आरबुथनाट कम्पनी

माचिसका व्यापार

माचिसके व्यापारी बहुधा और नागदेवी स्ट्रीटपर बैठे हैं। यहां स्वीडन स्वीडन-फेंड और जापानसे माचिस आती है, तथा देशी बना हुआ माल भी बिकता है। यह माल बहुधा एक्सपार रेलवे होता है। इसी तरह पटाखा आदि कारखानेका माल भी इसमें एकत्र देखा जाता है इसका रेलवे भाड़ा सब देशमें ले लिया जाता है। यहांके व्यापारी बाहर इतर व्यापारियोंकी विश्वाससे इधरसे भी माल मंगा देते हैं।

हरिहर फार्मेसी

इस औषधालयके मालिक वैद्य हरिशङ्कर लायाराम हैं। आपने इसकी स्थापना सन् १९१२ में की। यों तो वैद्यजीका खास निवास कठियावाड़ है पर जनतामें आप अहमदाबादोंके नामसे विशेष परिचित हैं। आप गुजरातके रोगोंके, खास वैद्य हैं। इसके अतिरिक्त पांडुरोग और एनीमियाके भी आप चिकित्सक हैं। आपको इन रोगोंका ४० वर्षोंका अनुभव है। आपको कई देशी रईस और अंग्रेजोंसे प्रशंसा पत्र मिले हैं। इस समय आपके ३ औषधालय चल रहे हैं। (१) हरिहर फार्मेसी, हीरानइल कालबादेवीरोड-(२) वैद्य हरीशङ्कर लायाराम, मायक चौक अहमदाबाद (३) वैद्यहरीशङ्कर लायाराम चकला मुलके बाजूमें सूरत। अहमदाबादका औषधालय सन् १९०३ में स्थापित हुआ था। अभीतक करीब ३ लाख रोगियोंको आराम आपने किया है।

पब्लिक संस्थाएं

ऐनथ्रापालोजिकल सोसाइटी—(स्थापित सन् १८८६ ई०) इस सोसाइटीका कार्यालय स्थानीय टाउनहालमें है। यह संस्था भारतमें बसनेवाली विभिन्न जातियोंके शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकासकी तात्विक खोज करनेके काममें लगी हुई है। यह संस्था संसारकी अन्य ऐसी ही संस्थाओंसे पत्र व्यवहार कर विचार विनिमयका कार्य भी करती रहती है। इसकी बैठकें मासिक होती हैं और उनमें उपरोक्त खोज सम्बन्धी निबन्ध पढ़े जाते हैं और तत्सम्बन्धी वाद विवाद भी होता है। इस संस्थाका सदस्य शुल्क १०) रुपया वार्षिक है।

रायल एशियाटिक सोसाइटी (बम्बईवाली शाखा)। यह संस्था सन् १८०४ ई० में बाम्बे लिटरेरी सोसाइटीके नामसे स्थापित हुई थी। परन्तु ब्रिटेनकी रायल एशियाटिक सोसाइटीसे सम्बन्ध हो जानेके कारण यह उक्त सोसाइटीकी शाखाके रूपमें बदल गयी। इसका सदस्य शुल्क ५०) वार्षिक है।

बाम्बे नेचरल हिस्ट्री सोसाइटी फोर्ट—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८८३ ई० में भूगर्भ विद्याकी व्यवहारिक खोजमें सदस्योंके अनुभवपर विचार करने और पशुओंके सम्बन्धमें ऐतिहासिक खोज करनेके लिये हुई थी। इस संस्थाके पास एक बहुमूल्य पुस्तकालय प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकोंका है और कितने ही प्रकारके मृत पक्षियों, कीड़े मकोड़ों, सांपों और अण्डोंका भी प्रशंसनीय संग्रह है।

सासुन मेकैनिक इन्स्टीट्यूट फोर्ट—इसकी स्थापना सन् १८४७ ई० में हुई थी पर इसका वर्तमान नाम संस्कार सन् १८७० ई० में हुआ। यह संस्था वैज्ञानिक विषयोंकी सुविधाओंके लिये स्थापित की गयी थी। इसके पास वैज्ञानिक विषयकी पुस्तकोंका यहां विदेशी पत्रोंका भी अच्छा संग्रह है।

ज्वाइंट स्टाक कम्पनियाँ

१६ वीं शताब्दीके आरम्भमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंका यहां कहीं नामोनिशान भी न था परन्तु ५० वर्ष बादसे इतिहास मिलता है कि यहां ऐसी कम्पनियां खोलनेकी व्यवस्था की गयी थी। सन् १८५० ई०में प्रथम बारही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंको रजिस्ट्री करानेकी व्यवस्थाका प्रयोग आरम्भ हुआ। सन् १८५१ई०में XLIII Act बना और उसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिष्ट्री करनेका अधिकार बम्बई, कलकत्ता, और मद्रासके 'सुप्रीम कोर्ट' नामक प्रधान विचारालयको दिया गया। इस नये कानूनके अनुसार उक्त स्थानोंके सुप्रीमकोर्टोंको रजिष्ट्री करानेवालोंके आवेदन पत्र लेनेका अधिकार होगया। आवेदनपत्रमें निम्नलिखित बातोंका रहना आवश्यक माना गया।

(१) रजिष्ट्री कराई जानेवाली कम्पनीके हिस्सेदारोंका नाम और उनकी संख्या।

(२) कम्पनीका भावी नाम।

(३) प्रान्तके उन मुख्य २ व्यवसायी केन्द्रोंका नाम जिनसे व्यवसाय सम्बन्ध रहनेवाला हो।

(४) पूंजीका परिमाण, उसके आकार प्रकारका विवरण और प्रबन्धके लिये यदि कोई पूंजी अति-रिक्त रक्खी गयी हो तो उसका परिमाण।

(५) कितने हिस्सोंमें पूंजी विभक्त है या होगी।

उपरोक्त बातोंका स्पष्टीकरण करनेवाले आवेदन पत्रपर सुप्रीमकोर्ट रजिष्ट्री करनेकी स्वीकृति देती थी।

सन् १८५७ ई०में उपरोक्त कानूनमें संशोधन हुआ और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीके हिस्सेदारोंका दायित्वभार निश्चित रूपसे सीमाबद्ध कर दिया गया। सन् १८६० ई० में कानूनमें पुनः संशोधन हुआ और एक नवीन कानून Act VII पास किया गया। इस नवीन कानूनमें भी सीमाबद्ध दायित्व के सिद्धान्तको ही प्राधान्य दिया गया और ज्वाइन्ट-स्टाक बैंकिंग कम्पनी स्थापित की गयी। सन् १८६६ ई०में पुनः कानून संशोधनकारी X Act पास हुआ। सन् १८८२ ई० में VI Act बना और अधिक समयतक यही व्यवहारमें प्रचलित रहा। सन् १९१३में पुनः संशोधन हुआ और आजतक यही काममें आ रहा है।

सन् १९१३ के इण्डियन कम्पनीज् ऐक्ट ७ के अनुसार रजिस्ट्री द्वारा लिमिटेड कीगयी कुछ कम्पनियां:—

इस संस्थाकी ओरसे चलते फिरते पुस्तकालयोंका अच्छा प्रबन्ध है। इस समय संस्थाकी ओरसे १०५ पुस्तकालयके लगभग चल रहे हैं और निर्धनी समाजको उनसे लाभ पहुंचाया जाता है श्रमजीवी वर्गके लिये इसकी ओरसे रात्रिपाठशालाओंका प्रबन्ध है। सामाजिक प्रश्नोंको लेकर सिनेमा द्वारा व्याख्यानोंका प्रबन्ध करना, होली दिवालीपर गाली बकने और जुआ खेलनेकी प्रथाको हटानेके लिये भी यह संस्था सतर्क रहती है इस संस्थाकी ओरसे स्पेशल सर्विस क्वार्टरली नामका त्रैमासिक पत्र भी निकलता है।

आर्यन एज्यूकेशनल सोसाइटी—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८९७ ई० में नौ तरुण ग्रेजुएटों द्वारा की गयी थी। आरम्भमें इस संस्थाका नाम मराठा एज्यूकेशनल सोसाइटी था। इसका उद्देश्य यह था कि शिक्षाके साथ धर्म तत्वका समावेश कराया जाय और साथ ही भारतीयोंके हाथमें पूर्ण रूपेण सम्पूर्ण व्यवस्था भार दे अल्प व्यय साध्य शिक्षाको घर घर पहुंचाया जाय। इस संस्थाने स्थानीय गिरगांवमें एक हाई स्कूल स्थापित कर अपना कार्य आरम्भ किया। आज इस संस्थाकी ओरसे कितनेही स्कूल कई महल्लोंमें चल रहे हैं। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार एक ऐसे बोर्डके हाथमें है कि जिसके सदस्य आजीवन सदस्यके नामसे सम्बोधित होनेवाले तरुण ग्रेजुएट्स हैं। और इनकी सहायता स्थायी शिक्षक करते हैं। आजीवन सदस्य और स्थायी शिक्षक वेही लोग हो सकते हैं जो स्वल्प वेतन ले (२० और २५ क्रमशः) संस्थाकी सेवा करनेके लिये प्रतिज्ञा पत्र लिख देते हैं। इस समय ६ आजीवन सदस्य और १३ स्थायी सदस्य इस संस्थाका कार्य प्रबन्ध चला रहे हैं। सन् १९२४ ई० में जो व्यवस्था समिति ५ वर्षोंके लिये निर्वाचित की गयी थी उसमें निम्नलिखित सज्जन पदाधिकारी हैं।

(१) श्रीयुत मुकुन्दराव रामराव जयकर एम० ए० एल० एल० बी० बार-एट-ला०, एम० एल० ए० ।
(२) पद्मनाथ भास्कर शिङ्कने बी० ए० एल० एल बी०
(३) गोपाल कृष्ण देवधर एम० ए० (प्रमुख)
(४) नारायण लक्ष्मण दानगुर्दे बी० ए० एल० एल० बी० (मंत्री)

यार्म्स स्टुडेन्टस ब्रदरहुड:—सन् १८८९ ई० में प्रो० एन० जी० वेल्डिङ्कर एम० ए० ने इस संस्थाकी स्थापना की थी। इसका प्रधान उद्देश्य संस्थाके सदस्योंकी नैतिक एवं मानसिक उन्नति कर उन्हें आदर्श नागरिक बनानेकी चेष्टा करना है। इतना होनेपर भी इ प्रवर्तककी यह कभी भी इच्छा न थी कि यह संस्था किसी विशेष प्रकारका धार्मिक या राजनैतिक आन्दोलनको उत्तेजन दे। इसके वर्तमान पदाधिकारी इस प्रकार हैं।

(१) एम० आर० जयकर एम० ए० एल० एल० बी० (प्रमुख)
(२) बी० एन० मोतीवाला बी० ए० एल० एल० बी० (उप-प्रमुख)

यह बैंक पूर्ण रूपेण भारतीय बैंक है। इसका समस्त कार्य भारतीयों ही के हाथोंमें है। देशके भिन्न भिन्न केन्द्रोंमें इसकी कितनी ही शाखाएं हैं। इसका आफिस फ्लोरा फाउन्टेनमें है।

(९) बाम्बे बुलियन एक्सचेंजकी रजिस्ट्री २४ जनवरी सन् १९२३ ई० में हुई थी। इसकी वसूल पूंजी दस लाखकी है। इसकी इमारत मोती बाजारमें है।

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

(१) करीम भाई इब्राहिम एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १४ दिसम्बर सन् १९११ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी, परन्तु शेयर बेचकर ६३ लाख ७५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीम भाई हाउस आउट्रम रोड फोर्टमें है।

(२) करीम भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ सितम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी जो २५ लाख की घोषित की गयी थी उसीको वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीमभाई हाउस आउट्रमरोड फोर्टमें है।

(३) टाटा सन्स लि० की रजिस्ट्री ८ नवम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ २५ लाख की घोषित की गयी थी, परन्तु शेयर बेचकर १करोड़ १७ लाख ६४ हजार ५०० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाउस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(४) फावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २९ सितम्बर सन् १९२० ई० को एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़ दस हजारकी घोषित की गयी थी जो वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठीकर व्यवसायमें लगा दी गयी है। इसका आफिस रेडीमनी बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़की घोषित की गयी थी वह वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस स्प्रेनेड रोड फोर्टमें है।

(६) आर० डी० टाटा एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९१९ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख १०० रु० की घोषित की गयी थी परन्तु ७५ लाख ६ हजार ३० रु०

इसकी देख रेखमें लण्डनके सिटी एण्ड गिल्ड्स आफ लण्डन इन्स्टीट्यूट की भी परीक्षायें ली जाती हैं। इसके प्रिन्सिपल श्रीयुत ए० जे० टर्नर० जे० पी० बी० एस० सी० हैं।

(१) अन-जुमान इस्लाम बम्बई (स्थापित सन् १८७६ ई०।) इसका कार्यालय बोरी बन्दर स्टेशनके सामने है। इसकी नगरमें तीन शाखाएं हैं जहां इस्लामी सभ्यता और संस्कारको सुदृढ़ करनेवाले सिद्धान्तोंका प्रचार प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा किया जाता है। इसकी ओरसे बोरी बन्दर वाले निजके विशाल भवनमें मेट्रिक तककी शिक्षा देनेके लिये एक स्कूल है। दूसरा स्कूल स्थानीय सैण्डहर्स्ट रोडपर उमरखाड़ी पोस्ट आफिसके सामने है। औरतीसरा नागपाड़ेमें मिडिल स्कूल है। इस संस्थाकी ओरसे पुस्तकालय भी हैं जहां इस्लामी साहित्यका अच्छा संग्रह किया गया है। इनमें एम० एच० मक्बा लायब्रेरी और करीमिया लायब्रेरी प्रधान हैं। इस संस्थाको सर आगाखांसे पूरी सहायता मिल रही है।

कालेज आफ इन्टरनेशनल लेंग्वेजेस (स्था० १९०९)—इस कालेजमें फ्रेंच, जर्मन आदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषाएं सिखायी जाती हैं। यहांकी शिक्षा पद्धति रोसेन्थालके ढंगकी है और वह लेंग्वेजो—फोन द्वारा दी जाती है। इसका कार्यालय प्रार्थना समाज गिरगामके पास है। इसके प्रिन्सिपल मि० एल० ए० मिन्टो हैं।

बाम्बे एजूकेशनल सोसायटी भाईखाला (स्था० १८१५ ई०)—यह संस्था इंग्लैंडकी चर्चके सिद्धान्तानुसार ईसाई सभ्यताकी शिक्षा दीक्षा योरोपियन बच्चोंको देती है। इसके साथ ही उन्हें कला-कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिससे वे अपनी आजी विकाके प्रश्नको हल कर समाजके लिये भार स्वरूप प्रतीत न हों। इसके प्रधान सहायक प्रान्तके गवर्नर माने जाते हैं।

दावर कालेज आफ कामर्स, लॉ, एकनामिक्स एण्ड बैंकिंग—इसकी स्थापना सन् १८६० ई० में हुई थी। इसका कार्यालय फ्लोराफाउन्टेनके पास किलेमें है। यह कालेज अपने ढंगका भारतमें निराला ही है। भारतीय नरेशोंमें महाराज गायकवाड़, महाराज मैसूर, महाराज ग्वालियर, महाराज पटियाला तथा महाराज झीन्दकी ओरसे इस कालेजमें विशेष प्रकारकी छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। कई देशी राज्य अपनी ओरसे यहां छात्र भेजते हैं जो प्रमाण पत्र प्राप्त कर वहां लौट जाते हैं और आधुनिक परिपाटीपर राज्यका अर्थविभाग चलाते हैं। इस कालेजमें व्यवसाय, कानून, सरकारी अर्थविभागकी नौकरी, बैंक व्यवस्था, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंके सेक्रेटरी और अकाउण्टेन्टकी परीक्षाओंके लिये छात्र तैयार किये जाते हैं। इनमेंसे कितनीही परीक्षायें भारतमें और शेष इंग्लैंडकी शिक्षा समितियोंकी ओरसे बम्बईमें ली जाती हैं। जो परीक्षायें यूरोपमें ही दी जा सकती हैं उनके लिये कालेजमें पाठ्यक्रम पूरा कराके कालेज अपनी देख रेखमें परीक्षार्थीको विदेश भेजता है।

इसके प्रिन्सिपल श्री एस० आर० दावर हैं आप भारतमें इस विषयके जाननेवाले अद्वितीय पुरुष माने जाते हैं। इस कालेजने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

(१४) आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में इन्डेन्ट एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १९ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ११ मार्च सन् १९२४ ई० में इन्डेन्ट एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चर्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग एस्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) वालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में इन्डेन्ट एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बेलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेंटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० बेरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई० में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ⁑

---

*इसके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियों तथा सभी प्रकारका शीशेके बर्तन (झाड़-फानूस) व सामान मिलता है।

⁑ इसके यहांसे रुई विदेश भेजा जाता है।

पद्धतिके अनुसार औषधियां तैयार करनेकी खोजका कार्य होता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिसे बड़े महत्वके विषयका ऊहापोह कर तात्विक खोजमें लगा है।

बाम्बे वेटेरिनरी कालेज, परेल—यह संस्था भी बम्बई सरकारकी ओरसे चल रही है। इसमें विद्यार्थियोंको पशुपालन और पशु चिकित्साकी शिक्षा दी जाती है। पशुओंकी चिकित्साके लिए बाई सकरबाई दीनशा पेटिट हास्पिटल हैं। इसीकी देख रेखमें यहांके परीक्षार्थियोंको पशु पालन तथा पशुचिकित्सक विषयोंकी व्यवहारिक शिक्षामें विशेष ज्ञान प्रदान करनेका प्रशंसनीय प्रबन्ध भी किया गया है। यहीं पर सरकारी और देशी राज्यों तथा नगर संस्थाओंमें कार्य करनेवाले दायित्व पूर्ण कर्मचारियोंके पदकी भी शिक्षा दी जाती है।

बाम्बे इन्स्टीट्यूट फार डेफ एण्ड म्यूट—यह संस्था बहिरे और गूंगे लोगोंकी शिक्षाकी व्यवस्था करती है। इसका स्कूल नेसविटरी मझगांवमें है। इसकी स्थापना सन् १८८५ में हुई थी। यहां सभी जाति—और सभी श्रेणीके गूंगे और बहरे स्त्री पुरुष भर्ती किए जाते हैं। पुरुषोंके लिए छात्रनिवास भी है। शिक्षा मुफ्तमें दी जाती है और मुफ्तमें ही खाने पीनेका भी प्रबन्ध होता है।

टिम्बर मरचेंट्स

अब्दुल लतीफ़ हाजी लतीफ ३६ सेकसरियारोड, भायखला
अहमद वल्लाल .१०६ लोहारचाल
अहमद सकुर एण्ड को० विक्टोरिया रोड
गनपतराय रूकमानन्द
दलाल एण्ड को० री रोड
दुर्लभदास एण्ड को० रामचन्द्र बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
देसाई ब्रदर्स ठाकुरद्वार रोड
धरसी आल एण्ड को० री रोड, टैंक बन्दर
बृजमोहन बनवारीलाल री रोड
बालेस एण्ड को० वालेस स्ट्रीट
भगवानदास भगला रायबहादुर
श्यामजीदास पुरुषोत्तमदास १ गवादा नाका कालबा देवी

संगमरमरके व्यापारी

औझाभाई के० एण्ड सन्स बैंक स्ट्रीट
बम्बई टाईल मार्ट २१ बैंक स्ट्रीट
भोगीलाल सी० एण्ड को० १७ एल्फिंस्टन रोड
मालमेर एण्ड को० ११ स्याम स्ट्रीट
वार्डर एण्ड को० २७ हमाम स्ट्रीट
साजन एण्ड को० टेमरिन्ड लेन फोर्ट
सीताराम लक्ष्मण एण्ड सन्स ताड़देव

मोटर एण्ड साईकल डिलर्स

अलबर्ट साईकल वर्क्स ६६ बाजार गेट स्ट्रीट
एशियन मोटरकार एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
एस्सी मैन्युफेक्चरिंग एण्ड को०लि० सैंडहर्स्टरोड
धानवाला एण्ड को० १३२।१३४ कालबा देवी
पटेल एन० डी एन्ड को० ५।६ गामदेवी
पारामाउंट मोटर एण्ड को० हार्नबी रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग कम्पनी ५८ सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग सर्विस प्रिन्सेस स्ट्रीट
बम्बई मोटरकार एण्ड को० अपोलो बन्दर
रवीलाल एण्ड को० गोल बिल्डिंग फ्रेंच ब्रीज
लेमिंगटन साइकल एण्ड मोटर कम्पनी
लचो कोटो मोटर्स सैंडहर्स्ट रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

(१) डा० एच० एल० बाटली वाला सन्स एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ [illegible] सन् १९१४ ई० में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें दवाइयोंका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे एक [illegible] पूंजी लगाकर करायी गयी थी। इसका आफिस ३४१ वर्ली, स्लोव लेन्ड हिल पर है।

(२) टाटा एलिस्ट्रो केमिकल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ८ दिसम्बर सन् १९१९ में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। [illegible] स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी घोषित की गयी थी, पर अभी तक ५ लाख ३१ हजारकी वसूल [illegible] व्यवसायमें लगायी गयी है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) ऐलेन लिबरसीज (इंडिया) लि० की रजिस्ट्री ता० ६ नवम्बर सन् १९[illegible] में केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें [illegible] साठ हजारकी स्वीकृत पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस १६ बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) करसनदास तेजपाल एन्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १२ अगस्त सन् १९[illegible] ईस्वीमें केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्य करायी गयी थी। इसमें [illegible] की स्वीकृत पूंजी लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग [illegible] रोड फोर्टमें है।

कन्ट्राक्टर एण्ड इञ्जिनियर्स

(१) टर्नर होयर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ मार्च सन् १९१९ को कन्ट्राक्टर तथा इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी [illegible] की घोषित की गयी थी परन्तु १० लाख २सौ की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस सुपारीबाग परेलमें है।

(२) टाटा इञ्जिनियरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ जून सन् १९१९ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी [illegible] लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २ लाख ५२ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) मासन मर्तीन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २० अक्टूबर सन् १९१९ में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे १ लाख ७२ हजारकी पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस साउटर स्ट्रीट भगरीपाड़ा जेकबसरकलमें है।

मथुरादास रोजी काजी सैय्यद स्ट्रीट
मोतीलाल रंगीलदास " "
मोतीलाल हीरालाल " "
लल्लूभाई हरजीवन " "
हीरालाल गणेश " "

ग्रामो-फोनके व्यापारी

आर्देशीर होरमसजी चर्चगेट स्ट्रीट
पटेल ए० एन्ड को० कालबादेवी रोड
बम्बई फोन एण्ड जनरल एजंसी कालबादेवी रोड
रामचंद्र टी० सी० ब्रदर्स " "
लैमिंगटन साईकल एन्ड ग्रामोफोन चर्चगेट
वर्मा जे० एण्ड को० कालबादेवी रोड
वाटसन एण्ड को० " "

वाच-मरचेंट्स

अब्दुल कादिर अहमद अली एण्ड को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
इस्टर्न वाच एण्ड को० हर्नबी रोड
एशियन वाच एण्ड को० बाजारगेट स्ट्रीट
कामर्शियल वाच एण्ड को० मेडो स्ट्रीट
कारोनेशन वाच एन्ड को० "
जमशेदजी नौरोजजी एन्ड को० अब्दुल रहमान
मेवानिया एफ० एन ब्रदर्स अब्दुल रहमान स्ट्रीट
रोशन वाच एन्ड को० गिरगांव रोड
वर्ग वाच एन्ड को० किंग बिल्डिंग, हार्नबी रोड
वेस्ट एण्ड वाच एण्ड को० ४६ एप्लेनेड रोड
शापुरजी रुस्तमजी बाजारगेट
स्टैंडर्डवाच एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
स्विस वाच वर्क्स ५ लेमिंगटन रोड

कांचके समानके व्यापारी

अब्बास एण्ड को० १२७ अब्दुल रहमान स्ट्रीट
अब्दुल रहीम भाई एण्ड को० " "
अलिमहम्मद बाउ एण्ड को० चौक स्ट्रीट
इब्राहिम जेन्सी, एण्डको० भण्डारी एण्ड चौक स्ट्रीट
इस्माईल इब्राहिम ब्रदर्स ११२ चौक स्ट्रीट
इब्राहिम कासिम एण्ड को० चौक स्ट्रीट
पत्थली साली महमद एण्ड को० चौक स्ट्रीट
बम्बई ग्लास मेन्युफेक्चरिंग को० नेगामरोडदादर
मुलकर एण्ड सन्स
रशीद ए० एण्ड को० चौक स्ट्रीट
लालजी दिवारजी एण्डको० भण्डारी स्ट्रीट, मांडवी
वेस्टर्न इण्डिया ग्लास वर्क्स लि० अपोलो स्ट्रीट

लोहे के व्यापारी

अलबिअन आयरन वर्क्स १ कारपेंटर स्ट्रीट
ओमिय फाउंडरी एण्ड इञ्जिनियरिंग वर्क्स
एम्प्रेस आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स कैनाटरोड
केरावाला सी० डी० एण्ड को० कालाचौकी रोड
जफ्फर भाई दाता भाई आयरन फाउंडरी
जानी एण्ड को आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी,
टाटा आयरन एण्ड स्टील को० लि० हार्नबीरोड
ताराचन्द एण्ड मसाली फॉकलैंड रोड
दीनशा आयरन वर्क्स कैनाट रोड
धनजीशा एम० दारुखानावाला आरथररोड
नानू ब्रास वर्क्स ठाकुरद्वार रोड गिरगांव
नार्थब्रुक आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी कुम्हारवाड़
प्राविंशियल आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स लैमिंगटन रोड
पाठक एण्ड वालचन्द लि० १५८ फारास रोड
बम्बई कास्ट आयरन प्रेजिंग कम्पनी डी, लिस्ली रोड, चींचपोकली
महमद अली महमद भाई आयरन वर्क्स रिपन रोड

तिजोरियोंके व्यापारी

लाल्य फर्नीचर एण्ड सन्स अब्दुल रहमानस्ट्रीट
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० गैसवर्क्स
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
जोशी एण्डको ग्रंटरोड
ज्योतिचन्द्र हीराचन्द तिजोरी वाला भण्डारी स्ट्रीट
पायोनीर लॉक वर्क्स कस्टम हाउस
महमद नूर अहमद कोका स्ट्रीट
महमद याकूब हाजी इस्माईल कोका स्ट्रीट
भोगीवाडा लाडूभाई हेमचन्द्र मसजिद बन्दररोड
हीराचन्द मंच्छाराम १३१ गुलालवाड़ी पीजरापोल स्ट्रीट

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

(१) डा० एच० एल० बाटली वाला सन्स एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ अक्टूबर सन् १९१४ ई० में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें दवाइयोंका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे एक लाखकी पूंजी लगाकर करायी गयी थी। इसका आफिस ३४१ वर्ली, क्लीव लैन्ड हिल पर है।

(२) टाटा एल्किन्ट्रो केमिकल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ८ दिसम्बर सन् १९१९ ई० में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी घोषित की गयी थी, पर अभी तक ५ लाख ३१ हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगायी गयी है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) ऐलेन लिवरसीज (इंडिया) लि० की रजिस्ट्री ता० ६ नवम्बर सन् १९२५ ई० में केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें तीन लाख साठ हजारकी स्वीकृत पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस १६ बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) करसनदास तेजपाल एन्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १३ अगस्त सन् १९१ ईस्वीमें केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्य करायी गयी थी। इसमें एक लाख की स्वीकृत पूंजी लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग स्लेटर रोड फोर्टमें है।

कन्ट्राक्टर एण्ड इन्जिनियर्स

(१) टर्नर होयर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ मार्च सन् १९११ को कन्ट्राक्टर तथा इन्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ११ लाख की घोषित की गयी थी परन्तु १० लाख २सौ की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस सुपारीबाग परेलमें है।

(२) टाटा इन्जिनियरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ जून सन् १९१९ ई० में कन्ट्राक्टर और इन्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २ लाख ५२ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) मास्टर मनोन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २० अक्टूबर सन् १९१९ में कन्ट्राक्टर और इन्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे १ लाख ७९ हजारकी पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस साऊटर स्ट्रीट नागरी पाड़ा जेकबसरकलमें है।

राजपूताना

RAJPUTANA

(२) वर्मामैच कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ८ मई सन् १९२५ ई० में दियासलाई व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी, इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी। ७ लाख ३० हजार ५ सौ की वसूल रकमसे काम हो रहा है। इसका आफिस [illegible] निकोल रोड बैलार्ड स्टेटमें है।

खेतीके औजार

(१) लिमये ब्रदर्स लि०की रजिस्ट्री १७ सितम्बर सन् १९२१ में करायी गयी थी। [illegible] स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी। इनके यहां विदेशसे खेतीके औजार [illegible] बेचनेका व्यवसाय होता है। इसका आफिस ६११७१ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

नमक

(१) करवी साल्ट वर्क्स लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन् १९१[illegible] बनाने और उसका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी [illegible] की है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउटरामरोड फोर्टमें है।

चमड़ा

(१) ओरियन्ट लेदर कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ११ फरवरी सन् १९१[illegible] और उसका सामान तैयार करवानेका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। [illegible] पूंजी ५ लाखकी है। इसका आफिस २८ आगा हमन बिल्डिंग्स [illegible]।

मोती

(१) बोम्बे पर्ल सेन्डीकेट लि०की रजिस्ट्री ता० १७ अप्रैल सन् १९२[illegible] इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी है। इनके यहां मोती और [illegible] होता है। इसका आफिस ४२० जवेरी बाजारमें है।

(२) ओरियन्ट पर्ल ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री तारीख १८ [illegible] करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ४ लाखकी घोषित की गयी है। [illegible] [illegible] काम होता है। इसका आफिस ४०३ जवेरी बाजारमें है।

(३) [illegible] पर्ल ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० [illegible] में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी। [illegible] होता है। इसका आफिस [illegible] बिल्डिंग्स [illegible] है।

[illegible]

(१) [illegible] की रजिस्ट्री ता० १ दिसम्बर सन् १९[illegible] [illegible] की वसूल रकमसे काम हो रहा है। [illegible]

अजमेर

अजमेरका ऐतिहासिक परिचय

जिस स्थानपर इस समय इतिहास प्रसिद्ध अजमेर शहर बसा हुआ है ग्यारहवीं या बारहवीं शताब्दीके आसपास यहांपर वीरान जंगल पड़ा हुआ था। उस समय प्रसिद्ध चौहान वंशकी राजधानी साम्भरमें थी। लेकिन जब राजपूतानेमें मुसलमान लड़ाकोंके आक्रमणका भय दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा, और प्रतापी चौहान वंशको साम्भरका स्थान अरक्षित और राजधानीके अयोग्य दिखलाई देने लगा—क्योंकि वहांपर न तो कोई पहाड़ था और न कोई ऐसा किला था, जिससे इन आक्रमणकारियों-के आक्रमणसे राज्यकी रक्षा की जा सके—तब चौहान वंशके प्रसिद्ध राजा अजयदेवने उपरोक्त पहाड़ोंसे घिरे हुए स्थानपर अपनी राजधानी बसाई और उसका नाम "अजयमेरु" रक्खा। यही अजयमेरु आजकल अजमेरके नामसे प्रसिद्ध है। इस राजधानीकी रक्षाके लिये इस राजाने यहां-पर एक किला भी बनवाया।

अजयमेरुके पश्चात् उनके पुत्र आनाजी तख्तनशीन हुए। इन्होंने अजमेरमें अपने नामसे एक बहुत बड़ा तालाब बनाया जो आजकल "आना सागर" के नामसे प्रसिद्ध है। आनाजीके पश्चात् चौहान वंशके परम प्रतापी और विद्वान नरेश वीसलदेव सिंहासनासीन हुए उन्होंने विद्यानुरागी राजा भोजके अनुकरणपर अजमेरमें एक सुन्दर पाठशाला बनाई जो आजकल ढाई दिनके झोंपड़ेके नामसे प्रसिद्ध है। इन्होंने वीसलपुर (जयपुर-राज्य) नामक एक गांव बसाया तथा वीसलसर नामक तालावकी रचना करवाई। वीसलदेवके पश्चात् क्रमसे अमरगांगेय द्वितीय पृथ्वीराज और सोमेश्वर ये तीन राजा और हुए और इनके पश्चात् इतिहास प्रसिद्ध सम्राट् पृथ्वीराज इस सिंहा-सनके अधिकारी हुए। इनकी वीरता और दिलेरीकी कहानियां आज भी इतिहासमें बड़े गौरवके साथ अंकित हैं। इन्होंने कई बार अपने दुश्मन शत्रुओंको पकड़ २ कर उपेक्षाके साथ छोड़ दिया। अपने वीरत्व और साहसके आवेशमें इन्होंने राजनीति और युद्धनीतिकी भी परवाह न की, फल यह हुआ कि इनकी विलासप्रियता और अपरवाहीसे अजमेर इनके हाथसे निकल गया। चौहानवंशका प्रबल साम्राज्य नष्ट हो गया। इनके जीवनका भी करुणा और दुःखपूर्ण अन्त हो गया, और अजमेर तथा भारतवर्षमें मुसलमानोंके पैर हमेशाके लिए दृढ़तासे जम गये।

दौलतबाग-कोठी (जवाहरमल गम्भीरमल) अजमेर

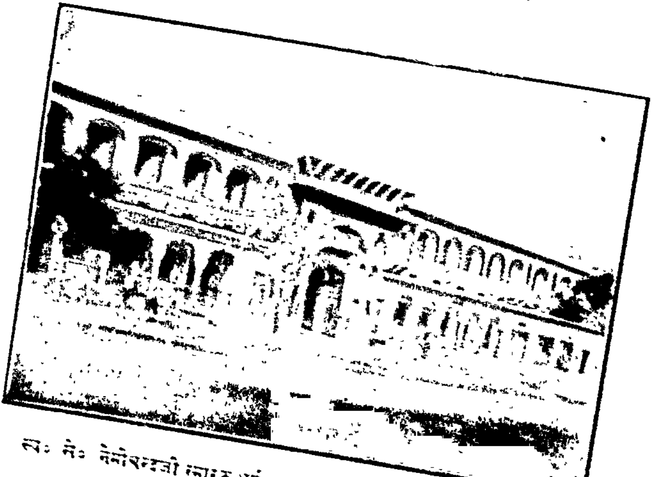

स्व: से: नेमीचन्दजी स्मारक धर्मशाला (

आर्य्य समाज—भारतवर्षके मुख्य २ केन्द्रोंमें अजमेर भी आर्य्य समाजका एक मुख्य केन्द्र है। इस समाजने भारतवर्षके सामाजिक और राजनैतिक जीवनमें जो जीवन और उन्नति पैदा की है इसके सम्बन्धमें कुछ भी लिखना सूर्य्यको दीपक दिखाना है। यहांपर आर्य्य समाजकी तरफसे एक हाई स्कूल, एक विशाल लायब्रेरी, एक बड़ा प्रेस और एक साप्ताहिक पत्र चल रहा है। आर्य्य समाजके कार्य्य कर्त्ताओंमें रायसाहब हरविलासजी शारदा। श्रीयुत चांदकरणजी शारदा, घीसूलालजी वकील, वैद्य रामचन्द्रजी शर्मा इत्यादि सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेखनीय है।

ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी—असहयोगके जमानेमें अजमेरकी कांग्रेस कमेटी बड़े जोर शोरके साथ कार्य कर रही थी, मगर नेताओंके पारस्परिक मतभेदसे इस समय वह मृतकवत होरही है।

इनके अतिरिक्त और भी कई सार्वजनिक संस्थाएं अजमेरमें चल रही हैं। उन सबका वर्णन यहां होना असम्भव है।

शहरकी बस्ती और म्यूनीसिपल कमेटी

अजमेर शहर बस्तीकी दृष्टिसे बड़े अवैज्ञानिक ढंगसे बसा हुआ है। इसकी इमारतें जितनी सुन्दर और विशाल हैं इसकी बसावट उतनी ही गन्दी और पिचपिच है। छोटी २ बांकी टेढ़ी गलियें अव्यवस्थित मकान और सङ्कीर्ण बसावट स्वास्थ्यकी दृष्टिसे बहुत खराब है। केवल मात्र कैसरगंजकी बस्ती साफ, विरली और शुद्ध वायुयुक्त है।

शहरकी सफाईके लिये शहरमें म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्थापित है। इसके मेम्बरोंका चुनाव पब्लिक में से होता है। फिर भी यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं, कि सफाईका प्रबन्ध करनेमें यह विभाग प्रायः असफल रहा है। अजमेरकी गलियां वैसे ही छोटी २ हैं। शुद्ध वायुका आना उनमें वैसे ही दूभर रहता है। फिर उनमें चारों ओर मैला, कूड़ा करकट पड़ा रहनेकी वजहसे बड़ी बदबू और गन्दगी फैली हुई रहती है, इनकी सफाईके लिये यहां पर मैला गाड़ियोंकी व्यवस्था है। ये मैला गाड़ियां क्या है साक्षात् नरक है। इनके आस पास सौ सौ गज तक बदबूका साम्राज्य छाया रहता है। जिधर होकर ये निकल जाती हैं उधरके लोगोंकी बदबूके मारे मानों शामत आ जाती है। गरमी के दिनोंमें जब पानीका अकाल हो जाता है तब और भी दुर्दशा होती है। म्यूनिसिपैल्टीको इन सब बातोंकी ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

फेक्टरीज एण्ड इण्डस्ट्रीज

(   )—न्यू वीविंग एण्ड ट्रेडिङ्ग को० अजमेर—इस कम्पनीमें हैण्ड लूम पर कपड़ा बुना जाता है। इसमें ३६ आदमी कार्य्य करते हैं।

सर दिनशा मानेकजी पेटिट जिमनेस्टिक इन्स्टीट्यूट—यह व्यायामशाला भारतीय और योरोपियन विद्यार्थियोंकी शारीरिक उन्नतिके लिये खोली गयी है यहां व्यायाम सम्बन्धी ज्ञान संवर्द्धनके लिये शिक्षा भी दी जाती है और व्यायामके लिये स्वतन्त्र भी प्रबन्ध है इस व्यायामशालाका प्रबन्ध भार भारतीय और योरोपियन शिक्षकोंके योग्य हाथोंमें है।

बाम्बे सेनीटरी ऐसोसियेशन प्रिन्सेस स्ट्रीट—इस संस्थाकी स्थापना, नगरमें फैलनेवाली गन्दगीसे स्वास्थ्य सम्वर्धनकारी उपचारों द्वारा नागरिकोंकी रक्षा करनेके उद्देश्यसे हुई थी। यह संस्था, सिनेमा, भाषण, पुस्तकों, एवं हस्तपत्रों द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी विज्ञानका प्रसार कर लोगोंमें सफाईका अभ्यास डालनेकी चेष्टा करती है। इस संस्थाकी ओरसे ऐसी शिक्षा देनेके लिये रात्रि पाठशालायें भी खुली हैं और नियमित रूपसे परीक्षाएं भी ली जाती हैं तथा प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं। यह भी समाज सेवा कार्य करनेका अनुकरणीय ढंग है। इसका कार्यालय अपने निजके भवनमें ही है वहांपर सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी मूल्यवान पुस्तकों और यन्त्रोंका संग्रह है। इसकी ओरसे समाज सेवाका कार्य करनेके लिये दीन और अनाथ स्त्रियोंको पैदा होनेके समय सहायता दी जाती है। उनके लिये एक रुग्णालय भी है जहां प्रसवके समय जाकर वे लाभ उठा सकती हैं। वहां उनके लिये सब प्रकारकी सुविधा है। और जबतक वे स्वस्थ नहीं हो जावें तबतक यहां निसंकोच रह सकती हैं।

जमशेद्जी नसरवानजी पेटिट इन्स्टीट्यूट हार्नबीरोड—इस पुस्तकालयकी स्थापना सन् १८५६ ई० में दि फोर्ट इम्प्रूवमेन्ट लायब्रेरीके नामसे हुई थी। परन्तु श्री दीनबाई नसरवानजीने २॥ लाखका भवन इसे दे दिया और सन् १८९८ से वर्तमान नाम रखा गया। यहां पुस्तकोंका बहुत बड़ा संग्रह है।

सोशल सर्विस लीग—स्थानीय सर्वेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटीके कार्यालयमें सेन्डहर्स्ट रोड गिरगांवपर इस संस्थाका आफिस है। इसकी स्थापना सन् १९११ ई० में समाज सेवाके उद्देश्यसे हुई थी। समाजके सम्मुख उपस्थित होनेवाले प्रत्येक प्रश्नका तात्विक रीतिसे अध्ययन व मननकर जन साधारणमें उसकी चर्चा चला विचार विनिमय द्वारा किसी विशेष निर्णयपर पहुंच समाजकी सेवामें व्यवहारिक रीतिसे भाग लेना इसका कार्य्य है। इसने वर्तमानमें (१) शिक्षा प्रसार कार्य (२) धर्म्म और स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य (३) समाजकी दृष्टिसे पतित माने जानेवालों तथा कष्ट पीड़ितोंकी सहायता (४) दीनहीन रोगियोंकी सेवा सुश्रूषा (५) मिल मजदूरोंके पारिवारिक जीवनमें सामाजिक उन्नतिकी और बढ़नेके लिये सहायता देना (६) गरीबोंकिंग्वों—राष्ट्रके भावी नागरिकोंको—स्वच्छ वायु सेवनार्थ आने जानेका प्रबन्ध करना और उनके खेल और व्यायामकी व्यवस्था करना तथा (७) समाजमें आयी हुई खराबियोंका दूर करना इत्यादि कामोंमें गति की है।

(३) पी० आर० भिन्डे अवैतनिक संयुक्त मन्त्री

(४) एस० पी० कवड़ी अवैतनिक संयुक्त मन्त्री

(५) वाई० जे० मेहरअली बी० ए०

इसका पता फ्रेन्च पुल, चौपाटी, गिरगाम है।

बाम्बे यूनिवर्सिटी इन्फरमेशन ब्यूरो—शिक्षा समाप्त करनेकी इच्छासे विदेश जानेवाले विद्यार्थियोंको आवश्यक जानकारी करानेके उद्देश्यसे इस संस्थाकी स्थापना की गयी है। विदेशी विश्वविद्यालयोंकी जानकारीके लिये इसके मंत्रीसे पत्र व्यवहार करना चाहिये। लोगोंको ऐसे संस्थाओंसे अच्छी जानकारी उपलब्ध हो जाती है। इसका कार्यालय यूनिवर्सिटी फोर्ट बम्बे है।

गोखले एज्यूकेशनल सोसाइटी—यह संस्था, स्व० गोपालकृष्ण गोखलेके समान शिक्षा प्रेमी और देशभक्तकी पवित्र स्मृतिमें सन् १९१८ ई० के फरवरी मासमें स्थापित की गयी थी। इस संस्थाके पास २ लाख ६० हजारसे अधिक की स्थायी सम्पत्ति है। इसके प्रमुख टी० ए० कुलकर्णी और मन्त्री एम० एस० जोगळेकर हैं।

इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ पोलिटिकल एण्ड सोशल साइन्स—समाज शास्त्र और राजनीतिकी व्यवस्थित रूपसे शिक्षा देनेके लिये इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१७ ई० में की गयी थी। इस संस्थाकी विशेषताके सम्बन्धमें केवल इतनाही लिखना पर्याप्त होगा कि इसकी लायब्रेरीमें पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह कोई और यहांपर प्रायः भारतीय समाज शास्त्र और राजनीतिका विशेष रूपसे अध्यापन, होता है।

इसके प्रमुख हैं श्रीयुत के० नटराजन और मन्त्री हैं डा० बी० आर० आंबेडकर डी० एस० सी० (लंदन) बार० एट ला०

यङ्ग लेडिज हाई स्कूल—इस संस्थाकी स्थापना सन १८८१ ई० में हुई थी। इसमें बाल विवाहित स्त्रियां भर्ती की जाती हैं। यहां आरम्भसे मेट्रिक तककी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन सुखमय बना सकनेवाला गृहस्थी चलानेके लिये आवश्यक विषयोंकी शिक्षा विशेष रूपसे या मुख्यतया दी जाती है।

इसकी प्रिन्सिपल और हेड मिस्ट्रेस क्रमशः (१) कुमारी सोना बाई० डी० दलाल और (२) कुमारी जेटबाई पी० पारी एम० ए० हैं।

विक्टोरिया जुबिली टेकनिकल इन्स्टीट्यूट—इसकी स्थापना सन् १८८७ ई० में हुई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध एक ऐसे बोर्डके हाथ में है जिसे सरकार, म्युनिसिपेलिटी और मिल मालिकोंकी सभाकी ओरसे आर्थिक सहायता मिलती है। इसमें मेकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इन्जिनियरिंगकी पढ़ाईके अतिरिक्त कपड़ा बुनने, रंगसाजी तथा साबुन बनानेके विषयकी भी शिक्षा होती है।

सिडेनहम कालेज आफ कामर्स एण्ड एकनामिक्स—यह कालेज सरकारी है और...
भवन बोरी बन्दरके पास हार्नबी रोडपर है। इस कालेजकी स्थापना योरोप और अमेरिकाकी...
उन्नत शिक्षा पद्धतिके अनुसार शिक्षा देनेके लिये की गयी है। दावर कालेजकी भांति ही...
विषय क्रम रखा गया है। भारतमें यह एक ही कालेज है जो बी. काम. की परीक्षा...
परीक्षार्थी तैयार करता है। यह कालेज बम्बई विश्वविद्यालयसे सम्बद्ध है।

सर जमशेदजी जीजी भाई स्कूल आफ आर्ट—यह स्कूल भी सिडेनहम कालेजके...
ही हार्नबी रोडपर है। इसकी स्थापना सन् १८५७ ई० में हुई थी। सरकारने...
विशाल भवन ,बनवाया और अध्यापकोंकी व्यवस्था की, तथा इसके चलानेके लिये सर जमशेद...
जी जीजी भाई प्रथम बैरोनेट एक लाखका दान दिया। इस स्कूलमें चित्रकारीकी शिक्षा...
जाती है इसकी परीक्षायें विश्वविद्यालयकी ओरसे होती हैं। पाठ्य क्रम ५ सालका...
विषयोंमें ड्राइंग, पेण्टिंग मोडेलिंग, इमारतें बनाना और डिजाइन तैयार करना आदि...
हैं। इसके साथ ही छोटासा कारखाना है जहां विद्यार्थियोंको कुर्सी मेज बनाने...
फेन्सी तैयार करने, लकड़ी और पत्थरकी नक्काशी, धातुका काम, कमरा सजाना तथा गलीचा...
आदिकी व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। मिट्टीके बर्तन और सभी प्रकारके खिलौने तैयार करने...
चित्रकलाका विशेष रूपसे अध्ययन करनेके लिये इसमें विज्ञान विभाग भी है। भारतीय...
योरोपीय ललित कलाकी मन मोहक वस्तुओंका संग्रहालय भी इसमें है।

ऐश्वर्य लेपर असाइलम—माटुंगा—यह संस्था कोढ़ियोंके लिए सन १८९० ई में स्थापित...
की गई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार यहांकी नगरसंस्था म्युनिसिपल कार्पोरेशनके हाथमें...
उसकी आर्थिक सहायतासेही सब कार्य चलता है। म्युनिसिपल कमिश्नर ही इसके प्रमुख रहते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल फार ब्लाइण्ड—इस स्कूलकी स्थापना सन् १९०२ ई० में...
...र की गयी थी। यह स्कूल तारदेवमें है। यहांपर गुजराती और मराठी भाषाका लिखना...
...ताया जाता है। इसके साथ संगीत और अन्य कला कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है...
...डा धोने कुर्सी आदि बुनने और फीते बिननेका काम विशेष रूपसे सिखाया जाता है।
...स्कूलको सरकारकी ओरसे १५००) रु० और स्थानीय नगर संस्थाकी ओरसे २०००) की...
...सहायता वार्षिक मिलती है।
इसके प्रिंसिपल—डा० नीलकान्त राय दयाभाई एल० एम० एण्ड एस० (स्वर्ण...)

...क्रोनिक फार्मेसी—गिरगाम—यह संस्था भी अपने ढंगकी एक ही है। इसके व्यवस्था-...
...मि० एन० जे० गाजर एम० ए० हैं। यहां पर देशी जड़ी बूटियोंसे आधुनिक ढंगसे...

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह●

[लोढा परिवारका परिचय]

भारतवर्षकी प्रसिद्ध व्यापारिक ओसवाल जातिमें यह बहुत बड़ा घराना है। इसका निकास चौहान राजपूत वंशसे है। इस घरानेका सरकार, देशी राज्यों तथा प्रजामें बराबर सम्मान है। इस घरानेके प्रमुख पूर्वज सेठ भवानीसिंहजी अलवर राज्यमें रहते थे। इनके पांच पुत्रोंमेंसे एक सेठ कमलनयनजी कुछ समय किशनगढ़ राजमें रहकर संवत् १८६० के पूर्व अजमेरमें आये और यहांपर "कमलनयन हमीरसिंह" के नामसे दुकान खोली। आप अपनी कार्य-कुशलता तथा सत्य प्रियतासे धन्धेको भलीभांति बढ़ाया। आपहीने जयपुर और किशनगढ़में भी "कमलनयन हमीरसिंह"के नामसे और जोधपुरमें "दौलतराम सूरतराम" के नामसे दूकानें खोलीं। इनके पुत्र सेठ हमीरसिंहजीने फर्रुखाबाद, टोंक व सीतामऊमें दुकानें जारी कीं और जयपुर, जोधपुरके महाराजाओं से लेनदेन प्रारंभ किया और इस घरानेकी प्रतिष्ठा बढ़ावी। इनके चार पुत्र हुए, सेठ करणमलजी, सेठ सुजानमलजी, रायबहादुर सेठ समीरमलजी और दीवानबहादुर सेठ उम्मेदमलजी। प्रथम पुत्र सेठ करणमलजीका तो बाल्यावस्थामें ही स्वर्गवास हो गया। दूसरे पुत्र सेठ सुजानमलजीने सन् ५७ के विद्रोहके समय अंगरेज सरकार को बहुत सहायता दी। इन्होंने रियासत शाहपुरामें राय बहादुर सेठ मूलचंदजी सोनीके साझेमें दूकान खोली और वहांके राज्यसे लेनदेन किया। इनके समय साम्भरकी हुकूमत इनके घरानेमें आई, और वहांका कार्य यह अपने प्रतिनिधियों द्वारा करते रहे। इनके स्वर्गवासके पश्चात् इस घरानेकी बागडोर तीसरे पुत्र रायबहादुर सेठ समीरमलजीके हाथमें आई। अजमेर नगरकी म्यूनिसिपल कमेटीके आप बहुत वर्षोंतक मेम्बर रहे और बहुत समय तक आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे थे। कमेटीके ३१ वर्षतक यह वाइस चेयरमैन बने रहे इस पदपर और मजिस्ट्रेटीपर ये मृत्युदिवस तक आरूढ़ रहे थे। इनको वाइस चेयरमैनीमें

● आपका परिचय हमें उस समयमें मिला जिस समय सारी पुस्तक छपकर बिल्कुल तैय्यार हो गई थी। अतएव आपका परिचय अलग छपवाकर इसमें जोड़ा जा रहा है। —प्रकाशक

मशीनरी-मरचेंट्स

आदम एण्ड यस्तावाला हांगकांग बैंक चर्चगेट
अल्फ्रेड हारवर्ड लि० अमरचन्द बिल्डिंग
आनन्दराव भाऊ एण्ड को० २५/२६ चर्चगेट
आर्देशिर माद्री एंड को १६५ बोहरा बाजार फोर्ट,
आर्देशिर रुस्तमजी एन्ड ब्रदर्स अब्दुल रहमान
एन्डरसन गी० डी० एण्ड को० १३४ मेडो स्ट्रीट
एकमो मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी स्लीटर रोड
एडवर्ड साईकल एन्ड को० हार्डी सेठ हाउस
इस्टर नेशनल प्रोडक्ट्स कारपोरेशन P. B. ६६६
केरावाला एन्ड को० ५ सुजयन रोड
कुरवा एन्ड कमाजी १४२।१४४ अब्दुल स्ट्रीट
मीम्स काटन एन्ड को० फौर्ब्स स्ट्रीट
गुजराती टाईप फाउंडरी गोरवाड़ी गिरगांव
जनरल इञ्जिनियरिंग कम्पनी, अपोलो स्ट्रीट
जापान ट्रेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी
डंकन स्ट्रैटन एन्ड को० ५ बैंक स्ट्रीट
दीनशा एन्ड फाइनजी एन्ड ब्रदर्स अपोलो स्ट्रीट
धनजीशा एम० दुरुस्तनवाला एन्ड को०
नारियलवाला कोपर एन्ड को० ४१ एलफिंस्टन
नौरोसजी वाडिया एन्ड सन्स होम स्ट्रीट
फ्लावर जेन एन्ड को० हार्नबी रोड
फिरोज एच० मोतीभाई एन्ड को०
बाटलीवाला एम० एम० एन्ड को० एज० सरफल
महेन्द्र एन्ड को० कोठारी मेन्शन जी. पी. ओ.
मार्सलैंड ब्रदर्स एन्ड को० लि० नेसबी रोड
एम. एच. दीनशा एन्ड को० ग्रीन स्ट्रीट फोर्ट
रुस्तमजी नौरोजी बाटलीवाला १० चर्चस्ट्रीट फोर्ट
रिचर्डसन एन्ड क्रूडस ६१८-६१९ परेलरोड
लल्लूभाई पुरुषोत्तम एंड सन्स अपोलो स्ट्रीट
... एन्ड को० पट हूगर
...जी दादुरजी एन्ड को० एशियन बिल्डिंग ३ चौल रोड
...क हार्डवेयर एन्ड को० पारसी बाजार
...मजी मोरारजी एन्ड को० इस्माम स्ट्रीट

मिल-जीन स्टोअर सप्लायर्स

आर्देशिर एच० वाडिया एन्ड को० अपोलो स्ट्रीट
आत्माराम एण्ड को० ८२ नागदेवी क्रास स्ट्रीट
ओरियन्टल ट्रेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लि० २४ एल्फिंस्टन सर्कल फोर्ट
ईश्वरदास जगमोहनदास एन्ड को० अपोलो स्ट्रीट
कुंवरजी देसाई एन्ड को० १५५ बोहरा बाजार
जनरल मिल सप्लाई एन्ड को० १११ घोघा स्ट्रीट
जगमोहन श्यामलदास एन्ड सन्स ११ टेमरिन लेन, फोर्ट
देवजी हीरजी एन्ड को० नागदेवी क्रास लेन
दीनशा मास्टर एन्ड को० नागदेवी स्ट्रीट
दोसाभाई दोराबजी इंजिनियर अपोलो स्ट्रीट
फिरोजशा एंड को० नागदेवी स्ट्रीट
बेली पेटरसन एन्ड को० लि० मेडो स्ट्रीट फोर्ट
मंगलदास अमीन एन्ड को० ३२ अपोलो स्ट्रीट
एम. एच. दीनशा एण्ड को० ग्रीन स्ट्रीट
मायाशंकर बेकर एन्ड को २४१ ए अपोलो स्ट्रीट
लल्लूदास मगनलाल एन्ड को० १०३ मेडो स्ट्रीट
लुकमानजी कमरुद्दीन डाकर स्ट्रीट बन्दर रोड
शांतिलाल एंड को० २१ फोर्ट स्ट्रीट
सोराबजी पेस्तनजी किरानी फर्नांड रोड
सेठना कंट्राक्टर एन्ड को० ११ टेमरिन लेन
हरसुखलाल एन्ड को० ३३ टेमरिंड लेन फोर्ट
हैदर भाई इस्माईलजी एन्ड को० २०८ नागदेवी
हीरालाल गोकुलदास दलाल एन्ड को०

शक्करके व्यापारी

अजीम हाजी गुलाम महम्मद हाजी मेमनवाड़ा
उत्तमलाल हरगोविन्द " "
हाजी वल्लभ हाजी अहमदगनी हाजी मस्जिद बंदर
अहरिया हाजी जान महमद नागदेवी स्ट्रीट
रुघनाथ नानचन्द मस्जिद बंदर
रामजी देवसिंह
देवशंकर रत्नाकर "

श्री० स्व० सेठ मूलचन्दजी सोनी अजमेर

स्व० सेठ नेमिचन्दजी सोनी अजमेर

रा० ब० सेठ टीकमचन्दजी सोनी अजमेर

कुंवर भागचन्दजी सोनी अजमेर

ब्रास फाउण्डरर्स

इस्टर्न आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी एण्ड शिपमेंट को० बेलासिस रोड

एम्प्रेस आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स फैनाटरोड भायखला

एलकाक एशडाऊन एण्ड को० लि० मझगांव

कासिम विश्राम पूंजा महमदी मैंशन भिंडी बाजार

गहगन जिम्मी एन्ड को० जे काब सरकल

डिक्सन एण्ड को० एच० आय० लि० मझगांव रोड

बाम्बे फ्लोटिंग वर्क्स शाप लि० मल्लेटरोड वाड़ी

रिचर्डसन् एण्ड क्रूड्स भायखला

स्टेन्डर्ड मेटल वर्क्स आफिस ३२ चर्चगेट

कारपेट डीलर्स

इंडियन कारपेट रग्ज़ एण्ड टाईल मेन्यूफेक्चरिंग को० १६७१ कमाठीपुरा स्ट्रीट भायखला

ईसरदास टिलूसिंह ४ बाटरलू मेन्शन अपोलो बंदर

ओरियंटल कारपेट डिपो मेडो स्ट्रीट

ए० एम० नूरभाई एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट

ताराचन्द परशुराम मेडो स्ट्रीट

धन्नामल चेलाराम ६२।६५ मेडो स्ट्रीट

पोहूमल ब्रदर्स अपोलो बन्दर

मुरलीधर संतदास कावसजी बिल्डिंग क्लार्क बन्दर

सी० एम० मास्टर एण्ड को० लैंसडोने रोड

सिमेंट-कंपनियां

इंडिया सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट ताता संस एण्ड को० २४ ब्रूस स्ट्रीट, फोर्ट

इंडिया हाल्ड कंपनी को० मेडडरोड, दादर बाम्बे

कान्ति सिमेंट एण्ड इंडस्ट्रीयल को० लि०—एजंट सी० मेकडानल्ड लक्ष्मी बिल्डिङ्ग बेलार्ड रोड

कोपटो एण्ड को०—एजंट एच० एस०। मीन—स्ट्रीट, फोर्ट

जबलपुर पोर्टलैंड सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट, सी० मेकडनल्ड बेलार्ड रोड

द्वारका सिमेंट कम्पनी लि० रामपार्ट रो

पंजाब पोर्टलैंड सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट किल्लीक निक्सन एण्ड को० होम स्ट्रीट

बूंदी पोर्टलैंड सिमेंट को० लि०—एजंट किल्लीक निक्सन एंड को० होम स्ट्रीट

मुरारगलिया एण्ड को० एफ् एडिंग्टिन सर्कल

सी० पी० पोर्टलैंड सिमेंट को० लि०—एजंट

शापूर जी पालन जी एंड को ७० मेडो स्ट्रीट

शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट ताता संस लि० नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबीरोड

पेपर मरचेंट्स

अब्दुल हुसन कोकाभाई पारसी बाजार

आदम एण्ड मस्ताबाला हांगकांग बैंक बिल्डिंग

गुणडालाल नाथूलाल एण्ड को०

गुलाबवाला एच० ई० ब्रदर्स ३४ मिर्जा स्ट्रीट

कृष्णा पेपर मार्ट २६ मंगलदास रोड

खान भाई जीवाजी ब्रदर्स सैंडहर्स्ट रोड

चौधरी ब्रदर्स एण्ड को० मफतर बिल्डिंग ठाकुरद्वार रोड

जान डिकिन्सन एण्ड को० फोर्ट

पदुमजी सी० एंड को० २८ बहुरोड फोर्ट

बम्बई स्टेशनरी मार्ट पारसी बाजार

बाल्मेर एण्ड को० ११ हमाम स्ट्रीट

सराफ़अली मैमून जी कस्टम हाउस रोड

सुदामा पेपर मार्ट ११० पारसी बाजार

शीराज एण्ड को० पारसी बाजार

फोटो मार्फीका सामान बेचने वाले

आर्मि एन्ड नेवी को० मापरटिक्स मोनार्क

हमाम एण्ड को० हमाम रोड

कान्टिनेन्टल फोटो स्टोअर्स २८३ हार्नबी रोड

नन्दकर्णी एण्ड को० करनाक रोड

प्रभाकर ब्रदर्स १०८ एस्प्लेनेड रोड

फोटो स्टोअर्स कालबा देवी

हारन यूथर लि० ४ प्रिन्स रोड

१९२२ में बनाया यह अजमेर नगरको एक दर्शनीय वस्तुओंमेंसे है। इसे प्रतिवर्ष हजारों यात्री,बड़े बड़े अंग्रेज,राजे महाराजे आदि देखनेको आते हैं। इसमें सब काम सुवर्णका है। सेठ मूलचन्दजीको सन् १८८२ में गवर्नमेंटने रायबहादुरके पदसे विभूषित किया। आप लोक प्रियताके कारण जीवन पर्यन्त स्थानीय म्यूनिसिपैलिटीके कमिश्नर व आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपने ही व्यापार रुचिसे प्रेरित हो कलकत्ता, बम्बई, आगरा, गवालियर, जयपुर भरतपुर आदि आदि प्रधान नगरोंमें कोठियां खोलीं।

आपके सच्चे व्यवहारसे गवर्नमेंटने नीमचछावनी, ग्वालियर, जैपुर व ईस्टर्न राजपूताना स्टेट्स (भरतपुर धौलपुर करौली रियासतों) के खजाने आपके सुपुर्द किये।

आपका देहान्त विक्रम सम्वत् १९५८ की अषाढ़ शुक्ला २ को हुवा-उस समय जिन २ ने यह दुखदायी समाचार सुना-हार्दिक खेद प्रगट किया। आपकी उत्तरक्रियाहीके लिये महाराजा सर प्रतापसिंह साहब ईडर नरेश आदि व बड़े २ यूरोपियन और हिन्दुस्तानी अफसर पधारे थे।

श्री सेठ नेमीचन्दजी साहबने भी स्वर्गवासी पिताजीकी ख्यातिको बहुत बढ़ाया। आप सन् १९०७ में रायबहादुरकी पदवीसे विभूषित हुए तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे। आपकी मृत्यु सम्वत् १९७४ के भादवासुदी ८ को हुई। आपकी मिलनसारी व प्रतिष्ठासे आपके लिये स्थानीय कोर्ट, रेलवे दफ्तर, स्कूल आदि शोक प्रगटनार्थ बंद किये गये थे।

आपके पुत्र तो कई हुए और कन्याएं भी हुईं लेकिन उनमेंसे केवल श्री टीकमचंदजी साहब व दोकन्याएं विद्यमान हैं।

श्री सेठ टीकमचंदजीका जन्म प्रथम श्रावण शुक्ला ४ विक्रम सम्वत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय इस फर्मके अधिष्ठाता हैं आप सन् १९१९ में रायबहादुरके पदसे अलंकृत किये गये। आपको श्री स्वर्गीय जैपुर नरेश व इडर नरेशने स्वर्णकटक तथा श्री जोधपुर नरेशने : ताजीम बख्शी है जोकि राजपूतानेमें बड़ी प्रतिष्ठासे देखी जाती है। आप भी आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिस्पल कमिश्नर हैं आपने अपने पूज्य पिताजीके चिरस्मरणार्थ एक वृहत धर्मशाला इम्पीरियल रोडपर करीब दो लाख रुपया लगाकर निर्माण करवाई है,जिससे अजमेरकी एक बड़ी कमी पूरी हुई है। आप बड़े धर्म प्रेमी हैं। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने आपके धर्म प्रेमसे मुग्ध हो आपको "धर्मवीर" की उपाधि प्रदानकी है।

आपके दो पुत्र श्रीयुत कुंवर भागचन्दजी तथा श्रीयुत कुंवर दुलीचंदजी हुए। खेद है कि श्रीयुत कुंवर दुलीचंदजीका देहान्त केवल १९ वर्षकी अल्पायुमें ही हो गया। आप बड़े सरल स्वभावी और होनहार नवयुवक थे।

स्व० कुंवर दुलीचन्दजी सोनी

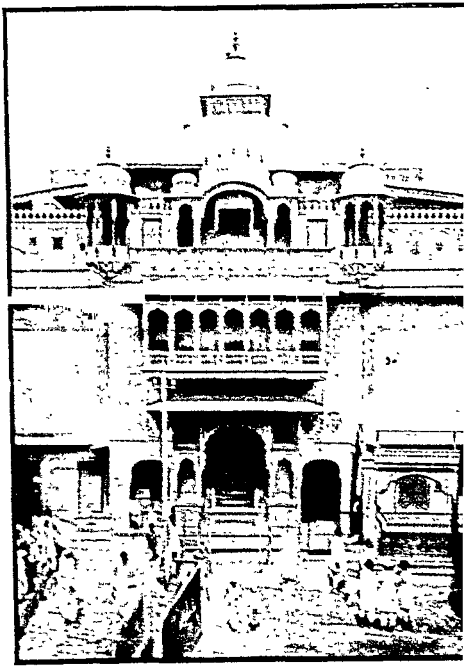

जैन मन्दिर (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

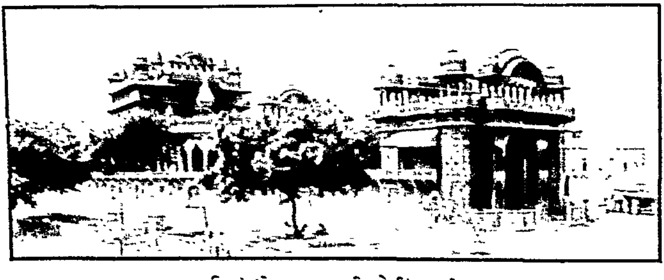

नसियां (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

रमणीक और सुन्दर है। इसमें चार देग इतने बड़े २ रखे हुए हैं कि शायद ही भारतवर्षमें इनके जोड़के दूसरे देग मिलें। इनको साफ करनेके लिये आदमियोंको इनके भीतर उतरना पड़ता है।

जैनमन्दिर (मूलचन्दजी सोनी)—यह जैनमन्दिर अजमेरके प्रसिद्ध और नामांकित सेठ मूलचन्दजी सोनीका बनाया हुआ है। बड़ा सुन्दर और दर्शनीय है। इसमें कांचका काम अधिक है।

नशियां (मूलचन्दजी सोनी)—यह भी उपरोक्त सेठ साहबकी उदारता और दानशीलताका परिमाण है। इसकी बिल्डिंग बड़ी सुन्दर और ऊंची लागतकी है। इसके भीतरमें बहुतसा सोनेका काम भी किया हुआ है।

दौलत बाग – आनासागरके तटपर एक रमणीक बगीचा बना हुआ है। वायुसेवनका अच्छा स्थान है।

आडिट आफिस—बी० बी० सी० आई० रेलवेके मीटर गेज सेक्शनका यह सबसे बड़ा आफिस है।

इसके अतिरिक्त और भी कई पहाड़ी तथा दूसरे स्थान यहांपर दर्शनीय हैं।

सार्वजनिक संस्थाएं

राजस्थान सेवासंघ—यह संस्था राजस्थानके प्रसिद्ध नेता श्रीयुत बी० एस० पथिककी स्थापित की हुई है। यह कहनेमें तनिक भी अत्युक्ति न होगी, कि इस संस्थाने राजस्थानके और अधिकतर खासकर मेवाड़के कृषकोंमें एक नवीन जागृति और नवीन जीवन पैदा कर दिया है। इस संस्थाके अधिकांश कार्यकर्ता बड़े निःस्वार्थी और देशभक्त हैं। श्रीयुत पथिकजी और श्रीयुत रामनारायणजीके नाम इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं। इस संस्थासे तरुण राजस्थान नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है। इस पत्रमें भी प्रचारका बहुत कार्य होता है। यदि यह पत्र अपनी निषेधात्मक (Negitive) नीतिको नरमकर जरा विधेयात्मक (Posetivo) नीतिसे काम ले तो और भी सुन्दर कार्य हो सकता है।

सस्ता-साहित्य-मण्डल—यह संस्था राजस्थानके प्रसिद्ध त्यागी विद्वान पं० हरिभाऊजी उपाध्यायके उद्योगसे स्थापित हुई है। यह श्रीयुत घनश्यामदासजी बिड़ला और जमनालालजी बजाजकी आर्थिक सहायतासे चलती है। इस संस्थासे साहित्यकी अच्छी पुस्तकें सस्ते दामोंपर निकाली जाती हैं। इस संस्थाने त्यागभूमि नामक एक बड़ी सुन्दर और उपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना भी निकालना आरम्भ किया है। इस पत्रिकाने अपने गम्भीर और ठोस लेखों, सामयिक टिप्पणियों और विवेचनात्मक नीतिसे थोड़े ही समयमें हिन्दी साहित्यमें अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। इसके निकालनेवाले कार्यकर्ताओंमें श्रीयुत हरिभाऊजी उपाध्याय, क्षेमानन्दजी राहत, श्रीनाथजी गुप्ता और वैजनाथजी महोदयके नाम उल्लेखनीय हैं।

स्व० कुंवर दुलीचन्दजी सोनी

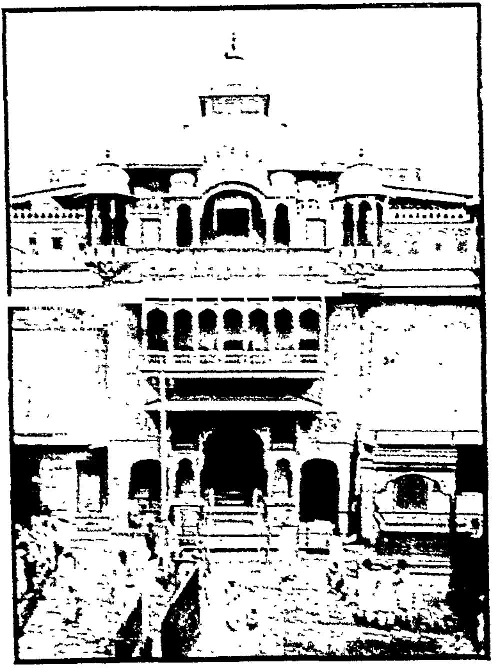

जैन मन्दिर (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

नसियां (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

अजमेर आकर रहने लगे। आप मध्यम स्थितिके पुरुष थे। मगर थे बड़े चतुर, साहसी तथा व्यापार दक्ष। सबसे पहिले आपने उमरावतीमें आकर राजाबहादुर शिवलाल मोतीलालके यहां मुनीमात की। अपनी चतुराई तथा योग्यता के बलसे आपने शीघ्रही १५ दुकानोंके ऊपर प्रधान मुनीमोंका पद प्राप्त कर लिया। कुछ समय पश्चात् आप बम्बई आये। इस समय बम्बईमें राजा शिवलाल मोतीलालका कार्य दूसरेके साझेमें चलता था। आपने अपनेही हाथोंसे राजा साहबकी स्वतंत्र दुकान स्थापित की। यहांपर कई वर्षोंतक आप प्रधान मुनीम रहे, वृद्धावस्थातक आप यही काम करते रहे। पश्चात् शेष आयु व्यतीत करनेके लिये अजमेर चले गये। आपके गुलाबचंदजी नामक पुत्रका असमय हीमें देहावसान होगया था। इसलिये आप सीकरके समीपवर्ती गांवसे श्री दिलसुखरायजीको गोदी लाये। सेठ दिलसुखरायजीने अपने हाथोंसे संवत १९२७ में बम्बईकी वर्तमान दुकानको स्थापित किया। तथा उसे विशेष तरक्की दी। आपने पुष्करमें २८ हजारकी लागत से एक धर्मशाला बनवाई वहां अभी भी सदावर्तजारी है। तथा अपनी जन्मभूमिमें ८ हजारकी लागतसे एक धर्मशाला बनवाई। आपके कोई सन्तान नहीं थी। इसलिये आपने अपने भतीजे श्री रामकिशनजी ओझाको गोद लिया। वर्तमानमें आपही दुकानके कार्यको सम्हालते हैं। आप बड़े उत्साहसे जातिसेवा तथा समाज सेवामें भागलेते है। अजमेरके दानी विद्यालयका संचालन भी आपही करते हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अजमेर—मेसर्स तिलोकचंद दिलसुखराय यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैंकिंग व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स तिलोकचंद दिलसुखराय, कालबादेवी—यहां गल्ला, रुई, बैंकिंग तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हमीरमल नौरतनमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रीयां (मारवाड़) है उस स्थानपर इस खानदानके पुरुषोंका इतना प्रभाव था कि आजतक भी वह गांव सेठोंकी रीयां नामसे प्रख्यात है। करीब १३५ वर्ष पूर्व यह खानदान यहां आया। इस घरानेके पूर्व पुरुष सेठ जीवनदासजी व गोवर्द्धन दासजीको जोधपुर दरबारसे ताजीम मिलती रही। एवं समय २ पर दरबारकी ओरसे सिरोपाव भेटकर उनका सम्मान किया जाता था। उनके पश्चात रामदासजी, रुगनाथदासजी हमीरमलजी एव चांदमलजी हुए। सेठ चांदमलजीको जोधपुर एव उदयपुर दरबारसे ताजीम मिलती रही एवं समय २ पर सिरोपाव भी मिले। आपको गवर्नमेंटने "रायसाहब"की पदवीसे सुशोभित किया था मतलब यह कि हमेशासे यह घराना बहुत आलीशान एवं प्रतिष्ठित रहा है। सेठ चांदमलजी अजमेरके आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे थे। आपकी धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रुचि थी

(२) बी० बी० एण्ड सी० आई० लोको वर्कशाप अजमेर—यह बी० बी० सी० आई० रेलवेके मीटर गेज सेक्शनका बहुत बड़ा वर्क शाप है। इसमें ६०५५ मनुष्य काम करते हैं।

(३) बी० बी० सी० आई० रेलवे केरिज एण्ड वेगनवर्कशाप—इस वृहद् कारखानेमें ५१६५ व्यक्ति कार्य्य करते हैं।

(४) बी० बी० सी० आई० रेलवे पावर हाऊस अजमेर—इस पावर हाउसके द्वारा रेलवे स्टेशन, ऑडिट आफिस इत्यादि रेलवेसे सम्बन्ध रखनेवाले सब स्थानोंपर लाइट तथा फेन पहुंचाये जाते हैं। इसमें २७० व्यक्ति कार्य्य करते हैं।

(५) बी० बी० सी० आई० टिकिट प्रिंटिंग वर्क्स—इसमें रेलवे टिकिट प्रिंट होते हैं। इसमें ५२ आदमी काम करते हैं।

इसके अतिरिक्त अजमेरमें गोटेकी इण्डस्ट्रीज बहुत हैं। इनमें सभी प्रकारका गोटा तैयार होता होता है। चांदीके वरक भी यहां बहुत और अच्छे बनते हैं। इसके अतिरिक्त यहां की बिस्कीट फेक्टरी और नूर सोप फेक्टरीमें साबुन भी बहुत अच्छा तैयार होता है।

चांदी-सोनेके व्यापारी

मेसर्स रामलाल लूणिया

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान फलोदी (मारवाड़) है। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ कस्तूरचन्दजी और केशरीचन्दजी यहां आये। उस समय इस फर्मपर केशरीचन्द दीपचन्दके नामसे ऊनी कपड़ा तथा अफीमके ठेकेका व्यवसाय होता था। वर्तमान दूकान सेठ रामलालजीने करीब २० वर्षों पूर्व स्थापित की तथा सोने चांदीके काममें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपकी फर्मके मार्फत रेशमी अरण्डियां, रेशमी धोतियाँ रेशमी कोटिंग थान जो अजमेरके प्रधान सुंदर वस्त्र समझे जाते हैं, बनवाये जाते हैं, और अच्छी तादादमें बाहर गांव भेजे जाते हैं। यह माल बाहर बहुत प्रतिष्ठाके साथ विकता है। इसकी सुंदरताको ग्राहक विशेष पसंद करते हैं। यहां चांदी सोनेके व्यापारियोंमें यह दुकान बहुत बड़ी समझी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—रामलाल लूणियां, नया बाजार—यहां चांदी सोने और अरंडियोंका व्यवसाय होता है।

इस फर्मकी कई स्थानोंपर एजंसियां हैं—

गोटेके व्यापारी

मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चन्द्रसिंहजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपका निवास स्थान अजमेर है। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। यहां इस फर्मके संस्थापक सेठ हमीरमलजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की भी हुई। आपके पश्चात् आपके छोटे पुत्र सेठ छगनसिंहजी एवम् मगनसिंहजीने इस फर्मकी और भी उन्नति की। वर्तमानमें आपके पुत्र इस फर्मके मालिक हैं। करीब ६ साल हुए सेठ चन्द्रसिंहजीने एक ब्रांच बम्बईमें खोली है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्री० सेठ कानमलजी लोढ़ा (चंदनमल कानमल)

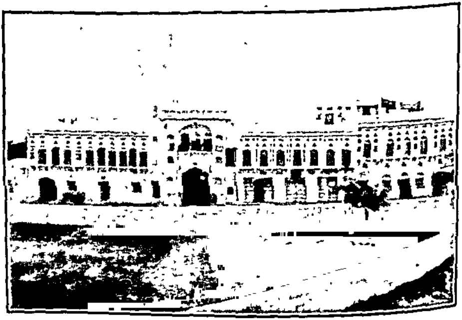

बिल्डिंग (कानमलजी लोढ़ा) अजमेर

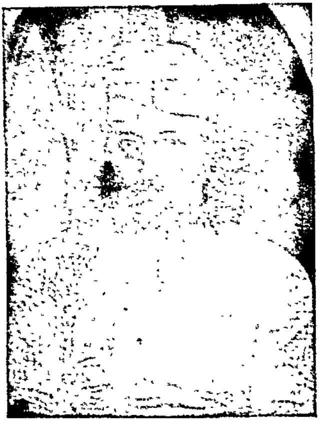

स्व० सेठ कानमलजी लूणिया (डायमण्ड जु० प्रेस) अजमेर

सेठ रामलालजी लूणिया अजमेर

सेठ अमरचन्दजी शारदा (हंसराज अमरचन्द) अजमेर

सेठ घेवरचन्दजी चोपड़ा अजमेर

रा० ब० सेठ बिरदमलजी लोढ़ा, अजमेर

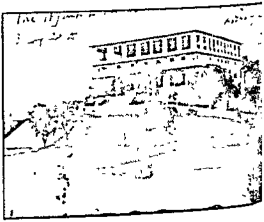

रेसिडेन्सी बिल्डिंग (लोढ़ा परिवार) अजमेर

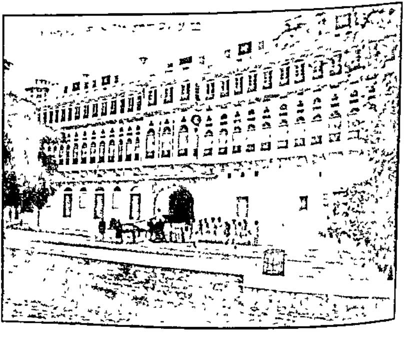

गेस्ट हाउस (लोढ़ा परिवार) अजमेर

लखमीचंदके यहां मुनीमी करते थे। इस दूकानको सेठ रामनाथजी तथा इनके पुत्र रामनारायणजीने विशेष उत्तेजन दिया।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स रामनाथ रामनारायण, नयाबाजार—यहां पक्के गोटे किनारीका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रताप गोपीकिशन

इस फर्मके मालिक मूंडवा मारवाड़के निवासी हैं। आपकी जाति माहेश्वरी है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी हैं। आपका पूरा विवरण मारवाड़ मूंडवाके पोर्शनमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स शिवप्रताप गोपीकिशन—यहां पक्के गोटेका थोक व्यापार होता है।

अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नयाबाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।

अजमेर—रामनाथ शिवप्रताप नयाबाजार—यहां बेंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रंगीन कपड़ा एवम् कमीशन एजंसीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द घेवरचन्द चोपड़ा

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ घेवरचंदजी चोपड़ा हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक आप ही हैं। आपकी प्रथमावस्था बहुत मामूली थी। यहांतककि आप सिर्फ ५) मासिकपर नौकरी करते थे। धीरे २ आपने अपनी सज्जनतासे अपनी स्वतंत्र दुकान स्थापित की और इसमें आशातीत सफलता प्राप्त की। आपने अपनी ही कमाईसे अजमेरकी प्रसिद्ध हवेलियोंमेंसे एक मनैयोंकी हवेली खरीद की है। आपके २ पुत्र हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स अगरचन्द घेवरचन्द चोपड़ा—यहां सब प्रकारके फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है। राजपूतानेके बहुतसे रजवाड़े आपके यहांसे कपड़ा खरीद करते हैं।

अजमेर—मेसर्स रामचन्द्र घेवरचन्द, नयाबाजार—यहां भी कपड़ेका व्यवसाय होता है। इस दुकानमें सेठ रामचन्द्रजीका साझा है।

यहांका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप—यहां बैङ्किग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स चन्दनमल कानमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अजमेर ही में है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ कानमलजी लोढ़ा हैं। आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ में अजमेर ही में हुआ था। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत चन्दनमल था। अजमेरमें जितनी प्रतिष्ठित फर्में हैं उनमें आपकी फर्मका स्थान बहुत आगे है। केवल अजमेर ही में नहीं प्रत्युत सारे ओसवाल समाजमें लोढ़ा परिवारका नाम बहुत अग्रगण्य और सम्माननीय माना जाता है। श्रीयुत कानमलजी बड़े ही सज्जन एवं योग्य पुरुष हैं। आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर मानमलजी हैं। आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स चन्दनमल कानमल इस दूकानपर जमींदारी लेन-देन बैङ्किग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चन्दनमल कानमल १७८ हरिसनरोड-इस दूकानपर जूट बेलर्स एण्ड ... का काम होता है। इस दूकानमें वर्किंग पार्टनर श्रीयुत मूलचन्दजी सेठिया और ... सेठिया सुजानगढ़ निवासी हैं।

मेसर्स जवाहरलाल गम्भीरमल सोनी

इस प्रसिद्ध फर्मके संचालक खंडेलवाल श्रावक दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना अजमेरमें विक्रम सम्वत् १८६० में हुई। इसके संस्थापक स्वर्गवासी सेठ जवाहिरमलजी थे, उन्हींके समयसे इस फर्मकी श्रीवृद्धि शुरू हुई। आपके तीन पुत्र थे, सबसे बड़े सेठ गंभीरमलजी दूसरे सेठ मूलचंदजी और तीसरे सुगनचंदजी। सेठ जवाहिरमलजी बड़े धर्मात्मा व्यापारदक्ष व्यक्ति थे। आपहीके धर्मप्रेमने श्री दिगम्बर जैन चैत्यालयका निर्माण सम्वत् १८... किया, जो एक दर्शनीय मंदिर है। सेठ गंभीरमलजीका देहान्त बाल्यावस्थामें ही होगया था। सुगनचंदजी साहब भी विवाहके कुछ समय बादही स्वर्गवासी होगये।

श्री सेठ मूलचन्दजी बाल्यावस्थासे ही विद्याके धर्मके और व्यापारके बड़े प्रेमी एवं ... थे। जब सम्वत् १९१४में भारतवर्षमें गदर हुआ उस समय आपने गवर्नमेण्टको बहुत बड़ी रकम रुपया कर्ज दिया था आपकी इस सेवासे गवर्नमेण्ट बहुत संतुष्ट हुई।

सेठ मूलचन्दजी बड़े प्रतापी हुए और अपनी व्यापार कुशलतासे आपने अजमेर ... राजपूताने व भारतके मुख्य २ नगरोंमें भी ख्याति प्राप्तकी। यह वंश आपहीके नामसे ... आपने शहरके बाहर करौलीके पाषाणका अद्वितीय श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट चैत्यालय ...

श्रीयुत कुँवर भागचन्दजी बड़े योग्य, साहित्य प्रेमी और सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। आपका एक प्राइवेट पुस्तकालय भी है।

इस कुटुम्बकी धार्मिक कार्योंकी ओर बड़ी रुचि है अजमेरमें आपकी निम्नाङ्कित सार्वजनिक संस्थाएं हैं।

शहरका श्री दिगम्बर जैन मंदिर, व शहरके बाहरकी श्री जैन नासियां जो बहुत सुंदर व दर्शनीय हैं, और गहरी लागतके बने हुए हैं जिनकी शिल्प पटुता व स्वर्ण खचित काम देखते ही बनता है।

श्री रा० ब० सेठ नेमीचन्दजी स्मारक दिगम्बर जैन धर्मशाला

भाग्य मातेश्वरी श्री दिगम्बर जैन कन्या पाठशाला व महावीर दिगम्बर जैन महाविद्यालय इत्यादि

व्यापारिक परिचय—

हेड आफिस अजमेर—सेठ जवाहरमल गम्भीरमल अजमेर (T. A. "Pearl") इस कोठीपर बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

ब्रांचेज

बम्बई—सेठ जवाहरमल मूलचंद कालबादेवी रोड बम्बई (T. A. Juhar") इस कोठी पर भी बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है इसके अतिरिक्त मोरेका अत्था भी आपके यहां है मेसर्स मूलचन्द नेमीचंदके नामसे यहांपर पीस गुड्सका इम्पोर्ट भी होता है।

कलकत्ता—सेठ जवाहरमल गंभीरमल नं ३०।२ कलाकारस्ट्रीट (T. A. Metallique) इस फर्मपर बैंकिंग बिजिनेसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी, कारोनेटीड शीट्स, पीसगुड्स और जापानगुड्सका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आगरा, जैपुर, जोधपुर, उदयपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, नसीराबाद केकड़ी, मंदसोर, खंडवा, शाहपुरा, कोटा, ग्वालियर मुरैना आदि २ व्यापारिक स्थानोंमें आपकी दुकानें हैं। सब मिलाकर आपकी दुकानोंकी संख्या करीब २० के है। इन सभी स्थानोंमें आप प्रथम श्रेणीके बेंकरोंमें माने जाते हैं। धौलपुर, भरतपुर, करौली आदि रियासतोंमें आप स्टेट बेंकर भी हैं मंदसोर तथा खंडवामें आपके एक एक जिनिंग फेक्टरी और एक एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

श्री० रा० ब० सेठ टीकमचन्दजी भागचन्दके नामसे बी० बी० एण्ड सी आई रेल्वे मारवाड़ व जोधपुर रेल्वेकी ट्रेजररी भी आपके पास है।

मेसर्स तिलोकचन्द दिलसुखराय

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री दलसुखरायजी चोधरी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके खानदानका मूल निवास नेहरा जोधपुरमें है। आपके द्वारा श्री तिलोकचन्दजी पहिले पहिल अजमेर

श्रीयुत कानमलजी के पुत्र हैं। आप तीन भाई हैं। सबसे बड़े श्रीयुत जवाहरमलजी जोधपुर स्टेटकी तरफसे वकील हैं। आप म्युनिसिपेलिटीके मेम्बर भी हैं। दूसरे श्रीयुत ऊमरावमलजी हैं। आप तीनों ही बड़े सज्जन, योग्य, नम्र, और देशभक्त हैं। सामाजिक कार्य्योंमें भी आप बड़े अग्रगण्य रहते हैं।

आपके जुबिली प्रेसमें सब प्रकारकी हिन्दी अंग्रेजी छपाईका काम होता है।

मेसर्स के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स

इस फर्मको स्थापित हुए करीब २७ वर्ष हुए। इसके स्थापक मेहता पुरुषोत्तमदासजी थे। वर्तमानमें इसका संचालन मेहता जेठालालजी केशवलालजी, और माणिकलालजी करते हैं। आपका राजपूतानेके कई रईसोंके साथ लेनदेन होता है। आपकी एक दूकान बड़वानीमें भी थी, पर वह उठा दी गई। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स—यहां सब प्रकारके फेन्सी सामानका जनरल मरचेंट्स के रूपमें व्यवसाय होता है। अजमेरमें यह दुकान अपने बिजिनेसमें अच्छी समझी जाती है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (अजमेर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह लोढ़ा नयाबाजार
,, चन्दनमल कानमल लोढ़ा
,, चम्पालाल रामस्वरूप
,, जौहारमल गंभीरमल
,, बिरदीचन्द गुलाबचंद संचेती लाखन कोठरी
,, हमीरमल नौरतनमल मोती कटला
,, हरसुखराय अमोलकचन्द

गोटेके व्यापारी

मेसर्स कल्यानमल केशरमल नयाबाजार
,, किशनलाल लढ़ा ,,
,, खानूलाल मोहनलाल ,,

मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह नयाबाजार
,, धनरूपमल आनन्दमल ,,
,, नेमीचन्दजी सेठी ,,
,, पन्नालाल हरकचन्द ,,
,, फतेमल चांदकरण ,,
,, पन्नालाल प्रेमसुखदास ,,
,, बलभद्र पोखरलाल ,,
,, मदनचन्द पूनमचन्द ,,
,, राजमल सोभागमल ,,
,, राधाकिशन बद्रीनारायण ,,
,, रामनाथ रामनारायण ,,
,, सुखलाल खानूलाल ,,
,, सुगनचन्द लक्ष्मीचन्द ,,
,, शिवप्रताप गोपीकिशन ,,
,, हरनारायण पुरुषोत्तम ,,

श्रीयुत कुँवर भागचन्दजी बड़े योग्य, साहित्य प्रेमी और सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। आपका एक प्राइवेट पुस्तकालय भी है।

इस कुटुम्बकी धार्मिक कार्योंकी ओर बड़ी रुचि है अजमेरमें आपकी निम्नाङ्कित सार्वजनिक संस्थाएं हैं।

शहरका श्री दिगम्बर जैन मंदिर, व शहरके बाहरकी श्री जैन नासियां जो बहुत सुंदर व दर्शनीय है, और गहरी लागतके बने हुए हैं जिनकी शिल्प पटुता व स्वर्ण खचित काम देखते ही बनता है।

श्री रा० ब० सेठ नेमीचन्दजी स्मारक दिगम्बर जैन धर्मशाला

भाग्य मातेश्वरी श्री दिगम्बर जैन कन्या पाठशाला व महावीर दिगम्बर जैन महाविद्यालय इत्यादि

व्यपारिक परिचय—

हेड ऑफिस अजमेर—सेठ जवाहरमल गम्भीरमल अजमेर (T. A. "Pearl") इस कोठीपर बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

ब्रांचेस

बम्बई—सेठ जवाहरमल मूलचंद कालबादेवी रोड बम्बई (T. A. Juhar") इस कोठी पर भी बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है इसके अतिरिक्त जीरेका अरबा भी आपके यहां है मेसर्स मूलचन्द नेमीचंदके नामसे यहांपर पीस गुड्सका इम्पोर्ट भी होता है।

कलकत्ता—सेठ जवाहरमल गंभीरमल नं ३०।२ क्लाइवस्ट्रीट (T. A. Metallique) इस फर्मपर बैंकिग बिजिनेसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी, कारोगेटीट शीट्स, पीसगुड्स और जावाशुगरका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आगरा, जैपुर, जोधपुर, उदयपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, नसीराबाद केकड़ी, मंदसोर, खंडवा, शाहपुरा, कोटा, ग्वालियर मुरैना आदि २ व्यापारिक स्थानोंमें आपकी दुकानें हैं। सब मिलाकर आपकी दुकानोंकी संख्या करीब २० के है। इन सभी स्थानोंमें आप प्रथम श्रेणीके बैंकरोंमें माने जाते हैं। धौलपुर, भरतपुर, करौली आदि रियासतोंमें आप स्टेट ट्रेझरर भी हैं मंदसोर तथा खंडवामें आपके एक एक जिनिंग फेक्टरी और एक एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

श्री० रा० ब० सेठ टीकमचन्दजी भागचन्दके नामसे बी० बी० एण्ड सी आई रेलवे आर० एम० व जोधपुर रेल्वेकी ट्रेझरशी भी आपके पास है।

मेसर्स तिलोकचन्द दिलसुखराय

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रामरिछपालजी श्रीया हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके खानदानका मूल निवास मेड़ता जोधपुरमें है। आपके दादा श्री तिलोकचन्दजी पहिले पहिल मेड़ताते

[illegible]

गुड़ शक्कर घीके व्यापारी

[illegible]

कपड़ेके व्यापारी

[illegible]

रूईके व्यापारी

[illegible]

लोहेके व्यापारी

[illegible]

चमड़ा मर्चेण्ट्स

[illegible]

आर्म्स मर्चेण्ट्स

[illegible]

होटल

[illegible]

तार ऑफिस

[illegible]

स्व०सेठ घनश्यामदासजी मुणोत (हमीरमल नौरतनमल) अजमेर

श्री० सेठ नौरतनमलजी (ह०।नौ०) अ

ब्यावर

BEAWAR

आपके परिश्रमसे ही नयाबाजारकी प्याऊ, जिसके उठानेके लिये कमिश्नर साहबका हुक्म होगया था कायम रही। आपहीके परिश्रमसे पाबूगढ़ पर हिंदू समाजका कब्जा रहा। १६।७ वर्ष पूर्व यहां जो श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंस हुई थी उसकी सफलतामें आपने दत्तचित्त होकर परिश्रम किया था सेठ चांदमलजीके चार पुत्रोंमें सबसे बड़े घनश्यामदासजी थे। सेठ चांदमलजीके देहावसानके समय आपकी वय ३० वर्षकी थी। श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंसके समय आपने भी अपने पिताजीके साथ बहुत दिलचस्पीसे कार्य किया था। आपका देहावसान संवत १६७१ में हुआ। आपके २ पुत्र हैं श्री नौरतनमलजी तथा श्री शिवदासजी। श्री शिवदासजीका देहावसान संवत १६८४ के आसोज मासमें पूनामें हुआ। इस समय इस दूकानका संचालन सेठ नौरतनमलजी करते हैं। आपके पिताजीके देहावसानके समय आपकी वय सिर्फ १८ वर्षकी थी, उस समयसे आप अपने व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। जोधपुर तथा उदयपुर दरबारोंसे आपको ताजीम मिलना बीचमें बन्द हो गयी थी, उसे आपने फिर चालू करायी। आपका विवाह छोटी सादड़ीके मशहूर सेठ नाथूलालजीके यहां हुआ है। आपके छोटे भाईके विवाहके समय कोटा दरबारने आपको अच्छी ताजीम एवं इनाममेंसे सम्मानित किया था। सेठ नौरतनमलजी सुधरे हुए विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आपकी निम्नलिखित नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें चलरही हैं।

अजमेर—मेसर्स हमीरमल नौरतनमल—इस दूकानपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं आढ़तका काम होता है। यहां आपका हेड आफिस है

बम्बई—राय सेठ चांदमल घनश्यामदास कालबा देवी रोड—इस दूकानपर भी बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं आढ़तका काम होता है।

पूना—राय सेठ चांदमल घनश्यामदास रविवार पेठ—इस दूकानपर पेशवाओंके समयसे व्यवसायका काम होता है।

भोलवाड़ा (उदयपुर)—सेठ घनश्यामदास शिवदास इस दूकानपर रुईकी खरीद फरोख्त एवं आढ़त का काम होता है। यहां भी आपकी जायदाद है।

सांभर लेक—मेसर्स हमीरमल शिवराम—यहां नमककी आढ़तका काम होता है तथा नमककी गवर्नमेंट ट्रेजरी आपहीके सिपुर्द है। आप सांभर तथा पचभद्राकी नमककी खानोंके गवर्नमेंट खजानेके ट्रेजरर भी हैं।

आजमगढ़ (यू० पी०) हमीरमल नौरतनमल—यहां शक्करकी आढ़तका काम होता है तथा यहां आपके जमींदारीके गांव हैं इनकी मालगुजारीका भी काम होता है।

मसूदा (इनोद) पो० पो० राय सेठ चांदमल—यह गांव आपको जागीरीका है। यहां इसकी जमींदारी वसूल करनेका काम होता है।

ब्यावर

— :००:—

ब्यावर बी०बी०एण्ड०सी० आईके मिटरगेज की मेनलाइनपर बसा हुआ एक सुन्दर शहर है। इसका व्यापार राजपूतानेभरके शहरोंसे बढ़ता आगे है। इस शहरको करीब १०० वर्ष पूर्व कर्नल डिक्सन साहबने बसाया था। इसकी बसावट बहुत सुन्दर, साफ-सुथरी और तरतीबवार है। चारों ओर परकोटेसे घिरा हुआ यह शहर बहुत सुन्दर मालूम होता है। ब्यावरके पाससे गुजरते हुए मुसाफिरोंको ट्रेनमें बैठे ही बैठे यहांके उन्नत व्यापारकी कल्पना होने लगती है। क्योंकि जिस दिशामें उनकी निगाह पड़ती है, उधर ही उन्हें कारखानोंकी चिमनियाँ ही चिमनियाँ दिखलाई पड़ती हैं। इस छोटेसे शहरमें इतनी चिमनियोंको देखकर मालूम पड़ता है कि यहां व्यापार उमड़ा पड़ता है। यहांकी एक्टीविटी देखते ही बनती है।

यहां कई प्रकारका व्यापार होता है। जिसमेंसे ऊन, रूई, गल्ला, कपड़ा आदिका व्यापार विशेषरूपसे होता है। वायदेके सौदेका जोरशोर भी यहां कम नहीं है। भारतवर्षमें बहुत कम ऐसे शहर होंगे,जहां ब्यावरकी तरह कई प्रकारके वायदेके सौदे होते होंगे।

ब्यावर शहरकी आबादी करीब २५००० है। यहांके व्यापारियोंको बेङ्किंगकी सुविधा भी प्राप्त है। यहांसे टाडगढ़, मसूदा, अजमेर आदि स्थानोंमें मोटर रन करती है। अजमेरसे ट्रेन भी यहां आती है। कुछ स्पेशल ट्रेनें भी यहां और अजमेरके बीचमें रन करती हैं। यहांसे करीब ४५ मीलकी दूरीपर प्रसिद्ध हिस्टोरियन कर्नल टाड साहबके नामपर एक टाडगढ़ बसा हुआ है। यह अजमेर मेरवाड़ाका एक सेक्टर है। यहांसे कुछ ही दूरीपर तीन सुन्दर तालाब अपने प्राकृतिक सौन्दर्यको लिए हुए स्थित हैं।

यहां व्यापारियोंकी उन्नतिके लिए तिजारती चेम्बर आफ् व्यापारियान और व्यापारिक पंचायत चेम्बर नामक दो व्यापारिक संस्थाएं स्थापित हैं। इनका मुख्य उद्देश्य व्यापारकी तरक्की और व्यापारियोंके मार्गमें आनेवाली कठिनाइयोंको दूर करना है।

ब्यावरकी व्यापारिक गतिविधिका विवरण आगे दिया जायगा।

अजमेर—मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह नया बाजार,--यहां गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह, बद्रामका झाड़ कालबादेवी रोड—यहां हुण्डी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स फतेमल चांदकरण

इस फर्मके मालिक दो व्यक्ति हैं। सेठ फतेमलजी एवम् श्रीयुत रामविलासजी। आप दोनोंका इसमें साझा है, फतेमलजी ओसवाल जातिके और रामविलासजी माहेश्वरी जातिके हैं। कुंवर चांदकरणजीआपके पुत्र हैं। सेठ रामविलासने अपने पुत्रहीके नामसे इस दुकानमें साझा डाला है। आपके चांदकरणजीके अतिरिक्त ३ पुत्र और हैं। आप चारों पुत्र शिक्षित सज्जन हैं। कुंवर चांदकरणजीका नाम जनता भलीभांति जानती है। आपका महात्मा गांधीजी द्वारा चलाए हुए असहयोग आन्दोलनमें बहुत भाग रहा है। आर्य समाजके भी आप नेता हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स फतेमल चांदकरण, नया बाजार - यहां पक्के गोटे किनारीका थोक व्यापार होता है। आपकी दुकान यहां मशहूर गोटेके व्यापारियोंमें समझी जाती है।

मेसर्स पन्नालाल प्रेमसुख लोढ़ा

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पन्नालालजी हैं। आपहीने इस फर्मका स्थापन किया है पहले आपकी स्थिति बहुत मामूली थी। नौकरी करते २ आपने अपनी बुद्धिमानीसे बाजारमें बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। आप सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। आपके विचार बड़े गंभीर एवं संग्रहणीय होते हैं। व्यापारिक विषयके आप बहुत अच्छे जानकार हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स पन्नालाल प्रेमसुख लोढ़ा; नयाबाजार--आपके यहां पक्का गोटा किनारीका थोक तथा खुदरा व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ रामनारायण

आपकी खानदान आदि निवासी मेड़ता (मारवाड़) की है। आप अग्रवाल जातिके वैश्य हैं। यह दुकान संवत् १९५८ में सेठ रामनाथजीने स्थापित की। आप इसके पहिले सेठ कस्तूरचंद

सरकारने रायसाहबकी पदवी एवं सन १९२७ में रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। सेठ कुन्दनमलजी वर्तमानमें स्थानीय ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। यहांकी महालक्ष्मी मिल आपहीके द्वारा स्थापित हुई है। उसमें करीब आधा हिस्सा आपका है। शेषमें दूसरे हिस्से हैं। आपने अपने शेअरोंके १ लक्ष २२ हजार ८०० रुपयोंके शेअरोंका मुनाफा शुभ कार्योंमें लगानेका संकल्प कर रक्खा है। इसके अतिरिक्त आपने कई बड़ी २ रकमें धार्मिक कार्योंमें लगाई हैं आपने अपनी मिलमें चर्बीका व्यवहार करना बंद कर दिया है इसके लिये आपको अनेक प्रतिष्ठित जगहोंसे बधाई पत्र मिले हैं। आपने देशी मिलोंको नोटिस द्वारा सूचित किया है, कि वे भी अपनी २ मिलोंमें चर्बीका व्यवहार बन्द करें

अप्पाजीराव कॉटन मिलकी ओरसे आपके यहां चर्बीकी जगह केमिकल सॉइजसे काम लेनेकी प्रथा सीखनेके लिये एक वीविंग मास्टर आये थे। एवं उन्हें इस कार्यको सीखकर बहुत प्रसन्नता हुई। इसके लिये आपको वहांसे प्रमाण पत्र मिला है। आपका खयाल है कि चर्बीकी जगह आपकी मिलमें बनाये हुए केमिकल सॉइजसे बहुत अच्छा काम चल सकता है तथा कपड़ेकी मजबूती एवं क्वालिटीमें भी कोई फरक नहीं आता।

पहिले यहांके व्यापारी, ऊनके केवल फकत बंधाकर बम्बई और वहांसे पक्कीगांठ द्वारा विलायत भेजते थे। सर्वप्रथम आपने ऊनका क्लीनिंग (साफ करना) वर्क यहां स्थापित कर यहीं गांठ बंधानेकी प्रथा प्रचलित की। कहनेका तात्पर्य यह कि ब्यावरमें ऊनके व्यवसायके आप सबसे आगेवान एवं व्यवसाय कुशल व्यापारी माने जारहे हैं। आपने इस व्यवसायमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की है इस समय आपकी फर्मपर खास व्यापार ऊनका होता है। सेठ कुंदनमलजी महालक्ष्मी मिलके मैनेजिंग एजंट्स सेक्रेटरी ट्रेझरर हैं आपके पुत्र कुंवर लालचन्दजी महालक्ष्मी मिलके डायरेक्टर तथा म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आपके लिये कई समाचार पत्रोंमें बड़े अच्छे प्रशंसा सूचक नोटिस प्रकाशित हुए हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स कुंदनमल लालचन्द कोठारी—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी बैंकिंग तथा ऊनका व्यवसाय होता है। इस फर्मके द्वारा ऊन डायरेक्ट विलायत भेजी जाती है इसके अतिरिक्त यह फर्म महालक्ष्मी मिलकी सेक्रेटरी ट्रेझरर और एजन्ट है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खुरजा (यू० पी०) है। इस फर्मको यहां आये करीब ५० वर्ष हुए। पहिले इस फर्मपर—हरसुखराय मनोहरचंदके नामसे रुई व गल्लेका व्यापार होता

मेसर्स हंसराज अमरचंद शारदा

इस फर्मको करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ हंसराजजीने स्थापित की। इसके पूर्व इस परसराफी का व्यापार रामरतन हंसराजके नामसे होता था। सेठ हंसराजजीने इस दूकानको स्थापितकर बहुत उन्नतिपर पहुँचाया। इस दूकानपर खासकर राजपूतानेके बड़े २ रईस एवं जागीरदारोंसे व्यवसाय होता था। सेठ हंसराजजी का देहावसान संवत् १९६६ में हुआ। आपके बाद इस फर्मका संचालन आपके पुत्र सेठ अमरचन्दजी शारदा करते हैं। आप अपने पिताजीके जमाये व्यवसाय-को भली प्रकारसे संचालन कर रहे हैं। तथा पहलेकी तरह ही आज भी इस दूकानपर राज-पूतानेके रईस एवं जागीरदारोंसे लेनदेन होता है। आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकाने हैं।

अजमेर—हंसराज अमरचन्द शारदा नयाबाजार—इस दूकानपर सब प्रकारके कपड़े व सलमा सितारेका व्यवसाय होता है।

अजमेर—राजमल अमरचन्द मदारगेट—इस दूकानके मार्फत पक्का गोटा तैयार कराकर दिसावर भेजनेका काम होता है।

अजमेर—अमरचन्द चांदमल नयाबाजार—इस दूकानपर भी सब प्रकारके कपड़ेका व्यवसाय होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स शिवनारायण श्रीकृष्ण

यह फर्म संवत् १९३६ में स्थापित हुई। इसके स्थापनकर्ता सेठ शिवनारायणजी हैं। पहले इस फर्मपर शिवनारायण गंगारामके नामसे व्यापार होता था। गंगारामजीकी मृत्युके पश्चात् इसका उपरोक्त नाम पड़ा। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ शिवनारायणजी तथा इनके पुत्र श्रीकृष्णजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स शिवनारायण श्रीकृष्ण धानमंडी—इस दुकानपर गल्ले तथा किरानेका थोक व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

---

(१०) भीलवाड़ा (११) कपासन (१२) सनवाड़ (१३) गंगापुर— (१४) किशनगढ़ (१५) गुलाबपुरा (१६) विजयनगर (१७) हांसी—मेसर्स रामस्वरूप मोहनलाल
(१८) जयनगर (दरभंगा)—मोतीलाल मोहनलाल—यहां चांवलका थोक व्यापार होता है।
(१९) बोलपुर (बङ्गाल)—मोतीलाल मोहनलाल—यहां चांवलका थोक व्यापार होता है।
(२०) बर्दवान (बङ्गाल) बोतालाल रामसरनदास—यहां चावलका थोक व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त और भी कई छोटी २ ब्रांचेज है।

इस फर्मके नेतृत्वमें नीचे लिखे स्थानोंपर कारखाने चल रहे हैं।

(१) मैनेजिङ्ग एजंटस् सेक्रेटरी एण्ड ट्रेजरर एडवर्ड मिल्स लिमिटेड ब्यावर
(२) „ „ हेड्रोलिक कॉटन प्रेस कम्पनी ब्यावर
(३) „ „ दी लक्ष्मी कोटन जीनिंग फेक्टरी ब्यावर
(४) „ „ दी वीर कटन प्रेस कम्पनी विजयनगर (अजमेर)
(५) मैनेजिङ्ग डायरेक्टर दी प्रभाकर कॉटन जीनिंग फेक्टरी लिमि० नसीराबाद
(६) मैनेजिंग एजेण्ट दि सरवाड़ काटन जीनिंग फेक्टरी सरवाड़ (अजमेर)
(७) प्रोप्राइटर रामस्वरूप जैन जीनिंग फेक्टरी केकड़ी
(८) मैनेजिंग एजंट दि हेड्रोली काटन प्रेसिंग कम्पनी केकड़ी
(९) „ „ दी हाड़ोती काटन प्रेस कम्पनी हांसी (हिसार)
(१०) प्रोप्राइटर रामस्वरूप मोहनलाल जीनिङ्ग फेक्टरी हांसी (हिसार)
(११) „ मोतीलाल मोहनलाल राइस फेक्टरी जयनगर (दरभंगा)
(१२) „ „ „ राईस फेक्टरी बोलपुर (बंगाल)
(१३) „ बोतालाल रामसरन दास „ „ बर्दवान बंगाल

मेसर्स ठाकुरदास सांवराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पोकरन (जोधपुर स्टेट) है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको ब्यावरमें स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। सेठ सांवराजजी ने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। आपने सन् १८८८-८९ में जब कि राजपूतानेमें किसी भी मिलका अस्तित्व न था, ब्यावरमें दि कृष्णा मिल लि० की स्थापना की थी। सेठ सांवराजजीके पश्चात् इस फर्मका कार्य उनके पुत्र सेठ दामोदरदासजीने सम्हाला। आपके तीन चार पुत्र थे पर किसीके जीवित न रहनेके कारण आपने औपुत्र विट्ठलदासजीको गोद लिया। सेठ दामोदरदासजीका देहावसान संवत् १९७४में हुआ।

[illegible] शर्मा, [illegible]

डा० भगवानदासजी शर्मा [illegible]

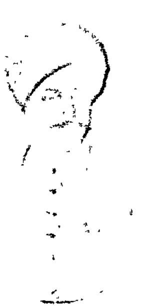

ब्यावर—शाह कुन्दनमल उदयमल—यहां बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी, जमींदारी एवम् आढ़तका काम होता है। प्रसिद्ध योरोपियन कम्पनी फारवस फारवस कैम्पवेल एण्ड कोके आप आढ़तिया हैं।

केकड़ी—शाह उदयमल कल्याणमल—यहां आढ़त व हुंडी चिट्ठीका काम होता है। यहां भी प्रसिद्ध युरोपियन कम्पनी, फारबस और रायलीकी एजंसी है।

मेसर्स धूलचन्द कालूराम कांकरिया

इस फर्मके मालिक बिराठिया (जोधपुर) के रहनेवाले हैं। यहां आये आपको करीब ६० वर्ष हुए। जिस समय इसके स्थापक यहां आये थे उनकी साधारण स्थिति थी। सेठ धूलचन्दजीने वायदेके व्यवसायमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आपहीने इस फर्मको जन्म दिया। आप बड़े सीधे सादे व्यक्ति हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्रीयुत कालूरामजी हैं। आप विद्या-प्रेमी युवक हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

आपकी ओरसे स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनी हुई है। तथा आपने स्थानीय शांतिनाथ जैन पाठशालाको एक मकान मुफ्तमें दिया है। इसी प्रकारके और भी दान धर्म आपकी ओरसे हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स धूलचन्द कालूराम कांकरिया—यहां सराफी तथा वायदेका काम होता है।

फाजिल्का—(पंजाब) मेसर्स गनेशदास धूलचन्द-यहां विशेषकर ऊन और गल्लेका व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स गम्भीरमल लालचंद

इस फर्मके संचालक खास निवासी ब्यावरके हैं। इस फर्मको सेठ गम्भीरमलजीने ही स्थापित किया था। इस दूकानको स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इसके पहिले हिन्दूमल गम्भीरमलके नामसे इस दूकानपर व्यापार होता था। वर्तमानमें इस दूकानका खास व्यापार रुईका है। पहिले यहां ऊनका व्यापार होता था। सेठ गम्भीरमलजीका देहान्त संवत् १९७८ के फाल्गुन बदी ५ को हुआ। इस दूकानके मालिक इस समय सेठ गम्भीरमलजीके लड़के श्रीयुत लालचन्दजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फिलहाल नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

प्रदान की है। आपके औषधालयमें वैसे तो सभी रोगोंकी चिकित्सा उत्तमतासे होती है। परन्तु खासकर संग्रहणी, मन्दाग्नि, क्षय, खांसीके लिये आपका औषधालय विशेष प्रख्यात है। आपके सहयोगी चिकित्सक पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा A. M. A. C. आयुर्वेदभूषण द्वारा एक आयुर्वेदाश्रम स्थापित हुआ है, जिसमें विद्यार्थियोंको लक्ष्य लक्षण पुरस्सरका अध्ययन कराया जाता है। आपके औषधालयमें शास्त्रोक्त विधिसे दवाइयां तैयार की जाती है।

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी अजमेरके एक डाक्टर हैं। आपने कुछ समय सरकारी नौकरीकी। पश्चात् आपने सन् १९१८ में अजमेरमें घरू दवाखाना खोला। आपकी रुचि सार्वजनिक कार्योंकी ओर प्रारम्भसे ही रही है। आपकी सार्वजनिक सेवाओंके फलमें थोड़ेही समयमें आप कई संस्थाओंके उच्चपदपर चुने गये। स्थानीय कांग्रेस कमेटीके आप उपसभापति नियुक्त हुए, एवं स्थानीय नेशनल वालन्टियर कोरके सभापति चुने गये। सन् १९२२ में जनताकी ओरसे आप म्युनिसिपल कमेटीके मेम्बर भी निर्वाचित हुए थे। आपके कार्योंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया और तत्पश्चात् आप मजिस्ट्रेटोंकी बेंच "बी" के वाइस चेयरमैन भी बनाये गये। आप दिगम्बरजैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आप संवत् १९८० में बंगाल आसाम प्रान्तिक दिगम्बर जैन खंडेलवाल महासभाके सभापति भी बनाये गये थे। और उस समय आपको जातिभूषण की पदवी प्राप्त हुई थी आप खण्डेलवाल जैन हितेच्छु नामक साप्ताहिक पत्रके सन् १९२५ से २१ तक सम्पादक रहे। आपका श्री पाटनी मेडिकल हॉलके अलावा श्रीपाटनी प्रिंटिंग प्रेस नामक एक छापाखाना भी है।

गर्ग मेडिकल हाल

इस मेडिकल हालके संचालक श्रीयुत डा० गोपीलालजी गर्ग हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके मेडिकल हालमें दांत और चश्मे बनाये जाते हैं। चश्मे और दांत सम्बन्धी सुन्दर सामान भी आपके यहां मिलता है। पत्थरकी आंखें भी आपके यहां तैयार मिलती है। आपको आंखके कामकी अच्छाईके लिये कई डाक्टरों और स्टेटोंकी ओरसे सार्टिफिकेट प्राप्त हुये हैं।

डायमण्ड जुबिली प्रेस

इस प्रेसके वर्तमान संचालक श्रीयुत हमीरमलजी लूनिया हैं। आप प्रसिद्ध लूनिया वंशके सज्जन हैं। लूनिया वंश अजमेरके ओसवाल समाजमें काफी प्रतिष्ठित है। श्रीयुत हमीरमलजी

सेठ चांदमलजी (जवाहरमल चांदमल) ब्यावर

श्री तोतालालजी (श्रीकृष्ण तोतालाल) ब्यावर

श्री नवालालजी (जवाहरमल चांदमल) ब्यावर

श्री पद्मचन्दजी कोठारी ([illegible]) ब्यावर

मेसर्स हजारीमल जोधराज नयाबाजार
" हीरालाल सुगनचंद "

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द मूलचन्द नयाबाजार
" अमरचन्द चांदमल "
" अमोलकचन्द नौरतनमल "
" कृष्णा मिल क्लाथ शॉप "
" घेवरचन्द चोपड़ा "
" घेवरचन्द रामचन्द्र "
" तनसुख रामजीवन "
" पन्नालाल सोहनलाल "
" बिशनलाल मोतीलाल "
" बालकृष्ण गुजराती "
" भारत व्यापार कम्पनी "
" माणिकलाल मोडूलाल "
" मूलचन्द रामनारायण "
" रामलाल लूनिया (रेशमी परण्डीके व्यापारी)
" राजस्थान प्रांतीय खादी भण्डार पुरानी मंडी
" रामचन्द्र रामविलास
" हंसराज अमरचन्द
" हसन ब्रदर्स क्लाथ एण्ड ड्रापरी मरचेण्ट केसरगंज

रंगीन कपड़े के व्यापारी

मदराज जयनारायण नयाबाजार
रामधन लक्ष्मीनारायण "
लालचन्द मदराज "
हजारीमल छोगालाल "

चांदी सोनेके व्यापारी

किशनलाल बाकलीवाल दरगाबाजार
धानमल बच्छराज पाटनी "
बोधूराम मगनलाल नयाबाजार
मागरमल मूरामल दरगाबाजार
सुवालालजी नयाबाजार
रामलाल लूनिया "
रामनारायण पूसालाल नया बाजार

ज्वेलर्स

महादेवलाल ज्वेलर्स आफ जयपुर, केसरगंज

गल्लेके व्यापारी औरकमीशनएजंट

गनेशदास मांगीलाल धानमण्डी
नारायण लोकचन्द "
फूलचन्द छीतरमल "
बिहारीलाल फकीरचन्द "
बद्रीदास मोडूलाल "
मांगीलाल बालमुकुन्द "
रामधन कल्याणमल "
रोड़मल ताराचन्द "
शिवनारायण श्रीकृष्ण "

रंगके व्यापारी

कन्हैयालाल कस्तूरचन्द नयाबाजार
गजानन्द जानकीलाल "
महम्मदबख्श दाउदबख्श "

डूंगरमलजी करते हैं। इस फर्मके मार्फत यहांकी मिलोंका बना हुआ कपड़ा तथा दूसरा माल अच्छी तादादमें बाहर जाता है। इस समय इस फर्मकी ओरसे नीचे लिखे स्थानोंपर व्यवसाय होता है।

ब्यावर---मेसर्स मोतीलाल डूंगरमल-इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म मिलके कपड़ेका कण्ट्राक्ट भी लेती है।

ब्यावर—डूंगरमल चांदमल--इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। इस फर्ममें आपका हिस्सा है।

मेसर्स शिवकिशन तोतालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सलेमबाद (रियासत-किशनगढ़) है। इस फर्मको यहां सेठ शिवकिशनदासजीने करीब ६७ वर्ष पूर्व स्थापित किया यह फर्म यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें बहुत पुरानी है। सेठ शिवकिशनजीके पश्चात सेठ तोतारामजीने इस दूकानके कारोबारको सम्हाला। आपकी फर्मपर प्रारम्भसेही कपड़ेका व्यवसाय होता चला आया है। इस फर्मके मार्फत यहांकी मिलोंका बना हुआ कपड़ा तथा बाहरका माल बड़ी तादादमें बाहर जाता है श्रीतोतालालजीका देहावसान संवत १९१८ में होगया है आपके बाद इस फर्मका संचालन श्रीलक्ष्मीलालजी तथा श्रीरामपालजी करते हैं। आपकी फर्मपर नीचे लिखा व्यवसाय होता है।

ब्यावर—मेसर्स शिवकिशन तोतालाल—इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यवसाय, मिलोंके कपड़ेके कंट्राक्टका काम तथा कमीशनएजंसीका काम होता है।

ब्यावर—लक्ष्मीनारायण रामपाल--शक्कर गुड़ व ऊनका व्यवसाय तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

ऊनके व्यापारी

मेसर्स चतुरभुज छोगालाल मालपाणी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान मकरेड़ा (अजमेर प्रांत) में है। करीब ६० वर्ष पूर्व इस फर्मको यहां सेठ चतुरभुजजी तथा छोगालालजीने स्थापित किया। इस दुकान पर प्रारम्भसे ही आढ़तका काम होता है। सेठ छोगालालजीका देहान्त हो गया है। इस समय इस दुकानके मालिक श्रीयुत गणेशीलालजी तथा जगन्नाथजी हैं। इस दूकानपर ऊनकी आढ़त तथा सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इस दूकान पर खास व्यवसाय ऊनका है। इस दूकानसे विलायत भी ऊन जाती है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] एण्ड [illegible]

[illegible]

पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मोटर एण्ड साइकल डीलर्स

[illegible]

कराची

[illegible]

मेसर्स श्रीरामदास नन्दकिशोर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान ब्यावर है। इस दुकानको सेठ नन्दकिशोरजीने करीब ४० वर्ष पूर्व स्थापित किया। यहांपर वायदेका सौदा तथा आढ़तका काम होता है। प्रारम्भमें इस फर्मका काम मामूली था। सेठ नन्दकिशोरजीने ही इस दूकानके कामकी तरक्की की। आपका देहावसान संवत १९६६ में हुआ। आपके बाद इस फर्मका संचालन आपके पुत्र श्रीयुत चांदमलजी करते हैं। इस दुकानपर खासकर रुईतथा सब प्रकारके वायदेके सौदे होते हैं। हाजिरका काम भी होता है।

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

मेसर्स कुंदनमल उदयमल शाह
- ,, कुंदनमल लालचन्द रायबहादुर
- ,, चंपालाल रामस्वरूप रायबहादुर
- सेठ चन्दनमल जी ढोढ़ा

मेसर्स छोगालाल मोतीलाल
- ,, दामोदरदास सोवराज राठी
- ,, देवकरणदास रामकुंवार
- , धूलचन्द फाल्हाम कांकरिया
- ,, मालचन्द लालचन्द
- ,, ब्यावर कोआपरेटिव्ह बैंक लिमिटेड
- ,, मुकुन्दचन्द सोहनराज
- ,, रामबक्स सेवतीदास
- ,, लाहमचंद रोपमल
- ,, हीरालाल जगन्नाथ
- ,, चतुर्भुज छोगालाल
- ,, छोगालाल रामकरण
- ,, जेसीराम ताराचन्द (विलसन लेथमके एजंट)
- ,, जवानमल शोभाचन्द
- ,, धनराजमल तुलसीदास (डेविड सासुनके-एजंट)
- ,, धनराज फूलचंद कोठारी
- ,, नंदराम जगन्नाथ
- ,, नरसूमल गोकुलदास
- ,, मायर मिसीम एण्ड को०
- ,, शामजी देवजी (आरवथ नार्थ एण्ड को०)

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स ओटरमल चतुर्भुज
- ,, कल्यानमल तेजराम
- ,, छोटमल बिरानजाल
- ,, जवाहरमल चांदमल
- ,, धूलचन्द प्रेमराज
- ,, फूलचंद मिश्रीमल
- ,, बल्लाल सोभूराम
- ,, मोतीलाल दुरमल

उनके व्यापारी

मेसर्स कुंदनमल लालचन्द राय बहादुर
- ,, गंभीरमल लालचन्द
- ,, गंभीरमल मोतीलाल

न्यू स्वदेशी मिल—यह भी यहांकी एक मिल है। इस मिलमें सिर्फ आरंडिया तैयार होती हैं। यहांसे दूर २ तक ये आरंडियां जाती हैं।

जीनिंग फेक्टरीज

एडवर्ड मिल्स कंपनी जीनिंग फेक्टरी
ब्यावर ट्रेडिङ्ग कम्पनी जीन एण्ड फ्लोअर
ब्यावर कंपनी लिमिटेड जीनिंग फेक्टरी
खींवराज राठी जीनिङ्ग फेक्टरी
न्यू काटन जीनिंग फेक्टरी
लक्ष्मी काटन जीनिंग फेक्टरी
रतनचन्द सिंघेती जीनिंग फेक्टरी
कृष्णा मिल्स जीनिंग फेक्टरी
महालक्ष्मी मिल्स जीनिंग फेक्टरी

प्रेसिंग फेक्टरीज़

न्यू बरार कम्पनी प्रेस लिमिटेड
कॉटन प्रेस ब्यावर
ब्यावर कंपनी लिमिटेड प्रेसिंग फेक्टरी
खींवराज राठी प्रेसिंग फेक्टरी
राजपूताना प्रेस कम्पनी
न्यू कॉटन प्रेसिंग फेक्टरी
वेस्टूस पेटेण्ट प्रेस कम्पनी
युनाईटेड काटन प्रेस कम्पनी
हाइड्रोलिक काटन प्रेस
रतनचन्द सिंघेती प्रेसिंग फेक्टरी
कृष्णा मिल्स प्रेसिंग फेक्टरी
महालक्ष्मी मिल्स प्रेसिंग फेक्टरी

इन कल-कारखानोंके अतिरिक्त लोहेका व्यापार और रंगाई तथा छपाईका काम भी यहां अच्छा होता है। यहां लोहेके बर्तन बनानेवाले लोहारोंके करीब २०० घर हैं। रंगाई तथा छपाईका काम करनेवालोंके भी इतनेही या इससे कुछ ज्यादा घर होंगे। यहांसे ये दोनों ही प्रकारकी वस्तुएं बाहर जाती हैं। चमड़ेका एक्सपोर्ट भी यहांसे होता है।

मिल आनर्स

मेसर्स कुन्दनमल लालचंद कोठारी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नीमाज (जोधपुर-स्टेट) है। आप ओसवाल जैन सज्जन हैं। यह फर्म यहां संवत् १९३४ में आई। इस फर्मको रायबहादुर सेठ कुंदनमल ने स्थापित किया। आपका जन्म संवत १९२७ में हुआ। यह फर्म प्रारम्भमें बहुत छोटे रूपमें थी। सेठ कुन्दनमलजीने इस फर्मको आशातीत उत्तेजन दिया। वर्त्तमानमें इस फर्मका स्थान काफी ऊंचा है। ब्यावरमें सबसे बड़े ऊनके व्यवसायी आपही समझे जाते हैं। आपके द्वारा विलायतसे सर्वप्रथम यहांके ऊनका डायरेक्ट व्यवसाय जारी हुआ। सेठ कुन्दनमलजीको सन् १९२० में राय

मेसर्स दीनदयाल किशनलाल

इस फर्मके मालिक नारनौल (रेवाड़ी) के निवासी हैं। इधर करीब १६।१७ वर्षोंसे यह फर्म मऊ और नसीराबाद छावनीमें व्यापार कर रही है। इस समय इस फर्मका संचालन श्री दीनदयाल-जीके पुत्र श्री किशनलालजी करते हैं। श्रीकिशनलालजी यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने एक रात्रि पाठशाला स्थापितकी है। आप उदयपुरके पार्श्वनाथ विद्यालयके मेम्बर हैं। आपके ३ भाई और हैं जिनमेंसे श्री किशनलालजी मऊ दूकानपर और पार्श्वदासजी नसीराबाद दूकानपर काम करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नसीराबाद--मेसर्स दीनदयाल किशनलाल--यहां मिलिटरी सप्लाईके कंट्राक्टका काम होता है

नसीराबाद--इन्छाराम एण्डको--इसपर गवर्नमेंट ट्रेझरर व मिलटरीका बैंङ्किग वर्क होता है। इसमें आपका साझा है।

मऊ कैम्प--दीनदयाल किशनलाल--यहां आपका एक बैंक है, इसपर जनरल बैंङ्किग वर्क और गवर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स भीमराज छोगालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नसीराबाद राजपूतानेका है। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व हुई थी। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत ताराचन्दजी सेठी हैं। आप सेण्ट्रल कोआपरेटिव बैंकके १५ वर्षोंसे (जबसे बैंक स्थापित हुई) चेअरमेन हैं इसके अतिरिक्त नसीराबाद कैण्टूनमैण्ट बोर्डके आप वाईस चेयरमैन और कन्या पाठशाला के प्रेसिडेण्ट हैं सन् १६१५ में दि० जैन मालवा प्रान्तिक सभाके नैमिमीक अधिवेशनके आप प्रेसिडेण्ट भी रहे थे।

आपके खानदान की दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुचि रही है आपके पिताजी श्रीयुत पन्नालालजीने सन् १९०० में एक बड़ी विशाल और भव्य नशियांका निर्माण करवाया। आपका देहान्त सन् १९०३ में होगया।

श्रीयुत ताराचन्दजी बड़े शिक्षित और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका अंगरेजी ज्ञान भी अच्छा है।

इस फर्मका हेड ऑफिस नसीराबादमें और ब्रांच ऑफिस अजमेरमें है। उक्त दोनों स्थानों-पर, हुंडी, चिट्ठी; फरनीचर, इत्यादिका व्यापार होता है।

[illegible] गनावाला, [illegible]

रा० ब० सेठ कुंदनमलजी कोठारी ([illegible])

[illegible]

[illegible]

जनरल मरचेण्ट्स

...हिरानलाल एण्ड संस
...यिनल ब्रदर्स
...नजी एण्ड संस
...देवजी फतेराम
...गीमल एण्ड संस
...गीमल लक्ष्मीनारायन
...मल कस्तूरचंद

कपड़ेके व्यापारी

...म० गंगदीन एण्ड ब्रदर्स
...त डूंगरसी एण्ड संस
...ट्टानी

कंट्राक्टस

...हिरानलाल

...ी सोनेके व्यापारी

...मल
...चंद

...र्टस कम्पनी

...डेरी—फार्म

...ाफर्स

एस० एल० श्रीकृष्ण गोयल
रघुनाथसिंह फोटोग्राफर
विक्टोरिया फोटो कम्पनी

आइल मर्चेण्ट्स

नाथूराम रामसुख
भीखराम

अभ्रक, मायका, सूतियाभाटा, घीयाभाटा और किरमिचके व्यापारी

अब्दुल गनी
कन्हैयालाल एण्ड को० (मायका)
हिरानलाल लक्ष्मीनारायन
गोवर्द्धनलाल राठी
प्रेमसुख राठी
लक्ष्मीराम मूलचंद

कमीशन एजंट

कनीराम सुखदेव
कस्तूराम रामरिछपाल
गनेशराम कस्तूरचंद
गंगाराम बलदेव
चौथमल पीरामल
धन्नमल मोहनमल
चांदमल घीसालाल
मंगलचंद बहादुरमल
मंगलचन्द मेघराज
डूंगरचन्द आशूराम

... स्थापना हुई है। इस ...

... हैं। इस समय ...

(१) ब्यावर—मेसर्स ...

यह ...

अतिरिक्त इस ...

फैक्टरी भी है।

(२) आकोट (अकोला)—मेसर्स ...

केकड़ीके पास सरवाड़ नामक स्थानमें भी २ जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी है। इस स्थानपर भी केकड़ीके प्रतिष्ठित व्यवसायियोंकी फर्मे हैं। यहांके दीनशा पेस्तनजी काटन प्रेसका मैनेजमेंट मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूपके अधीन है। इस गांवसे भी ऊन तथा जीरा बाहर जाता है।

रूई, ऊन और जीरेके व्यापारी

मेसर्स उदयमल कल्यानमल शाह

इस फर्मके मालिक ब्यावरके निवासी हैं। अतः इस फर्मका पूरा परिचय चित्र सहित वहीं दिया गया है। केकड़ीमें इस दुकान पर साहुकारी लेन देन, हुण्डी चिट्ठी, रूई तथा ऊनका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स रायल्ली ब्रदर्सको केकड़ीमें माल सप्लाय करनेका काम करती है। इस दुकानके मुनीम श्रीनेमीमलजी सिन्धी हैं। आप बड़े उदार और सज्जन व्यक्ति हैं।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप रायबहादुर

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय ब्यावरमें दिया गया है। ब्यावरमें यह फर्म एडवर्ड मिल की मैनेजिंग एजंट है। केकड़ीमें हाइड्रोलिक प्रेसिङ्ग फेक्टरी और और जीनिंग फेक्टरी तथा सरवाड़में दीनशा पेस्तनजी प्रेस नामक फेक्टरियां इस फर्मके मैनेजमेंटमें चल रही हैं। इसके अतिरिक्त यह फर्म रूई, कपास ऊन, जीरा, तथा साहुकारी लेनदेनका भी अच्छा व्यवसाय करती है।

श्री छगनलालजी टोंग्या

श्रीयुत छगनलालजी खास निवासी जहाजपुर (मेवाड़) के हैं। आप सन् १९११ में यहां-पर आये। इसके पूर्व आप जयपुर और उदयपुर स्टेटमें कई जागीरदारोंके कामदार पदपर काम करते रहे। केकड़ी आकर आपने जार्ज जीनिंग फेक्टरी स्थापित की। करीब ३ वर्षोंतक यहांकी फेक्टरियोंमें काम्पीटीशन चला। पश्चात् सब जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीके संचालकोंने मिलकर कुल जीनिङ्ग फेक्टरियोंके नफेमें अपने २ हिस्से रख लिये। और इस प्रकार सहयोगसे कार्य चलने लगा। आप भी उसके एक साझेदार हैं।

श्रीयुत छगनलालजी, असहयोग आन्दोलनके समय स्थानीय कांग्रेस कमेटीके प्रेसिडेन्ट रह चुके हैं। आपने शराब खोरी और बेगारकी भयंकर कुप्रथाको दूर करनेका अच्छा प्रयत्न किया था। वर्तमानमें आपकी दूकानपर रुई, ऊन, जीरा आदिका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय बून्दीमें दिया गया है। इस फर्मकी यहां केकड़ी, सरवाड़ और खारेड़ामें ३ जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी चल रही है। बघेरा जीनिंगका मैनेजमेंट भी यह फर्म करती है। इसके अतिरिक्त यह फर्म सराफी लेन देन, हुण्डी, चिट्ठी, रूई, ऊन, जीरा और जागीरदारोंके साथ लेन देनका व्यवसाय करती है।

जयपुर और जयपुर राज्य

JAIPUR-CITY

&

JAIPUR--STATE

उनके पुत्र श्री सेठ सोहनलालजी रावत आफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट जोधपुर रेल्वे, विष्णुलालजी
व सोभागलालजी रावत एम० ए० एल० एल०बी० वकील हाईकोर्ट ब्यावर करते हैं। इस फ
गिनती यहांके थोक व्यवसायियोंमें हैं। इसकी प्रतिष्ठा यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें अच्छी है
समय इस फर्मपर नीचे लिखा व्यवसाय होता है।

(१) छोटमल बिशनलाल ब्यावर—इसफर्मपर कपड़ेका थोक व्यवसाय व हुंडी चिट्ठी
कमीशन एजन्सीका काम होता है इसके अतिरिक्त सूत,रुई, व मिलके कपड़ेके कंट्राक्ट
काम भी होता है।

(२) भँवरलाल गनपतलाल रावत ब्यावर—इस फर्मपर गुड़,शक्कर,किराना, गल्ला इत्यादि व्या
होता है।

मेसर्स जवाहरमल चांदमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भुसावर (भरतपुर) है। इस फर्मको सेठ जवा
मलजीने ३५ वर्ष पूर्व स्थापित किया। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मपर प्रारम्भ
कपड़ा व कमीशन एजन्सीका काम होता है। सेठ जवाहरमलजीके समयसे ही यह फर्म तरक्की क
जारही है तथा इस समय ब्यावरके अच्छे २ कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है इस फ
मार्फत यहांकी मिलोंका तथा दूसरा सब प्रकारका कपड़ा अच्छी तादादमें बाहर जाता है। से
जवाहरमलजीका देहावसान हुए करीब १२ वर्ष हुए। इस समय इस दूकानका सञ्चालन उनके पु
श्रीयुत चांदमलजी तथा सुवालालजी करते हैं। इस समय इस फर्मका नीचे लिखे स्थानोंपर व्याप
होता है।

ब्यावर - जवाहरमल चांदमल-इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार व कमीशन एजन्सीका काम
होता है।

ब्यावर—डूंगरमल चांदमल – इसफर्मपर भी कपड़ेका थोक व्यापार होता है तथा मिलोंके कपड़े
का कंट्राक्ट भी होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

मेसर्स मोतीलाल डूंगरमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बाजोली (मारवाड़) है। इस फर्मको सेठ मोतीलालजीने
२५ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आप ओसवाल सांकला गौत्रके सज्जन हैं। इस फर्मपर प्रारम्भसे
कपड़ेका व्यवसाय होता है। ब्यावरके कपड़ेके अच्छे व्यवसायियोंमें इस फर्मकी गिनती है।
श्रीयुत सेठ मोतीलालजीका देहावसान संवत १९६९ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन श्रीयु

जयपुर

जयपुरका ऐतिहासिक परिचय

जयपुर राज्यका इतिहास बहुत प्राचीन है। वैदिक कालमें यह प्रान्त मत्स्य देश के नामसे प्रसिद्ध था। उस समय इस प्रांतकी राजधानी वैराट नामक स्थान पर थी जहांपर पांडवोंने अपने वनवासके दिन बिताये थे। इस स्थान पर (वैराटमें) अशोक कालीन तथा उससे भी पहलेके लेख पाये गये हैं।

जिस प्रकार जयपुर प्रांतका इतिहास बहुत प्राचीन है उसी प्रकार जयपुर वंशका इतिहास भी बहुत पुराना है। इस वंश के वंशज सूर्य्यवंशी कछवाह वंशके हैं। इस वंशकी उत्पत्ति महाराज रामचन्द्र के कुशसे बतलायी जाती है। ईसा की दशवीं शताब्दिमें इस वंशमें राजा नल हुए, आपने नर वर शहर बसा कर वहां राज्य किया। इसके पश्चात् आपके वंशज ग्वालियर चले गये। ग्वालियरमें इस वंशने करीब सन् ११६६ तक राज्य किया।

इसी राजवंशमें मंगलराज नामक राजा हुए। इनके छोटे पुत्रका नाम सुमित्र था। जयपुर के वर्तमान कछवाहे इन्हीं सुमित्रके वंशज हैं। सुमित्रके वंशमें क्रमशः मधुब्रह्म, कहान देवानीक ईश्वरी सिंह और इनके पश्चात् सोढदेव हुए। इन सोढदेवके पुत्र दूलहरायका विवाह मोरनके चौहान राजाकी कन्याके साथ हुआ था। दूलहरायने अपने श्वसुरकी सहायतासे दौसा नामक प्रान्त बड़गूजरोंसे छीन लिया और वहां पर नवीन राज्यकी स्थापना की। इन्होंने मीना लोगोंसे आमेर जीत लिया और उसीको अपनी राजधानी बनाया। इनके पश्चात् इनके वंशमें पंजुन, उदयकरण, बिहारीमलजी, भगवान दासजी और उनके पश्चात् इतिहास प्रसिद्ध राजा मानसिंहजी हुए। इन मानसिंहजीने अपने कई कार्य्योंसे इतिहासमें खूब नाम कमाया। आपके विषयमें कहावत है कि:—

बलि बोई कीरति लता, करण कियो द्वैपात।
सींच्यो मान महीप ने जब देखी कुम्हलात॥

मानसिंहके पश्चात भावसिंहजी, जगसिंहजी और महाराजा जयसिंहजी इत्यादि प्रसिद्ध व्यक्ति हुए।

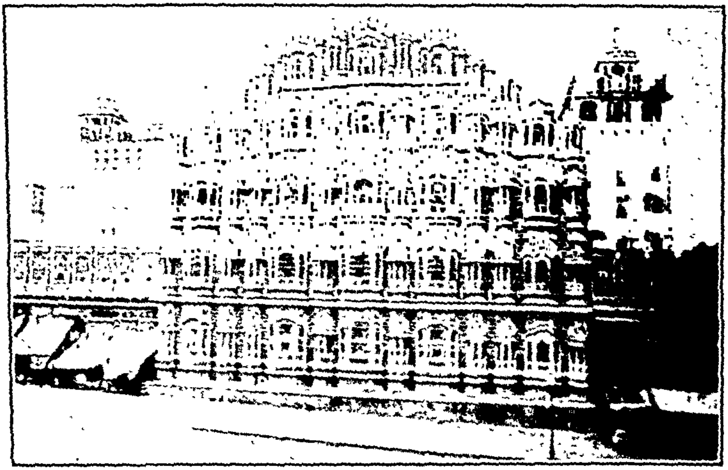

हवामहल, जैपुर

[illegible], जैपुर

इस समय आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—चतुरभुज छोगालाल, रुई ऊन तथा सब प्रकारकी आढ़त व हुंडी चिट्ठीका काम होता है। खासकर ऊनका काम इस दुकानपर विशेष होता है।

मेसर्स धनराज फूलचन्द कोठारी

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान विराठियां (मारवाड़) है। सेठ धनराजजीका देहावसान संवत् १६५७ में हुआ। आपके कोई संतान न होनेसे श्रीयुत फूलचन्दजी संवत् १६५८ में गोदी लाये गये। इस समय इस फर्मका संचालन आप ही करते हैं। आपकी फर्मका खास व्यवसाय ऊनका है। आपकी फर्मके द्वारा ऊन डायरेक्ट विलायत जाती है। इसके अतिरिक्त आढ़तका कार्य भी आप करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स धनराज फूलचन्द कोठारी—यहां ऊनका घरू तथा आढ़तका व्यापार होता है।

नरसुमल गोकुलदास

इस फर्मका हेड आफिस शिकारपुर है। इसकी फाजिल्का आदि स्थानोंमें शाखाएं हैं। यह फर्म फारवस फारवस केम्पिल एन्ड को० की बम्बई आफिसकी, पाली, ब्यावर, केकड़ी और नसीराबादके लिये ग्यारंटेड ब्रोकर हैं। यहां इस फर्मपर ऊनका व्यापार होता है।

कमीशन एजण्ट

मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक भिवानी (पंजाब) के निवासी हैं। वर्तमान मालिक रामस्वरूपजी, मदनलालजी एवम् प्रहलादरामजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईमें पृष्ट १२१ में दिया गया है। यहां आपकी फर्मपर आढ़तका काम होता है।

मेसर्स चिरंजीलाल रोड़मल

इस फर्मके मालिक बेरी (रोहतक) के निवासी हैं। इसका हेड आफिस बम्बई है। इसका विशेष परिचय बम्बई वाले पोर्शनमें पृष्ट १३४ पर दिया गया है। यहां गल्ला तथा हुंडीका व्यापार होता है। इसके वर्तमान मालिक सेठ शिवदयालजी एवम् ...

मालूम होती है। गर्मीके दिनोंमें इस स्थानकी बड़ी बहार रहती है। श्रावण मासमें तो यह स्थान जयपुरका काश्मीर हो जाता है। कई नर नारी इसके दृश्यका आनन्द लेने के लिये यहां आते हैं। यहां अम्बागढ़ नामक किला भी है।

हवा महल—यह महल सरकारी है। बड़ी चौपड़के पास यह बना हुआ है। इसे लोग जनाना महलके नामसे कहते हैं। इसका बाहरी दृश्य बहुत ही सुन्दर है। जयपुरकी अद्भुत कारीगरीका यह एक नमूना है।

चन्द्रमहल—यह भी जनाना महल है। इसकी बनावट नये ढंगकी है। इसके चारों ओर कई फर्लांग तक सुन्दर बगीचा लगा हुआ है। इसके ऊपरी मंजिलसे जयपुरका दृश्य बड़ा ही मनोहर मालूम होता है। त्रिपोलिया बाजारमें त्रिपोलिया गेटसे इसका रास्ता जाता है। सरकारकी ओरसे दिखानेके लिये आदमी नियुक्त हैं। इस महलके पास ही श्रावन भादों नामक एक कुन्ज है। इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। भयंकर गर्मीमें भी आपको यहां जानेसे श्रावण और भादोंका आनन्द आवेगा। आप निर्णय नहीं कर सकते कि श्रावण है या वैशाख। इसी महलके बगीचेमें कुछ दूर जाकर एक तालाब आता है। यहां गनगोरके बैठनेकी जगह है। इसका सीन भी देखने योग्य है। यहांसे नाहरगढ़ और आमेरका दृश्य बड़ा दर्शनीय मालूम होता है। यहांसे एक रास्ता गंगरामजीकी छतरी पर भी जाता है। यह छत्री भी पहाड़ोंपर स्थित है। देखने योग्य स्थान है। चन्द्र महलके पूर्वमें कुछ आगे जानेपर आपको बड़े २ चौड़े मैदान मिलेंगे। इन मैदानोंमें हाथियोंकी लड़ाई होती है। सैकड़ों पुरुष देखनेके लिये यहां आते हैं। चन्द्रमहल के इस बगीचेमें खासकर लाईट और फव्वारेका दृश्य बहुत ही सुन्दर है।

रामनिवास बाग—यह पब्लिक पार्क है। इसका घेरिया बहुत बड़ा है। राजपूताने भरमें यह बाग सबसे बड़ा और सुन्दर है। इसे स्वर्गीय महाराजा रामसिंहजीने अपने नामसे बनवाया है। इसकी लागतमें करीब ४०००००) लगे हैं। इस बागका सालाना खर्च २६०००) होता है। इस बागमें श्रावन भादों, टेनिस ग्राउंड, फुटबाल ग्राउंड, आदि बने हुए हैं। यह बगीचा इतना सुन्दर है कि देखते ही बनता है ठीक इस बागके मध्यमें एक अजायब घर बना हुआ है। इसको अलबर्टहाल भी बोलते हैं। इस अजायब घरमें कई अजब २ वस्तुएं हैं। कहा जाता है कि भारतवर्षका यह दूसरे नम्बरका अजायब घर है।

इसी बगीचेमें शेर, बघेरा, रीछ, दूध देता हुआ बच्चा आदि पशु, कई तरहके विदेशी और देशी बन्दर और कई तरहके पक्षी भी हैं। जहां शेर रखे गये है, उनके पास ही एक किला

नसीराबाद

यह बी० बी० सी० आई०के अजमेर खंडवा सेक्शनका स्टेशन है। यहां वृटिश छावनी। आर० एम० आर० लाइनमें मऊ और नीमचके बाद यही तीसरी अंग्रेजी छावनी है। केकड़ी, शाहपुरा तथा देवली नामक व्यवसायिक मण्डियोंमें जानेके लिए यहां मोटर सर्विसका बहुत अच्छा जरिया है। इस स्टेशनसे हजारों गांठें प्रतिवर्ष ऊन व रूईकी बम्बईके लिए रवाना की जाती हैं।

नसीराबादके आसपास निम्न लिखित जातियोंके पत्थर भी पाये जाते हैं।

(१) सूतिया भाटा—यह पत्थर खानसे जुड़ा हुआ ही निकलता है। इसके भीतरके तारोंकी रस्सी बनती है उसे अंग्रेजीमें एस० बेस्ट ओस कहते हैं। यह रस्सी मशीनोंके काममें आती है। यह आगमें नहीं जलती और पानीमें नहीं गलती है।

(२) घीया पत्थर (संग जराफ)—यह एक प्रकारका सफेद और चिकना पत्थर होता है। यह भीलवाड़ाके आसपास मगरोंमें निकलता है। जो यहांसे बाहर भेजा जाता है।

(३) मायका—यह भी एक प्रकारका पत्थर है जो यहांसे विशेषकर कलकत्ता अधिक जाता है।

(४) मोडर—मोडर (अभ्रक)के पत्थर भी यहां आसपास पाए जाते हैं।

इस स्थान पर प्रभाकर जीनिंग फेक्टरी तथा हेड्रोलो कॉटन प्रेस नामक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जो मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूपके मेनेजमेंटमें चल रही हैं। इस छावनीके व्यवसायियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बेंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरुप

इस फर्मका विस्तृत परिचय ब्यावरमें दिया गया है। यहां इसके मेनेजमेंटमें एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी चल रही है।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल

इस फर्मका विशेष परिचय बून्दीमें दिया गया है। यहांकी फर्मपर रुई, ऊन और अनाजका व्यापार तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स बन्सीधर शिवप्रसाद खेतान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेहणसर (शेखावाटी) में है। [illegible] जातिके सज्जन हैं। जयपुरमें इस फर्मको खुले हुए करीब ३५ वर्ष हुए। [illegible] श्रीयुत बन्सीधरजी खेतानने की। इसकी तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। [illegible] बहुत छोटे रूपमें थी। श्रीयुत बन्सीधरजी खेतान बड़े योग्य सुधरे हुए विचारोंके [illegible] जातिके प्रति आपके हृदयमें अगाध स्नेह है।

अग्रवाल जातिके अन्दर जितने ऊंचे सुधरे हुए विचारोंके [illegible] भी एक स्थान है। करीब चार पांच वर्ष पूर्व जयपुरमें अग्रवाल [illegible] कारिणी सभाके आप सभापति थे।

आपकी तरफसे श्री ऋषीकेशमें एक धर्मशाला बनी हुई है [illegible] भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त मेहणसर में भी आपकी [illegible] हुआ है। और भी प्रायः प्रत्येक सभा सोसायटीमें आप बड़े [illegible]

जयपुरकी म्युनिसिपैल्टिी, स्काउट क्लब, गौशाला, [illegible] बैंक बोर्ड इत्यादि संस्थाओंके आप मेंबर हैं। आपके इस [illegible] प्रसादजी और श्रीयुत गौरीशंकरजी है। श्रीयुत शिवप्रसाद[illegible] गुलाबरायजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) जयपुर (हेड आफिस)—मेसर्स बन्सीधर शिवप्रसाद [illegible] हुण्डीचिट्ठी, कमीशन एजेन्सी और सराफीका काम होता है।

(२) जयपुर—शिवप्रसाद गौरीशंकर [illegible] एजेन्सी है।

(३) आगरा—बन्सीधर शिवप्रसाद [illegible] और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

(४) इन्दौर— मेसर्स बन्सीधर [illegible] और आढ़तका काम होता है।

(५) साम्भर—मेसर्स बन्सीधर [illegible] व्यापार होता है।

(६) [illegible] नगर—मेसर्स [illegible] व्यापार होता है।

मेसर्स मूलचन्द सुगनचन्द

इस फर्मके व्यवसायका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। यहां हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

जौहरी

मेसर्स रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास देहली है। सर्व प्रथम यहांपर लाला रंगीलालजी व आपके बाद क्रमशः लाला चुन्नीलालजी और प्यारेलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्त्तमान इस फर्मके मालिक लाला प्यारेलालजीके पुत्र लाला अमर सिंहजी तथा लाला सुल्तानसिंहजी हैं। आप दिगम्बर जैन अग्रवाल सज्जन हैं।

इस फर्मको २४ फरवरी सन् १९१० में कमाण्डर इन चीफ इन इण्डियाके द्वारा सर्टिफिकेट दिया गया है। इस फर्मको ड्यूक आफ कनॉट, लेडी हार्डिंग आदि अंग्रेज राजपुरुष और रईसोंसे सार्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। इस फर्मके मार्फत राजपूतानेके कई रईसों व अंग्रेज अफसरोंके जवाहरातका व्यवसाय होता है।

गर्मियोंमें इस फर्मकी शाखा हमेशा आबू पहाड़पर जाती है। यहां भारतवर्षके तमाम बड़े बड़े जौहरियोंसे लेनदेन रहता है। आपकी नसीराबादमें कई स्थाई बिल्डिंग्स भी हैं। फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

नसीराबाद—मेसर्स रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी—यहां सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त ऑर्डर देने योग्य चांदीके सुन्दर सामान भी तैयार रखते हैं और आर्डरसे बनाते हैं।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक लि० (गवर्नमेंट ट्रेजरार)

[illegible] बैंक

सेठ उम्मेदमल धनरूपमल रायबहादुर

सेठ [illegible] कुंदनमल

रा० ब० मूलचंद सुगनचंद

जौहरी

रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी

फरनीचर मर्चेण्ट्स

गंगाराम [illegible]

चुन्नीलाल [illegible]

मोहनलाल [illegible]

[illegible]

स्व० सेठ बिहारीलालजी बेगठी कोठीवाले जैपुर

सेठ धींकलजी नट्टीवाले ([illegible]) जैपुर

केकड़ी

—:०:—

यह आर० एम० आर० के नसीराबाद स्टेशनसे २३ मीलकी दूरीपर एक छोटीसी [illegible] मंडी है। यह स्थान अजमेर मेरवाड़ा प्रान्तमें है। यहांपर खास पैदावार रुई, ऊन, गेंहू और मेथीदाना की है। हजारों रुपयोंका जीरा तथा ऊन प्रति वर्ष बम्बई जाता है। इस मंडीसे करीब ४० हजार बोरी और ४ हजार गांठ ऊनका व्यापार प्रतिवर्ष होता है। करीब २००० गांठें प्रतिवर्ष रुई की यहां बंध जाती हैं। फसलके समय, रायली ब्रदर्स, फारवस फारवस कैंपबेल एण्डको० के एजंट खरीदके लिये यहां आते हैं। रायलीकी यहांपर स्व-एजंसी है। इससे कुछ दूरीपर देवली नामक एक मंडी है। उस स्थानपर भी ऊन, जीरा और रुईका धन्धा [illegible] होता है।

व्यापारियोंकी सुविधाके लिये यहां रेलवेकी आउट एजंसी मेसर्स लखमीचंद सेठ मजीदवालोंके कंट्राक्टमें खुली हुई है। जिससे व्यापारियोंको मालकी बुकिंग तथा डिलिवरीकी सुविधा प्राप्त है। इस मंडीमें निम्नलिखित ८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां

दि शत्रुंजा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
हाड़ोती प्रेसिंग फेक्टरी
आर० जीनिंग फेक्टरी
जार्ज जीनिंग फेक्टरी
वेस्ट पेटेन्ट जीनिंग एण्ड प्रेसिंग कम्पनी
न्यू मुफस्सिल एण्ड को० प्रेसिंग फेक्टरी

उपरोक्त फेक्टरियोंमें न्यू मुफस्सिल एण्ड को० प्रेसिंग फेक्टरी कई वर्षोंसे बंद है। यहांके सब जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियोंमें परस्पर नफेका हिस्सा हो जाता है। इसलिये बंद [illegible] भी उपरोक्त प्रेसिंग कम्पनीसे साझा मिलता है।

भाग लिया था। आपने गुजरात काठियावाड़ और बाम्बे प्रेसिडेंसीमें हजारों रुपयेकी खादीका विना नफा लिए हुये प्रचार किया था। इस समय आपके दो पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत कान्तिलाल भाई और श्रीयुत कृष्णचन्दजी हैं। श्रीयुत कान्तिलाल भाई आपको दुकानके काममें मदद देते हैं और श्रीयुत कृष्णचन्द अभी विद्याध्ययन करते हैं।

जयपुर—मेसर्स कांतिलाल छगनलाल जौहरीबाजार—इस दुकानपर हीरा, पन्ना, माणिक, मोतीके खुले और बन्द जड़ाऊ जेवरोंका व्यवसाय होता है जवाहरातकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

मोरवी, (जूनागढ़) यहां जौहरी मोनशी अमुलखके नामसे आपका वर्कशाप है।

मेसर्स कपूरचन्द कस्तूरचन्द जौहरी

(तारका पता:—(Meharnivas)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें ही है। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैनजातिके हैं। यह फर्म पुश्तैनी रूपसे यहांपर यही व्यवसाय करती आ रही है। जयपुरकी पुरानी फर्मोंमेंसे यह फर्म भी एक है। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत मेहरचन्दजी हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत कस्तूरचन्दजी था। आप तत्कालीन कर्नाटक नवाबके खास जौहरी थे।

यह दुकान जयपुरकी अच्छी दुकानोंमेंसे एक है। यहां पर जवाहिरातका अच्छा व्यापार होता है। राजपूताना, सेण्ट्रल इण्डियाके बहुतसे राजा और रईसोंमें आपके यहांसे जवाहिरात जाता है। कई राजा रईसोंने इस फर्मके कामसे प्रसन्न होकर अच्छे २ सर्टिफिकेट भी दिए हैं।

श्रीयुत मेहरचंदजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत दौलतचन्दजी हैं। आप बड़े सुयोग्य व्यक्ति हैं। इस समय आप ही दुकानके कारोबारको सम्हालते हैं।

इस फर्मकी लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि सभी विदेशों व हिन्दुस्तानके भी सभी बड़े शहरोंमें आढ़तें हैं। वहांसे आपके यहां बहुतसा माल आता जाता है।

गुलाबचंद वेद जौहरी

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्रीयुत पन्नालालजी हैं। आपका मूल निवासस्थान जयपुर ही है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०८ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री सेठ गुलाबचंदजीके हाथसे हुई थी। आपके पश्चात् क्रमशः श्री फूलचन्द जी और निहालचन्दजीने इसके कार्यको सम्हाला।

इस फर्मके मुनीम श्रीभंवरलालजी कासलीवाल हैं। आप खण्डेलवाल जैन जातिके हैं। श्रीभंवरलालजी मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल की फर्म पर २५ सालसे सर्विस करते हैं। आप इस फर्म के मालिकोंके खास भाइयोंमें से ही हैं। आप केकड़ी दूकानपर १५ वर्षोंसे काम करते हैं। आप के आनेके बाद ही केकड़ी, सरवाड़ और खारेड़ामें सेठजीकी ३ जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरियां स्थापित हुई है। इनके अतिरिक्त सरवाड़, खारेड़ा, गुलाबपुरा, देवली और बघेरा की दुकानें भी आपहीके समयमें स्थापित की गई हैं।

मुनीम भंवरलालजी यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आप स्थानीय जैन बोर्डिंग, जैन पाठशाला, और जैन औषधालयके प्रधान कार्यकर्ता हैं।

मेसर्स रिधकरन छीतरमल

इस फर्मके मालिक खास निवासी यहीं के हैं। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सुवालालजी हैं। आपके पिताजीका देहावसान सं० १९७१ में हो गया है। आपकी दुकान सं० ११५० से कमीशनका कामकर रही है। इस दूकानका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

केकड़ी—रिधकरन छीतरमल इस दूकान पर रुई कपास, ऊन तथा जीरेका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

विजयानगर—रिधकरण छीतरमल—इस दुकानपर भी आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

रुई ऊन और जीरेके व्यापारी

मेसर्स उदयमल कल्याणमल शाह
„ किशनलाल कल्याणमल
„ गजमल गुलाबचन्द
„ गोवर्द्धनदास कल्याणमल
„ घासीलाल पोखरलाल
„ घासीलाल कल्याणमल
„ रा० ब० चम्पालाल रामस्वरूप
„ छीतरमल नेमीचन्द
„ छगनलालजी टोंग्या
„ दौलतराम कुंदनमल
„ पन्नालाल रामचन्द्र
„ बालाबक्स द्वारकादास
„ मगनलाल तिलोकचन्द
„ रिधकरन छीतरमल
„ सुवालाल समीरमल
मेसर्स हजारीमल गुलाबचंद

विदेशी एजंसियां

मेसर्स फारबस फारबस केम्पबेल एण्ड को०
मेसर्स राली ब्रदर्स

कपड़ेके व्यापारी

कीरतमल लखमीचंद
दौलतराम कीरतमल
फूलचन्द सुजानमल

किरानाके व्यापारी

पन्नालाल छगनलाल
रामभगत रामपाल
रूपचन्द राजमल

श्री मेहरचन्दजी जगड़ (कपूरचन्द कस्तूरचन्द) जैपुर

श्री महादेवलालजी जौहरी (जौहरीमल दयाचन्द) जैपुर

श्री जतनचन्दजी जगड़ (कपूरचन्द कस्तूरचन्द) जैपुर

श्री मूलचन्दजी सेठी (मुन्नीलाल मूलचन्द) जैपुर

जीके चार पुत्र हुए. जिनके नाम श्री काशीनाथजी, श्री मूलचंदजी, श्रीजमनालालजी तथा श्री छोटी लालजी हैं। इस फर्मपर कई पीढ़ियोंसे बहुत बड़े रूपमें जवाहरातका व्यापार होता आ रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री १—चुन्नीलालजी (छोटीलालजीके पुत्र) २—महादेव लालजी ३—चम्पालालजी (जमनालालजीके पुत्र) ४—माणिकचंदजी (मूलचंदजीके पौत्र) तथा ५ - नवरतनमलजी (काशीनाथजीके पौत्र) हैं।

यह फर्म यहांकी स्टेट ज्वेलर है। जयपुर स्टेटका जवाहिरात सम्बन्धी सब कामकाज इसी फर्मके द्वारा होता है। इस फर्मको वायसराय आदि कई उच्च पदस्थ अंग्रेज आफिसरोंसे प्रशंसापत्र मिले हैं। इसके अलावा लंदन, कलकत्ता, तथा जयपुर एक्जीविशनसे इस फर्मको सार्टीफिकेट तथा मेडिल्स मिले हैं। यह फर्म पेरिस, लंदन, न्यूयार्क वगैरहसे जवाहरातका व्यवसाय करती है। कई भारतीय राजा रईसोंके यहां भी इस फर्मके द्वारा जवाहरात जाता है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी—इस फर्मपर सब प्रकारके जवाहरात और खासकर जड़ाऊ गहने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपुर स्टेटके जागीरदारोंसे नकद लेनदेनका भी यहां व्यापार होता है।

अजमेर—सेठ महादेवलाल जौहरी, केसरगंज—इस दूकानपर भी सब तरहके जवाहरातका व्यापार होता है।

मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी जैन सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस दूकानको जयपुरमें खुले हुए करीब २० वर्ष हुए। इस दुकानकी स्थापना सेठ दुर्लभजीभाईने अपने हाथोंसे की। आप बड़े ही सज्जन, समाजसेवी और धार्मिक कार्य्योंमें उत्साह रखनेवाले सज्जन हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ त्रिभुवनदासभाई जौहरी था। आपके इस समय पांच पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे १-विजय चन्दजी (२) गिरिधारीलालजी (३) ईश्वरलालजी (४) शान्तिलालजी और (५) खेलशंकरजी हैं। इनमेंसे पहले तीन आपको दुकानके कार्य्योंमें मदद देते हैं और शेष पढ़ते हैं।

श्रीयुत दुर्लभजी भाई अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्सके जनक हैं। आपने अपनेही हाथोंसे पहले पहल मोरवीमें इसकी स्थापना की थी। आप कई वर्षोंतक इसके चीफसेक्रेटरी भी रहे हैं और इस समय आप इसके ट्रस्टी हैं। कान्फ्रेन्सकी तरफसे दो तीन ट्रेनिंग कॉलेज चल रहे हैं उनके भी आप सदस्य हैं। समाज-सेवाकी भावनायें आपके हृदयमें हमेशा काम करती रहती हैं।

मिनीवर गजकी मुहर [illegible] है [illegible] मुहरवाला [illegible] बनता है।

सांगानेरी [illegible] — यहांपर सांगानेरक [illegible] होता है [illegible] जयपुरका [illegible] काने [illegible]

जौरीका व्यापार — इस [illegible] एक्सपोर्ट होता है। [illegible] बनते हैं

साबुन — साबुन (कपड़ा धोनेका) यहांपर [illegible] बड़ी २ दुकानें हैं। [illegible]

इसके अतिरिक्त [illegible] है। जयपुरका आर्ट चित्रकारी भी भारतमें प्रसिद्ध है [illegible] बहुत बढ़िया होता है। रुईकी [illegible] फेक्टरी है।

दर्शनीय-स्थान

गल्ता — यह स्थान जयपुरसे २ मील [illegible] पहला नम्बर है। इस स्थानपर [illegible] यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान [illegible] इसके रास्तेके दोनों ओर कई [illegible] पड़ता है। यहां एक ओर [illegible] और उस कुण्डका निर्मल जल [illegible] और पहाड़की तलैटीमें कई सुन्दर [illegible] चित्रकारीके दृश्य बनला रहे हैं। [illegible] हुआ है।

नया घाट — यह स्थान जयपुरसे उत्तर पश्चिम [illegible] भी बड़ा ही सुन्दर है। एक [illegible] और कई [illegible] झाड़ [illegible] आता [illegible]

स्वर्गवास होगया। तभीसे आप इस दुकानका सञ्चालन करते हैं। आप इस समय पांच भाई हैं जिनके नाम श्रीपूनमचन्दजी, श्रीयुत गुलाबचन्दजी, सुल्तानसिंहजी, श्री ताराचन्दजी तथा फतेसिंहजी हैं।

इनमेंसे श्री फतेसिंहजी के श्रीयुत सुखराजजी और श्रीयुत ताराचन्दजी के श्री खेमराजजी नामक पुत्र हैं। यह खानदान जयपुरके ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित है, तथा व्यापारिक समाजमें भी इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी दूकानें नीचे लिखे अनुसार हैं :—

(१) जयपुर—सेठ पूनमचंद भण्डारी जौहरी बाजार—इस दुकानपर जवाहिरात बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका कारबार होता है।

(२) रंगून—मेसर्स पूनमचन्द फतेसिंह, T A Dipawat इस दुकानपर बैंकिंग हुण्डी, चिट्ठी, जवाहिरात और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) रंगून-मेसर्स पूनमचन्द मूलचन्द मुगलस्ट्रीट—इस दुकानपर जवाहिरात, बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका काम होता है। (T. A Bhandaijee)

नं० ३ की रंगूनवाली दुकानकी निम्नाङ्कित स्थानोंमें ब्रान्चेस हैं (१) माण्डले (Bhandarijee) (२) सब्हाय (Bhandarijee) (३) मग्गुई (Bhandarijee)

मेसर्स फूलचन्द मानिकचंद जौहरी

इस फर्मके सञ्चालकोंका मूल निवास स्थान पटियाला स्टेटके बरई नामक नगरमें है। आप श्रीमाल जैन श्वेताम्बर जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। श्रीयुत फूलचन्दजी के पिता श्रीयुत नानकचन्दजी पटियाला स्टेटमें कानूगो और जमींदार थे। श्रीयुत फूलचन्दजीका जन्म बरईमें ही हुआ। आप जब बारह तेरह वर्षके थे तभी व्यापारके लिये जयपुर आये थे। यहां आकर इस छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातका काम प्रारम्भ किया और बहुतसा धन, पैदा किया। स्वर्गीय महाराज माधोसिंहजीके हाथसे संवत् १९७१ से लेकर उनके स्वर्गवास होने तक जो एक्सचेंज बिजिनेस स्टेट ट्रेझरीमें होता था। वह आपके मार्फत ही होता था।

श्रीयुत फूलचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत मानिकचन्दजी श्रीयुत मेहताबचन्दजी और श्रीयुत मोतीचन्दजी हैं।

इस दुकानपर जवाहिरातका जिसमें खासकर पन्ना का बिजिनेस होता है। लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि बाहरी शहरोंमें आपके द्वारा बहुत जवाहरात एक्सपोर्ट होता है।

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। अजमेरका प्रसिद्ध लोढ़ा परिवार इस फर्मका मालिक है। यहां यह फर्म बैङ्किग व्यवसाय करती है। यह फर्म जौहरी बाजारमें है।

मेसर्स राजा गोकुलदास जीवनदास

इस फर्मका हेड आफिस जबलपुरमें है। जबलपुरके राजा गोकुलदासजीके वंशज इस फर्मके मालिक है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ठ ११(में दिया गया है। यहां यह फर्म बैङ्किग व्यवसाय करती है।

मेसर्स चन्द्रभान वंशीलाल राय बहादुर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। इसके वर्तमान मालिक सर शिरेमल दासजी डागा राय बहादुर हैं। आपका सुविस्तृत परिचय चित्रों सहित बीकानेरमें दिया गया है यह फर्म यहां जौहरी बाजारमें है इसपर बेंकिग व्यवसाय होता है।

मेसर्स जुहारमल सुगनचन्द

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ टीकमचन्दजी सोनी हैं। आप को फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। जयपुरमें इस फर्मपर बैङ्किग बिजिनेस होता है।

मेसर्स राजा बलदेवदास व्रजमोहन बिड़ला

इस फर्मका मालिक प्रसिद्ध बिड़ला परिवार है। आपका मूल निवास पिलानी (जयपुर) है। आपका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित पिलानीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैङ्किग व्यव साय होता है।

कुंवर पूनमचन्दजी ठोलिया, जैपुर

कुंवर ताराचन्दजी ठोलिया, जैपुर

श्री० सेठ [illegible] जी [illegible], जेपुर

[illegible] शिव[illegible]जी [illegible], जैपुर

मोतीलालजी था, आपका स्वर्गवास संवत् १६३६ में हुआ। उनके पश्चात् श्रीयुत सुगनचन्दजी ने इस फर्मके कामको सम्हाला।

आपकी दुकानपर जवाहिरातका और उसमें भी खास कर पन्नाका व्यवसाय होता है। इस दुकानसे इंगलैंडमें भी बहुतसा जवाहिरात जाता है (T. A. Panna)

मेसर्स भूरामल राजमल सुराना जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहलीमें है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस यहांपर आये करीब खानदानको १५० वर्ष हुए। तभीसे यह फर्म भी यहांपर स्थापित है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री भूरामलजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े ही उद्योगी, कर्मशील और सज्जन पुरुष थे। आपका देहावसान संवत् १९७६ में हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत राजमलजी इस फर्मके कार्य्यका सञ्चालन करते हैं। संवत् १९६४ में आपका जन्म हुआ। इतनी छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातके समान महत्वपूर्ण व्यवसायमें दक्षता प्राप्त करली है।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरात, हीरा, मोती और जड़े हुए जेवरोंका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांके देशी राजा रईसोंमें आपके द्वारा बहुतसा जवाहिरात सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त इंग्लेण्ड, अमेरिका आदि बाहरी देशोंमें भी आपके द्वारा बहुत सा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स मथुरादास सुखलाल राठी

इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये। यह फर्म पहले छोटे रूपमें थी। श्रीयुत सुखलालजी राठीके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई। श्रीयुत सुखलालजी श्रीयुत मथुरादासजीके पुत्र हैं। यह फर्म जयपुरके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत सुखलालजी बड़े सज्जन पुरुष हैं। आपके तीन पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत सूरजमलजी, चांदमलजी, और केसरीमलजी हैं। आप तीनों ही दुकानके काममें भाग लेते हैं।

इस फर्मपर जवाहिरात, जड़ाऊ जेवर, और मीनाकारीका हरकिस्मका व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा रईसों तथा और घरानोंमें भी आपके यहांसे माल सप्लाय होता है।

इस दुकानका हेड ऑफिस जौहरी बाजारमें है और कोठी अजमेरी गेट पर है।

सेठ विहारीलालजी वैराठी कोड़ीवाले

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान वैराठ (जिला जयपुर)में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको जयपुरमें स्थापित हुए करीब ३०-३५ वर्ष हुए। श्रीयुत विहारीलालजीके हाथोंसे इस फर्मकी स्थापना हुई और आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी खूब उन्नति भी हुई। श्रीयुत विहारीलालजी धार्मिक और उदार विचारोंके सज्जन थे। जयपुरके व्यापारिक समाजमें आपका खूब अच्छा प्रभाव था। आपका अभी कुछ मास पूर्व देहावसान हो गया है। जयपुरकी अग्रवाल पाठशाला गौशाला, हिन्दू अनाथालय, धन्वन्तरि औषधालय तथा अन्य सभी संस्थाओंमें आपके यहांसे सहायता पहुंचती रहती है।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ विहारीलालजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) जयपुर—मेसर्स विहारीलाल वैराठी, जौहरी बाजार—यहां बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठी काम होता है।

(२) जयपुर मेसर्स विहारीलाल लक्ष्मीनारायण, काटन प्रेस—यहां रुईकी गांठनेमें काम और रुईका व्यवसाय तथा इसकी आढ़तका काम होता है।

जौहरी

मेसर्स कान्तिलाल छगनलाल ज्वेलर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़)में है। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। यहां इस दुकानको खुले हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह दुकान पहले मोनजी अनुपचंदके नामसे व्यवसाय करती थी। लेकिन जब सब भाइयोंका हिस्सा बंट गया तब यह दुकान सेठ छगनलाल भाईके हिस्सेमें आगई। तभीसे इस दुकानपर मेसर्स कान्तिलाल छगनलालके नामसे व्यवसाय होता है।

इस समय इस दुकानका संचालन सेठ छगनलाल भाई करते हैं आप बड़े सज्जन, देश भक्त और सुधरे हुए विचारोंके सभ्य पुरुष हैं। स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंसमें आप हमेशा भाग लेते हैं। जिस समय महात्मा गांधीका खादी आन्दोलन चला था उस समय आपने इसमें बड़े उत्सा

सेठ छगनलाल भाई (मे० कान्तिलाल छगनलाल) जैपुर

श्रीयुत कान्तिलाल भाई S/o छगनलाल भाई जैपुर

मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री ईश्वरलालजी सोगानी हैं। आप खास निवासी जयपुरके ही हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १९७२ में श्रीयुत ईश्वरलालजीने की। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

श्री ईश्वरलालजी मारवाड़ी समाजके उन सभ्योंसे हैं, जिन्होंने परदा सिस्टमके समान रेंचड़ प्रथाको (जिसने मारवाड़ी समाजके नारी समुदायको नष्ट भ्रष्ट और अस्वस्थ बना रक्खा है।) त्यक्षमें तोड़कर समाजके सामने एक नवीन आदर्श उपस्थित कर दिया है। आप अपनी धर्मपत्नी श्रीलक्ष्मीदेवीको लेकर विलायत भ्रमण कर आये हैं।

श्रीईश्वरलालजीके पिता श्रीमंगुरुलालजी बहुत मामूली परिस्थितिके व्यक्ति थे। श्री ईश्वरलालजीका प्रथम विवाह छोटी वयमें ही होगया था। जब आपकी प्रथम विवाहकी पत्नीका देहावसान होगया तब आपने अपने अनुकूल विचारोंकी कन्यासे विवाह करनेका निश्चय कर श्री० लक्ष्मी बाई से विवाह किया। और उनको साबरमती आश्रम आदि उच्च स्थानोंमें रखकर शिक्षा दिलाई तथा बादमें परदा प्रणालीको तोड़कर सन् १९१९में आप विलायत यात्राके लिये चले गये। अमेरिकामें श्रीलक्ष्मीबाईके खादीके लिबासपर बहुत लोगोंने हंसी उड़ाई, पर आप अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहीं। फल यह हुआ कि इन्टर नेशनल एक्जीबीशनमें लक्ष्मीदेवी इण्डिया की ओरसे प्रतिनिधि रहीं।

श्रीईश्वरलालजीको पुस्तक पठनसे अच्छा प्रेम है। आपने जयपुरमें सन्मति पुस्तकालयकी स्थापना की। शिक्षाके साथ २ आपका व्यवसायिक चातुर्य भी बढ़ा चढ़ा है। आपने अपने ही हाथोंसे अपने जवाहरातके व्यापारको अच्छा जमा लिया है। आपको सन् १९२६ के अमेरिकाके इन्टर नेशनल एक्जीबीशनमें भारतीय मालकी अपूर्व सफलताके उपलक्षमें १ गोल्ड मेडल और १ मोट प्राइज प्राप्त हुआ था। भारतीयोंके लिये यह पहिली बात थी।

आपने उपवास चिकित्सा और जल चिकित्सा द्वारा रोगियोंको आराम पहुंचानेकी पद्धतिमें भी बहुत सफलता प्राप्त की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—जयपुर—मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स जौहरी बाजार T. A Ishwar यहां जवाहरातका काम होता है। तथा विलायतके लिये जवाहिरातका एक्सपोर्ट होता है।

२—लन्दन—मेसर्स सोगानी एण्ड को० लिमिटेड T. A Laxmidevi डीलर्स इण्डियन आर्ट एण्ड प्रेशियस स्टोन, हेडिङ्गबल्ट आफ इण्डिया (भारतीय कारीगरी और जवाहरातके व्यापारी)

३—न्यूयार्क—सोगानी एण्ड को इम्पारपोरेशन २२२ T. A Sogani—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

श्रीयुत चम्पालालजीकी उम्र इस समय २२ वर्षकी है पर आप दुकानका सञ्चालन बहुत अच्छी तरहसे कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—श्री गुलाबचन्द वेद जौहरी, बारहगणगोर—यहां सब प्रकारके जवाहिरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता—श्री गुलाबचन्द वेद १७६ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर सराफी तथा जवाहिरातका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा लंदन और पेरिसको बहुतसा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है। यहांपर आपकी दो कोठियां भी बनी हुई हैं।

—

मेसर्स चुन्नीलाल मूलचंद कोठारी

इस दुकानके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें है। आप ओसवाल जातिके हैं। इस दुकानको स्थापित हुए करीब सौ बरसका अर्सा हो गया। सबसे पहले इस दुकानको श्रीयुत हीरालाल जी कोठारीने स्थापित किया। उस समय इस दुकानका नाम मेसर्स "नथमल हीरालाल" लिखा जाता था। श्रीयुत हीरालाल जीके पश्चात् श्रीयुत चुन्नीलालजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। सन् १९७७में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत मूलचंदजी कोठारी इस दुकानके कामको सम्भाल रहे हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई।

आपकी निम्नांकित स्थानोंपर दुकाने हैं:—

(१) जयपुर—(हेड आफिस) मेसर्स चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी—इस दुकानपर जड़ाऊ जेवरातके दागीनों और खुले जवाहिरातका व्यापार होता है। राजपूताने और सेण्ट्रल इण्डियाके कई दरबारोंमें भी आपके द्वारा जवाहिरात सप्लाय होते हैं। T. A. Pearl

(२) जयपुर—अपोजिट जयपुर होटल—मेसर्स सी० एम० कोठारी एण्ड सन्स—इस दुकानपर क्यूरियो और ज्वैलर्स दोनों प्रकारका व्यवसाय होता है।

(३) अजमेर—चुन्नीलाल मूलचन्द लासन कोठारी—इस दुकानपर सब्जा मिल कपड़ेका व्यवसाय होता है।

—०:०—

मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल (सचेती) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इस दुकानकी स्थापना सर्वप्रथम सेठ दयाचंदजीने की सेठ

श्री सेठ प्रहलाददासजी (रामचन्द्र मोतीलाल) जैपुर

स्व० सेठ रामकुंवारजी पीपा (रामकुंवार सूरजबख्श) जैपुर

श्री गुलाबचन्दजी (रामचन्द्र मोतीलाल) जैपुर

श्री निरंजनलालजी (रामकुंवार सूरजबख्श) जैपुर

दुर्लभजी भाई झवेरी (मे० दुर्लभजी त्रिभुवनदास) जैपुर

श्री० विनयचन्दजी S/o दुर्लभजी भाई ज[illegible]

[illegible] दुर्लभजी भाई [illegible]

मेसर्स रामकुंवार सूरजबक्ष

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चोमू (जयपुर राज्य) में है। आप खंडेलवाल वैश्य) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १९१७ में श्रीयुत रामकुंवारजीके हाथोंसे हुई तथा इस फर्मकी विशेष तरक्की रामकुंवारजीके चचेरे भाई मांगीलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीराम-कुंवारजीका स्वर्गवास ७० वर्षकी वयमें संवत १९८२ में हुआ। आप अन्त समयमें महाराज कॉलेजमें नौवल स्कूलके हेड मास्टर रहे थे। इस समय इस फर्मके संचालक श्रीयुत सूरजबक्षजी हैं। आप सज्जन और शिक्षित हैं।

आपके इस समय चार पुत्र हैं चारो ही स्कूलमें विद्याध्ययन करते हैं। श्री मांगीलालजीके पुत्र कल्याणबक्षजी भी दूकानके कामोंमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी ओरसे चोमूमें पीपावालोंकी धर्मशालाके नामसे एक धर्मशाला बनी हुई है। जय-पुरकी खंडेलवाल पाठशालाके श्रीसूरज बक्षजी सेक्रेटरी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ जयपुर—हेड ऑफीस रामकुंवार सूरजबक्ष चांदपोल—यहां सब प्रकारकी आढ़त, गल्ला, तथा चीनीका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है। एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनीकी जयपुरके लिये सोल एजेंसी है। T.A. Ghiya

२ रामनगर—मेसर्स रामकुंवार सूरजबक्ष T.A. Jaipurwala—यहां चीनीका थोक व्यापार होता है।

३ मदनगंज मंडी—रामकुंवार सूरजबक्ष—यहां आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

४—सवाई माधोपुर—रामकुंवार सूरजबक्ष ,, ,, ,,

५—श्रीमाधोपुर—रामकुंवार सूरजबक्ष ,, ,, ,,

६—चौधका बावाड़ा—रामकुंवार सूरजबक्ष—यहां गुड़ और शक्करका काम होता है।

७—दुर्गापुरा—रामकुंवार सूरजबक्ष ,, ,, ,,

८—हिन्डोन सिटी—रामकुंवार सूरजबक्ष—आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

९—सांभरलेक—बिजयलाल रामकुंवार—हुन्डीचिट्ठी, आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स हरबक्ष सूरजमल

इस फर्मके मालिक मरोठ (मारवाड़) के निवासी हैं। इसे जयपुरमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस दुकानको सेठ हरबक्षजीने स्थापित किया। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरबक्षजीके पुत्र सेठ सूरजमलजी हैं। आप सरावगी (पाटनी-जैन) जातिके हैं। आपके पुत्र श्री मूलचन्दजी तथा मोतीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे मरोठमें बोर्डिंग

इस समय आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) जयपुर—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार T. A. Nakada इस दुकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा महाराजोंमें आपके द्वारा खूब जवाहिरात सप्लाय होता है।

(२) मोरवी—मेसर्स मोनशी अमुलक—यहांपर इस फर्मका वर्कशाप है।

(३) रंगून—मेसर्स दुर्लभजी भाई त्रिभुवनदास स्काटमार्केट—यहांपर भी जवाहिरातका काम होता है।

(४) रांची—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवन एण्ड करीमजीवा मेनरोड—यहां पर भी जवाहिरातका व्यापार होता है। इसके अलावा आपका मारवाड़के अन्दर सरदार शहरमें घेर है।

मेसर्स नारायणजी महादेव लड़ीवाले जौहरी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब पचास साल वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने की। उनके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। श्रीयुत नारायणजीके दो पुत्र थे। पहले श्रीयुत महादेवजी और उनसे छोटे श्रीयुत घीसूलालजी। संवत् १९५२ श्रीयुत नारायणजीका स्वर्गवास होगया। उनके पश्चात् उनके बड़े पुत्र श्रीयुत महादेवजीने इसके कारबारको सम्हाला। उनके हाथोंसे भी इस दुकानकी तरक्की हुई। उनका स्वर्गवास संवत् १९५८में हुआ। आपके पश्चात् आपके छोटे भ्राता श्रीयुत घीसूलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। इस समय श्रीयुत घीसूलालजी और श्रीयुत प्रहलादजी (श्रीयुत महादेवजीके पुत्र) दोनों इस दुकानके कार्य्यका संचालन करते हैं। श्रीयुत घीसूलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत बंशीधरजी है। श्रीयुत प्रहलादजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत मुरलीधरजी और श्रीयुत मनोहरलालजी हैं। श्रीयुत बंशीधरजी और श्रीयुत मुरलीधरजी दुकानके संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मके संचालकोंने जयपुरकी स्थानीय अग्रवाल, पाठशाला और जयपुरकी गोट मकान अपनी ओरसे प्रदान किये हैं। घाट दरवाजेके स्मशानमें और घाटमें भण्डार ... आपने सर्वसाधारणके आरामके लिए बनवाई हैं।

जयपुरके जौहरी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपकी दुकान पर ... और इसमें भी सामूहर मोतियोंका अच्छा व्यवसाय होता है।

भण्डारी पूनमचंद जौहरी

इस फर्मका संचालन श्रीयुत पूनमचन्दजी करते हैं। आप ओसवाल जातिके ... सज्जन हैं। आप श्रीयुत ... के पुत्र हैं। संवत् १९...

ापारियोंका परिचय

[illegible] (हीरालाल हनुमानचन्द) जैपुर

श्रीयुत सेठ [illegible] (हीरालाल हनुमानचन्द) जैपुर

[illegible]) जैपुर

श्रीयुत [illegible]

स्व० सेठ [illegible] सेठिया [illegible]

श्री० कुंवर गोपीचन्दजी सेठिया [illegible]

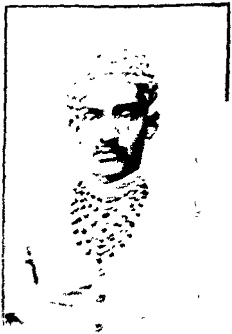

मेसर्स गोपालजी मुरलीधर जयपुर

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जैन [गोयल] जातिके हैं। इस दूकानको स्थापित हुए करीब १००बरस होगये। इसकी स्थापना श्रीयुत गोपालजीके पुत्र श्रीयुत मुरलीधरजीने की। उन्हींके हाथोंसे इस दूकानकी तरक्की भी हुई। मुरलीधरजीके पुत्र श्रीयुत ईश्वरलालजी जयपुरमें ईसरजी राणाके नामसे मशहूर थे और अब भी यह दूकान इसी नामसे बोली जाती है। आपके हाथोंसे इस दूकानकी खूब तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। ईश्वरलालजीके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे (१) श्रीयुत जौहरीलालजी, (२) श्रीयुत चौथमलजी, (३) श्रीयुत छोटमलजी हैं। श्रीयुत जौहरीलालजी और चौथमलजी अलग अपना व्यवसाय करते हैं।

इस दूकानका सञ्चालन इस समय श्रीयुत छोटमलजी करते हैं। आपकी ओरसे पुराने घाट-पर एक जैन मन्दिर और एक बगीचा बना हुआ है। सेठ छोटमलजीके ३ पुत्रोंमेंसे श्री कपूर-चन्दजी और भौंरीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है :-

१ जयपुर--पुरोहितजीका खंदा--मेसर्स गोपालजी मुरलीधर--इस दूकानपर देशी और विलायती दोनों प्रकारके कपड़ेका बड़े प्रमाणमें व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपूरके गोटे किनारीका भी आपके यहां व्यवसायहोता है।

२ जयपुर--बन्सीधर कपूरचन्द--इस दूकानपर सांगानेरी कपड़े और देशी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

मेसर्स चिमनलाल रखीचन्द गोधा

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७० वर्प वर्प होगये। पहले इस दूकानपर जौहरीलाल चिमनलाल नाम पड़ता था। इस दूकानकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ जौहरीलालजी और उनके भाई श्रीयुत चिमनलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीयुत जौहरीलालजीका स्वर्गवास हुए करीब चौबीस पच्चीस साल होगये। श्रीयुत चिमनलालजी अभी विद्यमान हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान, जैन धर्मके पण्डित और वक्ता हैं। जयपुरमें आप चिमनलालजी वक्ताके नामसे प्रसिद्ध हैं।

इस समय इस दूकानका सञ्चालन श्री चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत रखीचन्दजी और श्रीयुत गम्भूलालजी करते हैं। आप दोनों ही बड़े सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेठ धनजीलालजी ठोलिया ज्वेलर्स

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके वैश्य हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ धनजीलालजी ने की। आप उन व्यापारियोंमेंसे हैं। जिन्होंने अपने बाहुबल, अपने पराक्रम और अपनी चतुरतासे लाखों रुपयेकी दौलत पैदा की है, तथा व्यापारिक समाजमें अपनी प्रतिष्ठा कायमकी है। सेठ धनजीलालजीके पहले यह फर्म बहुत ही छोटे रूपमें थी। आपने आजसे करीब पचास पिचास वर्ष पहले पन्द्रह सोलह बरसकी उमरमें इस फर्मका कार्य्य प्रारम्भ किया और इतने थोड़े समयमें ही इतनी प्रख्याति प्राप्त करली कि आज जयपुरके सारे जौहरी समाजमें यह फर्म पहले नम्बरकी मानी जाती है। आपके यहां तारका पता—Emarald है।

सेठ धनजीलालजीकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है आपकी ओरसे कई संस्थाओंमें दान दिया जाता है।

इस समय सेठ साहबके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे कुंवर गोपीचन्दजी, कुंवर हरक-चन्दजी, कुंवर सुन्दरलालजी, कुंवर पूनमचन्दजी और कुंवर नागचन्दजी हैं। आप पांचों ही सुयोग्य और सज्जन पुरुष हैं। कुंवर गोपीचन्दजीके एक पुत्र श्रीयुत मृषभदासजी और कुंवर हरकचन्दके एक पुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी है।

सेठ धनजीलालजीके एक भाई हैं जिनका नाम श्रीयुत जमनालालजी है। इनके एक पुत्र हैं। जिनका नाम अनूपचन्दजी है। इनके अलावा सेठ साहबके दो भाई और थे जो स्वर्गवासी हो चुके हैं। इनमेंसे बड़े भाईका नाम श्रीयुत जौहरीलालजी था, इनके एक पुत्र विद्यमान हैं, जिनका नाम पीसीलालजी हैं। दूसरेका नाम बहादुरलालजी था।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। अब्दानी हीरालाल सुन्दरलाल जौहरीके नामसे मोतीबाजारमें जो दुकान है उसमें आपका हिस्सा है। T. A. Manikal

---

मेसर्स बहादुरसिंह भूधरसिंह जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापन हुए करीब सौ बरस हुए। श्रीयुत बहादुरसिंहजी और भूधरसिंहजी दोनों ही भाइयोंने इस फर्मको स्थापित किया था।

इस समय श्रीयुत बहादुरसिंहजी और श्रीयुत भूधरसिंहजीके वंशजोंकी फर्म अलग २ रहे हैं। श्रीयुत मुन्नचन्दजी श्रीयुत भूधरसिंहजीके पौत्र हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत

बैंकस

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (जयपुर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
,, गोकुलदास जीवनदास
,, गनेशदास नरसिंहदास
,, चन्द्रभान वंशीलाल
,, जुहारमल सुगनचन्द
,, बलदेवदास बृजमोहन बिड़ला
,, बिहारीलाल बैराठी कोडीवाला
,, बंशीधर शिवप्रसादजी खेतान
,, सूरजबक्स निर्भयराम
,, हरबक्स सूरजमल
,, श्रीकृष्णदत्त रामविलास
,, श्रीराम नानकराय

जौहरी

इण्डियन आर्ट एण्ड ज्वेलरी स्टोर्स अजमेरी गेट
कपूरचन्द कस्तूरचंद जौहरी हनुमानका रस्ता
कांतिलाल छगनलाल जौहरी, बाजार
गुलाबचन्द लूणिया अजमेरी गेट
गोकुलदासजी पूङ्गलिया
गोवर्द्धनलाल बद्रीनारायण जौहरी बाजार
गुलाबचन्द वेद परवानियों का रास्ता
चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी जौहरी बाजार
जौहरीमल दयाचन्द, गोपालजीका रास्ता
कोपस्टर एण्ड कम्पनी जौहरी बाजार
दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार
दुर्गालाल जौहरी हनुमानका रास्ता
नारायण महादेव लड़ोवाले, पीतलियोंका रास्ता
पी० एम० बख्शबक्स अजमेरी गेट
पन्नालाल गनेशीलाल जौहरी बाजार
फतेलाल सुखलाल गोपालजीका रास्ता
पूनमचन्द फतेहचन्द भंडारी चौथमाताका रास्ता
फूलचन्द मानिकचन्द लाल कटलेके पास
बनजीलालजी ठोलिया घी वालोंका रास्ता
भूरामल राजमल सुराना लालकटला
मन्नालाल रामचन्द्र, जौहरी बाजार
रतनलाल पोपलिया हनुमानका रास्ता
शंकरलाल रूपनारायण हनुमानका रास्ता
रामजीमल विट्ठलदास पटनावाले गोपाल मन्दिर
सुगनचन्द सोभागमल जरगड़
सुखलालजी राठी जौहरी बाजार
सुगनचन्द चोरड़िया तेलीपाड़ा
सुन्दरलाल एण्ड सन्स
हाजी इज्जतबक्स मौलाबक्स अजमेरी गेट

कपड़े के व्यापारी

अखिल भारतवर्षीय चरखा संघ खादी भंडार
जौहरी बाजार
केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार
गोपालजी मुरलीधर पुरोहितजीका खंदा
गोपीराम मीनालाल त्रिपोलिया बाजार
गोपीराम दामोदर जौहरी बाजार
गोपीराम देवीलाल जौहरी बाजार
गोपालदास रमणदास जौहरी बाजार
चिमनलाल रवीचन्द पुरोहितजीका खंदा
छोटीलाल नेमीचन्द हवामहल-खंदा
छोटेलाल सुंदरलाल नागावाले, कालेजके नीचे
छोटेलाल चुन्नीलाल जौहरी बाजार
जौहरीलालजी राणा पुरोहितजीका खंदा
बद्रीलाल रामनारायण जौहरी बाजार
बिहारीलाल वासुदेव गोपालजी का रास्ता
मगनलाल फूलचन्द हवा महलका खंदा
मक्खीलाल स्वरूपनारायन जौहरी बाजार
रामचन्द्र मोतीलाल रामगंज बाजार
रामनारायण नाजीराम पुलिसका खंदा

स्व० सेठ भूरामलजी सुराना (भूरामल गजमल) जैपुर

श्री० पूनमचन्दजी भंडारी, जैपुर

श्री० गजमलजी सुराना जौहरी (भूरामल गजमल) जैपुर

श्री० सुगनचन्दजी चोरड़िया जौहरी जैपुर

मेसर्स रतनलाल छुट्टनलाल पोपलिया

इस फर्मके मालिक श्रीमाल (जैन) सज्जन हैं। इस खानदानमें जवाहरातका व्यापार पीढ़ियोंसे चला आया है तथा यहांके जौहरियोंमें यह दुकान पुरानी है। इस समय फर्मके मालिक सेठ रतनलालजी पोपलिया हैं। आपके पिताजी श्रीगवाहरलालजीके देहान्त समय आपकी उम्र सिर्फ ८ वर्षकी थी। आपकी छोटी आयुमें दूकानके कारोबारको स[म्हालने] वाला कोई सुयोग्य व्यक्ति नहीं था इसलिये उस समय इस फर्मका व्यवसाय कुछ धीमा चलता था। सेठ रतनलालजीने होशियार होकर दूकानको फिर व्यवस्थित ढंगसे चला[या।] आपके १ एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्रीयुत छुट्टनलालजी हैं आपकी दूकानपर जवाहरातके प्रकारके गहने तयार रहते हैं तथा बनवाये जाते हैं।

मेसर्स एस० फोरास्टर एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। फर्मकी स्थापना सन् १८८० में हुई। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्री राजमलजी गोलेछा करते हैं। जयपुरके ओसवाल समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्री राजमलजीके पुत्र कुंवर ... मलजी गोलेछा भी व्यापारिक कार्योंमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें आपकी कम्पनीमें कार्पेट, ग्रास, ग्रास इलामिल, मैन्युफेक्चरर्स, पेट्रूमें, मनो एजेन्ट्स गवर्नमेन्ट मर्चेन्ट आदिका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर स्टेण्डर्ड आइल कम्पनी की रैल्वो एजन्सी और नेशनल एनीलिन एण्ड केमिकल कं० की रंगकी एजंसी है। यह फर्म ... मेन्युफेक्चरर भी है।

मेसर्स सुगनचन्द सोभागचन्द

इस फर्मके मालिक खास निवासी देहलीके हैं। इस फर्मकी स्थापना ... चन्दजीने की। आरम्भमें आपने बहुत छोटे रूपमें व्यापार शुरू किया था। श्री सुगनचन्द[जीके] बाद इनके पुत्र सेठ सोभागचन्दजीने इस दूकानके व्यापारको बढ़ाया। आपको ... सरैसे इम्पीरियल गोल्डके बाबत सार्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। संवत् १९३३ में आपका देहान्त हु[आ।]

वर्तमानमें इस दूकानके मालिक सेठ सोभागचन्दजीके पुत्र सेठ इन्द्रचन्दजी हैं ... में यहां फर्मके मालिकने जो देहली दरबार हुआ था, उसमें ... सार्टिफिकेट लिया था। वर्तमानमें आपकी फर्म पर इम्पीरियल ..., जवाहरात और ... का व्यापार होता है।

पिलानी

जयपुर स्टेट रेलवेके झुंझनू स्टेशनसे ३५ मीलकी दूरीपर यह छोटी सी रमणीक बस्ती बसी हुई है। वैसे तो यह एक छोटा सा गाव है, मगर बिड़ला परिवारके यहां रहनेकी वजहसे बड़ा गुलचमन मालूम होता है। इस मानमें बिड़ला परिवारकी कई बड़ी २ इमारतें, हाई स्कूल और बोर्डिङ्ग हाउस बने हुए हैं, जिनका परिचय तथा फ़ोटो आगे दिये जा रहे हैं। पाठकोंको पता चलेगा कि बिड़ला परिवारकी वजहसे यह छोटी सी बस्ती कितनी रमणीक और आबाद हो गई है।

बिड़ला परिवार

अब हम पाठकोंके सन्मुख एक ऐसे परिवारका परिचय रखना चाहते हैं जिसने अपने विशिष्ट गुणोंसे इतिहासके अमर पृष्ठोंमें अपना नाम अंकित कर दिया है, जिसने न केवल अपनी व्यापारिक प्रतिभासे करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति ही कमाई है, प्रत्युत व्यापारके महान आदर्शको संसारके सन्मुख प्रत्यक्ष करके दिखला दिया है; जिसने अपने अनुभवोंसे दिखला दिया है कि गरीब मजदूरोंसे कमसे कम मजदूरीमें पशुओंकी तरह बारह २ घण्टे काम लेकर धन इकट्ठा करनेका नाम सफल व्यवसाय नहीं है—प्रत्युत पूर्ण मनुष्यत्वके साथ सबके हकोंपर खयाल रखकर व्यापारिक जगतमें सफल होना ही सफल व्यवसायीके लक्षण हैं।

जो सज्जन भारत प्रसिद्ध बिड़ला परिवारसे कुछ भी परिचित हैं, वे भली प्रकार इस बातको समझ सकते हैं कि हमारे उपरोक्त कथनमें अतिशयोक्ति की तनिक भी मात्रा नहीं है। ऐसे आदर्श परिवारका परिचय इस ग्रन्थके लिये बहुत बड़े गौरवका कारण है। यह जानकर हम बड़ी प्रसन्नताके साथ पाठकोंके सन्मुख इस परिवारका संक्षिप्त परिचय रखते हैं।

व्यापारके अन्दर कुशलता प्राप्त करके धनको प्राप्त करना बहुत कठिन है, उसमें भी बिना

श्री सेठ सुखलालजी राठी (मथुरादास सुखलाल) जैपुर

श्री ईश्वरलालजी मोगानी (सपत्नीक) गे

ी सूरजमलजी राठी (मथुरादास सुखलाल) जैपुर

श्री इन्द्रचन्दजी जरगड़ (मगनचन्द

मुद्धिमत्ताके साथ अपनी आफिसका संगठन किया है वह भी दर्शनीय है। मारवाड़ी व्यापारियोंमें भारत भरमें ऐसा व्यवस्थित आफिस दूसरा नहीं है। इस आफिसमें प्रत्येक डिपार्टमेंटके हक अलग २ निकले हुए हैं और उस डिपार्टमेंटके पास ही उस आफिसके मैनेजरका एक स्वतन्त्र रूम रखा गया है। इस प्रकार पूर्ण व्यवस्थाके साथ शांतिपूर्वक आफिस चलता रहता है।

प्रायः देखा जाता है कि पूंजीपतियों और श्रमजीवियों, मालिकों और कार्य-कर्त्ताओंके हितोंमें अक्सर अनैक्य पाया जाता है। मालिक उनसे अधिकसे अधिक काम लेकर कमसे कम वेतन देना चाहते हैं। मगर बिड़ला परिवार इस अनिवार्य्य दोषसे भी मुक्त है। श्रीयुत घनश्यामदासजीका ध्यान अपने कार्यकर्त्ताओंके हितोंकी ओर हमेशा रहता है। आपने अपनी आफिसमें मिनिमम वेतन ४०) कर दिया है। इससे कम वेतन किसी कार्यकर्त्ताको नहीं दिया जाता। इसी प्रकार आफिसके टाईममें भी समयकी मर्यादा स्थापित कर दी है।

उपरोक्त बिड़ला ब्रदर्सके द्वारा होनेवाले मुख्य २ व्यापारोंका परिचय इस प्रकार है—

(१) जूटके मुकामोंसे जूट इकट्ठा करना और गांठें बांधकर उन्हें एक्सपोर्ट (निर्यात) करना। इस कार्यमें यह फर्म भारतवर्षमें राली ब्रदर्सके दूसरे नम्बरकी है।

(२) हैसियन, गनी आदिका एक्सपोर्ट करना। इस व्यवसायमें यह फर्म मुख्य २ शिपर्समेंसे है।

(३) अलसी, गल्ला, तिलहन आदि द्रव्योंको एक्सपोर्ट करना।

(४) चांदीका इम्पोर्ट करना। इस व्यवसायमें भी यह फर्म भारतवर्षमें बहुत अग्रगण्य है।

(५) रूईका व्यापार।

(६) बीमेका काम।

इसके अतिरिक्त यह फर्म कई कम्पनियों और मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है:—जैसे (१) बिड़ला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी (२) केशोराम कॉटन मिल्स लिमिटेड कलकत्ता (३) जयाजीराव कॉटन मिल्स लि० ग्वालियर (४) बिड़ला कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० दिल्ली (५) जूट सप्लाय एजन्सी लि० (६) गोविन्द शुगर मिल्स लिमिटेड (७) चित्पुर जूट प्रेस लिमिटेड (८) बिड़ला कॉटन फेक्टरी लि० कलकत्ता (९) इंडियन शिपिङ्ग कम्पनी कलकत्ता (१०) कॉटन एजेंट्स लिमिटेड बम्बई (११) जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लि० कलकत्ता (१२) नॉर्दन जूट प्रेस लिमिटेड कलकत्ता (१३) नेशनल एअरवेज लि० कलकत्ता।

उपरोक्त वर्णित कारखानोंमेंसे कुछका परिचय निम्न प्रकार है।

(१) बिड़ला जूट मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी—यह मिल सन् १९१९ में ५०००००) की पेड अप केपिटलसे शुरू हुई। इसमें ८४० लूम्स हैं।

४—फिलाडेलफिया (अमेरिका)—सोगानी एण्ड को० इंकारपोरेशन १५०० स्टीमसन स्ट्री: व्यापार होता है।

५—क्लीवर्लेंड—सोगानी एण्ड को० इन्कारपोरेशन--उपरोक्त व्यापार होता है।

मेसर्स सुन्दरलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिक खास निवासी आगराके हैं। इस फर्मको यहांपर खुले हुए २१ ... हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीप्रमूलालजीने अपने बड़े भाई सुन्दरलालजीके नामसे की। इसके व्यवसायको आपहीने उन्नतिपर पहुंचाया।

इस फर्मको बृटिश एम्पायर एक्जीबीशन विम्बले (लंदन) से सार्टिफिकेट और तथा और भी कई प्रदर्शनियोंसे अच्छे २ सार्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—सुन्दरलाल एंड संस, यहां सब प्रकारका क्युरिओ सिटीका व्यापार होता है।

कमीशन एजेंट

मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैष्णव सम्प्रदायके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ... वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुई। तथा इसकी विशेष तरक्की इस दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत प्रल्हाददासजीके हाथोंसे हुई। आप सेठ मोतीलालजीके पुत्र हैं श्रीयुत मो... का स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष होगये। तबसे आप ही इस कामको सम्हालते हैं

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबचन्दजी है। आप बड़े सज्जन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकाने हैं

१ जयपुर—मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल, रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूतका थोकबन्द होता है। T. A. Rama

२ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर जयपुरके रंगे हुए पगड़ी पेचा, लहरिया आदि कपड़ोंका थोक और फुटकर व्यापार होता है।

३ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर लट्ठा, धोती आदि देशी कपड़ोंका व्यापार हो:

४ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल इस दूकानपर Bayer Company की रंगकी एजंसी है।

५ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर बैंकिङ्ग और कमीशन एजन्सीका काम होता

हाउस, जैन पाठशाला और औषधालय बना हुआ है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ जयपुर—हरबख्श सूरजमल जौहरी बाजार—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

२ जयपुर—हरबख्श सूरजमल धानमंडी—यहां गल्ले और जीरेका व्यवसाय होता है।

३ जयपुर—हरबख्श सूरजमल-कॉटन जीन प्रेस—यहां रुई। कपासका व्यापार होता है।

४ आगरा—हरबख्श सूरजमल बेलनगंज-यहां आढ़त तथा हुण्डीका काम होता है। यह फर्म ... वर्षोंसे यहां स्थापित है।

५ बम्बई—चैनसुख चन्दनमल भोलेश्वर, T. A. Marothawala—यहां आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी का व्यापार होता है।

कपड़े और गोटेके व्यापारी

मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द कपूर

इस फर्मके मालिक खण्डेलवाल श्रावक जातिके सज्जन (दिगम्बर-धर्मावलम्बी) हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ३२ वर्ष हुए। इसके मूल संस्थापक श्रीयुत लाला चिमनलालजी हैं, जो कि जयपुर रियासतमें महकमा इमारतके अफसर थे। इसकी विशेष तरक्की इन्हींके हाथोंसे हुई। ला० चिमनलालजी बड़े योग्य और सज्जन पुरुष थे। जयपुरकी जनतामें तथा राज्यमें आपका बड़ा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन ला० चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत केशरलालजी करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीयुत कस्तूरचन्दजी इस समय अपने पिताजीके स्थानपर महकमा इमारतके आफिसर हैं।

श्री केशरलालजीको शिक्षा और विद्याभ्याससे बड़ा प्रेम है। यहांपर आपका एक मंदिर और कोठी बनी हुई है। आपके इस समय पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े श्रीयुत कस्तूरचन्दजी जिनकी उम्र अभी केवल २० वर्षकी है, बी० ए० में पढ़ रहे हैं। शेष चार भी विद्याध्ययन कर ...

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूत, कपड़ा तथा गोटे का व्यवसाय होता है।

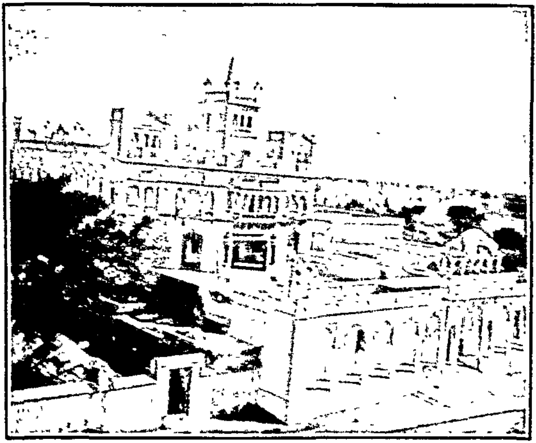

बिड़ला गेस्ट हाऊस, पिलानी (जैपुर)

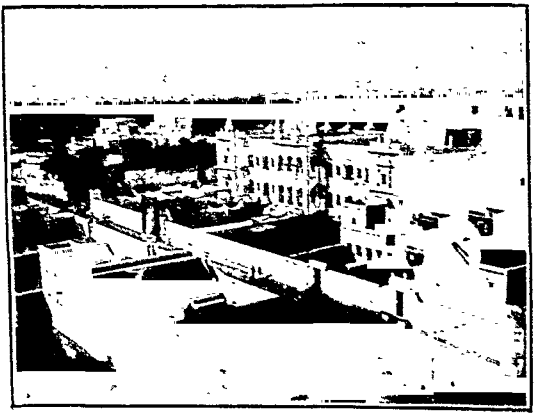

फतहपुर

यह सीकर रियासतका सबसे बड़ा शहर है। यह शहर बहुत पुराना है। इसका इतिहास भी प्राचीन है। इसकी बसावट बहुत बड़ी है। चारों ओर बालूके सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ यह शहर बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। जयपुर स्टेट रेलवेके डूंडलोद नामक स्टेशनसे यहांतक मोटर सर्विस रन करती है। रामगढ़ और फतहपुरके बीचमें १४ मीलका अन्तर है। यहांसे लक्ष्मण गढ़तक मोटर जाती है, पर स्थायी रूपसे नहीं चलती। लक्ष्मण गढ़ यहांसे १४ मील है। वहांसे सीकर तक मोटर सर्विस रन करती है। सीकर लक्ष्मण गढ़से १८ मीलके फासलेपर है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ और बाजरा है। यहां भी निकासी बन्द है। इस स्थानपर भी कई बड़े २ श्रीमन्तोंके मकानात आदि बने हुए हैं। उनका व्यापार बाहर होता है। अतएव उनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा। फतेहपुरमें सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवालकी छत्री दर्शनीय वस्तु है। आपकी ओरसे शहरमें नलका भी प्रबंध है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कालूराम ब्रजमोहन

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० १२३ में दिया गया है।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपकी ओरसे यहां एक गुरुमुखराय जैन स्कूल स्थापित है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ९६ में दिया गया है।

मोटरकार डीलर्स

गोनसेका एण्ड को० अजमेरी गेट
हरिनारायण मोहरीलाल त्रिपोलिया

प्रिंटिंग प्रेस

प्रेमप्रकाश प्रेस पिपलियोंका रास्ता
बालचन्द यन्त्रालय अजमेरीगेट
मनोरंजन प्रेस गोपालजीका रास्ता

फोटो ग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

इन्द्रचन्द बद्रीप्रसाद अजमेरीगेट
गोविंदराम एण्ड संस अजमेरीगेट
जी० एन० भैरवलाल त्रिपोलिया बाजार
बी० चन्द्रलाल चांदपोल बाजार
दी राजपूताना फोटो आर्ट स्टूडियो स्टेशनरोड

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

हिन्दी प्रचार पुस्तकालय त्रिपोलिया
कन्हैयालाल बुकसेलर
स्टूडेन्ट्स को-आपरेटिव्ह सोसायटी
महाराजा कालेज

स्टेशनर

एल० एस० सक्सेना त्रिपोलिया बाजार
किस्तूरचन्द रामचन्द्र कागजी

अत्तार

केशव अत्तार गेटरजीका रास्ता
चुन्नीलाल अत्तार सांगानेरी द्
सुमनजी अत्तार
वल्लभराम रामनारायण त्रिपोलिया

परफ्यूमर्स

जमनादास श्री नारायण त्रिपोलिया
राधावल्लभ चौड़ा रास्ता

बंदूक कारतूस आदिके व्या

अब्दुलरहीम अब्दुलकरीम जौहरी बा
नवरोमजी जमशेदजी जौहरी बाजार

होटल्स एण्ड धर्मशालाज़

किंग एडवर्ड मेमोरियल होटल अजमेरीगेट
जयपुर होटल
न्यू होटल
राजपूताना होटल अजमेरीगेट
धर्मशाला चांदपोलगेट
माजी साहबकी धर्मशाला
पुगलियों की धर्मशाला, (केवल ओसवाल जैनियोंके लिये)
मल्जी छोगालाल की धर्मशाला
(केवल विद्यार्थियोंके लिये)
इनके अतिरिक्त ९-१० धर्मशाला और हैं

लायब्रेरीज़

दि महाराजा पब्लिक लायब्रेरी चांदपोल
पद्मावती पुस्तकालय जौहरी बाजार
वर्द्धमान जैन पुस्तकालय बाईजीका रास्ता
कल्याण पुस्तकालय

रामगढ़

रामगढ़ सीकर रियासतका एक बड़ा कस्वा है। यह बीकानेर स्टेट रेलवेकी देपालसर नामक स्टेशनसे ५ मीलकी दूरीपर स्थित है। स्टेशनसे शहरतक मोटर सर्विस शुरु है। चारों ओर वालूके होनेसे और पानीकी कमीके कारण यहां सिर्फ एक ही फसल होती है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ और बाजरी है। यहांसे निकासी बंद है। यहां कई व्यापारियोंका निवास स्थान है, जिनका व्यापार बम्बई कलकत्ता प्रभृति स्थानोंमें जोरोंसे चल रहा है। उनकी आलिशान इमारतें देखने योग्य हैं। यहां कई सार्वजनिक संस्थाएं भी हैं। यहांके व्यापापारियोंमेंसे कुछका परिचय यहां दिया जाता है। शेष स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गोरखराम गणपतराय

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूलनिवास स्थान यहींका है। वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ गणपतरायजी हैं। आपके रामगोपालजी नामक एक पुत्र हैं। विशेष परिचयके लिये बम्बई विभाग पेज नं० १२५ देखिये।

मेसर्स जौहरीमल रामलाल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्री सेठ नन्दकिशोरजी, सेठ जुगलालजी, सेठ किशनलालजी और सेठ गोविन्द प्रसादजी करते हैं। आपका विशेष विवरण बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० १२५ में दिया गया है।

मेसर्स घुरसामल घनश्यामदास

इस प्रसिद्ध और पुरानी फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी तथा आपके पुत्र श्री राम-निवासजी और श्री बालकृष्ण लालजी तथा स्व० सेठ राधा कृष्णजीके पुत्र श्री रघुनाथ प्रसादजी, श्रीजानकी प्रसादजी, श्री लक्ष्मणप्रसादजी और श्री हनुमसादजी हैं। आपकी फर्म पर तेलकी तोल पजंसीका काम होता है। इस फर्मकी ओरसे यहां कुछ मन्दिर वगैरह बहुत अच्छे बने हैं। विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ५६ में देखिये।

लक्ष्मणगढ़

यह जयपुर राज्यके अन्तर्गत सीकर नरेशके अण्डरमें है। इसके लिये जयपुर-स्टेट रेलवेके सीकर स्टेशनपर उतरना पड़ता है। यहांसे यह १८ मील दूर है। सवारीके लिए मोटर लारी रन करती है तथा ऊंटोंसे भी जाया जाता है। यहां व्यापार तो कुछ नहीं है पर कई धनी लोगोंके निवास स्थान यहां होनेसे काफी चहल पहल रहती है। यहांसे फतहपुर १४ मीलकी दूरी पर है। टेम्परेरी रूपमें यहांसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह सीकर राज्यका एक आवाद कस्वा समझा जाता है।

यहां निम्नलिखित व्यापारियोंका निवास स्थान है। समय २ पर पुस्तकके अलग २ भागमें यथा स्थान आपके विस्तृत परिचय दिये जायेंगे।

मेसर्स चेतराम रामबिलास	सेठ लक्ष्मीराम जी चूड़ीवाला
,, प्रेमसुखदास ब्रह्मदत्त	मेसर्स फूलचन्द केदारमल
सेठ रामलाल जी गनेड़ीवाल	मेसर्स वलदेवराम गोरखराम

नवलगढ़

यह कस्वा जयपुर राज्यके जागीरदारके अंडरमें है। जयपुर-स्टेट रेलवे जयपुर-झूंझनू लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनके पास यह बसा हुआ है। नवलगढ़ स्टेशनसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह स्थान भी रेतीला है। यहांका प्रधान व्यापार तो कुछ नहीं है, हां, मूंग, मोठ, बाजरी, आदिका व्यापार अच्छा होता है। यहांके बड़े २ व्यापारी लोग बाहर अपना व्यापार करते हैं। उनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड को०

इस फर्मके मालिक सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यहां आपने एक ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित कर रखा है इसमें करीब ६० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। आपकी ओरसे और भी स्थानोंपर स्कूल चल रहे हैं। आपका पूरा परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ६४ में देखिये।

([illegible]) [illegible] फाटन [illegible]

[illegible] सन [illegible]

इसमें [illegible] और [illegible]

(३) [illegible] काटन [illegible]

सन १९०? में [illegible] हुई [illegible]

(४) [illegible]

१९०० में [illegible] गई इसमें [illegible] और [illegible]

(५) इंडियन [illegible]

खोली गई।

(६) नेशनल एअरवेज [illegible]

खोली गई। इसका उद्देश हवाई जहाजकी [illegible]

इसी प्रकार और भी कम्पनियोंका [illegible]

इस फर्मके एजंट प्राय: संसारके [illegible]

कम्पनीके नामसे बिड़ला परिवारकी एक फर्म [illegible]

मेन्यूफैक्चर हैं। आपका नाम भी० कस्तूरमलजी [illegible]

मुख्य २ कार्यकर्ता

बिड़ला ब्रदर्स लि०के प्रधान २ कार्यकर्ताओंके [illegible]

(१) श्रीयुत गंगाबक्सजी कानोड़िया—प्रधान [illegible]

(२) श्रीयुत भागीरथजी कानोड़िया—प्रधान [illegible]

(३) श्रीयुत देवीप्रसादजी खेतान—काटन मि[illegible]

(४) श्रीयुत सुन्दरमलजी जालान—जूट सप्लाय [illegible]

(५) श्रीयुत गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—जूट एक्स[illegible]

(६) श्रीयुत विश्वेश्वरलालजी छावछरिया—सीड्स [illegible]

(७) श्रीयुत मदनलालजी जाजोदिया—जूट मिल्स [illegible]

(८) श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मंडेलिया—जूट मिल्स [illegible]

(९) श्रीयुत घनश्यामदासजी कैथोलिया—केरोसिन [illegible]

(१०) श्रीयुत सीतारामजी [illegible]

(११) श्रीयुत [illegible] गवालिया [illegible]

[illegible] बुकशोर्ड लि० [illegible]

(२) केशोराम काटन मिल्स लि०—यह मिल ६० लाखके आर्डिनेरी और २० लाखके प्रेफरेन्स शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९१९ में खोली गई। यह बिड़ला ब्रदर्सके हाथमें १९२४ में आई। इसमें १५०० लूम्स और ८८००० स्पेण्डिल्स हैं।

(३) जयाजीराव काटन मिल्स लि०—यह मिल ३५ लाखके आर्डिनेरी शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९२१ में स्थापित हुई। इसमें ७६७ लूम्स और २९८७२ स्पेंडिल्स हैं।

(४) बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०—यह मिल १० लाखकी पूंजीसे सन् १९२० में खोली गई। इसमें ४९३ लूम्स और १७९२० स्पेंडिल्स हैं।

(५) इंडियन शिपिङ्ग कम्पनी कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२८में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई।

(६) नेशनल एअरवेज लि० कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२७ में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई। इसका उद्देश हवाई जहाजकी सर्विसको शुरू करनेका है।

इसी प्रकार और भी कम्पनियोंका विवरण है।

इस फर्मके एजंट प्राय: संसारके सभी देशोंमें रहते हैं। लण्डनमें ईस्ट इण्डिया मेटल कम्पनीके नामसे बिड़ला परिवारकी एक फर्म स्थापित है। इस फर्मके सेक्रेटरी एक मारवाड़ी ग्रेज्यूएट हैं। आपका नाम श्री० कस्तूरमलजी बांठिया है।

मुख्य २ कार्यकर्ता

बिड़ला ब्रदर्स लि०के प्रधान २ कार्यकर्ताओंका परिचय इस प्रकार है।

(१) श्रीयुत गंगाधरजी कानोड़िया—प्रधान मुनीम
(२) श्रीयुत भागीरथजी कानोड़िया—प्रधान मैनेजर
(३) श्रीयुत देवीप्रसादजी खेतान—काटन मिल्सके मैनेजर
(४) श्रीयुत जुहारमलजी जालान—जूट सप्लाय एजन्सीके मैनेजर
(५) श्रीयुत गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—जूट एक्सपोर्ट डि० के अ० मैनेजर
(६) श्रीयुत विश्वेश्वरलालजी छावछरिया—सीड्स डि० के० मैनेजर
(७) श्रीयुत मदनलालजी डालमिया—जूट मिल्सके सेक्रेटरी
(८) श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मंडेलिया—जूट मिलके मैनेजर
(९) श्रीयुत घनश्यामदासजी कैंथोलिया—केशोराम काटन मिलके सेक्रेटरी
(१०) श्रीयुत सीतारामजी खेमका—दिल्ली और ग्वालियर मिलके सेक्रेटरी
(११) श्रीयुत हनुमानप्रसादजी बगड़िया—गनी एक्सपोर्ट डि० इंचार्ज
(१२) श्रीयुत बिहारीलालजी खेतान—प्रोड्यूस डि० के० मैनेजर
(१३) श्रीयुत कस्तूरमलजी बांठिया—लंदन फर्म के सेक्रेटरी

मंडावा

मंडावा जयपुर राज्यान्तर्गत है। इसके आसपास कई मिलोंतक रेलवे नहीं है। यहां भी अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जाता है। विशेष परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक श्री सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा औषधालय चल रहा है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ४३में दिया गया है।

मेसर्स हरिबक्स दुर्गाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान यहींका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर मोहनलाल हीरानन्दके नामसे व्यापार होता था। करीब १५ वर्षोंसे यह फर्म इस नामसे व्यवसाय कर रही है। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आपके तथा आपके भतीजे सेठ हरिबक्सजीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई।

इस समय इस फर्मके सञ्चालक सेठ हरिबक्सजी तथा आपके पुत्र श्री दुर्गाप्रसादजी, श्री गोवर्धनदासजी और श्री रामनिवासजी हैं। श्री गोवर्धनदासजी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ताके सेक्रेटरी हैं।

इस फर्मकी ओरसे बद्रीनारायणके रास्तेमें एक धर्मशाला बनी हुई है। वहां सदावर्तका भी प्रबंध है। मंडावामें भी आपकी धर्मशाला तथा मन्दिर बने हुए हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स हरिबक्स दुर्गाप्रसाद—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका मैनचेस्टरसे इम्पोर्ट होता है। जापानसे रेशमका भी यहां इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मके द्वारा लंदन, जर्मनी आदि स्थानोंपर जूट, हेसियन, चपड़ा आदि वस्तुओंका एक्सपोर्ट होता है। यहां आपकी स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी है।

नीचे लिखी फर्में भी यहींकी हैं। जिनका परिचय दूसरे भागोंमें चित्रों सहित स्थान २ में दिया जायगा।

मेसर्स देवीसहायजी सराफ	मेसर्स बन्शीधर सूरजमल
मेसर्स बस्तीराम द्वारकादास	„ शिवदयाल आनंदराम
„ मूलचन्द चंडीप्रसाद	सेठ केशवदेवजी सराफ

श्री० राजा बलदेवदासजी बिड़ला

श्री० जुगलकिशोरजी बिड़ला

श्री० रामेश्वरदासजी बिड़ला

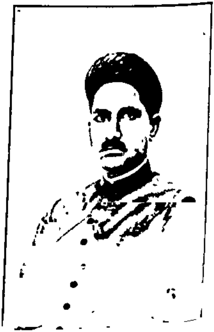

श्री० घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०

मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत गुलाबचन्द जी काला हैं। आप श्रावक जैन खण्डेलवाल पतिके हैं। आपका मूल निवास स्थान सांभर हीमें हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब चालीस-पचास वर्ष हो गये। इसकी स्थापना श्रीयुत गणेशलालजीके हाथोंसे हुई—तथा इसकी विशेष तरक्की भी उन्हींके हाथोंसे हुई। श्रीयुत गणेशदास जीके पुत्र श्रीयुत गुलाबचंद जी हैं। आप बड़ेही योग्य सज्जन और समझदार आदमी हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी खूब तरक्की हुई।

श्रीयुत गुलाबचन्दजीका विद्या-प्रेम भी बहुत बढ़ा चढ़ा है। आपकी ओरसे साम्भरमें "सांभर पुस्तकालय" नामक एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुला हुआ है। कुछ दिनों पूर्व आपकी ओरसे एक औषधालय खुला हुआ था। मगर किसी योग्य वैद्यके न मिलनेकी वजहसे वह आजकल बन्द है।

आपकी दुकानें निम्नांकित स्थानोंपर हैं।

(१) हेड आफिस—साम्भर—मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल—इस दुकानपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, नमक और बारदानेका व्यवसाय होता है।

(२) साम्भर—मेसर्स गुलाबचन्द माणिकचन्द—इस दुकानपर नमक और गल्लेकी कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

(३) मदनगंज-किशनगढ़—मेसर्स राधामोहन गुलाबचन्द—इस दुकानपर सुत, आढ़त और गल्लेका काम होता है।

आपके इस समय एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्री माणिकचन्दजी है। ये इस समय विद्या-ध्ययन करते हैं।

—:०—

मेसर्स दीवानचंद एण्ड कम्पनी

इस कम्पनीका हेड आफिस देहलीमें है। इसके मालिक श्रीयुत लाला दीवानचन्दजी हैं। आप बड़े उत्साही, सज्जन और व्यवसायदक्ष पुरुष हैं। आप उन स्वावलम्बी व्यक्तियोंमेंसे हैं जिन्होंने अपने निजके परिश्रमसे लाखों रुपयेकी दौलत कमाई है। आपका जन्म खत्री वंशमें हुआ है। आपके यहां गवर्नमेंण्ट व मिलीटरीकी ठेकेदारीका बहुत बड़ी तादादमें काम होता है। आपकी महिन्दरमें चूनेकी एक बड़ी फेक्टरी है। जिसकी निकासी १० वेगन डेली है। यह फेक्टरी इम्पीरियल स्टोर लाइम मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनीके नामसे मशहूर है।

सन १९२३में लालाजीका विचार साम्भरमें व्यापार करनेका हुआ और उन्होंने अपनी शाखा साम्भरमें बनी सात स्थापित कर दी। जोकि दो तीन वर्षतक अपनी मध्यावस्थामें चलती र

श्रीयुत गजाननजी बिड़ला—आप श्रीयुत रामेश्वरदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा बहुत अच्छे ढंगसे हुई है। बड़े योग्य नवयुवक हैं। इस समय आफिसमें काम देखते हैं।

श्रीयुत लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला—आप श्रीयुत घनश्यामदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा भी बहुत अच्छे ढंगसे हुई है।

बिड़ला परिवारमें बालकोंको शिक्षा देनेका बहुत अच्छा प्रबन्ध है। दूसरे धनवान परिवारोंकी तरह इस परिवारके नवयुवक आलसी और अकर्मण्य नहीं रहने पाते। उनकी आन्तरिक शक्तियोंका मनोवैज्ञानिक ढंगसे शुभ विकास किया जाता है।

बिड़ला परिवारके सार्वजनिक कार्य

बिड़ला हाईस्कूल, पिलानी—करीब १०, १५ वर्ष पूर्व यह स्कूल मिडिल स्कूलके रूपमें स्थापित हुआ था। अब चार वर्षोंसे यह हाईस्कूलके रूपमें परिवर्तित हो गया है। शायद इसमें अब एफ० ए० तककी पढ़ाई होती है। इस समय इसमें ४०० विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिनमें आधेसे अधिक विद्यार्थी बाहरके हैं। यहांके प्रिन्सिपल श्री० चन्द्रकुमारजी एम० ए० हैं।

बिड़ला बोर्डिंग हाउस, पिलानी—करीब ३ साल पूर्व यह संस्था स्थापित हुई। इसमें बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंके लिये ठहरने और भोजनकी व्यवस्था है। इसमें करीब १०० विद्यार्थी रहते हैं, जिनमें बहुतसे फ्री भोजन पाते हैं।

बिड़ला संस्कृत पाठशाला—इसे शुरू हुए करीब २०,२५ वर्ष हुए। इसमें १०,१५ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

बिड़ला अछूत पाठशाला—यह पाठशाला करीब ४ सालसे स्थापित है। इसमें ४० विद्यार्थी करीब शिक्षा पाते हैं।

इनके अतिरिक्त कई सार्वजनिक संस्थाएं आपकी सहायतासे चल रही हैं। और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आपकी ओरसे कुछ न कुछ दिया ही जाता है। आपकी दानशीलता प्रसिद्ध है। मतलब यह कि बिड़ला परिवार न केवल मारवाड़ी जातिहीके लिये प्रत्युत सारे भारतके लिये गौरवकी वस्तु है।

(१) हेड ओफिस—कुचामन रोड मगनीराम रामाकिशन—इसदूकानपर इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, इस दुकानपर नमक, बारदाना और हुण्डी चिट्ठीका अच्छा व्यापार होता है।

(३) आकोदिया—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर रुई, हुण्डी चिट्ठी और गल्लेका व्यापार होता है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(४) शुजालपुर—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहां रुई, गल्ला और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(५) बेरछा—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहां पर रुई, हुण्डी, चिट्ठी और मिरचोंका व्यापार होता है। क्योंकि बेरछामें मिरचोंकी आमद बहुत है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(६) कालापीपल—(उज्जैन) इस दूकानपर रुई और गल्लेका व्यवसाय होता है।

(७) लखीमपुर खैरी—(U.P.) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन—यहांपर गुड़, गल्ला और तिलहनका व्यवसाय होता है।

(८) सीतापुर सिटी—मेसर्स मगनीराम रामकिशन (T A Brajmohan) इस दूकानपर गुड़ और गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांका गुड़ मशहूर है।

(९) नगीना (बिजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर गुड़, शक्कर और चीनी (बनारस) का व्यापार होता है।

(१०) धामपुर—(बिजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर गुड़ शक्कर और चीनीका तथा गल्लेका व्यवसाय होता है।

(११) कांठ—(मुरादाबाद) इस दुकानपर गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यापार होता है।

(१२) कोटद्वारा—(गढ़वाल) यह दूकान बद्रीनाथके पहाड़के किनारेपर है। यहां आढ़तका काम होता है और कच्चा सुहागा चावल और कोटू [फलाहारी वस्तु विशेष) का व्यवसाय होता है।

श्रीयुत सूर्यमलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी है ये विद्याध्ययन करते हैं।

मेसर्स रामधन जौहरीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामधनजी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। आपका खास निवास स्थान सांभरहीमें है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्रीयुत रामधनजीके पुत्र श्रीयुत बख्तावरलालजीके हाथोंसे हुई।

इस समय इस फर्मकी निम्नांकित स्थानोंपर दूकानें हैं—

मेसर्स ब्रजमोहन सीताराम

इस फर्मके संचालक श्रीयुत सेठ ब्रजमोहनजी, हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागमें दिया गया है।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आपका व्यापार आजकल इन्दौरमें है। अतएव आपका विशेष परिचय इन्दौर विभागके पेज नं० २६ में दिया गया है।

मेसर्स हीरालाल रामगोपाल

इस फर्मके निवासी यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके लोगोंकी यहां एक छत्री और मन्दिर बना हुआ है। छत्री देखने योग्य है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक केशवदेवजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० १२३ में दिया गया है।

यह शहर निम्नलिखित प्रतिष्ठित व्यापारियोंका मूल निवास स्थान है। जिनका विशेष परिचय इस पुस्तकके अलग पार्टमें स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स कन्हैयालाल किरडोचन्द
- ,, खेतसीदास गोर्धनदास नेवटिया
- ,, गोरखराम रामप्रताप चनड़िया
- ,, गोपराज ज्वालादत्त भरतिया
- ,, गोरखराम मिश्रीमल
- ,, गुलवराय गोवर्धनदास
- ,, चतुर्भुज जगन्नाथ
- ,, जानकीदास ब्रजमोहन
- ,, जगन्नाथ दुर्गादत्त मेमका

सेठ जयदयालजी कसेरा

मेसर्स द्वारकाराम हनुमानबक्स

सेठ नागरमलजी गोयनका

मेसर्स बालूराम जयदेव
- ,, माधोप्रसाद नागरमल
- ,, रामवल्लभ फूलचन्द नेवटिया
- ,, रामचन्द्र ईसरदास पोद्दार

मेसर्स लूनकरणदास हनुमानबक्स
- ,, लूनकरणदास [illegible]

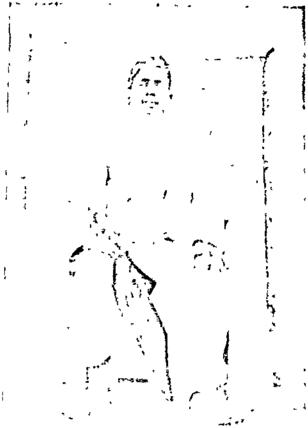

सेठ राधामोहनजी मट्टाणी, मामलेक

सेठ सीतारामजी मट्टाणी, सांभलेक

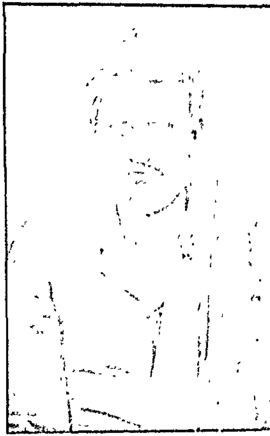

सेठ झूंथालालजी (फर्म मी माणकचन
सुजानगढ़

मेसर्स रामबक्ष खेतसीदास

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। इसके मालिक श्री सेठ खेतसीदासजी हैं। आप वृद्ध और अनुभवी सज्जन हैं। आपके एक पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईके विभागमें दिया गया है।

मेसर्स हरनन्दराय सूरजमल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल रुईया सज्जन हैं। वर्तमान मालिक श्री सेठ सूरजमलजी हैं। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० ... में दिया गया है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुईया

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री सेठ रामनारायणजी रुईया हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपके बड़े पुत्रका नाम श्रीयुत रामनिवासजी है। यहां आपकी तथा आपके भाई सूरजमलजीकी ओरसे एक औषधालय चल रहा है। आपका विशेष परिचय बंबईविभागमें पेज नं० ६० में दिया गया है।

यहां निम्नलिखित और भी अच्छे २ व्यापारियोंका निवास स्थान है। स्थान २ अभाव से भी परिचय छापा जायगा—

सेठ केशवरामजी पोद्दार	सेठ देवीप्रसादजी खेतान
मेसर्स गुरुदयाल बाबूलाल खेमका	मेसर्स फूलचन्द मोतीलाल साबूका
,, गुरुदयाल गंगाबक्ष	मेसर्स महादयालजी कालूराम
,, गोकुलचन्द हरिवगस	,, लक्ष्मीनारायण जैदेव
,, जोखीराम केदारनाथ	,, शिवप्रसाद हरदत्तराय
,, जयनारायण रामचन्द्र	,, हरदत्तराय मोतीलाल भड़ारका
सेठ जुगलकिशोरजी रुईया	,, हरमुखराय गोपीराम
मेसर्स डालनसीदास शिवप्रसाद पोद्दार	,, हरनन्दराय घनश्यामदास
,, देवकरण रामविलास	,, हरनन्दराय बैजनाथ
मेसर्स दुर्गादत्त नथमल	

श्रीयुत सीतारामजीके राधामोहनजी नामक भाई हैं। आप भी सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आपके श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी नामक एक पुत्र है आप भी दूकानके कार्यों में भाग लेते हैं।

इन दोनों दुकानोंपर नमकका घरू और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हमीरमल रिखवदास

इस फर्मका हेड आफिस अजमेरमें है। अतः इसके व्यवसायका विस्तृत परिचय अजमेरमें दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ नौरतनमलजी रीयां वाले हैं। आपकी फर्म यहां बैङ्कर्स और गव्हर्नमेंट ट्रेझरर है। नमकके रुक्के सब इसी फर्मके मार्फत भरे जाते हैं।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल तोतला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान साम्भर हीमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। साम्भरमें यह फर्म बहुत पुरानी है।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत रामविलासजी, श्रीयुत हेमराजजी, श्रीयुत गोपीकिशनजी और श्रीयुत श्रीनारायण जी हैं। आप सब सज्जन हैं। श्रीयुत रामविलासजीके बड़े भ्राता श्रीयुत रामवल्लभजी थे। आपका देहावसान सन् १९२७ में हो गया।

इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। मथुरामें जमना किनारे आपकी ओरसे बनाई हुई एक धर्मशाला है। तथा यहांसे पासहीमें देवयानी नामक तीर्थ-स्थानमें आपका बनाया हुआ एक मंदिर है।

इस समय इस फर्मकी तरफसे नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें और फेक्टरियां हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर बैंकिङ्ग, हुण्डी, चिट्ठी और नमकका बड़ा व्यापार होता है।

(२) आगरा—मेसर्स हिरालाल चुन्नीलाल यहांपर आपकी रामवल्लभ रामविलासके नामसे जीनकी मण्डीमें एक तेलका मिल है।

(३) नरेना (जयपुर)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस स्थानपर शक्कर, गुड़, गल्ला और घीका व्यवसाय होता है।

(४) सवना-(रीवां) मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक, चीनी, और सुपारीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलिचन्दजी, सेठ येणीप्रसादजी, सेठ जुहारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशवदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके डालमियां गोत्रके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें पेज नं० ६९ में दिया गया है।

मेसर्स रामप्रसाद महादेव

आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत महादेवजी सोमाणी और मुरलीधरजी सोमाणी हैं। आपकी तरफसे चिड़ावेमें एक फ्री हाई स्कूल चल रहा है। आपका हेड आफिस कलकत्ता चित्तरञ्जन एवेन्यूमें है। आपका प्रधान विजिनेस हेसियन, जूट, और बारदानका है। कपड़ेका इम्पोर्ट भी आपके यहां होता है। इसके सिवा शेयर विजिनेस भी होता है।

—०—

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहीं है। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत सेठ रामकुंवारजी आदि हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान

आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ शिवप्रसादजी और गंगासहायजी हैं। इस फर्मके संस्थापक श्रीयुत सूरजमलजी बांसल हैं। आपने अपने जीवनमें बहुत साधारण स्थितिसे लेकर इतनी ऊँची स्थितिको बनाया है। आपकी दान धर्मकी ओर भी बहुत रुचि रही है। बद्रीनारायणका प्रसिद्ध लक्ष्मण झूला भी आपका बनाया हुआ है। इसके अतिरिक्त गयामें आपकी एक धर्मशाला तथा चिड़ावेमें एक धर्मशाला, एक संस्कृत पाठशाला और एक अंग्रेजी पाठशाला चल रही है। कई कुओंका आपने जीर्णोद्धार करवाया है। कलकत्तेमें भी आपकी धर्मशाला है। चिड़ावेकी गौशालामें भी आपका प्रधान हाथ रहा है।

आपका हेड ऑफिस बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें है। आपके यहां कपड़ेकी इम्पोर्ट तथा और दलालीका बहुत बड़ा काम होता है। कलकत्तेके नामी व्यापारियोंमें आपकी गणना है।

आपका परिचय चित्रों सहित इस ग्रंथके दूसरे भागमें दिया जायगा।

—०—

सेठ लालचन्दजी मूंदड़ा (हरनन्दराय रामानन्द) कुचामनरोड

सेठ मोतीलालजी पुन (मगनीराम रामकिशन) कु०

सेठ हरिबगसजी (हरिबगस दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा० दुर्गाप्रसादजी सराफ (हरिबगस

बा० गोवर्द्धनदासजी सराफ (हरिबगस दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा० रामनिवासजी सराफ (हरिबगस दुर्गा

इस फर्मकी निम्नाङ्कित स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड, मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द—इस स्थानपर इस फर्मका हेड ऑफिस है और यहांपर नमकका व्यापार होता है।

(२) साम्भर—मेसर्स हरनन्दराय रामानंद, इस दुकानमें नमकका व्यापार होता है। यह दुकान साम्भरकी प्राचीन दूकानोंमेंसे है।

(३) डीडवाना—मेसर्स जयगोपाल हरनन्दराय—इस दुकानपर नमकका व्यापार होता है।

(४) देहली नयाबाजार—मेसर्स हरनंदराय रामानंद, इस दूकानपर बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और सब तरहका कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त खारापोड़ामें भी आपके द्वारा बहुत सा नमकका व्यवसाय होता है।

नावा (कुचामन रोड)

मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल पाटोदी चौधरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कुचामनरोड हीमें है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। आप श्रावक-जैन खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत सेठ मांगीलाल जीने की। इसकी विशेष तरक्की भी उन्हींके हाथसे हुई। मांगीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७८में हुआ। उनके पश्चात् उनके भाई श्रीयुत चम्पालालजी इस समय दूकानका संचालन करते हैं। श्रीयुत मांगीलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत सुगनचन्द जी है। चम्पालाल जीके भी एक पुत्र हैं जिनका नाम चिरञ्जीलाल जी हैं। श्रीयुत सुगनचंदजी दुकानका कारोबार करते हैं और श्रीयुत चिरञ्जीलाल पढ़ते हैं। यह खानदान यहांपर बहुत पुराना है। बादशाही जमानेसे इस खानदानको चौधरीकी उपाधि चली आती है।

आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड—मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल चौधरी—इस दुकानपर जमींदारी, लेनदेन, बैङ्किग, किराया और जायदादका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहांपर नमकका व्यापार होता है।

(२) कुचामनरोड—मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल, इस दुकानपर गुड़, शक्कर, गल्ले वगैरहका धरू और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) बड़ौत—(मेरठ) मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल—इस दुकानमें सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है। चांवल बिनौला खली सरसोंकी, चूरा, मक्का, जुवार आदि माल आढ़तियोंका आपके यहां बिकनेके लिए आता है और गुड़ शक्कर देशी और बनारस आदि कमीशनपर बाहर भेजी जाती है।

पर एक संस्कृत विद्यालय और बोर्डिंग हाउस बना हुआ है। जिसमें यहांके ५ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं और भोजन वस्त्र भी यहां पाते हैं।

आपकी दुकानें नीचे स्थानोंपर है—

(१) हेड आफिस—कुचामन रोड—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—(T. A. Dhut) यह इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप, इस दुकानपर नमक और कमीशनका व्यापार होता है।

(३) देहली—नया बाजार, मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग, हुंडी, चांदी, गल्ला, कपड़ा और किरानेकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(४) अभोर (फ़िरोजपुर) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग और गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(५) बड़ोद—(मेरठ) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप-इस दुकानपर गुड़, शक्कर और चांदीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। क्योंकि यहांका गुड़ बहुत अच्छा होता है।

(६) खेदरगञ्ज—(बस्ती) जमनादास शिवप्रताप-इस दुकानपर चांवलका बहुत बड़ा काम होता है। यहांका चांवल बहुत मशहूर है।

(७) नौगढ़—(बस्ती) इस दुकानपर भी चांवलका व्यापार होता है।

(८) बस्ती—(बस्ती) इस दुकानपर चांवल और सरसोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांसे बंगाल और कलकत्तेमें बहुत सरसों जाती हैं।

(९) खाराघोड़ा—(वीरमगाम) इस दुकानपर नमकका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(१०) भिण्ड—(रियासत ग्वालियर) T. A. Dhut यहांपर आपकी एक जीनिंग और एक तेलका मिल है और रुईका व्यापार होता है। इस मिलका तेल [illegible] आदि स्थानोंमें ||) मन ज्यादा रेटपर बिकता है। [illegible] यहां श्रीयुत मुनीम भगनाथजी काम करते हैं। आप बहुत सज्जन हैं [illegible] बड़ा विश्वास है। आप मालिकोंकी हमेशा [illegible] चाहते हैं। [illegible] और मिलनसार है।

इसके अतिरिक्त खरड़ा (पञ्जाब) बारड़ा (पंजाब) एवं [illegible] (फ़िरोजपुर) और [illegible] आदि स्थानोंके सम्बन्ध भी आप यहांसे डायरेक्ट व्यापार करते हैं।

मतलब यह कि यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित, इज्जतदार और मारवाड़ीके प्रसिद्ध धनवानोंमें है।

वीकानेर और वीकानेर राज्य

BIKANER

&

BIKANER–STATE

बीकानेर

बीकानेरका ऐतिहासिक परिचय

जो स्थान आजकल बीकानेरके नामसे मशहूर है सन् १४८९के पहले यह स्थान जांगल प्रांतके नामसे प्रसिद्ध था। उस समय इसपर सांकला जातिका अधिकार था। ई० सन् १४८८ की तेरहवीं अप्रैल (सं० १५४५ वैशाख सुदी २) को जोधपुर राज्यके संस्थापक प्रसिद्ध राठौड़वंशी राव जोधाजीके छठवें पुत्र राव बीकाजीने यह स्थान सांकलोंसे छीन लिया और वहांपर अपने नामसे बीकानेर नामक शहर बसाया। यहीं इन्होंने अपनी राजधानी स्थापित की। मारवाड़ी भाषामें इस घटनाका सूचक एक पुराना दोहा इसप्रकार है :—

> पनरसै पैंतालवे, सुद वैशाख सुमेर,
>
> थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर।

राव बीकाजीका स्वर्गवास संवत् १५६१में होगया। आपके पश्चात् नराजी, लूणकरणजी, जैतसीजी, कल्याणसिंहजी, रायसिंहजी, दलपतसिंहजी, सूरसिंहजी, कर्णसिंहजी, अनूपसिंहजी स्वरूपसिंहजी, सुजानसिंहजी, जोरावरसिंहजी, गजसिंहजी, राजसिंहजी, प्रतापसिंहजी, सूरत सिंहजी, रत्नसिंहजी, सरदारसिंहजी, और डूंगरसिंहजी क्रमशः सिंहासनासीन हुए।

इस समय महाराजा डूङ्गरसिंहजीके लघु भ्राता मेजर जनरल महाराजा गंगासिंहजी बीका-नेरके राज सिंहासनपर विराजमान हैं। आप हिन्दू विश्वविद्यालयके प्रो० चान्सलर और नरेन्द्र मण्डल हिंदके प्रधान हैं। आपके समयमें राज्यके कई विभागोंमें बड़ी तरक्की हुई है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य्य जो आपके समयमें हुआ है वह सतलज नदीसे लाई जानेवाली नहर है। इस नहरका नाम गंगा नहर है। गत वर्ष इसका उद्घाटन उत्सव होचुका है। यह नहर करीब ८० मील लम्बी है। इसके बनानेमें राज्यका बहुत अधिक रुपया खर्च हुआ है इस नहरके बननेसे रायसिंहनगर और हनुमानगढ़ जिलेकी ६ लाख बीस हजार बीघा सूखी रेतीली जमीन हरीभरी, सरसब्ज और उपजाऊ होजायगी। नहरसे जब पूर्ण सिंचाई होने लगेगी तब राज्यकी आमदनी ३० लाखके करीब बढ़ जायगी। कहा जाता है कि यह नहर संसार भरमें एक बड़ी

१६२५में लालाजीने श्रीयुत विश्वनाथजीको जिनके यहाँ तीन पुश्तसे यह काम होता था सम्मिलित किया। तभीसे इस ब्रांचके कारोबारकी तरक्की जोरोंके साथ बढ़ती गई और इस फर्मके हाथमें साम्भरकी निकासीका दो तिहाई काम आगया है।

इस फर्मका सञ्चालन यहांपर श्रीयुत विश्वनाथजी कानोडिया करते हैं। आप बड़े अत्यन्त परिश्रमी और मेधावी नवयुवक हैं। केवल २८ वर्षकी उम्रमें ही आपने अच्छी व्यापारदक्षता प्राप्त कर ली है। यहांके सफल व्यापारियोंमें आपकी गणना है। आप अगवाल कानोडिया वंशके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कानपुरमें है। आपके खानदानको यहांपर आये करीब... हो गये। तबसे आपके यहां नमकका ही व्यवसाय होता है। इस कम्पनीके पहले भी आपकी यह फर्म थी जिसपर नमकका व्यवसाय होता था। (T. A. Diwan)

मेसर्स वंशीधर राधाकिशन

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वंशीधरजी हैं। आपकी फर्मपर यहां बैङ्किंग आढ़त तथा नमकका व्यवसाय होता है।

मेसर्स भागचन्द दुलीचन्द

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। साम्भरकी फर्मपर बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मगनीराम रामकिशन धूत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नावांमें है। इस फर्मको इस नामसे स्थापित हुए करीब पचास साठ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बलदेवजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामकिशनजीके हाथोंसे हुई। इस समय सेठ रामकिशनजीके पुत्र श्रीयुत [illegible] और श्रीयुत सूर्य्यमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आप बड़े सज्जन पुरुष हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है। आपकी ओरसे कुचामन रोडमें करीब पचास हजारकी लागतका राम लक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त और कार्यों में भी आपकी ओरसे बहुतसा दान धर्म होता रहता है। [illegible] मन्दिरके जीर्णोद्वारमें भी आपने सहायता की है।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दुकानें हैं।

ान् रा०ब०स्व० सेठ अबीरचन्दजी डागा, बीकानेर   श्रीमान् रा० ब० स्व० सेठ रामरतनदासजी डागा बीकानेर

ी रा० ब० सर कैसरेहिन्द कस्तूरचंदजी डागा, सी०आई० ई०   श्री रा० ब० सर विश्वेश्वरदासजी डागा के० टी०

श्रीरामधनजी (रामधन जोहरीमल) सांभर

श्री रघुनाथमलजी (रामधन जोहरीमल) सां॰

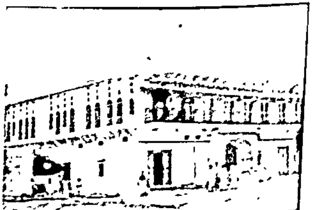

फुलेरा बिल्डिंग (रामधन जोहरीमल) फुलेरा

आपके पश्चात् रा० ब० सेठ अबीरचंदजीके पुत्र श्री दीवान बहादुर सर कस्तूरचंदजी डागा, कैसरे हिन्द, के० सी० आई० ई० ने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपने इस फर्मके व्यापारको इतना बढ़ाया, कि सी० पी० में आपकी फर्म अत्यन्त प्रतिष्ठित मानी जाने लगी। व्यवसायिक कुशलताके साथ २ अपने सामाजिक एवं राजकीय कार्योंमें भी ऊँचे दर्जेका सम्मान प्राप्त किया था। गवर्नमेंटसे आपको के० सी० एस० आई० के समान उच्च पदवी जो—अभीतक किसी मारवाड़ी समाजके व्यक्तिको नहीं प्राप्त हुई थी, मिली। आपको बीकानेर स्टेटने फर्स्ट क्लास ताजिम देकर सम्मान किया। आप बहुत अधिक समय तक सी०पी०कौंसिलके मेम्बर रहते थे। आपका देहावसान संवत् १९७२ में हुआ।

वर्तमानमें सर कस्तूरचंदजी डागाके चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्री रायबहादुर सर बिश्वेसरदासजी डागा,के०टी०,श्री सेठ नरसिंहदासजी,श्री सेठ बद्रीदासजी और श्री सेठ रामनाथजी हैं। इन महानुभावोंमें से सर कस्तूरचंदजी डागा के० सी० आई० ई० के पश्चात् वर्तमानमें इस फर्मका सारा कारबार रा० ब० सर बिश्वेसरदासजी डागा के० टी० संचालित करते हैं। आप नागपुर इलेक्ट्रिक एण्ड पॉवर कम्पनीके चेयरमैन, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डियाके डायरेक्टर, तथा मॉडल मिल नागपुर और बरार मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी बड़नेराके एजंट और डायरेक्टर हैं। सी० पी० रेड क्रास सोसाइटीके आप वाइस प्रेसिडेंट हैं। इसके अतिरिक्त आप और भी कई मिलोंके डायरेक्टर हैं।

सर बिश्वेसरदासजी डागा के० टी० ने अपने पिताश्री की यादगारमें सर कस्तूरचंद मेमोरियल हॉस्पिटल नामक एक अस्पताल स्त्रियोंके लिये करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आप बहुत उदारता पूर्वक दान देते रहते हैं सर बिश्वेसरदासजी डागा बीकानेर असेम्बलीके मेम्बर हैं। आपको स्टेटसे सेकंड क्लास ताजिम प्राप्त है।

भारतके बैंकिंग व्यवहारके इतिहाससे इस फर्मका बहुत सम्बन्ध है। भारतका प्रसिद्ध २ प्रतिभा सम्पन्न धनिक मारवाड़ी फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊँचा है। माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न और अग्रगण्य है। इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

(१) नागपुर—सानठी—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर (T, A, Lucky)—इस फर्म पर बेंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांपर आपकी ४ बड़ी बड़ी कोयलेकी खदानें हैं जिनके नाम बल्हारशा, सास्ती, पिसगांव, राजुरा और घुग्गस हैं। इनके अतिरिक्त आपकी यहां मेंगेनीज़ वगैराकी खदानें भी हैं। इस फर्मके ताल्लुकमें आपकी करीब ३० कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

२) हिंगन घाट—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर—T, A Bansilal—यहांपर आपकी

(१) हेड आफिस—सांभर, मेसर्स रामधन जौहरीलाल—इस दूकानपर आवकारीका ठेका है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नमककी बड़ी तिजारत होती है।

(२) सांभर—मेसर्स जगन्नाथ बख्तावरमल, इस दूकानपर नमककी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) फुलेरा—मेसर्स हमीरसिंह जगन्नाथ, इस दुकानपर आबकारीका ठेका है और आम लोगोंसे लेन देनका काम होता है।

(४) जयपुर—अजमेरी गेट—यहांपर भी आपका ठेका है।

सेठ रामधनजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम हमीरसिंहजी, जगन्नाथजी और बख्तावरमलजी हैं।

मेसर्स विजयलाल रामकुंवार

इस फर्मपर जयपुरमें रामकुंवार सूरजबख्शके नामसे व्यापार होता है। इसका परिचय जयपुरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबख्स

इस फर्मका विशेष परिचय भवानीगञ्ज मंडीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम गोवर्द्धनदास गट्टानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सीतारामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना यहांपर बहुत पुरानी है। पहले इस फर्मपर समीरमल राधामोहनका नाम पड़ता था। करीब तीन चार बरसोंसे यह दो भागोंमें विभक्त हो गई है। पहलीका नाम समीरमल सीताराम, और दूसरीका नाम सीताराम गोवर्द्धनदास पड़ता है।

इस फर्मको विशेष तरक्की श्रीयुत सीतारामजीके हाथोंसे हुई। आप योग्य और परिश्रमी सज्जन हैं।

इस खानदानकी दान धर्मकी ओर भी रुचि रही है। देवयानीके तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे बनाया हुआ श्रीरघुनाथजीका एक सुन्दर मन्दिर है। इसके अतिरिक्त और भी सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते रहते हैं। आपके मकानका नाम जनकपुर है, महल्लेका नाम भी यही है।

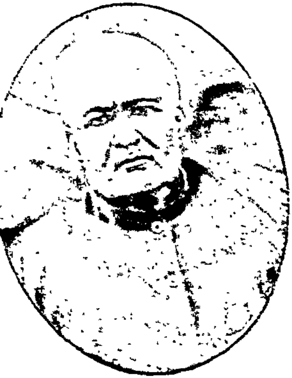

०सेठ अगरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया (अ० भै० सेठिया) बीकानेर

कुंवर पानमलजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

किया करते थे। इस प्रकार सात वर्षके कठिन परिश्रमके पश्चात् आपने तीन हजार रुपयोंकी सम्पत्ति एकत्रित की। एवं उसे लेकर कलकत्ते गये और वहां संवत् १९४५ में हनुमानदास भैरोंदानके नामसे रंग और मनिहारीकी दूकान की। धीरे २ बेलजियम, स्कॉटलैंड और आस्ट्रियाके रंग तथा मनिहारीके प्रसिद्ध कारखानोंकी सोल एजंसियां भी आपने लेलीं। आपका व्यवसाय खूब चल निकला। विलायतसे जितना माल आपके यहां आता था उसपर आपहीका ट्रेड मार्क रहता था। कुछ समय बाद आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री जगचंदजी भी आपके साथ व्यवसायमें सम्मिलित हो गये और ए० सी० बी० सेठिया एण्ड को० के नामसे व्यवसाय चलने लगा।

बेलजियमके एक रंगके व्यवसायीके कपट पूर्ण व्यवहारके कारण आपको उससे अनबन हो गई। उसी समय आपने श्री सेठिया केमिकल वर्कस् लिमिटेड नामका एक रंगका कारखाना खोला जो भारतमें रंगका पहिला ही कारखाना था। यह कारखाना अब भी चल रहा है। [illegible] पर अंग्रेज मैनेजर करीब २३ वर्षों तक रहा। इसके पश्चात् [illegible] चलने लगा। आपने बम्बई, मद्रास, कानपुर, देहली, अमृतसर, करांची और [illegible] दूकानें स्थापित कीं। तदनंतर जापानमें भी एक आफिस स्थापित किया और [illegible] चिदन, एक बंगाली और एक सत्रीको वहांपर भेजा। संवत् १९६८ में श्री [illegible] १९६० में श्री हजारीमलजीका देहावसान हो गया।

संवत् १९७२ में आप भयंकर रोगग्रस्त हो गये। कलकत्तेके प्रसिद्ध [illegible] पैथिक चिकित्सा द्वारा भी आपको कोई लाभ नहीं हुआ। तब आपने [illegible] प्रतापचन्द्र मजूमदारसे चिकित्सा प्रारम्भ की और उनके द्वारा आपको [illegible] तबसे आपका होमियोपैथिक औषधि पर विश्वास जमा और आपने [illegible] की। आप अब भी होमियोपैथिक औषधि वितरणकर सैकड़ों [illegible] इस बीमारीसे आपके मन पर संसार की क्षणभंगुरताका अत्यधिक [illegible] तथा जापानके सिवा बाकी सब कार्य्यको समेट लिया।

संवत् १९७० में आपने बीकानेरमें सर्व प्रथम एक [illegible] जीवन प्रारम्भ होता है। आपके भाई जगचन्दजीका देहान्त [illegible] धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्य परायण व्यक्ति थे आपने अपनी बीकानेर [illegible] इन्होंने बुलाकर यह सम्मति दी, कि [illegible] [illegible] और [illegible], [illegible] संवत् [illegible] [illegible] आपके पुत्र [illegible] देहावसान संवत् [illegible] [illegible] संवत् [illegible]

(५) पीलीभीत—मेसर्स रामवल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, चीनी, गुड़ और नमक घरू व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(६) सीतापुर—मेसर्स रामवल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, नमक, गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यवसाय होता है।

(७) बारां (कोटा)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक और गल्लेका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त गोविन्दगढ़ (पंजाब) में एक जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरीमें आपका साझा है

मेसर्स हीरालाल रामकुंवार

यह फर्म पहले हीरालाल चुन्नीलालके शामिल ही में थी। संवत् १९७४में यह फर्म अलग हुई इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनलालजी हैं। आप श्रीयुत रामकुंवारजीके पुत्र हैं। आप सज्जन पुरुष हैं।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार—इस दुकानपर बैंकिङ्ग हुंडी, चिट्ठी और नमक व्यापार होता है।

(२) मोरेना (गवालियर-स्टेट)—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार, इस दुकानपर नमक और गल्ला घरू तथा कमीशनपर काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द मून्दड़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान डीडवाना में है। इस स्थानपर आपके खानदानको आये करीब ८० वर्ष हुए। तभीसे यह दुकान यहांपर इस नामसे स्थापित है। इसकी स्थापना भी सेठ हरनन्दरायजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामानन्दजीके पुत्र श्रीयुत लालचन्दजीके हाथोंसे हुई। आपही इस समय इस दुकानके मालिक हैं। आप सज्जन और मिलनसार पुरुष हैं कुचामनरोडमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्रीयुत लालचन्दजीके एक पुत्र है जिनका नाम श्रीयुत श्रीकिशनजी है। आप दुकानके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्व-जनिक कार्य्योंकी ओर भी रुचि रही है। इन्होंने कुचामन रोडमें बांकेविहारी जीके मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया है। इसमें करीब दस हजार रुपया व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त यहांके अति प्राचीन गंगा मन्दिरमें भी आपने मदद दी है।

सेठ साहबके २ पुत्र श्रीपानमलजी एवं लहरचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। श्री लहरचन्दजीने भी एक प्रिंटिंग प्रेस संस्थाओंको दान किया है। इसके अतिरिक्त जुगराजजी एवं ज्ञानपालजी अभी शिक्षा लाभ करते हैं। इनका कारोबार श्री जेठमलजी देखते हैं।

आपकी दूकानें फिलहाल निम्न लिखित स्थानोंपर है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया ओल्ड चायना बाजार नं० १८ T. A. Seethiya—इस फर्मपर जापानसे रंगका व्यवसाय होता है।

(२) मेसर्स अगरचन्द भैरोदान सेठिया २ आर्मेनियनस्ट्रीट T. A. Sethiya—यहां आपकी रंगकी दुकान है।

(३) दि सेठिया कलर एण्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड १२७ कदमतुल्ला-नरसिंहदत्त रोड हवड़ा—इस कारखानेमें रंग तैयार किया जाता है। भारतमें यह सबसे पहिला रंगका कारखाना है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ साहबने पहलेही अपने पुत्रोंका सब हिस्सा अलग २ करके अत्यन्त बुद्धिमानीका परिचय दिया है। अब आपके सब पुत्र अपना अलग २ व्यवसाय करते हैं उसका विवरण इस प्रकार है।

श्रीयुत जेठमलजी

कलकत्ता—मेसर्स अगरचन्द जेठमल सेठिया, क्लाइव स्ट्रीट १७—इस फर्मपर हाउस प्रापर्टीका काम होता है।

बीकानेर—मेसर्स अगरचन्द जेठमल—इस दूकानपर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

श्रीयुत पानमलजी सेठिया

बीकानेर—मेसर्स बी० सेठिया एण्ड सन्स,—इस दुकानपर मिलिलिनियन्स मर्चेंटाइज सब प्रकारके फेन्सी मालका व्यापार होता है। बीकानेरके सब प्रतिष्ठित रईस तथा कुंवरसाहब इसी दूकानका सामान खरीदते हैं। इसके अतिरिक्त बीकानेर गवर्नमेन्ट की लावुक्सकी एजन्सीभी इसी दुकानपर है।

श्रीयुत लहरचन्दजी सेठिया

कलकत्ता—लहरचन्द खेमराज सेठिया १९८ ओल्ड चायना बाजार स्ट्रीट, इस दुकानपर मनिहारी सामानकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है।

श्रीयुत जुगराजजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स रूपचन्द जुगराज,२९ आर्मेनियन स्ट्रीट, इस दुकानपर कपड़ेकी कमीशन एजन्सी, और जूटकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है। इसमें सरदार शहरके शिवजी राम लूणचन्दका साझा है।

(४) सोनीपत—(रोहतक) मेसर्स सुगनचंद चिरंजीलाल—इस दुकानपर बड़ौनहीको गद्द ग्रन है। यहांसे लाल मिरच भी फसरवसे जाती है।

(५) गुजरानवाला—मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल लोहा बाजार (T. A. Sugan) इस दुकानसे चावल लोहेकी तिजोरियां और सरसोंका तैल तथा गल्ला बाहर जाता है। इस दुकानवाले सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रहती है। यहांकी दिगम्बर-जैनपाठशाला कन्या पाठशाला, और औषधालयमें आप दान देते रहते हैं।

बैंकर्स

सेंट्रल बंक ऑफ इण्डिया बम्बई (सांभरब्रांच)
पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड (ब्रांच सांभर)
मेसस भागचन्द दुलीचन्द
„ हमीरमल रिखबदास (गवर्नमेंट ट्रेभरर)
„ हीरालाल चुन्नीलाल
„ हीरालाल रामकुंवार
„ हरनन्दनराय रामानन्द
„ हमीरमल रिखबदास
„ श्रीनारायण हरविलास

नमकके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स चांदमल झूमरलाल
„ चांदमल शिववल्लभ
„ चुन्नीलाल रामनारायण
„ जमनादास शिवप्रताप
„ तेजकरण चांदकरण
„ तनसुखराय गनेशीलाल
„ दिवानचन्द एण्ड को॰
„ वंशीधर राधाकिशन
„ विजयलाल रामकुंवार
„ भागचन्द दुलीचन्द
„ मन्नालाल केशरीमल
„ मगनीराम रामकिशन
„ रामप्रसाद गोविन्द राम
„ रामधन जौहरीमल
„ रामगोपाल बद्रीनारायण
„ रामचन्द्रजी सोनी
„ रामप्रताप हरचरस
„ समीरमल सीताराम
„ सीताराम गोवर्धनदास
„ शिवनारायण रामदेव

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स बरदीचन्द शिवप्रसाद
„ रामकुंवार हजारीमल

किरानाके व्यापारी

मेसर्स ओंकारजी मोतीलाल
„ जयनारायण मोतीलाल
„ बल्देव शिवनारायण

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स गंगाप्रसाद रामजीवन
„ समीरमल हरनारायण

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द माणकचन्द
„ गोविन्दराम चुन्नीलाल

धर्मशाला

नमकके व्यापारियोंकी धर्मशाला स्टेशन

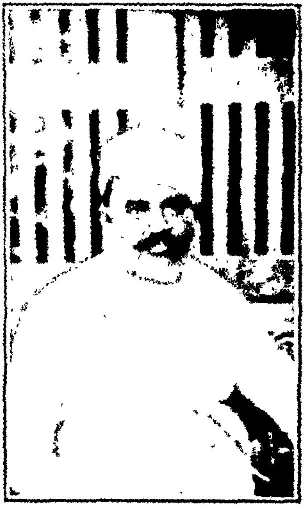

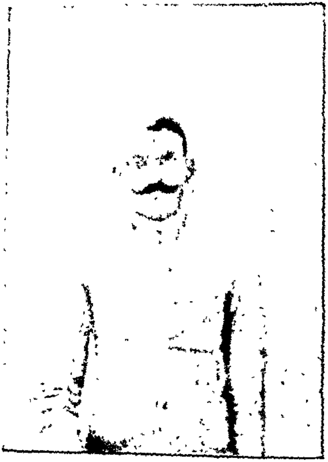

मेसर्स गुनचन्द मंगलचन्द ढड्ढा

इस कुटुम्बके मालिक ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। बीकानेरके प्रतिष्ठित खानदानोंमें यह कुटुम्ब भी एक है। सर्व प्रथम सेठ शिखरचन्दजीके समयमें इस फर्मके व्यापारको उत्साह मिला। आपके चार पुत्र थे। जिनमेंसे सेठ उदयमलजीका कुटुम्ब अजमेरमें, सेठ धरमसीजीका कुटुम्ब जयपुरमें और अमरसीजी तथा टीकमसीजीके पुत्र बीकानेरमें निवास कर रहे हैं। सेठ चांदमलजी सी॰ आई॰ ई॰ ढड्ढा सेठ अमरसीजीके कुटुम्बमें हैं।

इस फर्मके मालिक सेठ टीकमसीजीके प्रपौत्र सेठ मंगलचंदजी हैं। आपकी ओरसे फलौदीमें एक बहुत बड़ा देवल बना हुआ है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर एक धर्मशाला भी है। आपके छोटे भाई श्री आनंदमलजीके पुत्र श्री प्रतापचंदजी आपके यहां गोदी लिये गये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बीकानेर—मेसर्स गुनचन्द मंगलचन्द ढड्ढा—यहां हुंडी चिट्ठी तथा लेनदेनका व्यवसाय होता है।

(२) कलकत्ता—मंगलचन्द आनंदमल ५० कलाकर स्ट्रीट—इस दुकानपर इटलीसे मूंगा आता है। इटलीके ऑफिसके आप एजंट हैं। इसके अतिरिक्त हुंडी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता

इस फर्मके मालिक मोहता खानदानके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ लखमीचन्द जी मोहताके बड़े भ्राता सेठ जगन्नाथजी मोहताने की। आप बड़े सज्जन पुरुष थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३में हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्री मदनगोपालजी, श्री राधाकृष्णजी, श्रीरामकृष्णजी, श्री भगीरथजी और श्री शिवगोपालजी हैं। आप सब सज्जन बड़े सम्माननीय उन्नतिशील युगके सभ्य एवं शिक्षित पुरुष हैं। करीब २ वर्ष पूर्व सेठ मदनगोपालजी को गवर्नमेंटने राय-बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है।

माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। श्रीरामकृष्णजी माहेश्वरी महासभाके इन्दौर अधिवेशनके सभापति रहे थे। कलकत्तेमें जो माहेश्वरी भवन बना है उसमें आर्थिक सहायताके अतिरिक्त और बहुतसा परिश्रम आपने किया है। एक तरहसे आपहीने उसमें अग्रगण्यरूपसे भाग लिया था। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हो जाती हैं। इस शहरकी बसावटमें एक बड़ी विशेषता यह है कि यहांपर प्रत्येक जातिके अलग २ चौक और सेरियां बनी हुई हैं। जैसे डागोंका चौक, मोहतोंका चौक, बगड़ियोंका चौक इत्यादि। बस जिस जातिके व्यक्तिसे आपको मिलना है उसी जातिके नामवाले चौकमें जाइए, आपको पता लग जायगा। सफ़ाईकी दृष्टिसे इस शहरकी स्थिति विशेष अभिनन्दनीय नहीं है। पर ऐसा सुननेमें आता है कि अब यहांकी म्युनिसिपेलिटी इसमें सुधार करनेवाली है।

समाजिक जीवन

यहांकी सामाजिक व्यवस्था बिलकुल मारवाड़ी है। बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय इत्यादि कुप्रथाओंका यहांपर काफी जोर है। ऐसा सुननेमें आता है कि हालहीमें राज्यने बालविवाह प्रतिबन्धक कानून बननेकी घोषणा प्रकाशित हुई है। यह सन्तोषकी बात है।

कस्टम डिपार्टमेंट

बीकानेर राज्यके अन्तर्गत यदि कोई आश्चर्य योग्य बात है तो वह यहांका कस्टम विभाग है। इस रियासतमें तथा जोधपुर रियासतमें हमने जितनी कस्टम की सख्ती देखी उतनी शायद भारत वर्षके किसी दूसरे स्थानमें हो। कस्टमके कर्मचारी मुसाफ़िरोंके सामानका एक २ कपड़ा डालते हैं, उन्हें बेहद तंग करते हैं, इतनी सख्ती किसी भी राज्यके लिए अभिनन्दनीय नहीं कही जा सकती। राज्यको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

मिल ऑनर्स

मेसर्स वंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस प्रसिद्ध फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी (डागा) जातिके सज्जन हैं। बीकानेरमें यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी स्थापना श्री सेठ वंशीलालजीने की। आपके ३ पुत्र थे, जिनके नाम क्रमसे रायबहादुर सेठ अबीरचंदजी, सेठ रामचन्द्रजी तथा दूसरे सेठ रामरतनदासजी। आप तीनों ही बड़े प्रतापी और प्रतिभाशाली पुरुष थे। इनमेंसे सेठ अबीरचंदजी नागपुर गये। वहांपर आपने अपने व्यवसायको खूब फैलाया, और बड़ी उन्नति की। इधर सेठ रामरतनदासजी लाहौर गये, और आपने अपने व्यवसायको उन्नत किया। सन् १८५७ के गदरके समय बृटिश सरकारको अच्छी सहायता दी। इसके उपलक्षमें सरकारने आपको राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया, और कई सम्माननीय वस्तुएं दी। सेठ अबीरचंदजीका देहावसान संवत् १९३५ में और सेठ रामरतनदासजीका देहावसान संवत् १९४० में हुआ

(२) बम्बई—मेसर्स नारायणदास मोहता—शेखमेमनस्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, आड़त और चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस तथा रुई अलसी गेहूं व शेयर्स के हाजर व वायदेका काम होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स नारायणदास गोविन्ददास ३०१ अपरचितपुर रोडः इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचंद खजांची ज्वेलर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत प्रेमचन्द्जी खजाञ्ची हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब २५ वरस हुए। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके पिता श्रीयुत तेजकरणजी का स्वर्गवास संवत् १९६३ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत प्रेमचन्दजी ने इस दुकानका काम सम्हाला। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे माणिकचन्दजी, मोतीचन्दजी और हीराचन्दजी हैं।

इस फर्मकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) बीकानेर—मेसर्स तेजकरण प्रेमचन्द जौहरी, इस दुकानपर सभी प्रकारके खुले और बन्द जवाहिरातके जेवरोंका व्यवसाय होता है।

(२) कलकत्ता ५२ गणेश भगतका कटला सूतापट्टी—मेसर्स अजितमल माणिकचन्दजी—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यवसाय और कमीशन एजन्सीका काम होता है। इसमें श्रीयुत अजितमलजीका साझा है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचन्द ४०१-१० बड़तल्ला स्ट्रीट—इस दुकानपर जवाहिरातका व्यवसाय होता है।

मेसर्स प्रागदास जमुनादास

आपके यहां सराफी और धातुके आयात और निर्यातका काम होता है। लगभग एक सौ वर्ष पुरानी बात है,जब आप अपने मूल निवास स्थान राजपूतानेके बीकानेर स्थानसे व्यापारोद्देश्य से युक्त प्रान्तके मिर्जापुर नगरमें आकर बसे थे। यहां आपने अल्प पूंजीसे पीतल, तांबा, कांसा आदि धातुओंका व्यापार प्रयागदास मथुरादासके नामसे करना शुरू किया था। थोड़ेही दिनोंमें आपका व्यापार यथेष्ट उन्नत हो गया और आप वहांके प्रतिष्ठित श्रीमन्तोंमें गिने जाने लगे। मिर्जापुरके बाद आजसे कोई ५४ वर्ष पूर्व आपने अपनी एक शाखा कलकत्तेमें स्थापित की, यहां भी उक्त धातुओंके क्रय-विक्रय का व्यापार आरम्भ किया गया।

स्व० सेठ नारायणदासजी मोहता बीकानेर

स्व० सेठ गोविंददासजी बिन्नानी बीकानेर

मिर्जापुर (हेड-आफिस) मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास, इस फर्मपर सोना चांदी तथा लोहा इन तीन धातुओंको छोड़कर सब प्रकारकी धातुओंका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास, ४३ स्ट्रांडरोड—इस फर्मपर धातुके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका अच्छा व्यवसाय और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर गवर्नमेंटके तथा रेलवेके बड़े २ आर्डर सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त आप उनकापुराना माल भी खरीदते हैं।

मेसर्स वालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ राधाकिशनजी दम्माणी और सेठ देवकिशनजी दम्माणी हैं। आप खास निवासी बीकानेरके हैं। आप माहेश्वरी समाजके दम्माणी सज्जन हैं।

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित बम्बईमें पेज २७० में दिया गया है। यह फर्म बम्बईमें बहुत अच्छा चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस करती है।

मेसर्स भीखमचन्द रामचन्द्र वेद

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मिलापचन्दजी वेद हैं। आप ओसवाल स्थानक वासी सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। आपकी फर्मका हेड आफिस झांसी है। वहां इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत रघुनाथदासजीने की थी। आपके पश्चात् क्रमशः श्रीयुत भीखमचन्दजी, रामचन्द्रजी, विरदीचन्दजी और श्रीयुत गुलाबचन्दजी हुए। आप लोगोंके हाथोंसे भी फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। वर्तमानमें सेठ मिलापचन्दजी इस फर्मका संचालन करते हैं। आप एक विद्याप्रेमी सज्जन हैं। सार्वजनिक कार्योंमें आप अच्छा पार्ट लेते हैं। गत वर्ष बीकानेरमें होनेवाली स्थानकवासी कान्फ्रेन्सका सारा खर्च आपने दिया था। झांसीमें आप आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। पहले आप स्टेटमें आ० रिक्रिप्टिंग आफिसर थे। युरोपीय महाभारतके समय आपने अपने व्ययसे ६२ सैनिकोंको रणस्थलमें भेजा था।

झांसीमें आपकी फर्मपर जमींदारी और बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। वहां इस फर्मको स्थापना हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ

संवत् १९७६ में आपने सेठ अगरचन्दजीसे साझा अलग कर लिया। इस समय आपके ५ पुत्र हैं। जिनके नाम कुँवर जेठमलजी, कुँवर पानमलजी, कुँवर लहरचन्दजी, कुँवर जुगराज तथा कुँवर ज्ञानपालजी हैं। आपने अपने सब पुत्रोंको संवत् १९७६ से ही अलग। उनका हिस्सा बांट दिया है। संवत् १९७९ से ही आप अपना पूरा समय धर्मध्यान। पारमार्थिक संस्थाओंके संचालनमें देने लगे हैं।

आपने कलकत्तेके चीना बाजारको नं० १६०।१६१ की दुकानें स्कूलके लिये दे दी हैं तथा दो भाइयोंकी ओरसे बीकानेरकी एक बिल्डिंग-स्कूल, कन्या पाठशाला, बोर्डिंग तथा लायब्रेरी आदि लिये दी है। तथा दूसरी बिल्डिंग सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक कार्योंके लिये दी है कलकत्तेकी क्रास स्ट्रीटके नं० ३, ५, ७, ९, ११, और मनोहरदास स्ट्रीटके १२३, १२१ नं० मकान भी परमार्थिक संस्थाओंको दान दे दिये हैं तथा उक्त सब मकानोंकी रजिस्ट्री भी करा दी है।

आपकी धर्मपत्नीने भी १०००० धार्मिक संस्थाओंको दान दिया है। फिलहाल आपकी ओरसे निम्नलिखित संस्थाएं चल रही हैं इन संस्थाओंका आप स्वयं संचालन करते हैं।

१ सेठिया जैन स्कूल २-सेठिया जैन श्राविका पाठशाला ३—सेठिया जैन संस्कृत प्राकृत विद्यालय ४—सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस ५—सेठिया जैन शास्त्र भण्डार ६—सेठिया जैन विद्यालय ७—सेठिया जैन श्राविकाश्रम ८—सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस।

श्रीमान् भैरोंदानजी श्रीसप्तम अ० भा० व० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स बंबई के सभापति थे। एवं जैन श्वे० स्थानकवासीके ट्रेनिंग कालेजके भी आप सभापति हैं। इसके अलावा श्वेताम्बरसाधुमार्गी जैन हितकारिणी सभाके भी आप प्रेसिडेण्ट हैं स्थानिक म्युनिसिपल बोर्डके भी आप मेम्बर हैं।

श्रीयुत जेठमलजी स्थानीय साधुमार्गी हितकारिणी सभाके सेक्रेटरी तथा जैन ट्रेनिंग कालेजके सेक्रेटरी हैं।

सेठ साहबके ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी अपने योग्य पिताकी योग्य संतान हैं। आप भी अपने पिताजीकी तरह द्रव्य एवं समय द्वारा समाज एवं धर्मकी सेवा करनेवाले एक बड़े ही उत्साही युवक हैं। आप सेठजी की स्थापित की हुई उपरोक्त संस्थाओंका बड़े उत्साहसे संचालन करते हैं। आप स्वयं उनके ट्रस्टी भी हैं। इतना ही नहीं आपने अपने मातेश्वरीके स्मरणमें तीस हजार रुपये तथा केनिंग स्ट्रीट मुर्गीहट्टा कलकत्ता का नं० ११३, ११५ मकान और मेफ्यान लेन नं० ६ के मकान भी पारमार्थिक संस्थाओं को दान कर दिये हैं उक्त सब मकानोंके किरायेकी एवं रकमोंके व्याजकी आमदनी करीब २१ हजार रुपया सालाना सब पारमार्थिक कार्यों में आपके द्वारा व्ययी होती है।

स्वर्गीय सेठ लक्ष्मीचंदजी मोहता बीकानेर

श्रीयुत सेठ रामगोपालजी मोहता बीकानेर

श्री सेठ रामकृष्णजी मोहता बीकानेर

लहरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

श्री मिलापचन्दजी वेद (भीखमचन्द रामचन्द) बीकानेर

...जी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

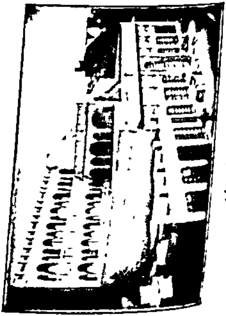

दिल्ली—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल न्यू क्लाथ मार्केट (T. A. Labh)—इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त शादड़ामें आपकी मोहता फ़ेल्ट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी हैं। इसमें टोपियोंका काम होता है।

अमृतसर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, आलू कटरा—यहांपर बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

कसूर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Mohata) इस फर्मपर कॉटन कमीशन एजंसी एवम् वैंकिंग वर्क होता है।

रायविंड—(N.W.R.)-मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज इस स्थानपर आपकी एक जीनिंग फक्टरी है।

सेठ शालिगराम नत्थाणी

इस फर्मके संचालक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका हेड आफ़िस रायपुर (सी० पी०) में है। वहां इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष होगये। पहले यह फर्म शालिगराम गोपीकिशनके नामसे व्यवसाय करती थी। मगर सेठ गोपीकिशनजीके अलग होजानेसे उपरोक्त नामसे व्यवसाय होता है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ बालकिशनजी तथा सेठ रामकिशनजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप सज्जन और शिक्षित व्यक्ति हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं।

रायपुर—(सी० पी०)मेसर्स शालिगराम नत्थाणी (Natthani)—इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी, और बैंकिंगका वर्क होता है। गल्ला तथा कपड़ेकी आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

रायपुर—मेसर्स रामगोपाल शंकरदास—इस फर्मपर चांदी सोना सूत और व्याजका व्यापार होता है।

भाटापाड़ा (सी० पी०) - शालिगराम नत्थाणी (T. A. Natthani) यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठी का बिजिनेस होता है।

नेवराबाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थाणी—इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

बालोदा बाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थाणी—यहांपर भी बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठीका बिजिनेस होता हैं।

श्रीयुत ज्ञानपालजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया, २ नम्बर आर्मेनियन स्ट्रीट, इस फर्मपर विलो रंगकी बिक्री और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कदमतुला हबड़े में जो दी सेठिया केमिकल वर्क्स लिमिटेड नामक है इसके सोल मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत जुगराजजी और ज्ञानपालजी सेठिया हैं।

मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास डागा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर में है। आप माहेश्वरी जातिके सा है। इस फर्मको स्थापित हुए सौवर्ष से ऊपर हो गये। इस दुकानकी विशेष तरक्की सेठ नैनसुख जीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास हुए पचास वर्षसे ऊपर हो गए। उनके पश्चात् उनके पुत्र सेठ बलदेवदास जीने इस फर्मके कामको सम्भाला। आप बीकानेरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आप के हाथोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। बीकानेरमें आपने अच्छा नाम कमाया। सेठ बलदेवदासजी का स्वर्गवास संवत् १९६६में हुआ। इस समय श्रीयुत बलदेवदासजीके पुत्र श्रीयुत आनन्दरूपजी इस फर्मके कामको सम्हालते हैं आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीसूर्यनारायणजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) बीकानेर—मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास—यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है। यहां हुंडी चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स नैनसुखदास जयनारायण बेहरापट्टी ६ नम्बर (T. A. Belach...) इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सराफी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) बम्बई— नैनसुखदास शिवनारायण, कालबादेवीरोड (T. A. Nainsukh) यहां चिट्ठी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(४) मद्रास—मेसर्स नैनसुखदास बल्देवदास साहुकारपेठ, यहां हुंडी, चिट्ठी और बैंकिंग बिजिनेस होता

मेसर्स उम्मेदमल गंगाबिशनजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गंगाबिशन जी हैं। आप श्रीयुत उम्मेदमलजीके दत्तक गये हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत उम्मेदमलजीने की, और इसकी तरक्की श्रीयुत गंगाबिशनजीने की। आप बड़े सज्जन और मिलनसार पुरुष हैं। आपकी इस समय ... (बरार) में दुकान है। जिस पर बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, गल्ला और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

स्व० सेठ मगनमलजी कोठारी (लघुपुत्र गम्भीरचन्द)   स्व० सेठ धनचन्दजी कोठारी (ज्येष्ठपुत्र गम्भीरचन्द)

एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। आपने कलकत्तेके माहेश्वरी भवनमें ५०००) का दान दिया है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर भैरोंचन्द जी है। आप बड़े होनहार नवयुवक हैं।

वर्तमानमें आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द क्रास स्ट्रीट (T. A Sadasukh jain) इस फर्म पर सोना, चांदी, लोहा कपड़ा बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका बड़ा व्यापार होता है। कलकत्तेमें यह फर्म बहुत आदरणीय और प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

(२) बम्बई—मेसर्स सदासुख गंभीरचंद कालबादेवी—यहांपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है। T. A Gambhir

(३) मद्रास—मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द साहुकार पेठ—यहां भी बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) दिल्ली - मेसर्स कस्तुरचन्द दाऊदयाल T. A. Dayal—यहां पर बैंकिंग और सोने चांदीका व्यवसाय होता है।

—:::—

मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता

इस फर्मके मालिक बीकानेरके प्रसिद्ध मोहता परिवारके वंशज हैं। इस फर्मके संस्थापक राव बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ॰ बी॰ ई॰ हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ मोतीलालजी मोहता था। सेठ गोवर्द्धनदासजीके ३ बड़े भाई सेठ शिवदासजी, सेठ जगन्नाथजी, और सेठ लक्ष्मीचंदजी थे। इनमेंसे सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्रोंकी फर्म जगन्नाथ मदनगोपालके नामसे और लक्ष्मीचंदजीके ७ पुत्रोंकी फर्म मोतीलाल लक्ष्मीचन्दके नामसे व्यवसाय करती है। यह सारा कुटुम्ब शिक्षित है और माहेश्वरी-समाज-सुधारमें बहुत अग्रगण्य रूपसे भाग लेता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक रायबहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ॰ बी॰ ई॰के पुत्र श्री॰ सेठ रामगोपालजी मोहता और रायबहादुर सेठ शिवरतनजी मोहता हैं। श्री मोहता रामगोपालजीसे हिन्दी संसार भलीप्रकार परिचित है। आप उन्नत विचारोंके दानवीर महानुभाव हैं। आपके हाथोंसे समाजकी जो दिव्य सेवाएं हुई हैं वे भारतभरमें प्रख्यात हैं।

आपने अपने छोटे भ्राता मूलचंदजीके नामसे मोहता मूलचन्द विद्यालय नामक एक विद्यालय और बोर्डिंग हाउस स्थापित कर रक्खा है। आपने अभी कुछही समय पूर्व श्री बिड़लाजी-के सहयोगसे इङ्गलैण्डमें १ मकान अच्छी लागतसे खरीदा है। जिसमें भारतीय लोगोंके ठहरनेके प्रबंधके साथ साथ आपकी उसमें एक शिव-मंदिर बनवानेकी भी स्कीम है।

मोहता मोतीलालजीके परिवारके कुछ सम्मिलित सार्वजनिक कार्योंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल, २८ स्ट्राण्डरोड-T. A. Lal K[illegible] [illegible] पर रंगीन कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मोहता ब्रदर्स २८स्ट्राण्डरोड T. A. Mohata यहां एक्सपोर्ट [illegible] का व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—आर० के० मोहता एण्ड कम्पनी, इस फर्मपर गनी ब्रोकर्स और [illegible] होता है।

(४) आसूगंज—मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल—यहांपर आपकी जमीदारी है। [illegible] ब्राह्मण बड़िया (बङ्गाल) में एक औषधालय चल रहा है।

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इस फर्मके मालिकोंका पूरा परिचय कई चित्रों सहित खण्डोंमें दिया गया है। आपका निवास बीकानेर है। एवं यहां रायबहादुर वाले बाहितीजोंके नामसे [illegible] हैं। [illegible] जसरूप जी और हमरूपजी यहांसे व्यापारके निमित्त मालदेकी ओर गये थे।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका विस्तृत परिचय भी कई सुन्दर चित्रों सहित खण्डोंमें दिया गया है। यह [illegible] बहुत बड़ी मात्रामें रुई और कपासका व्यापार करती है। आपका भी खास निवास [illegible] खण्डोंमें आपकी और जसरूप बैजनाथकी मिलाकर करीब ३१-४० [illegible] यह फर्म सेठ हमलालजीके वंशजों की है।

मेसर्स नारायणदासजी मोहता

इस फर्मके मालिक खास निवासी बीकानेरके हैं। [illegible] नारायणदासजीने तथा इनके पुत्र सेठ [illegible] व्यापारको विशेष [illegible] सेठ [illegible] हो गया है। वर्तमानमें इस दूकानके संचालक सेठ [illegible] हमसे, श्रीकिशनदासजी एवं श्रीगोपालदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

(१) बीकानेर—सेठ नारायणदासजी मोहता—यहां आपका [illegible] है

श्री० सेठ बहादुरमलजी रामपुरिया, बीकानेर

स्व० सेठ जसकरणजी रामपुरिया, बीकानेर

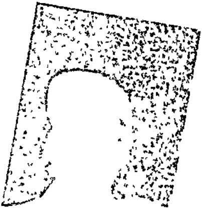
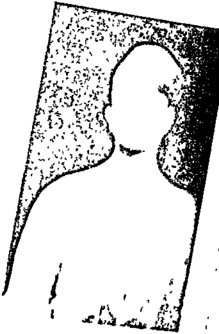

यहां ८) मासिकपर गुमाश्ता-गिरी की। ७ वर्षके पश्चात् आप अपनी कार्य कुशलतासे इस फर्मके मुनीम होगये। सन् १८८३में आपने अपने भाइयोंको उपरोक्त नामसे कपड़े की दूकान करवादी एक सालके पश्चात् आप भी नौकरी छोड़कर इस फर्ममें शरीक होगये। धीरे २ इस दूकानकी उन्नति होती गई और संचालकोंकी बुद्धिमानी और कार्य-कुशलतासे यह फर्म दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करने लगी। यहांतक कि यह खानदान आजकल बीकानेरके धनकुबेरोंमें गिना जाता है। कलकत्तेके कपड़ेके इम्पोर्टरोंमें भी इस फर्मका बहुत ऊँचा नम्बर है।

इस प्रकार इस फर्मका इतिहास एक स्वावलम्बनका इतिहास है। जिसमें संचालकोंकी बुद्धिमानी, कार्य-कुशलता और व्यापार निपुणताका पूरा २ परिचय मिलता है।

इस फर्मकी उन्नतिमें श्रीयुत जसकरणजीका सबसे बड़ा हाथ रहा है। उन्होंने इस फर्मकी लन्दन और मैनचेस्टरमें शाखाएं खोली थीं। इन शाखाओंपर आपने हिन्दुस्थानी कार्यकर्त्ता रक्खे थे। इन शाखाओंकी वजहसे इस फर्म की खूब तरक्की हुई। श्रीयुत जसकरणजीका देहावसान सन् १९२० में हो गया। चूंकि यही इन शाखाओंकी देखरेख रखते थे इसलिये इनके एक वर्ष पश्चात् ही ये शाखाएं टूट गईं।

इस समय आपके पुत्र श्रीयुत भंवरलालजी हैं। आपका जन्म सं० १९६५ में हुआ। आप सज्जन, और उदार प्रकृतिके नवयुवक हैं।

श्रीयुत सेठ बहादुरमलजी तीव्र मेधावी सज्जन थे। आपकी ज्ञानशक्ति, बुद्धिमत्ता और निपुणताको देखकर कई अंग्रेज आश्चर्य चकित होगये। आपके विषयमें बंगाल, बिहार और उड़ीसाके इनसाईक्लो पिडियामें लिखा है। He is one of the fine products of the business world having imbibed sound business instinsts compled with courtesy to strangers and religious faith in jainism.

श्रीयुत बहादुरमलजीकी दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुची थी। आप विशेषकर गुप्त-दान किया करते थे। आपकी ओरसे बीकानेरमें अस्पतालके सामने एक धर्मशाला बनी हुई है। इसमें रोगियोंके ठहरनेका अच्छा इन्तिज़ाम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया १४८ क्रॉस स्ट्रीट—तारका पता Hazana इस फर्मपर धोती जोड़े और शर्टिंग विलायत और जापानसे इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त आसाममें भी आपकी एक शाखा है। वहां जूट तथा हेसियनका काम होता है।

—

श्रीयुत प्रागदासजी बिन्नानी के, जो इस फर्मके मूल संस्थापक थे, श्रीयमुनादासजी, श्रीगोविन्ददासजी और श्री पुरुषोत्तमदासजी इस प्रकार तीन पुत्र थे। इन्होंने योग्य होकर फर्म [illegible] के इस व्यापारको बहुत व्यापक बनाया। सम्वत् १९५८ तक उक्त तीनों भाई सम्मिलित रूपसे ही अपने व्यापारका संचालन करते रहे। इसके बाद संवत् १९५९ में श्री गोविन्ददासजी [illegible] कलकत्ता, बनारस और मिर्जापुरमें अपनी दुकानें स्थापित कीं। कलकत्तेमें [illegible] बजाजा सराफीके कामका भी आरम्भ किया गया। श्रीयुत गोविन्ददासजी परम [illegible] तथा एक कुशल व्यापारी थे, सराफीके काममें आप बहुत प्रतिष्ठित [illegible]। इसके बाद आपने गवर्नमेण्टके रेलवे बोर्डको (धातु) मिण्टका सेलिंगका काम [illegible] किया, जो कि इस समय खूब उन्नत है। आपके दो पुत्र थे, बड़े श्रीयमुनादासजी बिन्नानी और [illegible] जानकीदासजी बिन्नानी। यमुनादास निःसंतान थे और श्रीजानकीदासजीके श्रीगोपालदासजी और [illegible] बालकदासजी बिन्नानी दो पुत्र हैं। श्रीयमुनादासजी और जानकीदासजी स्वर्गीय हो चुके हैं। इनके पिता गोविन्ददासजीका भी गत सम्वत् १९८२ की चैत्र सुद कृष्णा १० को [illegible] गया। अब कलकत्ता, मिर्जापुर तथा बनारसकी तीनों फर्मोंके स्वत्वाधिकारी श्रीगोपालदासजी बिन्नानी और श्रीबालकदासजी बिन्नानी ही हैं। आपकी फर्म इस समय कलकत्तेके व्यापारियोंमें बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्रीबालकदासजी बिन्नानी अपने पिताजीके [illegible] ही सारी फर्मोंका सञ्चालन करने लग रहे हैं। आपने अपने कार्यमें बहुत [illegible]। भारतवर्षीय डीडू माहेश्वरी महापंचायतके आप संयुक्त महामन्त्री हैं, तथा हिन्दू [illegible] समिति संरक्षक हैं। श्री डीडू माहेश्वरी सेवा समितिके भी आप [illegible] हैं। [illegible] अंग्रेजी, बंगला और गुजरातीके आप ज्ञाता हैं। हिन्दीमें कई ग्रन्थ भी [illegible]। फर्मोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स प्रयागदास यमुनादास बिन्नानी - [illegible]

(२) बनारस—मेसर्स प्रयागदास गोविन्ददास—सुड़िया बाजार।

मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास बिन्नानी

इस फर्मके वर्तमान संचालक [illegible] माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। [illegible] सेठ पुरुषोत्तमदासजी तथा आपके पुत्र बाबू [illegible] बिन्नानी हैं। [illegible] इस फर्मके व्यापारको [illegible] किया है। [illegible] प्रतिष्ठित माना जाता है। [illegible] है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारीमलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६६ में हुआ। इनके श्री शिखरचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ शिखरदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दूकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिञ्जरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chatta stick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
„ अनंदरूप नेनसुखदास डागा
„ हरखमल चांदमल ढड्ढा
„ गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
„ गुनचंद मंगलचन्द ढड्ढा
„ जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
„ जगन्नाथ मूलचन्द डागा
„ नारायणदास जी मोहता
मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
„ प्रयागदास जमनादास बिन्नानी
„ बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
„ बालकिशनदास श्रीकृष्णदास दम्माणी
„ बालकिशनदास रामकिशनदास दम्माणी
„ भीखनचंद रेखचंद मोहता
„ रामकिशनदास रामरतनदास बागड़ी
„ राधावल्लभदासजी दम्माणी
„ रामरतन सूरजरतन दम्माणी

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ शहरोंमें हैं। कई व्यापारियोंकी यहां फर्मे भी नहीं है। केवल इनकी मय्य हवेलियां यहां बनी हैं। पर इस स्थानके प्रसिद्ध व्यवसायोंके नाते इनके पते यहां दिए गये हैं।

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारीमलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६६ में हुआ। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ रिखबदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दुकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिञ्जरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १६१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chattastick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
" नन्दरूप नेनसुखदास डागा
" उदयमल चांदमल दड्डा
" गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
" गुनचंद मंगलचन्द डड्ढा
" जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
" जगन्नाथ मूलचन्द सादानी
" नारायणदास जी मोहता

मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
" प्रयागदास जमनादास बिन्नाणी
" बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
" बालकिशनदास श्रीकृष्णदास दम्माणी
" बालकिशनदास रामकिशनदास दम्माणी
" भीखनचंद रेखचंद मोहता
" रामकिशनदास रामरत्नदास बागड़ी
" राधावल्लभदासजी दम्मानी
" रामरतन बृजरतन दम्माणी

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ शहरोंमें हैं। कई व्यापारियोंकी यहां फर्म भी नहीं है। केवल उनकी भव्य हवेलियां यहां बनी हैं। पर इस स्थानके प्रसिद्ध व्यवसायोंके नाते उनके पते यहां दिए गये हैं।

जगन्नाथजीके हाथोंसे हुई। इस समय इस फर्मका संचालन श्रीयुत आशारामजी साहानी करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हरकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

कलकत्ता—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सूंगरापट्टी नं० १५ T. A. Harku—इस फर्मपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता - मेसर्स मूलचन्द आशाराम, मनोहरदासका कटला—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता है। इस फर्मके जिम्मे गया जिला की तथा स्थानीय बहुतसी जमींदारीका काम भी है।

अलीगढ़—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ, मदार दरवाजा T. A. sadani-यहां आपको एक काटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। कपास तथा आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

कलकत्ता—पाटी प्रेस-यहां आपका एक प्रिंटिंग प्रेस भी है।

मेसर्स मोतीलाल लखमीचन्द मोहता

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत पुरानी है। इसके स्थापक सेठ लखमीचंदजी थे। आपके द्वारा इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपके आठ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० कन्हैयालालजी, श्री० मोहनलालजी, श्री० सोहनलालजी, श्री० मेघराजजी, श्री० रामचन्द्रजी (स्वर्गस्थ) श्री अगरचंदजी, श्री० गोकुलदासजी और श्री विट्ठलदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, १३ पगिया पट्टी T. A. Durgamai-यह फर्म कई अंगरेज कम्पनियोंकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, कालबादेवी रोड T. A. Mohata-इस फर्मपर बैंकिंग हुण्डी-चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है।

कराची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, Overland यह फर्म रायजी ब्रदर्सकी पीस गुड्सकी ब्रोकर है। यहींपर ओव्हरलेंड मोटर कम्पनीकी सिंध, बलूची स्थान और राजपूतानेके लिये सोल एजंसी है।

करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Durgamai) इस फर्मपर काटन कमीशन एजेंसीका काम होता है।

करांची—मेसर्स सोहनलाल गणेशीलाल -इस दुकानपर कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारी मलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६६ में हुआ। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ रिखबदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दूकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिञ्जरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chatta stick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
" अनंदरूप नेनसुखदास डागा
" उदयमल चांदमल ढढ्ढा
" गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
" गुनचंद मंगलचन्द डड्डा
" जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
" जगन्नाथ मूलचन्द सादानी
" नारायणदास जी मोहता

मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
" प्रयागदास जमनादास बिन्नाणी
" बंसीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
" बालकिशनदास श्रीकृष्णदास दम्माणी
" बालकिशनदास रामकिशनदास दम्माणी
" भीखमचंद रेखचंद मोहता
" रामकिशनदास रामरतनदास बागड़ी
" राधावल्लभदासजी दम्मानी
" रामरतन बृजरतन दम्माणी

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ शहरोंमें हैं। कई व्यापारियोंकी यहां फर्में भी नहीं हैं। केवल उनकी भव्य हवेलियां यहां बनी हैं। पर इस स्थानके प्रसिद्ध व्यवसायीके नाते इनके पते यहां दिए गये हैं।

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारीमलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६६ में हुआ। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ रिखबदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दुकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिंजरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chattastick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
" अनंदरूप नेनसुखदास डागा
" उदयमल चांदमल ढढ्ढा
" गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
" गुनचंद मंगलचन्द ढड्ढा
" जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
" जगन्नाथ मूलचन्द सादानी
" नारायणदास जी मोहता
मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
" प्रयागदास जमनादास बिन्नानी
" बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
" बालकिशनदास श्रीकृष्णदास दम्माणी
" बालकिशनदास रामकिशनदास दम्माणी
" भीखमचंद रेखचंद मोहता
" रामकिशनदास रामरतनदास बागड़ी
" राधावल्लभदासजी दम्मानी
" रामरतन मूलरतन दम्मानी

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ शहरोंमें हैं। कई व्यापारियोंकी यहां फर्में भी नहीं हैं। केवल उनकी भव्य हवेलियां यहां बनी हैं। पर इस स्थानके प्रसिद्ध व्यवसायोंके नाते उनके पते यहां दिए गये हैं।

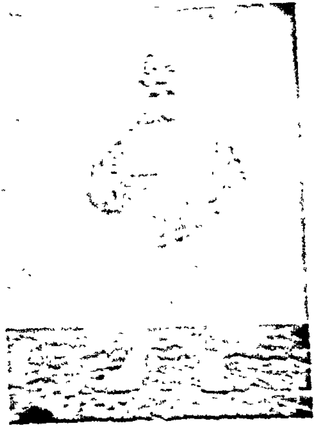

स्व० सेठ [illegible], सुजानगढ़

श्री सेठ [illegible] सुजानगढ़

(२) ग्वालंदो (फरीदपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द—इस फर्मपर भी जूट (कुष्टा) का घरू और आढ़तसे व्यवसाय होता है।

(३) सैदपुर-(रंगपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी और जूटका घरू और आढ़तका कारवार होता है।

(४) बोगड़ा (बंगाल) गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी तथा जूटकी आढ़तियोंके लिये और घरू खरीदीका काम होता है।

सेठ दानचन्दजी थली घड़ेके ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप बड़े मिलनसार हैं। डीडवानामें भी आपके मकान वगैरा बने हुए हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आपकी फर्मको यहाँ आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्वप्रथम सेठ आलमचन्दजी यहाँ आये थे। आप बीकानेरमें राज्यकार्य करते थे। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम बदीचन्दजी, गगेरदासजी चुन्नीलालजी और चौथमलजी था। चारों भाइयोंने मिलकर संवत १९१३ में कलकत्तेमें चुन्नीलाल चौथमलके नामसे व्यापार आरंभ किया, इन चारों भाइयोंमें सेठ चुन्नीलालजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छी तरक्की मिली। आप बहुत कर्मशील पुरुष थे। आपका देहावसान सं० १९५० में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हजारीमलजी वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको संभाल रहे हैं। आपके समयसे ही इस फर्मपर चुन्नीलाल हजारीमलके नामसे व्यापार होता है। आपके छोटे भाई श्री हमीरमलजीका देहावसान संवत १९५७ में हो गया है।

सेठ हजारीमलजी यहांकी म्युनिसिपैल्टिीके मेम्बर हैं। आप यहाँके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। सुजानगढ़में आपने कई अच्छे सुन्दर मकानात बनवाये है। बीकानेरमें भी आपकी हवेली बनी हुई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल १६ पगियापट्टी—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी और सराफी लेनदेनका काम होता है। आपकी शिवठाकुर स्ट्रीटमें एक इमारत बनी हुई है।

(४७) सुजानगढ़—चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। तथा आपका खास निवास है।

(१) रेल्वे स्टेशनपर इस परिवारकी ओरसे एक रमणीय विशाल धर्मशाला बनी है। बीकानेर जैसे शहरमें जहां पानी बिकता मोल की कहावत है। कोई मजनवी भारी इफरातमें निवास करनेवाला यहां आवे तो उसे इस धर्मशालामें अपना घर छोड़ा हुआ नहीं दिखाई देगा। इसके अन्दर एक औषधालय और आयुर्वेदिक पाठशाला भी है। स्टेशन पर आपकी ओरसे प्याऊका प्रबंध है।

(२) बीकानेर शहरमें आपका एक औषधालय स्थापित है। जिसमें आयुर्वेदिक व एलोपैथिक दोनोंप्रकारकी चिकित्साएं होती हैं।

(३) बीकानेरसे एक मीलकी दूरीपर संसोलाव तालाबपर एक विशाल मकान धर्मके लिए बना हुआ है।

(४) आपकी ओरसे एक अनाथालय खुला हुआ है। जिसमें बहुतसे अनाथोंको सहायता दी जाती है।

(५) श्री कोलायतजी नामक तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे श्री गंगामाईका मंदिर व धर्मशाला बनी हुई है।

इसीप्रकारके अनेक धार्मिक कार्योंमें इस कुटुम्बने बहुत उदारतापूर्वक दान दिये हैं।

व्यापारिक दृष्टिसे यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। करांचीमें मोहता मार्केट नामक आपका एक सबसे बड़ा कपड़ेका मार्केट बना हुआ है। आपकी फर्मोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) करांची—मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता T. A. marketwala—इस फर्मपर कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। करांचीमें आपकी बहुतसी जमींदारी है। यहां एक लोहेका कारखाना भी है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल मोहता २८ स्ट्राण्डरोड T. A. [illegible]
आपके भाइयोंके साझेमें कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(३) देहली—गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता—यहां भी कपड़ेका व्यवसाय होता है।
इसके अतिरिक्त झरियामें आपकी कोयलेकी खान भी है।

मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत हीरालालजी, श्रीयुत शिखरचंदजी, व [illegible] भंवरलालजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ जोरावरमलजी बहुधा मारवाड़ [illegible] के पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी केवल १३ वर्षकी अवस्थामें कलकत्ता गये और वहां [illegible]

पुत्र श्री रामकिशनजीको दत्तक लिया। सेठ रामकिशनजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। इस समय आपके चार पुत्र हैं, जिनके नाम श्री हजारीमलजी, रामप्रतापजी, मोतीलालजी और अर्जुनलालजी हैं। आपकी ओरसे सुजानगढ़ स्टेशनपर बड़ी सुन्दर दर्शनीय धर्मशाला बनी है। कलकत्तेके विशुद्धानन्द औषधालयमें आपने ५१००) दिए हैं। इसी तरह गोशाला आदि शुभ कार्योंमें भी आप भाग लेते रहते हैं। अभी कुछ समय पूर्वसे आप सब भाइयोंका व्यापार अलग २ होने लगा है, जिसका परिचय इस प्रकार है।

(१) हजारीमलजीकी फर्म—

भयंदर—रामकिशनदास हजारीमल—यहां नमकका व्यापार होता है।

(२) रामप्रतापजीकी फर्म

कलकत्ता—जीवराज रामप्रताप, २६।१ आर्मेनियनस्ट्रीट T. A. Pratap इस फर्मपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बम्बई—रामप्रताप नंदलाल, लक्ष्मीदास मार्केट T. A. Prtapnand इस फर्मपर भी आढ़तका काम होता है।

भयंदर—रामप्रताप शिवचन्द्राय, यहां नमकका व्यापार होता है।

(३) मोतीलालजी और अर्जुनलालजीकी फर्म

कलकत्ता—जीवराज रामकिशनदास २६—१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Gadodiya यहां आढ़तका काम होता है।

बम्बई—मोतीलाल अर्जुनलाल, लक्ष्मीदास मार्केट—यहां आढ़तका काम होता है।

भयंदर—मोतीलाल अर्जुनलाल, यहां नमकका व्यापार होता है।

—:०:—

मेसर्स धर्मसीजी माणकचन्द बोरड़

इस फर्मके मालिकोंका निवास सुजानगढ़ है। इस दुकानको सेठ धर्मसीजीने १०० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपके बाद सेठ माणकचन्दजीने इस फर्मके कामको सम्भाला। आपका सुजानगढ़के समाज एवं राज्यमें अच्छा सम्मान था। आपके बाद आपके छोटे भाई चुन्नीलालजी ने इसके व्यापारको चलाया। सेठ चुन्नीलालजीके २ पुत्र थे, मोतीलालजी और भूरामलजी। आप दोनोंका भी यहां अच्छा सम्मान था आप देशमें ही व्यापार करते थे। सेठ भूरामलजीके बाद वर्तमानमें इस दूकानका संचालन आपके पुत्र सेठ झूंथामलजी करते हैं। आप बहुत प्रतिष्ठित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके कुटुम्बकी हमेशा पंच-पंचायतियोंमें अच्छी प्रतिष्ठा रही है। आप

कत्त—चौथमल आसकरण—यहां आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

सुजानगढ़—मोतीलाल आसकरण—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता है। और आपका खास निवास है।

—:o:—

मेसर्स रामवख्श रामनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कुचामन (मारवाड़) है। पहिले पहिल संवत् १९०५में सेठ संतोकीराम जी मामूली हालतमें यहां आए थे। आपके बाद आपके २ पुत्र रामवख्शजी और रामचन्द्रजीने उदयचंद पन्नालाल चूरूवालोंके साझेमें पन्नालाल हजारीमलके नामसे कलकत्तेमें व्यापार आरम्भ किया। इस व्यापारमें आपने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। संवत् १९७५में आपने पन्नालाल हजारीमल नामक फर्मसे अपना काम अलग कर लिया। इस समयसे ही सेठ रामचन्द्रजी सुजानगढ़में रामचन्द्र सुजानमलके नामसे व्याज वगैराका धंधा करते हैं। आपकी यहां एक माहेश्वरी पाठशाला चलरही है। इसके लिये आपने एक मकान भी दिया है।

सेठ रामवख्श जीके पुत्र सेठ रामनारायण जी कलकत्तेमें अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामवख्श रामनारायण ४।१ स्ट्रांडरोड (T A Kripasindhu)-यहां जूटका पक्का और आढ़तका काम और हुण्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

(२) पेलासेवा (जलपाई गोड़ी)—मेसर्स कन्हैयालाल सेनकरन—यहां जूटका व्यापार होता है।

(३) मैमनसिंह—रामवगस रामनारायण-यहां भी जूटका व्यापार होता है।

—:o—

मेसर्स रूपचंद तोलाराम सेठिया

इस फर्मके मालिक खास निवासी बीकानेरके हैं आप पहिले मूंडवा और फिर ओली (बीकानेर) होते हुए सुजानगढ़ आये। पहिले पहिल ओलीसे सेठ ज्ञानचंदजी केवल २५) लेकर सिराजगंज गये थे। वहां आपने अपना व्यापार जमालिया, और अच्छा पैसा पैदा किया। आपके बाद आपके पुत्र हनुमानमलजी और रतनचंदजी हुए। सेठ हनुमानमलजीने जोधपुरस्टेटमें अमरनगर नामक गांव बसाया। इस फर्मके मालिक आरम्भमें बीकानेरके मुत्सुद्दी थे।

सेठ हनुमानमलजीके पुन्नीलालजी और तोलारामजी दो पुत्र थे। वर्तमानमें हनुमान [illegible] नामक फर्मके मालिक सेठ तोलारामजीके [illegible]पुत्र हैं जिनके नाम सेठ चांदमलजी, [illegible] सुरपतजी हैं। आपलोग अपना व्यवसाय अच्छी प्रकार चला रहे हैं। आपके [illegible] इस प्रकार है।

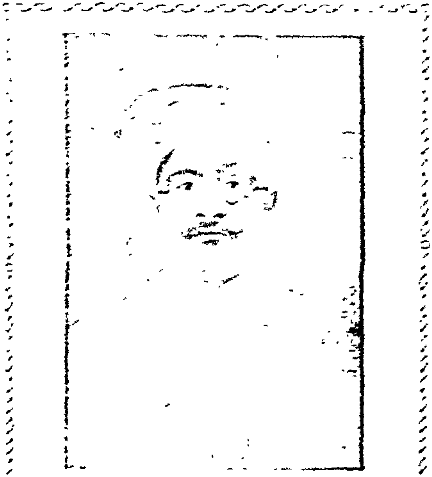

सेठ [illegible]चन्दजी [illegible] (हुकुमचन्द [illegible]) [illegible]

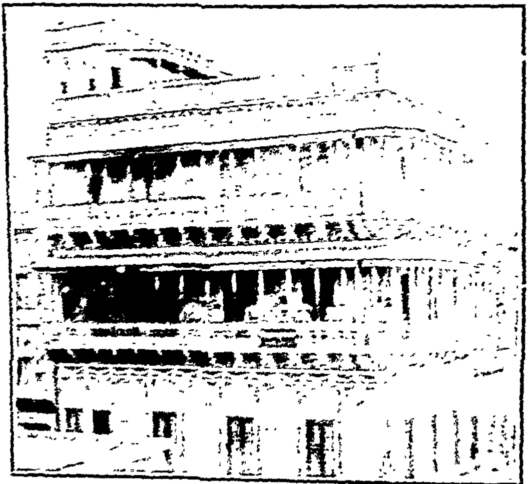

रतनगढ़

बीकानेर स्टेट रेलवेकी रतनगढ़ जंकशनके पास बसी हुई यह बस्ती है। चारों ओर दुर्गसे घिरी हुई यह सुन्दर एवं साफ बस्ती है। इसकी मनुष्य संख्या करीब १३-१४ हजारके हैं। एक शताब्दी पूर्व यहांपर कोलासर नामक एक छोटासा ग्राम था। बीकानेरके महाराज रतनसिंहजीने इसे अपने नामसे बसाया। इसकी बनावट बहुत अच्छे ढङ्गसे की गई है। यहांके कई धनिकोंकी भारतके विभिन्न स्थानोंमें दूकाने हैं। यहांके धनिक समाजकी दानधर्म एवं शिक्षा प्रचारको ओर विशेष रुचि है। इतनेसे छोटे स्थानमें कई पाठशालाएं, एवं कई प्रकारकी पारमार्थिक संस्थाएं चल रहीं हैं। यहांकी हवेलियें बीकानेरसे कुछ विशेष प्रकारकी हैं। बीकानेरमें हवेलियोंके अग्रभागमें पत्थरपर खुदाईका काम अनुपम रहता है और यहांकी हवेलियोंकी दीवालोंपर चारों ओर चित्रकारी और रंगाईकी विशेषता रहती है। जितना रुपया बिल्डिंग बनवानेमें लगता है, उसका एक अच्छा अंश उसको रंगवानेमें लगता है।

यहां पैदा होनेवाली वस्तुओंमें मूंग, बाजरा, मोठ,ज्वार और मूंज खास हैं। शेष सब वस्तुएं यहां बाहरसे आती हैं। बीकानेरकी अपेक्षा यहांके कुए कम गहरे होते हैं।

व्यवसायके नामपर यहां कुछ भी नहीं है। यहांके सभी निवासी अधिकतर बाहरकी आमदनी पर ही निर्भर रहते है। व्यापारियोंकी यहां बड़ी २ हवेलियां बनी हैं जिनमें सालमें कुछ मासके लिये वायु सेवनके लिये सब लोग आते हैं।

यहांपर हनुमान पुस्तकालय नामक हिन्दीका एक अच्छा पुस्तकालय बना हुआ है। बाबु सूरजमलजी जालानने इसकी एक सुन्दर इमारत भी बनवा दी है। इस पुस्तकालयमें भिन्न २ विषयोंकी ८५०० पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त ६४ पत्र पत्रिकाएं भी यहांपर आती हैं। यहांका प्रबन्ध अच्छा है। इसकी इमारतका चित्र इस ग्रंथमें दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद मेघराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सूरजमलजी वेद हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह दुकान पहिले माणिकचन्द ताराचंद नामक फर्ममें सम्मिलित थी। इस नामसे इसे व्यवसाय करते हुए करीब ३० वर्ष हुए।

हुकुमचन्दजी बैद (भीखराज हुकुमचन्द) रतनगढ़

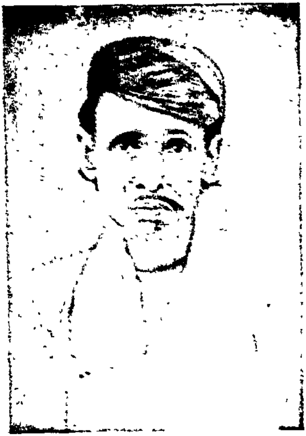

स्व॰ सेठ नागचन्दजी बैद (नानकचन्द नागचन्द) रतनगढ़

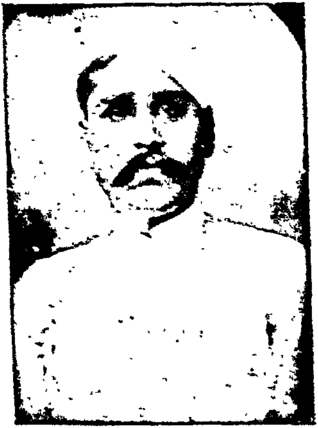

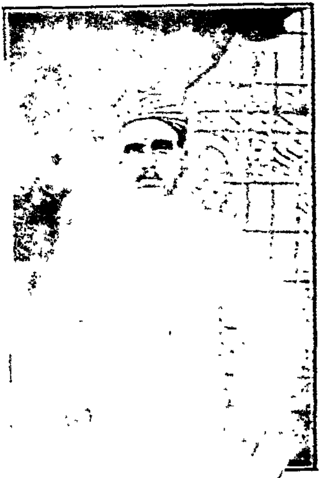

(४) माथाभाङ्गा (कूच बिहार) मेसर्स यशकरण मालचन्द, यहांपर जूट, तमाखू और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है। इस स्थानपर आपकी जमींदारी भी है।

(५) खानसामा (जलपाईं गोड़ी) मेसर्स यशकरण मालचन्द—यहां भी वैङ्किग और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स माणिकचन्द तारांचद

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है इस फर्मको इस नामसे कलकत्तेमें व्यवसाय करते हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसे सेठ ताराचन्दजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की भी आपहीके द्वारा मिली। आपका देहावसान संवत १९७१ में हुआ। आपके एक पुत्र सेठ जयचन्दलालजीका देहावसान संवत् १९६२ में और दूसरे सेठ मेघराजजीका देहावसान १९८२ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयचन्दलालजीके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी, रिखबचन्दजी, दौलतरामजी और संचियालालजी हैं। आपकी ओरसे यहां एक गणित पाठशाला चल रही है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स माणिकचन्द ताराचन्द नं० १६ केनिंगस्ट्रीट—यहां हुंडी, चिट्ठी और कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

—०:०:—

मेसर्स रामविलास सागरमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास रतनगढ़ है। इस फर्मकी स्थापना सेठ बल्देवदासजी और रामविलासजी दोनों भाइयोंने की। पहिले इस फर्मपर बल्देवदास रामविलासके नामसे व्यवसाय होता था। इन्हीं दोनों भाइयोंके हाथोंसे इस दुकानके व्यापारकी तरक्की भी हुई। संवत् १९४४में सेठ बल्देवदासजीका देहावसान होगया। तबसे इस दूकानका कार्य सेठ रामविलासजी ही सम्हालते हैं। आपके इस समय श्री सागरमलजी श्री नंदलालजी श्री बैजनाथजी और श्री बजरङ्गलालजी नामक ४ पुत्र हैं। आप चारों शिक्षित हैं। इस समय यहां आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। यहां आपका एक पक्का कुआं भी बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामविलास सागरमल १३८ हरिसनरोड, इस दूकानपर कपड़ेका व्यवसाय होता है।

हणुतरामजी और गोपीरामजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। सेठ गोपी रामजीके ६ भाई और थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री रामविलासजी, श्री बद्रीनारायणजी, श्री मंगतूलालजी, श्री गजानन्दजी, और श्री गोकुलचन्दजी हैं। आपका परिवार रतनगढ़में बहुत सम्माननीय और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी दान, धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर हमेशासे अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे रतनगढ़में ३ धर्मशालाएं, २ पक्के कुए, एक श्री सीतारामजीका मंदिर और एक छतरी बनी हुई है। इसके अतिरिक्त रतनगढ़में तापड़िया पाठशालाके नामसे आपकी दो संस्कृत पाठशालाएं चल रही हैं, इनमें विद्यार्थियोंके लिए भोजन और वस्त्रका भी प्रबंध आपकी ओरसे है। रतनगढ़के आसपास भी आपने २ तालाब और २-३ कुए बनवाये हैं।

श्रीयुत मंगतूलालजी तापड़िया माहेश्वरी समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। बिड़ला परिवारसे आपका निकट सम्बन्ध है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स गोपीराम गोविंदराम, ११३ मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स हरदेवदास रामविलास, मनोहरदासका कटला—इस दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स बालाबक्स बद्रीनारायण, मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) रंगून—मेसर्स गोपीराम शिवबक्स, मार्चेन स्ट्रीट—इस फर्मपर बैङ्किग, हुण्डी, चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स हणुतराम सर्वसुखदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके खेमका सज्जन हैं। कलकत्तेमें इसे सेठ नाथूरामजी और उनके भतीजे सेठ रामकिशनजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की नाथूरामजीके पुत्र जवाहरमलजीने दी थी। सेठ जवाहरमलजी बीकानेर स्टेटकी कमेटीके ८ वर्षतक मेम्बर रहे। यहांके सरकारी औषधालयकी बिल्डिंग आपने अपने खर्चसे तैयार करवाई थी। सेठ जवाहरमलजीने कलकत्तेके अमहर्स्ट स्ट्रीट औषधालयमें ५१०००) तथा इसी नामके विद्यालयमें ४१०००) दान दिया था। इसी प्रकार हरिद्वार (कनखल), बनारस आदिमें धार्मिक कार्योंमें आपने बहुत अच्छी २ रकमें दान की थीं। कनखलमें आपकी धर्मशाला है वहां ब्राह्मणोंके लिए अन्न-वस्त्र और शिक्षाका भी प्रबंध है।

ट तनसुखरायजी राजगढ़िया, राजगढ़

सेठ पन्नालालजी बेद (उदयचंद पन्नालाल) चुरू

बनवारीलालजी S/o सेठ तनसुखरायजी, राजगढ़

सेठ जवरीमलजी बेद (उदयचन्द पन्नालाल) चुरू

,, मुरलीधर यशवंतलाल
,, शंकरदास भगतराम
,, शिवजीराम पूरणमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स चुन्नीलाल गोविन्दराम
,, चुन्नीलाल शिवदत्तराय
,, तुलसीराम जयनारायन
,, दल्लूराम नानकराम
,, नैनसुखदास लखमीचन्द
,, नारायणदास लखमीचन्द
,, बख्तावरमल जुहारमल
,, शिवप्रसाद चंगोईवाला
,, सुगनचन्द श्रीलाल

चांदी-सोनेके व्यापारी

,, मेसर्स गंगाराम राधाकिशन

,, चुन्नीलाल शिवदत्तराय
,, चुन्नीलाल गोविन्दराम
,, ईसरदास हीरालाल

तेलके व्यापारी

मेसर्स गुलाबराय किशनलाल
,, मुरलीधर यशवंतलाल
,, शिवजीराम पूरनमल

लोहा-पीतलके व्यापारी

दुर्गादत्त जुगलकिशोर
बल्लूराम शिवनारायण
सुखरामदास बरासरवाला
सूरजमल रामेश्वर

चूरू

चूरू बीकानेर स्टेटका एक आबाद शहर है। यहांकी विशाल इमारतें यहांकी सम्पत्तिका गुणगान कर रही हैं। यह स्थान बीकानेर स्टेट रेल्वेकी रतनगढ़—हिसार लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। यहांपर कई सार्वजनिक संस्थाएं हैं जिनका परिचय आगे दिया गया है।

स्थायी व्यापार तो यहां कम है पर सट्टा,—फाटकेका व्यापार—यहां बहुत होता है। सट्टेके बाजारमें हमेशा बड़ी चहल पहल और धूमधाम रहती है। यहांके स्थायी व्यापारमें गल्ला तथा कपड़ा प्रधान है। ये दोनों ही पदार्थ बाहरसे इम्पोर्ट होते हैं। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाला कोई विशेष माल नहीं है।

दर्शनीय स्थानोंमें एक धर्मस्तम्भ नामक स्थान है। यह रेल्वेके स्टेशनसे चूरूको आनेवाली सड़कपर बना हुआ है कई सुन्दर और भावपूर्ण श्लोक संगमरमरमें पच्चीकारी द्वारा काटकर इसकी चारों ओर दिवालोंमें लगाये गये हैं।

इसके अतिरिक्त मदनमोहन, नरसिंहद्वारा तथा पुस्तकालय आदि स्थानभी दर्शनीय हैं। सुराना

पालागांव (आसाम)—मेसर्स कुन्दनमल हुलासचन्द पो० कोरड़ा आद—यहां [illegible]
गल्ले का व्यापार होता है।
छापरमें आपकी स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स हुकुमचंद गोविन्दराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहीं पर है। यह फर्म यहां शुरु [illegible] जाती है। इस फर्मके संचालक तेरापंथी ओसवाल सज्जन हैं। यह फर्म [illegible] हुकुमचन्दजीने स्थापितकी थी। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। [illegible] आपके पुत्र सेठ गोविन्दरामजी हुए। आप ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं। [illegible] भाई श्रीयुत सेठ तिलोकचन्दजी हैं। आप दोनोंही सज्जन मिलनसार व्यक्ति हैं। [illegible] चन्दजीके सुपुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी नाहटा हैं। आप शिक्षित और व्यापार [illegible] सज्जन है। बीकानेर दरबारमें आपकी बहुत प्रतिष्ठा है। आप कई संस्थाओंके मेम्बर हैं।

इस फर्मकी ओरसे यहां एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जोधपुर [illegible] तथा गोशालामें आपकी ओरसे अच्छी सहायता प्रदानकी गई थी। इसी साल [illegible] मुनिराज श्री कालूरामजी महाराजका चतुर्मास करवानेमें आपने करीब २० हजार रुपया [illegible]

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

ग्वालपाड़ा (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द गोविन्दराम—यहां कपड़ा तथा सब प्रकारका [illegible]
व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हुकुमचन्द हुलासचन्द, ४ दही हट्टा—T. A. Eaoui—यहां हुंडी, चिट्ठी
तथा जूटका व्यापार होता है। कमीशन एजंसीका काम भी इस फर्म पर होता है।

बिलासी पाड़ा (आसाम) मेसर्स तिलोकचन्द शोभाचन्द—यहां सब प्रकारका [illegible]
होता है।

धूबरी (आसाम) मेसर्स मोहनलाल भीमसिंह—यहां भी सब प्रकारका कमीशन [illegible]
होता है।

चापड़ (आसाम) मेसर्स सूरजमल रूपचन्द—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

साल्गुमा (आसाम) मेसर्स गोविन्दराम तिलोकचन्द—यहां आढ़तका काम होता है।

साइदमाम (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द हुलासचन्द—यहां जूट और सूतकी [illegible]
होता है।

छापर (बीकानेर) यहां आपका निवास स्थान है। इस गांवमें आपकी कई अन्य [illegible]

मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहींका है। आप ओसवाल तेरापंथी सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष बड़े बहादुर व्यक्ति हो गये हैं। उनमेंसे जीवनदास जीका नाम विशेष उल्लेखनीय है। लोग कहा करते हैं कि उन्होंने अपना सिर कट जानेके पश्चात् भी बहुत समयतक तलवार चलाई थी। जिसके लिये यहांकी औरतें अभीतक अपने गीतोंमें उनका नाम गाया करती हैं। इन्हीं जीवनदासजीके तीन पुत्रोंमेंसे सुलतानजीने नागोरसे यहां आकर वास किया। आपके भी तीन पुत्र थे जिनमेंसे वर्तमान फर्म सेठ बालचंदजीके वंशजोंकी है। आपके भी तीन ही पुत्र हुए। पहले श्रीयुत रुकमानन्दजी दूसरे श्रीयुत तेजपालजी और तीसरे श्रीयुत विरदीचन्दजी थे।

सेठ रुकमानन्दजीने संवत् १८९१ में कलकत्ते जाकर कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। उस समय आपकी फर्मपर रुकमानन्द विरदीचन्द नाम पड़ता था। संवत् १९६२ में सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हो गये। इस समय उनका व्यवसाय दूसरे नामसे होता है। जबसे सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हुए तभीसे इस फर्मपर तेजपाल विरदीचन्द नाम पड़ता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ तोलारामजी सेठ रायचन्दजी, सेठ श्रीचन्दजी, श्री० सोहनलालजी एवम् श्री शुभकरणजी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

सेठ रुकमानन्दजी---आप बड़े होशियार व्यापार कुशल व्यक्ति थे। इस फर्मकी विशेष तरक्कीका श्रेय आपहीको है। आपके समयमें एकबार जगातका झगड़ा चला था। उसमें आप नाराज होकर बीकानेर स्टेटको छोड़कर जयपुर स्टेटमें चले गये थे, फिर महाराजा सरदारसिंह जीने आपको अपने खास व्यक्ति मेहता मानमलजी रावतमलजी कोचरके साथ जगात महसूलकी माफीका परवाना भेजकर सम्मान सहित वापस बुलवाया था। आपका देहावसान संवत १९४२ में हुआ।

सेठ तेजपालजी और विरदीचन्दजी---आप दोनों सज्जनोंने भी इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। आपका राजदरबारमें अच्छा सम्मान था। आपकी रुचि धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रही है। आपका देहावसान क्रमशः संवत् १९२४ और संवत् १९५९ में हो गया।

सेठ तोलामलजी---वर्तमानमें आप फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आप शिक्षित एवं उदार सज्जन हैं। आपका ध्यान पुरातत्व सम्बन्धी खोजोंकी ओर विशेष है। आपने यहां एक सुन्दर पुस्तकालय स्थापित कर रखा है। इसमें करीब २५०० प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ मौजूद हैं। आपका दरबारमें भी अच्छा सम्मान है। आप बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिलके मेम्बर हैं। म्युनिसिपेलिटीके भी आप सदस्य हैं।

श्रीयुत कुंवर शुभकरणजी सुराना
(तेजपाल विरधीचन्द) चूरू

कंवर हरिसिंहजी सुराना
(तेजपाल विरधीचन्द) चूरू

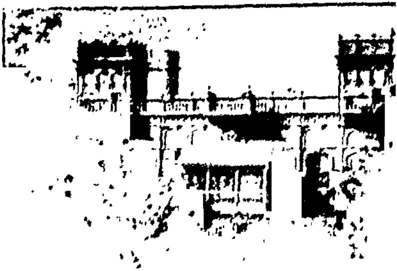

र्मके नामसे व्यवसाय करती थी। पर भाइयोंमें बटवारा होजानेसे आप इस समय उपरोक्त नामसे व्यवसाय करते हैं। इस नामसे फर्मको स्थापित हुए करीब १६ वर्ष होगये।

आपको बीकानेर दरबारने खानदानी सोना, तथा खास रुक्के बख्शा हैं। आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला बनी हुई है। आपका यहां अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स पन्नालाल सागरमल, ११३ क्रासस्ट्रीट—यहां विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट होता है। नं० १० फैनिंगस्ट्रीटमें आपकी गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स धनराज हनुतमल, ११२ क्रासस्ट्रीट—यहां खुला माल थोक बिकता है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स जैतरूप भगवानदास रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनगोपालजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे धर्मशाला, मन्दिर और कुएं आदि बने हुए हैं। संस्कृत पाठशाला तथा अन्नक्षेत्र भी आपकी ओर चल रहा है। यहां हुंडी-चिट्ठीका काम होता है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल सुराना गोत्रके सज्जन हैं। इसफर्मको स्थापित हुए करीब ५० हुए। इसके स्थापक सेठ मन्नालालजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। श्री शोभाचन्दजी आपके भाई थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मन्नालालजी तथा शोभाचन्दजीके पुत्र सेठ तिलोकचन्दजी हैं। आजकल आपही दुकानका संचालन करते हैं। आपके इस समय चारपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बछराजजी तथा हंसराजजी हैं। इनमेंसे प्रथम दो दुकानके काममें सहयोग देते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द १५६ हरिसन रोड—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है। यहां आपकी निजी कोठी है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदिबने हैं।

स्व॰ सेठ [illegible]मलजी कोठारी (मे॰ हजारीमल सरदारमल)

से॰ सूरजचन्दजी कोठारी (मे॰ हजारीमल सरदारमल)

[illegible]जी कोठारी (मे॰ हजारीमल सरदारमल)

कुं॰ [illegible]जी कोठारी (मे॰ हजारीमल सरदारमल

(२) कलकत्ता - मेसर्स दौलतराम रावतमल १७८ हरिसनरोड—इस फर्मने आरम्भ किया है। इसपर गल्ला, तिलहन, और जूटका व्यापार होता है। इस फर्मकी एक कॉटन प्रेस करनेकी मिल भी है।

मेसर्स रामरतनदास जोधराज धानुका

इस फर्मको सेठ जोधराजजीने ४० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें स्थापित किया था। इसके पूर्व आप बीकानेरके मोहता परिवारके साथ शिवदास जगन्नाथके नामसे व्यापार करते थे। आपका खास निवास रतनगढ़ ही है।

रतनगढ़के ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रममें आपकी ओरसे २१ ब्रह्मचारियोंको रोज भोजन मिलता है। आपने यहांपर एक श्री गोविन्ददेवजीका मंदिर एक बगीची और एक कुआं भी बनवाया है। आपने रतनगढ़के सहायक समिति नामक औषधालयके लिये जमीन देकर उसका मकान भी बनवा दिया है। आपके पुत्र श्री मुरलीधरजीका देहावसान होगया है। वर्तमानमें सेठ मुरलीधरजीके माधोप्रसादजी नामक एक पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामरतनदास जोधराज नं० १७८ हरिसनरोड, मल्लिककी कोठी—यहां बैंकिंग और हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल जालान

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। यह फर्म कलकत्तेमें हनुमान जूट मिलकी मैनेजिंग एजंट है। इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके (जालान) सज्जन हैं। आपकी शिक्षाके कार्यों में बहुत अभिरुचि है। आपका खास निवास स्थान रतनगढ़ ही है। रतनगढ़में आपने [illegible] मान पुस्तकालय नामक एक आदर्श पुस्तकालय संचालित कर रक्खा है। आपने इस पुस्तकालयके लिए ३० हजारकी लागतसे एक भव्य इमारत भी रतनगढ़में बनवा दी है। तथा [illegible] अभीतक आप उसका अधिकांश व्यय उठा रहे हैं। भविष्यमें भी इस वाचनालयकी उन्नतिके लिए आपके हृदयमें अच्छे विचार हैं। आपका पूरा परिचय कलकत्तेके विभागमें दिया जायगा।

मेसर्स हणुतराम गोपीराम

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास रतनगढ़ है। आप माहेश्वरी [illegible] इस फर्मकी स्थापना करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ माणिकचन्दजीने की। [illegible] गोविन्दरामजी, सेठ हनुतरामजी, सेठ गोपीरामजीने इस फर्मके व्यापारको सम्हाल [illegible]

पक्का तालाब भी बनवाया है। कुंए तो आपकी ओरसे कई स्थानोंपर बने हुए हैं। [illegible] एक देशी औषधालय तथा एक कन्या पाठशाला और एक बोर्डिंग हाउस भी [illegible] रहा है।

वर्तमानमें सेठ तनसुखरायजीके २ पुत्र हैं। श्रीमथुराप्रसादजी तथा [illegible] आप दोनों शिक्षित सज्जन हैं। बीकानेर दरबारने आपके सारे खानदानको मोना, [illegible] आदि बक्षी है। आपको सेठकी उपाधि भी मिली हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय कम्पनी, १२ ११ सेव्यरसाली लेन—यहांपर [illegible] बड़ा व्यापार होता है। यहांसे डायरेक्ट जर्मनी, जापान, इंग्लैंड, अमेरिका [illegible] अभ्रकका एक्सपोर्ट होता है। गया जिलेमें आपकी अभ्रककी खानें हैं। [illegible] भानाबाद नामक स्थान आपकी मौरूसी जायदाद है। आपके यहांके [illegible]

मेसर्स शंकरदास भगतराम टिकमाणी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान [illegible] इस फर्मके संचालक सेठ भगतरामजी तथा आपके पुत्र श्री० [illegible] आपकी फर्मका पूरा परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ६८ में दिया गया है। [illegible] साहुकारी तथा हुंडी चिट्ठी और गल्लेका व्यवसाय एवम् आढ़तका काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कुन्दनमल नथमल
सेठ कन्हीरामजी पेड़ीवाल
मेसर्स गोपीराम बनारसीदास
„ गणपतराय तनसुखराय गजगढ़िया
„ गंगाराम गर्वाक्षनाम मोदरा
„ कल्लूराम महादेव मराठी
„ तुलसीराम रामजी दास पेड़ीवाल
„ [illegible]
सेठ [illegible]
मेसर्स [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]
„ [illegible]

रंगून—कोठारी कम्पनी पो० या० ५०३—यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
चूरु—यहां आपकी शानदार हवेलियां बनी हुई हैं।

—०—

मेसर्स हजारीमल सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मालचन्दजी हैं। आप ओसवाल कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी थे। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की हुई। आपका व्यापार अफीम और गल्लेका था। आपके तीन पुत्र हुए सेठ गुरुमुखरायजी, सेठ सागरमलजी एवं सेठ सरदारमलजी। इस समय आप तीनोंकी फर्म अलग २ चल रही हैं। उपरोक्त फर्म सेठ सागरमलजीके वंशजोंकी है। आपकी ओरसे यहां एक औषधालय स्थापित है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल सागरमल, ६ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां हुंडी चिट्ठी, सराफी, चांदी सोना और शेयरोंका व्यापार होता है। T. A. Jineshwar

चूरु—यहां आपकी कई अच्छी २ इमारतें बनी हुई हैं।

मेसर्स हजारीमल गुरुमुखराय

यह फर्म भी उपरोक्त वर्णित फर्मसे सम्बन्ध रखती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ गुरुमुखरायजीके पुत्र तोलारामजी हैं। आपका धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष ध्यान रहता है। आपके पांच पुत्र हैं। सब सज्जन हैं। आपके यहां जमींदारीका काम होता है। बैंकिंग और हुंडी-चिट्ठीका काम भी यह फर्म करती हैं।

कपड़े के व्यापारी

खेतसीदास लूनकरण
गणेशदास जुगलकिशोर
दामोदर दुर्गादास
भगवान मन्नालाल
रामलाल गंगाराम
वालचन्द भानीराम
भानीराम घासीराम
मगराज जोखीराम
शिवनारायण सूरजमल
हणुतराम नौरंगराय

गल्ले तथा किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम कुन्दनलाल
दामोदरदास दुर्गादास

चांदी-सोनाके व्यापारी

गोविन्दराम गंगाधर
गोविन्दराम कुंजलाल
शिवदत्तराय लक्ष्मीचन्द

:रावतमलजी पींचा (आसकरण पांचीराम) सरदारशहर

स्व०सेठ चुन्नीलालजी दूगड़ (जी० चु०) सरदारश

[illegible] दूगड़ ([illegible]) सरदारशहर [illegible]

[illegible]

पुस्तकालयमें छपे हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त करीब २५०० हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ भी हैं। [illegible] लक श्री तोलारामजी सुराना तथा श्रीयुत [illegible]जी सुराना हैं। इसमें एक चांवलपर एक [illegible] हुआ है, वह दर्शनीय है। इसी प्रकारकी और भी कई वस्तुएं दर्शनीय हैं। इसका [illegible] देवजी करते हैं। आपका मैनेजमेंट बहुत सुन्दर है। इस पुस्तकालयके विषयमें [illegible] कई प्रसिद्ध विद्वानोंकी सम्मतियां संग्रहित हैं। सम्मतियां बड़ी अच्छी हैं। [illegible] परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् जंवरीमलजी बेद हैं। [illegible] स्थान यहींका है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। [illegible] है। इसके स्थापक सेठ पन्नालालजी हैं। आपने संवत् १६२४ में कलकत्तेमें इस फर्मको [illegible] की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी उन्नति हुई। आपके दो पुत्र हुए—सेठ सागरमलजी [illegible] जंवरीमलजी। इस समय सेठ सागरमलजी अपना अलाहदा व्यवसाय करते हैं।

सेठ जंवरीमलजी बड़े सादे एवम् मिलनसार व्यक्ति हैं। आपकी ओरसे यहां एक [illegible] बनी हुई है।

इस समय सेठ जंवरीमलजीके चार पुत्र हैं जिनके नाम श्रीगणेशमलजी, [illegible] श्रीमोहनलालजी, तथा श्रीरायचन्दजी हैं। इनमेंसे श्रीयुत गणेशमलजी दुकानके [illegible] करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां [illegible] जूटका व्यापार होता है। यहांपर डायरेक्ट विलायतसे कपड़ा आता है। [illegible] जूटका एक्सपोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जवरीमल गनेशमल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां जूटका व्यापार होता है। [illegible] आपकी स्थायी सम्पति भी बनी हुई है।

मेसर्स गणपतराय रुकमानंद बागला

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ रुकमानन्दजी बागला और सेठ [illegible] हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई [illegible] यहां आपका मूल निवास स्थान है।

बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवं व्यापार कुशल थे। आपहीकी वजहसे इस फर्मकी तरक्की हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी हुए। आपने भी अपने व्यवसायको उन्नतिपर पहुंचाया। वर्तमानमें आपके दो पुत्र इस फर्मका सञ्चालन कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स कुशलचन्द चुन्नीलाल ३८ आर्मेनियन स्ट्रीट T.A.Mahajan--इस फर्मपर बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

सिराजगंज—टीकमचन्द दानसिंह--इस स्थानपर आपकी जमींदारीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त भड़ंगामारी (रंगपुर), मीरगंज (रंगपुर), सोना टोला, (बोगड़ा), जवाहर वाड़ी (रंगपुर)आदि स्थानोंपर भी आपकी शाखाएं हैं। सरदार शहरमें भी आपकी स्थाई सम्पत्ति बनी हुई है।

मेसर्स पूसराज रुघलाल आँचलिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पूसराजजीके पुत्र श्री सेठ रुघलालजी, सेठ सुजानमलजी, सेठ हजारीमलजी और सेठ मिलापचन्दजी हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। विशेष तरक्की सेठ पूसराजजीके हाथोंसे हुई। वर्तमानमें आपके चारों पुत्र ही दुकानका सञ्चालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स चोथमल गुलाबचन्द, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े का तथा हुंडी चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है। इस फर्मपर डायरेक्ट माल विलायतसे आता है।

सरदार शहर—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स बींजराज तनसुखदास दूगड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बींजराजजीके पुत्र सेठ तनसुखरायजी और सेठ पूसराजजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन आपके पिता सेठ बींजराजजीने किया। सेठ बींजराजजी बड़े होशियार और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्म की तरक्की हुई। बीकानेर दरबारने आपको खास रुक्का तथा छड़ी इनायतकी है। आपका देहावसान हो चुका है। कहते हैं आपके मोसरमें सारे सरदार शहर और आसपासके गांववाले निमन्त्रित किये गये थे। सेठ पूसराजजी बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिङ्ग कौंसिलके ६सालसे मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज तनसुखदास, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ा तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। सरदार शहरमें आपकी अच्छी इमारतें बनी हुई हैं।

बा० सेठ तोलारामजी सुराना (मे० तेजपाल विरदीचन्द)

स्व० सेठ शिवकरणजी सुराना (मे० तेजपाल विर

से० रायचन्दजी सुराना (तेजपाल विरदीचन्द)

से० श्रीचन्दजी सुराना

से. सदारामजी कंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

से० आसारामजी कंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

सेठ [illegible] कंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

सेठ कन्हैयालालजी कंवर ([illegible])

सेठ [illegible]—[illegible] हुए हैं। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] आपका [illegible] संवत् १९३० में हुआ।

सेठ [illegible]—[illegible] है। [illegible] है। [illegible] हुए। [illegible]

कुँवर [illegible] - [illegible] है। [illegible] है। [illegible] हुए हैं। [illegible] गया है। आपका [illegible] है। [illegible] है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरधीचन्द ४.१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. S[illegible]—यहाँ हुंडी, चिट्ठी तथा विलायती कपड़े का इम्पोर्ट होता है। [illegible] मलमल, जीनों आदि [illegible] जाता है।

कलकत्ता मेसर्स तेजपाल विरधीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट यहां [illegible] होती है। नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका [illegible] कारखाना है। [illegible] यहां मौसिममें करीब ३०० दर्जन [illegible] तैयार होते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द मोहनलाल नं० २ [illegible]—इस स्थानपर आपका [illegible] कारखाना है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरधीचन्द १२८ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़े का [illegible] है। खासकर नैनसुखकी बिक्री बहुत होती है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस समय इस फर्मके संचालक सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ [illegible] सेठ हनुमानमलजी हैं। आप ओसवाल [illegible] सज्जन हैं। आपका निवास स्थान [illegible] आपकी फर्मको स्थापित हुए बहुत समय हो गया। पहले यह फर्म [illegible]

कोटा, बून्दी और झालरापाटन

KOTAH BUNDI

&

JHALRAPATAN

सेठ सागरमलजी बैद (पन्नालाल सागरमल) चूरू

श्री धनराजजी बैद (पन्नालाल सागरमल) चूरू

कोटा

-:o:-

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवेके ब्राडगेज सेक्शनमें रतलाम और मथुराके बीच कोटा जंक्शनका सुन्दर और रमणीक स्टेशन बना हुआ है। इस स्टेशनसे पांच मील दूरीपर कोटा शहर बसा हुआ है। यहांके वर्तमान महाराजा श्रीमान उम्मेदसिंहजी सुप्रसिद्ध हाड़ा वंशके वंशज हैं। जिस प्रकार हाड़ा वंशका प्राचीन इतिहास उज्वल और गौरवपूर्ण है, उसीप्रकार महाराज उम्मेदसिंहजीका वर्तमान जीवन भी अत्यन्त उज्वल और गौरवपूर्ण है। आप उन चुने हुए देशी राजाओंमें हैं, जिन्होंने अपनी प्रजाके लिये, अपने किसानोंके लिए, राज्यमें सब प्रकारकी सुविधाएं कर रक्खी हैं। तथा जिन्होंने समाजसुधारके पवित्र क्षेत्रमें बहुत अग्रगण्य और उत्साह पूर्वक भाग लिया है। जिन्होंने जनताकी शिक्षाके लिए भी सब प्रकारके द्वार खोल रक्खे हैं। जो प्रजाकी गाढ़ी कमाईके पैसेको विलासकी नदीमें न बहाकर उसका सदुपयोग कर रहे हैं और जिन्होंने बेगारके समान भयङ्कर प्रथाको अपने राज्यमें बन्द कर दिया है। इन सब दृष्टियोंसे महाराजा कोटाने जो व्यवहारिक कार्य्य कर दिखलाये हैं, वे प्रत्येक देशी राज्यके लिए अनुकरणीय हैं।

किसानोंकी सुविधाके लिए कोटा राज्यकी ओरसे कई स्थानोंपर कोआपरेटिव बैंक खुले हुए हैं, जहांसे किसानोंको उत्तम और पुष्ट बीज सप्लाय किया जाता है तथा कम ब्याजपर रुपया कर्ज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस राज्यने दुर्भिक्षके लिए अन्नभण्डारोंका भी बहुत अच्छा प्रबंध कर रक्खा है और भी सब प्रकारके सुभीते कोटा-स्टेटके किसानोंको प्राप्त हैं। हाड़ौतीका प्रान्त वैसेही बहुत उपजाऊ प्रान्त है। उसपर कोटा नरेशके समान उदार नरेशोंकी छत्रछाया होनेके कारण तो यह बिलकुल हरा भरा, और सुजला, सुफला हो रहा है।

व्यापारिक स्थिति

जिन दिनों अफीमका मार्केट शुरू हुआ था उन दिनों कोटा भी अफीमके व्यापारिक केन्द्रोंमें एक प्रधान था। अफीमका व्यापार बहुत अच्छा व्यापार होता था, यद्यपि अब भी इस व्यापारके बचे खुचे खण्डहर यहांपर नजर आते हैं, मगर अब उसकी महत्ता नहीं है। इस समय कोटेमें

मेसर्स हजारीमल सरदारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास यहींका है। आप ओसवाल कोठारी सज्ज। फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी हैं। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे लाखों रुपया पै आपके तीन पुत्र हुए। जिनकी अलग २ फर्मे चल रही हैं। वर्तमान फर्म सेठ सरा वंशजोंकी है। सेठ सरदारमलजी भी बड़े नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपने स्टेशनके प धर्मशाला बनवाई। वर्तमानमें आपके २ पुत्र हैं। श्रीयुत सेठ मूलचन्दजी तथा श्री० ते चन्दजी। आप दोनों ही सज्जन व्यक्ति हैं। आपने अपने पिताजीके स्मारक स्वरू सरदार विद्यालय स्थापित कर रखा है। बीकानेर दरबारसे आपको छड़ी, चपरास व बा बख्शे हुए है। यहां आपकी फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ मूलचन्दजीके पुत्र चम्पालालजी हैं। सेठ मदन चंदजीके तीन पुत्र हैं। कि क्रमशः धनपतसिंहजी, गुनचन्दलालजी, और भंवरलालजी हैं। इनमेंसे चम्पालालजी, धनप तथा गुनचन्दलालजी दुकानके काममें भागलेते है, आप सब सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

कलकत्ता---मेसर्स हजारीमल सरदारमल, १३ नारमल लोहिया लेन, T. A. Hasi हुंडी-चिट्ठी और विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है। यह गांठेकी गांठ बिकता है। गल्लेकी आढ़तका काम भी यह फर्म करती

कलकत्ता---मेसर्स चम्पालाल कोठारी, १३ नारमल लोहिया लेन--यहां जूटका व्या इस फर्मके द्वारा डायरेक्ट जूट विलायत एक्सपोर्ट होता है।

मेमनसिंह---चम्पालाल कोठारी, जूट आफिस, तारका पता (Kothari) यहां जूट गल्लेकी बिक्रीका काम होता है।

बेगुनबाड़ी (मेमनसिंह)---चम्पालाल कोठारी, तारका पता Kothari--यहां जूट काम होता है।

बोगरा (बंगाल)---चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदी काम होता है।

सुल्तानपोकर (बोगड़ा)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

बिलासी पाड़ा (आसाम)--चम्पालाल कोठारी--यहां जूटकी खरीदीका काम होता है

कसबा (पूर्णिया)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

सिरसा (पंजाब) गुनचन्दलाल कोठारी--यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका क

श्रीगंगानगर (बीकानेर)--गुनचन्दलाल कोठारी--यहां भी गल्लेकी खरीदी-बिक्री का काम होता है।

रावबहादुर सेठ केशरीसिंहजी कोटा

बिल्डिंग (सेठ केशरीसिंहजी) कोटा

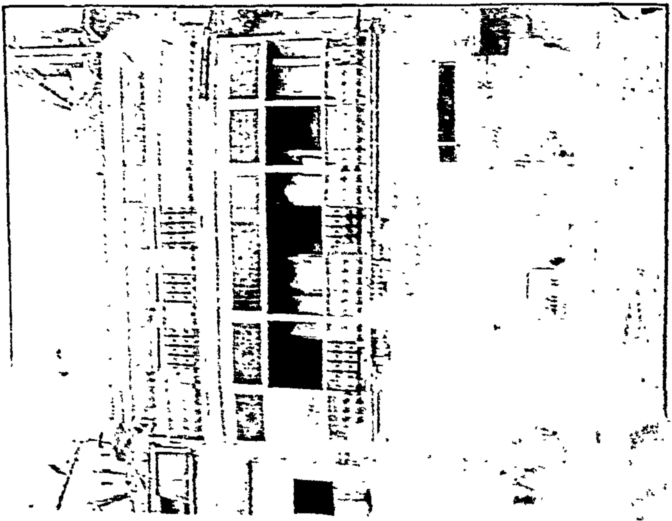

बिल्डिंग (सेठ केशरीसिंहजी) बम्बई

सेठ हमीरमलजीके समयमें इस फर्मकी कीर्ति और व्यापारमें बहुत वृद्धि हुई। संवत १९२० में आपके पुत्र श्री कुंवर राजमलजीका जन्म हुआ। कुंवर राजमलजीके सम्वत १९५४ में ३४ वर्षकी अवस्थामें देहावसान होजानेसे सेठ हमीरमलजीके चित्तको भारी धक्का पहुंचा। कुंवर राजमलजीके देहावसानके समय १ पुत्र और ४ पुत्रियां मौजूद थीं।

वर्तमानमें इस प्रतापी फर्मके मालिक श्री राजमलजीके पुत्र दीवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी हैं। आपके काका साहब, रतलामके प्रसिद्ध सेठ चांदमलजी बापनाके कोई सन्तान न होनेसे उन्होंने अपनी सारी सम्पत्तिका मालिक आपको बना दिया।

सेठ केशरीसिंहजीको गवर्नमेन्टने सन १९११ई० में रायसाहबको सन १९१६ ई०में "राय-बहादुर"की और सन १९२५ई०में दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आपको, जेसलमेर, कोटा, और बून्दीके दरबारोंने पुश्त दर पुश्तके लिये पैरोंमें सोना बख्शा है तथा जोधपुर, बूंदी, कोटा और रतलामके दरबारोंसे आपको ताजिम भी प्राप्त है। हालहीमें टोंककी बेगम साहिबाने सेठ-केशरीसिंहजीके घरमें स्त्रियोंको पैरमें जवाहरात और जोधपुर महारानी साहिबाने ताजीम बख्शी है।

दीवानबहादुर सेठ केशरी सिंहजीका देशी राज्योंमें बहुत सम्मान है। आपके यहां होने वाले शुभ कार्योंमें समय समयपर महाराजा उदयपुर, महाराज जोधपुर, महारावजीकोटा, महाराजा रतलाम, नवाब साहिब टोंक नवाब साहिब जावरा, रीवां दरबार आदि नरेशोंने पधारकर आपकी शोभा बढ़ाई थी अभी ४ वर्ष पूर्व राजपूतानेके एजंट सर० आर० ई० हालेंड के० सी० एस० आई आपके यहां आपके भानजेके विवाहके समय पधारे थे एवं २ घन्टे ठहरकर मजलिसमें सम्मिलित होकर भोजन किया था।

आपकी फर्म राजपूताने और सेंट्रलइन्डियामें प्रसिद्ध बैंकर और गव्हर्नमेन्ट ट्रेझरर है। देशी रियासतमें रहते हुए भी गव्हर्नमेन्टने खास तौरपर इस फर्मको ब्रिटिश प्रजा मानी है। आप देशी रियासतोंकी कोर्टोंमें जानेसे मुस्तसना हैं। हरेक मामलेमें मुनीमके नामसे केवल कैफियत भेज दीजाती है। कई रियासतोंमें आपके बही खाते भी मुस्तसना हैं। यदि किसी आवश्यक्ता विशेषपर आपके बहीखाते देखना पड़ें तो जजको आपकी फर्मपर आना पड़ता है उसके लिये उन्हें किसी प्रकारकी फीस नहीं दीजाती। इसफर्मके तीन चार मुनीमोंको टोंक स्टेटने मय जनानेके पैरोंमें सोना बख्शा है।

इस कुटुम्बकी ओरसे स्थान २ पर करीब १२ मन्दिर बने हुए हैं पालीतानामें १०० वर्षोंसे आपका एक अन्नक्षेत्र चलरहा है। आपने कई जैन मन्दिरों और धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाया है। रतलाममें आपकी एक जिनदत्त सूरिजैन पाठशाला चल रही है अभी हालहीमें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके कम्पाउण्डमें एक जैन मन्दिर और जैन होस्टल बनानेके लिये आपने मालवीयजीको ५१०००) दिये हैं।

श्री०सेठ मालचन्दजी कोठारी (हजारीमल सागरमल)

श्री०सेठ फतेचन्दजी कोठारी (हजारीमल सा०

हार्थोसे बहुतों पैसा पैदा किया। आपका धर्मपर बड़ा स्नेह है। आप श्वेताम्बर जैन सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। कलकत्तेमें नं० ३६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपकी गद्दी है। आप भाई कपड़ेका व्यवसाय करते हैं। सरदार शहरमें आपकी इमारतें अच्छी बनी हुई हैं।

मेसर्स जेठमल श्रीचन्द गधैया

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके ही निवासी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए [illegible] इसकी स्थापना सेठ जेठमल जीने की। आपके पश्चात् इस फर्मके कामको आपके पुत्र [illegible] श्रीचन्दजीने सञ्चालित किया। आपने अपने हार्थोसे कपड़ेके व्यवसायमें लाखों रुपया पैदा किया [illegible] समय सेठ श्रीचन्दजी अपना जीवन धार्मिकतामें व्यतीत करते हैं। आप ओसवाल [illegible] जातिके सज्जन हैं। इस समय आपके दो पुत्र हैं। पहले श्रीगणेशदासजी और दूसरे [illegible] गणेशदास जीका जन्म संवत् १९३६ में और [illegible]चन्द जीका जन्म संवत् [illegible] आप दोनों ही सज्जन पुरुष हैं।

श्री गणेशदास जी स्थानीय म्युनिसिपेलिटीके मेम्बर हैं। आप बीकानेर स्टेटकी [illegible] कौंसिलके मेम्बर भी रह चुके हैं। कलकत्तेमें बंगाल गवर्नमेंटकी ओरसे आपको [illegible] प्राप्त है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द गणेशदास, मनोहरदासका कटरा ११३ क्रासस्ट्रीट यहां [illegible] कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास उदयचन्द, ९८ क्रासस्ट्रीट-इस फर्मपर कपड़ेका तथा हुण्डी चिट्ठी काम होता है।

सरदार शहर—मेसर्स जेठमल श्रीचन्द—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। यहां आपकी [illegible] सम्पत्ति भी बहुत है।

मेसर्स जीवनदास चुन्नीलाल दूगड़

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर [illegible] आपकी फर्मको स्थापित हुए ८० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ [illegible] सेठ जीवनदास जी, सेठ शिवजी रामजी तथा सेठ [illegible] जीने [illegible]

(१५) खारवा—(नीवर महलपुर) - चांदमल केशरीसिंह—यहां सुपरिन्टेन्डेंसीके खजान्ची हैं

(१६) टोंक—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह—यहां पर टोंक स्टेटका खजाना है।

(१७) छबड़ा—(टोंक)—पूनमचन्द दीपचन्द—यहां निजामतका खजाना है तथा मनोतीका काम होता है।

(१८) सिरोंज (टोंक)—भभूतसिंह पूनमचन्द—यहां निजामतका खजाना है। तथा आसामी लेन देन होता है।

(१९) पड़ावा (टोंक)—मेसर्स चांदमल केशरीसिंह—यहां निजामतका खजाना है। आपकी यहां एक जीन फेक्टरी है, तथा हुंडी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।

(२०) झालरा पाटन—मेसर्स हमीरमल केसरीसिंह—हुण्डी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।

(२१) बूंदी—मेसर्स गनेशदास दानमल—यहां रायमल नामक एक जागीरीका गांव है। इसके अतिरिक्त स्टेटसे नकद लेन देन और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२२) सांगोद—(कोटा स्टेट) मनोतीका काम होता है।

(२३) बारां (कोटा स्टेट) हमीरमल दानमल—आड़त और मनोतीका काम होता है।

(२४) केशोराय पाटन (बूंदी) गनेशदास दानमल—मनोतीका काम होता है।

राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला

इस फर्मके वर्तमान मालिक रा० ब० सेठ पूनमचन्दजी हैं। आपका मूल निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। परन्तु बहुत समयसे कोटेमें रहनेके कारण आप कोटेवालेके नामसे मशहूर हैं। आप श्री श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं।

आपके पिता श्री सेठ करमचन्दजी बड़े धार्मिक एवं उदार व्यक्ति थे। आपने ७ संघ निकाले, एवं कोटेमें अष्टान्हिका महोत्सव, अष्टकमराजका वगैरः कामोंमें करीब २ लाख रुपया व्यय किया। तथा आपने श्री शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका एक भव्य मन्दिर बनवाया इसमें भी करीब ४० हजार खर्च हुआ।

सेठ पूनमचन्दजी साहबने भी अपने पिताजीकी तरह धार्मिक एवं सामाजिक कार्योंमें लाखों रुपया दान दिया। आप अभी तक करीब ५ लाखसे अधिकका दान कर चुके हैं जिसमें खास खास दो चार बड़ी २ रकमोंका विवरण नीचे दिया जाता है।

१ पाटनमें श्री लल्लन पार्श्वनाथ स्वामीकी धर्मशाला व उसके बनानेमें ५० हजार रुपया।

२—शंखेश्वरकी धर्मशाला तथा उसके बनानेमें करीब ४१ हजार रुपया।

बम्बई बिल्डिंग म. दिवान बहादुर केशरीसिंहजी कोटा

पाटनका बंगला, सेठ पूनमचन्द करमचन्द कोटा

...ना आदीश्वरजी (पूनमचन्द करमचन्द कोटा)

अन्धेरीका बंगला, बम्बई (पूनमचन्द करमचन्द कोटा)

मेसर्स बींजराज भैरुंदान

इस फर्मके मालिक सेठ भैरुंदानजीके पुत्र सेठ भानुरामजी हैं। आप ओसवाल स... सेठ भैरुंदानजी सेठ बींजराजजीके तीन पुत्रोंमेंसे बड़े पुत्र थे। दो छोटे पुत्रोंका परिचय पिछे दिया जा चुका है। सेठ भानुरामजी बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके एक पुत्र हैं जिन... कुंवर रामलालजी हैं। आप शिक्षित और विद्या-प्रेमी नवयुवक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज भैरुंदान मनोहरदास कटला ११३ काटन स्ट्रीट—इस फर्म... का थोक तथा फुटकर व्यापार होता है। आपके यहां डायरेक्ट विलायतसे माल आता है।

बैंकर्स

कपकड़ेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण

जेठमल पूसराज

धनसुखदास कालूराम

नेमचन्द भंवरीलाल

गल्लेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण

गोविन्दराम रावतमल

डेढ़राज गौरीदत्त

मक्खनराम रामलाल

शिवनारायण डूंगरमल

हरद्वारीमल डेढ़राज

चांदी-सोनेके व्यवसायी

मेघराज रतनलाल

ऊनके व्यापारी

कायम दीना बोपारी

श्री डूंगरगढ़

मेसर्स हनुतराम ताराचन्द सदाराम भंवर

इस फर्मका हेड ऑफिस महिमागंज (रंगपुर) में है। इसकी स्थापना हुए और ... हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ आशारामजी भंवर हैं। आप माहेश्वरी ... हैं। इस फर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ ताराचन्दजीने की। ताराचन्दजीके दो पुत्र हैं, ... सेठ आशारामजी और दूसरे सेठ रूपलालजी हैं। आप दोनोंही सज्जन व्यक्ति हैं। ... सेठ आशारामजीको रायसाहबकी पदवी प्राप्त हुई है। आपके चचा श्री० सेठ ... विद्यमान हैं।

इस खानदानकी ओरसे कई कुएं, धर्मशाला, तालाब, मन्दिर आदि, भिन्न २ स्थानोंमें ... हुए हैं। सार्वजनिक कार्योंमें भी आप उदारतापूर्वक दान देते हैं। ... खानदान बहुत उत्साहसे भाग लेता है। इस खानदानकी ओरसे यहां एक ... और ... तथा महिमागंजमें एक मिडिल स्कूल चल रहा है।

आपका हेड ऑफिस महिमा गंज में है इसके अतिरिक्त गुनारकाठ, ... और अबोहर मण्डी (पञ्जाब) में शाखाएं हैं। जिनसर, जूट, गल्ला और बैंकिंग व्यापार होता है।

आपने अपने पिताजीकी स्मृतिमें सारे पाटनशहरको भोज दिया था, इसमें करीब एक लाख आदमी सम्मिलित हुए थे। इस अवसरपर आपने धार्मिक कार्योंके लिये भी करीब बीस हजार रुपये दान दिये थे। इस स्मृतिके उपलक्षमें जेठ वदी ११ को पाटनशहरमें अब भी अख्ता पाली जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—हेड आफिस—मेसर्स पानाचन्द उत्तमचन्द—इस फर्मपर बैंकिंग ओपियम अनाज वगैरहका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला, पुरुषोत्तम बिल्डिंग न्यू क्विन्स रोड। यहां शेयर्स, काटन, और बैंकिंगका वर्क होता है।

बैंकर्स

कोटा स्टेट कोआपरेटिव्ह बैंक
मेसर्स गनेशदास हमीरमल
,, जुहारमल गंभीरमल
,, पानाचन्द उत्तमचंद
,, मगनमल बच्छराज
,, मंगलजी छोटेलाल
,, राजरूप रामकिशनदास
,, लूनकरण शंकरलाल
,, रा० ब० समीरमलजी कोटा ट्रेजरर
,, सर्वसुखदास मोतीलाल
,, हरलाल गंगाबिशन

कपड़े के व्यापारी

मर्दन अंबालाल
बिशन भूरामल
मौलवी मोतीलाल फालुनिया
हमीर ट्रेडिंग कम्पनी
पुरालाल भूरालाल

—:०:—

चांदी सोनेके व्यापारी

गजानन्द नारायण
नंदराम किशोरीदास

गल्लेके व्यापारी

जमनादास दामोदरदास
फतेहराज गजराज
शांतिलाल साकलचन्द
सर्वसुख राजमल

जनरल मर्चेण्ट्स

बोहरा फकरुद्दीन रामपुरा
सिलाजी करीमबख्श

किरानेके व्यापारी

फतूराम रामनारायण
जीवनराम पन्नालाल
शकूर अब्दुल्ला
हेनू जी पन्नालाल
लक्ष्मीचंद लछमनलाल

ने स्थापित किया। इसके व्यापारको सेठ कुन्दनमलजीने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आपका देहाव-सान संवत १६७३ में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुन्दनमलजीके पुत्र सेठ राजमलजी और सेठ मदनमोहनजी हैं। आपके दो भाई गाढ़मलजी और नेमीचन्दजीका देहावसान हो गया है। आपको बूंदी दरबारकी ओरसे सेठकी पदवी प्राप्त है। इस कुटुम्बकी ओरसे एक पाठ सुबोधिनी पाठशाला चल रही है। यहांपर आपका एक जैन मन्दिर है और एक धर्मशाला भी बनी हुई है। इन्दौरके प्रसिद्ध जौहरी सेठ फतेलालजीके पुत्र आपके यहां ब्याहे हैं।

इस समय सेठ राजमलजीके ३ पुत्र और गाढ़मलजीके ३ पुत्र हैं। सेठ राजमलजीके दो पुत्र लालचन्दजी और कस्तूरचन्दजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बूंदी—मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल T. A. Daulat यहां इस फर्मका हेड आफिस है। तथा बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, और रुईका व्यापार होता है।

---

(२) बम्बई—मेसर्स दौलतराम कुंदनमल, कालबादेवी—T. A. Kashaliwal—यहां रुई, सोना, ऊनका व्यापार तथा बेंकिंग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त, कॅकड़ी, सरवाड़, खादेड़ा, देवली, गुलाब पुरा, बघेरा, नसीराबाद, सादड़ीमें भी आपकी दूकाने हैं जिनपर रुई, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है। कॅकड़ी, सरवाड़ देवली आदिसे ऊन खरीद कर यह फर्म विलायत भी भेजती है।

जीनिंग फेक्टरियां—सरवाड़, खादेड़ा, सादड़ी, केकड़ी। प्रेसिंग फेक्टरी—कॅकड़ी।

बैंकर्स

मेसर्स उदयचंद कजोड़ीमल
" गनेशदास दलमल
" दौलतराम कुंदनमल
" भवानीराम रतनलाल
सेठ रामसुख अगरवाला

कपड़ेके व्यापारी

छोटीलाल गनेशलाल
पन्नालाल छुट्टीलाल

जगन्नाथ नन्दलाल (चांदी सोनेके व्यापारी)
गफूरल नूराल (किरानेके व्यापारी)
अब्दुल हुसैन हैदरभाई (जनरल मर्चेन्ट)
मोहरा कुतुबअली (जनरल मर्चेन्ट)

॰ सेठ वालचन्दजी (विनोदीराम वालचन्द) झालरापाटन

स्व॰ सेठ दीपचंदजी S/o वालचंदजी, झालरापाटन

सेठ [illegible] बड़े [illegible] और [illegible] के साथ [illegible] करते रहते थे। इसीसे [illegible] संवत् १९९१ में [illegible] और [illegible] ([illegible]) ने [illegible]

संवत् १९४३ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके [illegible] संवत् १९८० में [illegible] स्वर्गवास हो गये। [illegible] है।

सेठ [illegible] के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमसे बाबू [illegible], बाबू [illegible], बाबू [illegible] और बाबू [illegible] हैं।

[illegible]—[illegible] और [illegible] थे। [illegible] है।

[illegible]—बाबू [illegible] और [illegible] हैं। [illegible] है।

बाबू [illegible]—बाबू [illegible] हैं। [illegible] है।

इस फर्मकी अजमेर, कोटा, बूंदी जेसलमेर, बम्बई, रतलाम आदि स्थानोंमें [illegible] बनी हुई हैं। जेसलमेरकी आपकी बिल्डिंग बड़ी भव्य है। इस फर्मको बूंदी और [illegible] १० हजार रुपयोंकी जागीर है। जब दि० बा० सेठ केशरीसिंहजी बूंदी जाते हैं तो ३ मीलतक पेशवाई होती है। सेठ साहबके १ पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर [illegible] है। जन्म संवत् १९७७ में हुआ।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—मेसर्स गनेशदास हमीरमल (T. A Bahadur) यह इस फर्मका [illegible] है। यहां बेङ्किग, हुण्डी चिट्ठी, अफीम और आढ़तका व्यापार होता है।

(२) जेसलमेर—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह यहां अफीमका काम होता है तथा आपकी अच्छी हवेलियां बनी हुई हैं।

(३) रतलाम—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह-हुण्डी, चिट्ठी बेङ्किग तथा आढ़तका काम [illegible] यह फर्म रतलाम इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी की मेनेजिंग एजंट है।

(४) बम्बई—मेसर्स गनेशदास सोभागमल, बम्बादेवी-T. A. Bihana यहां [illegible] चीन जापान और जर्मनीसे कपड़े और [illegible] इम्पोर्ट होता है। [illegible] बम्बईकी कई जैन संस्थाओंकी ट्रस्ट है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स गनेशदास दीवानबहादुर केशरीसिंह नं० १४३ [illegible] T. A [illegible] यहां हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

(६) इन्दौर—सेठ चांदमलजीकी कोठी—यहां ओपियम सप्लाईका काम होता है।

(७) उदयपुर—दि० ब० केशरीसिंहजी साजांची—रेसिडेन्सी [illegible]

(८) हैदराबाद (दक्षिण) दि० ब० केशरीसिंहजी खजांची यहां निजामसरकारके [illegible] काम और बेङ्किग व्यवहार होता है।

(९) आबू—दीवान बहादुर केशरीसिंहजी खजांची—एजेन्सी [illegible]

(१०) नीमच—पूनमचंद हीराचन्द—यहां गवर्नमेंट तथा [illegible] [illegible] बेङ्किग काम होता है। [illegible] और [illegible] [illegible] है।

(११) [illegible]—पूनमचन्द हीराचन्द, [illegible] [illegible]

(१२) [illegible]—मेसर्स पूनमचन्द हीराचन्द—हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(१३) [illegible]—मेसर्स पूनमचंद हीराचंद [illegible]

(१४) [illegible]—([illegible]) [illegible] [illegible] है।

काटन, शेयर्स और कमीशन एजन्सीका काम होता है। यहांपर आपकी माणिकभवन नामक एक भव्य कोठी बनी हुई है। इसका फोटो इन्दौर पोर्शनमें दिया गया है।

बम्बई—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द मुम्बादेवी— T. A Binod यहांपर बैंकिंग और काटन कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म यहां साठ वर्षोंसे स्थापित है।

उज्जैन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Manik—इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहां आपके तीन बड़े २ नोहरे बने हुए हैं। गवालियर रियासतके मालवा प्रान्तका सदर खजाना भी इस फर्मके जिम्मे है।

धनावद - मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A. Binod—यहांपर काटन कमीशन एजन्सी और बैंकिंगका व्यापार होता है। इस प्रान्तमें आप रुईके सबसे बड़े व्यापारी माने जाते हैं। यहांपर आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है। इसी फर्मके अण्डरमें विमलचन्द कैलाशचन्द नामक एक फर्म और यहांपर है।

खरगोन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Binod—यहांपर बैंकिंग और रुईका व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त निमाड़खेड़ी, आगर, गवालियर, कोटा, भवानीगंज, कन्नौद (निजाम हैदराबाद) मोहना इत्यादि स्थानोंमें भी आपकी दुकानें तथा काटन फैक्टरियां बनी हुई हैं। कुल मिलाकर आपकी १५ दुकानें और १२ जीन-प्रेस फैक्टरियां हैं। गवालियरमें [illegible] नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी बनी हुई है।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके मालिक [illegible] सेठ कस्तूरचंदजी [illegible] हैं। आपका [illegible] परिचय [illegible] इन्दौरमें दिया गया है।

—:—

मेसर्स [illegible] सेठ[illegible]

[illegible]

मेसर्स लखमणदास कस्तूरचंद

[illegible]

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए सेठ लखमणदासजीने की थी। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका देहान्त संवत् १९७४ में हो गया। आपके बाद आपके पुत्र कस्तूरचंदजीने इस फर्मके काम को सम्हाला। आप ही इस समय इसके मालिक हैं। आपकी ओरसे [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] बनी हुई है। आपकी दुकानें [illegible], [illegible] और [illegible] हैं। इन सब दुकानोंपर हुंडी, चिट्ठी और [illegible] [illegible] [illegible] काम होता है।

मेसर्स हमीरमल किशोरसिंह

इस फर्मका हेड आफिस [illegible] में है। इसके मालिक [illegible] बहादुर सेठ [illegible] हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित [illegible] विभागमें दिया गया है।

बैंकर्स

मेसर्स [illegible] कस्तूरचंद

" [illegible]

" [illegible]

" [illegible] [illegible]

" [illegible] [illegible]

" [illegible] कस्तूरचन्द

" [illegible] [illegible]

" [illegible] [illegible]

पीतलके व्यापारी

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

जनरल मरचेंट्स

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

चांदी सोनेके व्यापारी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किरानेके व्यापारी

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

कपड़े के व्यापारी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पब्लिक संस्थाएं

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] के व्यापारी

[illegible] [illegible]

[illegible]

३—१९५६ के भयंकर दुष्कालमें अन्न गृह खोलकर अनेक मनुष्योंको [illegible] हजार दिया।

४—१९६२ में पाटनकी श्वेतांबर जैन कान्फरेन्समें स्वागत कारिणी समितिके सभापति थे उसमें आपने करीब २० हजार रु० खर्च किया था।

५—संवत १९६७ में पाटनमें अन्न गृह खोलकर तथा डाक्टर कोठारीके [illegible] लोगोंको बहुत लाभ पहुंचाया, तथा कई तरहका गुप्त दान दिया, उसमें करीब बीस हजार [illegible]

६—बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें श्रीमदनमोहन मालवीयजीको [illegible]

जिसमें श्वेतांबर जैन बोर्डिंग हाऊसके लिये			४०००)
,,	,,	लाजिंग	५०००)
,,	,,	स्थाई फंडमें	५००१)

७—हालहीमें कोटेमें आपने धर्मशाला व उपाश्रयका मकान तैयार कराया जिसमें साधु साध्वियोंके ठहरनेका अच्छा प्रबन्ध है। उसमें १००००) व्यय हुआ।

इसी प्रकार और भी कई धार्मिक कार्यों में जिन सबका वर्णन देना यहां असम्भव है [illegible] मुक्त हस्तसे दान दिया है।

यह तो हुई आपके धार्मिक जीवनकी बात। आपका सार्वजनिक जीवन भी बहुत [illegible] आपको श्री पाटन वीशा श्रीमाली न्यात, श्री पाटन हेमचन्द्राचार्य जैन सभा, [illegible] जीमणके समय) तमाम शहर निवासियोंकी ओरसे, आदि कई स्थानोंसे मानपत्र प्राप्त हुए हैं। [illegible] अतिरिक्त बड़ी [illegible] रियासतके समाचारके नातेसे आप बड़ोदेकी [illegible] थे। इस समय पाटनके समस्त महाजनोंकी तरफसे आपको मानपत्र दिया गया था। [illegible] महाजन सभाके आप प्रेसिडेंट भी थे।

आपकी प्रतिष्ठाका सबसे बड़ा प्रमाण पत्र यह है कि संवत् [illegible] में [illegible] के प्राचीन तीर्थमें जैनियों और स्मार्तोंमें महादेवजीके लिये झगड़ा हुआ था [illegible] की ओरसे झगड़ा निपटानेके लिये प्रतिनिधि चुने गये [illegible] तथा इस मुकदमेके [illegible] बड़ोदेके दीवान मनु भाईने आपको [illegible]

धार्मिक व सामाजिक जीवनके अतिरिक्त आपका [illegible] है। [illegible] आपने [illegible] स्थान प्रदान किया है। [illegible] आदि में [illegible] है।

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मका विशेष परिचय पाटनमें दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ला आदि सब प्रकारकी आड़तका व्यापार करती है। तथा कमीशनका काम करनेवाले व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स नेमीचन्द भंवरलाल

यह फर्म मालवेके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स विनोदीराम बालचन्दके मालिकोंकी है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैङ्किग, गल्ला कमीशन एवं काटनका व्यवसाय करती है।

मेसर्स रंगलाल बृजमोहन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास लक्ष्मणगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म संवत् १९६६ में सेठ रंगलालजीके द्वारा स्थापित हुई। वर्तमानमें इस फर्मका सञ्चालन श्रीरंगलालजी और श्रीबृजमोहनजी करते हैं। सेठ रंगलालजी भवानीगञ्ज मंडी का और बृजमोहनजी आलोट दूकानका कार्य्य सञ्चालन करते हैं। श्रीरंगलालजीके पुत्र चिरंजी-लालजी भी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भवानीगंज—यहां रुई,हुण्डी,चिट्ठी और आड़तका अच्छा काम होता है तथा बर्मा आइल कम्पनीकी एजंसी है।

आलोट—यहां आपकी एक महालक्ष्मी काटन जीनिंग फैक्टरी है तथा हुंडी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुंवार सूरजबख्श

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठीका आड़तका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबखस

इस फर्मके संचालक खास निवासी सांभरके हैं। यहां यह फर्म सम्वत् १९७८ में स्थापित हुई। इसका हेड आफिस सांभर है। मंडी भवानीगंजमें इस दूकानको सेठ सुगनचन्दजीने स्थापित किया। आपका देहावसान १९८३ में हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीदामोदरदासजी एवं रूपचन्दजी इसके मालिक हैं। आप माहेश्वरी जातिके (मानधना) सज्जन हैं। आपका व्यापा-परिचय इस प्रकार है:—

(१) सांभर—रामप्रताप हरबख्श—इस दूकान पर नमकका घरू और आड़तका व्यापार होता है।

जैन मन्दिर पाटन धर्मशाला

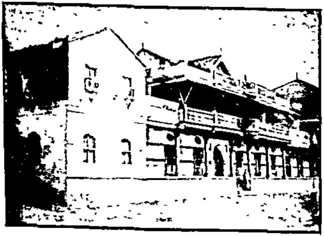

पालीताना धर्मशाला (पूनमचन्द करमचन्द, कोटा)

जोधपुर-राज्य, उदयपुर और किशनगढ़

JODHPUR STATE, UDAIPUR

&

KISHANGARH

डेंटिस्ट

रामचन्द्र गोपाल डेंटिस्ट

आइल एजण्ट

राजाराम पन्नालाल (एशियाटिक)

रिखबचंद केशरीमल (मोटर आइल)

लछमनप्रसाद हनुमानप्रसाद (बर्मा आइल)

साइकल गुड्स डीलर्स

राजपूताना साइकल स्टोर्स

वैद्य और डाक्टर

डाक्टर गुरुदत्तामलजी

वैद्य मुकुटबिहारी लाल आयुर्वेदाचार्य

सांभर सींग और सांभर चर्मके व्यापारी

एम० एम० वर्मा एण्ड सन्स रामपुरा

छापखाने

पब्लिक छापखाना

महावीर जैन छापखाना

फोटोग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

जिशनजी फोटोग्राफर

रूपराय फोटोग्राफर

कारखाने

कोटा स्टेट आइल फेक्टरी

वाटर वर्क्स कोटा

सार्वजनिक संस्थाएं

गोपाल मंदिर कन्याशाला

राजस्थान सेवा संघ अजमेर (कोटा शाखा)

वैश्य सुधारक मंडल कोटा

विधवा-विवाह सहायक सभा

होटल्स और धर्मशाला

महारानीजी की धर्मशाला

हिन्दू धर्मशाला

बूंदी

कोटा शहरसे २० मीलकी दूरीपर यह शहर बसा हुआ है। यहांके महाराव भी हाडा वंशके क्षत्रिय हैं। यह स्थान पहाड़ोंके बीचमें बड़े रमणीक स्थानपर बसा हुआ है। यहांके किलेमें कई पहाड़ी स्थान बड़े दर्शनीय हैं। इस राज्यमें लाखेरी नामक स्थानपर सीमेंटका एक बड़ा कारखाना है। इस कारखानेका सीमेंट बूंदी सीमेंटके नामसे बिकता है। यहांकी आबादी १४-१५ हजारके है। यहां कई प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक बूंदीके निवासी हैं। [illegible] स्थापित हुए करीब [illegible] हुए, इसे [illegible]

झालरापाटन

बी० बी० सी० आई रेलवे के नागदा-बारां सेक्शनके श्रीछत्रपुर स्टेशनसे १९ मीलकी दूरी [illegible]
स्थित है। इसके वर्तमान महाराजा हिज हाईनेस महाराज राना सर भवानीसिंहजी [illegible]
आप सुप्रसिद्ध झालावंशके वंशज हैं। आप बड़े विद्वान, विद्या-व्यसनी, [illegible]
आपने अपनी रियासतमें शिक्षा देनेकी बहुत अच्छी व्यवस्था कर रखी है। [illegible]
शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएं हैं। जिनमें मुफ्त शिक्षा दी जाती है। झालरापाटनमें एक [illegible]
है जिसका सम्बन्ध प्रयाग विश्वविद्यालयसे है। स्त्री शिक्षाका भी यहांपर बहुत [illegible]
है। कहा जाता है कि राजपूतानेमें सबसे अधिक पढ़ी लिखी स्त्रियोंकी औसत [illegible]
झालरापाटन शहरमें आपने कुछ संस्थाएं ऐसी खोल रखी हैं जहां आप [illegible]
विषयोंका वार्तालापकर आनन्द अनुभव करते हैं।

इस शहरमें कई तालाब बड़े रमणीक और दर्शनीय बने हुए हैं। [illegible]
भी यहां पर देखने योग्य है। कार्तिक और वैशाख मासमें यहां पर [illegible]
जिनमें हजारों पशु बिकनेके लिए आते हैं।

मिल ओनर्स

मेसर्स विनोदीराम बालचन्द

इस फर्मके मूल संस्थापक श्रीमान् सेठ विनोदीरामजी हैं। [illegible]
रहता था। संवत् १८८१ में आप सबसे पहले नागौरसे झालरापाटन [illegible]
आपके पुत्र श्रीमान् सेठ बालचन्दजीका जन्म हुआ। और संवत् [illegible]
बालचन्दके नामसे दुकान स्थापित की। उस समय झालरापाटनमें [illegible]
व्यवसाय करती थी। श्री सेठ विनोदीरामजी भी यहां [illegible]
व्यापारमें बहुत लाभ हुआ और इन्दौर आदि स्थानोंमें इस दुकानकी [illegible]

जौहरी

कालूराम हरिराम सुनार
मुन्नीलाल इशकलाल सराफ़
निरानलाल कूलठ

चांदी-सोनेके व्यापारी

छगनमल सूरजमल सराफ़ा
कालूराम शंकरराम ,,
गुलाबदास गोपीनाथ ,,
चतुरभुज शिवचन्द्र ,,
छोटमल मनसाराम ,,
भँवरलाल सराफ़ ,,
रामदास डूंगरदास ,,
रामदयाल श्रीकृष्ण ,,

किरानेके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द चूड़ीबाजार
चतुरभुज कालूराम गुलसंडिया
प्रतापचन्द भागचन्द कटला
लछमनदास भजननाथ चूड़ीबाजार
लछमनदास रुघनाथदास कटलाबाजार
सेवाराम पोपलिया गुलसंडिया
सुखदेव रामकिशन घासमंडी

टोपियोंके व्यापारी

अलफू मियां कादरबक्स कटला
कनकदान रुघनाथदास ,,
गंगाराम शिवनाथ ,,
रामनारायण शंकरलाल ,,

केरोसिन तेल

शिवजीराम ईश्वरकिशन
हरलाल मगनीराम

जनरल मरचैंट्स

अलफू मियां कादरबक्स कटला
एदुलजी नौरोजी सोजतियागेट
गणेशलाल एण्ड संस ,,
पूरी ब्रदर्स ,,
यूनियन ट्रेडिंग कम्पनी ,,
दी लंदन स्पोर्ट्स कम्पनी ,,
सांगी ब्रदर्स ,,

पेट्रोल एण्ड मोटरकार डीलर्स

पूरी ब्रदर्स सोजतिया गेट
सांगी ब्रदर्स

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

गांधी गणेश कटला
गोकुलचन्द पूनमचन्द सत्ती हवेली
चतुरभुज कालूराम सत्ती हवेली
गांधी जमनादास अचलनाथ मन्दिर
जगन्नाथ रामनाथ कटला
रामनाथ मांगीलाल कटला
रामगोपाल रामराज सत्ती हवेली
गांधी रामदयाल मिरचा बाजार

रंगके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द सत्ती हवेली
चतुरभुज कालूराम ,,
मदनदास कालीराम खांडाफलसा
नाथूलाल रामनाथ घासमंडी
रामजीवन रामदयाल कटला
लछमनदास जयरामदास घासमंडी

तमाखूके व्यापारी

नथमल नाथूदास घासमंडी
सिरदीचन्द राधाकिशन बनात बाजार

...जमलजी चोरड़ (मालमचंद नृरमल) लाडनूं

सेठ नूरमलजी बेगानी (ओरनमल चंदनमल) लाडनूं

...इ (मगनीराम नेमीचंद) लाडन

श्री फूलचंदजी निगोनिया (हैद...

चन्द्रजी हैं। आपने हाल होमें मेट्रिककी परीक्षा पास की है। आपको भी [illegible] सोना और दरीखानेमें बैठक दी हुई है। सेठ [illegible]का "सर भागचन्द [illegible] पुस्तकालय" [illegible] घरू पुस्तकालय है इसमें सब भाषाओंकी करीब दस हजार पुस्तकें हैं।

श्रीयुत नेमीचन्दजी सेठी—श्रीयुत नेमीचन्दजी भी योग्य और सज्जन व्यक्ति हैं। आपको भी झालावाड़ दरबारसे पांवमें सोना बक्षा हुआ है। आपके भी [illegible] पुस्तकालय [illegible] निजी पुस्तकालय है।

श्रीयुत भंवरलालजी सेठी—आप श्रीयुत दीपचन्दजी साहबके पुत्र हैं। आप [illegible] स्पष्टवक्ता सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनकी शिक्षा बहुत अच्छे ढङ्गसे हो रही है। [illegible] भी पठन, पाठन और पुस्तकोंसे बहुत प्रेम है। आपके पुस्तकालयमें बहुतसी हिन्दी पुस्तकों [illegible] संग्रह है।

इस फर्मकी ११ दुकानें भारतके भिन्न २ शहरोंमें हैं। हेड ऑफिस [illegible] है। सब दुकानों पर प्रधान मुनीम वाणिज्य रत्न लूणकरणजी पाड़िया हैं। आप [illegible] इस दुकान पर मुनीमीका काम करते हैं। सेठ वाऊचन्दजी अपनी मृत्युके समय [illegible] आपहीके जिम्मे कर गये थे, आपने उस कारबारको खूब उन्नति [illegible] केबिनेटके कामर्शियल मेम्बर हैं। आपको भी पांवमें सोनेका कड़ा बख्शा हुआ है।

इस फर्मकी उज्जैनमें विनोद मिल्स लिमिटेड नामक एक कपड़ेकी मिल बनी हुई है [illegible] मिल सन् १९१२-१३ में स्थापित हुई और सन् १९१४ में चालू हुई। इस मिलका [illegible] लाख रुपया है। इसमें ७५० लूम्स और २३००० स्पेण्डिल्स हैं। तथा १५०० मनुष्य [illegible] हैं। इस मिलमें एक बहुत बड़ा अस्पताल भी खुला हुआ है। इस औषधालय [illegible] दूरों और सर्व साधारणको औषधि दी जाती है। यहांके डाक्टर [illegible] दूसरे कार्य्य कर्त्ताओंके घर रोगियोंको देखनेके लिये बिना फीस जाते हैं।

आपकी तरफसे श्री [illegible] एक [illegible] गई है। इसके अतिरिक्त राजगृही, आबू, सोनागिरि, सिद्धवरकूट, [illegible] भी आपकी ओरसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

कलकत्ता—मेसर्स [illegible] T. A. Bizot [illegible] का बहुत बड़ा व्यापार होता था। इस समय इस दुकानपर [illegible] काम होता है।

इन्दौर—मेसर्स [illegible] T. A. Bizot [illegible]

पके बाद आपके पुत्र सेठ प्रतापमलजीने इसफर्मके कार्यका संचालन किया। सेठ प्रतापमलजीके पुत्र थे; सेठ मगनमलजी और सेठ छगनमलजी। सेठ मगनमलजीका देहावसान होचुका है। तथा छगनमलजीने करीब ३० वर्षकी आयुसे ब्रह्मचर्य्य व्रत धारणकर रक्खा है। आपके २ पुत्र सेठ सोहनलालजी और सेठ नेमीचन्दजी हुए। इनमें सोहनलालजीका देहावसान होचुका है। सेठ नेमीचन्दजी बेद, सेठ मगनमलजीके यहां दत्तक गये हैं। इस समय सेठ नेमीचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री भंवरलालजी हैं। सेठ नेमीचंद समझदार सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शम्भूराम प्रतापमल, ७ बाबूलाल लेन—यहां व्याज, हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर सट्टा कतई नहीं होता।

बोगरा—मेसर्स प्रतापमल मगनीराम-यहां हुण्डी चिट्ठी व्याज तथा जूट खरीदीका काम होता है।

गायबन्दा (रंगपुर) मेसर्स छगनमल नेमचन्द-यहांपर गल्ले और किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स मालमचन्द सूरजमल बोरड़

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें सेठ मालमचन्दजीने करीब संवत् १९६१ में की। वर्तमानमें सेठ मालमचन्दजी तथा सूरजमलजी इस फर्मके मालिक हैं। सेठ मालमचन्दजी देशमें ही रहते हैं। और आपके पुत्र श्री सूरजमलजी व्यापारके कामका संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल, सूरज-निवास, २५१ अपरचितपुररोड T. A. malam surju यहां हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

ग्वालन्दो—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यवसाय होता है।

गौहाटी (आसाम) मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

...डिया (ग्वालन्दो) यहां जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल चान्दमल

इसफर्मके मालिक ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ मालचन्दजी और सेठ चांदमलजी हैं। इसफर्मके स्थापक आप दोनों भाई हैं। आपके पिता हीरालालजीका देहा-

सेठ छप्पनजीके पुत्र श्रीयुत गोरीलालजी और श्रीयुत गेंडमीके पुत्र श्रीयुत [illegible] हैं। आपकी झालरापाटन, भवानीगंज और सुकेतरोड में दुकानें हैं। सब जगह [illegible] और विशेषकर कमीशन एजन्सीका काम होता है।

—:o:—

मेसर्स तनसुख मनसुख

इस फर्मके स्थापन कर्त्ता सेठ तनसुखजी संवत् १९४२ में नागौरसे यहां आये। [illegible] १९५१ में आपने अपना घरू व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपका देहान्त संवत् [illegible] इस समय इस फर्मके मालिक आपके तीन पुत्र श्रीयुत मनसुखजी, श्रीयम [illegible] और [illegible] हैं। आपकी दुकानें झालरापाटन, श्रीछत्रपुर, रामगंज, उमरठी, कोटा [illegible] हैं। इन सब दुकानोंपर गल्ला और रुईका व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका [illegible] पाटनमें आपका एक ट्रंकों और बालटियोंका कारखाना भी है।

मेसर्स नाथूराम जोरजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत कस्तूरचन्दजी हैं आप [illegible] जातिके [illegible]। फर्मको स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हो गये। इसकी स्थापना [illegible] हाथोंसे हुई। इस वंशमें आप बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपने [illegible] नाम कमाया। श्रीयुत कस्तूरचंदजी श्रीयुत [illegible]मलजीके यहां [illegible] (गोद) [illegible] लाये गये। इस खानदानकी तरफसे मण्डी रामगंजमें एक मन्दिर बना हुआ है। [illegible] निर्माणमें करीब ३१०००) व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त [illegible] एक पार्श्वनाथजीका मन्दिर बनाया हुआ है। इसकी [illegible] उसके द्वार दरवाजा खर्च हुआ है। [illegible] मन्दिरके [illegible] दुकानें तथा ४ गोदाम बनवादिये हैं। इसी प्रकार [illegible] मकान बना दिये हैं।

श्री सेठ [illegible]मलजी [illegible] [illegible] [illegible]

इस समय इस फर्मकी झालरापाटन, मण्डी [illegible] दुकानें चल रही हैं। इन सब दुकानोंपर हुण्डी, चिट्ठी [illegible] और [illegible] होता है।

इस फर्मका हेड आफिस डीडवाणामें है। यहां आपकी ओरसे डीडवाणा इंडस्ट्रियल नामक एक बैंक खुला हुआ है। इस फर्मकी कलकत्ता और डीडवाणामें बहुत स्थाई सम्पत्ति है। आपकी कलकत्तेकी बिल्डिंगका लाखों रुपया प्रतिवर्ष किराया आता है।

इस समय सेठ मगनीरामजीके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीनारायणदासजी, श्रीगोविंदलालजी और श्री गोकुलचंदजी हैं। आप सब बड़े शांत स्वभावके सज्जन हैं। श्रीगोकुलचंदजी, सेठ रामकुंवारजीके यहां दत्तक गये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

डीडवाणा—मेसर्स शालिगराम शिवकरण—यहां इस फर्मका हेड आफीस है। इस फर्मका यहां डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांसतल्ला स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंङ्किग हुण्डी चिट्ठी और शेयर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी केनिल प्रेस नामक जूट प्रेसिंग फक्टरी भी है।

नरवाणा (पटियाला)—इस स्थानपर आपकी एक कॉटन जिनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौरमें है। अत: इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें पृष्ठ ३० में दिया गया है। इन्दौरमें यह फर्म हुंडी, चिट्ठी बैंङ्किग, रुई और शेयर्सका अच्छा व्यवसाय करती है। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। इसके मालिकोंका खास निवास डीडवाणा है। इसके प्रधान संचालक श्री दाऊलालजी शिक्षित एवं समझदार नवयुवक हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मके मालिक भी डीडवाणेके ही निवासी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें ३१में दिया गया है। यह फर्म इन्दौर सराफेमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। मेसर्स शिवजी राम हरनाथ और यह फर्म एक ही कुटुम्बकी है।

—:—

इसके अतिरिक्त यहांकी मेसर्स रामरतन टीकमदास और सेठ रामगोपाल मुंद्राड नामक फर्मस् इन्दौरमें कपड़ा चांदी सोना और आढ़तका अच्छा व्यापार करती है। यह दोनों फर्म इन्दौर क्लाथ मार्केटमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। इनका परिचय इन्दौरके पृष्ठ ४२-५१ में चित्रों सहित दिया गया है।

भवानीगंज मंडी

यह मंडी बी० बी० सी० आई० के नागदा मथुरा सेक्शनमें भवानी मण्डी नामक स्टेशनसे लगी हुई बसी है। झालावाड़ महाराज भवानीसिंहजीने संवत् १९६९ में इसे बसाया था। मंडीमें किराना गल्ला तथा रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है। रुई, आढ़त, तथा किराना व्यापार करनेवाले कई अच्छे २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। दिसावरोंमें इस मंडीकी साख है। हजारों रुपयोंकी हुंडियां यहां आसानीसे ही बेची जा सकती हैं। [illegible] वस्तुओंमें रुई, जीरा, गेहूं, चना, कपासिया, तिल, धना, किराना, शक्कर, गुड़, तेल व [illegible] सामान प्रधान हैं। सब प्रकारके मालका व्यापारियोंके पास अच्छा स्टाक रहता है। [illegible] देशी व्यवसाइयोंकी अपेक्षा गुजराती व्यापारियोंकी अधिकता है।

इस मंडीकी खास उन्नतिका कारण यहांकी जलकी विपुलता है। यहांकी [illegible] प्रद है। इतनीसी छोटी बस्तीमें यहां कई बगीचे हैं। इस मंडीके चारोंओर [illegible] कोटा, बूंदी, टोंक, उदयपुरकी स्टेटें आ गई हैं, इसलिये उनसब जगहोंका माल यहां [illegible] इस मंडीमें आनेवाले और जानेवाले मालपर किसी प्रकारका टेक्स नहीं है। इस मंडीमें [illegible] जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। जिसके मालिक मेसर्स अनन्दीलाल पोद्दार नामक [illegible] प्रेसके कारण मंडीकी तरक्कीमें अच्छी मदद मिली है। अहमदाबाद, बम्बई [illegible] रुईकी खरीदी यहां हमेशा रहा करती है।

इस मंडीसे लगी हुई ग्वालियर स्टेटकी भेंसोदा मंडीमें भी एक काटन [illegible] प्रेसिंग फेक्टरी है

रुईके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स अनंदीलाल पोद्दार

इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। अतएव इस फर्मके व्यापारका पूरा परिचय [illegible] बम्बईमें पृष्ठ ६४ में दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अनन्दीलाल [illegible] आप अग्रवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। मंडी भवानीगंज [illegible] काटन जीनिंग और प्रेसिङ्ग फेक्टरी है, जो अच्छी सफलताके साथ चल रही है। [illegible] शीघ्र ही यहां एक अनन्दीलाल पोद्दार विद्यालय स्थापित हो रहा है।

मेसर्स जवाहरमल रामकरण

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ जवाहरमलजी तथा रामकरणजी हैं। आप माहेश्वरी चंडक जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए कुछ ही वर्ष हुए। सेठ जवाहरमलजी व्यापारिक अनुभवी सज्जन हैं। सेठ रामकरणजी भी योग्य व्यक्ति हैं। आप दोनोंका इस फर्ममें साझा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स जवाहरमल रामकरण कालबादेवी रोड T. A. Gangalahari इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आड़तका काम होता है।

बारसी—(शोलापुर)—जवाहरमल रामकरण—यहां रुई, गल्ला, और हुण्डी-चिट्ठीका काम होता है।

लातूर—(निज़ाम-स्टेट)—मेसर्स राधाकिशन रामचन्द्र—इस फर्मपर रुई और गल्लेकी आड़तका काम होता है।

मूण्डवा—(मारवाड़)—रामप्रताप राधाकिशन—यहां हेड आफिस है।

मेसर्स नन्दराम मूलचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके मोदानी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए हैं। इसके स्थापक सेठ मायारामजी तथा मूलचन्दजी थे। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपके पश्चात् क्रमशः सेठ चतुर्भुजजी सेठ शालिगरामजी ने इस फर्मका संचालन किया। सेठ चतुर्भुजजीके रघुनाथदासजी और सेठ शालिगरामजीके रामनाथजी तथा जेठमलजी नामक पुत्र हुए। आप तीनों ही दुकानका संचालन करते थे। विशेष भाग सेठ रामनाथजीका रहा है। आपकी ओरसे यहां सांवलियाजीका मन्दिर तथा तालाबके किनारे एक सुन्दर बगीचे सहित शिवालय (गुमटी) बना हुआ है। इस समय सेठ रघुनाथदासजीके वंशज अपना अलहदा व्यवसाय करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ रामनाथजीके पुत्र सेठ रामरतनजी तथा रामनिवासजी और सेठ जेठमलजी हैं। सेठ रामरतनजी शिक्षित युवक हैं। आपने सारे गांववालोंकी प्रतिद्वन्दता होते हुए भी एक कन्या पाठशाला स्थापित की है। यह ७ सालसे चल रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नन्दूर—(मद्रास) स्टे० धरनाबाद—मेसर्स मायाराम मूलचन्द—यहां सराफी तथा गल्लेका व्यवसाय होता है। यहां आपके द्वारा खेती भी होती है।

(२) सांभर—श्रीनारायण रामदेव—इस दुकानपर नमककी क्रेडिट भरी जाती है तथा [illegible] काम होता है।

(३) भवानीगंज—रामनाथ हरनारायण—यहां नमकका व्यापार और रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

—०:०—

मेसर्स लूणकरण पन्नालाल

इस फर्मके मालिक नीमचके निवासी हैं। आप अगरवाल जातिके सज्जन हैं। [illegible] स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। नीमचमें यह दूकान सन् १७८० से स्थापित है। इस फर्मको पन्नालालजीने स्थापित किया, आपके २ पुत्र हैं जिनका नाम चौथमलजी और [illegible] आप दोनों व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

नीमच—लूणकरण पन्नालाल—यहां रुई कपास गल्लाकी आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

भवानीगंज—लूणकरण पन्नालाल—यहां गल्ला आदिकी आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त इस फर्मपर एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनीकी एजन्सी है।

रुई गल्लेके व्यापारी और कमीशन एजण्ट

आनन्दीलालजी पोद्दार
गुलाबचन्द [illegible]
छगनलाल [illegible]
जमनादास दामोदरदास
नेमीचन्द भेरूलाल
भगवानदास मथुरादास
मगनीराम चुन्नीलाल
मनोहरलाल भाईलाल
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

किरानेके व्यापारी

अब्दुल गनी ताजमहम्मद
इस्माइल याकूब
ईसा हाशम
गनी उमर
गोपालदास [illegible]

कपड़ेके व्यापारी

[illegible]
चौथमल मन्नालाल
मानमल मुन्नालाल

चांदी सोनेके व्यापारी

मनोहरलाल भाईलाल

औषधालय

सेठ [illegible]

सार्वजनिक संस्था

सेठ [illegible]

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मूण्डावा—मारवाड़—मेसर्स रामगोपाल जैगोपाल महड़—यह फर्म गुड़, अनाज, किरानेका हाजिर व्यवसाय करती है। यहां आढ़तका काम भी होता है।

बैंकर्स

किशनलाल रामचन्द्र
छोटूराम शिवराज
जवाहरमल रामरतन
रामरतन रामकरण
रामनाथ जयनारायण

कपड़े के व्यापारी

खेमचन्द मूलचन्द
चुन्नीलाल मोहनलाल
बद्रीनाथ मूलचन्द
रामरतन रघुनाथ
[illegible]

गल्लेके व्यापारी

जयनारायण भागीरथ
रामनाथ चतुर्भुज
रामकरण जैगोपाल
रामनाथ नथमल

किरानेके व्यापारी

[illegible]
हीरालाल चतुर्भुज

पाली

पाली जोधपुर राज्यका एक प्राचीन और आबाद कस्बा है। यह जो० आर० की पाली स्टेशनसे करीब आधे मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। इसके रंग और [illegible] होता चला आ रहा है। यह स्थान पुराने जमानेमें व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्रस्थल था। उस समय अर्थात् हिन्दुस्थान [illegible] और [illegible] हिन्दुस्थानके [illegible] यहां एक मार्ग था, यहींसे होकर माल आया जाया करता था। [illegible] कि पुराने जमानेमें इसका व्यापार अच्छी दशामें था।

पाली बहुत प्राचीन नगर है। पहले यह [illegible] था। [illegible] दान कर दिया। [illegible] मुसलमानोंका अधिकार रहा। [illegible] मुसलमानोंसे इसे छीनकर अपने [illegible] मिला लिया। [illegible] दिया। संवत् [illegible] से यह शहर [illegible] हाथ आया। [illegible] [redacted] [illegible]

इस फर्मपर यहाँ बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम और रेले सामानेका काम होता है। इसकी शाखापर गल्लेका अच्छा व्यापार होता है। यह फर्म यहां सम्मानतीय समझी जाती है। इस फर्मके मालिकको जोधपुर दरबार ने सोना तथा ताजीम बक्षी है।

बैंकर्स

दी० इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया
मेसर्स केसरीमल गणेशमल
" कानमल सूरजमल
" गुलाबदास गोपीनाथ
" बुद्धकरण गोपीकिशन
" मूलचन्द नेमीचन्द
" रामदयाल श्रीकृष्ण
" सुमेरमल सम्मेदमल
" हाथीराम रामरख

—:o—

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गंभीरमल उदयराज धानमण्डी
" गंगाराम मेघराज "
" घुमीलाल रामदयाल
" जेठमल दानमल
" नरसिंहदास रामकिशन
" पीरदान प्रेमचन्द
" प्रतापमल राजमल
" बालमुकुन्द सीताराम
" मगनीराम हरनाथ
" रतनमल रूपजदास
" लछमनदास मयारामदास
" श्यामदास बद्रीदास
" शिवदास खिरेमल
" सुगनचन्द जी सोनी
" हजारीमल प्रतापमल

—::—

कपड़े के व्यापारी

किशनगोपाल वल्लभदास
गिरधरदास सुखराज
चौथमल सरदारमल लूंकड़
सुराना चम्पालाल
तेजराज टांटिया
नारायणदास रामगोपाल
मूलचन्द तिलोकचन्द
मेघराज मोतीलाल
मदनलाल कन्हैयालाल
मिलापचंद लालचंद
मुकुन्दचंद गुलाबचन्द भंडारी
लखमीचन्द चम्पालाल
लालचन्द सोनी
सिमरथमल प्रतापमल
सौभाग्य ट्रेडिंग कम्पनी
हीराचन्द भीखमचन्द
हीरालाल शिवनारायण

रंगीन कपड़े के व्यापारी

जवाहरमल पोकर्णा
मेड़तिया जवानराम
फूलचंद रेड़
लूंकड़ हीराचन्द
लखमीचन्द चम्पालाल
सिमरथमल प्रतापमल

—::—

कपड़ेके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

—•—

गोटेके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

रंगीन देशी कपड़े वाले

[illegible]
[illegible]
[illegible]

—•—

किरानेके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]दान

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

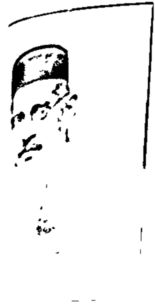

श्यांश गोपालदास, बम्बई
(पृ० नं० १०८)

स्व० सेठ गोऊमल डीमामल, बम्बई

रचन्द दीपचन्द, बम्बई

सेठ पुरुषोत्तमदास गोकुलदास, बम्बई

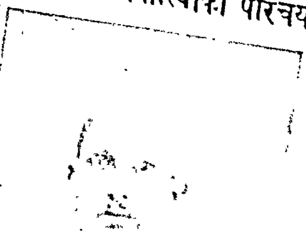

श्रीयुत श्रीचन्दजी बैद (आसकरण मुल्तानमल) लाडनूं

श्रीयुत [illegible]

इस ग्रन्थके कर्तानें जो भारतके व्यापारका इतिहास अनुक्रमसे लिखा हुआ है, उसके लेखक बाबू मोहन [illegible] ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। आप भी इस हिन्दी ग्रन्थमें भी अपना लेख लिखते रहते हैं।

मकराणा

जोधपुर स्टेटके [illegible] हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। [illegible] संगमरमर [illegible] पहले हुए [illegible] है। यह पत्थर [illegible] कारीगरोंके [illegible] एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, [illegible], [illegible] आदि। खानोंसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर [illegible] हैं, और फिर उसे [illegible] कर [illegible] कारीगरोंके [illegible] [illegible] कर सकते हैं। [illegible] बड़े [illegible] [illegible] जाते हैं। [illegible] पत्थर [illegible] है, यह [illegible] [illegible] है। [illegible] पत्थर [illegible] पर [illegible] जाता है।

[illegible] ([illegible]) [illegible] है। [illegible] ( ) [illegible] हैं। [illegible] १० २० [illegible] है। जोधपुर स्टेट [illegible] (४) [illegible] ( ) [illegible] हैं। इसके [illegible] है।

[illegible] [illegible] हुई, यहां [illegible] हैं। इस [illegible] सुन्दर [illegible] हुआ [illegible] है। यहांके [illegible] इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक [illegible] हैं। आपको यहां २० वर्षसे यह व्यापार कर रहे हैं। [illegible] है। इस फर्मके [illegible] बी० एल० वैश्य

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है; उसके लेखक श्रीयुत मोहनलालजी चड़जातिया ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराणा

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, स्याही, गुलाबी मिलावट, नील मिलावट आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसको क्वालिटीके मुताबिक अपनी दुकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्शों पर जड़नेके लिये तराश लिया जाता है।

साधारण तया यहां फर्शोंके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) मन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥/) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टेक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे मुतफर्रिक महसूल हैं।

जे० बी० आर० की मकराना स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकानें हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तय्यार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ मधुकरजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड आफिस आगरा है। इस फर्मके मैनेजर बाबू बी० एल० वैश्य

श्रीयुत सेठ मगनीरामजी बांगड़

श्रीयुत सेठ रामकुमा

श्रीयुत नारायणदासजी बांगड़

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है, लेखक श्रीयुत मोहन लालजी पडेमातिया ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं

मकराना

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, स्याही, गुलाबी मिक्सचर, नीला मिक्सचर आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसको क्वालिटीके मुताबिक अपनी दूकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्श पर जड़नेके लिये तराश लिया जाता है।

साधारण तया यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट मिलता है। दूसरे पत्थर ३) घन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥=) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है।

जे० बी० आर० की मकराना स्टेशनसे लेकर लगी हुई यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकानें हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक मकराना निवासी सेठ बदूलालजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड ऑफिस मकराना है। इस फर्मके मालिकका नाम बी० एल० वैश्य

बैंकर्स

डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक

मेसर्स गंगाधर रामकुंवार

„ जयकिशनदास कन्हैयालाल गट्टानी

„ नैनसुखदासराधाकिशनदास

„ शालिग राम शिवकरण

नमकके व्यापारी

मेसर्स रामभगत रामचन्द्र

„ शिवजीराम सदासुख

क्लाथ मरचेंट

रामानन्द लालचन्द

किरानेके व्यापारी

वृन्दावन चुन्नीलाल

चांदी-सोनेके व्यापारी

रामप्रताप शिवनाथ

लायब्रेरी

डीडवाणा हिन्दी पुस्तकालय

मूण्डवा मारवाड़

यह कस्बा जोधपुर राज्यके नागोर परगनेमें है। यह जे० आर० लाईन पर अपनेही नामके स्टे
से करीब ३ फर्लाङ्गकी दूरीपर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंगकी है। यह स्थान प्र
ऐतिहासिक स्थान है। कई वर्ष पूर्व जब कि नागोरके व्यापारका सितारा जोरोंसे चमक रहा था
यहांका व्यापार भी उन्नतिपर था। पर ज्यों २ नागोरके व्यापारकी अवनत दशा होती गई त
यहांका व्यापार भी मरता गया और आज यह दशा हो गई कि व्यापारके नामसे यहां कुछ भी
है। यहांके कतिपय व्यापारी भी जो यहांके अच्छे व्यवसायी हैं, बाहरी शहरोंमें व्यापार कर
उनका परिचय आगे दिया जायगा।

आजकल यहांके व्यापारमें यहांकी पैदाइश मूंग,मोठ, जौ, बाजरी, तिल्ली और जवार
येही वस्तुएं कभी २ बाहर एक्सपोर्ट होती हैं। यहां मिगसर मासमें गिरधारीलालजीका मेला
है। इसमें करीब ३०-४० हजार मनुष्य आते हैं। इसमें पशुओंका व्यापार विशेष होता है। चून
बहुत होता है। यहांसे आगरा, बम्बई, करांची आदि स्थानोंमें बेगनकी बेगने जाती है।
में २०२ मनकी बेगन मिलती है

बम्बई—मेसर्स नन्दराम मूलचन्द कालबा देवी—इस स्थानपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता
बम्बई—मेसर्स बद्रीनाथ रामरतन, दाना बन्दर—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता
हैद्राबाद—(दक्षिण)—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ जयनारायण

इस फर्मके मालिक मूल निवासी यहींके हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्था हुए करीब ७०-८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामनाथजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अ उन्नति हुई। आपके पांच पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः जयनारायणजी, शिवप्रतापजी, रामकि जी, रामचन्द्रजी, और रामसुखजी हैं। इनमेंसे सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी विद्यमान आप दोनों ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मूण्डावा—मारवाड़—मेसर्स रामनाथ जयनारायण—यहां हुण्डी-चिट्ठी तथा कमीशन एजन्स काम होता है।

अजमेर—मेसर्स रामनाथ शिवप्रताप, नया बाजार—यहां हुंडी-चिट्ठी, सराफी, रंगीन कपड़े कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—शिवप्रताप गोपी किशन, नया बाजार—इस स्थानपर गोटेका व्यापार होता है। गोटेका निजका कारखाना है। इस फर्मको अजमेर मेरवाड़ा एक्सीबिशन में फर्स्ट क प्राईज मिला था।

अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नया बाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स रामचन्द्र रामसुख, कालबादेवी T. A. King moto—यहां सब तरहकी कम एजन्सीका काम होता है।

सिकन्दराबाद—(दक्षिण) मेसर्स रामचन्द्र रामसुख—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामबगस जैगोपाल भट्टड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जैगोपालजी हैं। आप माहेश्वरी भट्टड़ जातिके हैं। आ निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ बगसजीके पिता बद्रीनाथजी थे। जैगोपालजी सेठ रामबगसजीके पुत्र हैं। आपके हाथोंसे इस को बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके स्थायी व्यवसाईयोंमें अच्छी प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जा सेठ जैगोपालजीके २ पुत्र हैं। जिनके नाम श्री रामनिवासजी तथा श्री रामकिशनजी हैं। आप भी दुकानका कार्य करते हैं।

बैंकर्स

मेसर्स उम्मेदमल धर्मचंद "चतुर"

इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके सांभर गौत्रीय सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर) है। संवत् १२०० के करीब आपके पूर्वज संघ निकालकर पालीताना गये, उससमय इनके कार्योंसे प्रसन्न होकर वहांके सारे श्वेताम्बर संघने इस कुटुम्बको "चतुर" का खिताब दिया था। उस समयसे आपके आगे चतुर शब्द लिखा जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दीमें मेड़ता बस्ती पर तत्कालीन नरेशका कोप हो गया, जिससे बहुतसे निवासी मेड़ता खाली करके बाहर चले गये, इसी सिलसिलेमें सवत् १८७६में सेठ उम्मेदमलजी भी तत्कालीन उदयपुर महाराणा श्रीभीमसिंहजीके विश्वास दिलाने पर यहां आकर बस गये। यहां आकर आपने जागीरदारोंके साथ सूदपर रुपया देनेका व्यवसाय आरंभ किया, जो अभी तक भली प्रकार चल रहा है। उदयपुरके वर्तमान और स्वर्गस्थ सभी महाराणाओंकी इस फर्मके मालिकों पर अच्छी कृपा रही है।

श्री सेठ उम्मेदमलजीके श्री सेठ धर्मचन्दजी, श्री सेठ छोगमलजी और श्री सेठ चन्दनमलजी नामक ३ पुत्र थे इनमेंसे श्री छोगमलजीने और श्री चन्दनमलजीने उदयपुरमें अच्छी इज्जत पाई। श्रीचन्दनमलजीको उदयपुर दरबारमें सम्माननीय कुरसी मिली थी, तथा आप श्री केशरियाजीकी प्रबन्ध कारिणी कमेटीके मेम्बर थे।

श्री धर्मचन्दजीके श्री श्रीपालजी, श्री छोगमलजीके श्री केशरीचन्दजी और श्री चन्दनमलजी के लक्ष्मीलालजी नामक पुत्र हुए। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीलालजी, श्री केशरीचन्दजी के पुत्र सेठ रोशनलालजी और श्री श्रीपालजीके पौत्र फतेलालजी हैं। इस कुटुम्बमें एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी विरोधके पांच पीढ़ियोंसे शामिल व्यवसाय कर रहा है। इस कुटुम्बकी उदयपुरमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

सेठ रोशनलालजी यहांके म्युनिसिपल बोर्डके व्हाइस प्रेसिडेंट और आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। इसके अतिरिक्त केशरिया तीर्थ, जैन श्वेताम्बर बोर्डिंगहाउस, जैन धर्मशाला, तथा [illegible] के उपाध्यक्ष भी आपही हैं। आप ओसवाल समाज और उदयपुरराज्यमें बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं आपके ३ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े फर्स्ट ईयरमें पढ़ते हैं।

का ठिकाना रहा। महाराजा विजयसिंहजीने इसे अपने अधिकारमें कर इसके एवजमें व जागीरदारको दूसरी जमीन जागीरमें दे दी। तभीसे यह मारवाड़ राज्यमें है।

पहले यहां जो जागीरदार रहते थे उनकी बहुतसी छत्रियां बनी हुई हैं। यहां २ ता दर्शनीय है। एक तालावपर बहुत दूरतक घाट बने हुए हैं। यहांसे करीब ३ मीलकी दूरीपर गिरी (पूनागढ़) नामक एक प्राकृतिक पहाड़ी स्थान है। यहां पूना माताका एक मन्दिर भी हुआ है। कहते हैं पहले यहांसे सोना निकलता था। इसके अतिरिक्त जैन-मन्दिर नोल सोमनाथका मन्दिर, नातोलेश्वर आदि देखने योग्य हैं।

आजकल यहांका प्रधान व्यापार ऊनका है। ऊनके लिये यह मंडी मशहूर है। करीब ४० गांठे यहांसे प्रतिवर्ष एक्सपार्ट होती हैं। कपासकी भी करीब ३००० गांठे जाती हैं। गल्लेमें चना, जौ, मोठ, बाजरी आदिका व्यापार होता है। यहांके पीतलके बर्तन व हाथी दांतकी वस भी मशहूर हैं। रंगीन छपाईका काम भी यहां अच्छा होता है। यहां एदलजी दीनशा करांचीवा की एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजन्ट

केशवदास पंचोली
किशनदास थापना
जुहारमल मोतीलाल
जुगराजजी बालिया
निहालचन्द गिरधारीलाल
पूनमचन्द राजाराम
मगजी लछमनदास
मोतीलाल चंडक
रूपराम मगनीराम
रामधनजी शाह अग्रवाल
सिरेमलजी कांटेड़
सेसमलजी बालिया

—o—

ऊनके व्यापारी

केशवदास पंचोली
गुलाबचन्द गणेशमल
देवीचन्द बालचन्द
ससमल सुल्तानमल
सेसमल बालचन्द
सिरेमलजी कांटेड़

कपासके व्यापारी

जुहारमल मोतीलाल

गल्लेके व्यापारी

किशनदास थापना
केसरीमल मुकुन्दचन्द
कुन्दनमल बस्तीमल
गुलाबचन्द गणेशमल
सुकनचंद भेरुलाल
लालचंद माणकचंद
रुपचंद चुन्नीलाल
हीरालाल चम्पालाल

चांदी-सोनाके व्यापारी

नथमल रामप्रताप खेतावत
रूपचन्द केसरीमल लूंकड़
रामस्वरूपजी अग्रवाला

का ठिकाना रहा। महाराजा विजयसिंहजीने इसे अपने अधिकारमें कर इसके एवजमें वहांके जागीरदारको दूसरी जमीन जागीरमें दे दी। तभीसे यह मारवाड़ राज्यमें है।

पहले यहां जो जागीरदार रहते थे उनकी बहुतसी छत्रियां बनी हुई हैं। यहां २ तालाब दर्शनीय हैं। एक तालाबपर बहुत दूरतक घाट बने हुए हैं। यहांसे करीब १ मीलकी दूरीपर पूनागिरी (पूनागढ़) नामक एक प्राकृतिक पहाड़ी स्थान है। यहां पूना माताका एक मन्दिर भी बना हुआ है। कहते हैं पहले यहांसे सोना निकलता था। इसके अतिरिक्त जैन-मन्दिर नोलाबाद सोमनाथका मन्दिर, नातोलेश्वर आदि देखने योग्य हैं।

आजकल यहांका प्रधान व्यापार ऊनका है। ऊनके लिये यह मंडी मशहूर है। करीब ४००० गांठे यहांसे प्रतिवर्ष एक्सपार्ट होती हैं। कपासकी भी करीब ३००० गांठे जाती हैं। गल्लेमें गेहूं चना, जौ, मोठ, बाजरी आदिका व्यापार होता है। यहांके पीतलके बर्तन व हाथी दांतकी वस्तुएं भी मशहूर हैं। रंगीन छपाईका काम भी यहां अच्छा होता है। यहां एदलजी दीनशा करांचीवालों की एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजन्ट

केशवदास पंचोली
किशनदास थापना
जुहारमल मोतीलाल
जुगराजजी बाफिया
निहालचन्द गिरधारीलाल
पूनमचन्द राजाराम
मगजी लछमनदास
मोतीलाल चंडक
रूपराम मगनीराम
रामधनजी शाह अग्रवाल
सिरेमलजी कांटेड़
सेसमलजी बाफिया
संसमल बालचन्द
सिरेमलजी कांटेड़

ऊनके व्यापारी

केशवदास पंचोली
गुलाबचन्द गणेशमल
देवीचन्द बालचन्द
ससमल मुल्तानमल

कपासके व्यापारी

जुहारमल मोतीलाल

गल्लेके व्यापारी

किशनदास थापना
केसरीमल मुकुन्दचन्द
कुन्दनमल मस्तीमल
गुलाबचन्द गणेशमल
सुकनचंद भेरूलाल
लालचंद माणकचंद
रूपचंद चुन्नीलाल
हीरालाल चम्पालाल

चांदी-सोनाके व्यापारी

नथमल रामप्रताप लेखावत
रूपचन्द केसरीमल लूंकड़
रामस्वरूपजी अग्रवाल

इस समय श्री कन्हैयालाल जीके पुत्र श्री नंदलाल जी बापना, "नगर सेठ" इस फर्मके काम को सम्भाल रहे हैं। आपका जन्म संवत् १९३०के आषाढ़ मासमें हुआ। उदयपुरकी पञ्चायतमें आपका पहिला स्थान है। महाराणा जीकी ओरसे आपको पूर्ववत् सम्मान प्राप्त है। आपको शिक्षा-से बड़ा प्रेम है। वर्तमानके आपके ५ पुत्र हैं, जिनमें सबसे बड़े कुंवर गनेशीलाल जी बी॰ ए॰ एल॰ एल॰ बी॰ हैं। आप होशियार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इस समय आप उदयपुर स्टेटके सहाड़ा (गंगापुरके पास) जिलेके हाकिम हैं। इनके अतिरिक्त दूसरे कुंवर मनोहरलाल जी एफ॰ ए॰में और छोटे बसंतीलाल जी मेट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

इस समय आपकी दूकानपर जमींदारी, गहनावट और जागीरदारोंसे लेन देनका काम होता है।

मेसर्स मूलचन्द सुगनचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। उदयपुरमें इस फर्मपर बैंङ्किग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

क्लाथमरचेण्ट्स

मेसर्स इस्माइलजी इब्राहिमजी उदयपुर

इस दूकानके मालिकोंका खास वतन यहींपर है। यह दूकान यहांपर सैकड़ों वर्षों की पुरानी है। इस खानदानके अंदर इस्माइलजी मालजी बहुत मशहूर पुरुष थे। वे मालजी कुरवारवालेके नामसे राज दरबार एवं देश विदेशोंमें मशहूर थे। इस खानदानको उदयपुर राज्यसे हमेशासे सम्मान मिलता रहा है। यहांके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) इस्माइल जी इब्राहिम जी उदयपुर-इस दूकानपर रूईकी आढ़तका काम होता है और स्टेटकी वर्दियोंके कंट्राक्टका काम भी यहींसे होता है।

(२) इस्माइलजी इब्राहिम जी घण्टाघर उदयपुर-इस दूकानपर सब प्रकारके कपड़ेका व्यापार होता है

(३) इस्माइल जी इब्राहिम जी सुनार वाजा भटीयाजा बिल्डिंग-इस दूकानपर खादी क्लाथ तथा पीस गुड्स (ई स्पीनर्स एण्ड को॰ की कैंसीकी) की एजंसी है। तथा आढ़तका काम होता है। इस दूकानको स्थापित हुए ४० वर्ष हुए।

इस दूकानके वर्तमान मालिक सेठ अलीमहम्मद जी हैं। आप उदयपुरके मशहूर इस्माइल जी मालजी कुरवार वालेके पुत्र हैं।

कपड़ेके व्यापारी

जलपूजी बापना
चानमल मोतीलाल
हेमराज माणकचन्द
घासीराम नारायणदास
गुलाबचन्द गणेशमल
चतुर्भुज गंगादान
हरखमल लालचंद
नयनचन्द जेठमल
फतेचन्द मूलचन्द
मगजी लक्ष्मणदास
मालचन्द तुलसाराम
मुकुन्ददास भेंवराज
रूपराम मगनीराम
सागरमल बलदेव
हीराचन्द हरखचन्द

गोटेके व्यापारी

फतेराम चांदमल
जसराज मुन्नालाल
हीराचन्द हरकचन्द

रंगीन देशी कपड़े वाले

नन्दराम करीम छीपा
नन्दराम [illegible] छीपा
पन्ना माना छींपा

किरानेके व्यापारी

[illegible]
जीवराज फूलचन्द
टीकमदास [illegible]

बारदान

[illegible] बारदानवाला
[illegible] बारदानवाला

कुचामन

कुचामन रोडसे एक छोटी रेलवे [illegible] ७ मील [illegible] यह कस्बा स्थित है। यह [illegible] है। यहांकी आबादी करीब [illegible] हजारकी है। [illegible] हुई [illegible] सुन्दर और [illegible] बना हुआ है। [illegible] है।

इस शहरके व्यापारियोंकी दुकाने [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] हुआ है। [illegible] है।

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है, उसके लेखक श्रीयुत मोहन लालजी बडेजातिया ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराणा

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, शाही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसको क्वालिटीके मुताबिक अपनी दुकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्श पर जड़नेके लिये तराश लिया जाता है।

साधारण तया यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) घन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० ६० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ||≠) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है।

जे० बी० आर० की मकराणा स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकाने हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड ऑफिस आगरा है। इस फर्मके आगरेका पता बी० एल० वैश्य

अब्दुलअली ताजखानजी
इब्राहिमजी दाऊजी
कादरजी अलीजी
महम्मदअली बागरजी
मुल्ला अमर हफ्तुल्ला

कमीशन एजंट

इस्माइलजी इब्राहिमजी मोती चोहट्टा
अब्दुलअली ताजखानजी मोती चोहट्टा
कोठावाला पारखजी
गुलाबचन्द हरीराम
चतुर्भुज कपूरचन्द
रामचन्द्र चम्पालाल

गल्लेके व्यापारी

गुलाबचन्द लक्ष्मीलाल मंडी
जीतमल भट्टामण्डी
भवानमल पूनमचन्द मण्डी
थावरचन्द भीमराज मण्डी

जनरल मरचेण्ट

अग्रवाल ब्रादर्स एण्ड को० सूरजपोल (हार्डवेर-टिम्बर)
अब्दुलअली ताजखानजी (आयरलैंड मोटर एजंसी)
अब्दुलहुसेन शेख लाड़जी (मिशनरी, लकड़ी, आइल)
आई० एस० मोहास्सन, हाथीपोल (टिम्बर लोहा)
कादरजी शेख हैदरजी (फोर्ड मोटर एजंसी)
चतुर्भुज हरकिशनदास (स्टेशनर)
जर्मन स्वींविंग मशीन कं० (साइकल और [illegible]
मेवाड़ साइकल कम्पनी
दी हैदरी स्टोर कम्पनी हाथीपोल

वैद्य

वैद्य भवानीशंकर आयुर्वेद भूषण घंटाघर

होटल्स

नेशनल होटल घंटाघर
स्टेट होटल उदयपुर

आर्टिस्ट

नवलराम फोटोग्राफर एंड आर्टिस्ट
पन्नालाल चित्रकार
लीलाधर गोवर्द्धनलाल

शिल्पी

रघुनाथ मिस्त्री कांटा

लायब्रेरीज

अग्रवाल लायब्रेरी सूरजपोल
एकलिंगदासजी यतीका पुस्तकालय
प्रताप पुस्तकालय, प्रताप सभा
विजय धर्म हाल श्वेतांबर पुस्तकालय हाथीपो[illegible]
मेहता जीतसिंहजीका पुस्तकालय

बोर्डिंग हाउस

गौतम ब्रह्मचर्याश्रम देहली दरवाजा
दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस
श्वेताम्बर जैन बोर्डिंग हाउस

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है; उसके लेखक श्रीयुत मोहन लालजी घड़ेजातिया ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराणा

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, शाही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसकी क्वालिटीके मुताबिक अपनी दूकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फ़र्श पर जड़नेके लिये तराश लिया जाता है।

साधारण तया यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) घन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥=) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है।

जे० बी० आर० की मकराणा स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकाने हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड ऑफिस आगरा है। इस फर्मके आगरेका पता बी० एल० वैश्य

इस समय इस कम्पनीके संचालक सेठ कल्यानजी दामोदरके पौत्र सेठ चरणदास विट्ठलदास हैं। आपकी फर्म इस मिलकी सेक्रेटरी, ट्रेझरर और मैनेजिंग एजंट है। इस मिलके मैनेजर मि०—देवचन्द पुरुषोत्तम सराफ बड़े योग्य व्यक्ति हैं।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके व्यवसायका पूरा परिचय ब्यावरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर रुई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स सिद्धकरण जसकरण

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास किशनगढ़ है। आप ओसवाल कोठारी जातिके हैं। यह दुकान यहां बहुत वर्षोंसे सराफीका धंधा करती आ रही है। इस फर्मपर पहिले शोभकरन सिद्धकरण नाम पड़ता था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सिद्धकरण जी और आपके पुत्र जसकरणजी हैं। आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री जसकरणजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

किशनगढ़—मेसर्स सिद्धकरण जसकरण-यहां चांदी, सोना, जवाहरात तथा रहनका काम होता है।

किशनगढ़—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार और आसामीलेन देनका काम होता है।

मदनगंज—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

मदनगंज—चेतरचन्द जसकरण-यहां गोटा किनारीका व्यापार होता है।

रुई और जीरेके व्यापारी तथा कमीशन एजण्ट

कस्तूरमल गुलाबचन्द
गनेशलाल चौथमल
गुलराज पूनमचंद
गोपीलाल कस्तूरमल
चम्पालाल रामस्वरूप
छोगालाल मोतीलाल
नारायण भागीलाल
मदीचन्द मेघराज
मालूराम मुरलीधर
बुधसिंह उदयसिंह
रामधन केदारमल
रतनचंद जतनचन्द
राधामोहन गुलाबचन्द
रूपचन्दलाल
सूरजमल कनकमल

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है; उसके लेखक श्रीयुत मोहन लालजी बडेजातिया ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराना

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, शाही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तरास कर उसकी क्वालिटीके मुताबिक अपनी दुकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्श पर जड़नेके लिये तरास लिया जाता है।

साधारण तया यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) घन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ।।=) मन और गड़े हुए माल पर १) मन टेक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है।

जे० बी० आर० की मकराना स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकाने हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड आफिस आगरा है। इस फर्मके मकराना पता बी० एल० वैश्य

कॉनर्स, क्लॉथ मर्चेण्ट्स, इत्यादिमें बहुत बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियोंका है। मारवाड़ियोंके पश्चात् कच्छी और बोहरा समाजका नम्बर है। इनमें अधिकांश जनरल मर्चेण्ट्स, किरानेके व्यापारी, लोहेका सामान बेचनेवाले इत्यादि हैं।

इन्दौरके व्यापारिक स्थान

(१) काटन-मार्केट—यहां रूईका बहुत बड़ा जत्था है। यहां मौसिमके समय सैकड़ों कपासकी गाडियां बिकनेके लिये आती हैं। मिलोंकी खरीदी होनेकी वजहसे बाहरके व्यापारी भी अपना माल यहां विक्रयार्थ भेजते हैं।

(२) सियागंज—इन्दौर स्टेशनके समीप ही यह बाजार महाराजा शिवाजीरावके नामसे बसाया हुआ है। इस बाजारसे बाहर जानेवाले तथा यहांपर बाहरसे आनेवाले मालपर स्टेटकी तरफसे किसी प्रकारका कस्टम-महसूल नहीं लिया जाता। इस मंडीमें किराना, लोहा, चद्दर, तमाखू एल्यूमिनियम तथा जनरल सामानका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां लाखों रुपयोंका माल बाहरसे आता, तथा यहांसे बाहर जाता है।

(३) जूना तोपखाना—इस बाजारमें जनरल मरचेंट्स, स्टोअर्स, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट तथा फेन्सी क्लाथ मरचेंट्सकी बड़ी सुन्दर तथा सजी हुई दुकानें हैं।

(४) बड़ा सराफा - यह बाजार इन्दौर नगरके मध्यमें है यहांपर रूईके वायदेका बहुत बड़ा सौदा होता है। वायदेके सौदेमें सेंट्रल इण्डियाके सब बाजारोंमें इसका स्थान प्रथम है। यहां दिन भर बड़ी चहल पहल तथा व्यापारिक गतिविधि होती रहती है। यहां बड़े २ धनिकोंकी दुकाने हैं, तथा बैंकिङ्ग बिजिनेस भी होता है।

(५) छोटा सराफा—यह सोना, चान्दी, और जवाहरातका छोटासा तथा सुन्दर बाजार है। पहले यहांके बनाए हुए जेवरोंमें मिलावटका बहुत अधिक अंश रहता था, लेकिन कुछ समय हुआ इन्दौर सरकारने इस पद्धतिमें बहुत कुछ सुधार करनेका कानून बना दिया है। सोनेचांदीके व्यापारके अतिरिक्त यहांपर शेअरोंका सौदा भी होता है।

(६) न्यू क्लाथ मार्केट – कपड़ेका यह सुन्दर बाजार बड़ी ही व्यवस्थामय पद्धतिपर महाराजा तुकोजी रावके नामसे बनाया गया है। इस मार्केटमें इन्दौरके प्रायः सभी मिलोंकी तथा और भी कपड़ेके बड़े २ व्यापारियोंकी दुकाने हैं। इस मार्केटमें कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। लाखों रुपयोंका कपड़ा यहांपर बाहरसे आता जाता है।

(७) बजाज खाना—यह कपड़ेका पुराना बाजार है। न्यू क्लाथ मार्केटके स्थापित होनेके पहले कपड़ेके प्रायः सभी बड़े २ व्यापारियोंकी दुकानें यहांपर थीं। अब यद्यपि बहुतसी दुकानें इस मार्केटमें चली गई हैं, तौभी यहां पर कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

मकराणा

सांमर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है । इस स्थान पर
...मरमर पत्थरकी खानें हैं । लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है ।
... पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है । इस पत्थरकी कई जातियां होती
... जैसे सफेद, स्याही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि । खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद
...लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसकी क्वालिटीके मुताबिक अपनी
...नोंमें सजा कर रखते हैं । खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें
...ते हैं । बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है । शेष पत्थर फर्श
... जड़नेके लिये तराश लिया जाता है ।

...साधारण तथा यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है । दूसरे पत्थर ६)
...बिकते हैं । मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है । जोधपुर स्टेट
...ने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है । इसके
...छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है ।

...जे० बी० आर० की मकराना स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई
...हैं । इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार
...ता है । यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है ।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं । आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां
...पार कर रही है । इसका हेड आफिस आगरा है । इस फर्मके आगरेका पता बी० एल० वैश्य

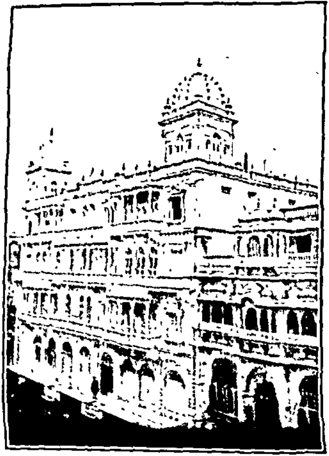

शीशमहल इन्दौर (सर सेठ हुकमचन्द)

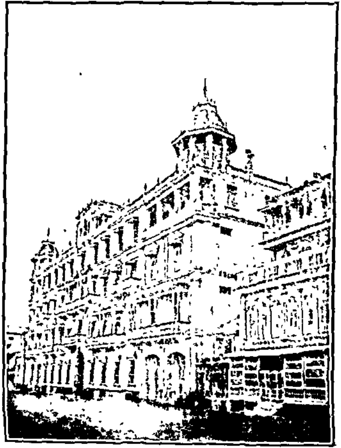

रंगमहल इन्दौर (सर सेठ हुकमचन्द)

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है, उसके लेखक श्रीयुत मोहनलालजी बड़जात्या ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराना

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर समान जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, स्याही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग कटवा कर उसको क्वालिटीके मुताबिक अपनी दुकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। भीतरका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्त्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्शों पर जड़नेके लिये उपयोग किया जाता है।

साधारण तथा यहां फर्शके कामका पत्थर १ (इंच मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) मन फुट बिकते हैं। मूर्त्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० से १२) फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥।=) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे फुटकर महसूल है।

जे॰ बी॰ रेल॰ की मकराना स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकानें हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी॰ एल॰ वैद्य एण्ड सन्स

इस फर्मके मालिक [illegible] [illegible] हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड ऑफिस अजमेर है। इस फर्मके संचालक बाबू बी॰ एल॰ वैद्य

प्राकृतिक स्थान

पातल पानी—यहांसे दो स्टेशनोंकी दूरीपर विन्ध्याचलके अञ्चलमें यह बड़ा सुन्दर स्थान है। यहांका प्राकृतिक दृश्य बहुत ही रमणीक है। बरसातके दिनोंमें यहांका दृश्य बड़ा ही अपूर्व और दर्शनीय हो जाता है। यहांपर चोरल नदीका झरना बहुत ऊंचाईसे गिरता है।

कालाकुण्ड—यह स्थानभी पातल पानीके पास ही है। यहां काले पत्थरोंसे घिरा हुआ निर्मल नीरका एक सुन्दर कुण्ड बना हुआ है।

महेश्वर—नर्मदा नदीके तीरपर बसा हुआ एक सुन्दर कस्बा है। यहांपर नर्मदाके किनारे प्रातः स्मरणीय देवी अहिल्या बाईके बनाए हुए घाट बहुत ही दर्शनीय हैं। नर्मदा नदीके अञ्चलमें सहस्रधारा नामक एक बड़ा ही सुन्दर स्थान है जहांकी प्राकृतिक छवि बहुत सुन्दर है। महेश्वरकी साड़ियां बहुत प्रसिद्ध हैं। यहांसे बम्बई इत्यादि, दूर २ के स्थानोंपर साड़ियां जाती हैं।

राउ—इन्दौरके पास ही एक छोटासा गांव है। इस गांवके पास बड़ा ही विशाल मैदान है यहांकी आबहवा बहुत साफ़ और अच्छी है। यहां क्षय रोगियोंके लिए एक सीनाटोरियम भी बना हुआ है। कुछ समयसे यहांपर मालव विद्यापीठ अर्वाचीन गुरुकुल नामक एक ब्रह्मचर्य्याश्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

केदारनाथ—इन्दौर राज्यके रामपुरा नामक ग्रामसे पांच मील दूरीपर एक बहुत सुन्दर प्राकृतिक स्थान बना हुआ है। यह स्थान बड़े ऊंचे २ रमणीक पहाड़ोंके बीचमें है। यहांपर पहाड़ोंसे जल झरता रहता है। यहां पहुंचते ही प्रत्येक मनुष्यकी तबीयतका प्रफुल्लित और पुलकित होना अनिवार्य्य है।

बर्फेश्वर—इन्दौर राज्यान्तर्गत मानपुरा ग्रामसे करीब सात माईलकी दूरीपर यह स्थान बना हुआ है। बड़े २ ऊंचे पहाड़ोंके बीचमें निर्मल जलका एक विशाल कुण्ड है। जिसमें स्फटिक मणिकी तरह पहाड़ोंके झरनेका शुद्ध जल झरता रहता है। इस कुण्डसे बर्फकी नामक एक नदी निकलती है। इस स्थानपर औषधि सम्बन्धी जड़ी बूटियां बहुत अधिक पैदा होती हैं। ऐसी किम्वदन्ती है कि आयुर्वेदके पिता महात्मा धन्वन्तरि जड़ी बूटियोंकी खोजमें अक्सर यहां आया करते थे। एकबार इसी स्थानपर तक्षक सर्पने उनको काटा, जिससे यहीं उनकी मृत्यु हुई, तभीसे यह स्थान बर्फेश्वरके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

धर्मराजेश्वर—इन्दौर राज्यमें चंदवासा नामक ग्रामसे तीन मीलकी दूरीपर पहाड़ोंके बीचमें यह सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। इसकी कारीगरी बड़ी अपूर्व और दर्शनीय है। यह विशाल मन्दिर एक ही पत्थरको खोदकर बनाया गया है।

स्व० सेठ केसरीचन्दजी (उम्मेदमल परमचन्द) उदयपुर

स्व० सेठ श्रीपालजी चतुर (उम्मेदमल परमचन्द) उदयपुर

श्री० नगर सेठ नन्दलालजी उदयपुर

सेठ रोशनलालजी चतुर (उम्मेदमल परमचन्द) उदयपुर

वर्तमानमें इस फर्मपर वेङ्किग, हुंडी चिट्ठी तथा जागीरदारोंके साथ लेनदेनका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स किशनजी केशरीचंद

इस फर्मके मालिक श्री पन्नालाल जी हैं। आप पोरवाड़ (पुआवत) जातिके हैं। इस नामसे यह फर्म ७५ वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसके पूर्व लालजी, जवेर जी और किशनजी तीन भाइयोंके सामेमें कारवार होता था। इस दूकानको किशनजी के पुत्र केशरीचन्द जीने स्थापित किया। आपके बाद आपके पुत्र पन्नालाल जी इस दुकानके मालिक हैं। यह दूकान उदयपुरमें हुण्डीवाली दूकानके नामसे प्रसिद्ध है। इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी, बैंकिंग तथा सराफीका व्यापार होता है। आपकी एक दूसरी दुकान और है, उसपर गोटेका व्यापार होता है।

दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कोटेमें दिया गया है। यहां यह फर्म रेसिडेंसी ट्रेजरर है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स प्रेमचंद चम्पालाल बापना "नगर सेठ"

इस फर्मके मालिकोंका पुश्तैनी निवास उदयपुर ही है। आप ओसवाल जातिके बापना गोत्रीय स्थानक वासी जैन सज्जन हैं। इस कुटुम्बमें श्री प्रेमचंदजी बड़े विख्यात और नामी व्यक्ति हुए। आपको संवत् १९०८में तत्कालीन महाराणा श्री स्वरूपसिंह जीने नगरसेठ का सम्माननीय खिताब दिया था। इस समय नगर सेठका जब तिलक किया गया था, तब अक्षत के स्थानपर मोती चढ़ाये गये थे; इतना बड़ा सम्मान रियासतमें केवल दीवान को ही मिलता है। साथ ही आपको हाथी और रुखाजना भी बख्शा गया था।

श्री प्रेमचन्द जीका देहावसान माघ सुदी ४ संवत् १९१८में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र चम्पालाल जी हुए। आपने भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। एकबार किसी संवत् १९२०में यहांकी प्रजा रेजिडेंटकी कोठीपर गोगुन्दामें आपके साथ पुकार करनेके लिए गई, सारे शहरमें हड़ताल थी। इस समय महाराणा जी ने गोकुलचंद जी मेहता और अपने दीवान पं० लक्ष्मणरावजी को वापस बुलानेके लिये भेजा। और स्वयं महाराणा जीने सब लोगोंसे सर्दियोंकी बाड़ोंमें भेंट की। तब शहरकी हड़ताल बंद हुई। आपके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र कन्हैयालाल जीने कारोबार सम्भाला। श्री चम्पालालजी का देहावसान माह वदी ८ संवत् १९४७में और कन्हैयालालजी का [illegible] वदी- १ संवत् १९६१में हुआ।

आप बड़े योग्य और कुशल मेनेजर हैं। इस मिलने अपने जीवनकालमें बहुत अच्छी उन्नति की। इसके शेअरका भाव एक समय सात सौ और आठ सौ तक पहुंचा गया था। इसी मिलके मुनाफे से इसके अन्दरमें एक मुनाफा मिल और खोल दीगई है।

(३) दी हुकुमचंदमिल्स लिमिटेड—यह मिल सन् १९१४ ई०में पन्द्रह लाखकी पूंजीसे स्थापित हुआ। यह पूंजी सौ २ रुपयेके पन्द्रहहजार शेअरोंमें विभक्त की गई थी। जिस समय मिलकी मशीनरीके आर्डर विलायत गये थे उस समय यूरोपके राजनैतिक गगन मण्डलमें युद्धके बादल उमड़ते हुये दिखलाई देने लग गये थे। जिससे मिल मशीनरीके भावमें बहुत कुछ तेजी होगई थी। मगर सेठजीने उसकी कुछ चिन्ता न करते हुए मशीनरीका आर्डर दे दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि १९१५ में मिल चलना प्रारम्भ होगई। इधर मिल चलना प्रारम्भ हुआ उधर यूरोपीय महायुद्ध भी प्रारम्भ होगया। फल यह हुआ कि मिलके शेअरोंमें एक दम वृद्धि हुई और सौ २ के शेअर आठ २ सौ में बिकने लगे। परिणाम स्वरूप इस मिलके नफे से इसके अन्दर एक मुनाफा मिल और खोली गई। इस मिलसे आज तक एक शेअरके पीछे २३ डिवीडेण्डमें कुल मिलाकर ४१३) मुनाफा और १४१) कमीशन मिल चुका है। इस समय इस मिलमें ११३१ लूम और ४२५१२ स्पेंडिल्स हैं। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स सरूपचन्द हुकुमचंद है।

(४) दी कल्याण मल मिल्स लिमिटेड इस मिलकी स्थापना रा० ब० स्वर्गीय सेठ कल्याण मलजीके हाथोंसे हुई। इस मिलके मेनेजिंग एजन्ट मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल है।

(५) दी राज कुमार मिल्स लिमिटेड-इस मिलकी स्थापना सन् १९२२ ई० में पारैम लाख पूंजीसे हुई। इसके मेनेजिंग एजन्ट मेसर्स स्वरूपचंद हुकुमचंद हैं। इसमें ५२५ लूम्स और ११८०० स्पेंडिल्स हैं।

(६) दी नन्दलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड—यह मिल श्रीयुत नन्दलालजी भण्डारीने ३०००००० की पूंजीसे स्थापित किया है। यह पूंजी १०० रुपयेके ३०००० शेअरोंमें विभक्त है। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी है। इसके मैनेजर श्री नन्दलालजी भण्डारीके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी हैं। आप एक सफल मैनेजर सिद्ध हुए हैं। आपकी व्यवस्थापिका शक्ति और विलक्षण मार्गकी बड़ी प्रशंसा सुननेमें आती है।

(७) दी स्वदेशी मिल्स लिमिटेड—यह मिल पहले कुछ दिनोंतक चलकर बन्द हो गई थी। अब इसको फिरसे चलानेकी तैयारी हो रही है।

इन सब मिलोंका कपड़ा बड़ा टिकाऊ मजबूत और बढ़िया होता है। पंजाबकी तरफ इसका खपत बहुत बढ़ता है। इन मिलोंमें कोरा, धुला, प्रिंटेड, रंगीन सभी तरहका कपड़ा तैयार होता है

श्री० भंवरलालजी [illegible]

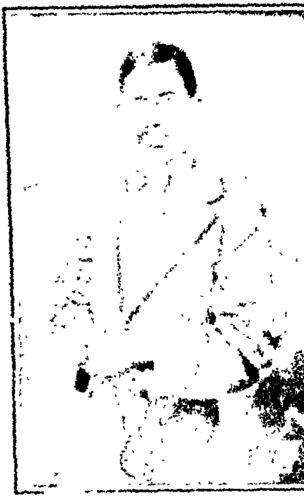

[illegible] अजमेर

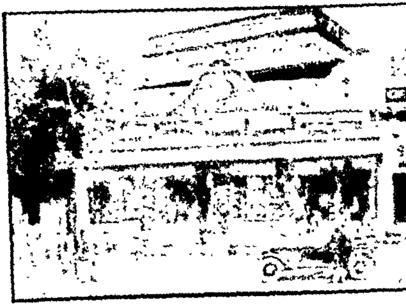

मोटर एजंट

मेसर्स अब्दुलअली ताजखानजी

इस दूकानकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हुए। सेठ ताजखानजी इस फर्मके बहुत बहादुर पुरुष हुए। उन्होंने इस दूकानको बहुत तरक्की दी। इस दूकानका लेनदेन राज-दरबार भाई बेटों एवं जमींदारोंसे हमेशासे रहा है। राज दरबार एवं बाजारमें भी इस दूकानकी अच्छी प्रतिष्ठा है। ताजखानजीके बाद उनके पुत्र अब्दुलअलीजीने इसके कारोबारको सम्हाला। अब्दुलअलीजीके ३ पुत्र हैं। जिनका नाम गुलामअलीजी, वलीमहम्मदजी, और फिदाहुसेनजी। ये तीनोंही इस समय दूकानका काम सम्हालते हैं।

इस दूकानपर जरी, सलमा, सितारेका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नीचे लिखी कम्पनियोंकी भी एजंसियां हैं।

(१) ए० हाइलैंड लिमिटेड बम्बई (मोटरकार)

(२) ओवरलैंड और विलीजनाइट मोटरकी एजंसी हैं।

करीब २० वर्षोंसे इस दूकानकी एक ब्रांच दिल्ली-पंटा घरके पास इसी नामसे खुली है। इस दूकानपर जनरल मरचेंट्स व कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त गोटा, पगड़ी, दुशाले, दुपट्टे और जवाहरातका भी व्यापार होता है।

राज घरानेका दिल्लीके मुतल्लिक जितना काम होता है वह सब इसी फर्मके मार्फत होता है।

सन् १९२७ के नवम्बरमें जब बड़े मुल्लांजी साहब यहां पधारे थे तब उन्होंने सेठ गुलाम अलीजीको "शेख" का खिताब दिया था।

बैंकर्स, गोल्ड एण्ड सिलवर मरचेंट्स

मेसर्स अनोपचन्द गंभीरमल
" उम्मेदमल धरमचन्द
" किशनजी केशरीचन्द
" बा० केसरी सिंहजी (रेसिडेंसी ट्रेझरर)
" गोपालदास विट्ठलदास
" जवरजी नाथूलाल
" नेमचन्द प्यारचन्द
" पन्नालाल दुलीचन्द
" बदीचन्द नथमल

मेसर्स भीमराज थावरचन्द
" मूलचन्द सुगनचन्द
" मथुरादास यमुनादास
" मीनचन्द टोडरमल
" विट्ठलदास किशनदास

कपड़ेके व्यापारी

कुतुबअली अमरजी बहलमवाला
इस्माइलजी इब्राहिमजी पंटा[illegible]
अब्दुलअली अमरजी [illegible]
अमरजी नाथजी

इन्दौरमें होमियोपैथिक औषधालय

कठिन रोगोंका आश्चर्यकारक इलाज।

आप सर्व सज्जनोंको यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि हमने इन्दौरमें सर्वांगपूर्ण होमियोपैथिक औषधालयकी स्थापना की है। आप शायद यह जानते होंगे कि कोई सो सवासो वर्षके पहले जर्मनी देशके एक महान् डाक्टरने इस चिकित्सा पद्धतिका आविष्कार किया था। इस पद्धतिने अपने इस अल्प जीवनमें सारे संसारमें आश्चर्यजनक ख्याति प्राप्त करली है। आज जर्मनी, अमेरिका और युरोप आदि देशोंमें इस चिकित्सा पद्धतिकी विजय पताका उड़ रही है। इस पद्धतिकी विशेषताएं निम्नांकित हैं।

(१) इसकी सब औषधियें बड़ी मीठी और सुस्वादु हैं जिन्हें सब लोग बड़ी रुचिसे सेवन करते हैं। खासकर छोटे छोटे बच्चे जिन्हें कड़वी औषधियोंको लेनेमें बड़ी तकलीफ होती है इसे बड़े आनन्द पूर्वक सेवन करके लाभ उठाते हैं।

(२) अत्यन्त मीठी और थोड़ी मात्रा होनेपर भी ये औषधियां आश्चर्यजनक फायदा दिखलाती हैं। इस चिकित्सामें खर्च भी दूसरी चिकित्साओंकी अपेक्षा कम होता है। इसी वजहसे अमीर गरीब सब इससे लाभ उठा सकते हैं।

(३) इस चिकित्सामें चीर फाड़की भी बहुत कम आवश्यकता होती है। कई ऐसे रोग जो डाक्टरी इलाजमें बिना चीर फाड़के आराम नहीं हो सकते इस चिकित्सासे आश्चर्यजनक रूपसे आराम होते दिखाई दिये हैं।

(४) स्त्रियों और बच्चोंके रोगोंके लिये तो यदि यह कहा जाय तो तनिक भी अत्युक्ति न होगी कि यह चिकित्सा पद्धति संसारमें एक ही है।

होमियोपैथिक चिकित्साके इतिहासमें कई घटनाएं ऐसी दिखाई देती हैं जिनमें कई भयंकर से भयंकर रोगोंमें केवल एक ही खुराकमें आश्चर्यजनक लाभ होता दिखाई दिया है।

हमने होमियोपैथिक चिकित्साका बाकायदा अध्ययन किया है और हमें इसके आश्चर्यजनक परिणामोंका अनुभव हुआ है। हम गत चार वर्षोंसे सफलता पूर्वक इसका अनुभव ले रहे हैं। हमारे अनुभवोंका फल हम आप सज्जनोंको प्रत्यक्षमें दिखलाना चाहते हैं। इसके लिये दो मास तक (१ नवम्बर तक) हमने बिल्कुल मुफ्तमें होमियोपैथिक औषधियां वितरण करनेका निश्चय किया है। अगर आप कोई कठिन व दुःसाध्य रोगसे पीड़ित हैं, अगर आप दूसरी चिकित्सा पद्धतियोंसे निराश हो गये हैं, तो आप कृपाकर एक बार हमारे औषधालयमें पधारिये बिना कुछ खर्च किये हुए ही इस नवीन पद्धतिके चमत्कारिक इलाजकी परीक्षा कीजिये। जब हम आपको कोई भी पैसा (prescription) और औषधि मुफ्तमें देते हैं तब हमें आशा है कि आप इस मौकेको हाथसे न जाने देंगे और हमारे औषधालयसे लाभ उठावेंगे।

डा० एम० एन० मण्डारे एल० एम० एस० (होमियो)

होमियोपैथिक औषधालय

गनानुमहलके सामने मल्हारगंज, इन्दौर।

अग्रवाल ब्रदर्स एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान मैनेजर श्रीयुत भँवरलालजी तायलीय हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मपर जनरल मरचेंट्सका व्यवसाय होता है। श्रीयुत भँवरलालजी तायलीय शिक्षित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका विशेष परिचय आया था लेकिन उसके खोजानेसे हम न छाप सके इसका हमें दुःख है।

किशनगढ़

बी० बी० सी० आई की अजमेर जयपुर ब्रांचके मध्यमें किशनगढ़ स्टेशनसे ४ मीलकी दूरीपर यह शहर बसा है। अस्त व्यस्त बहार दीवारीसे घिरे हुए इस शहरकी व्यवसायिक हालत बड़ी शोचनीय है। यह शहर महाराजा किशनगढ़की राजधानी है। यह स्थान चारोंओर पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है। शहरके किनारे एक बड़ा तालाब है। इस शहरकी आबादी करीब १० हजारके है।

मदनगंज-इस मंडीको किशनगढ़ नरेश महाराज मदनसिंहजीने अपने नामसे संवत् १९५९में बसाया था। इसके स्थापित होनेके पूर्व पासही बृटिश राज्यमें हरमाहेड़ा नामक स्थानपर १ मंडी थी, पर इस मंडीके आबाद होनेसे उसका व्यापार बिल्कुल नष्ट प्राय होगया है। इस मंड़ीका खास व्यापार जीरा घी, सूत और रुईका है। यहांसे दस पन्द्रह हजार बोरी जीरा प्रतिवर्ष बाहर जाता है। घी की भी यह अच्छी मण्डी है कभी २ अच्छी मौसिममें पांच पांच सौ कनस्टर घीके प्रतिदिन यहां आ जाते हैं।

इस स्थानपर गुड़, शक्कर किराना आदि बाहरसे आता है। जीरा घी, सूत और रुईके अतिरिक्त यहांकी पैदावारमें जौ, गेहूं चना, जवार मकई आदि हैं। इस मंड़ीमें आनेवाले और जानेवाले माल पर किसी प्रकारका टेक्स नहीं लिया जाता है। यहां यदि कोई रुईकी कच्ची गांठ बाहर लेजाना चाहे तो उसे ।।) मन महसूल देना पड़ता है।

इस स्थानपर सूत कातनेकी एक लिमिटेड मिल और एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फ़ेक्टरी है। जिनके नाम इसप्रकार हैं।

दि महाराज सोमयांग मिल ट्रान्स पोर्ट क० लि०
दि महाराज सोमयांग मिल्स क० लि० जीनिंग फेक्टरी
दि कटन प्रेस कम्पनी (सरकारी)
उपरोक्त कारखानोंमें हिज हाईनेस किशनगढ़के भी बड़े हिस्से हैं।

मेसर्स कल्यानजी दामोदर कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बम्बई है। यह कम्पनी दि महाराज सोमियाग मिल्स-कम्पनी लिमिटेड लिमिटेडकी मैनेजिंग एजेंट है। यह मिल पौने सात लाखके केपिटलसे सन् १९८० में स्थापित हुई। इस मिलमें केवल सूत तैयार होता है। इसमें १६००० स्पिंडल्स हैं। इस मिलका सूत बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, यू०पी० और ईस्ट आफ्रिका तक जाता है। इस मिलमें एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

मध्य-भारत

CENTRAL-INDIA

कॉटन मिल्स—

अफीमका व्यवसाय बन्द होतेही सेठजीने बड़ी बुद्धिमानीके साथ रुईके व्यापा और इस क्षेत्रमें अपना कमाल दिखाना प्रारम्भ किया। इस व्यापारने आपको भारत कर दिया। समयकी गतिको पहचानकर तुरन्त आपने कॉटन मिल्स, इण्डस्ट्रीज व्यवसायकी तरफ ध्यान दिया और सन् १९०९ में आपने मालवा यूनाइटेड मिलको पूंजीसे जन्म दिया। तथा उसके मैनेजिङ्ग एजण्ट सर करीमभाई इब्राहीमको बना कर कुलभार सौंप दिया। आप केवल इसके स्थायी डायरेक्टर रहे। यह मिल आजतक बहुत चल रही हैं और अपने शेअर होल्डरोंको शेअरके मूल्यसे कई गुना मुनाफा बांट चुकी पश्चात् आपने सन् १९१४ में दी हुकुमचन्द मिल्स और १९२२में दी राजकुमारमिल्सको दिया। मिलोंमें होनेवाली आपकी अद्‌भुत सफलताको देखकर और भी कई लोगोंने आपका करना प्रारम्भ किया, जिसके फलस्वरूप आज इन्दौरमें छः सात मिलें दृष्टिगोचर होरही हैं।

जूटमिल्स—

इन्हीं दिनोंमें जब कि बरार, खानदेश, बम्बई, गुजरातकी तरफ रुईका व्यापार अपनी उन्नति कर रहा था कलकत्ता और बंगालमें जूटका सितारा चमक रहा था। कलकत्तेमें बहुतसी मिलें खुल रही थी, मगर ये सब मिलें अंग्रेज पूंजीपतियोंकी थी। लोगोंकी ऐसी भ्रम धारणा हो रही थी कि जूटमिल्समें मारवाड़ियोंको सफलता नहीं मिल सकती और यही था कि कलकत्तेमें अनेक धनकुबेर मारवाड़ियोंके होते हुए भी मारवाड़ियोंकी एक भी मिल न सूक्ष्म दृष्टि सेठ हुकुमचंदजीकी निगाहोंमें यह क्षेत्र भी सूना नहीं था। आपने लोगोंके इस मूलक मिथ्या अपवादको असत्य सिद्ध करनेके लिए अस्सी लाखकी पूंजीसे ही हुकुमचंद जूटमि का प्रारम्भ किया। जिस समय इन्दौरके बाजारमें इस मिलके शेअर बिकने आये थे, उस सारे बाजारमें धूम मच गई थी। लोग शेअर लेनेको इतने उतावले हो उठे थे, कि सेठजीकी दुकान सुबहसे शामतक भीड़ लगी रहती थी। इसका कारण यह था कि इस सफल व्यवसायीके स अपना पैसा लगाकर लोग उसका मीठा फल चख चुके थे। फल यह हुआ कि अस्सी लाखकी करीब तीन चार करोड़के शेअरोंकी दरख्वास्ते आई। बड़ी मुश्किलसे पांच शेअरकी दरख्वास्तके पी एक शेअर लोगोंको मिला। इस मिलनेभी बहुत तरक्की की। ७॥ वाले शेअरका भाव इस समय २८ प्रति वर्ष अच्छा डिविडेण्ड भी यह मिल बांटती है।

वायदेका व्यवसाय

इधर तो सेठजी मिल और इण्डस्ट्रीजमें अपने सफल हाथोंको लगा रहे थे। उधर हिन्दुस्तान अत्यन्त शीघ्र गतिसे बढ़नेवाला रुईके वायदेका व्यवसाय भी आपकी आंखोंसे बाहर न था। आप

(८) कसेरा बाजार – यहां पीतलके बर्तन बनते हैं तथा बिकते हैं।

(९) बोतल्या माना रोड—यहाँ इन्दौरके बड़े २ और प्रसिद्ध श्रीमंतोंकी भव्य और विशाल दुकानें बनी हुई हैं। जिनपर बैंकिंग काटन, शेअर्स आदिका व्यापार होता है।

(१० मल्हार गंज—यह अनाज, घी, तथा तिलहनकी बहुत बड़ी मंडी है। यहांसे लाखों रुपयोंका माल बाहर जाता है।

इन्दौरके दर्शनीय स्थान

इस शहरमें तथा इसके आसपास कई स्थान बड़े भव्य और दर्शनीय बने हुए हैं जिनका परिचय इस प्रकार है—

(१) महलवाड़ा—(सरकारी महल) यह भव्य महल इन्दौरके ठीक मध्य भागमें बना हुआ है। इसकी गगनचुम्बी इमारत, भीतरके बड़े विशाल और कारीगरीयुक्त कमरे देखने योग्य है। इसके सामने एक अच्छा और चौड़ा मैदान बना हुआ है।

(२) शीशमहल (सर सेठ हुकुमचंद)—यह भव्य और रमणीक महल इतवारिया बाजारमें बना हुआ है। इसकी भव्य और विशाल इमारत तथा इसका सुन्दर डिजाइन केवल इन्दौरमें ही नहीं प्रत्युत सारे भारतमें दर्शनीय वस्तु है। इसके भीतर संगमरमर और पच्चीकारीका बड़ा सुन्दर कार्य्य किया हुआ है।

(३) सर हुकुमचंद जैन मंदिर—उपरोक्त शीशमहलके साथ ही यह मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिरमें कांचकी जड़ाईका काम बहुत बढ़िया किया हुआ है। रातके समय बिजलीके प्रकाशमें मन्दिरके अन्दर जाते ही एक विचित्र प्रकारकी चकाचौंध आंखोंमें उत्पन्न हो जाती है।

(४) लालबाग पैलेस – ऐसा सुननेमें आता है कि एक्स महाराजा तुकोजी रावने इसे बड़े शौक और चावसे बनाया था। कहा जाता है इस पैलेसमें लाखों रुपयोंका फर्नीचर विलायतसे मंगाकर सजाया गया है।

(५) लाल कोठी — शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई सरकारी कोठी है। बड़ी सुन्दर और दर्शनीय है।

(६) इन्द्र भुवन—(सेठ हुकुमचंद) शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई बड़ी रमणीक कोठी है। इसका सुन्दर डिजाइन और इसकी कारीगरी देखने योग्य है।

इसी प्रकार पढवर्डहॉल, मोतीबंगला, सुखनिवास, हवाबंगला, सर सेठ सरूपचंद हुकुमचंदका जंवरी बाग, इत्यादि इमारतें भी देखने योग्य हैं।

मानिक भवन (विनोदीराम बालचन्द) इन्दौर

व्यक्ति जितनी ही अधिक जोखिममें पड़नेका साहस रक्खेगा वह उतनीही अधिक सफलता सम्पादित करेगा। जो व्यक्ति पूंजी, और व्यापारके रहते हुए भी जोखिममें पड़नेकी ताकत नहीं रखता वह कभी आशातीत सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।" सर सेठ हुकुमचन्दके जीवनमें यही तत्व सबसे अधिक काम करता हुआ दिखलाई दे रहा है। आपने व्यापारके प्रारम्भसे ही बड़े २ जोखिम पूर्ण व्यापारिक कामोंमें पड़ना शुरू किया। शुरूमें आपने ४० लाख रुपये अफीमकी पेटियोंके खरीदनेके लिए गवर्नमेण्टमें भरे और फिर भीषण यूरोपीय युद्धके समय आपने विलायत मशीनरीका आर्डर दिया, फिर लोक किम्वदन्तीके विरुद्ध कलकत्तेमें जूट मिलकी स्थापना की, और सट्टेमें तो आपने जोखिम उठानेमें हद कर दी, यहांतक कि कभी २ तो करोड़ों रुपयेके नफ़े नुक़सानकी जोखिम पड़ गये। इसी बढ़े हुए व्यापारिक साहसका यह परिणाम है कि आज सर सेठ हुकुमचन्दने सारे भारतके व्यापारिक समाजमें और भविष्यके व्यापारिक इतिहासमें अपना एक खास स्थान प्राप्त कर लिया है

राजकीय सम्मान

केवल व्यापारिक जगत्‌में ही नहीं इन्दौर गवर्नमेण्ट और भारत गवर्नमेण्टमें भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। भारत गवर्नमेण्टने आपको पहले रायबहादुरके खिताबसे और उसके पश्चात् सरनाइटके सम्मानीय पदसे सम्मानित किया। इन्दौर गवर्नमेण्टने भी आपको "राज्यभूषण" का पद प्रदान किया।

सेठजीके महल

सेठ हुकुमचन्दजीको सुन्दर और नये ढङ्गके मकान बनानेका हमेशासे बड़ा चाव रहा है। इन्दौर, बम्बई, कलकत्ता, उज्जैन आदि स्थानोंमें आपकी बड़ी २ आलीशान इमारतें बनी हुई हैं। खासकर इन्दौर तो आपकी इमारतोंसे जगमगा रहा है। सरकारी इमारतोंके सिवाय इन्दौरमें यदि कोई देखने योग्य वस्तु है तो आपकी इमारतें हैं। कई इमारतोंको तो छोटी २ त्रुटियोंके कारण—आपने गिरवा २ कर दुबारा बनवाई है। इन इमारतोंमें शीशमहल, रंगमहल, इन्द्रभुवन आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनका परिचय पहले दिया जा चुका है।

सार्वजनिक कार्य्य

सेठजीको ज्यों २ व्यापारमें सफलता मिलती गई त्यों २ आपका सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी उत्साह बढ़ता गया। आपने सभी क्षेत्रोंमें अपनी उदार दान प्रवृत्तिका परिचय दिया। मुसाफिरोंके आरामके लिए विशाल धर्मशाला बनवाई, विद्यार्थियोंकी शिक्षाके लिए बोर्डिंग हाउस और जैन महाविद्यालयका निर्माण करवाया। स्त्रियोंकी शिक्षाके लिए श्राविकाश्रमकी योजना की। रोगियोंके लिए सुन्दर औषधालय खुलवाया, स्त्रियोंके प्रसूति कष्टोंको निवारण करनेके लिए प्रसूति

म्युनीसिपल कार्पोरेशन

शहरकी सफ़ाई और सुव्यवस्थाके लिए यहांपर म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्थापित है। इसके मेम्बर हर तीसरे वर्ष पब्लिकमें से चुने जाते हैं। यह कार्पोरेशन शहरकी सफ़ाई और लोगोंकी स्वास्थ्यरक्षाके लिए व्यवस्था करता है। फिर भी इन्दौरके समान शहरको जितना साफ़ होना चाहिए उतना साफ़ वह नहीं दिखलाई देता है। इस शहरकी बनावट बहुत सङ्कीर्ण और विचित्र है। जिससे साधारन श्रेणीके लोगोंको शुद्ध और साफ़ हवा नसीब नहीं होती। यहांकी बहुतसी गलियां गन्दी और दूषित वायु युक्त रहती हैं। नगरकी सदर सड़कें भी जितनी साफ़ होना चाहिए उतनी साफ़ नहीं हैं। किसी मोटरके पाससे होकर गुजरते ही, उससे उड़नेवाली धूलसे रास्ता चलनेवालोंकी परेशानी हो जाती है। जब कि जयपुर इत्यादि शहरोंमें, सड़कोंके सुधारकी ओर इतना ध्यान दिया जा रहा है, वैसी हालतमें इन्दौरके समान बड़े हुए शहरमें इस प्रकारका सुधार न होना आश्चर्य जनक बात है। इन्दौरकी गवर्नमेण्ट, और म्युनिसिपल कार्पोरेशनको शहरकी सफ़ाई और सड़कोंके सुधारकी ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। गर्मीके दिनोंमें इस शहरमें पानीकी भी बड़ी खींच हो जाती है। जिससे कई दफ़े साधारण वर्गको बड़ी तकलीफ़ होती है। राज्यकी ओरसे इस कष्टको दूर करनेका प्रयत्न हो रहा है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

हम ऊपर लिख आये हैं कि अफ़ीमके व्यवसायके बन्द होते ही, इन्दौरमें रूईका व्यवसाय चमका, जिससे यहांकी फ़ैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीजमें बहुत अधिक तरक्की हुई। इन्दौरकी गवर्नमेण्टने भी यहांके औद्योगिक कार्य्यमें काफ़ी सहायता की। उसने मिल, जीन, प्रेस तथा दूसरी फ़ैक्टरियोंके सम्बन्धमें उदार नीतिसे काम लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्दौर शहर फ़ैक्टरीज़ और इन्डस्ट्रीज़की दृष्टिसे आज सारे मध्य भारतमें प्रथम श्रेणीका है। यहांकी फ़ैक्टरीज़का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मिल्स

(१) दी स्टेट मिल्स लिमिटेड—यह सेण्ट्रल इण्डियामें सबसे प्रथम स्थापित होनेवाली मिल है। इसे इन्दौरकी गवर्नमेन्टने खोला था। इस समय यह मिल यहांके सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ठेकेमें है।

(२) दी मालवा युनाइटेड मिल्स लिमिटेड—यह मिल यहांके सर सेठ हुकुमचंदजीकी प्रेरणासे सन् १९०९ में पन्द्रह लाख रुपयेकी पूंजीसे प्रारम्भ किया गया। इसके मैनेजिंग एजण्ट बम्बईके मशहूर मिल मालिक सर करीमभाई इब्राहीम हैं। इस मिलके वर्तमा[illegible]र मी० मुहम्मद है।

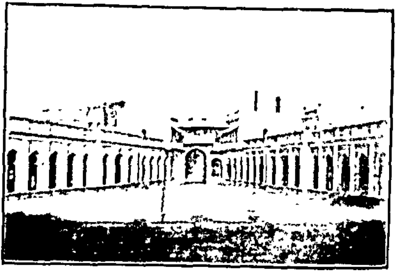

हुकुमचन्द जैन बोर्डिङ्ग हाउस इन्दौर

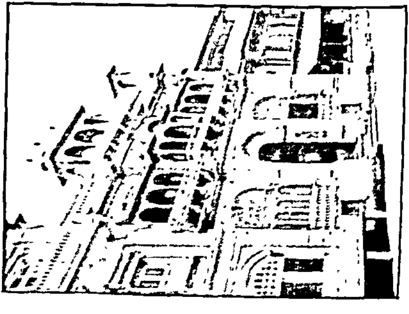

[illegible] इन्दौर (सर सेठ हुकुमचन्द)

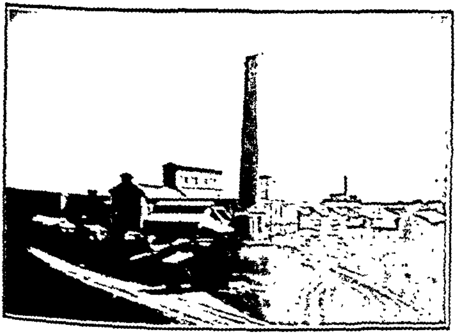

हुकुमचन्द मिल्स नं० १ लिमिटेड इन्दौर

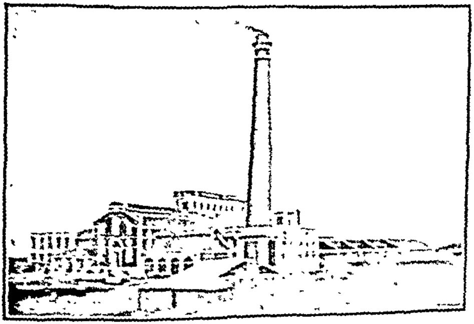

हुकुमचन्द मिल्स नं० २ लिमिटेड इन्दौर

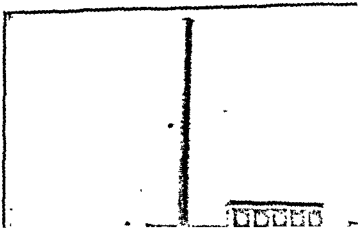

मिल्स लिमिटेड इन्दौर

कुंवर हीरालालजी

आप सरसेठ हुकुमचन्दजीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप जयपुरसे सेठ साहबके यहां दत्तक आये हैं। आपका स्वभाव बहुत शांत और गम्भीर है। आपकी उदारता और सादगी बहुत बढ़ी चढ़ी है। करोड़पतिकी सन्तान होते हुए भी आपकी हद्दर्जेकी निराभिमान वृत्ति और उन्नत स्वभावको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। धनाढ्य पुरुषोंकी सन्तानोंमें आपका स्वभाव एक अपवाद स्वरूप है यह कहना भी अत्युक्ति पूर्ण न होगा। अभीतक आप राजकुमार मिलके मैनेजरके पदपर काम करते थे। आपके व्यवहारसे वहांका सारा स्टॉक बड़ा सन्तुष्ट रहता था। हाल हीमें आप स्व० रा० ब० सेठ कल्याणमल जीकी गद्दीके उत्तराधिकारी हुए हैं।

आप पोलो खेलनेमें बड़े प्रवीण हैं। यहांतक कि भारतके वैश्य समाजमें शायद ही कोई आपके समान कुशल खिलाड़ी होगा। इस खेलमें आपने कई बार कप्स और मेडल्स भी प्राप्त किये हैं। पोलोहीकी तरह टेंटपिगिंग नामक खेलमें भी आपने कईवार यूरोपियनोंसे बाजी जीती है। चांदमारी और तैरनेकी कलामें भी आप बड़े निपुण हैं। मतलब यह कि स्वास्थ्य और स्वभाव दोनों ही दृष्टिसे आप बहुत उन्नत हैं। आपके सामाजिक विचार भी बहुत सुधरे हुए हैं।

कुंवर राजकुमारसिंह

आप सेठजीके औरस पुत्र हैं। इस समय मेयोकॉलेज अजमेरमें शिक्षा लाभ कर रहे हैं।

सेठ साहबका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) इन्दौर—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. "Sethaji") इस दुकानपर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द ३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A. Kashaliwal) इस दुकानपर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी, जूट, और कपड़ेकी एजन्सीका कार्य्य होता है। यहींपर जूट मिलका ऑफिस भी है।

(३) बम्बई—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द (T. A. Season) यहां बैंकिंग बिजिनेस होता है।

(४) उज्जैन—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. Lucky) यहां भी बैंकिंग बिजिनेस होता है।

(५) खामगांव—मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत (T. A. Season) इस दुकानपर रूई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है। इसमें बम्बईके मशहूर व्यवसायी मामराज रामभगतका साझा है।

इन दुकानोंके अतिरिक्त राजकुमार मिलकी तथा हुकुमचन्द मिलकी इन्दौर, बम्बई और कानपुरमें अलग दुकानें हैं। जिनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।

उपरोक्त मिलोंके अतिरिक्त यहां पर करीब दस, ग्यारह जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां भी चलती हैं। कुछ दिनों पूर्व यहां पर एक ग्रस फैक्टरी भी चलती थी। बीचमें वह बन्द हो गई थी, अब सुननेमें आता है कि वह फिरसे चलनेवाली है।

इन फैक्टरियोंके अतिरिक्त शहरके दूसरे उद्योग धन्धे भी अच्छी उन्नतिपर हैं। इन उद्योग धन्धोंमेंसे सरकारी मिस्त्रीखाना, रेशमका कारखाना, आयर्न एण्ड ब्रास फैक्टरी, ब्रिक फैक्टरी (ईंटोंका कारखाना); मोजेकी फैक्टरी (महाजन ब्रदर्स) इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस शहरमें लकड़ीकी खुदाईका काम, तथा सोने और चांदीके पालिसदार, सादे और नकाशीदार बर्तनोंके बनानेका काम अच्छा होता है। यहांकी सेण्ट्रल जेलकी दरियां भी बहुत मजबूत और टिकाउ बनती हैं। यहांपर ड्रॉली क्लब नामक एक औद्योगिक संस्था स्थापित है। इस संस्थामें बेंत तथा सुनारी सम्बन्धी काम बहुत अच्छे होते हैं। यहांपर काम सीखनेवाले विद्यार्थियोंको सब प्रकारकी औद्योगिक शिक्षा दी जाती है। इन्दौरके पास ही महेश्वर नामक स्थान है। यहांकी साड़ियां भारत प्रसिद्ध है। पहलेके जमानेमें यहांकी साड़ियां प्रायः सारे दक्षिण प्रान्तमें जाती थीं, अब भी बम्बई आदि स्थानोंमें यहांसे बहुत काफी साड़ियां जाती हैं।

कृषि विभाग

राज्यकी कृषि और किसानोंकी उन्नतिके लिए यहांकी गवर्नमेन्टने यहांपर एक संस्था खोल रक्खी है। यह संस्था प्रसिद्ध कृषिविद्या विशारद मि० हावर्डकी अध्यक्षतामें कृषि सम्बन्धी कई नये २ अनुभव प्राप्त करनेकी चेष्टा कर रही है। इसके द्वारा स्टेटके किसानोंकी उन्नतिके लिये उपयोगी साहित्य भी प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। हालहीमें इस संस्थाकी ओरसे "किसान" नामक एक छोटे परन्तु सुन्दर और उपयोगी मासिक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है।

मिल-ऑनर्स

MILL-OWNERS

इस समय आपकी गद्दीपर श्री कुं० हीरालालजी प्रतिष्ठित हैं। आपके स्वभावका संक्षिप्त परिचय पहले दिया जा चुका है।

इस समय इस फर्मकी इन्दौर, बम्बई, उज्जैन और मोरेनामें ब्रांचेस खुली हुई हैं। जिनपर खासकर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नन्दलालजी भण्डारी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। यों तो आपके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान सादड़ी (जोधपुर) का था पर आपको मालवा प्रान्तमें बसे बहुत समय हो गया। आजकल आपका निवास स्थान रामपुरा (इन्दौर-स्टेट) है।

इस फर्मकी स्थापना श्री० सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ही हाथोंसे हुई। प्रारम्भमें आपने कपड़ेकी दुकान स्थापित की। आपका सरकारी कर्मचारियोंसे अच्छा परिचय था। अतएव आपका माल काफी तादादमें बिक्री होने लगा और आपको अपने व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। कपड़ेके साथ २ आप अफीमका व्यवसाय भी करते थे। उन दिनोंमें इन्दौर का बाजार भारत वर्षमें अफीमके लिये मशहूर था। अतएव कहना न होगा कि आप भी उस समय अफीमके अच्छे व्यापारी हो गये थे। इसके पश्चात् यूरोपीय महाभारतके समय भी आपको कपड़ेमें बहुत अधिक लाभ हुआ।

आपने सन् १९१९ में सेन्ट्रल इंडियामें सर्व प्रथम स्थापित होनेवाली दी स्टेट मिलस नामक मिलको २० सालके लिये ठेकेपर लिया। उस समय इस मिलमें मोटा कपड़ा निकलता था। आपने इसमें करीब ५ लाख रुपया लगाकर बारीक कपड़े बुननेके संचे लगवाये। इससे स्टेट मिलकी उन्नति हुई और उसमें लोकोपयोगी अच्छा कपड़ा निकलने लगा। इसके पश्चात् आपने १॥ लाख रुपयेकी पूंजीसे क्षिप्रा नदीके तटपर क्षिप्रा नामक ग्राममें एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी बनवाई।

सन् १९२८ ई० में आपने अपने मैनेजमेंटमें ३० लाखकी पूंजीसे "दी नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड" नामक एक मिलकी स्थापनाकी। यह मिल यहांके अच्छे मिलोंमें समझा जाता है।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। प्रथम श्री० कन्हैयालालजी द्वितीय श्री० मोतीलालजी एवम् तृतीय श्री० सुगनमलजी हैं। इनमेंसे श्री० कन्हैयालालजी भंडारी मिलका, श्री० मोतीलालजी कपड़ेकी दुकानका एवम् श्रीयुत सुगनमलजी स्टेट मिलके कार्यका संचालन कर रहे हैं।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका जन्म मरुदेशके कालू नामक गांवमें संवत् १८८४ में हुआ था। आपके पिता सेठ हंसराजजी बहुत साधारण परिस्थितिके व्यक्ति थे। आपके बड़े भाई चुन्नीलालजी उस समय खेड़ेमें मामूली व्यवहार पर कठिनाईसे कुटुम्बका खर्च चलाते थे। उस समय सेठ कस्तूरचंदजी अपनी नेत्र-विहीना माताकी सेवामें अहर्निशि तत्पर रहते थे, उन्हींके शुभाशीर्वादके परिणामसे आपको एक परम प्रतिष्ठित गद्दीके स्वामी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन १८९३ में सेठ कस्तूरचंदजी इन्दौरके ख्याति प्राप्त कुटुम्बमें सेठ ओंकारजीके यहां गोदी लाये गये। उस समय सेठ स्वरूपचंदजी सेठ ओंकारजी और सेठ तिलोकचंदजी तीनों भाइयोंका व्यवसाय शामिल ही होता था तथा यह कुटुम्ब जनतामें "हाथके कायले" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। सन् १९०० में सेठ ओंकारजीका देहावसान हुआ, उस समयसे इस कुटुम्बकी अलग २ तीन फर्में स्थापित हुईं। सेठ कस्तूरचंदजीकी वय उस समय केवल १६ वर्ष की थी, इतनी सी छोटी वयमें ही आप पर अपनी फर्मके अफीम और बैंकिंग व्यवसायका भार आ पड़ा। पर आप उसे बड़ी तत्परता और बुद्धिमानीसे संचालन करते रहे। सन् १९०४ सन् १९०६ और १९११ में आपको क्रमशः पांच; चार व तीन लाखका नुकसान देना पड़ा, इसी बीच आपने सन् १९०८ से १९११ तक अफीम और रुईमें नुकसानसे कई गुनी अधिक रकम पैदा कर ली। उस समय आप अफीम, जवाहरात, रुई तथा अनाजका विशेष व्यवसाय करते थे। सन् १९१३ में बम्बईकी तिलोकचंद हुकुमचंदके नामकी फर्म जो आप तीनों भाइयोंके साझेमें अफीमकी एजंसीका काम करती थी, उठा दी गई।

अफीमका व्यवसाय जब मालवेमें बंद हो गया तो आपने अपनी सम्पत्ति मिल उद्योग एवं रुईके व्यवसायमें लगाई। स्थानीय हुकुमचंद मिल, कल्याणमल मिल, राजकुमार मिल एवं बर्जनके विनोद मिलमें आपने बड़े बड़े भाग ले रक्खे हैं। आप इन मिलोंके डायरेक्टर भी हैं।

मिल ऑनर्स

मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर राज्यभूषण सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी० हैं। आप उन प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमेंसे हैं, जो अपने समय और अपने क्षेत्रके इतिहासमें अपना नाम अमर छोड़ जाते हैं। आपके जीवनका इतिहास एक अत्यन्त सफल व्यवसायिक इतिहास है जो इस लाइन प्रवेश करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके लिए उत्साह वर्द्धक है।

सर सेठ हुकुमचन्दजीका जन्म विक्रम संवत् १९३१ के आषाढ़ मासमें हुआ था। आपके पितामहका नाम सेठ माणिकचंदजी था। आप उस समयकी प्रसिद्ध फर्म माणिकचन्द मगनीरामके स्वामी थे। आपके पांच पुत्र हुए थे, जिनमेंसे दो बाल्यावस्थाहीमें स्वर्गवासी होगये थे, बाकी तीन पुत्रोंमें सबसे बड़े स्वरूपचन्दजी, मझोले ओंकारजी और छोटे तिलोकचन्दजी थे। संवत् १९५८ में आप तीनों भाई अलग २ हुए।

अफीमका व्यवसाय—

सेठ हुकुमचंदजीने पन्द्रह वर्षकी उम्रसेही व्यापारके कार्य्योंमें भागलेना प्रारम्भ किया। आपको अपने पिताजीसे केवल आठ लाख रुपयेकी सम्पत्ति प्राप्त हुई थी, मगर आपने अपनी प्रखर बुद्धि और तीव्र मेधाशक्तिसे अपनी सम्पत्तिको बढ़ाना प्रारंभ किया। उससमय आपकी दुकानपर अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय होता था। इस व्यापारमें आपने अपने साहसके बलपर बहुत सम्पत्ति उपार्ज्जन की। सन् १९०९-१० में भारत सरकारने अपनी अफीम सम्बन्धी नीतिमें परिवर्तन किया। उस समय सेठजीके व्यापारिक साहसने अपना जौहर दिखाया, आपने भावी लाभकी आशासे निःशंक होकर छः सात हजार अफीमकी पेटियोंके करीब चालीस लाख रुपये सट्टेके गवर्नमेंटमें भर दिये। कुछ ही दिनों पश्चात् गवर्नमेंटने सट्टेकी हुण्डी लेना बन्द कर दिया, और सट्टेका भाव बाजारमें बढ़ताही गया। इधर सेठजीने मालवेमें जगह २ अफीम खरीदना प्रारम्भ कर दिया और उसकी पेटियां बना २ कर चीन और शंघाई भेज दीं। आगे जाकर दो २-२॥ हजार लागतकी पेटियां दस २ हजार तक बिकी जिससे सेठजीको करोड़ों रुपयोंका एक साथ लाभ हुआ।

जैन मन्दिर जंवरीबाग इन्दौर (सर सेठ हुकुमचन्द)

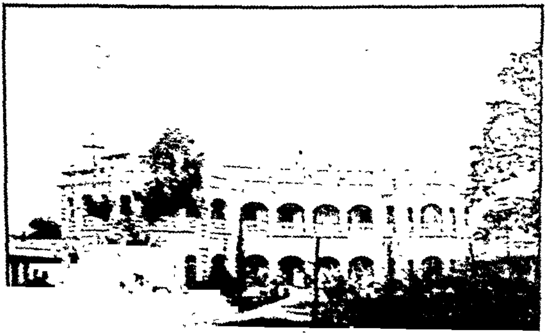

हुकुमचन्द जैन महाविद्यालय जंवरीबाग इन्दौर

आपने ३५०००) की सहायता इन्दौरकी हिन्दी साहित्य समितिको राष्ट्रभाषाकी वृद्धिके लिये दी। एवम् सन् १९१४ में यूरोपीय महासमरके समय हताहत सैनिकोंके रक्षार्थ एक मोटर ७५००) की खरीदकर लार्ड हार्डिंजके द्वारा रण क्षेत्रमें भिजवाई।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर—रायबहादुर सेठ ओंकारजी कस्तूरचन्द शीतला माता बाजार—यहां बैङ्किंग, साहुकारी, कॉटन तथा हुंडी चिट्ठी और जवाहरातका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई—रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद राजमहल मुलेश्वर—यहां भी बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठी और कॉटन का व्यापार होता है।

(३) उज्जैन—रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी तथा कॉटनका व्यवसाय होता है।

(४) तराना—रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचंद—यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई गल्ला और साहुकारी व्यवसाय होता है। इस स्थानपर खेती द्वारा हजारों मन गल्ला प्रतिवर्ष आपके यहां पैदा होता है।

मेसर्स परशुराम दुलीचन्द

इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके व्यवसायको सेठ दुलीचन्दजी एवं सेठ फनीरामजीने विशेष तरक्की दी। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ फनीरामजीके पुत्र सेठ फतेचन्दजी हैं। आप होलकर गवर्नमेन्ट द्वारा स्थापित इन्दौर सराफा एसोशिएसनके वाइस प्रेसि- डेंट एवं हुकुमचंद मिल तथा राजकुमार मिलके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर हैं। आपकी ओरसे दौलतगंज बाजारमें एक अन्नक्षेत्र चालू है। इसके अतिरिक्त मड़वानीमें जिर्णोद्धारके काममें आपने अच्छी सहायता दी है। सेठ फतेचन्दजी समझदार एवं विवेकशील पुरुष हैं। आपकी फर्म सारा बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है, वर्तमानमें आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम कुँवर राजमलजी, कुँवर लालचंदजी एवं कुं० माणिकचंदजी हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर—मेसर्स परशुराम दुलीचंद छोटा सराफा—यहां बैङ्किंग, हुण्डी चिट्ठी तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स पन्नालाल सूरचंद छोटा सराफा—यहां भी सूद, हुंडी, चिट्ठी और जवाहरातका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—मेसर्स राजमल लालचंद छोटा सराफा—यहां चांदीसोनेका व्यापार होता है।

इस व्यवसायमें भी हाथ डाला। केवल हाथ ही नहीं डाला, प्रत्युत इस व्यवसायमें अपना कमाल दिखला दिया। जिन दिनों आप वेगगामी गतिसे सट्टा करते थे उन दिनों बम्बई और कलकत्तेके बाजारोंमें आपके नामकी एक जबर्दस्त धाक पैदा होगई थी। बम्बईका टाइम्स आफ इण्डिया आपको "मर्चेण्ट्स प्रिन्स ऑफ् मालवा" लिखता था। आपने इस व्यवसायमें अपना व्यवसाय कुशल बुद्धिसे कई व्यापारियोंको और कम्पनियोंको शिकस्त दी। आपकी उस समय मार्केट पर इतना प्रभाव होगया था कि कभी २ तो आपकी रुखपर सैकड़ों व्यापारी खरीदी बेचवाली करने लगते थे। आपकी खरीदी बेचवालीसे कभी २ बाजार दस २ बीस २ टका तक ऊपर नीचे होजाया करता था। बम्बईके, गुजराती पत्र कभी कभी २ बाजारकी घटा बढ़ीपर नोट लिखते हुए लिखते थे" आज बजार अमुक भावे खुल्यो हतो पण इन्दौर ना जाणीता खिलाड़ी नीलेवालो थी पांच टका वधीगयो।" मतलब यह कि रूईके इस व्यवसायमें लोगोंको आपके व्यापारिक साहसका बड़ा जबर्दस्त अनुभव हुआ। आपके विषयमें कहा जाता था कि पन्द्रह बीस लाख रुपयेका नफा नुकसान तो आप सिरहाने लेकर सोते हैं।

सट्टेको तिलाञ्जलि

यद्यपि सर सेठ हुकुमचन्दने लाखों करोड़ों रुपयोंका सट्टा किया और एक दिलचस्प आदमीकी तरह इसमें लगे रहे, मगर इस व्यवसायके अन्तिम परिणामसे आप भली प्रकार वाकिफ थे। इसकी बुराइयां आपको भली प्रकार ज्ञात थीं आप हमेशा कहा करते थे, कि यद्यपि मुझे इस व्यापारमें सफलता मिल रही है और दैव मेरे अनुकूल है फिर भी मैं जानता हूं कि यह व्यापार कितना क्षण-स्थायी है। मेरे देखते २ हजारों लखपति और करोड़पति इसमें बरबाद होगये। मतलब यह कि इस प्रकार सट्टेके विरुद्ध विचार पद्धति आपके हृदयमें बराबर बढ़ती रही और अन्तमें सन् १६२५ में आपने सट्टेको एकदम तिलाञ्जलि दे दी। यहांतक कि आपने भाव पूछना तक छोड़ दिया। इस घटनासे लोगोंको बड़ा भारी आश्चर्य हुआ। अब इस समय आपकी दुकानोंपर हाजिर व्यवसाय और मिलोंका कारोबार होता है और सेठ साहब भी सट्टेके अशान्तिमय जीवनसे निकलकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

व्यापारिक साहस

सेठ हुकुमचन्दजीका जीवन वास्तवमें व्यापारियोंके लिए अध्ययन करनेकी सामग्री है। आप की इतनी बड़ी व्यापारिक सफलताके रहस्यपर विचार करनेसे पता चलता है कि इस आशातीत सफलताका मूल कारन सेठजीका बढ़ा हुआ व्यापारिक साहस है। एक व्यापार विशारदका कथन है कि "नफा सम्पत्तिमें नहीं है, नफा व्यापारमें नहीं है, नफा केवल मात्र जोखिममें है। जो

मेसर्स विनोदीराम बालचंद

इस फर्मका हेड ऑफिस झालरा पाटन (झलावाड़) में है। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है। इस फर्मकी इन्दौर ब्रांचपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। वर्तमानमें यह फर्म बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका अच्छा व्यवसाय करती है। निमाड़ प्रांतमें रुईका व्यवसाय करनेवाली यह सबसे बड़ी फर्म है। इसका पता-बड़ा सराफा इन्दौर है। T. A. Binod. इस फर्मका तुकोगञ्जमें मानिक भवन नामक बंगला बना हुआ है।

मेसर्स बलदेव दास गोरखराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जौहरीमलजी हैं। यह फर्म १६२४ में सेठ गोरखरामजीके द्वारा इन्दौर शहरमें स्थापित हुई थी। संवत १६३२ में सेठ गोरखरामजी वापस देश चले गये। परचात् उनके भतीजे सेठ जवाहरमलजी लक्ष्मण गढ़से यहां आये। इस फर्मपर इस समय अफीमका व्यवसाय होता था। महाराज तुकोजीराव होलकर (द्वितीय) अफीम आदि व्यापारके सम्बन्धमें जिन साहुकारोंसे सम्मति लिया करते थे, उनमें सेठ जवाहरमलजी भी एक थे। महाराज शिवाजीराव होलकरने इनको ११ पंचोंकी कमेटीमें नियुक्त किया। आपकी ओरसे ऋषीकेश और कृष्णानंद—कल्याणपर धार्मिक संस्थाएं एवं लक्ष्मणगढ़ तथा मुकुंदगढ़में श्री सीतारामके मंदिर बने हैं। सेठ जोहारमलजीको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपके ३ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीगजानंदजी, श्री विश्वनाथजी एवं श्री० श्रीकृष्णजी हैं।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दूकानें हैं।

(१) इन्दौर—मेसर्स जमनादास जुहारमल बड़ा सराफा—यहां बैङ्किग रुई तथा आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई - मेसर्स रामनारायण बलदेवदास पायधुनी – यहां आढ़त और रुईका व्यापार होता है।

(३) भोपाल—जुहारमल केदारबख्श—रुई और आढ़तका व्यापार होता है।

(४) धूलिया—रामनारायण बलदेवदास—यहां एक जिनिंग फेक्टरी है।

(५) मंडलेश्वर (इन्दौर—स्टेट)—यहां आपकी विश्वनाथ जिनिंग फेक्टरी है। तथा रुई कपासका व्यापार होता है।

(६) बापचांडा (कुक्षी—ग्वालियर स्टेट)—यहां आपकी एक श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी है। एवं रुई तथा आढ़तका काम होता है।

सेठ जुहारमलजी (जमनादास जुहारमल) इन्दौर

सेठ हरविलासजी (रामप्रताप हरविलास) इन्दौर

स्व० सेठ [illegible]जी भूत (शिवजीराम हरनाथ) इन्दौर,

सेठ दाऊलालजी भूत (शिवजीराम हरनाथ) इन्दौर

गृह की स्थापना की, भक्तोंके लिए दो सुन्दर मन्दिरकी योजना की और भी कई सार्वजनिक संस्थाओंमें आपने उदारता पूर्वक दान दिया। आपकी सार्वजनिक संस्थाओंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

जंवरीबाग धर्मशाला—स्टेशनके समीप ही यह सुन्दर और विशाल धर्मशाला बनी हुई है। इसके कमरे बड़े, सुन्दर, हवादार और साफ हैं। प्रत्येक कमरेमें पानबाईका प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त मुसाफिरोंकी सुविधाके लिए बड़ावर बर्तन, बिछौना इत्यादिका भी प्रबन्ध है। इस धर्मशालाका प्रबन्ध बहुत सराहनीय है। इसमें करीब डेढ़ लाख रुपया लागत लगी है।

जंवरीबाग जैन मंदिर—धर्मशालामें उतरनेवाले मुसाफिरोंके दर्शनकी सुविधाके लिए यह मन्दिर बनाया गया है। इसकी प्रतिष्ठामें करीब एक लाख रुपया खर्च किया गया था।

हुकुमचन्द जैन महाविद्यालय और बोर्डिंग हाउस—यह महा विद्यालय संवत् १९७० में स्थापित हुआ था। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और जैन धर्मकी पढ़ाई होती है। बोर्डिङ्ग हाउस में विद्यार्थियोंके रहने और भोजनका भी प्रबन्ध है। इस बोर्डिङ्ग और महाविद्यालयकी नवीन इमारतमें करीब एक लाखसे ऊपर रुपया खर्च हुआ है।

सौ० कंचनबाई श्राविकाश्रम—यह संस्था स्थानीय नरसिंहबाजारमें संवत् १९७१ में स्थापित हुई। इसमें अभी तक सैकड़ों बाइयोंने शिक्षा पाई है। इसमें दूसरी शिक्षाके साथ औद्योगिक शिक्षाका भी प्रबन्ध है। इस आश्रमकी बिल्डिंग तथा ध्रौव्य फण्डमें एक लाख रुपया दिया गया है।

प्रिन्स यशवन्त राव आयुर्वेदिक औषधालय इस औषधालयके पुराने और नये रूपमें सेठ साहब-ने करीब एक लाख चौंतीस हजार रुपया प्रदान किया है। इस औषधालयसे पब्लिकको बड़ा लाभ पहुंचता है

जैन विधवा, असहाय सहायता व भोजनशाला फण्ड—सेठ साहबने श्रीमती सौ० सेठानीसा०के एक कठिन रोगसे छुटकारा पानेके उपलक्ष्यमें एक लाख रुपयेसे यह फण्ड स्थापित किया है।

सौ० कंचनबाई प्रसूति गृह—संवत् १९८१में सौ० कंचनबाईने ५००००की रकमसे इस प्रसूति गृहकी स्थापना की है। इसमें प्रसूतिकष्ट सम्पन्न बाइयोंकी प्रसूति शिक्षित लेडी डाक्टर व दाइयोंसे कराई जाती है।

और भी कई भिन्न २ संस्थाओंमें सेठसाहिब बड़ी उदारता पूर्वक दान करते रहते हैं। अभी तक आप करीब २५ लाख रुपया दान कर चुके हैं। दानके अतिरिक्त आप व्यक्तिगत रूपसे सार्व-जनिक कार्योंमें भी बहुत भाग लेते हैं। कई बड़ी २ सभा सोसायटियोंके आप सभापति रहे हैं। आपकी मानस शक्ति भी बड़ी प्रबल है। इन्दौरके सार्वजनिक जीवनमें भी आपका प्रमुख हाथ रहता है।

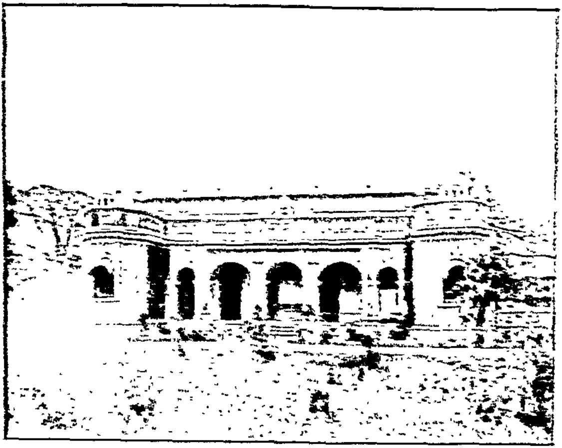

श्रीमती कंचनबाई श्राविकाश्रम इन्दौर

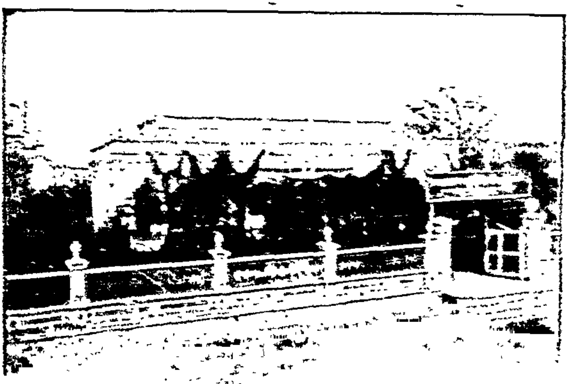

[illegible] इन्दौर (मा० सेठ हुकुमचन्द)

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स ⊛

यह प्रतिष्ठित खोजा खान्दान कच्छ मांडवीका रईस है। इस फर्मका हेड ऑफिस बम्बई है। भारतके प्रतिष्ठित मिल मालिक एवं कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है। इस फर्मकी स्थापना सर सेठ करीमभाई इब्राहिम प्रथम बैरोनेटके हाथोंसे हुई थी। सेठ करीम भाईने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग-धंधोंको आदर्श प्रोत्साहन दिया। आपने अपने जीवनमें कई मिलें स्थापित कीं। वर्तमानमें आपकी फर्म १३।१४ मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है। वर्तमान मालिक (१) सर फजल भाई करीम भाई (२) सेठ हबीब भाई करीम भाई (३) सेठ इस्माइल भाई करीम भाई (४) सेठ करीम भाई इब्राहिम तीसरे बैरोनेट (५) सेठ अहमद भाई सर फाजल भाई और (६) इब्राहिम भाई गुलामहुसेन भाई हैं।

आपकी इन्दौरमें करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्सके नामसे कपड़ेकी दुकान है। जिनपर आपके मैनेजमेंटमें चलनेवाली मिलोंके कपड़ेका थोक व्यापार होता है। इन्दौरके प्रसिद्ध मालवा युनाइटेड मिलकी मैनेजिङ्ग एजंटकी यह फर्म है। T. A Creson)

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल *

इस प्रतिष्ठित फर्मके संस्थापक श्रीमान् सेठ तिलोकचन्दजी, श्रीसेठ स्वरूपचन्दजीके छोटे भ्राता थे। संवत् १९५८ में ये तीनों फर्में अलग २ हुईं, और तबसे तिलोकचन्दजीके पुत्र श्रीमान् स्वर्गीय सेठ कल्याणमलजीने इस फर्मके कार्य्यको बढ़ाना प्रारम्भ किया। आपने व्यापारमें बहुत अच्छी प्रगति और प्रतिष्ठा प्राप्त की। एवं कल्याणमल मिल्स लि० के नामसे एक मिलकी भी स्थापना की। इस मिलका कपड़ा बड़ा मजबूत, टिकाऊ और सुन्दर निकलता है। श्री सेठ कल्याण-मलजीका करीब दो वर्ष पूर्व देहान्त हो गया है। आप बड़े मिलनसार, उदार, और दानवीर सज्जन थे। आपकी उदारता सारे इन्दौरमें प्रसिद्ध थी।

आपने सार्वजनिक कार्य्योंमें भी खूब भाग लिया है। अपने पिताजीकी स्मृतिमें करीब ढाई लाख रुपयोंकी लागतसे एक हाईस्कूल खुलवाया है। जो इस समय भी बड़ी सफलताके साथ चल रहा है। इसके अतिरिक्त कल्याण औषधालय, जैन मन्दिर, कल्याण मातेश्वरी कन्या पाठशाला आदि और भी आपकी कई संस्थाएं हैं जिनमें आपने लाखों रुपयोंका दान किया है।

⊛ इस फर्मका परिचय विस्तृत रूपसे चित्रों सहित बम्बई विभागमें मिल मालिकोंके पोर्शनमें दिया गया है।

* इस फर्मका विस्तृत परिचय लगातार चेष्टा करनेपर भी हमें प्राप्त न हो सका। अतएव हम अत्यन्त खेदके साथ अपनी जानकारीके अनुसार थोड़ासा परिचय दे रहे हैं।

होगई। उस समय इस फर्मपर प्रधान व्यापार हुंडी, चिट्ठी तथा अफीमका होता था। सेठ हरनाथजीने इस व्यवसायमें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपका देहावसान संवत् १६४९ में ७० वर्षकी वयमें हुआ।

सेठ हरनाथजीके यहां सेठ राधाकृष्णजी संवत् १९३२ में गोद लाये गये। आपने मल्हारगंजमें २० हजारकी लागतसे एक छत्याती मंदिर बनवाया, तथा इन्दौरके समीप हरदशला नामक स्थानपर १० हजारकी लागतसे एक गौशाला स्थापितकी जिसमें इस समय १०० से अधिक गाएं पलती हैं। आपकी ओरसे उज्जैनमें २० वर्षोंसे एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। जिसमें १५ आदमी रोज भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने बारह मायामें एक बारह द्वारी एवं रामबागियामें एक धर्मशाला बनवाई है। इस प्रकार आपने करीब ३ लाख रुपयोंका दान किया है। संवत् १९६६ में श्री दाऊलालजी यहां गोदी लाये गये। श्री दाऊलालजीके गोद लानेके पश्चात् सेठ राधाकृष्णजीके २ पुत्र और हुए, जो अभी शिक्षा पा रहे हैं। श्री दाऊलालजीने अपने बैंकिंग व्यवसायको उत्तेजन दिया, एवं एक जीनिंग फेक्टरी तथा कपड़े की फर्म और स्थापितकी। आपका ब्याह कलकत्तेके प्रसिद्ध माहेश्वरी श्रीमंत मगनीरामजी बांगड़के यहां हुआ। इस समय आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ इन्दौर– मेसर्स शिवजीराम हरनाथ छोटा सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी शेअर्स तथा रुईका व्यापार होता है।

२ इन्दौर—दाऊलाल मुरलीधर तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका व्यवसाय होता है।

३ कालीसिंध—(ग्वालियर स्टेट) मुरलीधर काटन जीनिंग फेक्टरी—यहां आपकी जीन है तथा रुई गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्मका संस्थापन सबसे प्रथम सेठ सावलसिंहजीने किया। आप १०० वर्ष पूर्व डीडवानासे इन्दौर आये थे। आपके बाद क्रमशः सेठ लक्ष्मीनारायणजी, धनरूपमलजी, शिवजीरामजी शालिगरामजी जयरामदासजी एवं रामविलासजीने इस फर्मके कार्यको सम्हाला। इस फर्ममें सेठ शिवजीरामजीके ६ भाइयोंका (सेठ हरनाथजीको छोड़कर) सामा था। वे संवत् १९७२ में अलग हुए। इस फर्मके व्यवसायको सेठ रामप्रसादजी, रामकिशनजी और रामकुंवारजीने विशेष उत्तेजन दिया। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यवसाय होता था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयकिशनदासजी हैं। आप सेठ रामविलासजीके यहां गोदी लाये गये हैं। जिस समय स्टेट मिल व्यापारोत्तेजक कम्पनीके हाथोंमें था, उस समय आपका उसमें आधा हिस्सा

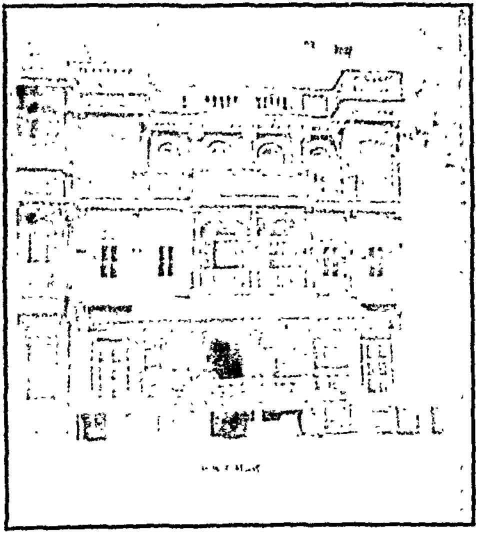

ओंकार भवन (रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द) इन्दौर

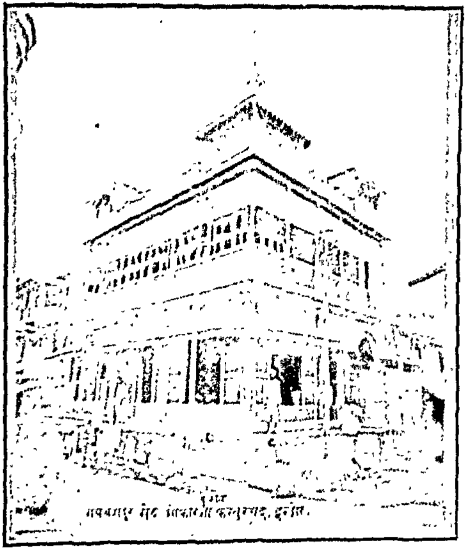

दुकान (रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द) इन्दौर

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत गेंदालालजी अधिकतर हाटपीपल्यामें रहते हैं। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं, आपका यहां और बागली स्टेटमें अच्छा प्रभाव है। आपके तीन एक पौत्र हैं।

आपके कनिष्ट पुत्र श्रीयुत गुलाबचंदजी टोंग्या हैं। इन्दौरका सब काम काज संभालते हैं। आपको हिन्दीसे बड़ा प्रेम है। आपकी लाइब्रेरीमें अनेक पत्र पत्रिकाएं पुस्तकोंका संग्रह है।

यों तो आपकी ओरसे कई तरहका धर्मादा होता रहता है, किन्तु विशेष उल्लेखनीय है कि आपके पूज्य पिताजीकी स्मृतिमें हाटपीपल्यामें आप व आपके भ्राताकी ओरसे एक शाला बनवा दी गई है और उसके खर्चका भी स्थाई प्रबन्धकर दिया गया है। तीर्थोंपर आपकी ओरसे कई जगह निवासस्थान बने हुए हैं। हाट पीपल्याके पास बापड़ा सड़कके किनारे भी अभी हालमें एक धर्मशाला सौ० फूलीबाई धर्मपत्नी सेठ गंभीरमलजीके नाम बनाई गई है।

आपने किसी संस्था निर्माणके उद्देश्यसे ५००००) पचास हजार रुपये अलग निकाल हैं, जिससे शीघ्र ही एक उपयोगी संस्थाकी स्थापना होनेकी आशा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) इन्दौर—मेसर्स शोभाराम गंभीरमल शीतलामाता बाजार—यहां बैङ्किग व सराफी लेनदेन बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

(२) इन्दौर—गुलाबचंद माणकचन्द तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) हाटपीपल्या—शोभाराम गंभीरमल—लेनदेन और साहुकारी व्यापार होता है।

मेसर्स शोभाराम चुन्नीलाल*

इस फर्मका संचालन श्री बाऊलालजी टोंग्या करते हैं। आपके पिता श्री सेठ चुन्नीलालजी देहावसान होगया है। आपका खास निवास स्थान हाटपीपल्या (इन्दौरके पास) है। फर्मपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय होता था। अफीमके रुन्नेमें इस फर्मने बहुत अ सम्पत्ति कमाई थी। संवत् १९८० में सेठ चुन्नीलालजी तथा सेठ गंभीरमलजीके कुटुम्बी अ

*श्रीयुत बाऊलालजीको परिचय भेजनेके लिये कई बार सूचित किया, परन्तु आपका परि हमें प्राप्त नहीं हुआ, इसलिये जितना हमें ज्ञात था, उतनाही परिचय छापा जारहा है।

प्रकाशक—

सेठ कस्तूरचंदजीको [illegible] बहुत शौक है [illegible] आपने अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए हैं।

सेठ कस्तूरचंदजीका प्रथम विवाह सन् १९०६ में सेठ [illegible] की [illegible], दूसरा १९११ में [illegible] सेठ [illegible] की पुत्रीसे और तीसरा विवाह सन् १९१९ में [illegible] [illegible] [illegible] हुआ।

सेठ कस्तूरचंदजीने अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इन्दौरमें करीब १७ हजार की लागतसे [illegible] [illegible] बनवाया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १ लाख रुपयोंकी लागतसे एक [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] लिये) बनवाया। [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible] बनवाया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करीब २५ हजारकी लागतसे [illegible] [illegible] बनवाया। आपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक भव्य एवं सुन्दर धर्मशाला व जैन मंदिर १ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया। यहां जैनियोंका सिद्धक्षेत्र और [illegible] [illegible] तीर्थ होनेसे हजारों यात्री प्रति वर्ष यहां आते हैं। इस स्थान से सेठ साहबको विशेष प्रेम है। प्रति वर्ष आप कुछ [illegible] व्यतीत करते रहते हैं।

आपने [illegible] बाजारमें अपने भाइयोंके साथ डेढ़ लाख रुपयोंकी लागतसे एक दर्शनीय सुन्दर जैन मन्दिर बनवाया है। लार्ड और लेडी रीडिंग जब इन्दौर आये थे, तब इन मंदिरकी सुन्दरता को देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। आपकी ओरसे [illegible] [illegible] कन्या पाठशाला [illegible] [illegible] भी चल रहा है। गरीब और अनाथ लोगोंको भोजन एवं वस्त्रके लिये आपकी फर्मके [illegible] खातेसे प्रति वर्ष ७ हजार रुपयोंका खर्च है। सन् १९१०, १४ और २७ में आपने अपने [illegible] [illegible] बांधवोंके साथ [illegible] तीर्थ यात्रा की और उसमें करीब ५० हजार रुपये व्यय किये। इन्दौरके [illegible] मेडिकल स्कूलमें मेट्रिक्युलेशन और [illegible] परीक्षामें प्रथम श्रेणीमें पास होनेवाले विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्वर्ण पदक दिये जाते हैं।

सन् १९११ में देहली दरबारमें सेंट्रल इण्डियाकी तरफसे सेठ कस्तूरचन्दजी मेहमान होकर गये थे, वहां राजा महाराजाओंके साथ [illegible] [illegible] [illegible] अन्दर स्वतंत्र कैम्प बनानेके लिये आपको स्थान मिला था। कई हजारकी लागतसे आपने देहलीमें अपना कैम्प बनवाया था। वहां उस समय सम्राट् [illegible] पंचमने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्थापना की थी उसमें भी आपने [illegible] दिये थे। सन् १९१२ की प्रथम जनवरीके दिन [illegible] गवर्नमेंटने राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया।

श्री० सेठ गेंदालालजी (गेंदालाल सूरजमल) इन्दौर

श्री० सूरजमलजी (गेंदालाल सूरजम

बिल्डिंग (गेंदालाल सूरजमल) पिपलीबाजार, इन्दौर

आपही इसके मालिक हैं। आपका निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल जाति के सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—रामचन्द्र रामेश्वरदास, बड़ा सराफा—यहां रुई और आढ़तका व्यापार होता है।

हरदा—रामेश्वरदास बल्लभदास—यहां आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। आपके यहां कपास और आढ़तका व्यवसाय होता है।

उज्जैन—रामेश्वरदास बल्लभदास—यहां भी आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा कपास और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स विश्वेसरलाल नन्दलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नंदलालजी जालान हैं। आप श्री विश्वेसरलालजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके (रेवाड़ी निवासी) सज्जन हैं। पहले यह फर्म मथुराकी तरफ बड़ी प्रसिद्ध थी, लेकिन दैवात् फर्मका काम कमजोर रह जानेसे आपको इन्दौर आना पड़ा। यहां आपने अपने मामा सेठ मिर्जामलजी नेवटियाके यहां सर्विस की। उस समय उपरोक्त फर्मकी हांगकांग, शंघाई आदि स्थानोंमें ब्रांचेज़स थीं। संवत् १८७२में आप इस फर्मसे अलग होगये। इस समय आप स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

धमनियां (इन्दौर राज्य)—यहां आपकी जिनिंग फेक्टरी है।

वरधगढ़ (झाबुआ)—यहां जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

अमरगढ़—यहां भी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

झाबुआ—यहां जिनिंग फेक्टरी है।

उपरोक्त कारखानोंमें मंदसोरके सेठ नारायणदासजीका साझा है।

सेठ समीरमल अजमेरा इन्दौर केम्प

आपका निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर) है। आप सरावगी जातिके वैश्य हैं। आपके कुटुम्बको यहां आये करीब ७५ वर्ष हुए। आपके पिताका नाम सेठ अमोलकचन्दजी था। आपका ८ साल पहले शरीरान्त होचुका है। वर्तमानमें आप ही मालिक हैं। आपके २ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-केम्प सेठ समीरमल अजमेरा—यहां काटनका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके प्रधान संस्थापक सेठ रामप्रतापजीने संवत् १९०१ में फतहपुर (जयपुर) से आकर इन्दौरमें निवास किया। सेठ रामप्रतापजी पर महाराज तुकोजीराव होल्कर द्वितीयका बड़ा विश्वास था। संवत् १९१६ में आपहीके द्वारा राज्यके खजानेसे हुंडी खातेका लेनदेन साहुकारोंसे शुरू हुआ। आप उस समय अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय करते थे। सेठ रामप्रतापजीके परिश्रम एवं मध्यस्थीसे सरकारी खजानेमें अफीमके द्वारा २५ लाख रुपयोंका लाभ हुआ था। उपरोक्त लाभके उपलक्ष्यमें आपने सरकारसे किसी प्रकारकी उजरत या कमीशन नहीं लिया था। जिस समय होल्कर स्टेट रेलवे खोलनेका निश्चय हुआ उस समय बृटिश सरकारको १ करोड़ रुपया देनेके बारेमें आप मध्यस्थ मुकर्रर किये गये थे। सेठ रामप्रतापजी ११ पञ्चोंमें अगेवान थे। सेठसाहबने कई बार महाराजा तुकोजीराव एवं महाराजा शिवाजीरावको अपने घरपर निमंत्रित किया था। आपका देहावसान सन् १९२५ हुआ, उस समय आपके पुत्र हरविलासजीकी वय ५१ वर्षकी थी। सेठ रामप्रतापजीको कई बड़े २ आफिसरोंको ओरसे प्रमाण पत्र मिले हैं। रा० ब० नानकचन्दजी भूतपूर्व मिनिस्टर आपके लिये लिखते हैं कि "मैं अपने ३२ सालके अनुभवसे कह सकता हूं कि मैंने सेठ रामप्रतापजी और उनके पुत्र हरविलासजीको सदैव पूर्ण विश्वासपात्र तथा ईमानदार पाया"। कर्नल सर डेविड बार ५ जून १९२० के पत्रमें आपके लिये लिखते हैं कि "मैं सेठ रामप्रतापजीको सन् १८५० से जानता हूं। सेठ रामप्रताप हरविलासकी फर्म उस समय समस्त मालवा प्रांत तथा बम्बईमें प्रसिद्ध थी। महाराज तुकोजीराव इन्हें बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। ईसवी सन् १८९० की आकस्मिक मंदीकी वजहसे मालवाके कई अफीमके बड़े २ व्यापारियोंको बहुत नुकसान पहुंचा, उनमें सेठ रामप्रतापभी बहुत भी अधिक घाटेमें थे।"

इस समय इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ हरविलासजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आप ११ पञ्चोंके सदस्य हैं एवं आपको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स रामप्रताप हरविलास बड़ा सराफा—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा कॉटन-का, व्यवसाय होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मके संस्थापक सेठ हरनाथजी पूव टोडावाला (जयपुरके) निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन थे। संवत् १९११ में सेठ शिवजीरामजीनारायन तथा, मालकी फर्म बड़ा २

मेसर्स मंगलजी मूलचंद

इस फर्मके स्थापक सेठ मंगलजी हैं। आपका मूल निवास श्रीमाधोपुर (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। मंगलजीके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ मूलचंदजीने सम्हाला। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६में हो गया।

वर्तमानमें सेठ मूलचंदजीके पुत्र सेठ नन्दलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपके सूरजमल नामक एक पुत्र हैं। आपकी ओरसे एक राधाकृष्णजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मंगलजी मूलचन्द, मल्हारगंज—यहां गल्ला और आसामी लेन-देनका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

सुनाला (देपालपुर, इन्दौर) मंगलजी मूलचन्द—यहां भी गल्ला तथा आसामी लेनदेनका काम होता है।

मेसर्स रामरतन लालचंद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गोविन्दगढ़ (जयपुर) के हैं। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामरतनजीने की। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। रामरतनजीके पुत्र सेठ लालचंदजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप पर इन्दौर महाराजाकी विशेष कृपा थी। आपको सरकारसे आधा महसूल माफ था। सेठ लालचंदजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ सीतारामजीने काम सम्हाला। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपको चौधरीका पद प्राप्त है। आपके एक पुत्र हैं, इनका नाम मिट्ठूलालजी हैं।

आपकी ओरसे बड़वाहमें एक मन्दिर बना हुआ है। यहां सदाव्रत आदिका भी प्रबंध है। इस फर्मके संचालकोंका स्थानीय ११ पंच भी बड़ा सम्मान करते हैं। भुगतानके रुपये आपकी दुकानपर पहुंचा दिये जाते हैं। यह आपके लिये विशेष रियायत है।

श्रीयुत लालचंदजी चौधरीने मध्यभारत अग्रवाल समाकी स्थापना की थी। आप उसके आजीवन सभापति रहे। वर्तमानमें सेठ सीतारामजी उसके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—रामरतन लालचंद मल्हारगंज—इस फर्मपर गल्ला और रुईका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर-कैम्प—लालचंद सीताराम—यहां रुई, कपास की आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके प्रधान संस्थापक सेठ रामप्रतापजीने संवत् १९०१ में फतहपुर (जयपुर) से आकर इन्दौरमें निवास किया। सेठ रामप्रतापजी पर महाराज तुकोजीराव होल्कर द्वितीयका बड़ा विश्वास था। संवत् १९१६ में आपहीके द्वारा राज्यके खजानेसे हुंडी खातेका लेनदेन साहुकारोंसे शुरू हुआ। आप उस समय अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय करते थे। सेठ रामप्रतापजीके परिश्रम एवं मध्यस्थीसे सरकारी खजानेमें अफीमके द्वारा २५ लाख रुपयोंका लाभ हुआ था। उपरोक्त लाभके उपलक्ष्यमें आपने सरकारसे किसी प्रकारकी उजरत या कमीशन नहीं लिया था। जिस समय होल्कर स्टेट रेलवे खोलनेका निश्चय हुआ उस समय वृटिश सरकारको १ करोड़ रुपया देनेके बारेमें आप मध्यस्थ मुकर्रर किये गये थे। सेठ रामप्रतापजी ११ पञ्चोंमें आगेवान थे। सेठसाहबने कई बार महाराजा तुकोजीराव एवं महाराजा शिवाजीरावको अपने घरपर निमंत्रित किया था। आपका देहावसान सन् १९२५ हुआ, उस समय आपके पुत्र हरविलासजीकी वय ५१ वर्षकी थी। सेठ रामप्रतापजीको कई बड़े २ आफिसरोंकी ओरसे प्रमाण पत्र मिले हैं। रा० ब० नानकचन्दजी भूतपूर्व मिनिस्टर आपके लिये लिखते हैं कि "मैं अपने ३२ सालके अनुभवसे कह सकता हूं कि मैंने सेठ रामप्रतापजी और उनके पुत्र हरविलासजीको सदैव पूर्ण विश्वासपात्र तथा ईमानदार पाया"। कर्नल सर डेविड बार ५ जून १९२० के पत्रमें आपके लिये लिखते हैं कि "मैं सेठ रामप्रतापजीको सन् १८८० से जानता हूं। सेठ रामप्रताप हरविलासकी फर्म उस समय समस्त मालवा प्रांत तथा बम्बईमें प्रसिद्ध थी। महाराज तुकोजीराव इन्हें बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। ईसवी सन् १८९० की आकस्मिक मंदीकी वजहसे मालवाके कई अफीमके बड़े २ व्यापारियोंको बहुत नुकसान पहुंचा, उनमें सेठ रामप्रतापजी बहुत भी अधिक घाटेमें थे।"

इस समय इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ हरविलासजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आप ११ पञ्चोंके सदस्य हैं एवं आपको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स रामप्रताप हरविलास बड़ा सराफा—यहां बैङ्किंग हुंडी चिट्ठी तथा कॉटन-का व्यवसाय होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मके संस्थापक सेठ हरनाथजी मूल डीडवाना (जोधपुरके) निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन थे। संवत् १९११ में सेठ शिवजीरामलिगराम तथा, आपकी फर्म अलग २

मेसर्स मंगलजी मूलचंद

इस फर्मके स्थापक सेठ मंगलजी हैं। आपका मूल निवास श्रीमाधोपुर (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। मंगलजीके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ मूलचंदजीने सम्हाला। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५५ में हो गया।

वर्तमानमें सेठ मूलचंदजीके पुत्र सेठ नन्दलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपके सूरजमल नामक एक पुत्र हैं। आपकी ओरसे एक राधाकृष्णजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मंगलजी मूलचन्द, मल्हारगंज—यहां गल्ला और आसामी लेन-देनका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

हातोद (देपालपुर, इन्दौर) मंगलजी मूलचन्द—यहां भी गल्ला तथा आसामी लेनदेनका काम होता है।

मेसर्स रामरतन लालचंद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गोविन्दगढ़ (जयपुर) के हैं। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामरतनजीने की। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। रामरतनजीके पुत्र सेठ लालचंदजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप पर इन्दौर महाराजाकी विशेष कृपा थी। आपको सरकारसे आधा महसूल माफ था। सेठ लालचंदजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ सीतारामजीने काम सम्हाला। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपको चौधरीका पद प्राप्त है। आपके एक पुत्र है, इनका नाम मिट्ठूलालजी है।

आपकी ओरसे मल्हारगंजमें एक मन्दिर बना हुआ है। यहां नारायण वाटिका भी बनी है। इस फर्मके संचालकोंका स्थानीय ११ पंच भी बड़ा सम्मान करते हैं। जुर्मानेके रुपये आपकी दुकानपर पहुंचा दिये जाते हैं। यह आपके लिये विशेष विश्वास है।

श्रीयुत लालचंदजी चौधरीने मध्यभारत अग्रवाल सभाकी स्थापना की थी। आप उसके आजीवन सभापति रहे। वर्तमानमें सेठ सीतारामजी उसके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—रामरतन लालचंद मल्हारगंज—इस फर्मपर गल्ला और सोनेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर-केम्प—लालचंद सीताराम—यहां रुई, कपास की आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके प्रधान संस्थापक सेठ रामप्रतापजीने संवत् १९०१ में फतहपुर (जयपुर) से आकर इन्दौरमें निवास किया। सेठ रामप्रतापजी पर महाराज तुकोजीराव होल्कर द्वितीयका बड़ा विश्वास था। संवत् १९१६ में आपहीके द्वारा राज्यके खजानेसे हुंडी खातेका लेनदेन साहुकारोंसे शुरू हुआ। आप उस समय अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय करते थे। सेठ रामप्रतापजीके परिश्रम एवं मध्यस्थीसे सरकारी खजानेमें अफीमके द्वारा २५ लाख रुपयोंका लाभ हुआ था। उपरोक्त लाभके उपलक्ष्यमें आपने सरकारसे किसी प्रकारकी उजरत या कमीशन नहीं लिया था। जिस समय होल्कर स्टेट रेलवे खोलनेका निश्चय हुआ उस समय ब्रिटिश सरकारको १ करोड़ रुपया देनेके बारेमें आप मध्यस्थ मुकर्रर किये गये थे। सेठ रामप्रतापजी ११ पञ्चोंमें आगेवान थे। सेठसाहबने कई बार महाराजा तुकोजीराव एवं महाराजा शिवाजीरावको अपने घरपर निमंत्रित किया था। आपका देहावसान सन् १९२५ हुआ, उस समय आपके पुत्र हरविलासजीकी वय ५१ वर्षकी थी। सेठ रामप्रतापजीको कई बड़े २ आफिसरोंकी ओरसे प्रमाण पत्र मिले हैं। रा० ब० नानकचन्दजी भूतपूर्व मिनिस्टर आपके लिये लिखते हैं कि "मैं अपने ३२ सालके अनुभवसे कह सकता हूं कि मैंने सेठ रामप्रतापजी और उनके पुत्र हरविलासजीको सदैव पूर्ण विश्वासपात्र तथा ईमानदार पाया"। कर्नल सर डेविड बार ५ जून १९२० के पत्रमें आपके लिये लिखते हैं कि "मैं सेठ रामप्रतापजीको सन् १८५० से जानता हूं। सेठ रामप्रताप हरविलासकी फर्म उस समय समस्त मालवा प्रांत तथा बम्बईमें प्रसिद्ध थी। महाराज तुकोजीराव इन्हें बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। ईसवी सन् १८९० की आकस्मिक मंदीकी वजहसे मालवाके कई अफीमके बड़े २ व्यापारियोंको बहुत नुकसान पहुंचा, उनमें सेठ रामप्रतापजी बहुत भी अधिक घाटेमें थे।"

इस समय इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ हरविलासजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आप ११ पञ्चोंके सदस्य हैं एवं आपको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स रामप्रताप हरविलास बड़ा सराफा—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा कॉटन-का व्यवसाय होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मके संस्थापक सेठ हरनाथजी पूर्व डॉटवास (जोधपुरके) निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन थे। संवत् १९११ में सेठ शिवजीरामजी [illegible], इनकी फर्म बड़ा २

स्व० सेठ जयरामदासजी (शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

स्व० सेठ रामविलासजी (शिवजीराम शालिगराम) इ

श्रीयुत जय

था। आप स्टेट मिलके मैनेजिंग एजण्ट भी रह चुके हैं। सेठ जयकिशनदासजी ११ पञ्चोंकी कमेटीमें निर्वाचित किये गये हैं, एवं आप यहां ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। इस परिवारकी ओरसे उज्जैन सराफामें एक नरसिंह मंदिर बना हुआ है, तथा ओंकारेश्वर मांधातामें ५० वर्षोंसे एक अन्न-क्षेत्र चालू है। इन्दौरमें शिवबागीके पास आपकी एक संस्कृत पाठशाला एवं छत्रीबागमें एक अन्न क्षेत्र चालू है। आगरेमें आपने एक लक्ष्मीनारायणजीका मंदिर बनवाया है, इसके अतिरिक्त ऋषीकेश, डीडवाणा, मोरटक्का आदि स्थानोंपर धार्मिक कार्योंमें भी आपने रकम लगाई है।

इस समय आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकाने हैं।

१ इन्दौर—मेसर्स शिवजीराम शालिगराम छोटा सराफा—इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ सिहोर (भोपाल) शिवजीराम शालिगराम—यहां आड़तका काम होता है।

३ सुनेल (होल्कर स्टेट) शिवजीराम शालिगराम—यहां भी आड़तका काम होता है।

४ बम्बई—शिवजीराम रामनाथ कसाराचाल—आड़त और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

मेसर्स शोभाराम गंभीरमल

इस फर्मके मालिक सेठ गंभीरमलजीका जन्म सम्वत् १८६६में हाटपीपल्या(इन्दौरके समीप) में शोभारामजीके घर हुआ। जिस कुलमें आपका जन्म हुआ वह व्यापारमें पहिलेसे ही प्रसिद्ध था। आपके सगे भाई और चचेरे भाई और हैं। आपके सगे भाई सेठ चुन्नीलालजीका स्वर्गवास अभी कुछ समय पूर्वही हुआ है। इनका भी कारोबार अच्छा चल रहा है।

सेठ गंभीरमलजीकी शिक्षा ८ वर्षकी अवस्थामें शुरू हुई। हिन्दीका थोड़ासा ज्ञान प्राप्त करके आप अपने व्यापारमें प्रवृत्त हुए।

व्यापारको बढ़ते हुए देखकर आपने सम्वत् १९३६ में गम्भीरमल चुन्नीलालके नामसे इन्दौरमें दूकान की। आपके यहां अफ़ीमका धन्धा बहुत होता था। सम्वत् १९६५ में जब भारत सरकारने चीनमें अफीम भेजनेका ठेका दिया, उस समय आपने लाखों रुपये लगा दिये, जिसके परिणाम स्वरूप आपने अच्छी रकम कमाई। अब अफीमका काम उठ जानेसे आपके यहां देन लेनका रोजगार होता है। आपके लाखों रुपये इन्दौरकी मिलों और व्यापारियोंमें रहते हैं। सम्वत् १९८० में आप सेठ चुन्नीलालजीसे अलग हो गये और शोभाराम गंभीरमलके नामसे कारोबार करने लगे।

आपकी प्रकृति बहुत ही सरल है और आपका रहन सहन बिलकुल सादा है। आपके दो पुत्र और तीन पुत्रियां है।

स्व: सेठ चुन्नीलालजी ([illegible]) इन्दौर

स्व: सेठ पन्नालालजी ([illegible]) इन्दौर

...जी सेठिया S/o चुन्नीलालजी, इन्दौर

सेठ [illegible]

सेठ लक्ष्मीनारायणजी (चतुर्भुज गनेशराम) इन्दौर

श्री०सेठ जानकीलालजी (जानकीलाल सुगनमल) इन्दौर

[illegible] (गोवर्द्धन [illegible]) इन्दौर

स्व० सेठ गोवर्द्धन[illegible] (गोवर्द्धन [illegible]) [illegible]

होगये। तबसे यह फर्म शोभाराम चुन्नीलालके नामसे व्यवसाय करती है। श्रीबाऊलालजी बड़े सुशील, विचारवान एवं सज्जन व्यक्ति हैं। आपकी फर्मपर बैंकिंग तथा साहुकारी लेनदेन बहुत बड़े प्रमाणमें होता है। यह फर्म यहांके धनिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल *

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी बड़जात्या बोजलपुर (इन्दौर) के निवासी सरावगी दिगम्बर जैन जातिके हैं। आपके पिताजी (संवत् १९३५) में स्वर्गवासके (समय केवल २००) छोड़ गये थे। उससे आप खेड़ेमें गल्ले और किरानेका व्यापार करते रहे बादमें संवत् १९६२ में आप इन्दौर आये। यहां आनेपर आपने राज्यभूषण सर सेठ हुकुमचंदजीकी रुई और अफीमकी पेटीकी दलालीका काम आरंभ किया,तथा फिर पीछेसे रुई और शेअरोंके वायदेका घरू सौदा भी करने लगे। इसमें आपने बहुत अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की।

आपने मूलबद्रीकी यात्रामें १९७५ में १२ हजारका दान किया। संवत १९७१ में कुंडलपुरमें एक कमरा बनवाया, एवं गुणावा सिद्धक्षेत्रमें जमीन खरीदकर दान की सम्मेद शिखरजीमें भी आपने तीन कोठरियां बनवानेकी स्वीकृति दी। संवत १९८२में गिरनारमें फर्श जड़वाई, सीढ़ियां बनवाई आदिमें आपने ३००० रु०का दान दिया। आपके चार पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्री सूरजमलजी है। सेठ गेंदालालजीने एक बिल्डिंग पीपली बाजारमें करीब १ लाख ३५ हजारकी लागतसे बनवाई है। आपने अपनी सन्तानोंके विवाहोंमें हजारों रुपये व्यय किये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-मेसर्स गेंदलाल सूरजमल बड़ासराफा T. A. Barjatia टेलीफोन नं० १३२—इस फर्मपर रुईके वायदेका और शेअरोंका सौदा तथा बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(२) सनावद-मेसर्स गेंदालाल सूरजमल—यहां आपकी कॉटन जीनिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—सूरजमल बाबूलाल तुकोजीराव क्लाथमारकीट—T. A. Gambhir—यहां कल्याणमल मिल्स इन्दौरके कपड़ेकी सोल एजंसी है तथा हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—सूरजमल बाबूलाल गोविन्द गली मूलजीजेठामारकीट T. A. Cloth shop यहां भी इन्दौरके कल्याणमल मिलकी सोल एजंसी है। व हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

---

* आपका परिचय बहुत देरसे मिला, इसलिये यथा स्थान नहीं छाप सके। प्रकाशक—

मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द।

इस फर्मके संस्थापक सेठ जवरचन्दजी हैं। आपका देहावसान संवत् १९७३में ६१ वर्षकी उम्रमें हुआ। आपकी दूकानका खास व्यवसाय मनोती तथा कपड़ेका था। आपकी दूकान पहिले बहुत छोटे रूपमें थी। इस दूकानके कारोबारको सेठ जवरचन्दजीने अपने परिश्रम एवं अध्यवसायसे खूब बढ़ाया। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ कस्तूरचन्द जी हैं। आप अपने पिताजीके जमाए हुए व्यवसायको ठीक तौरसे संचालित कर रहे हैं। इस समय आपकी दूकानें नीचे लिखी जगहोंपर हैं

(१) उज्जैन—पन्नालाल जवरचन्द—यहां आढ़त तथा रुईका व्यापार होता है।

(२) सोनकच्छ (ग्वालियर स्टेट) जवरचन्द पन्नालाल यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है, तथा आढ़तका व्यापार होता है ।

(३) इन्दौर—पन्नालाल जवरचन्द—इस दूकानपर मिलोंके थोक कपड़ेका तथा और सब प्रकारके कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामरतन टीकमदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ रामरतनजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य हैं। आप खास निवासी डिडवाना (जोधपुर स्टेट)के हैं। आपकी फर्मको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सेठ टीकमदासजीने अपने उद्योग और परिश्रमसे इस फर्मको बढ़ाया। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी, आज इस फर्मका कपड़ेके व्यापारियोंमें बहुत ऊंचा स्थान है। २ वर्षके पहले सेठ टीकमदासजीका देहावसान हो गया। इस समय इस फर्मके संचालक श्री सेठ लक्ष्मीनारायण जी हैं। आपके समयमें इस फर्मके व्यापारने बहुत तरक्की की। आप बहुत उद्योगी अध्यवसायी एवं परिश्रमी हैं। इस समय आपकी दुकानें और भी कई स्थानोंमें चल रही हैं ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) बम्बई—लक्ष्मीनारायण गंगाधर क्रोफर्ड मार्केट पोस्ट नं० २ यहां कमीशन एजंसीका काम होता है।

(२) कानपुर—लक्ष्मीनारायण प्रहलाददास जनरलगंज—इस दूकानपर कपड़ा और कमीशनका काम होता है। तारका पता—Loyal है।

(३) इन्दौर—प्रहलाददास मुरलीधर बजाजखाना—इस दूकानपर कपड़ेका काम होता है।

(४) इन्दौर—रामरतन टीकमदास तुकोगंज क्लाथ मार्केट इंदौर—तारका पता—Pansari इस दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है। यहांके बने हुए मिलोंके कपड़ेकी यह एक बड़ी दुकानदार है।

आपके दो पुत्र हैं। बड़ेका नाम प्रहलाददास जी और छोटेका नाम मुरलीधर जी है।

र नन्दलालजी हालान, इन्दौर

स्व० सेठ अमोलकचन्दजी अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

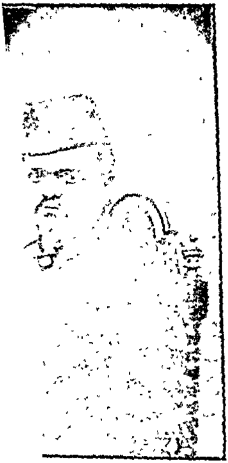

चन्द मानशी, इन्दौर

श्री० समीरमलजी अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

श्री० राधाकृष्णजी मुंछाल (रामगोपाल मुंछाल) इन्दौर

स्व० सेठ टीकमदासजी (रामरतन टीकमदास) इन्दौर

मेसर्स हजारीलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिक हजारीलालजी हैं। आप फलसना (दिल्ली).के मूल निवासी हैं। आप जैन धर्मावलम्बीय अग्रवाल सज्जन हैं। ला० हजारीमलजीके तीन भाई और हैं। जिनमें इस समय सिर्फ एक भाई जौहरीलालजी वर्तमान हैं। बाकी स्वर्गवासी हो चुके हैं। ला० जौहरीलालजी यहांकी स्टेटमें एडवोकेट जनरल व लीगल रिमेम्बरंसका कार्य करते हैं। ला० हजारीमलजी इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सरूपचंद हुकमचंदके यहां कार्य करते हैं। आपका यहां अच्छा सम्मान है। आपके २ पुत्र हैं। ला० छगनलालजी तथा मानकलालजी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स हजारीलाल छगनलाल, सीतलामाता रोड—यहां रुई, लेन देन तथा बैंकिंग कार्य होता है।

इन्दौर—मेसर्स छगनलाल मानिकलाल, सियागंज—यहां रुई, कपड़ा, गल्ला, शिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

इन्दौर—जौहरीलाल छगनलाल—यहां फरसी और पत्थरका व्यापार होता है।

रानगढ़ (इन्दौर)—यहां आपके साझेकी जिनिंग फेक्टरी है। यहां रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

नीमच-केम्प—दौलतराम गुलजारीलाल—यहां अनाज और शिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स जवरचंद मांगीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक जवरचंदजी तथा मांगीलालजी हैं। आप दोनों इस फर्मके हिस्सेदार हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—जवरचंद मांगीलाल सियागंज—यहां गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर—डालूराम मन्नालाल इमली बाजार—यह इस फर्मकी पुरानी दुकान है। यहां स्टेटके मोदी खानेका काम होता है।

—:—

वैद्य और हकीम

वैद्य ख्यालीराम जी द्विवेदी

आपका मूल निवास स्थान डलमऊ (रायबरेली) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। आपके खानदानका पुस्तैनी पेशा वैद्यक्का है। आपके पिताजी अच्छे वैद्य माने जाते थे। आपका इलाज राजघरानोंमें भी होता था। महाराजा शिवाजीरावने प्रसन्न होकर आपको दस २ हजार रुपया दो बार एवं एक गांव और २०० बीघा जमीन इनाममें दे दी थी इस इनामका कुछ समयतक उपयोग कर आपने कुछ विशेष कारण से इसे वापस फेर दिया था। इसी प्रकार गायकवाड़ सरकारने भी आपको जागीर इनाममें दी थी। वह भी आपने अपने शिष्यको दे दी। आपका देहावसान संवत् १९६२में हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी हुए। आपने भी वैद्यकमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इंदौरकी जनतामें आपका अच्छा सम्मान है। राजघराने में भी आपका इलाज होता है। आप बम्बई, इटारसी, अकोला आदि बाहर गांवोंमें भी इलाजके लिये जाया करते हैं।

वैद्य पं० ख्यालीरामजीका सार्वजनिक जीवन भी अच्छा रहा है। आपने इन्फ्लुएन्जाके समय इन्दौरकी जनता की अच्छी सेवा की थी। आपका पब्लिक जीवन अमगण्य रहा है। आप यहां की प्रायः सभी सभा सोसायटियोंमें भाग लेते हैं। आप स्थानीय हिन्दूसभाके सभापति हैं। आपकी देखरेखमें टाल्यागके आयुर्वेदिक ब्रह्मचर्याश्रमका काम बड़ी उत्तमतासे चल रहा है।

आपकी औषध निर्माण शालामें शास्त्रोक्त रीतिसे औषधियां तैय्यार की जाती हैं। इन्दौरकी जनताके हृदयमें आपकी औषधियोंके प्रति बड़ा विश्वास है। आपको सन्‌१९२०में दिल्लीके आयुर्वेदिक दशम सम्मेलनके समय स्वर्णपदक और प्रमाण पत्र मिला था। करांचीमें होनेवाली आल इण्डिया वैद्यक, यूनानी एण्ड तिब्बी कान्फ्रेन्ससे भी आपको प्रमाणपत्र और रौप्य पदक प्राप्त हुआ था। सन् १९२८में आलइण्डिया एक्जीबिशन इन्दौरसे भी आपको स्वर्णपदक प्राप्त हुआ है। कहनेका मतलब यह है कि आप एक बहुत सफल वैद्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

श्री०सेठ [illegible]चन्दजी ([illegible]) इन्दौर

श्री० [illegible]जी [illegible] ([illegible]चन्द् [illegible]) इन्दौर

श्री० सेठ [illegible]जी ([illegible]) इन्दौर

स्व० हकीम शेख तैय्यब अलीजी, इन्दौर

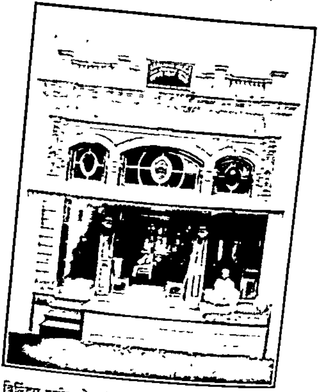

बिल्डिंग हकीम शेख तैय्यब

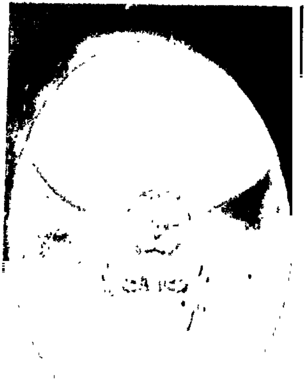

और नाम था। आप राजघरानेमें भी इलाज करनेके लिये जाया करते थे। आपकी बड़ी अच्छी प्रतिष्ठा थी। बोहरोंके बड़े मुल्लाजीने आपको शेखियतकी पदवी प्रदान की थी। यह पदवी इन लोगोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है। आपका सन् १९१३ ई०में देहावसान होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हकीम महमदहुसेन व हकीम गुलामअली हैं। आप दोनों भी अपने पिताजीकी तरह हकीमीमें अच्छी योग्यता रखते हैं। आपने सन् १९२४में इन्दौरके बोहरा बाजारमें एक बढ़िया दवाखाना बनवाया है। इसका फोटो इसी ग्रन्थमें दिया गया है। आपके यहां शुद्ध रीतिसे दवाइयां तैय्यार की जाती हैं। यू०पी,सी०पी, गुजरात आदि बाहरी स्थानोंमें भी यह औषधालय प्रसिद्ध है। यहां औषधियां बड़ी सफाईसे रखी जाती हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—तैय्यबी दवाखाना यूनानी, चौकबाजार—यहां हरप्रकारकी यूनानी दवाइयां मिलती हैं। और इलाज भी किया जाता है। यहांसे बाहर प्रान्तोंमें भी दवाईयोंका थोक निकास होता है।

मैन्युफैक्चरर

मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन

मि० महाजन उन उद्योगी व्यक्तियोंमेंसे है,जो बहुत ही छोटे स्केलसे अपने कार्यको प्रारम्भकर अपने व्यवसाय कौशलसे उसे अच्छा रूप दे देते हैं। शुरू २ में आपकी आर्थिक परिस्थिति बहुत कमजोर थी; केवल एक मामूली क्लर्ककी जगह काम करके आप अपनी जीविका निर्वाह करते थे। मगर उस काममें इनकी तबियत नहीं लगती थी। जिसके फल स्वरूप आपने नौकरी छोड़ दी और हिम्मत करके १५०)में एक मौजेकी मशीन मंगवाई। इस मशीनके कार्यमें आपको सफलता मिल गई और धीरे धीरे इनका कारबार तरक्की करने लगा। यहांतक कि सात वर्षके बादही अर्थात् सन् १९१३में आपके यहां ५० पौण्ड सूतके रोजाना मौजे बनने लगे। सन् १९१७में आपने १० नई मशीनें और मंगवालीं। जिससे आपका काम और भी तेजीसे चलने लगा।

मि० महाजनके यहांके बने हुए मौजे अपनी सुन्दरता और मजबूतीमें बहुत बढ़िया होते हैं इन्दौर शहरके अतिरिक्त बाहरी प्रान्तोंमेंभी इस कम्पनीके मौजोंका बहुत प्रचार है। रियासतकी फौजका आर्डर भी आपही पूरा करते हैं। सन् १९१७में स्त्रियोंके कला कौशलके प्रदर्शनके समय आपको गोल्ड मेडल और सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ था। आप अभी और भी अपने

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गोवर्धनदास बलदेवदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ गोवर्द्धनदासजी थे। आप आदि निवासी उदयपुरके हैं। वहांसे आपके कुटुम्बको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आपके पिताका नाम विठ्ठलदासजी था। वे यहाँ मामूली नौकरी करते थे। सेठ विठ्ठलदासजीका देहावसान कम वयमें ही होगया था, उस समय गोवर्धनदासजीकी उम्र सिर्फ १० सालकी थी। इन्होंने अपनी माताके आश्रयमें रहकर कपड़ेकी फेरीका व्यापार शुरू किया और थोड़े ही समयमें गोरधन मोहनके नामसे दूकान स्थापित कर अपने व्यवहार एवं साखको खूब मजबूत किया। बाजारमें आपकी प्रतिष्ठा अच्छी थी। सम्वत् १९६२ में बजाज खानेकी भयङ्कर आगके समयमें आपकी दूकानके मालके साथ २ लेन देनकी बहियाँ तक जल गईं। पश्चात् आपने फिर नये ढंगसे अपने व्यवसायको जमाया, तथा दूकानका कार्य पूर्ववत् जारी किया। आपका देहावसान ६५ वर्षकी उम्रमें संवत १९८२ में हुआ। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ बलदेवदासजी हैं। आप अपने पिताके जमाये हुए रोजगारका भली प्रकार संचालन करते हैं, तथा आपने अपने पिताजीके स्मरणार्थ गोवर्द्धन विलास नामक एक धर्मशाला वैष्णव संप्रदायके लिये बनाई, जिसमें करीब २०, २२ हजार रुपया खर्च हुआ, तथा उसके स्थाई प्रबंधके हेतु एक ट्रस्ट मुकर्रर किया। आपकी दुकानका खास व्यवसाय सब प्रकारके कपड़ेका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना—यहां सब प्रकारके देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स चतुर्भुज गणेशराम

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान फलोदी (मारवाड़) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके संस्थापक सेठ चतु-

श्रायत [illegible], प० महाजन, इन्दौर

स्व० नागरमलजी (नागरमल किशनलाल) इन्दौर

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गोवर्धनदास बलदेवदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ गोवर्द्धनदासजी थे। आप आदि निवासी उदयपुरके हैं। यहांसे आपके कुटुम्बको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आपके पिताका नाम विट्ठलदासजी था। ये यहां मामूली नौकरी करते थे। सेठ विट्ठलदासजीका देहावसान कम वयमें ही होगया था, उस समय गोवर्धनदासजीकी उम्र सिर्फ १० सालकी थी। इन्होंने अपनी माताके आश्रयमें रहकर कपड़ेकी फेरीका व्यापार शुरू किया और थोड़े ही समयमें गोरधन मोहनके नामसे दूकान स्थापित कर अपने व्यवहार एवं साखको खूब मजबूत किया। बाजारमें आपकी प्रतिष्ठा अच्छी थी। सम्वत् १९६२ में बजाज खानेकी भयङ्कर आगके समयमें आपकी दूकानके माल के साथ २ टीन देनकी बहियाँ तक जल गईं। पश्चात् आपने फिर नये ढंगसे अपने व्यवसायको जमाया, तथा दूकानका कार्य पूर्ववत् जारी किया। आपका देहावसान ६५ वर्षकी उम्रमें संवत् १९८२ में हुआ। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ बलदेवदासजी हैं। आप अपने पिताके जमाये हुए रोजगारको भली प्रकार संचालन करते हैं, तथा आपने अपने पिताजीके स्मरणार्थ गोवर्द्धन विलास नामक एक धर्मशाला वैष्णव संप्रदायके लिये बनाई, जिसमें करीब २०, २२ हजार रुपया खर्च हुआ, तथा उसके स्थाई प्रबंधके हेतु एक ट्रस्ट सुपुर्द किया। आपकी दुकानका खास व्यवसाय सब प्रकारके कपड़ेका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना—यहां सब प्रकारके देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स चतुर्भुज गणेशराम

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कुचेरा (मारवाड़) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके संस्थापक सेठ चतु-

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (इन्दौर ब्रांच) छावनी
इन्दौर बैंक लिमिटेड
मेसर्स ओंकारजी कस्तुरचन्द शीतलामाता रोड
" ओंकारजी चुन्नीलाल बड़ा सराफा
" गेंदालाल सूरजमल "
" धनइसी जुहारमल छोटा सराफा
" जमनादास जुहारमल बड़ा सराफा
" तिलोकचंद कल्याणमल शीतलामाता रोड
" तेजपाल विरदीचंद बड़ा सराफा
" पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी बजाजखाना
" परशराम दुलीचन्द छोटा सराफा
" पदमसी नेनसी बड़ा सराफा
" विनोदीराम बालचन्द "
" बालाराम बछराज शीतलामाता रोड
" मिश्रीमल मोतीलाल बड़ा सराफा
" रामनारायण हरविलास "
" रामचन्द्र रामेश्वर "
" शिवजीराम शालिगराम छोटा सराफा
" शिवजीराम हरनाथ "
" हेमराज गम्भीरमल शीतलामाता रोड
" हेमराज चुन्नीलाल " "
" स्वरूपचंद हुकुमचन्द " "
" हुकुमचन्द धनराज सदर बाजार

इन्दौर—कैम्प

मेसर्स [illegible]
" [illegible]

मेसर्स नाथूलाल देवी सहाय
" रामचन्द्र कन्हैयालाल
" मुन्नालाल लच्छीराम
" समीरमल अजमेरा

जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स गेंदालाल गणपतलाल छोटा सराफा
" चम्पालाल भगवानदास "
" जयचन्द चुन्नीलाल "
" जमनालाल कीमती हैदराबादवाला खजूरी बाजार
" टीकमजी मूलचंद शक्करबाजार
" परशुराम दुलीचंद छोटासराफा

चांदी-सोनेके व्यापारी

मेसर्स कुंवरजी रणछोड़दास छोटा सराफा
" गणपतजी गोकुलदास "
" नन्दराम नाथूराम "
" परशुराम दुलीचंद "
" मोतीलाल बूलचंद "
" रामलाल लालचंद "
" रामगोपाल मुन्नालाल "
" हरखचंद शांतिराम "

चांदीके वरक बनानेवाले

मेसर्स [illegible] बड़ा सराफा
[illegible] वहोरे खजूरी बाजार
मेसर्स लल्लूजी पांचमल खजूरी बाजार

मेसर्स भोलाराम रामरतन फतेरा बाजार
„ मथुरादास लक्ष्मीनारायण „
„ रामकिशन रामानन्द „
„ रामरख मथुरादास „
„ श्रीकृष्ण रतनलाल „

गोटेके व्यापारी

मेसर्स देवीसहाय मथुरालाल बजाजखाना चौक
„ रामनाथ रामकिशोर „
„ रामबख्श सूरजमल „

ग्रेन मर्चेंट्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स जवरचंद मोतीलाल सियागंज
„ मंगलजी मूलचंद मल्हारगंज
„ रामरतन लालचंद „
„ शिवबख्श लादूराम „
„ सुआलाल मूलचन्द „
„ सुआलाल पन्नालाल „
„ हरदेव जवरचन्द „

फुटकर कमीशन एजंट

मेसर्स जयकिशनदास राधाकिशनदास मल्हारगंज
„ मगनलाल किशनलाल दिलवारिया
„ लक्ष्मीचन्द चुन्नीलाल मल्हारगंज
„ हीरालाल घासीराम मल्हारगंज

सोडेके व्यापारी

इसुफअली मुल्ला महमद अली सियागंज
कमरुद्दीन अब्दुल अली सियागंज
मालुभाई कमरुद्दीन सियागंज
सुलेमान इसुफअली सियागंज

वाच मरचेंट्स

दी मेट इस्टर्न वाच कम्पनी बड़ा सराफा
नानालाल वुलाखीदास बड़ा सराफा
मीरजी एण्ड को० बड़ा सराफा
दी राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा

जनरल मरचेंट्स

अलीभाई मूसाभाई सियागंज
अब्दुल हुसेन तैय्यबअली सियागंज
ईस्माइल आदम तोपखाना
इलेक्ट्रिक इम्पोरियम तोपखाना
कृष्णराव गोपाल शोचे कृष्णपुरा
कादरभाई अल्लाबख्श एन्ड सन्स तोपखाना
गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागंज
नानालाल वुलाखीदास बड़ा सराफा
मेगनी ए० हुसेन एण्ड को० महारानी रोड
मालवा स्टेशनरी मार्ट तोपखाना
राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा
सूरज एण्ड को० छावनी (स्पोर्ट्स)

फुटकर कम्पनियां

रेमिंगटन टाईप राईटर कम्पनी तोपखाना
सिंगर मेशीन कम्पनी तोपखाना
जनरल इंशुरेन्स कम्पनी तोपखाना

मेसर्स जानकीलाल सुगनमल

इस फर्मके संस्थापक सेठ जानकीलालजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। आपने अपना बाल्यकाल बहुत दीनावस्थामें व्यतीत किया। आपका जन्म संवत् १९३७ की कार्तिक सुदी २ को भोपाल राज्यके बेरछिया ग्राममें हुआ। आपके पिताजीके स्वर्गवासके समय आपकी उम्र सिर्फ ३ वर्षकी थी। ९ वर्षकी उम्रमें आप अपनी माताजीके साथ इन्दौर आये तथा भैया गनेशरामजी (मालिक फर्म चतुर्भुज गनेशराम) के आश्रयमें रहने लगे। विद्याध्ययनके साथ आपकी रुचि व्यापारकी ओर अधिक होने लगी। सर्व प्रथम आपने बड़ौदेमें कपड़ेकी दुकान की। बड़ौदेके महाराज तथा महारानी साहियाकी आपपर विशेष कृपा थी। व्यवसाय अच्छा चल निकला था, परन्तु प्लेग आदि कारणोंसे आपको वहांसे दूकान उठा देनी पड़ी और इन्दौर आकर जानकीलाल लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेकी दूकान स्थापित की। आपके व्यवसाय चातुर्यसे व्यापार खूब चल निकला। कुछ दिनों पश्चात् आप इस दुकानसे अलग होगये। पश्चात् आपने श्री सेठ नंदलालजी भंडारीके साझेमें कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। आपकी व्यवसायिक कुशलताके कारण एक्स महाराजा तुकोजीराव तथा महारानी साहिया आपसे बहुत प्रसन्न रहा करते थे। एजेण्ट टू दी, गवर्नर जनरल मि० थोम्कांफेट साहबने वायसराय तथा अन्य कई अङ्गरेज अफसरोंसे आपका व्यापारिक संबन्ध कराया। आपकी व्यापारिक सभ्यतासे प्रसन्न होकर प्रमाणपत्र भी (सार्टिफिकेट) दिये। स्टेटके कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री डिपार्टमेण्टकी की ओरसे सन् १९२४में आपने यहांके हैण्डलूमपर बने लुगड़े, साड़ी वगैरह ब्रिटिश इण्डिया एम्पायर एक्जीबिशन आफ लंडनको भेजा। वहांसे भी आपको सार्टिफिकेट तथा मेडल मिले। सन् १९२३में आपको स्टेटने म्युनिसिपल कमिश्नर बनाया, तथा दूसरे वर्ष जनताकी ओरसे आप मनोनीत किये गये। सन् १९२७ के दिसम्बरमें इन्दौर सरकारकी ओरसे आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मुकर्रर किये गये।

यहांपर यह बतला देना आवश्यक है कि आपको अपने पूर्वजोंसे वारसाके तौरपर कुछ भी नहीं मिला था। आजकी स्थितिको आपने स्वयं अपने परिश्रम और अध्यवसायसे पैदा किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

इन्दौर—मेसर्स जानकीलाल सुगनमल तोपखाना—यहां माहेश्वरी लूगड़ी, बनारसी साड़ियों, कौनखाप, रबन आदि फेन्सी वस्तुओंका व्यापार होता है। यहांसे विलायत भी माल जाता है। इस दुकानमें श्री० नन्दलालजी भण्डारीका साझा है।

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर

दीनानाथ आर्टिस्ट इन्दौर
फोटो आर्ट स्टुडियो योर्काफिट मार्केट
रामचन्द्र राव एण्ड प्रतापराव तोपखाना।

होटल्स एण्ड रिस्टोरेंट्स

इन्दौर होटल तुकोगंज
मालवा होटल तुकोगंज
लक्ष्मी विलास होटल तोपखाना
सरदार गृह बक्षी गली

धर्मशाला

सर सेठ स्वरूप चन्द हुकुमचंदकी नसियां स्टेशनके पास
टीकमजी मूलचन्दकी धर्मशाला "

लायब्रेरीज़

अग्रवाल पुस्तकालय दितवारिया
जनरल लायब्रेरी कृष्णपुरा
मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति
श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी मोरसली गली

चायके व्यापारी

मेसर्स केरावाला एण्ड को० सियागंज

मिल जिन स्टोअर सप्लायर्स

बोरा वेलजी गिरधर अमरेलीवाला सियागंज
सेठ रतनजी गुस्तादजी सियागंज

आर० बी० ईश्वरदास एण्ड को० महारानी रोड
सी० जवेरलाल एण्ड कम्पनी सियागंज

मोटरकार एण्ड साईकल डीलर्स

गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागंज
जवेरी मोटर स्टोअर्स सियागंज
एन० सी० अंकलेसरिया एण्ड को० सियागंज
नौरोरवान एण्ड कम्पनी महारानी रोड
ब्रिटिश इण्डिया मोटरकार कम्पनी महारानी रोड

संगमरमरके व्यापारी

ए० साजन कम्पनी महारानी रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

आयुर्वेदीय औषधि निर्माणशाला सियागंज
श्रीकृष्ण फार्मेसी तोपखाना
किशनराव गोपाल शोचे योर्काफिट मार्केट
तैय्यबी दवाखाना यूनानी
पापुलर मेडिकल हाल योर्काफिट मार्केट

रंगके व्यापारी

मेसर्स शामवाला एण्ड को० महारानी रोड
" अहमद अली अब्दुल करीम सियागंज

ट्रंक मरचेंट्स

अब्दुल्ला अल्लाबख्श अजमेरवाला सियागंज
अब्दुल गनी अब्दुल अजीज सियागंज
तैय्यब भाई मुल्ला कादर भाई सियागंज

मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका आदि निवास डिडवाना (मारवाड़) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। इस फर्मको सेठ रामगोपालजीने ही स्थापित किया। आपहीने इस फर्मकी तरक्की भी की। संवत् १९६८में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मके संचालनका कार्य आपके भाई सेठ लक्ष्मीचंदजी मुंच्छाल और आपके पुत्र सेठ रामकृष्ण जी करते हैं। सेठ लक्ष्मीचन्दजीने इस फर्मकी और तरक्की की है। आपने [illegible] और भी शाखाएं स्थापित की। मालवेमें आपकी फर्मका अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इन्दौर—मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल, छोटा सराफा—इस फर्मपर चांदी, सोना तथा [illegible] व्यापार होता है।

इंदौर—मेसर्स लक्ष्मीचंद मुंच्छाल, तुकोगंज हुकमचंद स्ट्रीट—यहां कपड़ेका धंधा होता [illegible]

इन्दौर—मेसर्स रामकिशन बालकिशन, हुकमचंद स्ट्रीट—यहां रंगीन कपड़ेका धंधा [illegible]

बम्बई—रामगोपाल मुंच्छाल, पन्नालाल लाडूके पास, कालबादेवी रोड [illegible]
यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा सब प्रकारका आढ़तका काम होता है।

— —

मेसर्स हीरालाल बालकिशन [illegible]

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी हैं। आप [illegible]
सम्प्रदायके सज्जन हैं। आपका यहांके बड़े २ सेठोंमें अच्छा सम्मान है [illegible]
[illegible] की यहांके बड़े २ व्यापारियोंमें अच्छा मान [illegible] है [illegible]
[illegible] नियुक्त किये गये हैं। आपने [illegible]
इन्दौरमें [illegible] स्थापित की और आपने अच्छा [illegible]

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इन्दौर—मेसर्स हीरालाल बालकिशन [illegible]
व्यापार होता है।

वैद्यराज पं० ख्यालीरामजी द्विवेदी, इन्दौर

धर्मनीका उद्घाटन (ख्यालीरामजी)

व्यापारिक महत्व

सेन्ट्रल इंडियामें इन्दौरके पश्चात् व्यापारिक महत्वकी दृष्टिसे उज्जैनहीका दूसरा नम्बर है। यहांके व्यापारियोंको व्यापार करनेमें कई सुविधाएं हैं। बम्बई, इन्दौर आदि नगरोंसे व्यापारिक सम्बन्ध होनेके कारण और उनके पास आ जानेसे यहां व्यापार करनेमें बड़ी सुविधा होती है। दूसरा कारण यह है कि यह स्थान मालवेके मध्यमें होनेसे आस पासकी मालवेकी पैदावार यहींसे एक्सपोर्ट होती है। इससे भी यहां बड़ी व्यापारिक गति विधी रहती है।

उज्जैनका मार्केट सेन्ट्रल इंडियाके कॉटन मार्केटमें पहले नम्बरका है। यहांसे सालाना एक्सपोर्ट होनेवाली काटन बेल्सकी ओसत १ लाखके करीब होती है। काटनका बड़ा मार्केट होनेकी वजहसे मोसिमके समय रायली ब्रदर्स, वालकन ब्रदर्स, मिस सुई मुसान केरो आदि कम्पनियां कपास खरीदनेके लिये यहां अपनी शाखाएं खोलती हैं।

काटनही की तरह गल्लेके व्यवसायका भी यह बड़ा मार्केट है। यहींसे आसपासकी पैदावार बम्बई इन्दौर प्रभृति व्यापारिक केन्द्रोंमें एक्सपोर्ट होती है। यह व्यवसाय विशेषकर नयेपुरे होता है।

कपड़ेके व्यवसायमें भी सेंट्रल इण्डियामें उज्जैनका दूसरा नम्बर है। यहां दो कपड़ेकी मिलें होनेकी वजहसे यहांके कपड़ेका व्यवसाय उन्नतिपर है। यहांसे पंजाब, यू० पी०, गवालियर स्टेट प्रभृति स्थानोंमें कपड़ा जाता है।

इसके अतिरिक्त दूसरी वस्तुओंका व्यवसाय भी होता है पर उसका एक्सपोर्ट न होनेसे उल्लेख नहीं किया गया।

उज्जैनके व्यापारिक बाजार

सराफा बाजार—यह यहांका सबसे अच्छा बाजार है। यहां बड़े २ व्यापारियोंकी फर्में हैं। इस बाजारमें खासकर रुई, गल्ला तथा वायदेका सौदा होता है। वायदेके सौदेमें यहांका बाजार सेन्ट्रल इण्डियामें दूसरे नम्बरका है।

नयापुरा—यहां खासकर गल्लेका व्यवसाय होता है। यहां गल्लेका काम करनेवाली कई बड़ी २ फर्में हैं। यहांकी फर्मों द्वारा हजारों मन गल्ला बाहर जाता है।

काटन मार्केट—यहां काटनकी खरीद बिक्री होती है। यह सेंट्रल इंडियामें पहला काटन मार्केट है। जिस समय यहां कपासकी गाड़ियां बिक्रीके लिये आती हैं उस समय सैकड़ों व्यापारियोंकी गति विधी देखने लायक होती है।

जयाजीगंज—यह मंडी अभी बन रही है। यह इन्दौरके सियागंजकी तरह बनेगी। यहां

इन्दौर—प्रभाकर औषधालय, दीतवारिया—यहां सब प्रकारके रोगोंका इलाज किया जाता है।

इन्दौर—आयुर्वेदिक औषधि निर्माणशाला, सियागंज—यहां आपकी औषध तैयार करनेकी फार्मेसी है।

इन्दौर—वैद्य ज्वालीराम फार्मेसी, मारोठिया बाजार—यहां आपकी बनाई हुई औषधियां बिक्री होती हैं।

वैद्य चन्द्रशेखरजी पाठक

यह चिकित्सालय सन् १९०६में स्थापित हुआ। इसमें आयुर्वेदिक व एलोपैथी दोनों प्रसिद्ध चिकित्सा पद्धतियोंके द्वारा निदान व चिकित्सा की जाती है। यही कारण है कि इस चिकित्सालयमें दूसरे चिकित्सालयोंसे निराश होकर लौटे हुए कई संग्रहणी, क्षय आदि कष्टसाध्य रोगोंसे पीड़ित रोगी आराम होते हैं। इस औषधालयमें शास्त्रोक्त व शुद्ध बनी हुई औषधियोंका उपयोग किया जाता है। इस चिकित्सालयमें श्री० वैद्य महादेव चन्द्रशेखर पाठक व डाक्टर बालमुकुन्द चन्द्रशेखर पाठक एल० एम० एस० चिकित्सा करते हैं। श्री० वैद्य महादेव चन्द्रशेखर पाठक इन्दौरके कतिपय चुने हुए विद्वान व अनुभवी वैद्योंमें अपना विशेष स्थान रखते हैं। आप आयुर्वेदके विशेषज्ञ हैं। एकादश वैद्य सम्मेलनमें इन्दौरके वैद्योंमें से सिर्फ आपहीने अपना विद्वत्तापूर्ण निबन्ध पढ़ा था। जिसकी तारीफ वैद्य सम्मेलनके सुप्रसिद्ध सभापति वैद्य गणनाथसेन व अन्य विद्वान् वैद्योंने मुक्तकंठसे की थी। आप इस समय चिकित्सा विज्ञानके ऊपर एक मौलिक और गवेषणापूर्ण ग्रन्थ लिख रहे हैं। इस ग्रन्थमें चिकित्सा विज्ञानके मूलभूत सिद्धान्तों पर तथा इस सम्बन्धसे चलनेवाली सभी चिकित्सा पद्धतियोंपर तुलनात्मक विवेचन रहेगा।

आपके छोटे भाई डाक्टर बालमुकुन्द पाठक भी बड़े योग्य नवयुवक हैं। आप आंख सम्बन्धी रोगोंके विशेषज्ञ हैं। आप एल० एम० एस० हैं और इनको ध्यान देनेमें सिद्धहस्त हैं।

आपका सार्वजनिक जीवन भी प्रशंसनीय है। इन्दौरमें हालहीमें [illegible] हुई हिन्दू [illegible] [illegible] आप [illegible] थे। आपका दवाखाना [illegible] बाजारमें है।

तैय्यबी दवाखाना यूनानी

इस दवाखानेको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। [illegible] [illegible] स्थापित किया था। [illegible] [illegible] [illegible] थे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। आजकल इन्दौरके वैद्य और हकीमोंमें आपका सम्मान

आनेवाले माल

नाम	वजन		मूल्य
चावल	३००२६ मन	...	...
गुड़	१८८६१,,	...	...
शक्कर	१२३६०२,,	...	...
तेल-मिट्टी	८७८१३ पीपे	...	...
इमारती लकड़ी	१०८३४	...	...
लोहा	...	...	२५१०६२) रु
तांबा–पीतल	...	...	७४७२२)
कपड़ा	...	...	१२६५२७)
सूतआदि	२३३८ मन	...	...
इन्दौरी कपड़ा	...	...	४२०८२)
तमाखू	३३१४ मन	...	...
व्यापारिक सामान	...	...	११३०११)
माचीस	...	...	२७०८९)
मोटर साईकल	...	...	४२१४२)
पेट्रोल	...	...	३१०४५)
चिड़ियां	...	...	३३४०८)
साबन	...	...	१५८६४)
तेल विदेशी	...	...	३१२९७)
कागज	२०१८ मन	...	...

उपरोक्त संख्या सन् १९२५ की है। इसके पश्चात् इस समय इनमेंसे बहुत सी वस्तुएं ज्यादा आने तथा जाने लग गई हैं।

सेठ लुकमान भाई (महम्मदअली ईसाभाई) उज्जैन

नजरअली मिल, उज्जैन

मालमें सफाई और उत्तमता लानेकी कोशिशमें हैं। आपका कथन है कि भारतवर्षमें नीटिंग्यार्नके अभावमें इस समय विविंगयार्नकाही उपयोग करना पड़ता है। इसलिये माल जैसा चाहिए, वैसा साफ नहीं बन सकता। अतएव आप इस उद्योगमें हैं कि हमारे यहां ही नीटिंगयार्न पैदा किया जा सके, जिससे हम विदेशी मालकी प्रतियोगितामें अपने मालको भी विदेश भेज सकें।

आपके कार्यालयकी एक विशेषता यह है, कि इसमें कई निराश्रित विधवाओं और दूसरी स्त्रियोंको आजीविका मिलती है। मौजे बुननेका काम ऐसा है जिसे स्त्रियां बखूबी कर सकती हैं। मि० महाजनके कार्यालयमें अबतक करीब १०० स्त्रियां औद्योगिक शिक्षा पा चुकी हैं। जिनमें बहुतसी अपने घरपरही स्वतंत्र रूपसे जीविका निर्वाह करती हैं। इस समय इस कारखानेमें ३० स्त्रियां और ३ पुरुष काम करते हैं।

मि० महाजन जनताकी ओरसे निर्वाचित म्यूनिसिपल मेम्बर हैं। आपके कारखानेका पता मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन नन्दलाल पुरा इन्दौर है।

काटन एण्ड ग्रेन मर्चेन्ट्स

नागरमल किशनलाल नारसरिया

इस फर्मके स्थापक सेठ नागरमलजी थे। आपका निवासस्थान रामगढ़ (सीकर) का है। जिस समय ये इन्दौर आये थे, उस समय आपकी मामूली स्थिति थी। यहांतक कि आप पतंग बेंच कर अपना निर्वाह करते थे। धीरे २ आपने रुईकी दलाली शुरू की, और उसमें आपको अच्छा लाभ मिला। आपके द्वारा स्टेट मिल, राजकुमार मिल आदि कम्पनियां कपास खरीदती थीं। आपका स्वर्गवास संवत् १९८८में होगया। वर्तमानमें आपके २ पुत्र हैं। बड़े श्रीकिशनलालजी हैं। आप फर्मके कार्यको सुचारु रूपसे चला रहे हैं।

मिलमें कोई शेयर होल्डर नहीं है। यही खानदान इस मिलका मालिक है। इस फर्मने अपने रुई व्यवसायको अच्छा बढ़ाया है। मालवाप्रांतमें यह फर्म रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ दान धर्मके कार्योंकी ओर भी इस कुटुम्बका लक्ष रहा है। आपकी ओरसे उज्जैनमें एक संगमरमरका रमणीय रोजा करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बना है। इस रोजेमें बड़े मुल्लाजी साहबकी जियारत है, जिससे दूर दूरके बोहरा समाजके यात्री जियारत करने आते हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक मुसाफिर खाना भी बनवा रक्खा है, तथा साथही उसमें भोजनका भी प्रबन्ध है। मऊमें १ हजारकी लागतसे बोहरा बीमारोंके ठहरनेके लिये एक सेनेटोरियम भी इस फर्मकी ओरसे बना है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई नयापुरा—इस फर्मपर किराने तथा गल्लेका थोक व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स महम्मदअली ईसा भाई सियागंज—इस फर्मपर किरानेका थोक व्यापार होता है, तथा यहां वेजिटेबल घी और सोडाकी एजंसी है। (T. A. Pulpit)

(३) बम्बई—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई, अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां आढ़त तथा [illegible] काम होता है। (T. A. Pulpit)

(४) उज्जैन—नजरअली मिल—इसका विस्तृत परिचय ऊपर दिया गया है। मिलके लिये यहां कपास खरीदीका अच्छा व्यापार होता है। अहमदाबादकी कई मिलें यहांसे रुई मंगवाती हैं।

इसके अतिरिक्त इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरियां हैं। इनमें कई कारखाने सेठ लुकमानभाईने सेठ नजरअली भाईके गुजर जानेके बाद खोले हैं।

जीनिंग फेक्टरियां—नजरअली जीनिङ्ग फेक्टरीके नामसे

१—उज्जैन २—आगर (मालवा) ३—शाजापुर (ग्वालियर) ४—सोनकच्छ (ग्वालियर) ५—मैंदाना (ग्वालियर) ६—मंगला स्टेशन (जी० आई० पी०) ७-सुजालपुर ८-पचोर ९—नरसिंहगढ़ १०—ब्यावरा (राजगढ़) ११—छापेरा (नरसिंहगढ़) १२—खुजनेर (नरसिंहगढ़) १३—बेरिया (ग्वालियर) १४—सुसनेर (ग्वालियर) १५—सोयत (ग्वालियर) १६—बड़ोद (ग्वालियर) १७—नलखेड़ा (ग्वालियर) १८—आलोट (देवास) १९—शाजापुर (ग्वालियर) २०—[illegible] (ग्वालियर) २१—बड़नगर २२—भिंड २३—राजोद (इसमें आपका साझा है) २४—महम्मदअली ईसा भाई मीन महत्पुर और २५—मालोटी (होल्कर स्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरीयां—(नजरअली प्रेसिङ्ग फेक्टरीके नामसे)

१—उज्जैन २—भिंड ३—पचोर (यह प्रेसिंग फेक्टरी अभी तैयार होरही है)

क्लॉथ मरचेन्ट्स एण्ड कमीशन एजंट

दी कल्याणमल मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजीराव क्लॉथ मार्केट
मेसर्स कीर्तिलाल रसिकलाल ,, ,,
,, कुन्देकर एण्ड ब्रदर्स तोपखाना
,, गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना
,, गोवर्द्धन लक्ष्मीदास ,,
,, गुलाबचंद माणकचंद तुकोजीराव क्ला० मा०
,, गोवर्द्धन जगन्नाथ ,,
,, गंगाधर चुन्नीलाल ,,
,, चतुर्भुज गणेशराम तोपखाना
,, छतकरण प्रह्लाददास बजाजखाना
,, जानकीलाल सुगनमल तोपखाना
दी जनरल स्टोर्स तोपखाना
मेसर्स जीतमल किशनचंद तुकोजी० क्ला० मार्केट
,, जोखीराम रामनारायण ,,
,, दाऊलाल मुरलीधर ,,
हाजी नूरमहम्मद मूसा बजाजखाना
दी नन्दलाल भंडारी मिल्स क्लॉथ शाप तु० क्ला० मा०
मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द तुकोजी० मार्केट
,, फतेहचंद मूलचन्द बजाजखाना
दी विनोद मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० क्ला० मार्केट
,, मालवा मिल्स क्लॉथ शाप ,, ,,
मेसर्स मोहनलाल मुन्नालाल ,, ,,
दी मालवा स्टोर्स तोपखाना
दी राजकुमार मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० मार्केट
मेसर्स रामरतन टीकमदास तुकोजी राव क्ला०मा०
,, रामनारायण हरकिशन ,,
,, आर० जी० प्रधान एंड को० तोपखाना
,, लखमीचंद मुंच्छाल तुकोजी० क्ला० मा०
सेठ लक्ष्मीनारायण पसारी ,, ,,
दी शिवाजी वस्त्र भंडार तोपखाना
मेसर्स शिवराम रामबक्स क्लाथ मार्केट
,, सूरजमल सोभागमल बजाजखाना
,, हीरालाल बाल किशनदास ,,
,, हीरालाल पन्नालाल तुकोजी क्ला० मा०
दी हुकुमचंद मिल्स क्लाथ शाप तुकोजीराव क्लाथ मार्केट
मेसर्स त्रिकमदास अमृतलाल ,, ,,

कटपीस क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स पन्नालाल मुन्नालाल बड़ा सराफा
,, मिश्रीलाल सराफी ,,
,, रामेश्वरदास प्रह्लाददास ,,

कपड़ेके व्यापारी [इन्दौर-केम्प]

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल
,, छोगालाल रतनलाल
,, सम्पतमल जयकुमार

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स जयनारायन गिरधारीलाल फतेहगंज बाजार
,, जयकिशन लालचन्द ,,
,, जयनारायन गंगाधर ,,

श्रीयुत नाथभैय्या (मेसर्स गोविन्दराम बालमुकुन्द) उज्जैन

श्रीयुत वैंकटलालजी (मेसर्स [illegible]) उज्जैन

स्व: श्रीयुत कुन्दनलालजी पांड्या उज्जैन

श्रीयुत तनसुखलालजी पांड्या उज्जैन

किरानेके व्यापारी

मेसर्स अब्दुल अजीज हासम भाई सियागंज
„ उमर वलीमहम्मद „
„ उसमान हबीब „
„ महमद अली ईसाभाई „
„ हाजी महम्मद हाजी अब्बा „
„ हाजी खानु हाजी वल्ली „
„ हसन भाई इब्राहिम „

टोपीके व्यापारी

मेसर्स अल्लबक्स ईसाभाई कृष्णपुरा
„ आत्माराम मन्नालाल „
„ इच्छाराम बसन्तजी „
„ पुरालिक ब्रदर्स „
„ फिदाहुसेन हाजी अल्लाबक्स „
„ मोरार भाई हरिभाई „
„ माणिकचन्द मानमल „
„ सूरजमल दौलतराम „

दांत बनानेवाले

डॉ० गजानन्द राव भागवत् कृष्णपुरा
„ [illegible] डेन्टिस्ट [illegible] बजार
„ [illegible] डॉ० [illegible] तोपखाना
„ [illegible] बजार
„ [illegible]

म्युजिक स्टोअर्स

[illegible] म्युजिक स्टोअर्स तोपखाना
[illegible] बाजार „
[illegible] „

प्रिंटिंग प्रेस

गजानन्द प्रिंटिंग प्रेस तोपखाना
जैन बन्धु प्रिंटिङ्ग प्रेस पीपली बाजार
मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति—
प्रिंटिङ्ग प्रेस तोपखाना
लक्ष्मी विलास स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस नन्दलालपुरा
एस० एस० जैन प्रेस कृष्णपुरा
एच० एण्ड पी० प्रिंटिङ्ग प्रेस इन्दौर-केम्प
होल्कर स्टेट (इलेक्ट्रिक) प्रिंटिङ्ग प्रेस।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

टांटिया ब्रदर्स योगेश्वरेट मार्केट
मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति तुकोगंज
एन० एम० सोमानिया एण्ड को० बड़ा सराफा
राज्य मण्डल बुक पब्लिशिङ्ग हाउस यशवंतगंज
साहित्य सदन कार्यालय मोटा बाजार
साहित्य निकेतन कार्यालय पीपली बजार
सिंघल ब्रदर्स तोपखाना।

न्यूज पेपर एजेंट

तुलीचन्द जैन सिटी बाजार।
[illegible]।

स्टेशनर्स

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी कासलीवाल हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस इन्दौर है। अतः इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। इस फर्मका पता—सराफा, उज्जैन है। यहांपर हुंडी, चिट्ठी, सराफा, लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स गोविंदराम बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सरदार नत्थू भैया नेवरी (गवालियर-स्टेट) के निवासी हैं। आपकी गवालियर स्टेटमें कई पीढ़ियोंसे जागीर तथा जमींदारी चली आती है। आप सर्दार श्री आमेसाहब स्टेट गवालियरके खजांची हैं। उक्त सरदार साहबकी ओरसे आपको कई गांव जागीरीमें मिले हैं। आप कई कमेटियोंके मेम्बर हैं। सरदार नत्थू भैयाने नेवरीकी पहाड़ीपर एक रमणीय मंदिर बनवाया है। आप देवास स्टेटके पोतेदार (खजांची) हैं। इस स्टेटमें आपका अच्छा सन्मान है। देवासमें आपके बाग बगीचे एवं मकानात बने हुए हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—गोविंदराम बालमुकुन्द सराफा—यहां बेङ्किग तथा रुईका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपका देवास और नेवरीमें जीनिंग फेक्टरीज और भंवरासामें दुकान है।

मेसर्स गोविन्दराम पूनमचंद

इस फर्मके मालिक फलोदी (मारवाड़) के निवासी महेश्वरी (बांगड़) वैश्य हैं। इस फर्म की स्थापना सबसे प्रथम सेठ हिम्मतरामजीने हैदराबाद (दक्षिण) में की थी। उस समय इस फर्मपर हिम्मतराम नथमल नाम पड़ता था। सेठ हिम्मतरामजीके बाद उनके पौत्र सेठ गोविंदरामजीने इस फर्मके व्यापारको मालवा और राजपूतानाकी ओर बढ़ाया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन

उज्जैन

UJJAIN

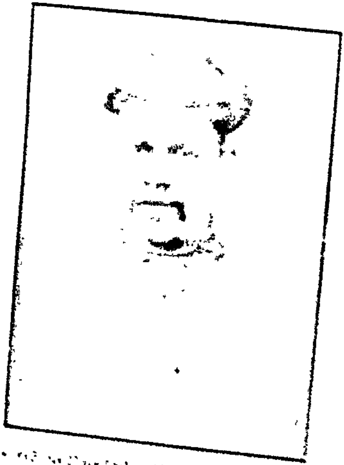

उज्जैन

ऐतिहासिक महत्व

यह शहर भारतवर्षके उन प्राचीन नगरोंमेंसे एक है, जिनके अत्यन्त गौरवमय गान भारतीय साहित्यके प्राचीन ग्रन्थोंमें मुक्त कण्ठसे गाये गये हैं। महाकवि बाणभट्टने अपनी कादम्बरीमें जिस अतिशयोक्तिपूर्ण अलंकृत भाषामें वर्णन किया है, तथा दूसरे ग्रन्थकारोंने मुक्त कण्ठसे जिस अकल्पित नगरीके गुण गान किये हैं, वह न कल्पित वर्णन सत्यतर है। यह शहर प्राचीन समयमें मालव-देशकी राजधानी था। उस समयके सम्राट विक्रमादित्यका राजसिंहासन इसी महिमामयी नगरीमें जगमगाता था। महाकवि कालिदासकी लेखनीसे जन्म पाये हुए रघुवंश, और मेघदूतके समान सुन्दर काव्योंकी किरणें भी इसी नगरीसे प्रकाशित होकर संसारमें फैली थीं।

आजकल शिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ यह शहर महाराजा सींधियाकी छत्रछायामें विकास पा रहा है। स्वर्गीय महाराजा माधवराव सींधिया भी इस नगरपर पूर्ण कृपा रखते थे। उन्होंने इस नगरको उन्नत करनेमें कोई बात उठा न रखी थी। उन्होंने अपने अन्त समयमें इस नगरकी सभी प्रकारकी स्थितियोंको सुधारनेकी चेष्टा की और यही कारण है कि आज यह नगर भी अपने पड़ोसी इन्दौर नगरकी टक्कर लेना चाहता है। यदि राज्यकी इस नगरपर पूर्ण दृष्टि रही तो निकट भविष्यमें ही यह नगर बहुत उन्नत रूपमें दिखाई देगा।

धार्मिक महत्व

ऐतिहासिक महत्वकी तरहसे यह नगर धार्मिक महत्वमें भी बहुत बढ़ा चढ़ा है। शिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ होनेसे स्वयंसे यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है। बारह वर्षमें यहां सिंहस्थका प्रसिद्ध धार्मिक मेला भरता है। जिस समय यह मेला होता है उसमें असंख्य हिन्दू यात्री भारतके कोने कोनेसे आकर अपनी अपूर्व धार्मिक भावनाओंका परिचय देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां और भी धार्मिक स्थान हैं। जिनकी वजहसे यह नगर धार्मिक नगरोंमें गिना जाता है।

छोड़कर जन्म लेते थे। इस तरह वर्ष वर्ष आप इस फर्मके मुनीम रहते रहे। इस फर्मसे काम करते हुए आपने नवीन फर्मके व्यापारमें बहुत अधिक उन्नति प्राप्त की। व्यापारिक दृष्टिसे उस समय चारोंओर आपकी बहुत विशेष प्रतिष्ठा थी। आपने पुष्करके जैन मन्दिरमें धर्मशाला-के पीछे बनवाई, मन्दिरपर शिखर चढ़वा कर प्रतिष्ठा करवाई तथा उस मन्दिरमें स्थानक बनवानेके लिये योग्य प्रबन्ध किया। इसी प्रकार गिरनारजीमें आपने एक जिनमन्दिर बनवाकर प्रतिष्ठा की। शत्रुञ्जयमें भी आपने एक जिनमन्दिरकी प्रतिष्ठा की। इसके अतिरिक्त हरद्वार, हरद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि तीर्थ स्थानोंमें धर्मशालाएं, और कोठरियां बनवाईं। अजमेरमें आपने एक सार्वजनिक हिन्दू जैन पवित्र औषधालय, स्थापित किया। जो अभी तक बड़े प्रकार चल रहा है। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें अनेक धार्मिक कार्य किये थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कल्याणमलजी हैं। आप सेठ फतेमलजीके यहां गोद आये हैं। आपका अजमेरकी कई सार्वजनिक संस्थाओंसे सम्बन्ध रहता है। व्यापार एवं संपत्तिमें भी आपका अच्छा सम्मान है। सेठ कल्याणमलजी, सगुना चंदजी, मुनिजीतमलजी, समरथमल, जितेन्द्रकुमार तथा राजकुमार सेठके मेम्बर रह चुके हैं और अब भी हैं। आपकी तरफ से यात्रीगण हमेशा ओसवाल रहते हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
अजमेर—सेठ वर्तमान कल्याणमल फतेमल, जयपुर—यहां हुंडी चिट्ठी लेनदेन तथा सर्राफा व्यापार होता है। यह फर्म यहां बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल

इस फर्मके हेड आफिस अजमेरमें है। आपका स्थापना विक्रम संवत् किसी समय इस स्थापना किया गया है। इस फर्मके मालिक श्रीयुत कल्याणमलजी हैं जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इस फर्मका व्यापार बहुत बड़ा व्यापार होता था। इसके मालिक वर्तमान समयमें सेठ कल्याणमलजी सिंघी हुकमचन्दजी हैं। आपका नाम मुनीम जी इसमें आपकी फर्मके काममें हो जाती है।

आपकी फर्मका यहां—व्यापार होता है। यहां हुंडी, चिट्ठी, सर्राफे—लेनदेन तथा रुई व्यापार होता है।

उज्जैन

ऐतिहासिक महत्व

यह शहर भारतवर्षके उन प्राचीन नगरोंमेंसे एक है, जिनके अटपट गौरवका गान भारतीय साहित्यके प्राचीन ग्रन्थोंमें मुक्त कण्ठसे गाया गया है। महाकवि बाणभट्टने अपनी कादम्बरीमें जिस उज्जयिनीका अलङ्कार मय भाषामें वर्णन किया है, तथा दूसरे ग्रन्थकारोंने गुप्त विस्मयके साथ जिस अवन्तिका नगरीके गुण गान किये हैं, उज्जैन उसीका नवीन रूपान्तर है। यह शहर प्राचीन कालमें मालव-देशकी राजधानी था। परम प्रतापी सम्राट विक्रमादित्यका राजसिंहासन इसी महिमामयी नगरीमें जगमगाया था। महाकवि कालिदासकी लेखनीसे जन्म पाये हुए शाकुन्तल रघुवंश, और मेघदूतके समान सुन्दर काव्योंकी स्निग्ध किरणें भी इसी नगरीसे प्रकाशित होकर संसारमें फैली थीं।

आजकल क्षिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ यह शहर महाराजा सेंधियाकी छत्रछायामें विश्राम पा रहा है। भूतपूर्व महाराजा माधवराव सेंधिया की इस नगरपर पूर्ण कृपा दृष्टि थी। उन्होंने इस नगरको उन्नति देनेमें कोई बात उठा न रखी थी। लाखों रुपये खर्च करके उन्होंने इस नगर-की सभी प्रकारकी स्थितियोंको सुधारनेकी चेष्टा की और यही कारण है कि आज यह नगर भी अपने पड़ोसी इन्दौर नगरकी टक्कर लेना चाहता है। यदि राज्यकी इस नगरपर पूर्ण दृष्टि रही तो निकट भविष्यमें ही यह नगर बहुत उन्नत रूपमें दिखलाई देगा।

धार्मिक महत्व

ऐतिहासिक महत्वकी तरहही यह नगर धार्मिक महत्वमें भी बहुत बढ़ाचढ़ा है। क्षिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ होनेकी वजहसे यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है। बारह वर्षमें यहां सिंहस्थका प्रसिद्ध धार्मिक मेला लगता है। जिस समय यह मेला होता है उसमें मनुष्य इस नगरमें आकर अपनी बहुत धार्मिक भावनाओंका परिचय देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां और कई धार्मिक स्थान हैं। जिनकी वजहसे यह नगर धार्मिक बातोंमें अच्छा गिना जाता है।

समी प्रकारके थोक व्यापारियोंकी फर्में रहेंगी। सरकारने यहां आनेवाले मालपर महसूलमें भी बहुत रियायत कर दी है।

पटनी बाजार—यहां जनरल मरचेंट्सकी दुकानें हैं। इस बाजारमें गोपाल मन्दिर देखने योग्य है। इसी बाजारमें उज्जैनके प्रसिद्ध फूलोंके हार बिकते हैं।

जूनापीठा—यहां गल्लेके व्यापारियोंकी फुटकर दुकानें हैं।

चौक—यह अभी ही बना है। उज्जैन जैसे प्राचीन शहरमें यदि कोई नवीनता आई है तो इसी चौकमें। पहले यहां बड़ तंग रास्ते थे। महाराजा साहबने यहांके मकानोंको खरीद कर शहरको सुन्दर बनाने के लिये इसे बनाया है। इस चौकमें सब दुकानें एक नमूनेकी हैं। यहां कपड़ेवाले, जनरल मरचेंट्स, साईकल मर्चेण्ट्स आदिकी दुकाने हैं।

इनके अतिरिक्त, दौलतगंज, गुदड़ी बाजार देवासरोड आदिमें भी फुटकर व्यापारियोंकी दुकान हैं।

उज्जैनके दर्शनीय स्थान

उज्जैन बहुत पुराना शहर है। अतएव यहां कई प्राचीन स्थान दर्शनीय हैं। पाठकोंकी जानकारीके लिये उनमेंसे कुछ नाम यहां दिये जाते हैं। हरसिद्धि देवी, कालका देवी, चौबीस खम्भा, मंगलनाथ, महाराजा भर्तृहरिकी गुफा, सिद्धनाथ, कालभैरों, रानोजी महाराजकी छतरी, महाराजबाड़ा, मौलवी मुगिसउद्दीनका मकबरा, नयामहल, पुराना जलमहल, (कालिया देहपर) और आवज़रवेटरी एवं महंकालेश्वरका मंदिर इत्यादिस्थान यहां विशेष मशहूर हैं।

फेक्ट्रीज एण्ड इण्डस्ट्रीज

दी विनोद मिल्स लिमिटेड

यह मिल सन् १९१२,१३ में स्थापित की गई, और सन् १९१४ में चालू हुई। तबसे अब तक बराबर चल रही है। इसके मैनेजिङ्ग एजण्ट मेसर्स विनोदीराम बालचन्द हैं। इसमें ७५० लूम्स और ३१००० स्पेंडिल्स हैं। रोजाना करीब १२०० मजदूर इसमें कार्य करते हैं। इस मिलमें एक बहुत बड़ा हास्पिटल खुला हुआ है। जिसमें मिल मजदूरों और अन्य कार्य कर्ताओं तथा साधारण पब्लिकको मुफ्तमें औषधि दी जाती है। इस मिलमें डोरिया, साटन, धोती जोड़े और रंगीनमाल अच्छा बनता है।

मेसर्स रामदान राधाकिशन

इस फर्मके मालिक मेड़ता (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको करीब २० वर्ष पूर्व सेठ रामदानजीने स्थापित किया था। आपका स्वर्गवास सं० १९७९ में हो गया। वर्तमानमें सेठ रामदानजीके पौत्र सेठ रामस्वरूपजी इस फर्मके मालिक हैं। आपका उज्जैनमें एक अन्नक्षेत्र चल रहा है, तथा मेड़तामें आपकी ओरसे राजसभा नामक एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामदान राधाकिशन नमकमंडी—यहां रुई, कपास, हुण्डी चिट्ठी तथा आड़तका व्यापार होता है।

(२) मेड़ता—(मारवाड़) यहां लेन देनका काम होता है।

मेसर्स सरूपचंद हुकुमचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर राज्यभूषण सर हुकुमचंदजी के० टी० हैं। आप मालवा प्रांतके नामाङ्कित व्यापारी हैं। आपकी फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। अतः आपका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। उज्जैनमें इस फर्मपर बैङ्किंग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान मुनीम श्री फतहचंदजी पारख हैं। आप बीकानेरके आदि निवासी हैं पर १०० सालसे बजरङ्गगढ़ (ग्वालियर स्टेट) में रहते हैं। आपकी जिमीदारीके २ गांव बजरङ्गगढ़के पास हैं। आपने पहिले मेसर्स रामदेव बलदेवकी दुकानपर, फिर सन् १८७२ से रा० ब० सेठ कल्याणमलजीकी फर्मपर तथा १९७८ से पन्नालाल गनेशदासकी फर्मपर मुनीमात की। एवं वर्तमानमें १९८३ से सर सेठ हुकुमचंदजीकी उज्जैन फर्मका कारबार आप ही सम्भालन करते हैं। आपको ग्वालियर सरकारसे दो बार खिलअत व सनद भी प्राप्त हुई है। सम्वत् १९६८ में सिंहस्थ के समय आपने अच्छी सेवा की, इससे खुश होकर ग्वालियर सरकार स्वर्गीय माधवरावजी सिंधियाने आपको अपने हाथोंसे तमगा बख्शा। आप मंडी कमेटी, साहुकारी बोर्ड और परगना बोर्डके मेम्बर हैं।

मेसर्स करमचंद दीपचंद *

इस फर्मके मालिक सेठ करमचंदजी कोठारीका जन्म बीकानेरमें सम्वत् १९२१ की भादव सुदी ८ को हुआ था। केवल १३ वर्षकी आयुमें ही आप बीकानेरके सेठ धनरूपमल जुहारमलजीकी

* [आपका परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथास्थान नहीं छापा जा सका—प्रकाशक।]

मिल ओनर्स

मेसर्स विनोदीराम वालचन्द

इस फर्मका हेड आफिस झालरापाटन है। इसके प्रोप्राइटर सरावगी जातिके सज्जन हैं। इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहाँपर आपके तीन बड़े २ गोदाम बने हुए हैं। ग्वालियर स्टेटके माळवाप्रान्तका सदर खजाना भी इसी फर्मके सिपुर्द है। यह फर्म यहांके विनोद मिल्स लि॰की सेक्रेटरी, मैनेजिङ्ग एजंट और ट्रेझरर है। यहांके तारका पता Manik है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित झालरापाटनमें दिया गया है।

मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास उज्जैन है। सेठ महम्मदअली भाईके हाथोंसे संवत्१९०० के करीब इस फर्मकी स्थापना हुई। सेठ महम्मदअलीभाईके छोटे भ्राता सेठ अल्लाबख्शजीके चार पुत्र थे, जिनका नाम सेठ नजरअली भाई सेठ फत्हअलीभाई सेठ अब्दुलकरीमभाई और चौथे सेठ तय्यबअलीभाई था।

सेठ नजरअली भाईने संवत् १९४५में उज्जैनमें कॉटन जीनिङ्ग कम्पनी स्थापित की। फत्हअलीसेठ पुरानी दुकान कोठापर कारोबार करते थे। अब्दुलकरीम भाईने संवत् १९३८में महम्मदअली ईसाभाईके नामकी दूकान स्थापित की। तथा तय्यबअली सेठ उज्जैनमें कपड़ेका व्यापार करते थे।

वर्तमानमें सेठ नजरअली भाईके ४ पुत्र हैं, इनमेंसे सबसे बड़े सेठ लुकमानभाई नजरअली मिलका कार्यसंचालन करते हैं। फत्हअली सेठके ३ पुत्रोंमें सबसे बड़े पुत्र कोठेकी दूकानका काम करते हैं। सेठ अब्दुलकरीम भाईके पुत्र अब्दुल हुसेन सेठ नजरअली मिलमें काम करते हैं। तथा सेठ तय्यबअली भाईके २ पुत्रोंमें बड़े हसन अलीभाई महत्पुर जीनमें काम करते हैं,एवं छोटे अब्दुलरसूल भाई सियागंज (इन्दौर) की दूकानका संचालन करते हैं।

उज्जैनके नजरअली मिलकी स्थापना सेठ नजरअली भाईने संवत् १९.. इस

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स बृजलाल जमनाधर सराफा—(T. A. Kailasha) इस फर्मपर जयाजीराव कॉटन मिल ग्वालियर और बिरला कॉटन मिल दिल्लीकी एजंसी है। इसके अतिरिक्त देशी और विलायती कपड़ेका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है। उमरेट माचिस फेक्टरीकी सोल एजंसी भी इस फर्मपर है।

(२) ग्वालियर—मेसर्स बृजलाल रामगोपाल· (T. A. Birla) (हेड आफिस) यह फर्म यहांके जयाजीराव कॉटन मिलकी सोल एजण्ट है।

(३) कलकत्ता—हरदेवदास बृजलाल नं० ११७ केनिंग स्ट्रीट (T. A. Lakki) यहां केशोराम कॉटन मिलकी बंगालके लिये सोल एजंसी है।

(४) लाहोर (पंजाब) हरदेवदास जमनाधर—यहां रुई और कपड़ेका व्यापार होता है इस फर्मका संचालन सेठ श्रीनिवासजी करते हैं।

मेसर्स रामलाल जवाहरलाल

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के निवासी सरावगी जातिके हैं। इस फर्मका स्थापन संवत् १९७३ में सेठ जवाहरलालजीने किया। आपके पिताजी सेठ रामलालजीका जीवन बाल्यावस्थासे ही उज्जैनमें व्यतीत हुआ था। सेठ रामलालजीका जन्म संवत् १९१८ में लाडनूंमें हुआ था। आप आरंभिक जीवनसे अंतिम अवस्था तक मालवेकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स विनोदीराम बालचंदके यहां प्रथम रोकड़पर और पश्चात् प्रधान मुनीमीके स्थानपर कार्य करते रहे। इसी समयमें आपने अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बदनावरमें दुकान और जीनिङ्ग फेक्टरी स्थापित की। आपका देहावसान संवत् १९७५ में हुआ।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामलालजीके ३ पुत्र सेठ जवाहरलालजी, श्रीमोहनलालजी और श्री हुकुमचंदजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामलाल जवाहरलाल सराफ—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) बदनावर (धार स्टेट) रामलाल जवाहरलाल—यहां रुईका व्यवसाय तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी एक जिनिंग फेक्टरी भी है।

[illegible] उज्जैन

श्रीयुत [illegible]

[illegible]

[illegible]

सेठ गोविंदरामजीके पुत्र सेठ पूरनमलजी एवं सेठ चम्पालालजी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स गोविंदराम पूरनमल सराफा—यहां रुई, हुण्डी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

(२) जावरा—गोविंदराम पूरनमल कोठीबाजार—यहां रुई आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(३) बारां (कोटा स्टेट) गोविंदराम पूरनमल—यहां आपकी एक जीन है तथा रुई, गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स गोविंदराम नाथूराम

इस फर्मके मालिक खास निवासी फतहपुर (सीकर) के हैं। इस फर्मको सेठ गोविंदरामजीने ८० वर्ष पूर्व स्थापित किया, तथा आपके पुत्र सेठ नाथूरामजीने इसके व्यवसायको तरक्की दी। सेठ नाथूरामजीका देहावसान संवत् १९६२में हुआ। सेठ नाथूरामजीके पुत्र सेठ बालचन्दजीने इस फर्मके रुईके व्यवसायको बढ़ाया, एवं २ जीनिंग फेक्टरियां स्थापित की। आपने एक धर्मशाला मंदिर एवं एक बावड़ी करीब ८० हजार रुपयोंकी लागतसे बनवाया। आपके यहां एक सदाव्रत भी चल रहा है। सेठ बालचन्दजी उज्जैनकी म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर भी रहे थे। आपको ग्वालियर गवर्नमेंटसे सम्मानार्थ सिरोपाव मिले थे। आपका देहावसान संवत् १९७२ में हुआ।

सेठ बालचन्दजीके कोई संतान न होनेसे संवत् १९७२में आपके भतीजे श्री गुलजारीलालजी गोद आये। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ गुलजारी लालजी ही करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स गोविंदराम नाथूराम कुम्हारिया बाजार—यहां रुई आढ़त तथा हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

(२) उज्जैन—बालचन्द गुलजारीलाल अनाजमंडी—यहां गल्लेका व्यापार तथा आसामी लेनदेन का काम होता है।

(३) उज्जैन—बालचन्द गुलजारीलाल, देवास गेट रोड, यहां आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।

(४) बड़नगर—[illegible]—यहां आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है।

(५) बड़नगर—बालचन्द गुलजारीलाल—यहां रुई, गल्ला और कपासका काम होता है।

मेसर्स पारसनाथ कल्याणमल गोधा

[illegible]

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ [illegible]

करते हैं। आपने नीमाड़ स्टोर्स लिमिटेडको [illegible]

नामक एक हॉल बनवाया। संवत् १९८०-८१ में [illegible]

नुकसान उठाना पड़ा। उस समय आपने [illegible]

अन्तर नहीं आने दिया, एवं अपने [illegible]

किया। वर्तमानमें आप मॉरिस नेनोग्रिल [illegible]

B, A, बड़े ही योग्य एवं सदाचारी [illegible] हैं।

मेसर्स दीपाला [illegible]

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ [illegible]

(दिगम्बर जैन) जातिके हैं। इस फर्मका [illegible]

आपका व्यावसायिक परिचय इस [illegible]

(१) खंडवा—दीपाला पूनासा—इस दुकानपर [illegible]

यह खेती बारीका काम होता है।

(२) खंडवा - दीपाला पूनासा बम्बई बाजार—[illegible]

मेसर्स नंद[illegible]

इस दुकानके मालिक ७५ वर्ष [illegible]

इस नामसे खुले ३५ वर्ष हुए हैं। इस [illegible]

व्यापारको सेठ दल्लीरामजीने तरक्की दी। [illegible]

दल्लीरामजीके भाइयोंमेंसे सेठ [illegible]

लालजीका देहावसान हो गया है। [illegible]

नाथूरामजी तथा मुरलीधरजी। [illegible]

लालजीके १ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक [illegible]

(१) खंडवा—नंदराम [illegible]

(२) नीमारखेड़ी (नीमाड़) [illegible]

रुई और आढ़त [illegible]

(३) मोड़ (खंडवा) नंद[illegible]

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर) के निवासी हैं इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स चेनीराम जेसराजके नामसे बम्बईमें है। इसलिये इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ठ ४१ में दिया गया है। इस फर्मपर बम्बईमें टाटा संसकी मिलोंके कपड़े की सोल एजेन्सी है। तथा कपड़ा और बैङ्किगका व्यापार होता है।

उज्जैनमें इस फर्मकी एक पोद्दार जीनिंग फ़ेक्टरी है। और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स बलदेव मांगीलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाणा (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (बांगड़) सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापना ३५ वर्ष पूर्व सेठ बलदेवजीके हाथोंसे हुई थी। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ वेंकटलालजी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स बलदेवजी मांगीलाल सराफा—इस दुकानपर हुण्डी, चिट्ठी लेन देन तथा रुईका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

(२) सुसनेर—हरनारायण बलदेव—यहां आसामी लेन देन तथा खरीद [illegible] काम होता है।

(३) महीदपुर—(होल्कर स्टेट) पूर्णानन्द कम्पनी—यहां इस नामकी जीनिंग फैक्टरी चालू है।

मेसर्स मन्नालाल भागीरथदास *

इस फर्मके मालिक रतनगढ़के निवासी ओसवाल (चतुरमुथा) सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १२ वर्ष हुए। इसमें सेठ छोटमलजीका साझा है। आप [illegible] (मारवाड़) के रहनेवाले हैं पर आपका कुटुम्ब करीब ४० वर्षोंसे यहीं रहता है।

श्री छोटमलजी उज्जैनकी म्युनिसिपैलेटी मजलिसेआम एवं आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपका चित्र [illegible] दिया गया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स मन्नालाल भागीरथ दास, सराफा—यहां हुण्डी चिट्ठी [illegible] का व्यापार होता है।

(२) नागदा—मन्नालाल भागीरथदास—यहां आपकी एक जीनिंग [illegible] है तथा रुईका व्यापार होता है।

---

* इस फर्मका विशेष परिचय और फोटो [illegible] दिया गया है

राय साहब (हीरालालजी हीरालाल [illegible]) लश्कर

सेठ [illegible] ([illegible]) लश्कर

जुगलकिशोर नारायणदास जौहरी, उज्जैन

फतेचन्दजी पारख (मुनीम सर हुकुमचन्दजी) उज्जैन

[illegible] (मुनीम [illegible]) उज्जैन

श्री० [illegible]मलजी ([illegible])

स्पिटलमें भी आपने ३०००) चन्दा दिया है। श्रीयुत चम्पालालजी करीब ३६ वर्षतक आनरेरी जिस्ट्रेट भी रहे हैं। सन् १८९९ तथा १९०० (संवत् १९५६) के भयंकर दुष्कालके समय आपने गरीबोंको बहुत सहायता पहुंचाई। इसके लिये गव्हर्नमेन्टकी ओरसे आपको सार्टिफिकेट मिले हैं। फिलहल आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) खंडवा—रायसाहब चम्पालाल हीरालाल—इस दूकानपर सराफी लेनदेन, कॉटन बिजिनेस तथा पार्टनर ऑफ फैक्टरीजका काम होता है।

(२) खंडवा—यहां आढ़तका काम होता है।

(३) बड़वाहा—यहां आपकी एक जीनिङ्ग और एक प्रेसिङ्ग फेक्टरी है

(४) सनावद " " " "

(५) धरगांव—यहां एक जनिंग फेक्टरी है।

(६) नांदरा— " " "

बोहरा तथा कच्छी व्यापारी

मेसर्स अब्दुलहुसैन अब्दुलअली

इस दूकानके मालिक खास निवासी बुरहानपुरके हैं। खण्डवेमें इस फर्मको आये करीब २५ वर्ष हुए। इस दूकानको सेठ फीका भाई और नजरअलीभाईने बहुत तरक्की दी। इस समय इस दूकानके मालिक आप दोनों सज्जन हैं। आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) खण्डवा—मेसर्स अब्दुलहुसैन अब्दुलअली T.A. mohamadi—इस फर्मकी यहांपर एक जीनिङ्ग और एक प्रेसिंग फैक्टरी है। इसके अतिरिक्त यहांपर रुईका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

(२) भामगढ़ [खण्डवा] अब्दुलहुसैन अब्दुलअली—यहांपर इस फर्मकी एक जीनिङ्ग फैक्टरी है। तथा कॉटन कमीशन एजेन्सी, काश्तकारी और मालगुजारीका काम होता है। यह सबसे पुरानी दुकान है।

(३) सिंगोट [खण्डवा] अब्दुलहुसेन अब्दुलअली—यहांपर भी इस फर्मकी एक जीनिङ्ग फैक्टरी है। तथा आसामीवारी आदि का काम होता है।

समाजकी उन्नतिके प्रति आपके हृदयमें बहुत लगन है। आपहीने पोरवाड़ महासभा स्थापित की थी। इस समय आपके २ पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्रीनारायणदासजी और छोटेका नाम श्रीब्रजकिशोर दासजी है। आप दोनों सज्जन जवाहरातके व्यापारमें अच्छी दक्षता रखते हैं। एवं अब फर्मका काम आप दोनों भाई ही सम्हालते हैं। बम्बई और उज्जैनमें इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जुगुल किशोर नारायणदास जौहरी कालबादेवी—यहां पन्ना तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) उज्जैन—जुगुलकिशोर नारायणदास जौहरी, श्रीकृष्ण भवन—यहां जवाहरातका व्यापार होता है

—:—

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स चिंतामन घासीराम

इस फर्मके मालिक आगर (मालवा) के निवासी हैं। इस फर्मकी स्थापना १० वर्ष पूर्व सेठ घूलचंदजीके हाथोंसे हुई। तथा वर्तमानमें आपही इस दुकानके मालिक हैं। सेठ घूलचंदजीके एक पुत्र श्री रामचन्द्रजी हैं। आप सुयोग्य शिक्षित एवं विचारवान नवयुवक हैं।

यह फर्म यहांके नजरअली मिलका कपड़ा बेचनेकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेका अच्छा व्यवसाय होता है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१—उज्जैन—मेसर्स चिंतामन घासीराम सराफा—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

२—आगर (मालवा) चिंतामन घासीराम—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स वृजलाल जमनाधर

इस दुकानके मालिक [illegible] (जयपुर) के निवासी हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ [illegible] हैं। आपके बड़े भाई सेठ [illegible] यहांकी दुकानका संचालन करते हैं, और दूसरे सेठ [illegible] [illegible] रहते हैं।

गवालियर

GWALIOR

ग्वालियर

ग्वालियरका ऐतिहासिक परिचय

ग्वालियर भारतके प्राचीन स्थानोंमेंसे एक है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। समय
गति विधिके अनुसार इसके इतिहासमें भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कई राज्य यहां बने और
बिगड़ गये, कई सिंहासन इस भूमिपर जमे और अन्तमें उखड़ गये। प्राचीन शिलालेखों, ताम्रपत्र
एवम् दूसरी ऐतिहासिक सामग्रियोंसे विदित होता है कि यह स्थान पहले चौथी और छठवीं शताब्दी
के बीच गुप्त वंशके अधिकारमें रहा। ग्वालियर राज्यके बहुतसे पुराने मन्दिरोंका अन्वेषण करनेसे
पता चलता है कि ये मन्दिर आठवीं और चौदहवीं शताब्दीके बीचके बने हुए हैं। सोलहवीं
शताब्दीमें यहांके इतिहाससे मालूम होता है कि यहां मुसलमानोंका अधिकार रहा। सन् १८५७में
गदरके समय ग्वालियरके किलेका बहुत महत्व रहा है। यहीं तांतिया टोपी और नानासाहबकी
अन्तिम हार हुई थी।

वर्तमानमें यह किला महाराजा सेंधियाके अधिकारमें है। यहीं महाराजा सेंधियाकी राजधानी
है। सेंधिया खान्दान भी अपने समयके इतिहासमें बहुत नामी रहा है। इसका संक्षिप्त परिचय
नीचे दिया जाता है।

सिन्धिया वंशका संक्षिप्त इतिहास

जिस प्रकार इन्दौरका इतिहास महाराजा मल्हारराव, देवी अहल्याबाई और महाराजा यशवंत
रावके कारनामोंसे देदीप्यमान हो रहा है उसी प्रकार इस वंशका इतिहास भी महाराजा महादजी
सिंधिया, महारानी बायजाबाई और महाराज माधवराव सिन्धियाके नामोंसे चमचमा रहा है।

महाराजा महादजी सिन्धियाका नाम इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध है। देवी बायजाबाईका
जीवन बड़ा धार्मिक और पवित्र रहा है। आपका नाम ग्वालियरके इतिहासमें अमर रूपसे
अङ्कित है।

महाराज माधवराव सिन्धियाका नाम वर्तमान राजा महाराजाओंमें बहुत अग्रगण्य है।
आपने जबसे राज्य सूत्र अपने हाथमें लिया था, तभीसे आपका ध्यान एक मात्र प्रजाकी उन्नतिकी

खनिज-पदार्थ

लाल-पीली मिट्टी (गेरू)—इस स्टेटके मुरार-सिरिजमें यह मिट्टी होती है। यह मिट्टी बहुत अच्छी होती है। सन् १९२१-२२ में करीब ३०००० मन मिट्टी यहांसे बहुत कम खर्चमें निकली थी।

अभ्रक—व्यापारिक-उपयोगका अभ्रक गंगापुरके पास होता है। यह अभ्रक बहुत अच्छा होता है। लेकिन कम तादाद में। फिर भी यदि इसको ठीक प्रकारसे निकाला जाय तो मुनाफा मिल सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ घटिया क्वालिटीका अभ्रक चिर-खेड़ाके पास बहुत होता है।

एल्युमिनियम—नरवर, ईसागढ़ और भेलसा नामक परगनोंमें एल्युमिनियम धातु विशेष रूपसे पायी जाती है।

हरी मिट्टी—मन्दसोर और भेलसा नामक परगनोंमें यह मिट्टी पायी जाती है। यह दवाइयोंके काममें आती है।

सिमिटके उपयोगकी वस्तु—पोर्टलैंड सिमिटके बनानेकी उपयोगी वस्तुएं विन्ध्याचलकी पर्वतश्रेणीमें जो शिवपुर G. L. R.के पास है, बहुत मिलती हैं। चूनेके पत्थर भी केलारसके पास वाले पर्वतमें पाये जाते हैं। इनका ठेका ग्वालियर सिमिट कम्पनीको दिया गया है। इस कम्पनीने बनमोर नामक स्थानमें एक कारखाना बनाया है। इसके अतिरिक्त पोर्टलेंड सिमिटके बनानेका कोरालीन नामक चूनेका पत्थर तथा विन्ध्याचल-चूना-पत्थर अमकरा और सलत्रास (नीचम) नामक स्थानोंमें मिलता है।

बिल्डिंग मेटेरियल्स—इस रियासतमें मकानातके उपयोगमें आनेवाली सुन्दर वस्तुएं भी बहुत हैं। ग्वालियरके पास, भंडेर, भेलसाके पास, ग्वालियर और आंतरीके बीचमें पत्थरकी खानें हैं। इसके अतिरिक्त सबलगढ़से १२ मीलपर नागोद (केलारसके पास) और नीमचके पास विसलवास नामक स्थानोंपर चूनेका पत्थर निकलता है।

इसके अतिरिक्त सोना, पन्ना, मेंगनीज़, गंधक, लोहा और गंधक मिश्रित धातु, टीनस्टोन आदि कई वस्तुएं पैदा होती हैं। इसका विशेष वर्णन प्राप्त करनेके लिये ग्वालियर स्टेटके मिनिज़ और जियालोजी डिपार्टमेंटकी ओरसे कुछ ट्रेक्ट छपे हैं—उनसे विदित हो सकता है।

जंगल-विभाग

यहांका जंगल भी बहुत उपयोगी है। इस जंगलमें बहुतसी वस्तुएं पैदा होती हैं, जैसे चिरोंजी, गोंद, मोम, शहद आदि २। इसके अतिरिक्त यहांके कई झाड़ और फूल भी उपयोगी हैं। इनसे कई प्रकारकी वस्तुएं बनती हैं। रंग आदि भी इनसे बनता है। उनमेंसे कुछ झाड़ोंका संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जाता है।

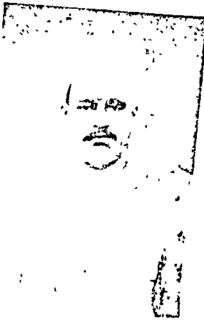

श्री संत [illegible] ादिनी,

नाविकके कारखानेमें आने योग्य लकड़ी

[illegible]

राख

[illegible]

रंगाईके काममें आनेवाली वस्तुएं

[illegible]

आपकी दुकानें जयकिशन गोपीकिशन तथा राधाकिशन जयकिशन आदिके नाम सनावद, हरदा, बड़वाहा, खिड़किया, खरगोन, पन्धाना, बानापुरा आदि स्थानोंपर हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां-

आपकी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियां निम्नाङ्कित हैं—

सेठ राधाकिशन जयकिशन जीनप्रेस फेक्टरी खंडवा
राधाकिशन जयकिशन जीन प्रेस पन्धाना
जयकिशन गोपीकिशन जीनप्रेस नीमाड़खेड़ी
जयकिशन गोपीकिशन कॉटन प्रेस बड़वाहा
गोपीकिशन सुन्दरलाल कॉटन प्रेस खरगोन
जयकिशन गोपीकिशन जीन सनावद
जयकिशन गोपीकिशन प्रेस सनावद
जयकिशन गोपीकिशन जीन बड़वाहा
गोपीकिशन सुन्दरलाल जीन खरगोन
जयकिशन गोपीकिशन जीन कारीकसया
राधाकिशन जयकिशन जीन एण्ड प्रेस हरदा
राधाकिशन जयकिशन जीन बानापुरा

इत्यादि स्थानोंपर आपकी जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

इस फर्मकी सनावद दुकानपर श्री देवकिशनजी माहेश्वरी, खंडवा दुकानपर श्री मुन्[illegible] माहेश्वरी और हरदा दुकानपर श्री रणछोड़दासजी माहेश्वरी काम करते हैं। आप तीनोंही बड़े [illegible] योग्य एवं उदार पुरुष हैं।

मेसर्स तनसुखदास मुकुन्दराम

इस फर्मके संस्थापक सेठ तनसुखरामजी बड़जात्या जिस समय खंडवेमें आये थे, उस समय आपके पास ३ पैसे नगद तथा १ लोटा था। आप मूल निवासी छप्यागढ़के थे। सेठ तनसुखरामजीने परिश्रम एवं अध्यवसायसे अपने जीवन कालहीमें व्यवसायमें बहुत धन एवं यश उपार्जित किया। इस समय आप नीमाड़ प्रान्तके प्रसिद्ध व्यापारी गिने जाने लगे थे। आप [illegible] बड़े [illegible] एवं दूरदर्शक थे। आपका देहावसान ६२ वर्षकी आयुमें संवत् १९६२ में हुआ। सेठ तनसुखरामजीके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मुकुन्दरामजीने इस फर्मके व्यापारको सम्हाला। आप बड़े योग्य और विद्वान पुरुष थे।

रेशा—तार

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कागजके उपयोगमें आनेवाली मुलायम वस्तुएँ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इसके अतिरिक्त यहांके जेलोंमें दरी, कम्बल, तौलिये, फैन्सी कपड़े, चद्दरें, अंडिया सिल्क भी इत्यादि सामान और कारपेट भी तैयार करके बनते हैं। रंगीन सूत तथा यहांसे प्राप्त हो सकता है।

स्थानीय कल-कारखाने

(१) दी जयाजीराव कॉटन मिल्स लिमिटेड ग्वालियर—यह मिल विदेशी मशीनोंसे बनाया हुआ है। इसमें धोतीजोड़ा जीन, ड्रिल, लट्ठा, रंगीन कपड़े आदि सब चीजें बनती हैं। स्टेटमें इसी मिलका या अन्यत्र के मिलोंका कपड़ा बिकता है। इस मिलका कपड़ा सुन्दर और टिकाऊ होता है।

(२) ग्वालियर इंजिनियरिंग वर्क्स कम्पू लश्कर—यह सरकारी कारखाना है। इसमें सब प्रकारकी आटोमेटिक मशीनरी तैय्यार होती है। यहीं ग्वालियर लाइट रेलवेका कारखाना है। उसके डिब्बे आदि यहीं बनते हैं। मोटर आदिकी मशीनरीकी मरम्मत भी यहींपर होती है।

(३) ग्वालियर लेदर फैक्टरी मुरार-ग्वालियर—यहां चमड़ेके सब प्रकारके सामान जैसे बेल्ट, बूट जूते, टेन्टका सामान आदि २ बनते हैं। यहां जितना भी चमड़ा उपयोगमें आता है। करीब २ सब यहां ही तैयार किया जाता है। यहांकी बनी हुई वस्तुएं बाजारमें अपना खास स्थान रखती हैं।

(४) आलीजा दरबार प्रेस लश्कर—यह प्रेस सरकारी है। सेन्ट्रल इन्डियामें यह सबसे बड़ा प्रेस है। यहां प्रिंटिंग, ब्लॉक प्रिंटिंग, लिथो प्रिंटिंग बाइंडिंग आदिका काम होता है। यहां एक टाइप फाउंडरी भी है।

(५) ग्वालियर टिन फैक्टरी स्टेशनरोड लश्कर—यहां सब प्रकारकी चद्दरें पत्तियें बनती हैं।

(६) ग्वालियर सोप फैक्टरी माधवगंज लश्कर—इस फैक्टरीमें सब प्रकारके सुगन्धित तथा कपड़े धोनेके साबुन बनाये जाते हैं। यहां बूट पालिश भी तैय्यार होता है।

(७) गोटा फैक्टरी सराफा लश्कर—यहां सब प्रकारका सुनेरी तथा रुपेरी गोटा बनता है। सेव, कलाबत्तू फीते आदि भी यहां बनते हैं। यहांका गोटा बहुत मशहूर है।

(८) मोटर वर्क्स लश्कर—यहां सब प्रकारकी मोटरकी मरम्मत की जाती है तथा कलर रंगाई आदिका काम भी होता है।

(९) पत्थर फैक्टरी ग्वालियर—यहां सब प्रकारके पत्थर तैयार मिलते हैं। जैसे खम्भे, दरवाजे फर्श आदि २। यदि कोई आर्डर दें तो जैसा आप चाहें वैसा माल यहां मिल सकता है।

(१०) गलीचा फैक्टरी लश्कर—यहां दरी, गलीचे, पायदान, आसन आदि २ [illegible] कपड़े बनते हैं। यहांका माल यूरोप अमेरिका आदि देशोंमें जाता है। [illegible] होता है।

सेठ बूचामल रामबख्श

इस दुकानके स्थापक सेठ बूचामलजी ३६ वर्ष पूर्व हाथरस (यू० पी०) से बहुत ही मामूली हालतमें व्यवसायकी तलाशमें यहां आये थे। आरंभमें आपने यहां एक मिठाईकी दुकानमें साझेमें काम किया। कुछ समय बाद खंडवा स्टेशनपर मिठाईके स्टॉलका कंट्राक्ट ले लिया। कार्य जम गया। उस समय आपने अपने दोनों भाई श्रीरामरतनजी एवं ज्योतिप्रसादजीको बुला लिया, और संगठनसे ज्योतिप्रसाद दौलतरामके नामसे काम करना आरंभ कर दिया। कुछ ही समय बाद यह दुकान, जी० आई० पी० रेलवे, बी० एन० आर०, ईस्ट इण्डिया रेलवे, बी० एन० आर और एन० डब्लू० आर० नामक रेलवे कम्पनियोंके मशहूर कंट्राक्टर हो गये। यहांतक कि इस लाइनकी यह फर्म सारे भारतमें पहिली गिनी जाने लगी। इस दुकानका उपरोक्त रेलवे लाइनोंकी सब बड़ी-बड़ी स्टेशनोंपर मिठाई स्टॉलका कंट्राक्ट है।

सन् १९१८ में सेठ बूचामलजी और १९२३ में सेठ ज्योतिप्रसादजीका देहावसान हो गया। वर्तमानमें सेठ बूचामलजीके पुत्र बलदेवरामजी इस दुकानके कारोबारका संचालन करते हैं। आपकी खंडवा दुकानपर कंट्राक्टके अतिरिक्त सराफी लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है। [illegible] (ज्योतिप्रसादजीके पुत्र) ने खंडवेके पास पंधाना नामक स्थानपर श्रीवेंकटेश्वर प्रेसिंग फैक्टरीके नामसे एक कॉटन प्रेसकी स्थापना की है।

मेसर्स भागचन्द कैलाशचन्द

इस फर्मका हेड ऑफिस अजमेर है। इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचन्दजी एवं कुंवर भागचन्दजी सोनी हैं। आप सरावगी जातिके हैं। आपकी यहांपर जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग हुंडी चिट्ठी रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है।

रायसाहब चम्पालाल हीरालालजी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान [illegible] है। यह फर्म [illegible] बहुत पुरानी है। [illegible] सेठ [illegible] हुए थे। इस समय इस फर्मके मालिक [illegible] सेठ [illegible] हैं। [illegible] पुत्र हैं जिनके नाम [illegible] [illegible], [illegible] एवं [illegible] हैं। [illegible] के पुत्रका नाम [illegible] है। इस समय सारे परिवारका [illegible] [illegible]

दुर रानजीदासजी वैश्य (नन्दराम नारायणदास) लश्कर

सेठ गिरराजजी (धनराज अनराज) लश्कर

[illegible] (लश्कर)

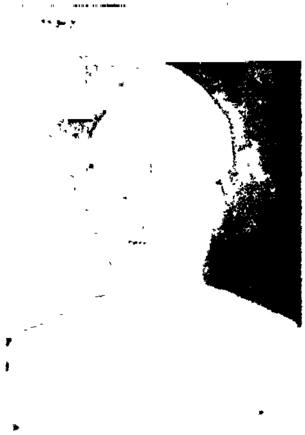

स्व० सेठ [illegible] ([illegible]) लश्कर

रामरतनजी अग्रवाल (वृन्दामल रामरतन) खण्डवा

मे० कीकाभाई (अब्दुल हुसेन अब्दुल अली) खण्डवा

[illegible]जी अग्रवाल (वृन्दामल [illegible]) खण्डवा

मे० अब्दुल लतीफ (हाजी इब्राहिम अब्दु) खण्डवा

आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ पनराजजी, सेठ मनराजजी, और सेठ गंगराजजीने किया। आप तीनोंने इस फर्मको तरक्की भी दी। आपके पश्चात् सेठ रिखराजजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप एक समझदार व्यक्ति हैं। स्थानीय गवर्नमेंट एवम् पब्लिकमें आपका अच्छा सम्मान है। ग्वालियर गवर्नमेंटकी ओरसे आपको कईबार इनाम इकराम भी मिले हैं। आप यहांकी चेम्बर आफ कामर्स व बोर्ड साहुकारानके वॉईस प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ रिखराजजीके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः सिद्धराजजी, सम्पतराजजी, सज्जनराज जी एवम् सूरजराजजी हैं। बड़े पुत्र दुकानके काममें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

लश्कर—मेसर्स पनराज मनराज—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सरकारी काम होता है। जमींदारी का काम भी यहां होता है।

शिवपुरी—मेसर्स पनराज मनराज—यहां गल्लेका व्यापार तथा उसकी आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कोलारस, करेरा, पिछोर, सरदारपुर केम्प मनावर, बामानेर आदि स्थानोंपर भी आपकी फर्म हैं। यहां सरकारी खजानेका काम होता है। आपकी जमींदारीके भी बहुतसे मौजे हैं।

मेसर्स विनोदीराम बालचंद

इस फर्मके मालिक झालरापाटन निवासी जैन जातिके सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है।

इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है। यहांपर इस फर्मकी एक सुन्दर कोठी माणिकविलासके नामसे स्टेशनके पास बनी हुई है। यह फर्म कोऑपरेटिव्ह सोसाइटीकी ट्रेझरर हैं।

मेसर्स मथुरादास जमनादास

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मेड़ताके हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष होगये। इस फर्मको सेठ मथुरादासजीने स्थापित किया था। उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। आपने व्यापारमें अच्छी उन्नति की, और अपनी फर्मको बढ़ाया। आपके पश्चात् सेठ जमनादासजी और सेठ गोकुलदासजी हुए। आपने भी अपनी फर्मका कार्य सुचारु रूपसे चलाया। वर्तमानमें सेठ [illegible]दासजी इस फर्मके मालिक हैं। आप शिक्षित एवं सज्जन पुरुष हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मथुरादास जमनादास सराफा, इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और [illegible] व्यापार होता है। यही आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स हाजी इब्राहिम अब्बू

इस फर्मकी स्थापना सेठ हाजी इब्राहिम अब्बूने ७० वर्ष पूर्वकी थी। आप कोटड़ा-सांगाणी (काठियावाड़) के निवासी थे। पहिले यह दुकान बहुत छोटे रूपमें काम करती थी। खंडवे में ही इसके व्यापारको तरक्की मिली। हाजी इब्राहिम अब्बूके तीन पुत्रोंमेंसे सेठ महम्मद भाई तथा अहमद भाई अपनी अलग २ तिजारत करते हैं तीसरे युसूफ भाईका देहावसान हो गया है।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ महम्मद भाईके पुत्र (१) सेठ हाजी हबीब, (२) सेठ कासम भाई और (३) सेठ अब्दुल लतीफ हैं। सेठ हाजी हबीबभाई खरगोन दुकानपर रहते हैं।

आपकी नीचे लिखे जगहोंपर दुकानें हैं।

(१) खंडवा—हाजी इब्राहिम अब्बू—T. A. Patel यहां सराफी लेन देन, रूईका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(२) खरगोन—हाजीहबीब महम्मद—यहां आपकी २ कॉटन जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अलावा लेन देन, रुईका व्यापार, आढ़त और कुछ घरू कारतका काम होता है।

सेठ यूसुफ अली गनीभाई

यह दुकान खास खंडवेकी ही है, इसके वर्तमान मालिक सेठ कमरुद्दीनजी सेठ महम्मद अली सेठ मकबर अली तथा इनके और भाई हैं। इस दुकानके व्यापारको सेठ युसुफ अलीजीने विशेष तरक्की दी।

वर्तमानमें इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—मेसर्स यूसुफ अली गनी भाई—यहां इस दुकानकी (१) सेंट्रो जीनिंग फेक्टरी तथा (२) दारू गोदाम जीनिंग फेक्टरी नामक दो जीनिंग और वरद कॉटन प्रेस नामक एक कॉटन प्रेस फेक्टरी है। आपकी यहां खंडवा आइस फेक्टरी भी है। इसके अलावा आपकी दूकानपर रूईका व्यापार आढ़त, हार्डवेअर, आर्मी मरचंट आदिका भी व्यापार होता है।

(२) इन्दौर—युसुफ अली गनीभाई एण्डसन्स, सियागंज—यहांपर स्टेंडर्ड आइल कम्पनीके केरोसिन आइलकी एजंसी है।

(३) बड़वाहा (होल्कर स्टेट) युसुफ अली गनी भाई एण्ड सन्स—यहां बर्मा आइल कम्पनी की एजन्सी है।

यह फर्म कपड़ेके अच्छे व्यवसायियोंमें गिनी जाने लगी है। सेठ रामप्रतापजीके पश्चात् सेठ दाऊलालजी और सेठ मूलचंदजीने इस फर्मका संचालन किया। आपके समयमें इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। दरबारमें आपका अच्छा सम्मान था। इस समय सेठ दाऊलालजीके पुत्र सेठ गोपालदासजी एवं सेठ मूलचन्दजीके पुत्र सेठ वंशीधरजी, सेठ गोवर्धनदासजी और सेठ लक्ष्मणदासजी इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—दाऊलाल मूलचंद डीडवाना ओली—इस फर्मपर बनारसी, चंदेरी आदि देशी मालका व्यापार होता है।

लश्कर—रामप्रताप बालाबक्ष—इस नामसे आपके यहां हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

चन्देरी—गोपालदास वंशीधर—यहां चन्देरी मालका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

—:०:—

मक्खनलाल गिरवरलाल

इस फर्मके मालिक धौलपुर-स्टेटके निवासी हैं। आपको ग्वालियर स्टेटके मोरेना नामक स्थानमें आये करीब ४५ वर्ष हुए होंगे। वहांसे यहां आये करीब २० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ रघुवरदयालजीने स्थापित किया। श्री मक्खनलालजी आपके पिताजी होते थे। आप तीन भाई हैं, श्रीयुत गिरवरलालजी, श्री रघुवरदयालजी और श्री प्रभुदयालजी। श्रीयुत गिरवरलालजी मोरेना दुकान का सञ्चालन करते हैं। प्रभुदयालजी भी वहीं रहते हैं। और आप ग्वालियरकी दुकानका संचालन करते हैं। आपके दो पुत्र हैं—श्रीयुत रामस्वरूपजी और रामप्रसादजी। आप दोनों भी दुकानके कामको करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मक्खनलाल गिरवरलाल, यहां कपड़ेका फुटकर तथा थोक दोनों प्रकारका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

मोरेना—मक्खनलाल गिरवरलाल—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका काम होता है।

करौली—मक्खनलाल गिरवरलाल—यहां कपड़ेका काम होता है।

मेंहना—मक्खनलाल प्यारेलाल—यहां गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

जोरा-अलापुर (ग्वालियर) गिरवरलाल प्यारेलाल—यहां कपड़े तथा गल्लेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यहां होता है।

मोरेना—गिरवरलाल रघुवरदयाल—यहां कपड़ा तथा सराफीका काम होता है।

मोरेना—प्रभुदयाल माताप्रसाद—यहां कपड़ेका काम होता है।

—:—

श्री० सेठ मनोहरलालजी ([illegible]) [illegible]

श्री० सेठ [illegible]दासजी ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible]

ओर रहा था। आपने प्रजाके सुभीते और आरामके लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की। आपने अपने राज्यमें कई कारखाने स्थापित करवाये। कईयोंके आप पेट्रन रहे। पोस्टल डिपार्टमेंटमें बहुत तरक्की की। टेलीफोन, बेतारके तार आदि भी आपने लगवाये।

प्रजाके लिए आपने कई डिस्पेंसरीज नई स्थापित कीं। किसानोंके लिए आबपाशीकी बहुत सुन्दर व्यवस्था की। कई तालाब और कुए इसीलिए बनाए गये। आपने इनके लिए कृषिमें आनेवाले कई यंत्र मंगवाए। इन यन्त्रों द्वारा खेतीके कार्यमें बड़ी सहायता मिलती है। सहायता ही नहीं कार्यमें भी बहुत कम समय लगता है। इन यन्त्रोंको स्टेट किसानोंको बहुत सुभीतेके साथ सप्लाय करती है। इन उपायोंसे ग्वालियर स्टेट की कृषिमें भी बहुत उन्नति हुई है। स्टेटमें कापरेटिव्हबैंक, पंचायत बोर्ड आदिकी भी सुन्दर व्यवस्था है।

ग्वालियरके दर्शनीय स्थान

किला, पुरातत्व सम्बन्धी-म्यूजियम (किला), व्यापारिक शोरूम, अजायबघर, सिन्धिया फेमिलीकी छत्रियां, जयाजी चौक, जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पूकोठी, किंग जार्ज पार्क, विक्टोरिया हाल, सिन्धिया रेस कोर्स, महम्मद गौसकी कबर आदि २ हैं।

व्यापारिक महत्व

यों तो ग्वालियर सेन्ट्रल इंडियाके मुख्य २ शहरोंमें गिने जानेके कारण व्यापारिक दृष्टिसे ठीक ही है, पर इन्दौर, उज्जैन आदि शहरोंके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है। हां, बसावटमें यह शहर दूसरे शहरोंकी अपेक्षा थोड़ा सुन्दर और बहुत बड़ा है। यहांका व्यापार विशेषकर सरकारके हाथोंमें है। यहां जितनी भी मशीनरी—कारखाने हैं, उनमें विशेष कारखानोंमें सरकारका डायरेक्ट एवम् इनडायरेक्ट हाथ है। तीन शहर मिलकर एक मंडी कहलाती है। याने लश्कर, मुरार और ग्वालियर। इन तीनों शहरोंके बीचमें G. I. P. रेल्वेका स्टेशन है। तथा ग्वालियर लाईट रेल्वे इन तीनों शहरके सामने होकर निकली है। मुरार-लश्कर और ग्वालियर इन तीनों शहरोंके फासलेमें तांन २ चार २ मिलका फासला है। मिले हुए इन तीनों शहरोंको लश्कर मंडी कहते हैं। यहां गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांसे हजारों मन गल्ला दिसावरोंमें जाता है। घीकी भी यह बहुत बड़ी मंडी है। इसके अलावा इस स्टेटमें और भी कई व्यापारिक मंडियां हैं तथा इस स्टेटके कई स्थानोंमें कई उपयोगी वस्तुएं पैदा होती हैं। उनमेंसे कुछका वर्णन नीचे दिया जाता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :

मेसर्स हेमराज [illegible], [illegible]—[illegible]

[illegible] किरानेका काम होता है।

[illegible])—मेसर्स हेमराज [illegible] [illegible]

काम होता है। आढ़तका काम भी [illegible]

[illegible] ([illegible])—मेसर्स हेमराज [illegible] [illegible]

का व्यापार होता है।

[illegible]—हेमराज [illegible], यहां [illegible]

मेसर्स रामदयाल [illegible]

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ [illegible] हैं। [illegible]

[illegible] जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको [illegible]

[illegible] सेठ रामदयालजी हैं। आपकी [illegible]

[illegible] है कि प्रायः [illegible] [illegible] है [illegible]

बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत [illegible]

पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र [illegible] व्यवसाय [illegible] करते हैं। [illegible]

इस फर्मोंमें सेठ [illegible]जी भी हैं। आपके [illegible] इस फर्मको [illegible]

यहां संस्थाओंके मेम्बर हैं। [illegible] भी आपका [illegible] है। [illegible]

[illegible] व [illegible] इमारत भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

[illegible]—रामदयाल [illegible] [illegible]—[illegible] [illegible]

काम होता है।

मेसर्स आर० एन० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब [illegible] वर्ष हुए। इसके स्थापक [illegible]

है। आप गुजराती [illegible] सज्जन हैं। शुरूमें यहां [illegible] फोटोग्राफीका [illegible]

१९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके [illegible]

चुके हुए थे। [illegible] न होगा कि [illegible] संसारमें [illegible]

[illegible] कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

सालर—ग्वालियर स्टेटमें सालका जंगल बहुत बड़ा है। सारी स्टेटमें करीब ६००, ८०० स्क्वायर माईल्स तक इसका जंगल है। सिर्फ शिवपुर जिलेमें २८० मीलका एक जंगल है। इसके सिवाय ईसागढ़ और नरवर जिलेमें भी बहुतसे सालरके झाड़ हैं।

सालरके झाड़से माचीसकी काड़ियां बहुत अच्छी बनती हैं। इसके सिवाय दूसरे झाड़ोंकी लकड़ीसे इसकी लकड़ी जलनेमें अच्छी होती है। इसकी स्टीम भी बहुत तेज होती है।

सालरके झाड़से एक प्रकारका गोंद निकलता है। इस गोंदसे तारपीनका तेल, रोला (Rosin) और गोंद बनता है। इसकी विशेष जांच करनेपर विदित हुआ है कि इसकी औसत नीचे लिखे अनुसार पड़ती है।

तारपीन	७.५७
रोला	६५.५
गोंद	३२.१

खैर—खैरके झाड़ भी ग्वालियर स्टेटके जंगलोंमें बहुतायतसे पाये जाते हैं। इन झाड़ोंसे कत्था बनाया जाता है। इसके कामका ठेका गायकवाड़ केमिकल कंपनी लि० को दिया गया है। यह कंपनी पोदीनेके फूल, रोशा आदि भी बनाती है। यहांका कत्था बहुत अच्छा और हमेशा बाजारोंमें मिलता है।

करधारी—ये झाड़ भी इस स्टेटके जंगलोंमें बहुत होते हैं। खासकर शिवपुरी और शिवपुर कलाके जंगलोंमें तो ये बहुत ही अधिक हैं। इस झाड़की लकड़ीका कोयला बनाया जाता है इसका कोयला बबूल आदिकी लकड़ीसे बहुत अच्छा होता है। यहांसे आगरा, देहली आदि स्थानोंपर कोयला जाता है। यहांसे ३, ४ लाख मन कोयला बाहर दिसावरोंमें जाता है।

हमलोग करधारी, खैर आदिकी लकड़ीका उपयोग सिर्फ कोयलेहीके बनानेमें करते हैं। बाकी इससे और उपयोगी निकलनेवाली वस्तुओंको खो देते हैं। इससे हमें इन चीजोंसे विशेष लाभ नहीं हो सकता। जर्मन आदि देश इनसे कई प्रकारकी उपयोगी वस्तुएं निकालते हैं। जर्मनी और दासगोंमें इन लकड़ियोंकी वस्तुओंका निम्न लिखित अनुभव प्राप्त हुआ है।

लकड़ीका नाम	जलभाग	कोयला	एसीटेट आफ लाईम	क्रुड वुड स्प्रीट्स	तारका तेल	शार
खैर	१३%	८२६	४६	११.८	११२	९४
सालर	२३%	६३०	३२	२०.०	१०७	८०
करधारी	१४%	७५८	१०१	३२.५	१४६	११०

बिहारीलाल जमनादास
माणिकचन्द बोतराम
निवसेन रामचन्द्र
पुन्नु नस्का
छेलराज जमनादास
हरनारायण हरविलास
हाकीमल रहमतुल्ला

कपड़ेके व्यापारी

नूरचन्द गंगाराम
गनेशीलाल फूलचंद
हीरालाल रघुवरदयाल
देवराम बलदेव
पन्नालाल राजाराम
धन्नालाल जगन्नाथ
बंशीलाल रामचन्द
विनोद मिल्स क्लाथ स्टोर
मोहनलाल [illegible]
मदनलाल गिरधालाल
मनोहरलाल [illegible]
रामचन्द्र [illegible]
मथुराम [illegible]
[illegible] एण्ड [illegible] स्टोर

चन्देरी मालके व्यापारी

[illegible]
[illegible]

घीके व्यापारी

[illegible]
[illegible]

बालचंद प्रभुदयाल
बिहारीलाल जमनादास
भूरामल हरदास
मोतीराम रामचन्द्र

शक्कर व किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम गणेशराम
चेतराम हरकरन
बोलाराम मानिकचंद
द्वारकादास गणेशराम
दीनानाथ प्यारेलाल
फकीरचन्द गनेशराम
मुरलीधर बिरदीचंद
रामचन्द्र कुन्दीलाल
लडूराम जगन्नाथ
छेलराज जमनादास
[illegible]
शिवनारायण शंकरलाल
हरनारायण हरविलास
[illegible]

बर्तनोंके व्यापारी

कुन्दनचंद द्वारकादास
श्री ग्वालियर मेटल वर्क्स
[illegible]
पन्नालाल [illegible]
श्री मार्तंड [illegible] मेटल वर्क्स
[illegible]
[illegible]
[illegible]

इंगलिश नाम	देशी नाम	उपयोगी अंग
Acacia arabica	बबूल	छाल और फूल
Acacia catechu	खैर	कत्था या लकड़ीका भीतरी हिस्सा
Anogeissus Latifolia	धोंकड़ो, धू	फूल और पत्ते
Bauhinia variegata	कचनार	छाल और फूल
Butea frondosa.	ढोला, पलाश, खाखरा	फूल
Cassia fistula	अमलताश	"
Crateva religiosa	वरना	छाल
Mallotus philippinensis,	रोरी	फूल
Morinda tinctoria	आल	फूल
Nyctanthes arbortristis	स्पारी	फूल
Phyllanthus emblica	आंवला	फल
Vitex negundo	समलू; नेगड़	पत्ते
Wrightia tinctoria	दुधी	लकड़ी
Woodfordia floribunda.	धू	फूल
Zizyphus jujuba.	भारवर	जड़
Garuga pinnata.	गूमा	छाल
Adhatoda Vasica	अडूसा	पत्ते

तेल बनानेके उपयोगमें आनेवाली वस्तुएं

महुआकी गुली, चिरोंजी, करंज, कुसुम, आंवला, नीम और बेहरा खासकर तेल बनानेके उपयोगमें आते हैं। ये सब प्रायः ग्वालियर-स्टेटके जंगलमें पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त सिर्फ मन्दसौर प्रान्तमें रोसा पैदा होता है। यह एक प्रकारका घास होता है। पर होता है बड़ा सुगन्धित। इसका तेल इस प्रान्तमें बहुत बनता है तथा बाहर गांव भी जाता है। यह दो तरहका होता है। मोतिया और सोफिया। इस स्टेटमें खस भी पैदा होता है। महाराजा ग्वालियरकी स्कीम थी कि खस, रोसा, लेमन घास आदि सुगन्धित वस्तुओंकी खेतीकी जाय और उनमें बढ़िया तेल इन इण्डी केमिकल इंस्टीट्यूटके द्वारा निकाला जाय। इससे बहुत अधिक लाभ हो सकता है। इस प्रकारके सुगन्धित द्रव्य करीब १६० मन रोजाना निकल सकते हैं। यदि कोई धनिक सज्जन इस ओर ध्यान दे तो बहुत लाभ उठा सकता है।

रतलाम, जावरा और महू-केम्प

RUTLAM, JAORA

&

MHOW CAMP

अमलतास, दशमूल, शहद, मोम, पित्तपापड़ा, मूसलीसफेद, मूसलीशाह, गोंद, रतनजोत गज-पीपल, हारसिंगार, इन्द्रजो, बन्सीघारा, गुलमुंडी, गोरखमुंडी, कंकोलमिर्च, तेजपान, बिनावर कुरंजका बीज आदि २।

गोंद

यहांके जङ्गलोंसे गोंद भी बहुत बड़ी तादादमें पैदा होता है। खासकर खैर और धौकड़ेका गोंद बहुत मीठा और फायदेमन्द होता है। यही गोंद विशेषकर बाहर जाता है। यहांका गोंद बहुत मशहूर है। गोंदकी खास मण्डी शिवपुरी (ग्वालियर) स्टेट है।

इसके अतिरिक्त और भी वस्तुएं जैसे चिरोंजी, करेरी, टेन्ट, सांगर, सतावर तेंदू सादड़, बेर आदि भी बहुत होते हैं। यदि कोई सावधानीसे इन्हें प्राप्त कर भारतीय बाजारमें बेचनेका प्रबन्ध करे तो लाभ हो सकता है।

घासके लिये यहांका जंगल बहुत मशहूर है। यहां कोई विशेष खर्च भी नहीं होता है। यदि कोई यहांसे घासका एक्सपोर्ट शुरू करदे, तो हजारों रुपया कमा सकता है। यहां अभी भी स्टेटके तथा दूसरे कामके लिये बहुत बड़े प्रमाणमें ठेकेदारोंके द्वारा घास आता है। जिस किसी व्यापारीको इसमें दिलचस्पी हो। वह यह व्यापार करना चाहे तो उसे बहुत काफी तादादमें घास मिल सकती है। इस स्टेटमें करीब २६ प्रकारकी घास पैदा होती है। जो भिन्न २ कामोंमें काममें आती होती है।

फेक्ट्रीज एन्ड इण्डस्ट्रीज

सेंट्रलजेल लश्कर—यह ग्वालियर स्टेटका सबसे बड़ा कारागार है। इसकी बहुतसी शाखाएं हैं। इनमें भिन्न २ स्थानोंपर भिन्न २ वस्तुएं बनती हैं, जैसे गलीचे दरियां आदि २। इसके अतिरिक्त फर्नीचर, मोटर और दूसरी गाड़ियोंकी रंगाई, गाड़ियोंकी बनवाई, सिलाई वर्क्स, बेंतका काम आदि २ भी होता है।

...ट फेक्टरी—यह ऊन व सूतके दोनों प्रकारके गलीचे सुन्दर और अद्वितीय बनाती है। ये यहांसे यूरोप और अमेरिकाको भेजे जाते हैं। नमूना देखकर उनके मुताबिक भी बनाये जा सकते हैं। दरबारहाल, ड्राईंगरूम आदिके लिये बड़े २ गलीचे दरियां और बटाई भी यहां बनाई जाती हैं। इस फेक्टरीमें कम्बल भी बहुत अच्छे बनते हैं।

रतलाम

यह स्थान बी० बी० सी० आई० रेल्वेकी छोटी और बड़ी लाइनका जंक्शन है। यहां रेल्वेका बहुत बड़ा लोको स्टाफ है। रेल्वे स्टाफके कारण एवं प्रतिदिन हजारों यात्रियोंके आमद रफ्तके कारण यह स्थान हमेशा बस्तीसे परिपूर्ण रहता है।

रतलाम स्टेशनसे करीब १॥ माइलकी दूरीपर रतलाम शहर है। इन्दौर, ग्वालियरकी तरह यह भी एक छोटा देशी राज्य है। इस राज्यकी नींव जोधपुर नरेश राठोड़वंशी राजा उदयसिंहजी (महाराजा) के पौत्र तथा नरेश दलपतजीके पुत्र राजा रत्नसिंहजीने डाली। कहते हैं कि इस शहरको राजा रत्नसिंहजीने संवत् १७११में बसाया, परन्तु आइने अकबरीमें रतलामका नाम लिखा होनेसे प्रमाणित होता है कि यह स्थान इसके भी पूर्व था। यह हो सकता है कि महाराज रत्नसिंहजीने इसको विशेष तरक्की दी हो। इस राज्यके वर्तमान अधिपति हिज हाईनेस महाराज सज्जनसिंहजी बहादुर के० सी० एस० आई० हैं। आपको पोलो खेलनेका बहुत शौक है। योरोपीय महासमरके समय आप कुछ दल सहित फ्रांसके रणक्षेत्रमें पधारे थे। इस राज्यको १५ तोपोंकी सलामी है।

ट्रेड एण्ड इन्डस्ट्रीज

रतलामकी सराफी बहुत प्रसिद्ध है। यहांके तांबे और पीतलके बर्तन, डब्बे, रंगीन कपड़े आदि वस्तुएं विशेष तैयार होती हैं। मालवाके शहरोंकी अपेक्षा यहां बर्तनोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। चांदी सोनेका व्यापार भी इस स्थानपर अच्छा होता है।
इस शहरमें नीचे लिखे कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

रतलाम गुजरात जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
वर्द्धमान स्पिनिंग जीनिंग फेक्टरी
ओसवाल जीनिंग फेक्टरी
रामदेव दामोदर जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
कोन्सार इवेजक जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स

मेसर्स नन्दराम नारायणदास

इस फर्मके मालिक देहलीके निवासी हैं। आपको यहां आए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके स्थापक सेठ नन्दराम जी थे। सेठ नन्दरामजीके पांच पुत्र थे। इनमेंसे सेठ बालकिशनजी और सेठ पन्नालालजी ने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप ठेकेदारीका काम करते थे। स्टेटमें जो बड़े २ मकान और तलाव नदी आदिके बन्धे हैं ये प्रायः आप हीकी ठेकेदारीमें बने हैं। आपका इस धर्मकी ओर भी अच्छा ध्यान था। आपने ग्वालियर स्टेशनपर एक बहुत ही सुन्दर श्रीकृष्ण-धर्मशाला बनवाई है। ग्वालियर दरबार इसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने इसीके नमूनेकी एक धर्मशाला उज्जैनमें बनवाई है जो सरव्याराजा धर्मशालाके नामसे प्रसिद्ध है। उपरोक्त श्रीकृष्ण धर्मशालाके बनवानेसे ग्वालियर दरबारने आपको उपकारकका खिताब प्रदान किया था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामजीदासजी और सेठ काशीनाथजी हैं। रामजीदास जी सेठ पन्नालालजीके पुत्र हैं और काशीनाथ जी सेठ बालकिशनजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। श्रीयुत रामजीदासजी यहां स्टेटमें ऊंचे पदपर हैं। आपको कई उपाधियां हैं। एवम् यहां की कई सार्वजनिक और सरकारी संस्थाओंके आप मेम्बर हैं। श्रीयुत काशीनाथ जी फर्मके कार्यको संचालित करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—नन्दराम नारायणदास—यहां हुंडी चिट्ठी बैंकिङ्ग और ग्वालियर गवर्नमेण्टकी ठेकेदारीका काम होता है। तारका पता Lashakarwala

बम्बई—नन्दराम नारायणदास पायधुनी—यहां अलसी तिल्हन गल्ला आदिकी कमीशन एजंसीका काम होता है। तारका पता Lashakarwala

---

मेसर्स पनराज भनराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी नागोर (मारवाड़) के हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत होगये हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ पनराजजीके पिता सेठ [illegible] थे।

रतलाममें सेठ बद्रीचंद वर्द्धमानके साझेमें एक लोहेका कारखाना 'श्री जनरल इञ्जिनियरिंग एण्ड फाउंड्री' नामसे है।

मेसर्स बदीचंद वर्द्धमान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान कुंभलगढ़ (मेवाड़) है। वहांसे यह खानदान ताल (रतलाम-स्टेट) में आया। यहांपर [illegible] सेठने संवत् १८००के पूर्व बहुत छोटे रूपमें दूकान की। [illegible] बाद क्रमशः सेठ मानकचंदजी और बद्रीचंदजीने इस दूकानके कार्यको सम्हाला। सेठ बद्रीचंदजीका जन्म संवत् १८७३ और देहावसान सम्वत् १९३५में हुआ। सेठ बद्रीचंदजी [illegible] प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। सेठ बद्रीचन्दजीके पश्चात् उनके ३ पुत्र सेठ अमरचन्दजी, सेठ वच्छराजजी, और सेठ सोभागमलजीकी अलग २ तीन दूकानें कायम हो गईं। वर्तमानमें सेठ अमरचन्दजीकी दूकान बद्रीचन्द वर्द्धमानके नामसे (इसका पुराना नाम मानकचन्द अमरचन्द था) रतलाममें, वच्छराजजीकी दुकान बद्रीचन्द वच्छराजके नामसे जावरेमें, और सोभागमलजीकी दूकान बद्रीचन्द सोभागमलके नामसे [illegible] व्यवसाय कर रही है।

रतलाममें यह दूकान सेठ अमरचंदजी सिंघीयाके द्वारा सम्वत् १९११में स्थापित की गई तथा इसके व्यवसायको विशेष तरक्की भी सेठ अमरचंदजीके ही हाथोंसे मिली। रतलाममें आपकी दूकान [illegible] के नामसे मशहूर है। इस कुलमें सेठ अमरचंदजी मशहूर व्यक्ति हो गये हैं। जनता और [illegible] में आपका अच्छा सम्मान था।

सेठ अमरचंदजी ओसवाल स्थानकवासी समाजमें बहुत प्रभावशाली पुरुष माने जाते थे। [illegible] कान्फ्रेंसके स्थापन करनेमें ही आप इसमें प्रधान भाग लेते रहे। आपहीके विशेष [illegible] से संवत् १९६५में रतलाममें स्थानकवासी कान्फ्रेंसका अधिवेशन हुआ था। और उसमें [illegible] प्रेसिडेंट भी रहे थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ अमरचंदजीके पुत्र सेठ वर्द्धमानजी सिंघीया हैं। आप भी [illegible] के साथ [illegible] भाग लेते हैं। [illegible] अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस [illegible] रतलामके जैन ट्रेनिंग कालेजके भी आप [illegible] थे। [illegible] संवत् १९९१में २८ [illegible]

[illegible]

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स गणेशीलाल फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक सेठ फूलचंदजी हैं। आप सरावगी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान तूंगार (जयपुर राज्य) का है। आपके खानदानको यहां बसे करीब ८० वर्ष होगये होंगे। इस फर्मको सेठ गणेशीलालजीने स्थापित की। आपके हाथोंसे इसकी साधारण उन्नति हुई। सेठ गणेशीलालजी सेठ फूलचंदजीके पिता थे। सेठ फूलचन्दजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई।

सेठ फूलचंदजीका यहांकी सरकारमें अच्छा सम्मान है। दरबारने आपको कई सर्टिफिकेट एवं सोनेके मेडिल्स दिये हैं। आप चेम्बर आफ कामर्स आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम कुंवर बुद्धमलजी हैं। आप भी इस समय दुकानके कामका संचालन करते हैं। सेठ फूलचंदजीने अपने हाथोंकी कमाईसे लश्करमें एक बहुत सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। इसमें सब प्रकारका आराम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—गनेशीलाल फूलचंद, नयाबाजार—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। यह दुकान यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें बहुत बड़ी और प्रतिष्ठित समझी जाती है।

लश्कर—फूलचंद बुद्धमल,—इस फर्मपर जयाजीराव काटन मिलकी गवालियर प्रांतके लिये सोल एजंसी है।

लश्कर—बुद्धमल कंसरीमल—यहां कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

—•—

मेसर्स दाऊलाल मूलचंद

इस फर्मके मालिक हिण्डौनके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ [illegible] स्थापित की। जिस समय यह फर्म स्थापित हुई थी, उस समय इसकी साधारण स्थिति थी। धीरे २ व्यापारमें उन्नति होती गई और

सेठ भागीरथदासजी (मन्नालाल भागीरथदास) रतलाम

सेठ छोटमलजी (मन्नालाल भागीरथदास) उज्जैन

रतनजी S/o सेठ भागीरथमलजी रतलाम

कुंवर

मोरेना—विहारीलाल जमनादास—यहां गल्ला और घीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

डावरा—(गवाल्यिर) विहारीलाल जमनालाल यहां भी गल्ला तथा घीका व्यापार होता है।
आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है ।

मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक नारनोलके निवासी हैं। आपको यहां आये करीब १२५ वर्ष हुए होंगे। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ चुन्नीलालजीने स्थापित किया। पहले यह फर्म मित्रसेन पोकरमलके नामसे व्यवसाय करती थी। इस फर्मके प्रथम पुरुष सेठ मित्रसेनजी महाराज सिंधियाके साथ लड़ाईमें भरती होकर नारनोलसे यहां आये थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रहलाददासजी हैं। आपके पिता सेठ फूलचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आपने इसकी और भी स्थानोंपर ब्रांचेस खोलीं। सेठ प्रहलाददासजी बड़े मिलनसार सज्जन हैं। आपने गवालियर गवर्नमेन्टके साथ अच्छा ताल्लुक कर रखा है। सरकारने आपको गवाल्यिर गिर्दका खजांची नियुक्त किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर हे० आ०—मे० मित्रसेन रामचन्द्र, दौलतगंज—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा गल्ला व्यापार होता है।

लश्कर—मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र, हनुमानमंडी—यहां गल्ला और शक्करका घरू तथा आढ़तका व्यापार होता है।

शिवपुरकलां (गवाल्यिर) मित्रसेन रामचन्द्र—यहां गल्लेकी आढ़तका कार्य होता है।

भिंड (गवाल्यिर) शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी आढ़तका व्यापार होता है। इसमें आपका साझा है। इस फर्मपर मुनीम ग्यासीलालजी काम करते हैं।

मेसर्स खेमराज जमनादास

इस फर्मके मालिक गवालियरहीके रहनेवाले हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ खेमराजजी थे। आपके पुत्र सेठ जमनादासजीने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। इसकी और स्थानोंमें ब्रांचेस खोलीं। आपके इस समय दो पुत्र हैं। सेठ घासीरामजी और सेठ छोटेलालजी आप दोनों ही वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हैं। आप यहांकी म्युनिसिपेलिटी तथा अन्य कई कमेटियोंके मेम्बर हैं।

...के दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीलक्ष्मीनारायणजी एवं तनसुखरायजी हैं ... व्यवसायमें सहयोग लेते हैं।

आपकी फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) रतलाम—मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स, चांदनी चौक T. A. Jhalani—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठी और साहुकारी लेनदेनका काम होता है।

(२) बम्बई—मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स, जोहरी बाजार T. A. Satsan—इस दुकानपर आढ़त, दलाली और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(३) बम्बई—लक्ष्मीनारायण तनसुखलाल मूलजी जेठा मारकीट T. A. Parbhamha—इस फर्मपर बम्बईके हिन्दुस्थान, सेंचुरी और डाइंग मिलकी एजंसी है। तथा इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। चरखा छापके लाल कपड़ेने विलायती कपड़ेके रंगके मालकी काम्पीटीशनमें अच्छी प्रतिष्ठा पाई है।

(४) बम्बई—भागीरथदास लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी बाजार—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

(५) उज्जैन—मुन्नालाल भागीरथदास—इस दुकानमें श्रीछोटमलजीका साझा है। इस दुकानका एवं इसकी तालुक दुकानोंका परिचय उज्जैनमें दिया गया है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स सीताराम गोधाजी

इस दुकानके मालिक नागोर (मारवाड़) के निवासी ओसवाल (गांधी) जातिके हैं इस दुकानके वर्तमान मालिक सेठ नेमीचन्दजी हैं। आपकी ६ पीढ़ी पूर्व सेठ हीराचन्दजी साधारन हालतमें सर्व प्रथम यहां आये थे। पश्चात् संवत् १६१४ में सेठ गोधाजीने इस दुकानकी स्थापनाकर व्यापारको तरक्की दी। सेठ गोधाजीके समयमें रतलाम स्टेटके बहुतसे गांव इस दुकानकी जमोतीमें (सरकारी मालगुजारीका भुगतान) रहे, जिससे इस दुकानको तरक्कीमें विशेष मदद मिली सेठ गोधाजीका देहावसान सं० १९७८ में हुआ। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रतलाम—मेसर्स सीताराम गोधाजी धानमंडी—इस दुकान पर गल्लेकी आढ़तका [illegible] व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस दुकानपर हुंडी चिट्ठी तथा रुईका [illegible] व्यवसाय होता है।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानकवासी जैनसम्प्रदायके [illegible] हैं।

सेठ मूलचन्दजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीसत्यनारायणजी एवं रामगोपालजी हैं। दोनों अध्ययनमें व्यस्त रहते हैं।

आपकी फर्मोंका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मुन्नालाल नागरमलदास एण्ड सन्स, चांदनी चौक T. A. Jhalani—यहां कई, कपड़ा तथा हुंडी चिट्ठी और बाहुबारी डेनदेनका काम होता है।

(२) बम्बई—मुन्नालाल नागरमलदास एण्ड सन्स, जौहरी बाजार T. A. Sateen—इस दुकानपर कपड़ा, रूईका और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(३) बम्बई—श्रीगोपालदास वनुकलाल रुईकी गेडा मारकेट T. A. Parbhamha—इस फर्मपर बम्बईके हिन्दुस्थान, सेंचुरी और डाइंग मिलोंके एजेंसी है। तथा इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। पहले आपके यहां कपड़ेमें विलायती कपड़ेके रंगके मालकी कम्पनीयोंमें अच्छी प्रतिष्ठा पाई है।

(४) बम्बई—नागरमलदास दलसुखराम मारवाड़ी बाजार—यहां रूईका व्यापार होता है।

(५) उज्जैन—मुन्नालाल नागरमलदास—इस दुकानमें श्रीओंकारजीका साझा है। इस दुकानका एवं इसकी बाकी दुकानोंका परिचय उज्जैनमें दिया गया है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स सीताराम गोधाजी

इस दुकानके मालिक नागौर (मारवाड़) के निवासी ओसवाल जाति [illegible]। इस दुकानके वर्तमान मालिक सेठ नेमीचन्दजी हैं। आपके ३ पीढ़ी पूर्व सेठ [illegible] कलकत्तेमें सर्व प्रथम यहां आये थे। पश्चात् संवत् १९१४ में सेठ गोधाजीने [illegible] व्यापारको करते रहे। सेठ गोधाजीके समयमें रतलाम स्टेटके चहुंओर [illegible] (सरकारी मालगुजारीका जुगतान) रहे, जिससे इस दुकानकी [illegible] गोधाजीका देहान्त सं० १९८६ में हुआ। इस दुकानका व्यापारिक परिचय [illegible]

कलकत्ता—मेसर्स सीताराम गोधाजी धानमंडी—इस दुकान पर [illegible] व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस दुकानपर [illegible] व्यवसाय होता है।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानकवासी जैनसम्प्रदायके [illegible]

श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाईके संचालन छोड़नेके पश्चात् ही फोटोग्राफीके साथही साथ सन् १९०८ में ब्लाक बनानेका कारखाना एवम् सन् १९२३ में आर्ट प्रिंटिङ्ग प्रेसके नामसे एक प्रेस खोला गया। ये दोनों विभाग इस समयतक बराबर अपना कार्य कर रहे हैं। फोटोग्राफी और ब्लाकके विभागका संचालन श्री० माधव लक्ष्मण देसाई और प्रेस विभागका संचालन श्री नारायण लक्ष्मण देसाई कर रहे हैं। आप ग्वालियर दरबारके खास फोटोग्राफर हैं।

आपके कारखानेमें छपाई, ब्लाक बनवाई और फोटोग्राफीका काम बहुत सुन्दर होता है। ग्वालियरमें इस व्यवसायमें यह फर्म सबसे बड़ी और सबसे पुरानी है।

बैंकर्स

उदयराम रामलाल
चिरञ्जीलाल रामरतन
छेदीलाल चतुरभुज
नरसिंहदास हरप्रसाद
नन्दराम नारायणदास
नारायणदास लक्ष्मणदास
धनराज भनराज
शाह बनारसीदास
विनोदीराम बालचंद
भूधरराम खाजूराम
मथुरादास जमनादास
मूलचन्द नेमीचन्द
धनसुख शालिगराम
धनरतन रामदेव
भोराम शुभकरण
धन्नासुख हीराचन्द
हरसुख धनसुख

चांदी सोनेके व्यापारी

कजोड़ीमल मूलचन्द
भीमराज महादेव
रामप्रसाद लालचन्द
रामचन्द्र फूलचन्द
सुगनचन्द कन्हैयालाल
सीताराम बल्देव
हीरालाल मोतीलाल
हजारीमल हुकुमचन्द
हमीरमल छगनमल

गल्लेके व्यापारी

किशनचन्द रामबख्श
कन्हैयालाल हजारीलाल
गंगाराम शिवनाथ
गणेशराम हिम्मतराम
गोविन्दराम गणेशराम
गोपीमल रामचन्द्र
देवाराम मुग्धामल

जावरा

यह शहर आर० एम० आर लाइनपर रतलामके नजदीक है। इस स्थानपर मुसल्मानी राज्य है। यहांके अधिपति नवाब कहलाते हैं। इस स्टेटके आसपास रतलाम, ग्वालियर, इन्दौर [illegible] [illegible] तथा [illegible] आदि राज्य हैं। यहांकी पैदावारमें कपास, ज्वार, चना गेहूं, जौ, मकई, इत्यादि [illegible], [illegible], [illegible], और [illegible] आदि हैं। [illegible] [illegible] [illegible] पैदावार [illegible] होती है। इनमेंसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाती है। [illegible] [illegible] १) से [illegible] २) तक [illegible] भाव हो जाता है।

इस शहरमें कपासका व्यवसाय भी अच्छा होता है। इस स्थानपर निम्न जिनिंग फैक्टरियां हैं।

श्री वेंकटेश्वर स्टीम जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी

कल्याणमल गोविंदराम जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी

गणेश जीनिंग फैक्टरी ([illegible])

मुकुंदराम हरिवल्लभ जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी

[illegible] जीनिंग फैक्टरी

इस शहरके [illegible] [illegible] और [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। इस स्थानपर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। इस शहरके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स हनुमान गोविंदराम

इस फर्मके [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ।

जनरल मरचेंट्स

[illegible] मूसाभाई
[illegible] करीमभाई
[illegible]
[illegible] [illegible]
गुलाबचंद जैनी
[illegible]
[illegible] फूलचंद
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अत्तार एण्ड ड्रगिस्ट

[illegible] जैनी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सूतके व्यापारी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

फोटोग्राफर एण्ड आर्टिस्ट

[illegible]

गोटेके व्यापारी

कन्हैयालाल प्रकाशचन्द
जवाहरमलजी सराफ
हीरालाल कन्हैयालाल

तिजोरी व ताले बनानेवाले

ग्वालियर इन्जिनियरिंग वर्क्स
ग्वालियर ट्रंक फेक्टरी [illegible]

लोहेके व्यापारी

केसरीमल पहाड़ी
गणपतलाल रामनाथ
गोपीलाल छोटेलाल
लालूमल कन्हैयालाल
लालूमल परमानन्द
हीरालाल मूलचन्द

स्टेशनरी मरचेंट्स

अमोलकचन्द मोती कागजी
[illegible] कागजी
चिमनलाल फूलचन्द कागजी

प्रिंटिंग प्रेस

अलिजा दरबार प्रेस, [illegible]

होटल्स और धर्मशालाएं

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्री० आत्मारामजी ललावत, मऊ

सेठ जवरचन्दजी शाह (मूलचन्द एण्ड सन्स) मऊ

श्री [illegible] मऊ

मऊ-केम्प

मऊ-केम्प बी० बी० सी० आई के आर० एम० आर० डिवीजन का बहुत बड़ा स्टेशन है। यह स्थान अंग्रेजों की छावनी है। यहांकी बस्ती बहुत साफ सुथरी एवं खुली हुई है। इस छावनीमें फेन्सी कपड़ेके व्यापारी, कंट्राक्टर्स, जनरल मरचेंट्स एवं अंग्रेजोंके उपयोगमें आनेवाले सामान रखनेवाले व्यापारियोंकी बहुतसी दुकानें हैं। यह शहर इन्दौरसे १४ मीलकी दूरीपर है। इन्दौर यहांके लिये स्टेशनसे नियमित ट्रेनोंके अतिरिक्त ६ लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। यहां कई डेरी फार्म्स हैं। इसलिये आसपासका दूध दही सब यहां खींचकर चला आता है। यह वृटिश छावनी चारों ओर होल्कर स्टेटसे घिरी हुई है। यहांके व्यवसायियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स हरकिशन रामलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाणा (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (लालवत) जातिके हैं। इस दुकानको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्व प्रथम सेठ हरकिशनजीने इस दुकानके कारोबारको शुरू किया था। आपके बाद क्रमशः सेठ रामलालजी, सेठ मदनकिशनजी, सेठ हरसुखदासजी तथा सेठ आशारामजीने इस दुकानके कामको सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ आशारामजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मऊ—हरकिशन रामलाल—यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, कपड़ेका व्यापार और गवर्नमेंट ट्रेजरीका काम होता है।

२ बम्बई—आशाराम लालवत कालबादेवी T. A. Frend यहां बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

३ इन्दौर—हरसुखदास आशाराम, सियागंज T. A. Lalawat इस दुकानपर बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन्स मरचेंट्स

मेसर्स गणेशदास सोभागमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी कोटावाले हैं। आपका पूर्ण परिचय कोटेमें चित्रों सहित दिया गया है। [illegible] दुकानपर लाडूकी लेनदेन हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन व्यापार होता है।

मेसर्स धनराज केशरीमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास मालपुरा (जयपुर स्टेट) के हैं। इस दुकानको सेठ धनराजजीने स्थापित किया, तथा इसके व्यापारको आपने, एवं आपके पुत्र सेठ केशरीमलजीने बढ़ाया। सेठ केशरीमलजी और आपके पुत्र श्री मानकीमलजी अच्छे विचारोंके सज्जन हैं। इसी फर्मके व्यापारमें आपने बड़ा भाग लिया है। कुछ समय पूर्व आपने [illegible] [illegible] बनानेका एक कारखाना भी खोला था।

सेठ केशरीमलजीके २ भाई और २ पुत्र हैं। बड़े भाईका नाम श्री पन्नालालजी तथा छोटेका नाम श्री [illegible] हैं। तथा पुत्रोंके नाम श्री मानकीमलजी एवं श्री कुन्दनमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) [illegible]—धनराज केशरीमल—इस दुकानपर रुई, कपड़ा तथा हुंडीचिट्ठी और लाडूकी लेनदेनका काम होता है।

(२) बम्बई—धनराज [illegible] कालबादेवी T. A. [illegible] इस दुकानपर कपड़ा, रुई, [illegible] तथा [illegible] का काम होता है।

(३) [illegible]—[illegible]—T. A. [illegible] [illegible] कपड़ा तथा [illegible] व्यापार होता है।

[illegible]

लालजी इस फर्मके सञ्चालक हैं। आपके बड़े भाई श्रीनाथूलालजी इन्दौर बैंकके डायरेक्टर हैं; तथा अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। सेठ मदनलालके छोटे भाई श्री रामकिशनजी इसी फर्मके साथ काम करते हैं।

इस समय आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) मऊकेन्ट—मदनलाल शिवबख्श एण्ड सन्स—इस फर्मपर बृटिश गवर्नमेंट तथा होलकर स्टेटके कंट्राक्ट लिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त सराफी लेन देनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मदनलाल शिवबख्श बड़ा सराफा—इस फर्मपर भी सराफी और कन्ट्राक्टका काम होता है।

बैंकर्स एण्ड ग्रेन मर्चेण्ट

गनेशराम भागचन्द सदर बाजार

महादेव शंकर

शिवदयाल रोशनलाल

हनुमतलाल आशाराम सदर बाजार

कन्ट्राक्टर्स

किशनलाल दीनदयाल एण्ड सन्स बैंकर

छज्जूलाल एण्ड सन्स बम्बई बाजार

मदनलाल शिवबख्श एण्ड सन्स मोतीबाजार

हीरालाल एण्ड संस बम्बई बाजार

बजाज मरचेंट

किशनलाल तिवारी एण्ड सन्स (क्लाथ मरचेंट)

मूलचंद एण्ड सन्स बम्बई बाजार

मन्नूलाल मंगलचंद बम्बई बाजार

सेठीलाल हीरालाल बम्बई बाजार

ए० बालचंद एण्ड को बम्बई बाजार

किशनलाल पाटोदी बम्बई बाजार

रामचन्द्र सेठी एण्ड सन्स

जनरल मरचेंट

अमरजी बुद्धी लुकमानजी

अलीभाई बुद्धा गुलामहुसैन (इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रेस)

ईसुफ अली अब्दुल अली (वाच मरचेंट)

कमरुद्दीन कुत्बा महम्मदअली (ग्लास मरचेंट)

केमन एण्ड को० (नूरिया इण्डिया स्टोर्स)

के० गुलाम हुसैन एण्ड सन्स

सी० कादर भाई एण्ड सन्स

महम्मदअली नूरभाई

दि मऊ इम्पोरियम

हैदरअली एण्ड सन्स

एन० आर० सी० हुसैन एण्ड सन्स

महम्मद अली इब्राहिमजी अत्तार

लिगार्ड पेरिन एण्ड को० (ग्रोसर्स, ड्रेपर्स, टेलर्स)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सेठ वर्द्धमानजी पीतल्या (मे॰ [illegible])

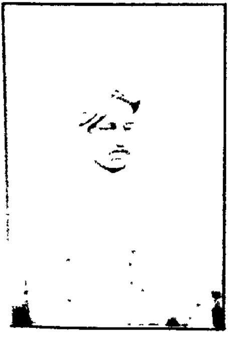

[illegible]

गवालियर-स्टेट

GWALIOR-STATE

(२) रतलाम—वर्द्धमान नथमल—इस फर्मके यने सोनेके दागीने बाजारमें बड़े प्रामाणिक माने
(३) इन्दौर—वर्द्धमान नथमल—यहां व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका कारबार होता है।
वर्द्धमान नथमल नामकी दूकानोंमें आपके भाई तालवालोंका साझा है।

मेसर्स वदीचन्द सोभागमल

इस फर्मका पूर्व परिचय विस्तृत रूपसे सेठ वदीचन्द वर्द्धमान नामक फर्ममें दे दिया। सेठ अमरचन्दजी पीतलियाके छोटे भाई सेठ सोभागमलजी पीतलियाकी दुकान यहां है। इस समय दुकानके मालिक सेठ सोभागमलजीके पुत्र श्रीनथमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[illegible]—वदीचन्द सोभागमल—इस दुकानपर लेनदेन, हुंडी चिट्ठी रहन तथा रुई और [illegible] व्यापार होता है।

रतलाम—सोभागमल नथमल—यहां व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त सेठ वदीचन्द वर्द्धमान और आपके साझेमें रतलाम और इन्दौरमें व॰ नथमलके नामसे दुकानें हैं। जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।

मेसर्स वीसाजी जवरचन्द

इस फर्मके मालिक वीसा पोरवाड़ जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। यह दुकान [illegible] स्थापित है। इस दुकानके व्यापारको सेठ प्यारचन्दजीने बहुत बढ़ाया तथा व्यापारमें [illegible] अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ प्यारचन्दजीके पुत्र [illegible]चन्दजी हैं।

इस दुकानपर आढ़त, हुन्डी चिट्ठी, रहन, साहुकारी लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मारवाड़ (भारत) के हैं। पहिले पहिल सेठ [illegible] [illegible] आकर [illegible] [illegible] [illegible] दुकान की। सेठ [illegible] [illegible] मुन्नालालजीने [illegible] इस दुकानकी स्थापना की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ [illegible] इस दुकानके व्यापारको विशेष तरक्की दी। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] सेठ [illegible]। [illegible] सेठ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। आपकी फर्मने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। जिसमें १०० [illegible] रहते हैं।

मंदसोर

आर० एम० आर० लाइनके खंडवा अजमेर सेक्शनके मध्य नीमचके पास यह शहर बसा हुआ है। यह स्थान रतलामसे ८२ मील, सीतामऊसे २१ मील नीमचसे ३१ मील और प्रतापगढ़से २० मील है। मंदसोर, ग्वालियर स्टेटका एक अच्छा आबाद परगना है। इसके चारों ओर उदयपुर, इंदौर, झालावाड़, सीतामऊ, प्रतापगढ़, जावरा आदि स्टेटोंके आ जानेसे यहांके व्यापारियोंका संबंध इस शहरसे रहता है। मन्दसोर जिलेकी मनुष्य संख्या २०३७३५४ है। इस जिलेमें १८ जीनिंग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जिनमें सन् १९३१-३२में ६१५८११ मन कपास लोढ़ा गया था, जिससे १६६३१ गांठ बंधी थी। मन्दसोर जिलेकी भूमि अफीमकी पैदावारके लिये बहुत अच्छी है।

मन्दसोर शहर—यह बहुत पुरानी वस्ती है। जब बी० बी० सी० आई०की रेलवे लाइन नहीं खुली थी इस समय करीब पचास पचास कोस तकके व्यापारी यहांसे गाड़ियों और ऊंटोंपर माल लादकर ले जाते थे। इस समय भी इस शहरमें किराना, कपड़ा, शक्कर, केरोसिन तेल, तथा [illegible] मालका अच्छा व्यवसाय होता है। सन् १९३२में मन्दसोर शहरमें आने और जानेवाले मालका विवरण इस प्रकार है।

जानेवाला माल		आनेवाला माल	
अनाज	६३५४ मन	गेहूं	८११ मन
गुड़	१२५८२ मन	ज्वार	१६८१६ मन
शक्कर	२४१५० मन	चना	४४१६ मन
[illegible]	३०००० थैले	मक्की	१३८१ मन
रुई	२०८२ मन	[illegible]	२११८४ मन
खोपरा	३२१७ मन	[illegible] तेल	१०४ मन
[illegible]	४३२०) रु०	[illegible]	४३०६ मन
किराना	१३८३१) रु०	[illegible]	३०६१०) रु०
कपड़ा	१०३१) रु०	[illegible]	३१५४९ मन
[illegible]	३०६५) रु०	[illegible]	४८१ मन
[illegible]	८११३५) रु०		

मंदसोर

[illegible] मन्दसोर स्टेशनके [illegible] यह शहर बसा हुआ है। यह स्थान [illegible] ५२ मील, [illegible] २१ मील, [illegible] ३१ मील और [illegible] ७० मील है। मंदसोर, ग्वालियर स्टेटका एक अच्छा [illegible] है। इसके चारों ओर [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि स्टेटोंका [illegible] है। मन्दसोर जिलेकी मनुष्य संख्या २०२७७५ है। इस जिलेमें १८ [illegible] और २ प्रेसिंग फैक्टरियां हैं। जिनमें सन् १९२१-२२में ११७०११ मन कपास [illegible] तथा जिनमें ११६०१ गांठें बंधी थीं। मन्दसोर जिलेकी भूमि [illegible] बहुत अच्छी है।

मन्दसोर शहर—यह बहुत पुराना शहर है। [illegible] । इस समय भी इस शहरमें [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि का व्यापार होता है। सन् १९२५में मन्दसोर शहरमें आने और जानेवाले मालका विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल		जानेवाला माल	
[illegible]	१३२५४ मन	गेहूं	८११६ मन
गुड़	१२५२२ मन	जुवार	१६८२६ मन
शक्कर	२५१२७ मन	चना	५७१६ मन
[illegible]	३०००० पीपे	मक्की	१७८१ मन
[illegible]	६७८० मन	कपास	२१६८४ मन
[illegible]	३२१० मन	[illegible]	६५७ मन
[illegible]	५१२८) रु०	[illegible]	५३७२ मन
[illegible]	१११२३) रु०	[illegible]	२२३१२) रु०
[illegible]	१८५१) रु०	[illegible] गांठें	५१२५२ मन
[illegible]	२०१२५) रु०	[illegible] गांठें	५८६ मन
[illegible]	८१५६१) रु०		

नन्दुरबार

अ० २१ उ० अ० ७४ पू० ताप्तीके खंडवा अजमेर रेलवेके मध्य स्टेशनके पास यह शहर बसा हुआ है। यह स्थान सूरतसे ८२ मील, भुसावलसे २१ मील, [illegible] ३१ मील और [illegible] २० मील है। नंदुरबार, [illegible] स्टेशन एक अच्छा व्यापारिक [illegible] लगता है। इसके चारों ओर [illegible], इंदौर, [illegible], [illegible], [illegible] आदि स्टेशनोंके आ जानेसे यहांके व्यापारियोंका संबंध सब शहरोंसे रहता है। नन्दुरबार जिलेकी मनुष्य संख्या २०३७७३५१ है। इस जिलेमें १८ जीनिंग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जिनमें सन् १९२१-२२में ११४८११ मन कपास लोढ़ा गया था, जिससे १९९३१ गांठें बंधी थी।

नन्दुरबार शहर—यह बहुत पुरानी बस्ती है। नन्दुरबार जिलेकी भूमि अफीमकी पैदावारके लिये बहुत अच्छी है। जब बी० बी० सी० आई०की [लाइन नहीं] खुली थी उस समय [illegible] [illegible] बैल गाड़ियों और ऊंटों द्वारा ले जाते थे। इस समय भी इस शहरमें किराना, कपड़ा, रुई, जीनिंग, प्रेस तथा [illegible] आदि व्यापार होता है। सन् १९२५में नन्दुरबार शहरमें आने और जानेवाले मालका विवरण इस प्रकार है।

पदार्थ	जानेवाला माल
रुई	११३५४ मन
दाल	१२५२२ मन
तेल [illegible]	२४१५७ मन
[illegible]	३०००० पीपे
सोना	२८८० मन
[illegible]	२२१७ मन
[illegible]	४११२०) रु०
[illegible]	११२२३) रु०
[illegible]	१८४१) रु०
[illegible]	२०२५) रु०
[illegible]	८१५३३) रु०

आनेवाला माल	
गेहूं	
ज्वार	८११ मन
चना	११८३३ मन
बाजरी	४४११ मन
[illegible]	१३८१ मन
विलायती तेल	२११८४ मन
[illegible]	६०४ मन
[illegible]	४३८२ मन
[illegible]	२२६१५) रु०
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

बैङ्कर्स और काटन मरचेंट्स

मेसर्स गनेशदास सोभागमल
- „ अमरचन्द डूंगरसी
- „ धनराज केशरीमल
- „ पुरुषोत्तमदास हरीवल्लभ
- „ पन्नाभाई लाल
- „ बद्रीचन्द वर्द्धमान
- „ वर्द्धमान केशरीमल
- „ बीमाजी अमरचन्द
- „ भगवीराम भभूतसिंह
- „ मुन्नालाल भागीरथराम
- „ रूपचन्द शिवदास
- „ गनेश नथमल
- „ सोभागमल नथमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स कस्तूरचन्द माईचन्द
- „ गोकलजी फतहचन्द
- „ अमरचन्द जोतीचन्द
- „ रतनचन्द लक्ष्मीनारायण
- „ गोविन्द पुरुषोत्तम
- „ सरूपचन्द नाथा

किरानेके व्यापारी

चतुर्भुज रूपचन्द चांदनी चौक
बीरचन्द कल्याण

गल्लेके व्यापारी

सीताराम गोधाजी धानमंडी
शिवनाथ गनेशी लाल „

तिजोरी बनानेवाले

परमानंद पूनमचंद

एजंसी

एस० जी० धार्कोटीकर सिंगर कम्...
पर्नेट, ...
हरनारायणप्रसाद बालकिशनदास (...
...

मिशनरी मरचेंट

मेसर्स ए० हुसेन एण्ड कम्पनी ...

टोपीके व्यापारी

- „ अनूपचन्द डूंगरसी ...
- „ मूलचन्द पन्नालाल
- „ दोलतराम ...

श्री सेठ देवीचन्दजी (भोपजी शंभुराम) मंदसोर

श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया नीमच

श्रीमान ओंकारलालजी बापना (कुंदनजी कालूराम) मंदसोर

श्री सेठ शिवनारायणजी (मनीराम गोवर्द्धन) मंदसोर

जावरा—भेराजी कालूराम नाहर—इस दुकानपर गल्ला मिरची और गोंद्सकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स वालचन्द प्रेमचन्द

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीप्रेमचन्दजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन नवयुवक हैं। आपकी दुकानपर देशी तथा विलायती सब प्रकारके कपड़ेका व्यवसाय होता है।

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

मेसर्स कालूराम गोविंदराम
- „ केसराज श्रीकृष्णदास (खजांची)
- „ पूनमचन्द हीरचन्द
- „ बद्रीचन्द बच्छराज
- „ लक्ष्मीनारायण बद्रीनारायण
- „ [illegible] नारायणदास

कमीशन एजण्ट

[illegible] [illegible]
[illegible] पूनमचन्द
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
अब्दुल हुसेन [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] अब्दुलहुसेन

चांदी सोनेके व्यापारी

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

चावल, शक्कर, किरानाके व्यापारी

नेमाजी सोभागमल
नन्दाजी मियाचन्द
बद्रीचन्द कस्तूरमल
महम्मद हुसेन अब्दुल हुसेन
हेमराज केशरीमल

आइल एजंसी

स्टेंडर्ड आइल कं०—गंगाराम केशरीमल
वर्मा आइल कं०—मौं [illegible] [illegible]
एशियाटिक पेट्रोलियम कं०—[illegible] इस्माइलजी
इण्डो बरमा आइल कं०—[illegible] [illegible]

कपड़ेके व्यापारी

[illegible] [illegible] (रंगीन कपड़ा)
नन्दाजी मूलचन्द
[illegible] सोभागमल
नथूजी [illegible]चन्द
[illegible] [illegible]
वालचन्द प्रेमचन्द

गल्लेके व्यापारी

कालूराम भेराजी नाहर
[illegible] [illegible]
नन्दाजी [illegible]
[illegible] [illegible]

मेसर्स मनीराम गोवर्द्धनदास

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्री शिवनारायणजी अग्रवाल जातिके (गोयल) सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान नारनौल (पटियाला-स्टेट) में है। पहिले पहिल संवत् १९०२में सेठ मनीरामजीने यहांपर आढ़त कपड़ेकी दलालीका काम आरंभ किया। आपका दलालीका काम अच्छा चल निकला। संवत् १९२०में सेठ मनीरामजीका देहावसान हुआ इनके बाद इनके पौत्र सेठ गोवर्द्धनदासजीके समयमें इस दूकानकी विशेष तरक्की हुई। संवत् १९५०से ५४ तक मंदसोरकी कस्टमका ठेका आपके जिम्मे रहा। इसमें आपको खूब लाभ रहा। सेठ गोवर्द्धनदासजीके चार पुत्र थे, उनमें सबसे बड़े श्री शिवनारायणजी हैं। आप इस समय मंदसोरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ शिवनारायणजीके पुत्र श्री जगन्नाथजी व्यापारिक कार्यों में भाग लेते हैं। इस दूकानकी ओरसे मंदसोरमें करीब १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एवं नारनोलमें १० हजार रुपयोंकी लागतसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मैनेजमेण्टमें नीचे स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) मन्दसोर—मनीराम गोवर्द्धनदास— T. A. JAIN—यहां रुई, कपड़ा, अनाज, हुण्डी चिट्ठी सराफी लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।

(२) अहमदाबाद—मनीराम गोवर्द्धनदास, नया माधोपुरा—इस दूकानपर कपड़े और गल्लेका थोक व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) सैलाना—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां रुई, गल्ला और कपड़ेका थोक व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(४) कलकत्ता—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पिपलियाके गवेराजीन और सैलानाकी ईश्वर कम्पनी नामक जीनिंगफेक्टरियों में आपका भाग है। उपरोक्त दूकानोंमें नं० २, ३, ४ आपके भाइयोंके बंटवारे की हैं। वर्तमानमें इनसे कारबारी रिश्ता है।

मेसर्स मूलचंद सुगनचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचंदजी सोनी अजमेरवाले हैं। अतएव आपका विस्तृत परिचय चित्रोंसहित वहीं दिया गया है। मन्दसोर दूकानपर अफीम लेनदेन हुण्डी चिट्ठी एवं कमीशनका काम होता है। आपकी यहां एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

क्लाथ मरचेण्ट्स

मेसर्स मूलचन्द एण्ड संस

इस फर्मके मालिक सेठ छोटूलालजी १०० वर्ष पूर्व टोंक राज्यसे यहां आये थे। आपके बाद सेठ मूलचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष बढ़ाया। सेठ मूलचन्दजीके कोई संतान न होनेसे उनके यहां जवरचन्दजी, जयपुर स्टेटके जामडोजी नामक गांवसे संवत् १९३५ में गोद लाये गये। आप ही इस फर्मके वर्तमान संचालक हैं। श्रीजवरचंदजीके यहां गोद आनेके पश्चात् इनके २ भाई और हुए थे जिनका देहावसान हो गया है। वर्तमानमें उन दोनों भाइयोंके पुत्र अपना स्वतंत्र व्यवसाय कर रहे हैं।

सेठ जवरचंदजीने कई देशी राज्योंसे अपना व्यवसायिक सम्बन्ध स्थापित किया है। इस समय राजपूताना, सेंट्रल इण्डिया, बुन्देल खण्ड, और बघेल खंडके कई रईसोंको आप बड़ी तादादमें कपड़ा सप्लाई करते हैं। आपकी ओरसे एक जैन चैत्यालय मऊ में बना हुआ है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) महूकेम्प—मूलचन्द एण्ड सन्स, मेनस्ट्रीट—इस फर्मपर फेंसी कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा साथमें टेलरिंग डिपार्टमेंट भी है।

(२) मऊकेम्प—छोटूलाल मूलचन्द—मेनस्ट्रीट, यहां भी उपरोक्त व्यवसाय होता है।

कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स मदनलाल शिवबख्श

इस फर्मके मालिक करीब १०० वर्ष पूर्व नागोर (मारवाड़) से आये थे। सेठ मन्नालालजीने इस दुकानके कारोबारको शुरू किया। आपके बाद क्रमशः लछमनदासजी, शिवबख्शजी और मदनलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ शिवबख्शजीके पुत्र श्री मदन-

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

दि बृटिश एम्पायर सर्जिकल एण्ड मेडिकल स्टोर्स

विनसेन्ट एण्ड को० फन्टूनमेंट गार्डन

मोहन मेडिकल हाल

मेन्यू फेक्चरर्स

दुर्केजा एण्ड को० इम्पोर्टर्स एण्ड स्पोर्ट्स, मेनुफेक्चरर

वेस्ट एण्ड स्पोर्ट हाउस

मोटरकार डीलर्स

नोशेरवाँ एण्ड को० फोर्ड मोटर रिपेयर एण्ड सप्लायर

शापूरजी आर०मोटर साइकल एण्ड मोटर एजंट

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर्स

हरजान हाइजिंग एण्ड को०

डल्वी एण्ड को०

खेरा एण्ड को०

भंडारे एण्ड को०

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज आदि द्वारा स्थापित

* सस्ता मण्डल, अजमेरसे प्रकाशित *

भारतवर्षमें सबसे सस्ती, सचित्र उच्चकोटिकी

त्यागभूमि

जीवन, जागृति, बल और बलिदान की मासिक पत्रिका

सम्पादक—श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्री क्षेमानन्द राहत

पृष्ठ संख्या १२०, दो रंगीन और कई सादे चित्र

स्त्रियों और युवकोंके लिये ४० पृष्ठ सुरक्षित

वार्षिक मूल्य केवल ४)

नमूनेकी प्रतिके लिये ।।) के टिकट भेजिये

मिलनेका पता:—"त्यागभूमि कार्यालय", अजमेर

(१ मन्दसोर (२) जावरा (३) दलावदा (४) ढोढर (५) रिंगनोद (देवास) (६) पिपलोदा (पिपलोदास्टेट) (७) कानून (धारस्टेट) (८) बमनिया (इन्दौर) (६) अमरगढ़ (झाबुआ) (१०) उदयगढ़ (झाबुआ) (११) झाबुआ (१२) भैंसोदा मण्डी (गवालियर) (१३) (१४) मनासा (१५) पीपलिया (इंदौर) (१६) मल्हारगढ़ (जावरा) (१७) निम्बाहेड़ा (१८) [illegible] (गवालियर) (१६) सिङ्गोली (गवालियर) (२०) टटनेरी (गवालियर) (२१) छबड़ा (टोंकस्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरियां

१-मन्दसोर २ अमरगढ़ (झाबुआ) ३ उदयगढ़ (झाबुआ) ४ भैंसोदामण्डी ५ टोंक ६ निम्बाहेड़ा

मेसर्स भोपजी शम्भूराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ देवीचंदजी बाकलीवाल हैं। आपके पूर्वज १५० वर्ष पूर्व बेगूं (उदयपुर) से मल्हार गढ़ और मल्हारगढ़से यहां आये। इस दूकानकी स्थापना संवत् १८६५में सेठ शंभूरामजीने की। सेठ शंभूरामजीके बाद क्रमशः सेठ वर्द्धमानजी, सेठ जोधराजजी और सेठ देवीचंदजीने इस दूकानके कारोबारको सम्भाला। वर्तमानमें सेठ देवीचन्दजीके ३ पुत्र हैं जिनके नाम श्री [illegible]जी श्री फूलचन्दजी एवं श्री हजारीलालजी हैं।

इस दुकानपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। यह फर्म मन्दसोरके प्रतिष्ठित [illegible] है। सेठ देवीचन्दजी सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इन्दौरके सर सेठ हुकुमचन्दजी से आपकी रिश्तेदारी है। ग्वालियरस्टेटमें ३ गांव आपकी जमींदारीके हैं। स्टेटकी ओरसे इस कुटुम्बको [illegible] सम्मान मिलता रहा है। सेठ देवीचन्दजी २ वर्ष पूर्व यहांपर आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। इस पदपर आप करीब १८ वर्षों तक रहे थे। जिस समय आपने आनरेरी मजिस्ट्रेट [illegible] इस्तीफा दिया था, उस समय ग्वालियर स्टेटकी ओरसे आपको पोशाक और सार्टिफिकेट मिला था। संवत् १६८०में दरबारकी सालगिरहके समय भी आपका स्टेटने पोशाक इनायत की थी।

इस दुकानकी ओरसे एक जैन धर्मशाला मन्दसोरमें बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपकी ओर से [illegible] जैन [illegible] और देवीचन्द दिगम्बर जैन औषधालय भी चल रहा है। औषधालयमें [illegible] [illegible] करीब १३ हजारके आती है। आपका एक मन्दिर मल्हारगढ़में भी बना हुआ है। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मन्दसोर—भोपजी शम्भूराम—इस दुकानपर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] काम होता है। इसके अतिरिक्त [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।